नया हिन्द
نیا ہند

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

जुलाई १९५०

क्या किस से — सफ़ा

१—आत्म धिक्कार—ख़लील जिब्रान—अनुवादक—भाई माई दयाल जैन १
२—सम्राट अकबर और......पंडित सुन्दर लाल ... ३
३—जमाया हुआ बनस्पति तेल—महात्मा भगवानदीन... ९
४—जनता की चिन्ता—भाई अब्दुल हलीम अन्सारी ... १६
५—इस्लाम का समाजी संगठन—पंडित सुन्दर लाल ... २३
६—कोरिया और उसकी घरेलू लड़ाई—महात्मा भगवानदीन ३४
७—ज़बरदस्ती न कीजिये—भाई सरस्वती सरन ४४
८—प्रकृति का सन्देश—(कविता) भाई चरन सरन 'नाज़' ५४
९—बच्चों की दुनिया ५७
१०—हमारी राय—कोरिया के दो टुकड़े—एडीटर, कोरिया और भारत—भगवान दीन और सुन्दर लाल, तुर्की के नये चुनाव—भगवान दीन, कांग्रेस और लज्जा—भगवान दीन, शान्ति इनाम का हक़दार कौन ? भगवान दीन, शाबाश कोरिया—भगवानदीन, यह है अमरीका—भगवानदीन, दुनिया की बड़ी लड़ाई,—भगवान दीन ... ६३

क़ीमत—हिन्दुस्तान में ६ रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने

मैनेजर
'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

جولائی ۱۹۵۰

کیا کس سے — صفحہ

۱—آتم دھکار—خلیل جبران—انوادک—بھائی مائی دیال جین ۱
۲—سمراٹ اکبر اور پنڈت سندر لال ۳
۳—جمایا ہوا بنسپتی تیل—مہاتما بھگوان دین ۹
۴—جنتا کی چنتا—بھائی عبدالحلیم انصاری ۱۶
۵—اسلام کا سماجی سنگٹھن—پنڈت سندر لال ۲۳
۶—کوریا اور اس کی گھریلو لڑائی—مہاتما بھگوان دین ... ۳۴
۷—زبردستی نہ کیجئے—بھائی سرسوتی سرن ۴۴
۸—پرکرتی کا سندیش (کویتا) بھائی چرن سرن ناز ... ۵۴
۹—بچوں کی دنیا ۵۷
۱۰—ہماری رائے—کوریا کے دو ٹکڑے—ایڈیٹر، کوریا اور بھارت—بھگوان دین اور سندر لال، ترکی کے نئے چناؤ—بھگوان دین، کانگریس اور لجا—بھگوان دین، شانتی انعام کا حقدار کون؟—بھگوان دین، شاباش کوریا!—بھگوان دین—یہ ہے امریکہ—بھگوان دین، دنیا کی بڑی لڑائی—بھگوان دین ۔ ۶۳

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال - باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ९ जुलाई सन् '५० नम्बर १

جلد ۹ جولائی سن ۵۰ نمبر ۱

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

आत्म-धिक्कार

(खलील जिब्रान)

सात बार मैं ने अपनी आत्मा को धिक्कारा है :—

१—जब मैं ने उसे बड़प्पन पाने के लिये नर्म होते हुए देखा ;

२—जब मैं ने उसे पतित के सामने झुक कर चलते देखा ;

३—जब उसे सरल और मुशकिल कामों में से किसी एक काम को चुनने का मौक़ा दिया गया और उसने सरल काम को पसंद किया ;

४—जब उसने कोई अपराध और पाप किया और यह कह कर अपने को संतोष दे लिया कि दूसरे भी इसी तरह अपराध और पाप करते हैं ;

اتم دھکار

(خلیل جبران)

سات بار میں نے اپنی آتما کو دھکارا ہے :—

۱ – جب میں نے اُسے بڑپن پانے کے لئے نرم ہوتے ہوئے دیکھا ؛

۲ – جب میں نے اُسے پتت کے سامنے جھک کر چلتے دیکھا ؛

۳ – جب اُسے سرل اور مشکل کاموں میں سے کسی ایک کام کو چننے کا موقعہ دیا گیا اور اس نے سرل کام کو پسند کیا ؛

۴ – جب اس نے کوئی اپرادھ اور پاپ کیا اور یہ کہہ کر اپنے کو سنتوش دے لیا کہ دوسرے بھی اسی طرح اپرادھ اور پاپ کرتے ہیں ؛

५—जब उसने अपनी कमजोरी के कारन किसी अत्याचार को सहन किया और फिर यह कहा कि संतोष और शांति करना भी गुन है ;

६—जब उसने किसी बदरूप चेहरे को देखकर उससे नफरत की और यह न समझा कि असल में यह उस का ही दूसरा रूप है ;

७—जब उसने अपनी बड़ाई की डींग मारी या दूसरों की अनुचित तारीफ की और उसे भी एक गुन समझा.

अनवादक—भाई भाई दयाल जैन

۵ - جب اس نے اپنی کمزوری کے کارن کسی اتیاچار کو سہن کیا اور پھر یہ کہا کہ سنتوش اور شانتی کرنا بھی گن ہے ؛

۶ - جب اس نے کسی بدروپ چہرہ کو دیکھکر اس سے نفرت کی اور یہ نہ سمجھا کہ اصل میں یہ اسکا ہی دوسرا روپ ہے ؛

۷ - جب اس نے اپنی بڑائی کی ڈینگ ماری یا دوسروں کی انوچت تعریف کی اور اسے بھی ایک گن سمجھا ۔

انوادک - بھائی بھائی دیال جین

सम्राट अकबर और हमारा आगे का रास्ता

(पंडित सुन्दर लाल)

राजा राम चन्द्र को छोड़कर शायद ही किसी राजा या बादशाह का नाम इस सारे देश में उत्तर से दक्खिन और पूरब से पच्छिम तक इतना मशहूर हो जितना सम्राट अकबर का. यह बात भी आम तौर पर सब जानते हैं कि अकबर ने इस देश के हिन्दू मुसलमानों को मिलाने और सारे देश को एक करके उसे हर तरह खुशहाल और माला माल करने की कितनी कोशिश की. दुनिया के जिन छै सात बड़े से बड़े शासकों को सब इतिहास लिखने वाले एक राय से 'महान', 'आज़म' या 'दी ग्रेट' कह कर पुकारते हैं उनमें से दो हिन्दुस्तान के हिस्से में पड़े हैं—अशोक और अकबर.

फिर भी अकबर की बाबत उसके अपने देश के लोगों में तरह तरह की भावनायें हैं.

बहुत से पढ़े लिखे हिन्दू अकबर की एकता की कोशिश को थोड़ा बहुत जानते और सराहते हुए भी उसे 'मीठी छुरी' कह कर याद करते हैं. कोई कोई औरंगजेब को हिन्दुओं और हिन्दू धर्म का दुश्मन कहते हुए भी औरंगजेब को अकबर से अच्छा बताते हैं. इस मामले में इस तरह के हिन्दुओं का आदर्श वह महाराना प्रताप है जो इस टेक के लिये मर मिटे कि किसी राजपूत कन्या की किसी दूसरे से शादी क्यों हो और मारवाड़ की पवित्र भूमि पर

سمراٹ اکبر اور ہمارا آگے کا راستہ

(پنڈت سندر لال)

راجہ رام چندر کو چھوڑ کر شاید ہی کسی راجہ یا بادشاہ کا نام اس سارے دیش میں اُتر سے دکھن اور پورب سے پچھم تک اتنا مشہور ہو جتنا سمراٹ اکبر کا. یہ بات بھی عام طور پر سب جانتے ہیں کہ اکبر نے اس دیش کے ہندو مسلمانوں کو ملانے اور سارے دیش کو ایک کرکے اُسے ہر طرح خوشحال اور مالا مال کرنے کی کتنی کوشش کی. دنیا کے جن چھ سات بڑے سے بڑے شاسکوں کو سب اتہاس لکھنے والے ایک رائے سے 'مہان' 'اعظم' یا 'دی گریٹ' کہکر پکارتے ہیں اُن میں سے دو ہندوستان کے حصے میں پڑے ہیں — اشوک اور اکبر.

پھر بھی اکبر کی بابت اس کے اپنے دیش کے لوگوں میں طرح طرح کی بھاونائیں ہیں.

بہت سے پڑھے لکھے ہندو اکبر کی ایکتا کی کوششوں کو تھوڑا بہت جانتے اور سراہتے ہوئے بھی اُسے 'میٹھی چھری' کہکر یاد کرتے ہیں. کوئی کوئی اورنگ زیب کو ہندوؤں اور ہندو دھرم کا دشمن کہتے ہوئے بھی اورنگ زیب کو اکبر سے اچھا بتاتے ہیں. اس معاملہ میں اس طرح کے ہندوؤں کا آدرش وہ مہارانا پرتاپ ہیں جو اس ٹیک کے لئے مر مٹے کہ کسی راجپوت کنیا کی کسی دوسرے سے شادی کیوں ہو اور مارواڑ کی پوتر بھومی پر

५—जब उस [illegible] किस [illegible] हुकूमत क्यों क़ायम हो. महाराना प्रताप की तसवीर हजारों हिन्दू घरों में मिलेगी. अकबर की शायद ही कहीं इधर उधर. देश के दूर दूर के सूबों में नाटक खेले जाते हैं जिनमें महाराना प्रताप का आदर्श लोगों के सामने रखा जाता है और मान सिंह और अकबर को नीचा दिखाया जाता है.

दूसरी तरफ़ बहुत से पढ़े लिखे मुसलमान अकबर के राज काज की थोड़ी बहुत तारीफ़ करते हुए भी उसे दीन के मामले में गिरा हुआ मानते हैं. और अधिक कट्टर काफ़िर तक कह डालते हैं. इस तरह के लोगों की निगाह में एक सच्चे मुसलमान बादशाह की हैसियत से अकबर की निस्बत कहीं ज्यादा अच्छा और ऊँचा आदर्श था सम्राट औरंगज़ेब. बहुत से मुसलमान आलिमों में औरंगज़ेब के ख़त और फ़तवे ख़ासी क़दर के साथ पढ़े जाते हैं. ऐसे लोगों को सम्राट अकबर के कामों की तारीफ़ उतनी नहीं भाती और अगर उनके सामने औरंगज़ेब में कोई नुक़्स दिखाया जाये तो उनको वैसा ही बुरा लगता है जैसा किसी वली अल्लाह को बुरा कहना.

यह है हिन्दू और मुसलमानों दोनों के दिलों में उस आदमी की क़दर जिस से ज्यादा शायद एक कबीर को छोड़ कर, हिन्दू और मुसलमानों को मिलाने की इन हज़ार बरस के अन्दर किसी ने कोशिश नहीं की.

किसी भी मुल्क या क़ौम के लोगों की तरक़्क़ी और उनके फलने फूलने का दारोमदार बहुत कुछ इस बात पर होता है कि आख़िर

کسی ودھرمی کی حکومت کیوں قائم ہو . مہارانا پرتاپ کی تصویر ہزاروں ہندو گھروں میں ملے گی . اکبر کی شاید ہی کہیں ادھر ادھر . دیش کے دور دور کے صوبوں میں ناٹک کھیلے جاتے ہیں جن میں مہارانا پرتاپ کا آدرش لوگوں کے سامنے رکھا جاتا ہے اور مان سنگھ اور اکبر کو نیچا دکھایا جاتا ہے ؟

دوسری طرف بہت سے پڑھے لکھے مسلمان اکبر کے راج کاج کی تھوڑی بہت تعریف کرتے ہوئے بھی اسے دین کے معاملہ میں گرا ہوا مانتے ہیں . اور ادھک کٹر کافر تک کہہ ڈالتے ہیں . اسطرح کے لوگوں کی نگاہ میں ایک سچے مسلمان بادشاہ کی حیثیت سے اکبر کی نسبت کہیں زیادہ اچھا اور اونچا آدرش تھا سمراٹ اورنگ زیب . بہت سے مسلمان عالموں میں اورنگ زیب کے خط اور فتوے خاصی قدر کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں . ایسے لوگوں کو سمراٹ اکبر کے کاموں کی تعریف اتنی نہیں بھاتی اور اگر ان کے سامنے اورنگ زیب میں کوئی نقص دکھایا جائے تو ان کو ویسا ہی برا لگتا ہے جیسا کسی ولی اللہ کو برا کہنا .

یہ ہے ہندو اور مسلمانوں دونوں کے دلوں میں اس آدمی کی قدر جس سے زیادہ شاید ایک کبیر کو چھوڑ کر ہندو اور مسلمانوں کو ملانے کی ان ہزار برس کے اندر کسی نے کوشش نہیں کی .

کسی بھی ملک یا قوم کے لوگوں کی ترقی اور ان کے پھلنے پھولنے کا دارومدار بہت کچھ اس بات پر ہوتا ہے کہ آخر

उनके जीवन के आदर्श क्या हैं. और वह अपने इतिहास के हीरो या महापुरुषों को कहाँ तक सच्ची रोशनी में देख सकते हैं और उनसे क्या कुछ सीख सकते हैं.

महाराना प्रताप ने जिस ढंग से और जिस तरह की क़ुरबानियाँ देकर अपनी टेक को निभाया इसके लिये महाराना की तारीफ़ की जा सकती है लेकिन हमें यह समझना होगा कि जिस पुरानी भावना के असर में राजपूत अपनी लड़कियों को इसलिये पैदा होते ही मार डालते थे कि कोई उनका दामाद क्यों बने वह भावना न बहुत ऊँची भावना थी और न किसी मुल्क की तरक़्क़ी में मदद दे सकती है. वह भावना ही क़ौमों और मुल्कों को तंग दायरों में बन्द करके उन्हें बरबाद और खतम कर देने वाली भावना थी. यह खयाल भी कि किसी मुल्क में किसी एक ही धार्मिक परम्परा के लोगों का राज हो, बहुत छोटा और तंग और ग़लत खयाल है. अकबर का सर्वधर्म समभाव यानी सब मज़हबों का एक सा आदर करना, सारी इन्सानी क़ौम को एक कुनबा समझना और सब में ब्याह-शादी रिश्ते नाते और मेल मुहब्बत क़ायम करने की कोशिश करना दीन और दुनिया दोनों की निगाह से कहीं ज़्यादा ऊँचा आदर्श है.

योरप के बड़े से बड़े राज काज सोचने वालों को आज अपनी जिन बातों पर सब से ज़्यादा घमंड है उनमें से एक सेकुलर गवरमेन्ट यानी मज़हब के मामले में बिलकुल ग़ैर जानिबदार गवरमेन्ट की कल्पना है, लेकिन जब कि योरप में अभी सेकुलर गवरमेन्ट की कल्पना पैदा भी नहीं हुई थी और जब कि योरप के एक एक

اُن کے جیون کے آدرش کیا ہیں، اور وہ اپنے اتہاس کے ہیرو یا مہا پرشوں کو کہاں تک سچی روشنی میں دیکھ سکتے ہیں اور اُن سے کیا کچھ سیکھ سکتے ہیں۔

مہارانا پرتاپ نے جس ڈھنگ سے اور جس طرح کی قربانیاں دیکر اپنی ٹیک کو نبھایا اُس کے لئے مہارانا کی تعریف کی جاسکتی ہے۔ لیکن ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ جس پرانی بھاونا کے اثر میں راجپوت اپنی لڑکیوں کو اس لئے پیدا ہوتے ہی مار ڈالتے تھے کہ کوئی اُن کا داماد کیوں بنے وہ بھاونا نہ بہت اونچی بھاونا تھی اور نہ کسی ملک کی ترقی میں مدد دے سکتی ہے۔ وہ بھاونا ہی قوموں اور ملکوں کو تنگ دائروں میں بند کرکے انہیں برباد اور ختم کردینے والی بھاونا تھی۔ یہ خیال بھی کہ کسی ملک میں کسی ایک ہی دھارمک پرمپرا کے لوگوں کا راج ہو بہت چھوٹا اور تنگ اور غلط خیال ہے۔ اکبر کا سرودھرم سمبھاؤ یعنی سب مذہبوں کا ایک سا آدر کرنا ساری انسانی قوم کو ایک کنبہ سمجھنا اور سب میں بیاہ شادی رشتے ناتے اور میل محبت قائم کرنے کی کوشش کرنا دین اور دنیا دونوں کی نگاہ سے کہیں زیادہ اونچا آدرش ہے۔

یوروپ کے بڑے سے بڑے راج کاج سوچنے والوں کو آج اپنی جن باتوں پر سب سے زیادہ گھمنڈ ہے اُن میں سے ایک سیکولر گورمنٹ یعنی مذہب کے معاملے میں بالکل غیر جانب دار گورمنٹ کی کلپنا ہے۔ لیکن جب کہ یوروپ میں ابھی سیکولر گورمنٹ کی کلپنا پیدا بھی نہیں ہوئی تھی اور جب کہ یوروپ کے ایک ایک

मुल्क में लोग अपने अपने मज़हब वालों की हुकूमत क़ायम करने और दूसरे मज़हबी ख़्याल वालों को मिटा देने की कोशिश में लाखों नहीं करोड़ों बेगुनाहों को मौत के घाट उतार रहे थे और इलाक़े के इलाक़े वीरान कर रहे थे उस ज़माने में हिन्दुस्तान के इस सम्राट ने तख़्त पर बैठते ही, यह देख लिया था कि जिस महान देश में अलग अलग धार्मिक ख़्यालों के लोगों की मिली जुली आबादी हो उसमें राजा वही होना चाहिये, और वही हो सकता है जिसका किसी एक धार्मिक परिपाटी से कोई ख़ास लगाव न दिखाई दे, जिसे सब अपना समझें और जो सब को एक निगाह से देखे. सम्राट अकबर दुनिया की तारीख़ में पहला इंसान था जिसने सैकुलर गवर्मेन्ट की कल्पना को आज कल की किसी जम्हूरी पारलिमेन्ट में नहीं बल्कि शख़्सी हुकूमत के अन्दर अमली जामा पहनाने की शानदार कोशिश की. तारीख़ में सम्राट अकबर ही सैकुलर गवर्मेन्ट की कल्पना का जन्म दाता था.

इसमें शक नहीं कि अकबर के मुक़ाबले में औरंगज़ेब इस्लाम की ऊपरी रीत रिवाजों और फ़क़ीहों (आचार्यों) के हुक्मों का कहीं ज़्यादा पाबन्द था. लेकिन अगर हम समझें तो एक मुसलमान बादशाह के लिये भी अपनी हर मज़हब की रिआया के दिलों को हाथ में लेना और दुनिया में सच्ची 'अख़ूवत इन्सानी' यानी इन्सानी भाई चारा क़ायम करने की कोशिश करना रूहानी निगाह से भी कहीं ज़्यादा ऊँची चीज़ थी. भगवान के सच्चे भक्त और हक़ीक़ी वली अल्लाह कबीर साहब का सियासी वारिस, अबुलफ़ज़ल और फ़ैज़ी जैसे सूफ़ी मनुष बुज़ुर्गों का साथी अकबर रस्म परस्त नहीं

ملک میں لوگ اپنے اپنے مذہب والوں کی حکومت قائم کرنے اور دوسرے مذہبی خیال والوں کو مٹا دینے کی کوشش میں لاکھوں نہیں کروڑوں بے گناہوں کو موت کے گھاٹ اتار رہے تھے اور علاقے کے علاقے ویران کر رہے تھے اس زمانے میں ہندستان کے اس سمراٹ نے تخت پر بیٹھتے ہی یہ دیکھ لیا تھا کہ جس مہان دیش میں الگ الگ دھارمک خیالوں کے لوگوں کی ملی جلی آبادی ہو اس میں راجہ وہی ہونا چاہئے اور وہی ہوسکتا ہے جس کا کسی ایک دھارمک پریپاٹی سے کوئی خاص لگاؤ نہ دکھائی دے، جسے سب اپنا سمجھیں اور جو سب کو ایک نگاہ سے دیکھے. سمراٹ اکبر دنیا کی تاریخ میں پہلا انسان تھا جس نے سیکولر گورنمنٹ کی کلپنا کو آجکل کی کسی جمہوری پارلیمنٹ میں نہیں بلکہ شخصی حکومت کے اندر عملی جامہ پہنانے کی شاندار کوشش کی. تاریخ میں سمراٹ اکبر ہی سیکولر گورنمنٹ کی کلپنا کا جنم داتا تھا.

اس میں شک نہیں اکبر کے مقابلے میں اورنگ زیب اسلام کی اوپری ریت رواجوں اور فقیہوں (آچاریوں) کے حکموں کا کہیں زیادہ پابند تھا. لیکن اگر ہم سمجھیں تو ایک مسلمان بادشاہ کے لئے بھی اپنی ہر مذہب کی رعایا کے دلوں کو ہاتھ میں لینا اور دنیا میں سچی 'اخوت انسانی' یعنی انسانی بھائی چارہ قائم کرنے کی کوشش کرنا روحانی نگاہ سے بھی کہیں زیادہ اونچی چیز تھی. بھگوان کے سچے بھکت اور حقیقی ولی اللہ کبیر صاحب کا سیاسی وارث، ابوالفضل اور فیضی جیسے صوفی منش بزرگوں کا ساتھی اکبر رسم پرست نہیں

हो सकता था लेकिन सच्ची रुहानियत की निगाह से कुछ छोटा इन्सान भी नहीं था.

दुनिया ने हमेशा से अपने सच्चे भलाई करने वालों को बहुत कम और बहुत देर में पहचाना है. सम्राट अकबर को इस दुनिया से कूच किये लगभग साढ़े तीन सौ बरस हो चुके. अकबर की आज कोशिशों के बारे में अलग अलग राय हो सकती है. लेकिन जहां तक अकबर के इरादे और उसके ऊंचे आदर्श का सवाल है उन से इनकार नहीं किया जा सकता. सम्राट अकबर दुनिया के और इन्सानी क़ौम के बड़े से बड़े तामीर करने वालों मे से था. ख़ास कर इस मुल्क का पाँच हज़ार बरस का इतिहास और उसकी मौजूदा हालत दोनों हमें साफ़ बता रहे हैं कि इस मुल्क के लिये कबीर और अकबर के बताये रास्ते के सिवा सलामती और सचाई का कोई दूसरा रस्ता नहीं है. इस मुल्क का भविष्य अपने पूरे तेज के साथ चमकने के लिये उस दिन के इन्तज़ार में है जिस दिन एक एक हिन्दू इस बात को महसूस करने लगे कि महराना प्रताप की आन-बान [?] की चीज़ होते हुए भी सम्राट अकबर के जीवन का आदर्श ज्यादा विशाल, ज्यादा ऊंचा और हक़ीक़ी हिन्दू धर्म यानी उपनिषदों और भगवत गीता के आदर्शों के ज्यादा निकट था. और एक एक मुसलमान इस बात को महसूस करे कि ऊपरी शरा और मिनहाज [?] का पाबन्द न रहते हुए भी इस्लाम की सच्ची स्पिरिट के लिहाज़ से अकबर ज्यादा दीनदार और ज्यादा बा अमल रूहानी ज़िन्दगी बसर करने वाला था.

यह मुल्क इन्सानी क़ौम की आगे की तरक्की में तब ही और

(७)

ہوسکتا تھا لیکن سچی روحانیت کی نگاہ سے کچھ چھوٹا انسان بھی نہیں تھا۔

دنیا نے ہمیشہ سے اپنے سچے بھلائی کرنے والوں کو بہت کم اور بہت دیر میں پہچانا ہے۔ سمراٹ اکبر کو اس دنیا سے کوچ کئے لگ بھگ ساڑھے تین سو برس ہوچکے۔ اکبر کی بعض کوششوں کے بارے میں الگ الگ رائے ہوسکتی ہیں۔ لیکن جہاں تک اکبر کے ارادے اور اس کے اونچے آدرش کا سوال ہے ان سے انکار نہیں کیا جاسکتا۔ سمراٹ اکبر دنیا کے اور انسانی قوم کے بڑے سے بڑے تعمیر کرنے والوں میں سے تھا۔ خاص کر اس ملک کا پانچ ہزار برس کا اتہاس اور اس کی موجودہ حالت دونوں ہمیں صاف بتا رہے ہیں کہ اس ملک کے لئے کبیر اور اکبر کے بتائے راستے کے سوا سلامتی اور سچائی کا کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے۔ اس ملک کا بھوشیہ اپنے پورے تیج کے ساتھ چمکنے کے لئے اس دن کے انتظار میں ہے جس دن ایک ایک ہندو اس بات کو محسوس کرنے لگے کہ مہارانا پرتاپ کی آن تعریف کی چیز ہوتے ہوئے بھی سمراٹ اکبر کے جیون کا آدرش زیادہ وشال، زیادہ اونچا اور حقیقی ہندو دھرم یعنی اپنشدوں اور بھگوت گیتا کے آدرشوں کے زیادہ نکٹ تھا۔ اور ایک ایک مسلمان اس بات کو محسوس کرے کہ اوپری شرع اور منہاج کا پابند نہ رہتے ہوئے بھی اسلام کی سچی اسپرٹ کے لحاظ سے اکبر زیادہ دیندار اور زیادہ باعمل روحانی زندگی بسر کرنے والا تھا۔

یہ ملک انسانی قوم کی آگے کی ترقی میں تب ہی اور

(۷)

केवल तब ही अपना पूरा पूरा हिस्सा ले सकता है जब मुल्क में सच्ची रुहानियत अपने पूरे ज़ोर के साथ चमकने लगे और यह चीज़ तभी हो सकती है जब हम सब ऊपरी रीत रिवाजों, कर्म कांडों, तंग नज़रियों और फ़िरक़ा परस्तियों से ऊपर उठ कर सच्ची इन्सानियत और इन्सानी भाई चारे को अपने दिलों में सब से ऊपर जगह दें. इसके लिये सम्राट अकबर के बताये आदर्श और उसके बताये रास्ते के सिवा हमारे लिये कोई दूसरा आदर्श या रास्ता नहीं है.

१४ जून सन '५०.   ("रहबर" बम्बई से)

کیول تب ہی اپنا پورا پورا حصہ لے سکتا ہے جب ملک میں سچی روحانیت اپنے پورے زور کے ساتھ چمکنے لگے۔ اور یہ چیز تبھی ہوسکتی ہے جب ہم سب اوپری ریت رواجوں، کرم کانڈوں، تنگ نظریوں اور فرقہ پرستیوں سے اوپر اٹھکر سچی انسانیت اور انسانی بھائی چارے کو اپنے دلوں میں سب سے اوپر جگہ دیں۔ اس کے لئے سمراٹ اکبر کے بتائے آدرش اور اس کے بتائے راستے کے سوا ہمارے لئے کوئی دوسرا آدرش یا راستہ نہیں ہے۔

۱۵ جون سن ۵۰   ("رہبر" بمبئی سے)

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आखिर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया!   क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اس کا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا!   قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔

مینیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

बनाया हुआ वनस्पति तेल

वनस्पति का व्योपार करने वाले चिकने घड़े हो गये हैं. उनपर जब गांधी जी के यह लफ़्ज़ असर न कर पाये कि "कोई ईमानदार कारखानेदार इतना नीचे नहीं गिरेगा कि जाली काम शुरू करे. बाज़ार नकली चीज़ों से भरे पड़े हैं. जाली सिक्के बनाने पर काफ़ी सज़ा होती है फिर जाली घी के लिये क्यों न काफ़ी सज़ा दी जाय ! जबकि असली घी सिक्कों से कहीं ज्यादा क़ीमती है." (हरिजन सेवक १४-४-४६) और यह कि 'वनस्पति घी के नाम से जो वनस्पति तेल, घी या मक्खन की शकल में उसके नाम से बेचा जाता है वह हिन्दुस्तान के साथ बड़ा धोका है, दग़ा है. हिन्दुस्तान के व्योपारियों का धर्म है कि वह किसी भी शकल में घी के नाम से ऐसा दिखावा करके कोई तेल या पदार्थ न बेचें. किसी सरकार को तो ऐसा हरगिज़ न करना चाहिये न किसी को ऐसा करने देना चाहिये." (हरिजन सेवक १३-१०-४६) तो अब किस के शब्द उन पर टिक सकेंगे. गांधी जी के जो कथन हमने ऊपर दिये हैं उनमें सरकार के लिये भी काफ़ी इशारा है. पर वह अंग्रेज़ी सरकार के लिये है यानी विदेशी सरकार के लिये है. और आज भारत की बागडोर देशी सरकार के हाथों में है. वह उस पर क्यों ध्यान देने लगी ? हां, अब स्वर्ग से ही गांधी जी कुछ लिख कर भेजें तो सरकार उस पर ध्यान दे सकती है. पर वनस्पति व्योपारी यह खूब जानते हैं कि आज तक किसी विज्ञानी ने स्वर्ग आने जाने की

جمایا ہوا بنسپتی تیل

بنسپتی کا بیوپار کرنے والے چکنے گھڑے ہوگئے ہیں. ان پر جب گاندھی جی کے یہ لفظ اثر نہ کرپائے کہ "کوئی ایماندار کارخانہ دار اتنا نیچے نہیں گریگا کہ جعلی کام شروع کرے. بازار نقلی چیزوں سے بھرے پڑے ہیں. جعلی سکہ بنانے پر کافی سزا ہوتی ہے پھر جعلی گھی کیلئے کیوں نہ کافی سزا دیجائے ! جب کہ اصلی گھی سکوں سے کہیں زیادہ قیمتی ہے." (ہریجن سیوک ۱۴-۴-۴۶) اور یہ کہ "بنسپتی گھی کے نام سے جو بنسپتی تیل، گھی یا مکھن کی شکل میں اس کے نام سے بیچا جاتا ہے وہ ہندستان کے ساتھ بڑا دھوکہ ہے، دغا ہے. ہندستان کے بیوپاریوں کا دھرم ہے کہ وہ کسی بھی شکل میں گھی کے نام سے ایسا دکھاوا کرکے کوئی تیل یا پدارتھ نہ بیچیں. کسی سرکار کو ایسا ہرگز نہ کرنا چاہئیے نہ کسی کو ایسا کرنے دینا چاہئیے." (ہریجن سیوک ۱۳-۱۰-۴۶) تو اب کس کے شبد ان پر ٹک سکینگے. گاندھی کے جو کتھن ہم نے اوپر دئیے ہیں ان میں سرکار کیلئے بھی کافی اشارہ ہے. پر یہ انگریزی سرکار کیلئے ہے یعنی ودیشی سرکار کے لئے ہے. اور آج بھارت کی باگ ڈور دیشی سرکار کے ہاتھوں میں ہے. وہ اس پر کیوں دھیان دینے لگی ؟ ہاں اب سورگ سے ہی گاندھی جی کچھ لکھکر بھیجیں تو سرکار اس پر دھیان دے سکتی ہے. پر بنسپتی بیوپاری یہ خوب جانتے ہیں کہ آج تک کسی وگیانی نے سورگ آنے جانے کی

सड़क नहीं बनाई. हाँ, कुछ आत्मावादी आत्माएँ बुलाने का दावा करते हैं और यहाँ वहाँ आत्माएँ बुलाने की और उनसे बातें करने और सवाल पूछ कर जवाब मिलने की खबरें भी आती रहती हैं पर आत्मावाद न तो अभी वनस्पति वालों की नजरों में विज्ञान की हैसियत को पहुँचा है और न सरकार की नजरों में उसे विज्ञान का रुतबा मिला है. क्यों कि अगर ऐसा होता तो विद्यापीठों में उसको ऊँचा आसन मिल गया होता. इस लिये स्वर्ग से कोई व्यवस्था मिलने की तो आशा हमें छोड़ ही बैठना चाहिये.

आज के व्यापारी आम तौर से और वनस्पति के व्यापारी खास तौर से पहुँचे हुए साधुओं की तरह से पहुँचे हुए विज्ञानियों की राय का खूब फायदा उठाते हैं और पहुँचे हुए विज्ञानी सरकार की तो आंख, कान, नाक, जीभ, हाथ और मन सभी कुछ हैं. पर यह हैं इसी लिये कि वह जो कुछ कहें सरकार के हो कर कहें.

विज्ञानियों की राय का ढोल पीट कर और सरकारी मिनिस्टरों की सनद को दिखा कर इन वनस्पति व्यापारियों को वनस्पति का प्रचार करते यह क्यों नहीं सूझता कि वह उन्हीं मिनिस्टरों के उस हुक्म का पालन करें जो यह कहता है कि काला बाजार मत करो, जाली चीजें न बनाओ, वगैरा वगैरा. इन वनस्पति व्यापारियों का तो यह हाल है कि "मीठा मीठा हप्प, कड़वा कड़वा थू." वनस्पति व्यापारियों को यह मालूम है कि विज्ञानियों की राय पर अमल करना जरूरी नहीं है. क्यों कि विज्ञानियों की राय से अगर भाई-बहन शादी कर लें तो उनके संतान उत्पन्न हो सकती है पर उनकी इस राय को मान कर किसी भाई-बहन ने आज तक शादी नहीं

سڑک نہیں بنائی. ہاں کچھ آتما وادی آتمائیں بلانیکا دعویٰ کرتے ہیں اور یہاں وہاں آتمائیں بلانیکی اور ان سے باتیں کرنے اور سوال پوچھ کر جواب ملنے کی خبریں بھی آتی رہتی ہیں. پر آتماواد نہ تو ابھی بنسپتی والونکی نظروں میں وگیان کی حیثیت کو پہونچا ہے اور نہ سرکار کی نظروں میں اسے وگیان کا رتبہ ملا ہے. کیونکہ اگر ایسا ہوتا تو ودیا پیٹھوں میں اس کو ضرور آسن مل گیا ہوتا. اس لئے سورگ سے کوئی ویوستھا ملنے کی تو آشا ہمیں چھوڑ ہی بیٹھنا چاہئے.

آج کے بیوپاری عام طور سے اور بنسپتی کے بیوپاری خاص طور سے پہونچے ہوئے سادھو کی طرح سے پہونچے ہوئے وگیانیوں کی رائے کا خوب فائدہ اٹھاتے ہیں اور پہونچے ہوئے وگیانی سرکار کی تو آنکھ، کان، ناک، جیبھ، ہاتھ اور من سبھی کچھ ہیں. وہ ہیں اسی لئے کہ وہ جو کچھ کہیں، سرکار کے ہوکر کہیں.

وگیانیوں کی رائے کا ڈھول پیٹ کر اور سرکاری منسٹروں کی سند کو دکھا کر ان بنسپتی بیوپاریوں کو بنسپتی کا پرچار کرتے یہ کیوں نہیں سوجھتا کہ وہ انہیں منسٹروں کے اس حکم کا پالن کریں جو یہ کہتا ہے کہ کالا بازار مت کرو، جعلی چیزیں نہ بناؤ، وغیرہ وغیرہ. ان بنسپتی بیوپاریوں کا تو یہ حال ہے کہ "میٹھا میٹھا ہپ، اور کڑوا کڑوا تھو." بنسپتی بیوپاریوں کو یہ معلوم ہے کہ وگیانیوں کی رائے پر عمل کرنا ضروری نہیں ہے، کیونکہ وگیانیوں کی رائے سے اگر بھائی بہن شادی کرلیں تو ان سے سنتان اتپن ہوسکتی ہے پر ان کی اس رائے کو مان کر کسی بھائی بہن نے آج تک شادی نہیں

की. विज्ञानी सिर्फ एक सचाई बताता है. वह किसी सचाई पर अमल करने का न जोर देता है और न जोर देने का हकदार है. अगर वह अपने विज्ञान के बल पर किसी को उस सचाई पर अमल करने की सलाह देता है तो अपनी हद लांघने का जुर्म करता है. विज्ञानी यह बता सकता है कि आदमी के दांत क्या क्या चबा सकते हैं और आदमी का गला क्या क्या निगल सकता है और उसके पेट में क्या क्या जा सकता है. इसी ज्ञान के बल पर वह यह कह सकता है कि घास चबाई जा सकती है, निगली जा सकती है और पेट में पहुंच सकती है पर क्या उस की इस राय पर किसी को अमल करना चाहिये ? या किसी ने इस राय को आधार मान कर घास खाकर रहना ठीक समझा ? विज्ञानियों की राय कभी कभी इतनी खतरनाक और गन्दी होती है कि सरकार को उन पर रोक थाम लगानी पड़ती है और इस बात पर पूरा ध्यान रखना पड़ता है कि उनकी यह राय जनता तक न पहुंचने पाय.

विज्ञानियों की राय की नदी सीधी नहीं बहती. इतनी टेढ़ी बहती है कि कभी पूरब और कभी पच्छिम. मिसाल के लिये एक समय था जब विज्ञानी यह मानते थे कि जमीन थाली की तरह गोल है और उस के बीच में सुमेर पर्वत है और चांद, सूरज और और ग्रह उस सुमेर पर्वत का चक्कर काट रहे हैं. इस के बाद विज्ञानियों की यह राय हुई कि जमीन गेंद की तरह गोल है और चांद सूरज और और ग्रह उस जमीन का चक्कर काट रहे हैं और आज उन की यह राय है कि सूरज के चारों तरफ सब ग्रह और जमीन चक्कर काट रहे हैं. और चांद तो अब जमीन माता का बछड़ा बन कर

کی . وگیانی صرف ایک سچائی بتاتا ہے . وہ کسی سچائی پر عمل کرنے کا نہ زور دیتا ہے اور نہ زور دینے کا حقدار ہے . اگر وہ اپنے وگیان کے بل پر کسی کو اس سچائی پر عمل کرنے کی صلاح دیتا ہے تو اپنی حد لانگھنے کا جرم کرتا ہے . وگیانی یہ بتا سکتا ہے کہ آدمی کے دانت کیا کیا چبا سکتے ہیں اور آدمی کا گلا کیا کیا نگل سکتا ہے اور اس کے پیٹ میں کیا کیا جا سکتا ہے . اسی گیان کے بل پر وہ یہ کہہ سکتا ہے کہ گھاس چبائی جا سکتی ہے نگلی جا سکتی ہے اور پیٹ میں پہونچ سکتی ہے . پر کیا اس کی اس رائے پر کسی کو عمل کرنا چاہئے ؟ یا کسی نے اس رائے کو آدھار مان کر گھاس کھاکر رہنا ٹھیک سمجھا ؟ وگیانیوں کی رائے کبھی کبھی اتنی خطرناک اور گندی ہوتی ہے کہ سرکار کو ان پر روک تھام لگانی پڑتی ہے اور اس بات پر پورا دھیان رکھنا ہوتا ہے کہ ان کی یہ رائے جنتا تک نہ پہونچنے پائے .

وگیانیوں کی رائے کی ندی سیدھی نہیں بہتی . اتنی ٹیڑھی بہتی ہے کہ کبھی پورب اور کبھی پچھم . مثال کے لئے ایک سمے تھا جب وگیانی یہ مانتے تھے کہ زمین تھالی کی طرح گول ہے اور اس کے بیچ میں سمیر پربت ہے اور چاند سورج اور اور گرہ اس سمیر پربت کا چکر کاٹ رہے ہیں . اس کے بعد وگیانیوں کی یہ رائے ہوئی کہ زمین گیند کی طرح گول ہے اور چاند سورج اور اور گرہ اس زمین کا چکر کاٹ رہے ہیں اور آج ان کی یہ رائے ہے کہ سورج کے چاروں طرف سب گرہ اور زمین چکر کاٹ رہے ہیں . اور چاند تو اب زمین کا بچھڑا بن کر

उस के चारों तरफ घूम रहा है. यह कहकर हम यह कहना चाहते हैं कि विज्ञानी अपनी राय बदलते रहते हैं.

. विज्ञानी राय क्यों बदलते हैं ? उस की दो वजह तो हमें साफ दिखाई देती हैं. और भी हों तो पढ़ने वाले अपने आप सोचलें. एक यह कि जब विज्ञानियों की राय की नदी चलती है तो वह चलती तो एक तरफ को ही है. मान लीजिये वह पूरब की तरफ चली. पर चलते चलते रास्ते में विज्ञान की बहुत बड़ी, ऊँची सचाई का टीला आगया. तब उस राय की नदी को उस टीले का चक्कर काटने के लिये उलटा बहना ही पड़ेगा. दूसरी यह कि राय की नदी को चलते चलते बीच में कहीं सोने चांदी का ऊँचा टीला दीख पड़ा तब भी उस को चक्कर काट कर चलने के लिये पीछे मुड़ना ही पड़ेगा. मेल-मुरव्वत के टीले भी विज्ञानियों की राय की नदी को इधर उधर मोड़ देने के लिये काफ़ी होते हैं. हां, अगर विज्ञानी नीतिमान देश भक्त यानी देश की जनता की हर तरह भलाई का चाहने वाला हो तो बेशक चांदी सोने के टीले और मेल-मुरव्वत की पहाड़ियां उसकी राय की नदी के सीधे सीधे चलने में कोई रुकावट नहीं होंगी. पर सचाई की पहाड़ी तो फिर भी उसे राय बदलने के लिये मजबूर करती रहेगी. विज्ञानियों की राय इसलिये नहीं होती कि उस पर अमल किया जाय. खाने पहनने या किसी तरह की चीजें मोल लेने में इश्तिहारों में दी हुई सरकारी या सरकारी मिनिस्टरों या अफसरों की राय पर भी जनता को अमल नहीं करना चाहिये. यह किस को नहीं मालूम कि " सरकार से रजिस्ट्री की हुई ". सैकड़ों ऐसी चीजें बाजार में आती हैं जो हर तरह से

اس کے چاروں طرف گھوم رہا ہے۔ یہ کہکر ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ وگیانی اپنی رائے بدلتے رہتے ہیں۔

وگیانی رائے کیوں بدلتے ہیں ؟ اس کی دو وجہ تو ہمیں صاف دکھائی دیتی ہیں۔ اور بھی ہوں تو پڑھنے والے اپنے آپ سوچ لیں۔ ایک یہ کہ جب وگیانیوں کی رائے کی ندی چلتی ہے تو وہ چلتی تو ایک طرف کو ہی ہے۔ مان لیجئے وہ پورب کی طرف چلی۔ پر چلتے چلتے راستے میں وگیان کی بہت بڑی اونچی سچائی کا ٹیلہ آگیا۔ تب اس رائے کی ندی کو اس ٹیلے کا چکر کاٹنے کے لئے الٹا بہنا ہی پڑیگا۔ دوسری یہ کہ رائے کی ندی کو چلتے چلتے بیچ میں کہیں سونے چاندی کا اونچا ٹیلہ دیکھ پڑا تب بھی اس کو چکر کاٹ کر چلنے کے لئے پیچھے مڑنا ہی پڑیگا۔ میل مروت کے ٹیلے بھی وگیانیوں کی رائے کی ندی کو ادھر ادھر موڑ دینے کے لئے کافی ہوتے ہیں۔ ہاں اگر وگیانی نیتی مان دیش بھکت یعنی دیش کی جنتا کی ہر طرح کی بھلائی کا چاہنے والا ہو تو بیشک چاندی سونے کے ٹیلے اور میل مروت کی پہاڑیاں اس کی رائے کی ندی کے سیدھے سیدھے چلنے میں کوئی رکاوٹ نہیں ہونگے۔ پر سچائی کی پہاڑی تو پھر بھی اسے رائے بدلنے کیلئے مجبور کرتی رہیگی۔ وگیانیوں کی رائے اس لئے نہیں ہوتی کہ اس پر عمل کیا جائے۔ کھانے پہننے یا کسی طرح کی چیزیں مول لینے میں اشتہاروں میں دی ہوئی سرکاری یا سرکاری منسٹروں یا افسروں کی رائے پر بھی جنتا کو عمل نہیں کرنا چاہئے۔ یہ کس کو نہیں معلوم کہ "سرکار سے رجسٹری کی ہوئی" سینکڑوں ایسی چیزیں بازار میں آتی ہیں جو ہر طرح سے

निकम्मी होती हैं ! अगर यह कहा जाय कि "सरकार से रजिस्ट्री की हुई" सौ चीजों में से निन्यानवे चीजें खराब होती हैं तो कुछ बेजा नहीं होगा. "सरकार से रजिस्ट्री की हुई" का यह मतलब ही नहीं है कि सरकार उसकी अच्छाई-बुराई की रत्ती भर भी जिम्मेदार है. ठीक इसी तरह से इश्तिहारों में दी हुई सरकारी मिनिस्टरों की राय का कुछ अर्थ नहीं होता. जनता को इस धोके से बचना चाहिये. अगर इश्तिहारों से अलग भी कोई सरकारी या मिनिस्टरों की राय मिले तो उस राय के सिर्फ़ उतने ही दाम लगने चाहियें जितने विज्ञानियों की राय के. और यह हम ऊपर बता ही चुके हैं.

गांधी जी ने वनस्पति घी के काम को 'नीच' काम, 'धोके' का काम और 'दग़ा' का काम कहा है. इसलिये इस बारे में हम किसी की राय भी क्यों टटोलते फिरें ? और फिर हम इस बात के लिये अपने पर ही क्यों न भरोसा करें ? हमारा अपना अनुभव है और हमारे सैंकड़ों दोस्त भी यही कहते हैं कि जब भी हम वनस्पति घी भूल से खा लेते हैं या हमें धोके से खिला दिया जाता है या कोई नीच दग़ा देकर खिला देता है तो हमारे गले में खुजली सी हो जाती है और जो बहुत दिनों तक इस दग़ा के शिकार होते हैं उनके गले की खुजली तो कम हो जाती है या बहुत दिनों के बाद बिलकुल बंद हो जाती है पर इस खुजली के बंद होने के साथ साथ खाना पचना कम हो जाता है और फिर खाना पचना बिलकुल बन्द हो जाता है.

वनस्पति घी अपने आप में तो ख़राब है या नहीं है पर उसमें सबसे

نکمی ہوتی ہیں ! اگر یہ کہا جائے کہ "سرکار سے رجسٹری کی ہوئی" سو چیزوں میں سے نیناوے چیزیں خراب ہوتی ہیں تو کچھ بیجا نہیں ہوگا . "سرکار سے رجسٹری کی ہوئی" کا یہ مطلب ہی نہیں ہے کہ سرکار اس کی اچھائی برائی کی رتی بھر بھی ذمہ دار ہے . ٹھیک اسی طرح سے اشتہاروں میں دی ہوئی سرکاری منسٹروں کی رائے کا کچھ ارتھ نہیں ہوتا . جنتا کو اس دھوکہ سے بچنا چاہئیے . اگر اشتہاروں سے الگ بھی کوئی سرکاری یا منسٹروں کی رائے ملے تو اس رائے کے صرف اتنے ہی دام لگانے چاہئیں جتنے وگیانیوں کی رائے کے . اور یہ ہم اوپر بتا ہی چکے ہیں .

گاندھی جی نے بنسپتی گھی کے کام کو 'نیچ' کام ، 'دھوکے' کا کام اور 'دغا' کا کام کہا ہے . اس لئے اس بارے میں ہم کسی کی رائے بھی کیوں ٹٹولتے پھریں ؟ اور پھر ہم اس بات کے لئے اپنے پر ہی کیوں نہ بھروسہ کریں ؟ ہمارا اپنا انوبھو ہے اور ہمارے سینکڑوں دوست بھی یہی کہتے ہیں . جب بھی ہم بنسپتی گھی بھول سے کھا لیتے ہیں یا ہمیں دھوکے سے کھلا دیا جاتا ہے یا کوئی نیچ دغا دے کر کھلا دیتا ہے تو ہمارے گلے میں کھجلی سی ہوجاتی ہے اور جو بہت دنوں تک اس دغا کے شکار ہوتے ہیں انکے گلے کی کھجلی تو کم ہوجاتی ہے یا بہت دنوں کے بعد بالکل بند ہوجاتی ہے پر اس کھجلی کے بند ہونے کے ساتھ ساتھ کھانا پچنا کم ہوجاتا ہے اور پھر کھانا پچنا بالکل بند ہوجاتا ہے .

بنسپتی گھی اپنے آپ میں خراب ہے ہو نہ ہو لیکن سب سے

बड़ा ऐब तो यह है कि वह घी में इसी तरह घुल मिल जाता है कि घीसे और बढ़िया दिखाई देने लगता है और इस वजह से धोके बाज़ी और दग़ाबाज़ी की मंडी ही खुल गई है. न जाने क्यों सरकार ने इस दग़ाबाज़ी और धोके बाज़ी की तरफ से आंख फेर ली और न जाने क्यों सरकार इन भले आदमियों की बात को सुनी अन सुनी कर रही है, जो इस दग़ाबाज़ी की तरफ सरकार का ध्यान दिलाते हैं.

बड़ी बड़ी तनख़ाहें पाने वाले बड़े बड़े विज्ञानियों की मदद से यह जमा हुआ बनस्पति तेल चिकनाइयों में इतना ऊँचा आसन जमा बैठा है जितना ऊंचा आसन आज कल सिर्फ धर्म को मिला हुआ है. और धर्म जब रिशियों के हाथ से पैसे वालों के हाथ में पहुँचता है तब धर्म पर इतने ग्रंथ तैयार हो जाते हैं कि उनको घोड़ों, बैलों और गदहों की कतार भी नहीं ढो सकती. और आजकल के ज़माने में तो उनमें से किसी एक ग्रंथ की कापियों के बोझ को इधर उधर ले जाने में रेल की गाड़ी नहीं गाड़ियों की ज़रूरत पड़ेगी. इसी तरह वनस्पति नामी तत्त्व पर आज कल के विज्ञानियों और पंडितों ने बेहद लिख मारा और अब वह लिखा हुआ पैसे वालों के हाथ पड़ गया. इस लिये उनके एक एक वाक्य और उनके एक एक पद की इतनी कापियां कर दी गई हैं और रोज़ की जा रही हैं, कि उनमें से किसी एक के बोझ ढोने के लिये कितनी ही गाड़ियों और हवाई जहाज़ों की ज़रूरत पड़ेगी. शायद ही कोई अख़बार मिले जिसका एक कोना इसके प्रचार के लिये अलग, सेन्त कर न रख दिया गया हो. इतने प्रचार के बोझ से दब कर कुछ कम तनख़ाह पाने वाले और छोटे

بڑا عیب تو یہ ہے کہ وہ گھی میں اسطرح گھل مل جاتا ہے کہ گھی سے اور بڑھیا دکھائی دینے لگتا ہے اور اس وجہ سے دھوکے بازی اور دغا بازی کی منڈی ہی کھل گئی ہے. نہ جانے کیوں سرکار نے اس دغا بازی اور دھوکے بازی کی طرف سے آنکھ پھیر لی اور نہ جانے کیوں سرکار ان بھلے آدمیوں کی بات کو سنی ان سنی کر رہی ہے جو اس دغابازی کیطرف سرکار کا دھیان دلاتے ہیں.

بڑی بڑی تنخواہیں پانیوالے بڑے وگیانیوں کی مدد سے جما ہوا بنسپتی تیل چکنائیوں میں اتنا اونچا آسن جما بیٹھا ہے جتنا اونچا آسن آجکل صرف دھرم کو ملا ہوا ہے اور دھرم جب رشیوں کے ہاتھ سے پیسے والوں کے ہاتھ میں پہونچتا ہے تب دھرم پر اتنے گرنتھ تیار ہوجاتے ہیں کہ ان کو گھوڑوں، بیلوں اور گدھوں کی قطار بھی نہیں ڈھو سکتی. اور آجکل کے زمانہ میں تو ان میں سے کسی ایک گرنتھ کی کاپیوں کے بوجھ کو ادھر ادھر لیجانے میں ریل کی گاڑی نہیں گاڑیوں کی ضرورت پڑیگی. اسیطرح بنسپتی نامی تتو پر آجکل کے وگیانیوں اور پنڈتوں نے بے حد لکھ مارا. اور اب وہ لکھا ہوا پیسہ والوں کے ہاتھ پڑگیا. اس لئے ان کے ایک ایک واکیہ اور ان کے ایک ایک پدکی اتنی کاپیاں کردی گئی ہیں اور روز کی جارہی ہیں کہ انمیں سے کسی ایک کے بوجھ ڈھونے کے لئے کتنی ہی گاڑیوں اور ہوائی جہازوںکی ضرورت پڑیگی. شاید ہی کوئی اخبار ملے جسکا ایک کونہ اسکے پرچار کے لئے الگ سینت کر نہ رکھدیا گیا ہو. اتنے پرچار کے بوجھ سے دب کر کچھ کم تنخواہ پانیوالے اور چھوٹے

मोटे विद्वानों शोर मचाकर इस वनस्पति तेल को बुरा भी कहें तो उनकी कौन सुनेगा ? नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह उनकी आवाज इस शोर में ऐसी रुल मिल जायगी कि वह नक्कारे की ही आवाज बन बैठेगी.

महाभारत कार ने महाभारत में 'धर्म' क्या है' इसका बड़ा सुन्दर जवाब दिया और वह यह है, "धर्म के बारे में वेदों के मत अलग अलग हैं, श्रुतियों के मत अलग अलग हैं, कोई ऐसे रिशि मुनि नहीं जिनकी अपनी अलग राय न हो इस लिये यही समझना चाहिये कि धर्म-तत्त्व बहुत ही गहरा छिपा हुआ है और सिवाय इसके कोई चारा नहीं है कि हम उसी रास्ते चलें जिस रास्ते हमारे बड़े बूढ़े गये हैं" बस, इसी सलाह के बल पर हम अपने पढ़ने वालों से यही कहेंगे कि वनस्पति के बारे में अंगरेज़ी की किताबें अलग अलग कुछ कहती हैं और उसी तरह हिन्दी और दूसरी भाषाओं की किताबों में से कोई कुछ कहती हैं और कोई कुछ. और आज कल के विद्वानों पंडित और सरकारी अफसर भी वनस्पति के बारे में एक मत नहीं हैं. इसलिये यही समझना चाहिये कि वनस्पति-तत्त्व बहुत गहरा छिपा हुआ है और सिवाय इसके कोई चारा नहीं है कि हम उस रास्ते चलें जिस रास्ते हमारे बड़े बूढ़े गये हैं. और वह तो यही बता गये हैं कि वनस्पति खाना अपनी तन्दुरुस्ती खराब करना है और कितने ही रोग मोल लेना है. फिर चाहे वनस्पति घी नाम से बिके या जमे तेल नाम से.

२३-६-५०. भगवानदीन

موٹے ودوان شور مچاکر اس بنسپتی تیل کو برا بھی کہیں تو ان کی کون سنیگا ؟ نقار خانہ میں طوطی کی آواز کیطرح انکی آواز اس شور میں ایسی رل مل جائیگی کہ وہ نقار خانہ کی ہی آواز بن بیٹھیگی ۔

مہابھارت کار نے مہابھارت میں 'دھرم کیا ہے' اس کا بڑا سندر جواب دیا اور وہ یہ ہے " دھرم کے بارے میں ویدوں کے مت الگ الگ ہیں' شرتیوں کے مت الگ الگ ہیں' کوئی ایسے رشی منی نہیں ہیں جنکی اپنی الگ رائے نہ ہو اس لئے یہ سمجھنا چاہئے کہ دھرم تتو بہت ہی گہرا چھپا ہوا ہے اور سوائے اس کے کوئی چارہ نہیں ہے کہ ہم اسی راستے چلیں جس راستے ہمارے بڑے بوڑھے گئے ہیں ." بس' اسی صلاح کے بل پر ہم اپنے پڑھنے والوں سے یہی کہیں گے کہ بنسپتی کے بارے میں انگریزی کی کتابیں الگ الگ کچھ کہتی ہیں اور اسیطرح ہندی اور دوسری بھاشاؤں کی کتابوں میں سے کوئی کچھ کہتی ہیں اور کوئی کچھ . اور آجکل کے ودوان پنڈت اور سرکاری افسر بھی بنسپتی کے بارے میں ایک مت نہیں ہیں . اس لئے یہی سمجھنا چاہئے کہ بنسپتی تتو بہت گہرا چھپا ہوا ہے اور سوائے اس کے کوئی چارہ نہیں ہے کہ ہم اس راستے چلیں جس راستے ہمارے بڑے بوڑھے گئے ہیں اور وہ تو یہی بتا گئے ہیں کہ بنسپتی کھانا اپنی تندرستی خراب کرنا ہے اور کتنے ہی روگ مول لینا ہے . پھر چاہے بنسپتی گھی کے نام سے بکے یا جمے تیل کے نام سے .

۲۳-۶-۵۰ بھگوان دین

जनता की चिन्ता

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

चिन्ता ही जनता में दुख दर्द पैदा करती और उसकी दिमाग़ी दुनिया में हलचल मचाती है. यही हलचल आगे चल कर उसकी ज़िन्दगी में क्रान्ति का कारन बनती है.

चिन्ता से ही जनता बे नींद और बे आराम रहती है. बे कौड़ी और बे दाम रहती है.

बे नींद और बेआराम रखने वाली ताक़त या असर का असली नाम ही असल में दुख दर्द, ग़म फ़िक्र और चिन्ता है. इसी चिन्ता के असर और तकलीफ़ से एक नई तहरीक और नया आन्दोलन जनता के जीवन में जन्म लेता है जिसके कारन नये नये विचार उसके दिमाग़ में आते जाते हैं और इस आन्दोलन को सारे ढांचे में फैलाते हैं. गोया पहले अन्दर ही अन्दर इन्क़लाबी मंडल में चलाते हैं. इसके बाद बाहर लाकर तारीक माहौल और उसकी ग़मनाकी से उसका परिचय कराते हैं. यह परिचय उसके बदन में कँपकँपी और लरज़ा पैदा करता है. जिस से उसको बुख़ार की सी कैफ़ियत महसूस होने लगती है—यह बुख़ार चिन्ता का लरज़ा है.

चिन्ता से घर घर प्रेशानी फैलती है. देस देस ग़म की लहरें उठती हैं. यह लहरें फ़िज़ा को अलग ग़मगीन बनाती हैं और हवा पर

جنتا کی چنتا

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

چنتا ہی جنتا میں دکھ درد پیدا کرتی اور اس کی دماغی دنیا میں ہل چل مچاتی ہے . یہی ہل چل آگے چل کر اسکی زندگی میں کرانتی کا کارن بنتی ہے .

چنتا سے ہی جنتا بے نیند اور بے آرام رہتی ہے . بے کوڑی اور بے دام رہتی ہے .

بے نیند اور بے آرام رکھنے والی طاقت یا اثر کا نام ہی اصل میں دکھ درد، غم فکر اور چنتا ہے . اسی چنتا کے اثر اور تکلیف سے ایک نئی تحریک اور نیا آندولن جنتا کے جیون میں جنم لیتا ہے جس کے کارن نئے نئے وچار اس کے دماغ میں آتے جاتے ہیں اور اس آندولن کو سارے ڈھانچے میں پھیلاتے ہیں گویا پہلے اندر ہی اندر انقلابی منڈل میں چلاتے ہیں . اس کے بعد باہر لاکر تاریک ماحول اور اس کی غمناکی سے اس کا پریچے کراتے ہیں . یہ پریچے اس کے بدن میں کپکپی اور لرزہ پیدا کرتا ہے ؛ جس سے اس کو بخار کی سی کیفیت محسوس ہونے لگتی ہے — یہ بخار چنتا کا لرزہ ہے .

چنتا سے گھر گھر پریشانی پھیلتی ہے . دیش دیش غم کی لہریں اٹھتی ہیں . یہ لہریں فضا کو الگ غمگین بناتی ہیں اور ہوا پر

अलग रंज के पैग़ाम दौड़ाती है. जिसकी वजह से ग़म के बादल हर सू छा जाते हैं और देस के देस अमन से महरूम रहने लग जाते हैं. कुटुम्ब के कुटुम्ब शान्ति को तरसने लगते हैं.

इन सारी मुसीबतों, परेशानियों और बद अमनियों का कारन केवल जनता की चिन्ता है. मगर जनता की कौन सुनता है ?

जो आप ही आप जीवन के मज़े लूटता है वह कब उस ग़रीब को पूछता है ?

हालाँकि वह उसकी भारी ज़िम्मेदारी होती है.

लेकिन अपनी ज़िम्मेदारी कौन पूरी करता है ?

यही तो बड़ी मुसीबत है.

यही तो सारा मातम है.

इसी का तो रोना है.

चिन्ता एक ज़हर और एक बीमारी है. एक रोग और एक ख़तरा है.

बेशक चिन्ता एक ख़तरा है और ख़तरनाक हादसा — जिससे दिल को चोट लगती है. दिमाग़ को धक्का पहुँचता है.

चिन्ता एक आग है जिससे अन्दर ही अन्दर कलेजा जलता है और धुआँ उठता है—दम घुटता है. ग़म बढ़ता है.

इसी से फ़िज़ा बिगड़ती है और बिगड़ कर दामन अपना नोचती है. इसी से हवा पलटती है और पलट कर रुख़ अपना फेरती है.

चिन्ता एक काँटा है जो धीरे धीरे इन्सान का कलेजा खोंचता है. ख़ून चूसता है. भेजा चबाता है. गूदा खाता है.

الگ رنج کے پیغام دوڑاتی ھیں. جسکی وجہ سے غم کے بادل ھر سو چھا جاتے ھیں اور دیس کے دیس امن سے محروم رھنے لگ جاتے ھیں. کٹمب کے کٹمب شانتی کو ترسنے لگتے ھیں.

ان ساری مصیبتوں، پریشانیوں اور بد امنیوں کا کارن کیول جنتا کی چنتا ھے. مگر جنتا کی کون سنتا ھے ؟

جو آپ ھی آپ جیون کے مزے لوٹتا ھے وہ کب اس غریب کو پوچھتا ھے ؟

حالانکہ وہ اس کی بھاری ذمہ داری ھوتی ھے.

لیکن اپنی ذمہ داری کون پوری کرتا ھے ؟

یہی تو بڑی مصیبت ھے.

یہی تو سارا ماتم ھے.

اسی کا تو رونا ھے

چنتا ایک زھر اور ایک بیماری ھے. ایک روگ اور ایک خطرہ ھے.

بیشک چنتا ایک خطرہ ھے اور خطرناک حادثہ — جس سے دل کو چوٹ لگتی ھے. دماغ کو دھکا پہونچتا ھے.

چنتا ایک آگ ھے جس سے اندر ھی اندر کلیجہ جلتا ھے اور دھواں اٹھتا ھے — دم گھٹتا ھے. غم بڑھتا ھے.

اسی سے فضا بگڑتی ھے. اور بگڑ کر دامن اپنا نوچتی ھے. اسی سے ھوا پلٹتی ھے اور پلٹ کر رخ اپنا پھیرتی ھے.

چنتا ایک کانٹا ھے جو دھیرے دھیرے انسان کا کلیجہ نوچتا ھے. خون چوستا ھے. بھیجا چباتا ھے. گودا کھاتا ھے.

चिन्ता, दिमाग़ को खोखला करने वाला एक बरमा है जो हर वक़्त दिमाग़ में बरमाता रहता है.

चिन्ता, खुदकुशी कराने वाला एक अन्दरूनी आन्दोलन है—यानी जान लेवा आन्दोलन.

चिन्ता, हैजान उठाने वाला एक तेज़ाबी माद्दा है, जिससे दिमाग़ चकराता और दिल घबराता है. यही बाज़ वक़्त इन्सान को दीवाना और पागल बना देता है. यही खुदक खुदक कर दिल में छाले डालता रहता है और यही एक ऐसा कीड़ा है जो सारे बदन के अन्दर घुन कर उसे खाता रहता है.

चिन्ता, वर्तमान काल को रौंद कर भविष्य काल का भी बुरा हाल बनाती है.

चिन्ता, जज़बात का खून भी करती है, भून भी डालती है.

चिन्ता अपने ज़हरीले असर से नसलों को वक़्त से पहले हलाकत का पैग़ाम देती है और क़ौम को तबाही की त ले जाती है.

चिन्ता का ख़तरनाक असर अफ़राद की ज़िन्दगियों पर पड़ता है और ज़िन्दगियों की तन्दुरुस्तियों पर.

चिन्ता, इन्सान को मार भी डालती है, और एहसास पैदा कर के मुरदा दिलों में जान भी डालती है.

चिन्ता, हाज़मा ख़राब करती है—हाज़मे की बात तो बाद की चिन्ता, इन्सान की भूक मारती है और उसको खाकर अपनी भूक पूरी करती है. इसीलिये कहते हैं "ग़म उसको खागया."

چنتا' دماغ کو کھوکھلا کرنے والا ایک برما ہے جو ہر وقت دماغ میں برماتا رہتا ہے ۔

چنتا' خودکشی کرانے والا ایک اندرونی آندولن ہے — یعنی جان لیوا آندولن ۔

چنتا' ہیجان اٹھانے والا ایک تیزابی مادہ ہے ۔ جس سے دماغ چکراتا اور دل گھبراتا ہے ۔ یہی بعض وقت انسان کو دیوانہ اور پاگل بنا دیتا ہے ۔ یہی کھدک کھدک کر دل میں چھالے ڈالتا رہتا ہے اور یہی ایک ایسا کیڑا ہے جو سارے بدن کے اندر گھن بن کر اسے کھاتا رہتا ہے ۔

چنتا' ورتمان کال کو روندھ کر بھوشیہ کال کا بھی برا حال بناتی ہے ۔

چنتا' جذبات کا خون بھی کرتی ہے' بھون بھی ڈالتی ہے ۔

چنتا' اپنے زہریلے اثر سے نسلوں کو وقت سے پہلے ہلاکت کا پیغام دیتی ہے اور قوم کو تباہی کی طرف لے جاتی ہے ۔

چنتا کا خطرناک اثر افراد کی زندگیوں پر پڑتا ہے اور زندگیوں کی تندرستیوں پر ۔

چنتا' انسان کو مار بھی ڈالتی ہے اور احساس پیدا کرکے مردہ دلوں میں جان بھی ڈالتی ہے ۔

چنتا' ہاضمہ خراب کرتی ہے — ہاضمے کی بات تو بعد کی چنتا' انسان کی بھوک مارتی ہے اور اس کو کھاکر اپنی بھوک پوری کرتی ہے ۔ اسی لئے کہتے ہیں "غم اس کو کھا گیا"

चिन्ता के इन तमाम दरजों को ते करके जब इन्सान बिलकुल दिक़ हो जाता है तो वही दिक़ चिन्ता कहलाता है. आज की सियासी दुनिया में ज़िन्दगी की यह चिन्ता "सियासी दिक़" है—यानी सियासत की लाई हुई.

इस लिये इस दिक़ का इलाज न किसी दिक़ के हस्पताल में मिलेगा और न किसी "टी० बी० वार्ड" में.

इस दिक़ का इलाज सिर्फ़ मन्त्रियों के वार्ड में मिलेगा या सियासी हस्पताल में—क्यों कि इस राज नैतिक दिक़ के जरासीम इन्हीं राजनीतिकारों के फैलाए हुए हैं. इस लिये उसका इलाज भी वही ठीक और कामयाबी के साथ कर सकते हैं अगर वह चाहें तो—

जिस तरह डाक्टरों के लिये एक मोटा ताज़ा बीमार अच्छा ख़ासा शिकार होता है इसी तरह लीडरों का शिकार उनकी साधारन जनता है. यह अगरचे ग़रीब है लेकिन फिर भी इस की चरबी उनके काम की चीज़ है.

सच यह है दुखियारों और ग़मख़्वारों के साथ सची हमदर्दी न डाक्टरों के पास होती है और न लीडरों के पास. लीडरों को तो यह सबक़ सियासत ने पढ़ाया ही नहीं कि मौक़े से फ़ायदा न उठाया जाय—अगर कोई बीमार मालदार है और जल्दी अच्छा हो कर भगवान की कृपा से वह ज़िन्दगी पा जाये तो डाक्टर की आशा मर जाती है—इसी तरह और 'जनता की चिन्ता' ख़ुदा की मेहरबानी से दूर हो जाये तो नेता की कमान गिर जाती है और उसके ख़्वाबों की ताबीरें पलट जाती हैं. क्योंकि जनता की

چنتا کے ان تمام درجوں کو طے کرکے جب انسان بالکل دق هو جاتا هے تو وهی دق چنتا کہلاتا هے . آج کی سیاسی دنیا میں زندگی کی یہ چنتا " سیاسی دق " هے — یعنی سیاست کی لائی هوئی .

اسی لئے اس دق کا علاج نہ کسی دق کے هسپتال میں ملے گا اور نہ کسی " ٹی بی وارڈ " میں

اس دق کا علاج صرف منتریوں کے وارڈ میں ملیگا یا سیاسی هسپتال میں — کیونکہ اس راجنیتک دق کے جراثیم انہی راجنیتی کاروں کے پھیلائے هوئے هیں . اس لئے اس کا علاج بھی وهی ٹھیک اور کامیابی کے ساتھ کرسکتے هیں اگر وہ چاهیں تو —

جس طرح ڈاکٹروں کے لئے ایک موٹا تازہ بیمار اچھا خاصا شکار هوتا هے اسیطرح لیڈروں کا شکار ان کی سادھارن جنتا هے . یہ اگرچہ غریب هے لیکن پھر بھی اس کی چربی ان کے کام کی چیز هے .

سچ یہ هے دکھیاروں اور غم خواروں کے ساتھ سچی همدردی نہ ڈاکٹروں کے پاس هوتی هے اور نہ لیڈروں کے پاس — لیڈروں کو تو یہ سبق سیاست نے پڑھایا هی نہیں کہ موقع سے فایدہ نہ اٹھایا جائے — اگر کوئی بیمار مالدار هے اور جلدی اچھا هوکر بھگوان کی کرپا سے وہ زندگی پاجائے تو ڈاکٹر کی آشا مرجاتی هے — اسی طرح اگر جنتا کی چنتا خدا کی مہربانی سے دور هوجائے تو نیتا کی کمان گرجاتی هے اور اس کے خوابوں کی تعبیریں پلٹ جاتی هیں — کیونکہ جنتا کی

परेशानियाँ ही उसकी कामयाबियों और ऐशसामानियों के ज़रिये हैं. इन्हीं का सहारा लेकर और इसी डोर को पकड़कर वह अपने ज़ाती फ़ायदे के रस्ते पर लगा रहता और बढ़ता चला जाता है.

हर हर देस और मुल्क के नेता—किसान का, मजदूर का और ग़रीब जनता के नाम का ढोल पीट पीट कर अपनी लीडरी और नेतागीरी क़ायम रखते हैं. हालाँकि उन ग़रीबों को ख़ाक कुछ नहीं मिलता—वही उनके नाम से लाभ उठाते हैं—यह जनता के साथ हमदर्दी हुई या दुश्मनी ?

जिस नेता की जनता के पेट को टुकड़ा न मिले और न तन को कपड़ा नसीब हो तो ऐसे नेता से जनता को क्या फ़ायदा ?

यह तो नेताओं के बिलकुल बस और एख़तियार की बात है कि वह जनता के अन्दर से चिन्ता दूर कर के उसके जीवन को ख़तरनाकी से बचा लें और नया उसको प्रान दें.

जनता की भलाई, नेता की नियत की नेकी और ख़िदमत की सच्चाई पर मौक़ूफ़ है.

जनता की सेवा और रच्छा नेता ही कर सकते हैं. क्यों कि वही उसके सेवक और रच्छक होते हैं.

जनता हर वक़्त अपने नेताओं की तरफ़ देखती रहती है. उनके सन्देशों पर ध्यान रखती है और उनकी आवाज़ों पर कान.

जब जनता अपने नेताओं के साथ प्रेम और अक़ीदत रखे तो क्या नेताओं का यह फ़र्ज़ नहीं है कि वह उसकी मुहब्बत का जवाब अपनी मुहब्बत से दें और उसकी श्रद्धा को आदर का दरजा बख़्शें—अगर नेतागीरी की शान या उन की कुरसी की ऊँचान उन्हें इजाज़त नहीं देती तो कम से कम इंसानियत ही का हक़ अदा करें.

پریشانیاں ہی اس کی کامیابیوں اور عیش سامانیوں کے ذریعے ہیں۔ انہی کا سہارا لے کر اور اسی ڈوری کو پکڑ کر وہ اپنے ذاتی فائدے کے رستے پر لگا رہتا اور بڑھتا چلا جاتا ہے۔

ہر ہر دیس اور ملک کے نیتا — کسان کا، مزدور کا اور غریب جنتا کے نام کا ڈھول پیٹ پیٹ کر اپنی لیڈری اور نیتا گیری قائم رکھتے ہیں۔ حالانکہ ان غریبوں کو خاک کچھ نہیں ملتا؛ وہی ان کے نام سے لابھ اٹھاتے ہیں — یہ جنتا کے ساتھ ہمدردی ہوئی یا دشمنی؟

جس نیتا کی جنتا کے پیٹ کو ٹکڑا نہ ملے اور تن کو کپڑا نصیب نہ ہو تو ایسے نیتا سے جنتا کو کیا فائدہ؟

یہ تو نیتاؤں کے بالکل بس اور اختیار کی بات ہے کہ وہ جنتا کے اندر سے چنتا دور کرکے اس کے جیون کو خطرناکی سے بچالیں اور نیا اس کو پران دیں۔

جنتا کی بھلائی، نیتا کی نیت کی نیکی اور خدمت کی سچائی پر موقوف ہے۔

جنتا کی سیوا اور رکشا نیتا ہی کرسکتے ہیں۔ کیونکہ وہی اس کے سیوک اور رکشک ہوتے ہیں۔

جنتا، ہر وقت اپنے نیتاؤں کی طرف دیکھتی رہتی ہے۔ ان کے سندیشوں پر دھیان رکھتی ہے اور ان کی آوازوں پر کان۔

جب جنتا اپنے نیتاؤں کے ساتھ پریم اور عقیدت رکھے تو کیا نیتاؤں کا یہ فرض نہیں ہے کہ وہ اس کی محبت کا جواب اپنی محبت سے دیں اور اس کی شردھا کو آدر کا درجہ بخشیں — اگر نیتا گیری کی شان یا ان کی کرسی کی اونچان انہیں اجازت نہیں دیتی تو کم سے کم انسانیت ہی کا حق ادا کریں۔

छोड़ें जनता के हक़ को,
धता बताय सेवा के शब्द को.
इंसानियत का भी तो आख़िर उन पर कुछ हक़ है.
एख़लाक़ का भी तो आख़िर उन पर कुछ फ़र्ज़ है.

चिन्ता से जनता को निजात दिलाना और अपने सुन्दर एख़लाक़ और सुन्दर बर्ताव से उसको सुख शान्ति पहुंचाना नेताओं का काम है. वह ग़रज़ के बन्दे और नाम के सेवक, और वह सारे मतलब परस्त बुत इसी के बनाये और बिठाये हुए हैं जो मेमबरी की कुरसियों पर आसन जमाये बैठे हैं—वह तमाम सियासी चेहरे और मौक़ादी मोहरे इसी के हाथ से ख़ानों में जमाये हुए हैं. उन का जो कुछ पद और पोज़ीशन है वह भी इसीका दिया हुआ है. इसलिये जनता को यह हक़ और एख़तियार हर वक़्त हासिल है कि वह जब चाहे उस पद को वापस ले सकती है और जब चाहे उसकी कुरसी छीन सकती है—चुनाव इसी कारन होते हैं. राय के बहुमत का यही मतलब और मंशा होता है.

नेता अगर जनता पर कृपा रक्खें तो उसकी चिन्ता दूर हो सकती है.

नेता अगर जनता के साथ मुहब्बत और हमदर्दी बरते तो वह अपनी ज़िन्दगी में सुख सन्तोष पा कर जान भी उस पर क़ुरबान कर सकती है.

नेता अगर जनता के साथ प्रेम, त्याग और सदाचार से काम ले तो वह जनता को अपनी रक्षा के लिये अपने सामने एक मज़बूत दीवार की तरह खड़ा पाये.

چھوڑیں جنتا کے حق کو،
دھتا بتائیں سیوا کے شبد کو.
انسانیت کا بھی تو آخر اُن پر کچھ حق ہے .
اخلاق کا بھی تو آخر اُن پر کچھ فرض ہے .

چنتا سے جنتا کو نجات دلانا اور اپنے سندر اخلاق اور سندر برتاؤ سے اس کو سکھ شانتی پہونچانا نیتاؤں کا کام ہے . وہ غرض کے بندے اور نام کے سیوک، اور وہ سارے مطلب پرست بت اسی کے بنائے اور بٹھائے ہوئے ہیں جو ممبری کی کرسیوں پر آسن جمائے بیٹھے ہیں — وہ تمام سیاسی چہرے اور میعادی مہرے اسی کے ہاتھ سے خانوں میں جمائے ہوئے ہیں . اُن کا جو کچھ پد اور پوزیشن ہے وہ بھی اسیکا دیا ہوا ہے . اس لئے جنتا کو یہ حق اور اختیار ہر وقت حاصل ہے کہ وہ جب چاہے اُس پد کو واپس لے سکتی ہے اور جب چاہے اسکی کرسی چھین سکتی ہے— چناؤ اسی کارن ہوتے ہیں . رائے کے بہومت کا یہی مطلب اور منشا ہوتا ہے .

نیتا اگر جنتا پر کرپا رکھیں تو اسکی چنتا دور ہوسکتی ہے .

نیتا اگر جنتا کے ساتھ محبت اور ہمدردی برتے تو وہ اپنی زندگی میں سکھ سنتوش پاکر جان بھی اس پر قربان کرسکتی ہے .

نیتا اگر جنتا کے ساتھ پریم، تیاگ اور سداچار سے کام لے تو وہ جنتا کو اپنی رکشا کے لئے اپنے سامنے ایک مضبوط دیوار کی طرح کھڑا پائے .

जनता को ताक़तवर और सेहतवर बनाने के यही साधन हैं. इन्हीं साधनों से वह अपने अन्दर नई ज़िन्दगी और नई शक्ति पा सकती है और उस शक्ति को किसी भी वक़्त उस पर खर्च कर सकती है. क्यों कि दिल की जीत दिल से होती है.

जनता नाम है वफ़ादार गिरोह का, ज़रूरी है पहले इस गिरोह के सुपुर्द वफ़ादारी की जाये फिर उसको आज़माया जाये. यह शोभा नहीं देता कि जनता को चिन्ता में डालकर उसकी जान लेने की ठान ली जाये—यह वफ़ादारी आज़माने का तरीक़ा ग़लत है.

जब नेता जनता का ग़म दूर न कर सके, तकलीफ़ों और परेशानियों से रिहाई न दिला सके, फ़िकरों के जाल से निकाल कर उसे ख़ुशहाल न बना सके, उसके लिये भलाई की राहें न निकाल सकें और उसके दुखी जीवन के लिये अच्छा और शान्ति पूर्ण प्रबंध न कर सके तो वह जन सेवक या शुभ चिन्तक कहलाने का मुसतहक़ नहीं.

जब उसने सारी ज़िम्मेदारियाँ अपने ऊपर ले लीं और उनको वह पूरा न कर सका,

जब उसने पूरी ख़िदमत और सेवा का विश्वास दिलाया मगर "अल्फ़ाज़ और विश्वास" दोनों को वह क़ायम और बाक़ी न रख सका तो ऐसी सूरत में वह ज़िम्मेदारी की उस नाज़ुक कुरसी पर केवल एक बोझ है.

جنتا کو طاقتور اور صحتور بنانے کے یہی سادھن ہیں. انہی سادھنوں سے وہ اپنے اندر نئی زندگی اور نئی شکتی پاسکتی ہے. اور اس شکتی کو کسی بھی وقت اس پر خرچ کرسکتی ہے. کیونکہ دل کی جیت، دل سے ہوتی ہے.

جنتا نام ہے وفادار گروہ کا، ضروری ہے پہلے اس گروہ کے سپرد وفاداری کی جائے پھر اس کو آزمایا جائے.

یہ شوبھا نہیں دیتا کہ جنتا کو چنتا میں ڈال کر اس کی جان لینے کی ٹھان لی جائے — یہ وفاداری آزمانے کا طریقہ غلط ہے.

جب نیتا جنتا کا غم دور نہ کرسکے، تکلیفوں اور پریشانیوں سے رہائی نہ دلا سکے، فکروں کے جال سے نکالکر اسے خوشحال نہ بناسکے، اسکے لئے بھلائی کی راہیں نہ نکال سکے اور اسکے دکھی جیون کے لئے اچھا اور شانت پورن پربندھ نہ کرسکے تو وہ جن سیوک، شبھ چنتک کہلانے کا مستحق نہیں.

جب اس نے ساری ذمےداریاں اپنے اوپر لے لیں اور ان کو وہ پورا نہ کرسکا،

جب اس نے پوری خدمت اور سیوا کا وشواس دلایا مگر "الفاظ اور وشواس" دونوں کو وہ قایم اور باقی نہ رکھ سکا تو ایسی صورت میں وہ ذمےداری کی اس نازک کرسی پر کیول ایک بوجھ ہے.

इस्लाम का सामाजी संगठन

[२६ जून १९५० को आल इन्डिया रेडियो पटना से पं० सुन्दर लाल की बात चीत]

इस्लाम के माने अरबी में अमन, इतमिनान, शान्ति, सन्तोष, दूसरे के सामने झुक जाना या दूसरे की मरजी पर अपने को छोड़ देना है. दीन में इस्लाम के माने अल्लाह की मरजी पर अपने को छोड़ देना यानी अल्लाह की आज्ञाओं को पालना और उसी में संतोष मानना है. इसी को गीता और हिन्दू धर्म की दूसरी किताबों में अपने को ईश्वर के अर्पन कर देना कहा गया है.

इस्लाम की किताबों में इस्लाम शब्द दो साफ़ अलग अलग मानों में आता है. एक दुनिया के सब बड़े बड़े मजहबों के वह बुनियादी असूल जो दुनिया के शुरू से चले आ रहे हैं और जो सब धर्मों में एक से हैं. और दूसरे वह मजहबी रास्ता या पूजा बन्दगी के वह रीत रिवाज जो आज से साढ़े तेरह सौ बरस पहले हजरत मोहम्मद के जमाने से शुरू हुए और अब तक चले आ रहे हैं.

क़ुरान में जगह जगह क़ुरान से पहले के सब बड़े मजहबों को 'इस्लाम' नाम दिया गया है. और उन के मानने वालों को 'मुस्लिम' या 'मुसलमान' कहा गया है. लिखा है कि दुनिया के शुरू से सब मुल्कों, सब क़ौमों और सब जमानों में अल्लाह के रसूल या पैग़म्बर आते रहे हैं. इन सब ने अपनी अपनी जबानों में एक ही बुनियादी

اِسلام کا سماجی سنگٹھن

[۲۹ جون ۱۹۵۰ع کو آل اِنڈیا ریڈیو پٹنہ سے پنڈت سندر لال کی بات چیت .]

اِسلام کے معنی عربی میں امن' اطمینان' شانتی' سنتوش' دوسرے کے سامنے جھک جانا یا دوسرے کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ دینا ہے . دین میں اسلام کے معنی اللہ کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ دینا یعنی اللہ کی آگیاؤں کو پالنا اور اسی میں سنتوش ماننا ہے . اِسی کو گیتا اور ہندو دھرم کی دوسری کتابوں میں اپنے کو ایشور کے ارپن کردینا کہا گیا ہے .

اسلام کی کتابوں میں اسلام شبد دو صاف الگ الگ معنوں میں آتا ہے . ایک دنیا کے سب بڑے بڑے مذہبوں کے وہ بنیادی اصول جو دنیا کے شروع سے چلے آرہے ہیں اور جو سب دھرموں میں ایک سے ہیں . اور دوسرے وہ مذہبی راستہ یا پوجا بندگی کے وہ ریت رواج جو آج سے ساڑھے تیرہ سو برس پہلے حضرت محمد کے زمانے سے شروع ہوئے اور اب تک چلے آرہے ہیں .

قرآن میں جگہ جگہ قرآن سے پہلے کے سب بڑے مذہبوں کو ' اسلام ' نام دیا گیا ہے . اور ان کے ماننے والوں کو ' مسلم ' یا ' مسلمان ' کہا گیا ہے . لکھا ہے کہ دنیا کے شروع سے سب ملکوں' سب قوموں اور سب زمانوں میں اللہ کے رسول یا پیغمبر آتے رہے ہیں' ان سب نے اپنی اپنی زبانوں میں ایک ہی بنیادی

सचाइयों का उपदेश दिया है. जो ईश्वरी यानी इलामी किताबें वह छोड़ गये हैं—और कोई ज़माना नहीं जब इस तरह की किताबें न रही हों—उन सब में एक ही सी तालीम दी गई है और उसी का नाम इस्लाम है. और जो आदमी भी जिस मुल्क और जिस ज़माने में भी उस महा पुरुष की बताई हुई या अपनी उस धार्मिक किताब में लिखी हुई उन बुनयादी सचाइयों को मानता रहा है और उन पर अमल करता रहा है वह मुसलमान है—जितनी बातें हमने यहाँ कही हैं ठीक उन ही के मतलब की और लगभग उन्हीं शब्दों में क़ुरान की पचासों आयतें नक़ल की जा सकती हैं.

इस माने में इस्लाम कोई नया मज़हब नहीं है. क़ुरान में जगह जगह यह भी कहा गया है कि इस किताब यानी क़ुरान में ऐसी बात नहीं कही गई जो इस से पहले की किताबों में नहीं है. और न हज़रत मुहम्मद के ज़रिये किसी ऐसी बात की तालीम दी गई है जो उन से पहले के रसूलों ने नहीं कही. यहाँ तक कि क़ुरान में एक जगह क़ुरान से पहले की किताबों को भी "क़ुरान" नाम दिया गया है.

अब हम इस्लाम के इस बड़े माने से हट कर उसके दूसरे माने की तरफ़ आते हैं यानी दीन धर्म की वह राह जो मुल्क अरब में हज़रत मुहम्मद के ज़माने से से शुरू हुई. इन मानों में क़ुरान के मुताबिक़ हर मुसलमान के लिये पाँच और सिर्फ़ पाँच बातें मानना ज़रूरी है—एक अल्लाह, दूसरे फ़रिश्ते, तीसरे सब ईश्वरी किताबें, चौथे दुनिया के सब रसूल और पाँचवें आख़िरत का दिन. इन पाँचों में एक अल्लाह या ईश्वर को मानना तो लगभग सब धर्मों

سچائیوں کا اپدیش دیا ہے. جو ایشوری یعنی الہامی کتابیں یہ چھوڑ گئے ہیں — اور کوئی زمانہ نہیں جب اس طرح کی کتابیں نہ رہی ہوں — ان سب میں ایک ہی سی تعلیم دی گئی ہے اور اسی کا نام اسلام ہے. اور جو آدمی بھی جس ملک اور جس زمانے میں بھی اس مہا پرش کی بتائی ہوئی یا اپنی اس دھارمک کتاب میں لکھی ہوئی ان بنیادی سچائیوں کو مانتا رہا ہے اور ان پر عمل کرتا رہا ہے وہ مسلمان ہے — جتنی باتیں ہم نے یہاں کہی ہیں ٹھیک ان ہی کے مطلب کی اور لگ بھگ انہیں شبدوں میں قرآن کی پچاسوں آیتیں نقل کی جاسکتی ہیں.

اس معنے میں اسلام کوئی نیا مذہب نہیں ہے. قرآن میں جگہ جگہ یہ بھی کہا گیا ہے کہ اس کتاب یعنی قرآن میں کوئی ایسی بات نہیں کہی گئی جو اس سے پہلے کی کتابوں میں نہیں ہے. اور نہ حضرت محمد کے ذریعے کسی ایسی بات کی تعلیم دی گئی ہے جو ان سے پہلے کے رسولوں نے نہیں کہی. یہاں تک کہ قرآن میں ایک جگہ قرآن سے پہلے کی کتابوں کو بھی "قرآن" نام دیا گیا ہے.

اب ہم اسلام کے اس بڑے معنے سے ہٹ کر اس کے دوسرے معنے کی طرف آتے ہیں یعنی دین دھرم کی وہ راہ جو ملک عرب میں حضرت محمد کے زمانے سے شروع ہوئی. ان معنوں میں قرآن کے مطابق ہر مسلمان کے لئے پانچ اور صرف پانچ باتیں ماننا ضروری ہے — ایک اللہ، دوسرے فرشتے، تیسرے سب ایشوری کتابیں، چوتھے دنیا کے سب رسول اور پانچویں، آخرت کا دن. ان پانچوں میں ایک اللہ یا ایشور کو ماننا تو لگ بھگ سب دھرموں

में एक सा है. फ़रिश्ते अल्लाह और इन्सान के बीच की कोई हस्तियाँ हो सकते हैं. लेकिन क़ुरान की टीका करने वाले कुछ मुसलमान आलिमों की राय है कि फ़रिश्ते कोई अलग हस्तियाँ नहीं हैं न कहीं आसमान पर बैठे हैं. जिस तरह शैतान कोई अलग हस्ती नहीं है बल्कि हर आदमी के दिल के अन्दर बुराई की तरफ़ जो झुकाव है उसी का नाम शैतान है उसी तरह आदमी के अन्दर के नेक रुझानों का नाम "फ़रिश्ते" है. यह नेक रुझान अल्लाह ही की शक्तें हैं जो घट घट में काम कर रही हैं. इस राय की क़ुरान और मुहम्मद साहब के उपदेशों से काफ़ी तसदीक़ होती है. यहाँ यह भी साफ़ कर देना ज़रूरी है कि क़ुरान और इस्लाम के मुताबिक़ सिवाए एक अल्लाह के, फ़रिश्ते या इन्सान किसी दूसरे की पूजा करना या किसी दूसरे के सामने सर झुकाना या दीन में किसी दूसरे से मदद चाहना या अल्लाह के सामने किसी की सिफ़ारिश की उम्मीद करना गुनाह है. तीसरी और चौथी चीज़ दुनिया भर के सब रसूल और सब ईश्वरी किताबें हैं जिसकी चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं. मुहम्मद साहब की एक मशहूर कहावत है कि दुनिया भर में शुरू से अब तक एक लाख से ऊपर रसूल हो चुके हैं. क़ुरान की तालीम है कि उन सब रसूलों का मानना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है. यहाँ तक कि क़ुरान कहता है कि जो आदमी भी इन रसूलों में फ़र्क़ करता है यानी कुछ को मानता है और कुछ को नहीं या किसी को बड़ा मानता है और किसी को छोटा, वह "काफ़िरून हक़्क़ा" यानी सच्चा काफ़िर है. क़ुरान भर में यह फ़िक़रा "काफ़िरून हक़्क़ा" सिर्फ़ एक मरतबा आया है और वह उन लोगों के लिये जो रसूल रसूल में फ़र्क़ करते

میں ایک سا ہے. فرشتے اللہ اور انسان کے بیچ کی کوئی ہستیاں ہوسکتے ہیں. لیکن قرآن کی ٹیکا کرنے والے کچھ مسلمان عالموں کی رائے ہے کہ فرشتے کوئی الگ ہستیاں نہیں ہیں نہ کہیں آسمان پر بیٹھے ہیں. جس طرح شیطان کوئی الگ ہستی نہیں ہے بلکہ ہر آدمی کے دل کے اندر برائی کی طرف جو جھکاؤ ہے اسی کا نام شیطان ہے. اسی طرح آدمی کے اندر کے نیک رجحانوں کا نام "فرشتے" ہے. یہ نیک رجحان اللہ ہی کی طاقتیں ہیں جو گھٹ گھٹ میں کام کر رہی ہیں. اس رائے کی قرآن اور محمد صاحب کے اپدیشوں سے کافی تصدیق ہوتی ہے. یہاں یہ بھی صاف کر دینا ضروری ہے کہ قرآن اور اسلام کے مطابق سوائے ایک اللہ کے، فرشتے یا انسان کسی دوسرے کی پوجا کرنا یا کسی دوسرے کے سامنے سر جھکانا یا دین میں کسی دوسرے سے مدد چاہنا یا اللہ کے سامنے کسی کی سفارش کی امید کرنا گناہ ہے. تیسری اور چوتھی چیز دنیا بھر کے سب رسول اور سب ایشوری کتابیں ہیں جس کی چرچا ہم اوپر کر چکے ہیں. محمد صاحب کی ایک مشہور کہاوت ہے کہ دنیا بھر میں شروع سے اب تک ایک لاکھ سے اوپر رسول ہو چکے ہیں. قرآن کی تعلیم ہے کہ ان سب رسولوں کا ماننا ہر مسلمان کا فرض ہے یہاں تک کہ قرآن کہتا ہے کہ جو آدمی بھی ان رسولوں میں فرق کرتا ہے یعنی کچھ کو مانتا ہے اور کچھ کو نہیں یا کسی کو بڑا مانتا ہے اور کسی کو چھوٹا وہ "کافرون حقا" یعنی سچا کافر ہے. قرآن بھر میں یہ فقرہ "کافرون حقا" صرف ایک مرتبہ آیا ہے اور وہ ان لوگوں کے لئے جو رسول رسول میں فرق کرتے

है. पांचवीं और आखिरी चीज़ आखिरत का दिन है. जिसे क़यामत का दिन भी कहते हैं. क़ुरान में कई जगह क़यामत के दिन का बयान मौजूद है. लेकिन यह भी साफ़ लिखा है कि इस तरह की चीज़ों को हमें अपने हवास यानी पाँच इन्द्रियों के दायरे में लाकर समझने की कोशिश नहीं करनी चाहिये और जो कुछ बयान इन चीज़ों के क़ुरान में दिये गये हैं वह कम समझ इन्सानों को समझाने के लिये तशबीह यानी मिसाल के तौर पर हैं. इस मामले में भी कई मुसलमान आलिमों की राय है कि आखिरत के दिन से मतलब हमारी दुनिया के मानों में किसी खास दिन से नहीं है बल्कि सिर्फ़ यह है कि हर आदमी को अपने अच्छे और बुरे सब तरह के कामों का नतीजा भोगना पड़ता है. क़ुरान में जगह जगह यह भी बताया गया है कि लोगों को और क़ौमों को इसी दुनिया और इसी ज़िन्दगी में अपने अच्छे या बुरे कामों का फल मिलता है. इन पाँच बातों के सिवा क़ुरान के मुताबिक़ किसी छोटी बात का मानना किसी मुसलमान के लिये ज़रूरी नहीं है.

इसी तरह पर हम देखें तो जो इस्लाम आज से साढ़े तेरह सौ बरस पहले चला वह भी दुनिया के सब मज़हबों को मिलाने वाला और सब की सीधी सादी बुनियादी मोटी सचाइयों का ही नाम है.

मुहम्मद साहब से बार बार पूछा जाता था कि इस्लाम क्या चीज़ है. जो जवाब मुहम्मद साहब देते थे वह हमारी बात को और साफ़ कर देते हैं.

ہیں. پانچویں اور آخری چیز آخرت کا دن ہے. جسے قیامت کا دن بھی کہتے ہیں. قرآن میں کئی جگہ قیامت کے دن کا بیان موجود ہے. لیکن یہ بھی صاف لکھا ہے کہ اس طرح کی چیزوں کو ہمیں اپنے حواس یعنی پانچ اندریوں کے دائرے میں لاکر سمجھنے کی کوشش نہیں کرنی چاہئے اور جو کچھ بیان ان چیزوں کے قرآن میں دیئے گئے ہیں وہ کم سمجھ انسانوں کو سمجھانے کے لئے تشبیہ یعنی مثال کے طور پر ہیں. اس معاملے میں بھی کئی مسلمان عالموں کی رائے ہے کہ آخرت کے دن سے مطلب ہماری دنیا کے معنوں میں کسی خاص دن سے نہیں ہے بلکہ صرف یہ ہے کہ ہر آدمی کو اپنے اچھے اور برے سب طرح کے کاموں کا نتیجہ بھوگنا پڑتا ہے. قرآن میں یہ بھی جگہ جگہ بتایا گیا ہے کہ لوگوں کو اور قوموں کو اسی دنیا اور اسی زندگی میں اپنے اچھے یا برے کاموں کا پھل ملتا ہے. ان پانچ باتوں کے سوا قرآن کے مطابق کسی چھوٹی بات کا ماننا کسی مسلمان کے لئے ضروری نہیں ہے.

اس طرح پر ہم دیکھیں تو جو اسلام آج سے ساڑھے تیرہ سو برس پہلے چلا وہ بھی دنیا کے سب مذہبوں کو ملانے والا اور سب کی سیدھی سادی بنیادی موٹی سچائیوں کا ہی نام ہے.

محمد صاحب سے بار بار پوچھا جاتا تھا کہ اسلام کیا چیز ہے. جو جواب محمد صاحب دیتے تھے وہ ہماری بات کو اور صاف کر دیتے ہیں.

"निसाई" में लिखा है मुहम्मद साहब से पूछा गया कि "ऐ रसूल मैं आप से पूछता हूँ कि अल्लाह ने आपको हमारे पास क्या दे कर भेजा है?" रसूल ने जवाब दिया "इस्लाम देकर" फिर पूछा गया "और इस्लाम के अहकामात क्या हैं?" रसूल ने जवाब दिया "यह कहो कि मैं अपने आप को अल्लाह ताला की मरज़ी पर छोड़ता हूँ और मैं सिर्फ़ अल्लाह ही का हूँ और अल्लाह से दुआ मांगते रहो और लोगों को खैरात देते रहो."

"सही मुस्लिम" में लिखा है कि किसी ने रसूल से पूछा कि इस्लाम की सब से बड़ी बात क्या है? रसूल ने जवाब दिया "भूकों को खाना देना और जिन्हें तुम जानते हो उन्हें और जिन्हें तुम नहीं जानते उन्हें सब को सलाम करना."

"सही बुखारी" में लिखा है कि मुहम्मद साहब ने कहा "लोग अगर समझें तो इस्लाम से पहले के नासमझी के दिनों में जो तुम में सब से अच्छी बातें थीं वही अब इस्लाम के दिनों में तुम्हारे लिये सब से अच्छी बातें हैं."

मुहम्मद साहब ने एक बार कहा कि "जो कोई किसी बुराई करने वाले का साथ देता है, यह जानते हुए भी कि वह बुराई करता है, वह इस्लाम से हट गया है."

उमर कहता है "मैं ने रसूल से पूछा इस्लाम क्या है?" रसूल ने जवाब दिया "कलाम यानी बात चीत की पाकी और मेहमान नवाज़ी." मैं ने फिर पूछा "और ईमान क्या है?" उन्हों ने जवाब दिया "सब्र करना और दूसरों के साथ नेकी करना."

" نسائی " میں لکھا ہے محمد صاحب سے پوچھا گیا کہ " اے رسول میں آپ سے پوچھتا ہوں کہ اللہ نے آپ کو ہمارے پاس کیا دے کر بھیجا ہے؟ " رسول نے جواب دیا " اسلام دے کر " پھر پوچھا گیا " اور اسلام کے احکامات کیا ہیں؟ " رسول نے جواب دیا " یہ کہو کہ میں اپنے آپ کو اللہ تعالیٰ کی مرضی پر چھوڑتا ہوں اور میں صرف اللہ ہی کا ہوں اور اللہ سے دعا مانگتے رہو اور لوگوں کو خیرات دیتے رہو ".

" صحیح مسلم " میں لکھا ہے کہ کسی نے رسول سے پوچھا کہ اسلام کی سب سے بڑی بات کیا ہے؟ رسول نے جواب دیا " بھوکوں کو کھانا دینا اور جنھیں تم جانتے ہو انھیں اور جنھیں تم نہیں جانتے انھیں سب کو سلام کرنا ".

" صحیح بخاری " میں لکھا ہے کہ محمد صاحب نے کہا " لوگ اگر سمجھیں تو اسلام کے پہلے کے ناسمجھی کے دنوں میں جو تم میں سب سے اچھی باتیں تھیں وہی اب اسلام کے دنوں میں تمہارے لئے سب سے اچھی باتیں ہیں ".

محمد صاحب نے ایک بار کہا کہ " جو کوئی کسی برائی کرنے والے کا ساتھ دیتا ہے، یہ جانتے ہوئے بھی کہ وہ برائی کرتا ہے، وہ اسلام سے ہٹ گیا ہے ".

عمرو کہتا ہے " میں نے رسول سے پوچھا اسلام کیا ہے؟ " رسول نے جواب دیا " بات چیت کی پاکی اور مہمان نوازی ". میں نے پھر پوچھا " اور ایمان کیا ہے؟ " انہوں نے جواب دیا " صبر کرنا اور دوسروں کے ساتھ نیکی کرنا ".

किसी आदमी ने पूछा "ऐ अल्लाह के रसूल ईमान की पहचान क्या है?" रसूल ने जवाब दिया "जब तुम्हें नेकी करने से खुशी हो और बदी करने से दुख हो तब तू ईमान वाला है."

उस आदमी ने फिर पूछा "और गुनाह क्या है?" रसूल ने जवाब दिया "किसी काम के करने से तेरे दिल को चोट लगे तो उसे न कर."

इब्ने मसऊद लिखता है मुहम्मद साहब ने कहा कि "किसी आदमी का ईमान सच्चा नहीं है जब तक कि उस के पड़ोसी उसके हाथों से बिलकुल महफूज़ न हों."

इसी तरह की और भी बहुत सी हदीसें और आयतें नक़ल की जा सकती हैं.

इस्लाम में किसी तरह के पुरोहित या प्रीस्ट के लिये कोई गुंजायश नहीं है. क़ुरान में साफ़ लिखा है कि अल्लाह और बन्दे के बीच किसी तीसरे की सिफ़ारिश नहीं चल सकती. इस्लाम में कोई भी ग़रीब से ग़रीब और बे पढ़ा मुसलमान नमाज़ पढ़ाने में इमाम का काम कर सकता है और कोई भी मुसलमान या ग़ैर मुसलमान निकाह पढ़ा सकता है. दुनिया के मज़हबों में शायद इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है जिसमें कोई प्रोहित या प्रीस्ट नहीं होता.

आदमी आदमी के बीच इस्लाम किसी तरह की जात पात, ऊँच नीच, नस्ल, क़बीलिया ख़ानदान के किसी तरह के फ़रक़ों को नहीं मानता.

کسی آدمی نے پوچھا " اے اللہ کے رسول ایمان کی پہچان کیا ہے؟" رسول نے جواب دیا " جب تجھے نیکی کرنے سے خوشی ہو اور بدی کرنے سے دکھ ہو تب تو ایمان والا ہے."

اس آدمی نے پھر پوچھا " اور گناہ کیا ہے؟" رسول نے جواب دیا " جب کسی کام کے کرنے سے تیرے دل کو چوٹ لگے تو اسے نہ کر "

ابن مسعود لکھتا ہے محمد صاحب نے کہا کہ " کسی آدمی کا ایمان سچا نہیں ہے جبتک کہ اس کے پڑوسی اس کے ہاتھوں سے بالکل محفوظ نہ ہوں."

اسی طرح کی اور بھی بہت سی حدیثیں اور آیتیں نقل کی جا سکتی ہیں.

اسلام میں کسی طرح کے پروہت یا پریسٹ کے لئے کوئی گنجائش نہیں ہے. قرآن میں صاف لکھا ہے کہ اللہ اور بندے کے بیچ کسی تیسرے کی سفارش نہیں چل سکتی. اسلام میں کوئی بھی غریب سے غریب اور بے پڑھا مسلمان نماز پڑھانے میں امام کا کام کرسکتا ہے اور کوئی بھی مسلمان یا غیر مسلمان نکاح پڑھا سکتا ہے. دنیا کے مذہبوں میں شاید اسلام ہی ایک ایسا مذہب ہے جس میں کوئی پروہت یا پریسٹ نہیں ہوتا.

آدمی آدمی کے بیچ اسلام کسی طرح کی جات پات، اونچ نیچ، نسل، قبیلے یا خاندان کے کسی طرح کے فرقوں کو نہیں مانتا.

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है—

"सब मखलूक अल्लाह का कुन्बा है और उनमें अल्लाह को सब से प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुन्बे के साथ सब से ज़्यादा भलाई करता है."

मुहम्मद साहब अपनी नमाज़ में रोज़ यह कहा करते थे —

"ऐ अल्लाह मैं गवाही देता हूँ कि सब आदमी भाई भाई हैं."

एक बार अरब का कोई सरदार, जो हाल में मुसलमान हुआ था, काबे की परिक्रमा कर रहा था. कोई ग़रीब ग़ुलाम मुसलमान भी ठीक उसी वक़्त काबे की परिक्रमा कर रहा था. अपने पुराने ढंग पर वह सरदार उस ग़रीब मुसलमान को हाथ से हटाता हुआ आगे बढ़ गया. मुहम्मद साहब तक खबर पहुँची. उन्हों ने फ़ौरन हुक्म दिया कि वह सरदार और वह ग़रीब आदमी फिर से जा कर काबे की परिक्रमा करें, सरदार आगे रहे और ग़रीब आदमी पीछे. फिर वह ग़रीब पीछे से आकर उसी तरह उस सरदार को हटाता हुआ आगे निकल जाये जिस तरह वह सरदार निकला था, ताकि सब लोगों को मालूम हो जाये कि आदमी आदमी सब बराबर हैं.

इस्लाम ने अमीरी और ग़रीबी के फ़र्क़ को मिटाने की भी कोशिश की. हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि हर साल कम से कम एक बार अपनी पूँजी का एक चालीसवाँ हिस्सा खैरात में खर्च कर दे. चालीसवाँ हिस्सा माल की आमदनी का नहीं, बल्कि कुल माल और अचल मिलकियत का चालीसवाँ हिस्सा. क़ुरान में साफ़ लिखा है

محمد صاحب کی مشہور حدیث ہے —

"سب مخلوق اللہ کا کنبہ ہیں اور ان میں اللہ کو سب سے پیارا وہ ہے جو اللہ کے اس کنبے کے ساتھ سب سے زیادہ بھلائی کرتا ہے."

محمد صاحب اپنی نماز میں روز یہ کہا کرتے تھے —

"اے اللہ میں گواہی دیتا ہوں کہ سب آدمی بھائی بھائی ہیں."

ایک بار عرب کا کوئی سردار، جو حال میں مسلمان ہوا تھا، کعبہ کی پریکرما کر رہا تھا. کوئی غریب غلام مسلمان بھی ٹھیک اسی وقت کعبہ کی پریکرما کر رہا تھا. اپنے پرانے ڈھنگ پر وہ سردار اس غریب مسلمان کو ہاتھ سے ہٹاتا ہوا آگے بڑھ گیا. محمد صاحب تک خبر پہونچی. انہوں نے فوراً حکم دیا کہ وہ سردار اور وہ غریب آدمی پھر سے جاکر کعبہ کی پریکرما کریں، سردار آگے رہے اور غریب آدمی پیچھے. پھر وہ غریب پیچھے سے آکر اسی طرح اس سردار کو ہٹاتا ہوا آگے نکل جائے جس طرح وہ سردار نکلا تھا تاکہ سب لوگوں کو معلوم ہو جائے کہ آدمی آدمی سب برابر ہیں.

اسلام نے امیری اور غریبی کے فرق کو مٹانے کی بھی کوشش کی. ہر مسلمان کا فرض ہے کہ ہر سال کم سے کم ایک بار اپنی پونجی کا ایک چالیسواں حصہ خیرات میں خرچ کر دے. چالیسواں حصہ مال کی آمدنی کا نہیں، بلکہ کل چل اور اچل ملکیت کا چالیسواں حصہ. قرآن میں صاف لکھا ہے

कि ज़्यादा दौलत आदमी को दीन से गिरा देती है. और उसकी नजात के रास्ते में रुकावट होती है. मुहम्मद साहब ने खुद हमेशा बहुत ग़रीबी की ज़िन्दगी बसर की. और यही चाल शुरू के ख़लीफ़ाओं की रही. रेशम पहनना, या सोने के ज़ेवर पहनना या दौलत जमा करना इस्लाम की तालीम के मुताबिक़ सब ना जायज़ है.

गुलामी का रिवाज इस्लाम के हज़ारों बरस पहले से लग भग सारी दुनिया में चला आ रहा था. योरप के तमाम बाज़ारों में उन दिनों मर्द, औरतें और बच्चे जानवरों की तरह बेचे और ख़रीदे जाते थे. इस्लाम ने इस बुरे रिवाज को बन्द तो नहीं किया, फिर भी इस्लाम पहला मज़हब था जिसने इस रिवाज को ख़तम करने की कोशिश की. मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है कि "अल्लाह किसी चीज़ से इतना ख़ुश नहीं होता जितना गुलाम को आज़ाद करने से."

मुसलमानों को बार बार हिदायत की गई है कि वह न सिर्फ़ अपने ग़ुलामों को आज़ाद कर दें बल्कि दूसरों के ग़ुलामों को आज़ाद कराने में भी अपनी दौलत ख़र्च करें. ख़ुद मुहम्मद साहब ने अपनी ज़िन्दगी में इसी असूल पर अमल किया.

औरतों को मर्दों के बराबर हक़ और माँ बाप की जायदाद में हिस्सा दिलाने की भी इस्लाम ने पूरी कोशिश की. क़ुरान में लड़कों और लड़कियों दोनों के हिस्से माँ बाप की जायदाद में बता दिये गये हैं.

کہ زیادہ دولت آدمی کو دین سے گرا دیتی ہے۔ اور اس کی نجات کے راستے میں رکاوٹ ہوتی ہے۔ محمد صاحب نے خود ہمیشہ بہت غریبی کی زندگی بسر کی۔ اور یہی چال شروع کے خلیفاؤں کی رہی۔ ریشم پہننا یا سونے کے زیور پہننا یا دولت جمع کرنا اسلام کی تعلیم کے مطابق سب ناجائز ہیں۔

۲ غلامی کا رواج اسلام کے ہزاروں برس پہلے سے لگ بھگ ساری دنیا میں چلا آ رہا تھا۔ یورپ کے تمام بازاروں میں ان دنوں مرد، عورتیں اور بچے جانوروں کی طرح بیچے اور خریدے جاتے تھے۔ اسلام نے اس برے رواج کو بند تو نہیں کیا، پھر بھی اسلام پہلا مذہب تھا جس نے اس رواج کو ختم کرنے کی کوشش کی۔ محمد صاحب کی مشہور حدیث ہے کہ "اللہ کسی چیز سے اتنا خوش نہیں ہوتا جتنا غلام کو آزاد کرنے سے۔"

مسلمانوں کو بار بار ہدایت کی گئی ہے کہ وہ نہ صرف اپنے غلاموں کو آزاد کردیں بلکہ دوسروں کے غلاموں کو آزاد کرانے میں بھی اپنی دولت خرچ کریں۔ خود محمد صاحب نے اپنی زندگی میں اسی اصول پر عمل کیا۔

عورتوں کو مرد کے برابر حق اور ماں باپ کی جائداد میں حصہ دلانے کی بھی اسلام نے پوری کوشش کی۔ قرآن میں لڑکوں اور لڑکیوں دونوں کے حصے ماں باپ کی جائداد میں بتا دیئے گئے ہیں۔

मुहम्मद साहब की एक मशहूर तकरीर में, जो उन्होंने ७ मार्च सन ६३२ ई० को मक्के में दी थी, यह फ़िक़रे आते हैं—

"ऐ लोगो, मेरी बात सुनो, क्योंकि यह नहीं मालूम कि इस साल के बाद भी मुझे फिर तुम से मिलने का मौक़ा मिलेगा या नहीं. तुम्हें अपने पड़ोसियों पर हक़ हासिल है, सब लोगों को दूसरे लोगों पर हक़ हासिल है, मरदों को अपनी बीवियों पर हक़ हासिल है और तुम्हारी बीवियों को तुम पर हक़ हासिल है. अपनी बीवियों के साथ प्रेम का बरताव करो..............

"जो कोई तुम पर भरोसा करे उसके साथ सदा वफ़ादारी बरतो, गुनाहों से बचो, सूद लेना तुम्हारे लिये मना है. जिस को किसी का कुछ क़र्ज़ा देना है वह सिर्फ़ असल रक़म वापस करे............

"पिछले ना समझी के ज़माने में जो लोग ख़ून का बदला लिया करते थे उसे अब बन्द किया जाये. मार काट के सब झगड़े अब आगे के लिये मना किये जाते हैं. जो तुम्हारे पास ग़ुलाम हैं ख़याल रक्खो कि तुम उन्हें वही खाना खिलाओ जो तुम खाते हो, उसी चीज़ के बने हुए और वही कपड़े पहनाओ जो तुम पहनते हो. और अगर ग़ुलाम कोई ऐसा क़सूर करें बैठे जिसे माफ़ कर देने को तुम्हारा जी नहीं चाहता तो उसे छुट्टी दे दो लेकिन उसके साथ किसी तरह की सख़्ती न करो..............

"ऐ लोगो! मेरी बात सुनो और उसे समझो. कोई अरब किसी ग़ैर अरब से बढ़ कर नहीं है और न कोई ग़ैर अरब किसी

محمد صاحب کی ایک مشہور تقریر میں جو انہوں نے ۷ مارچ ۶۳۲ء کو مکے میں دی تھی، یہ فقرے آتے ہیں —

"اے لوگو، میری بات سنو کیونکہ یہ نہیں معلوم کہ اس سال کے بعد بھی مجھے پھر تم سے ملنے کا موقع ملے گا یا نہیں. تمہیں اپنے پڑوسیوں پر حق حاصل ہے. سب لوگوں کو دوسرے لوگوں پر حق حاصل ہے، مردوں کو اپنی اپنی بیویوں پر حق حاصل ہے اور تمہاری بیویوں کو تم پر حق حاصل ہے. اپنی بیویوں کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرو........

"جو کوئی تم پر بھروسہ کرے اُس کے ساتھ سدا وفاداری برتو، گناہوں سے بچو، سود لینا تمہارے لئے منع ہے. جس کو کسی کا کچھ قرضہ دینا ہے وہ صرف اصل رقم واپس کرے....................

"پچھلے نا سمجھی کے زمانے میں جو لوگ خون کا بدلہ لیا کرتے تھے اسے اب بند کیا جائے. مار کاٹ کے سب جھگڑے اب آگے کے لئے منع کئے جاتے ہیں. جو تمہارے پاس غلام ہیں خیال رکھو کہ تم انہیں وہی کھانا کھلاؤ جو تم کھاتے ہو، اسی چیز کے بنے ہوئے اور وہی کپڑے پہناؤ جو تم پہنتے ہو. اور اگر غلام کوئی ایسا قصور کر بیٹھے جسے معاف کر دینے کو تمہارا جی نہیں چاہتا تو اسے چھٹی دے دو لیکن اس کے ساتھ کسی طرح کی سختی نہ کرو..........

"اے لوگو! میری بات سنو اور اُسے سمجھو. کوئی عرب کسی غیر عرب سے بڑھ کر نہیں ہے اور نہ کوئی غیر عرب کسی

अरब से बढ़ कर है. तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी का बना हुआ था........

"कोई चीज जो दूसरे आदमी की मिलकियत है उसके किसी भाई के लिये हलाल नहीं है जब तक कि उसका मालिक अपनी खुशी और मरज़ी से किसी को न दे दे. दूसरों पर जुल्म या बे इन्साफ़ी करने से बचो."

क़ुरान में साफ़ लिखा है कि —

"नेकी इसमें नहीं है कि नमाज़ के वक़्त तुमने मुँह पूरब की तरफ़ कर लिया या पच्छिम की तरफ़. नेकी इसमें है कि तुम अपने रिश्ते दारों को, और ग़ैर रिश्तेदार ज़रूरतमन्दों को और माँगने वालों को दान दो. गुलामों को आज़ाद कराने में अपना पैसा खर्च करो, जब किसी से वायदा करो तो उसे पूरा करो और मुसीबत और फितने फसाद के दिनों में सब्र से काम लो. यही लोग जो सच्चे हैं."

शायद ही दुनिया का और कोई मज़हब इन्सानी बराबरी और भाई चारे पर इतना ज्यादा जोर देता हो जितना इस्लाम. हमारा मतलब यहाँ क़ुरान के मज़हब और मुहम्मद साहब की तालीम से है. इन साढ़े तेरह सौ बरस के अन्दर आम और ख़ास मुसलमानों के अमल से नहीं.

इसमें ज़रा भी शक नहीं कि दुनिया आजकल के सब अलग अलग मज़हबों की दीवारों से बाहर निकल कर एक मज़हबे इन्सानियत, एक मानव धर्म, एक रिलिजन आफ ह्यूमेनिटी, एक प्रेम धर्म या एक मज़हबे इश्क़ की तरफ बढ़ रही है. दुनिया के बड़े मज़हबों

عرب سے بڑھکر ہے . تم سب آدم کی اولاد ہو اور آدم مٹی کا بنا ہوا تھا........

"کوئی چیز جو دوسرے آدمی کی ملکیت ہے اس کے کسی بھائی کے لئے حلال نہیں ہے جبتک اس کا مالک اپنی خوشی اور مرضی سے کسی کو نہ دے دے . دوسروں پر ظلم یا بے انصافی کرنے سے بچو."

قرآن میں صاف لکھا ہے —

"نیکی اس میں نہیں ہے کہ نماز کے وقت تم نے منھ پورب کی طرف کرلیا یا پچھم کی طرف . نیکی اس میں ہے کہ تم اپنے رشتہداروں کو اور غیر رشتے دار ضرورتمندوں کو اور مانگنے والوں کو دان دو . غلاموں کو آزاد کرانے میں اپنا پیسہ خرچ کرو، جب کسی سے وعدہ کرو تو اسے پورا کرو اور مصیبت اور فتنے فساد کے دنوں میں صبر سے کام لو. یہی لوگ ہیں جو سچے ہیں."

شاید ہی دنیا کا کوئی اور مذہب انسانی برابری اور بھائی چارے پر اتنا زیادہ زور دیتا ہو جتنا اسلام . ہمارا مطلب یہاں قرآن کے مذہب اور محمد صاحب کی تعلیم سے ہے . ان ساڑھے تیرہ سو برس کے اندر عام اور خاص مسلمانوں کے عمل سے نہیں .

اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ دنیا آجکل کے سب الگ الگ مذہبوں کی دیواروں سے باہر نکل کر ایک مذہب انسانیت، ایک مانو دھرم، ایک ریلیجن آف ہیومینیٹی، ایک پریم دھرم یا ایک مذہب عشق کی طرف بڑھ رہی ہے . دنیا کے بڑے مذہبوں

में इस्लाम सब से हाल का मजहब है. उसमें एक आलमगीर मजहब का ढाँचा और रूह दोनों मौजूद हैं. और उसमें जरा भी शक नहीं कि उस आने वाले मजहब इन्सानियत को शकल देने में इस्लाम किसी दूसरे मजहब से कम हिस्सा नहीं लेगा.

(आल इन्डिया रेडियो पटना की इजाजत से)

२९ जून, सन ५० ई०.

میں اسلام سب سے حال کا مذهب ہے. اس میں ایک عالمگیر مذهب کا ڈھانچہ اور روح دونوں موجود ہیں. اور اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اس آنے والے مذهب' انسانیت کو شکل دینے میں اسلام کسی دوسرے مذهب سے کم حصہ نہیں لے گا.

(آل انڈیا ریڈیو پٹنہ کی اجازت سے)

۲۹ جون سن ۵۰ء

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेजों के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाजा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन १८५७ से भी पहले से आजादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेजी हुकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायेंगे.

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८- बाई का बाग, इलाहाबाद.

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور انکے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنہوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی انکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اُن کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر انہوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے. قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ — الہ آباد

कोरिया और उसकी घरेलू लड़ाई

कोरिया के पुराने इतिहास को छोड़िये दूसरी बड़ी लड़ाई के ख़त्म होने से पहले तक कोरिया पर जापानियों का राज था. और उन का राज कोरिया पर इतना ही बुरा या भला था-जितना अंगरेज़ों का हिन्दुस्तान पर.

लड़ाई से पहले सारा कोरिया एक था — उत्तरी कोरिया और दक्खिनी कोरिया जैसे दो टुकड़े नहीं थे. यह टुकड़े उस वक्त हुए जब जापान सन १९४५ में हार गया और जापान की हार के नाते रूसी और अमरीकी उसके मालिक बने. यह दोनों कोरिया के मालिक कोरिया की

کوریا اور اسکی گھریلو لڑائی

کوریا کے پرانے اتہاس کو چھوڑئیے. دوسری بڑی لڑائی کے ختم ہونے سے پہلے تک کوریا پر جاپانیوں کا راج تھا. اور انکا راج کوریا پر اتنا ہی برا یا بھلا تھا جتنا انگریزوں کا ہندستان پر.

لڑائی سے پہلے سارا کوریا ایک تھا. اتری کوریا اور دکھنی کوریا جیسے دو ٹکڑے نہیں تھے. یہ ٹکڑے اس وقت ہوئے جب جاپان سن ۱۹۴۵ع میں ہار گیا اور جاپان کی ہار کے ناتے روسی اور امریکی اسکے مالک بنے. یہ دونوں کوریا کے مالک کوریا کی

मरजी से नहीं बने. कोरिया वाले यह आस लगाये बैठे थे कि जापानियोंके हट जाने के बाद वह कोरिया के मालिक बन जायेंगे यानी कोरिया में कोरिया वालों का राज हो जायगा. पर वैसा न हो सका. जापानियों को हराया तो था अमरीका, रूस, बरतानिया, फ्रान्स और चीन ने. पर जापानियों की मातहती में रहने वाले कोरिया का बँटवारा हुआ सिर्फ़ दो में. यानी रूस और अमरीका में. यह ठीक है कि मालिक बनते वक़्त रूस और अमरीका दोनों ही ने मालिकी का दावा नहीं किया था. सिर्फ़ यह दावा किया था कि चूंकि उन की फ़ौजें कोरिया में पड़ी हुई हैं और कुछ दिनों के लिये उनका वहाँ रहना ज़रूरी है इसलिये कोरिया उनकी मिलकियत नहीं, उन के फ़ौजी घेरे में रहेगा. फ़ौजी घेरे दो मुल्कों के होने के कारन कोरिया के अड़तीस अंश पड़ी रेखा पर दो टुकड़े कर दिए गये. ऊपर का हिस्सा उत्तरी कोरिया रहा और नीचे का दक्खिनी कोरिया.

सन् १९४८ तक कोरिया वाले यह कोशिश करते रहे कि उनके वह दोनों घेरे खत्म हों और दोनों मुल्कों की फ़ौजें उन्हें उन पर छोड़कर अपने अपने घर जायें. रूसने कोरिया वालों की इस बात को ठीक समझा और उसने हर तरह से यह चाहा कि उस की फ़ौजें और अमरीका की फ़ौजें दोनों साथ साथ कोरिया को छोड़दें और कोरिया कोरिया वालों के सुपुर्द कर दें. पर अमरीका किसी तरह राज़ी न हुआ और आज २९ जून १९५० तक अमरीका दक्खिनी कोरिया पर अपना पंजा जमाये हुए है.

रूसी फ़ौजें सन् १९४८ में कोरिया छोड़ चुकीं. यानी रूस ने कोरिया के उत्तरी हिस्से को दो बरस पहले ही आज़ाद कर दिया. रूस

مرضی سے نہیں بنے . کوریا والے یہ آس لگائے بیٹھے تھے کہ جاپانیوں کے ہٹ جانے کے بعد وہ کوریا کے مالک بن جائینگے یعنی کوریا میں کوریا والوں کا راج ہوجائیگا . پر ویسا نہ ہوسکا . جاپانیوں کو ہرایا تو تھا امریکہ، روس، برطانیہ، فرانس اور چین نے . پر جاپانیوں کی ماتحتی میں رہنے والے کوریا کا بٹوارہ ہوا صرف دو میں یعنی روس اور امریکہ میں . یہ ٹھیک ہے کہ مالک بنتے وقت روس اور امریکہ دونوں ہی نے مالکی کا دعوی نہیں کیا تھا . صرف یہ دعوی کیا تھا کہ چونکہ انکی فوجیں کوریا میں پڑی ہوئی ہیں اور کچھ دنوں کے لئے انکا وہاں رہنا ضروری ہے اس لئے کوریا ان کی ملکیت نہیں، ان کے فوجی گھیرے میں رہیگا . فوجی گھیرے دو ملکوں کے ہونے کے کارن کوریا کے اڑتیس انش پڑی ریکھا پر دو ٹکڑے کردیئے گئے . اوپر کا حصہ اتری کوریا رہا اور نیچے کا دکھنی کوریا .

سن ۱۹۴۸ تک کوریا والے یہ کوشش کرتے رہے کہ ان کے وہ دونوں گھیرے ختم ہوں اور دونوں ملکوں کی فوجیں انہیں ان پر چھوڑ کر اپنے اپنے گھر جائیں . روس نے کوریا والوں کی اس بات کو ٹھیک سمجھا . اور اس نے ہر طرح سے یہ چاہا کہ اسکی فوجیں اور امریکہ کی فوجیں دونوں ساتھ ساتھ کوریا کو چھوڑدیں . اور کوریا کوریا والوں کے سپرد کردیں . پر امریکہ کسی طرح راضی نہ ہوا اور آج ۲۹ جون ۱۹۵۰ تک امریکہ دکھنی کوریا پر اپنا پنجہ جمائے ہوئے ہے .

روسی فوجیں سن ۱۹۴۸ میں کوریا چھوڑ چکیں یعنی روس نے کوریا کے اتری حصہ کو دو برس پہلے ہی آزاد کردیا . روس

की फ़ौज़ें छोड़ने और उत्तरी कोरिया को आज़ाद करने की बात पर यू. एन. कमीशन, जो कोरिया के लिये बना था, एतबार करने के लिये तैयार नहीं. सुना जाता है इस घरेलू लड़ाई के शुरू होने से ठीक पेहले यू. एन. कमीशन दक्खिनी कोरिया में मौजूद था. इतना ही नहीं यह भी ख़बरें मिलती रही हैं कि उत्तरी कोरिया ने अपने तीन आदमी उस कोरिया कमीशन से मिलने भेजे थे. और यह भी सुना गया है कि दक्खिनी कोरिया ने उन तीन में से दो को गिरफ़्तार कर लिया और एक को कमीशन से नहीं मिलने दिया. कुछ लोगों का यह भी अन्दाज़ा है कि लड़ाई का असली कारन यही है पर हमें यह कारन कुछ जँचता नहीं.

मुद्दतों से यह ख़बरें भी आती रही हैं कि दक्खिनी कोरिया को कुछ फ़ौजी दस्ते (वह अमरीकी थे या कोरिया के यह पता नहीं) अड़तीस अंश वाली लकीर को लांघ कर उत्तरी कोरिया में छेड़ छाड़ करते रहे हैं.

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि दक्खिनी कोरिया के लोग यह नहीं पसन्द करते कि अमरीका वाले वहाँ जमे रहें और कोरिया वालों को दबाते रहें.

यह बात भी कही जाती है कि सोवियट रूस और उत्तरी कोरिया के बीच एक दस बरसी सुलह नामा भी हो गया है. वह सुलह नामा माली और कलचरी है.

सब से मार्के की पर हँसी की बात यह है कि दक्खिनी कोरिया रिपबलिक यानी जन राज कहलाता है और उत्तरी अमरीका लोकशाही जन राज. और फिर और भी हँसी की बात यह है कि

کی فوجیں چھوڑنے اور اُتری کوریا کو آزاد کرنیکی بات پر یو. این. کمیشن، جو کوریا کے لئے بنا تھا، اعتبار کرنے کے لئے تیار نہیں. سنا جاتا ہے اس گھریلو لڑائی کے شروع ہونے سے ٹھیک پہلے یو. این. کمیشن دکھنی کوریا میں موجود تھا. اتنا ہی نہیں یہ بھی خبریں ملتی رہی ہیں کہ اتری کوریا نے اپنے تین آدمی اس کوریا کمیشن سے ملنے بھیجے تھے. اور یہ بھی سنا گیا ہے کہ دکھنی کوریا نے اُن تین میں سے دو کو گرفتار کرلیا او ر ایک کو کمیشن سے نہیں ملنے دیا. کچھ لوگوں کا یہ بھی اندازہ ہے کہ لڑائی کا کارن اصلی یہی ہے پر ہمیں یہ کارن کچھ جنچتا نہیں.

مدتوں سے یہ خبریں آتی رہی ہیں کہ دکھنی کوریا کے کچھ فوجی دستے (وہ امریکی تھے یا کوریا کے یہ پتہ نہیں) اڑتیس انش والی لکیر کو لانگھ کر اتری کوریا میں چھیڑ چھاڑ کرتے رہے ہیں.

اس بات سے کوئی انکار نہیں کر سکتا کہ دکھنی کوریا کے لوگ یہ نہیں پسند کرتے کہ امریکہ والے وہاں جمے رہیں اور کوریا والوں کو دباتے رہیں.

یہ بات بھی کہی جاتی ہے کہ سوویٹ روس اور اُتری کوریا کے بیچ ایک دس برسی صلحنامہ بھی ہوگیا ہے. وہ صلحنامہ مالی اور کلچری ہے.

سب سے معرکے کی پر ہنسی کی بات یہ ہے کہ دکھنی کوریا ری پبلک یعنی جن راج کہلاتا ہے اور اتری امریکہ لوک شاہی جن راج. اور پھر اور بھی ہنسی کی بات یہ ہے کہ

हमें यह विश्वास करने के लिये मजबूर किया जाता है कि डाक्टर सिंघमन री की दक्खिनी कोरिया सरकार ने अमरीका वालों से यह प्रार्थना की थी कि अमरीका वाले दक्खिनी कोरिया से अपना फ़ौजी घेरा न उठायें. और सुनते हैं कि अमरीका वालों ने उनकी बात नहीं मानी और जून सन १९४९ में अपना फ़ौजी घेरा दक्खिनी कोरिया से उठा लिया. पर दक्खिनी कोरिया की फ़ौजों को अपने देश के बचाव के लिये फ़ौजी सलाह देने के लिये पांच सौ अफ़सर ज़रूर दक्खिनी कोरिया में ही रहने दिये. इतना ही नहीं, ३० जून सन १९५१ तक दक्खिनी कोरिया अमरीका से मदद पाता रहेगा. और वह रक़म सोलह मिलियन डालर यानी आठ करोड़ रुपये के लगभग होगा. हाँ, इसमें से कुछ रक़म फ़िलिपाइन टापुओं के लिये भी खर्च की जायगी.

हाल ही में कोई जन तंत्री सलाहकार अड़तीस अंश वाली रेखा के आस पास निरीक्षन के लिये गया था और उसने यह रिपोर्ट दी थी कि 'जल्दी ही हमला होने की स[म्भावना है]' और यह कि 'हमें पूरा वि[श्वास है कि हम] हमला करने वालों को अपने क्षेत्र से खदेड़ सकेंगे.'

यह सब बातें साफ़ ज़ाहिर करती हैं कि इस घरेलू लड़ाई के शुरू करने में अमरीका वालों का पूरा हाथ है और अगर इस तरह किसी मुल्क में घरेलू लड़ाई कराना अन्तर-क़ौमी गुनह है तो अमरीका पूरा गुनाहगार है. और अगर सचमुच कोई ज़ोरदार अन्तर-क़ौमी अदालत होती तो अमरीका ज़रूर मुलज़िम के कटघरे में खड़ा दिखाई देता. हो सकता है कुछ लोगों या मुल्कों का यह

ہمیں یہ وشواس کرنے کے لئے مجبور کیا جاتا ہے کہ ڈاکٹر سنگھمن ری کی دکھنی کوریا سرکار نے امریکہ والوں سے یہ پرارتھنا کی تھی کہ امریکہ والے دکھنی کوریا سے اپنا فوجی گھیرا نہ اٹھائیں. اور سنتے ہیں کہ امریکہ والوں نے ان کی بات نہیں مانی اور جون ۱۹۴۹ میں اپنا فوجی گھیرا دکھنی کوریا سے اٹھا لیا. پر دکھنی کوریا کی فوجوں کو اپنے دیش کے بچاؤ کیلئے فوجی صلاح دینے کیلئے پانسو افسر ضرور دکھنی کوریا میں ہی رہنے دیئے. نہیں اتنا ہی ۳۰ جون سن ۱۹۵۱ تک دکھنی کوریا امریکہ سے مدد پاتا رہیگا. اور وہ رقم سولہ ملین ڈالر یعنی آٹھ کروڑ روپئے کے لگ بھگ ہوگی. ہاں اس میں سے کچھ رقم فلپائن ٹاپوؤں کے لئے بھی خرچ کی جائیگی.

حال ہی میں کوئی جن تنتری صلاحکار اڑتیس انش والی ریکھا کے آس پاس نریکشن کے لئے گیا تھا اور اس نے یہ رپورٹ دی تھی کہ 'جلدی ہی حملہ ہونیکی سمبھاونا ہے.' اور یہ کہ ہمیں پورا وشواس ہے کہ ہم حملہ [کرنے] والوں کو اپنے چھیتر سے کھدیڑ سکینگے.

یہ باتیں صاف ظاہر کرتی ہیں کہ اس گھریلو لڑائی کے شروع کرانے میں امریکہ والوں کا پورا ہاتھ ہے اور اگر اس طرح کسی ملک میں گھریلو لڑائی کرانا انتر قومی گناہ ہے تو امریکہ پورا گنہگار ہے. اور اگر سچ مچ کوئی زور دار انتر قومی عدالت ہوتی تو امریکہ ضرور ملزم کے کٹگھرے میں کھڑا دکھائی دیتا. ہوسکتا ہے کچھ لوگوں یا ملکوں کا یہ

भी दावा हो कि नहीं इस घरेलू लड़ाई में रूस का हाथ है. अगर इस बात को महत्त्व दिया जाय तो रूस भी अमरीका की फ़ेहरिस्त में आजाता है.

कोरिया की लड़ाई एक दम घरेलू लड़ाई है यानी सिविल वार है. होना तो यह चाहिये कि घरेलू लड़ाई के मौक़े पर आसपास के देश या कहीं के भी देश उस घरेलू लड़ाई में किसी तरह हिस्सा न बटायें, न लड़ाई का सामान भेजें और न उकसाने, भड़काने का काम करें. सलाहकार अफ़सर भेजना भी ऐसे मौक़े पर बुरा समझा जाय और फ़ौजें भेजना तो एक दम गुनाह. आज तक की खबरें हमें यह तो बताती हैं कि कोरिया में आज २९ तारीख़ तक खुल्लम खुल्ला किसी देश की फ़ौज क़दम नहीं रख पाई पर यह साफ़ ज़ाहिर है कि अमरीका खुल्लम खुल्ला और डंके की चोट दक्खिनी कोरिया में गोला बारूद भेज रहा है. उस के सलाहकार अफ़सर पहले ही से वहाँ मौजूद हैं और उसकी फ़ौजें लड़ाई के मैदान के आसपास कोरिया की हद से बाहर खड़ी हुई सिर्फ़ तमाशा ही नहीं देख रही, उकसाने और भड़काने का काम भी कर रही हैं. हो सकता है रूस भी इस तरह की हरकतें कर रहा हो पर न अख़बार और न रूसी रेडियो और न टास-एजेन्सी की ख़बरें यह बता रही हैं कि उधर ऐसा हो रहा है.

हो सकता है हमारी यह लाइनें हमारे पढ़ने वालों पर यह असर डालती हुई मालूम हों कि हम एकतरफ़ा हो कर अमरीका पर ही इलज़ाम लगाना चाहते हैं. अगर ऐसा है तो हम पढ़ने वालों को ठीक ही समझेंगे. हम साफ़ साफ़ अमरीका को कोरिया

بھی دعویٰ ہو کہ نہیں اس گھریلو لڑائی میں روس کا ہاتھ ہے. اگر اس بات کو مہتو دیا جائے تو روس بھی امریکہ کی فہرست میں آجاتا ہے.

کوریا کی لڑائی ایکدم گھریلو لڑائی ہے یعنی سول وار ہے. ہونا تو یہ چاہئے کہ گھریلو لڑائی کے موقع پر آس پاس کے دیش یا کہیں کے بھی دیش اس گھریلو لڑائی میں کسی طرح حصہ نہ بٹائیں، نہ لڑائی کا سامان بھیجیں اور نہ اکسانے، بھڑکانے کا کام کریں. صلاحکار افسر بھیجنا بھی ایسے موقعے پر برا سمجھا جائے. اور فوجیں بھیجنا تو ایکدم گناہ. آج تک کی خبریں ہمیں یہ تو بتاتی ہیں کہ کوریا میں آج ۲۹ تاریخ تک کھلم کھلا کسی دیش کی فوج قدم نہیں رکھ پائی پر یہ صاف ظاہر ہے کہ امریکہ کھلم کھلا اور ڈنکے کی چوٹ پر دکھنی کوریا میں گولا بارود بھیج رہا ہے. اس کے صلاحکار افسر پہلے ہی سے وہاں موجود ہیں اور اس کی فوجیں لڑائی کے میدان کے آس پاس کوریا کی حد سے باہر کھڑی ہوئی صرف تماشہ ہی نہیں دیکھ رہی، اکسانے اور بھڑکانے کا کام بھی کر رہی ہیں. ہوسکتا ہے روس بھی اس طرح کی حرکتیں کر رہا ہو. پر نہ اخبار اور نہ روسی ریڈیو اور نہ تاس ایجنسی کی خبریں یہ بتا رہی ہیں کہ ادھر ایسا ہو رہا ہے.

ہو سکتا ہے ہماری یہ لائنیں ہمارے پڑھنے والوں پر یہ اثر ڈالتی ہوئی معلوم ہوں کہ ہم ایکطرفہ ہوکر امریکہ پر ہی الزام لگانا چاہتے ہیں. اگر ایسا ہے تو ہم پڑھنے والوں کو ٹھیک ہی سمجھیں گے. ہم صاف صاف امریکہ کو کوریا

को इस घरेलू लड़ाई का जिम्मेदार समझते हैं. और वह आज के दिन तक चीन की घरेलू लड़ाई को अपने फायदे के लिये बढ़ाता रहा. उस के पास बेहद पैसा है और वह इस पैसे का लड़ाई लड़ाने के सिवाय और उपयोग ही क्या कर सकता है? चीन की कम्युनिस्ट सरकार को न मानकर तो उसने यह साबित कर दिया है कि यू. एन. ओ. अमरीका के हाथ का खिलौना है. वह यू. एन. ओ. का मेम्बर नहीं है.

जिन्हों ने यू. एन. ओ. का विधान पढ़ा है या जो उस से वाक़िफ़ हैं या जो अब भी तकलीफ़ उठा कर यू. एन. ओ. विधान पर नज़र डालें, वह जान सकते हैं कि यू. एन. ओ. का हाल का प्रस्ताव कितना विधान के खिलाफ़ है और इसके आधार पर दिया हुआ प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन का बयान कितना बालू की नींव पर खड़े हुए महल जैसा है. हिन्दुस्तान और मिस्र ने ऐसे मौक़े पर किसी वजह और किसी दूरन्देशी से तटस्थ होकर बड़े मार्के का काम किया है. और हिन्दुस्तान और मिस्र की एखलाक़ी शान को काफ़ी ऊँचा उठा दिया है.

बरतानिया ने प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन की पीठ ठोंक कर अगर भभकी और घुड़की की पीठ ठोंकी है तब तो हम यही कहेंगे कि वह बहुत बुद्धिमान है. पर अगर उसके पीछे हर बुराई भलाई में अमरीका के साथ देने की बात छिपी हुई हैं या अगर यू. एन. ओ. के विधान विरुद्ध प्रस्तावों का समर्थन भी छिपा हुआ है तब हम यह कहेंगे कि बरतानिया इस वक़्त वह क़दम उठा रहा है जो उस के लिये ठीक नहीं है. जो बरतानिया अपने ताज के सब से बड़े हीरे

کی اس گھریلو لڑائی کا ذمہ دار سمجھتے ہیں. اور وہ آج کے دن تک چین کی گھریلو لڑائی کو اپنے فائدہ کے لئے بڑھاتا رہا. اس کے پاس بے حد پیسہ ہے اور وہ اس پیسہ کا لڑائی لڑانے کے سوائے اور اپیوگ ہی کیا کرسکتا ہے؟ چین کی کمیونسٹ سرکار کو نہ مان کر تو اس نے یہ ثابت کردیا ہے کہ یو. این. او. امریکہ کے ہاتھ کا کھلونا ہے. وہ یو. این. او. کا ممبر نہیں ہے.

جنہوں نے یو. این. او. کا ودھان پڑھا ہے یا جو اس سے واقف ہیں یا جو اب بھی تکلیف اٹھاکر یو. این. او. ودھان پر نظر ڈالیں' وہ جان سکتے ہیں کہ یو. این. او. کا حال کا پرستاو کتنا ودھان کے خلاف ہے اور اس کے آدھار پر دیا ہوا پریسیڈنٹ ٹرومین کا بیان کتنا بالو کی نیو پر کھڑے ہوئے محل جیسا ہے. ہندستان اور مصر نے ایسے موقعہ پر کسی وجہ اور کسی دور اندیشی سے تٹستھ ہوکر بڑے معرکے کا کام کیا ہے. اور ہندستان اور مصر کی اخلاقی شان کو کافی اونچا اٹھا دیا ہے.

برطانیہ نے پریسیڈنٹ ٹرومین کی پیٹھ ٹھوک کر اگر بھبکی اور گھڑکی کی پیٹھ ٹھونکی ہے تب تو ہم یہی کہیں گے کہ وہ بہت بدھی مان ہے. پر اگر اس کے پیچھے ہر برائی بھلائی میں امریکہ کے ساتھ دینے کی بات چھپی ہوئی ہے یا اگر یو. این. او. کے ودھان ورُدھ پرستاوں کا سمرتھن بھی چھپا ہوا ہے تب ہم یہ کہیں گے کہ برطانیہ اس وقت وہ قدم اٹھا رہا ہے جو اس کے لئے ٹھیک نہیں ہے. جو برطانیہ اپنے تاج کے سب سے بڑے ہیرے

हिन्दुस्तान का लालच छोड़ चुका हो उस में तो बेहद अख़लाक़ी बल होना चाहिये था और क्या ही अच्छा होता अगर वह यू. एन. ओ. में हाल के प्रस्ताव के वक़्त हिन्दुस्तान और मिस्र का अनुकरन करता. काश! ऐसा हुआ होता तो आज के अख़बारों की झंडा लकीरें कुछ और ही होतीं.

मुनरो के सिद्धान्त का भक्त अमरीका क्यों मुनरो की छाती पर मूंग दल रहा है? आज दुनिया में शान्ति फैल सकती है अगर अमरीका रूज़वेल्ट और ट्रूमैन की नीति को छोड़ मुनरो सिद्धान्त अपना ले और वह दुनिया में उसी के प्रचार के लिये खड़ा होजाय. मुनरो सिद्धान्त था "अमरीका अमरीका वालों के लिये" यानी न अमरीका यूरप एशिया के मामलों में दख़ल देगा और न यूरप एशिया वालों का अपने मामलों में दख़ल देना बरदाश्त कर सकेगा.

मुनरो सिद्धान्त की रू से अमरीका वाले अगर आज इस बात पर डट जायँ कि कोरिया कोरिया वालों के लिये तो हमें उम्मीद है कि सारे मुल्क ख़ुशी से अमरीका का साथ देंगे और शायद रूस भी किसी तरह की आना कानी न करेगा. अमरीका यह न समझे कि आज जो मुल्क उस का साथ दे रहे हैं, वह सच्चे जी से उसका साथ दे रहे हैं. आज के मुल्कों का साथ अमरीका ऐसा ही साथ समझे जैसे किसी घर की लूट में घर का बेटा भी अपनी जान बचाने की ख़ातिर डाकुओं का साथ दे, या इस ख़याल से डाकुओं का साथ दे कि उसके हिस्से में जो रुपया आयेगा उससे वह कुछ न कुछ अपने घर वालों की मदद कर सकेगा. हिन्दुस्तान और मिस्र की

ھندستان کا لالچ چھوڑ چکا ھو اس میں تو بے حد اخلاقی بل ھونا چاھئے تھا اور کیا ھی اچھا ھوتا اگر وہ یو . این . او . میں حال کے پرستاؤ کے وقت ھندستان اور مصر کا انوکرن کرتا . کاش ! ایسا ھوا ھوتا تو آج کے اخباروں کی جھنڈا لکیریں کچھ اور ھی ھوتیں .

منرو کے سدھانت کا بھگت امریکہ کیوں منرو کی چھاتی پر مونگ دل رھا ھے ؟ آج دنیا میں شانتی پھیل سکتی ھے اگر امریکہ روزویلٹ اور ترومین کی نیتی کو چھوڑ منرو سدھانت اپنالے اور وہ دنیا میں اسی کے پرچار کے لئے کھڑا ھوجائے . منرو سدھانت تھا " امریکہ امریکہ والوں کیلئے " یعنی نہ امریکہ یوروپ ایشیا کے معاملوں میں دخل دیگا اور نہ یوروپ ایشیا والوں کا اپنے معاملہ میں دخل دینا برداشت کرسکیگا .

منرو سدھانت کی رو سے امریکہ والے اگر آج اس بات پر تن جائیں کہ کوریا کوریا والوں کیلئے تو ھمیں امید ھے کہ سارے ملک خوشی سے امریکہ کا ساتھ دینگے اور روس بھی شاید کسیطرح کی آنا کانی نہ کریگا . امریکہ یہ نہ سمجھے کہ آج جو ملک اس کا ساتھ دے رھے ھیں وہ سچے جی سے اس کا ساتھ دے رھے ھیں . آج کے ملکوں کا ساتھ امریکہ ایسا ھی ساتھ سمجھے جیسے کسی گھر کی لوٹ میں گھر کا بیٹا بھی اپنی جان بچانے کی خاطر ڈاکوؤں کا ساتھ دے کہ اس کے حصے میں جو روپیہ آئیگا اس سے وہ کچھ نہ کچھ اپنے گھر والوں کی مدد کرسکیگا . ھندستان اور مصر کی

की रायों को अमरीका को वह तिनके समझना चाहिये जो यह बता देते हैं कि हवा का रुख़ किधर है. होसकता है अमरीका या अमरीका और बरतानिया दोनों फूंक मार कर तिनकों की दिशा बदलदें पर इस से क्या हवा का रुख़ बदल जायगा.

अमरीका जापान पर छाया हुआ है और कोई एशियाई मुल्क यह नहीं पसन्द करता कि अमरीका वहाँ छाया रहे. रूस एशियाई मुल्क है. उसे भी जापान की यह हालत पसन्द नहीं हो सकती. और अमरीका एशिया को अपने दबाव में रखने के लिये जापान पर छाये रहना ज़रूरी समझता है. जापन से लगा हुआ रूस का देश मन्चूरिया है. और जापान और मन्चूरिया के बीच में कोरिया का प्रायद्वीप है. इस नाते भी अमरीका कोरिया के एक हिस्से को अपने क़ाबू में रखना चाहता है और इस वास्ते उसी को सबसे ज़्यादा ज़रूरत हो सकती है कि वह कोरिया में घरेलू लड़ाई बनाये रखे और इसी वजह से वह चीन की घरेलू लड़ाई का अन्त नहीं होने देता. यह मोटी सी बात है कि कोरिया वाले एक होकर एशिया के ज़्यादा तरफ़दार होंगे न कि अमरीका के. अमरीका को वह किसी तरह अपना नहीं मान सकते. अगर वह अपना मानते हैं तो यही समझना चाहिये कि वह या तो अमरीका के तालीमी नशे में चूर होकर बड़बड़ा रहे हैं या डालरी नशे में बदमस्त हो कर बेजा वफ़ादारी का ढोल पीट रहे हैं. अमरीका क्यों नहीं चीन के उन कर्नलों और जेनेलों से सबक़ लेता जो उसी की दी हुई बन्दूक़ बग़ल में दबा कर माओ की फ़ौजों से जा मिलते थे? कोरिया क्या बुरा करता है अगर वह अपने पड़ोसी देश रूस से दोस्ती रखना चाहता है?

رایوں کو امریکہ کو وہ تنکے سمجھنا چاہئے جو یہ بتا دیتے ہیں کہ ہوا کا رخ کدھر ہے. ہوسکتا ہے امریکہ یا امریکہ اور برطانیہ دونوں پھونک مارکر تنکے کی دشا بدل دیں پر اس سے کیا ہوا کا رخ بدل جائیگا ؟

امریکہ جاپان پر چھایا ہوا ہے اور کوئی ایشیائی ملک یہ نہیں پسند کرتا کہ امریکہ وہاں چھایا رہے. روس ایشیائی ملک ہے. اسے بھی جاپان کی یہ حالت پسند نہیں ہوسکتی اور امریکہ ایشیا کو اپنے دباؤ میں رکھنے کے لئے جاپان پر چھائے رہنا ضروری سمجھتا ہے. جاپان سے لگا ہوا روس کا دیش منچوریا ہے. اور جاپان اور منچوریا کے بیچ میں کوریا کا پرائے دویپ ہے. اس ناتے بھی کوریا امریکہ کے ایک حصہ کو اپنے قابو میں رکھنا چاہتا ہے اور اسی واسطے اُسی کو سب سے زیادہ ضرورت ہوسکتی ہے کہ وہ کوریا میں گھریلو لڑائی بنائے رکھے اور اسی وجہ سے وہ چین کی گھریلو لڑائی کا انت نہیں ہونے دیتا. یہ موٹی سی بات ہے کہ کوریا والے ایک ہوکر ایشیا کے زیادہ طرفدار ہونگے نہ کہ امریکہ کے. امریکہ کو وہ کسیطرح اپنا نہیں مان سکتے. اگر وہ اپنا مانتے ہیں تو یہی سمجھنا چاہئے کہ وہ یا تو امریکہ کے تعلیمی نشے میں چور ہوکر بڑبڑا رہے ہیں یا ڈالری نشے میں بدمست ہوکر بیجا وفاداری کا ڈھول پیٹ رہے ہیں. امریکہ کیوں نہیں چین کے ان کرنیلوں اور جرنیلوں سے سبق لیتا جو اسی کی دی ہوئی بندوق بغل میں دبا کر ماؤ کی فوجوں سے جا ملتے تھے؟ کوریا کیا برا کرتا ہے اگر وہ اپنے پڑوسی دیش روس سے دوستی رکھنا چاہتا ہے؟

और कोरिया क्या बुरा करता है अगर वह यह नहीं चाहता कि अमरीका वाले दक्खिनी कोरिया में रहने पायें ? और वह यों भी तो अमरीका वालों को जल्दी से 'जल्दी दक्खिनी कोरिया से निकलते' हुए देखने का हक़दार है कि पाँच बरस में अमरीका वालों ने दक्खिनी कोरिया वालों को जो कुछ सिखाया यही तो सिखाया कि वह अमरीका को कच्चा माल भेजते रहें और अमरीका के अफ़सरों को अपना ख़ुदा मानते रहें ? क्या सिऊल का तीन दिन में उत्तरी कोरिया के हाथ में आजाना इस बात का सबूत नहीं है कि अमरीका वालों ने दक्खिनी कोरिया वालों को इतना नामर्द बना दिया है जितना जापान ने भी नहीं बनाया था. तभी तो दक्खिनी कोरिया नामधारी जन-राज का प्रेसीडेन्ट पहले ही उत्तरी हमले में जेनरल मेकार्थर से प्रार्थना करता है कि "मुझे बचाइये."

यह तो हमने कहने के लिये कह दिया. लेकिन अगर अमरीका ने दक्खिनी कोरिया को हर तरह से मज़बूत भी बना दिया होता तब भी हम यही कहते कि अमरीका को किसी तरह वहाँ रहने का न हक़ था, न है और न रहना चाहिये.

दुनिया में कोरिया की लड़ाई अशान्ति पैदा कर सकती है लेकिन तभी जब अमरीका उसको उकसाने भड़काने और इसमें अमली हिस्सा लेने का काम करता रहेगा. लेकिन अगर वह जापान छोड़ने की तारीख़ तय कर दे और चीन की लड़ाई में हिस्सा लेना बन्द कर दे और कोरिया की घरेलू लड़ाई को कोरिया पर छोड़ दे और एशिया के मामलों में एशिया वालों के बुलाये बिना दख़ल न दे तो पुरानी दुनिया में या कम से कम एशिया में बरसों के लिये वह

اور کوریا کیا برا کرتا ہے اگر وہ یہ نہیں چاہتا کہ امریکہ والے دکھنی کوریا میں رہنے پائیں ؟ اور وہ یوں بھی تو امریکہ والوں کو جلدی سے جلدی دکھنی کوریا سے نکلتے ہوئے دیکھنے کا حق دار ہے کہ پانچ برس میں امریکہ والوں نے دکھنی کوریا والوں کو جو کچھ سکھایا یہی تو سکھایا کہ وہ امریکہ کو کچا مال بھیجتے رہیں اور امریکہ کے افسروں کو اپنا خدا مانتے رہیں ؟ کیا سیئول کا تین دنوں اتری کوریا کے ہاتھ میں آجانا اس بات کا ثبوت نہیں ہے کہ امریکہ والوں نے دکھنی کوریا والوں کو اتنا نامرد بنا دیا ہے جتنا جاپان نے بھی نہیں بنایا تھا . تبھی تو دکھنی کوریا نامدھاری جن راج کا پریسیڈنٹ پہلے ہی اتری حملے میں جنرل میک آرتھر سے پرارتھنا کرتا ہے کہ " مجھے بچائیے ."

یہ تو ہم نے کہنے کے لئے کہدیا . لیکن اگر امریکہ نے دکھنی کوریا کو ہر طرح سے مضبوط بھی بنا دیا ہوتا تب بھی ہم یہی کہتے کہ امریکہ کو کسی طرح وہاں رہنے کا نہ حق تھا، نہ ہے اور نہ رہنا چاہئے .

دنیا میں کوریا کی لڑائی اشانتی پیدا کرسکتی ہے لیکن تبھی جب امریکہ اسکو اکسانے بھڑکانے اور اسمیں عملی حصہ لینے کا کام کرتا رہیگا . لیکن اگر وہ جاپان چھوڑنے کی تاریخ طے کردے اور چین کی لڑائی میں حصہ لینا بند کردے اور کوریا کی گھریلو لڑائی کو کوریا پر چھوڑدے ایشیا کے معاملوں میں ایشیا والوں کے بلائے بنا دخل نہ دے تو پرانی دنیا میں یا کم سے کم ایشیا میں برسوں کے لئے وہ

नया हिन्द   कोरिया और उसकी घरेलू लड़ाई   जुलाई सन '५०

शान्ति की गारन्टी कर देता है. नहीं तो एशिया की अशान्ति का ज़िम्मेदार एशिया वाले जी से अमरीका को ही समझते रहेंगे.

अब अमरीका सोच ले !

२१-६-५०   भगवान दीन.

نیا ھند   کوریا اور اسکی گھریلو لڑائی   جولائی سن ۵۰ "

شانتی کی گارنٹی کردیتا ھے . نہیں تو ایشیا کی اشانتی کا ذمہ دار ایشیا والے جی سے امریکہ کو ھی سمجھتے رھینگے .

اب امریکہ سوچ لے !

بھگوان دین   ۲۱-۶-۵۰

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक, पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक बनन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

मैनेजर—'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

پنجاب ھمیں کیا سکھاتاھے

لیکھک ' پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا . اِس چھوٹے سے بیان میں اُنہوں نے وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رھے ھیں اُن کا بہت ھی دردناک ورنن کیا ھے . آخیر میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ھیں . ھمیں وشواس ھے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی .

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے . قیمت چار آنے .

مینیجر - "نیا ھند" ۴۸ بائی کا باغ الہ آباد .

ज़बरदस्ती न कीजिये

(भाई सरस्वती सरन)

दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद संसार में जितनी उथल पुथल मची है वह इतिहास में अपनी मिसाल आप ही है. राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मैदानों में ज़बरदस्त दिमाग़ी टकराव हो रहे हैं. क़ुदरती बात है कि इस भंवरजाल में असलियत और सचाई कुछ इस तरह से गुम हो जायँ जिन्हें खोजकर लाने का बड़े बड़े ग़ोता ख़ोरों का दावा भी झूटा साबित हो.

हमारे देश में भी यह दिमाग़ी अशांति पूरे ज़ोर से काम कर रही है. दूसरे सवालों के अलावा भाषा, लिपि और संस्कृति के सवालों पर सर फुटौवल हो रही है. सर फुटौवल इसलिये कहना पड़ता है कि इन सवालों पर जो बहसें होती हैं उनपर ठंडे दिमाग़ से काम लेने के बजाय अक्सर ज़ोरदार विरोध, फिर गर्मा गर्मी और आख़िर में गाली गलौज तक की नौबत आ जाती है. कुछ अजब नहीं कि कुछ समय के बाद भाषा और लिपि के सवालों को लेकर हमारे देश में साम्प्रदायिक दंगों की तरह नये ढङ्ग के दंगे होने लगें. तेलगू और उड़िया के समर्थकों में भाषा के सवाल पर एक बार पत्थरबाज़ी हो ही चुकी है. ठीक भी है, धर्म के नाम पर जब इन्सानों का ख़ून जायज़ है तो संस्कृति और सभ्यता के नाम पर गाली गलौज ज़रूर ही की जा सकती है.

زبردستی نہ کیجئے

(بھائی سرسوتی سرن)

دوسری بڑی لڑائی کے بعد سنسار میں جتنی اتھل پتھل مچی ہے وہ اتہاس میں اپنی مثال آپ ہی ہے . راج نیتک، آرتھک، ساماجک اور سانسکرتک میدانوں میں زبردست دماغی ٹکراو ہو رہے ہیں . قدرتی بات ہے کہ اس بھنور جال میں اصلیت اور سچائی کچھ اس طرح سے گم ہو جائیں جنہیں کھوج کر لانے کا بڑے بڑے غوطہ خوروں کا دعویٰ بھی جھوٹا ثابت ہو .

ہمارے دیش میں بھی یہ دماغی اشانتی پورے زور شور سے کام کر رہی ہے . دوسرے سوالوں کے علاوہ بھاشا، لپی اور سنسکرتی کے سوالوں پر سر پھٹول ہو رہی ہے . سر پھٹول اسلئے کہنا پڑتا ہے کہ ان سوالوں پر جو بحثیں ہوتی ہیں اُن پر ٹھنڈے دماغ سے کام لینے کے بجائے اکثر زور دار ورودھ، پھر گرما گرمی اور آخر میں گالی گلوچ تک کی نوبت آجاتی ہے . کچھ عجب نہیں کہ کچھ سمے کے بعد بھاشا اور لپی کے سوالوں کو لیکر ہمارے دیش میں سامپردائک دنگوں کی طرح نئے ڈھنگ کے دنگے ہونے لگیں . تیلگو اور اڑیا کے سمرتھکوں میں بھاشا کے سوال پر ایک بار پتھر بازی ہو ہی چکی ہے . ٹھیک بھی ہے، دھرم کے نام پر انسانوں کا خون جائز ہے تو سنسکرتی اور سبھیتا کے نام پر گالی گلوچ ضرور ہی کیجا سکتی ہے .

लेकिन भाषा और लिपि के सवालों पर जो बाज़ीगरी हो रही है उसे देख कर इसलिये दुख और होता है कि इस सारी बहस में भाषा के आधार को ही जड़ से ख़त्म कर दिया जाता है. ख़ुली असलियत की तरफ़ से आंखें मूंद कर दिमाग़ी घोड़ों को बे लगाम छोड़ दिया जाता है. इसी रौ में जो नये नये सुझाव पेश किये गये हैं उन्हें बरठोस रूप में जनता के आगे लाया जाता है तो वह भौंचक रह जाती है. मेरा दावा है कि भाषा और लिपि सम्बन्धी जितने भी सुझाव अभी तक सामने आये हैं उनमें दो एक को छोड़ कर बाक़ी किसी में जनता ने अपनी मुश्किलों का हल नहीं देखा. देखा क्या, सिर्फ़ तरह तरह के तमाशे, जिनसे कुछ देर तो हंसी आई और बाद में तबियत उकताने लगी.

ऐसा क्यों होता है ? इसीलिये कि ज़्यादातर सुझाव देने वाले भाषा के मूल स्रोत जनता और उसकी ज़रूरतों की तरफ़ ध्यान नहीं देते. या यों कहना चाहिये कि वह जनता को ज़िंदा और समझ बूझ रखने वाली चीज़ नहीं बल्कि मशीन समझते हैं जिसके हैंडिल को इधर उधर घुमाने से वह घुमाने वाले की मनचाही दिशा में दौड़ना शुरू कर दे. इससे ज़्यादा हंसी की बात और क्या हो सकती है.

इसलिये यह लोग सुझाव देते समय यह भूल जाते हैं, कि कोई भाषा या लिपि या संस्कृति एक दिन में बनाई, मिटाई, बिगाड़ी या संवारी नहीं जा सकती. जब तक पूरी की पूरी जनता या उसका बहुत बड़ा हिस्सा किसी सुझाव को नहीं अपना लेता तब तक भाषा पर उसका असर टिकाऊ नहीं हो सकता. ज़बरदस्ती करने का सिर्फ़ यही नतीजा होगा कि उलझे हुए दिमाग़ और उलझ जायेंगे.

لیکن بھاشا اور لپی کے سوالوں پر جو بازی گری ہو رہی ہے اُسے دیکھ کر اس لئے دکھ اور ہوتا ہے کہ اس ساری بحث میں بھاشا کے آدھار کو ہی جڑ سے ختم کر دیا جاتا ہے. اصلی اصلیت کی طرف سے آنکھیں موند کر دماغی گھوڑوں کو بے لگام چھوڑ دیا جاتا ہے. اس رو میں جو نئے نئے سجھاؤ پیش کئے گئے ہیں اُنہیں ٹھوس روپ میں جب جنتا کے آگے لایا جاتا ہے تو وہ بھونچک رہ جاتی ہے. میرا دعویٰ ہے کہ بھاشا اور لپی سمبندھی جتنے بھی سجھاؤ ابھی تک سامنے آئے ہیں ان میں دو ایک کو چھوڑ کر باقی کسی میں جنتا نے اپنی مشکلوں کا حل نہیں دیکھا. دیکھا کیا صرف طرح طرح کے تماشے جن سے کچھ دیر تو ہنسی آئی اور بعد میں طبیعت اُکتانے لگی.

ایسا کیوں ہوتا ہے؟ اسی لئے کہ زیادہ تر سجھاؤ دینے والے بھاشا کے مول سروت جنتا اور اُس کی ضرورتوں کی طرف دھیان نہیں دیتے. یا یوں کہنا چاہئے کہ وہ جنتا کو زندہ اور سمجھ بوجھ رکھنے والی چیز نہیں بلکہ مشین سمجھتے ہیں جس کے ہینڈل کو اِدھر اُدھر گھمانے سے وہ گھمانے والے کی من چاہی دشا میں دوڑنا شروع کر دے. اس سے زیادہ ہنسی کی بات اور کیا ہو سکتی ہے.

اسی لئے یہ لوگ سجھاؤ دیتے سمے یہ بھول جاتے ہیں کہ کوئی بھاشا یا لپی یا سنسکرتی ایک دن میں بنائی، مٹائی، بگاڑی یا سنواری نہیں جا سکتی. جب تک پوری کی پوری جنتا یا اُس کا بہت بڑا حصہ کسی سجھاؤ کو نہیں اپنا لیتا تب تک بھاشا پر اُس کا اثر ٹکاؤ نہیں ہو سکتا. زبردستی کرنے کا صرف یہی نتیجہ ہوگا کہ اُلجھے ہوئے دماغ اور اُلجھ جائیں گے.

भाषा के मामले में इस तरह की उलझन डालने वाले कितने सुझाव दिये गये हैं इनका कोई हिसाब नहीं है. मैं इस समय इनका ज़िक्र नहीं करूंगा. मैं इस समय लिपि के सवाल को लेता हूं जो ऊपर से देखने में इतना उलझा हुआ नहीं मालूम होता. राष्ट्र भाषा की लिपि देवनागरी रहे, इस मत को लगभग सभी मानते हैं. लेकिन एक दल ऐसा भी है जिसकी राय में फ़ारसी या अरबी लिपि को बिलकुल ख़त्म कर देना चाहिये. इन लोगों में कुछ तो ईमानदारी से यह बात कहते हैं और कुछ की नियत पर उचित रूप से शक किया जा सकता है. ईमान दारी से यह सुझाव देने वाले वह लोग हैं जिनका ख़याल है कि हिन्दी और उर्दू के, जो दरअसल एक ही भाषा हैं, झगड़े का ख़ास कारन अलग अलग लिपियों का होना है इसलिये इनमें से एक को ख़त्म कर दिया जाय. इनके अलावा कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें उम्मीद है कि फ़ारसी लिपि के साथ ही उर्दू भाषा भी ख़त्म हो जायगी.

मैं यहाँ पर सिर्फ़ उन लोगों के विचारों पर लिखूंगा जो ईमानदारी से समझते हैं कि फ़ारसी लिपि को ख़त्म करके हमें भाषा की एकता बनानी चाहिये. जून के "नया हिन्द" में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के डाक्टर एजाज़ हुसेन साहब का लेख इसी विषय पर छपा है. डाक्टर साहब की राय में फ़ारसी लिपि छोड़ देनी चाहिये. क्योंकि "उर्दू से हिन्दी वालों के बैर की सबसे बड़ी वजह इसका वह रूप है जिसमें यह लिखी जाती है. मेरा मतलब रस्मुलख़त यानी लिपि से है."

यह कहने का साहस तो शायद ही कोई कर सके कि इन भाषाओं के अलगाव का लिपि से कोई वास्ता नहीं, लेकिन मेरे ख़याल से इसे

بھاشا کے معاملے میں اس طرح کی الجھن ڈالنے والے کتنے سجھاؤ دیئے گئے ہیں ان کا کوئی حساب نہیں ہے. میں اس سمے انکا ذکر نہیں کروں گا. میں اس سمے لپی کے سوال کو لیتا ہوں، جو اوپر سے دیکھنے میں اتنا الجھا ہوا نہیں معلوم ہوتا. راشٹر بھاشا کی لپی دیوناگری رہے' اس مت کو لگ بھگ سبھی مانتے ہیں. لیکن ایک دل ایسا بھی ہے جس کی رائے میں فارسی یا عربی لپی کو بالکل ختم کر دینا چاہئے. ان لوگوں میں کچھ تو ایمانداری سے یہ بات کہتے ہیں اور کچھ کی نیت پر اچت روپ سے شک کیا جا سکتا ہے. ایمانداری سے سجھاؤ دینے والے وہ لوگ ہیں جنکا خیال ہے کہ ہندی اور اردو کے، جو در اصل ایک ہی بھاشا ہیں' جھگڑے کا خاص کارن الگ الگ لپیوں کا ہونا ہے اس لئے ان میں سے ایک کو ختم کر دیا جائے. ان کے علاوہ کچھ لوگ ایسے بھی ہیں جنہیں امید ہے کہ فارسی لپی کے ساتھ ہی اردو بھاشا بھی ختم ہو جائیگی.

میں یہاں پر صرف ان لوگوں کے وچاروں پر لکھوں گا جو ایمانداری سے سمجھتے ہیں کہ فارسی لپی کو ختم کرکے ہمیں بھاشا کی ایکتا بنانی چاہئے. جون کے "نیا ہند" میں الہ آباد یونیورسٹی کے ڈاکٹر اعجاز حسین صاحب کا لیکھ اسی وشے پر چھپا ہے. ڈاکٹر صاحب کی رائے میں فارسی لپی چھوڑ دینی چاہئے کیونکہ "اردو سے ہندی والوں کے بیر کی سب سے بڑی وجہ اس کا وہ روپ ہے جس میں یہ لکھی جاتی ہے. میرا مطلب رسم الخط یعنی لپی سے ہے."

یہ کہنے کا ساہس تو شاید ہی کوئی کر سکے کہ ان بھاشاؤں کے الگاؤ کا لپی سے کوئی واسطہ نہیں. لیکن میرے خیال سے اسے

वैर का सबसे बड़ा वजह नहीं कहा जा सकता. इंशा अल्ला खाँ को हिन्दी और उर्दू दोनों के समर्थक गर्व से अपना लेखक कहते हैं. उनकी 'रानी केतकी की कहानी' हिन्दुस्तानी भाषा की बे जोड़ चीज़ है. हिन्दुस्तानी भाषा को दिनरात कोसने वाले हिन्दी और उर्दू दोनों के समर्थक रानी केतकी की कहानी पर उंगली उठाने का साहस नहीं करते. अब सवाल यह है कि क्या आज तक किसीने यह झगड़ा भी पैदा किया कि रानी केतकी की कहानी फ़ारसी लिपि में लिखी गई थी या नागरी लिपि में. इंशा अल्ला खाँ नवाब अवध के दरबार में थे और उर्दू और फ़ारसी के बहुत बड़े कवि थे. रानी केतकी की कहानी भी फ़ारसी लिपि में लिखी गई थी. लेकिन इस वजह से कोई हिन्दी प्रेमी भी उस से नफ़रत नहीं करता.

हिन्दी और उर्दू दोनों में गद्य या नस्र के जो सब से पहले नमूने मिलते हैं वह हमें दोनों लिपियों में मिलते हैं. मेरा मतलब तोता मैना, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पचीसी वग़ैरा से है. यह कहानियाँ आज कितनी ही नीची क्यों न समझी जायँ पर हमारे कहानी साहित्य के विकास में इनकी भी एक जगह है. इनके बारे में लिपी के कारन कभी झगड़े फ़साद की नौबत न आई. बल्कि यह भी कोई खोज कर्ता ही बता सकता है कि पहले पहल इन्हें किस लिपि में लिखा गया था. इन मिसालों के देने से मेरा मतलब यह है कि लिपि के अलग होने पर भी एक ही भाषा में साहित्य पैदा किया जा सकता है बशर्ते कि वह तनदुरुस्त साहित्य हो.

डाक्टर साहब ने आगे चलकर कहा है कि "फ़ारसी ख़त कितना ही ख़ूबसूरत सही मगर छापने में जितनी कठिनाइयाँ हैं उन्हें

بیر کی سب سے بڑی وجہ نہیں کہا جا سکتا . انشاء اللہ خاں کو ہندی اور اُردو دونوں کے سمرتھک گرو سے اپنا لیکھک کہتے ہیں . ان کی "رانی کیتکی کی کہانی" ہندستانی بھاشا کی بے جوڑ چیز ہے . ہندستانی بھاشا کو دن رات کوسنے والے ہندی اور اُردو دونوں کے سمرتھک رانی کیتکی کی کہانی پر انگلی اٹھانے کا ساہس نہیں کرتے . اب سوال یہ ہے کہ کیا آج تک کسی نے یہ جھگڑا بھی پیدا کیا کہ رانی کیتکی کی کہانی فارسی لپی میں لکھی گئی تھی یا ناگری لپی میں . انشاء اللہ خاں نواب اودھ کے دربار میں تھے اور اُردو اور فارسی کے بہت بڑے کوی تھے . رانی کیتکی کی کہانی بھی فارسی لپی میں لکھی گئی تھی . لیکن اس وجہ سے کوئی ہندی پریمی اس سے نفرت نہیں کرتا .

ہندی اور اُردو دونوں میں گدیہ یا نثر کے جو سب سے پہلے نمونے ملتے ہیں وہ ہمیں دونوں لپیوں میں ملتے ہیں . میرا مطلب طوطا مینا ، سنگھاسن بتیسی ، بیتال پچیسی وغیرہ سے ہے . یہ کہانیاں آج کتنی ہی نیچی کیوں نہ سمجھی جائیں پر ہمارے کہانی ساہتیہ کے وکاس میں ان کی بھی ایک جگہ ہے . ان کے بارے میں لپی کے کارن کبھی جھگڑے فساد کی نوبت نہ آئی . بلکہ یہ بھی کوئی کھوج کرتا ہی بتا سکتا ہے کہ پہلے پہل انہیں کس لپی میں لکھا گیا تھا . ان مثالوں کے دینے سے میرا مطلب یہ ہے کہ لپی کے الگ ہونے پر بھی ایک ہی بھاشا میں ساہتیہ پیدا کیا جاسکتا ہے بشرطیکہ وہ تندرست ساہتیہ ہو .

ڈاکٹر صاحب نے آگے چل کر کہا ہے کہ " فارسی خط کتنا ہی خوبصورت سہی مگر چھاپنے میں جتنی کٹھنائیاں ہیں انہیں

देखकर उस खूबसूरती से हाथ उठाना पड़ता है." यह दलील इस बात के पक्ष में है कि उर्दू भाषा को नागरी लिपि में लिखा जाये लेकिन ताज्जुब यह है आगे चलकर अरबी लिपि के खिलाफ वह इसी दलील को उलटी कर देते हैं और कहते हैं "लेकिन दिक्कत यह है कि यह टाइप इतने खूबसूरत नहीं होते जितना आप चाहते हैं. आप नजरों को तकलीफ होती है." डाक्टर साहब की यह दलील उर्दू पढ़ने वाली जनता को कितना संतोष दे सकेगी यह तो वही बता सकती है, लेकिन मुझे इस सिलसिले में यह कहना है कि अरबी लिपि, फारसी लिपि की आदी जनता को कितनी ही अटपटी क्यों न लगे लेकिन देवनागरी लिपि से कहीं आसान पड़ेगी.

डाक्टर साहब की एक और दलील मुझे उलटी मालूम हुई. आप कहते हैं कि कुछ लोगों का यह एतराज गलत है कि "लिपि बदलने से उर्दू जबान ही बदल जायगी क्योंकि जिस जबान की लिपि ली जायगी वह उस पर इस तरह छा जायगी कि उर्दू उर्दू न रह जायगी. डाक्टर साहब का कहना है कि लिपियों के बदलने से कोई भाषा नहीं बदल जाती है. लेकिन इससे पहले वह कह चुके हैं कि हिन्दी उर्दू के बैर की सबसे बड़ी वजह दोनों की लिपियों का अलग अलग होना है. सवाल यह है कि जब आज कल की हिन्दी और उर्दू के, जो शुरू में एक ही थीं, अलग होने की "सबसे बड़ी वजह" दोनों लिपियों का अलग अलग होना है तो यह कैसे कहा जा सकता है कि लिपि बदलने से भाषा ज्यों की त्यों रहेगी.

फिर डाक्टर साहब का कहना है कि उर्दू की छपाई में बहुत झंझट होता है और इससे मैटर के छापने में देर लगती है.

دیکھکر اس خوبصورتی سے ہاتھ اٹھانا پڑتا ہے۔" یہ دلیل اس بات کے پکش میں ہے کہ اردو بھاشا کو ناگری لپی میں لکھا جائے۔ لیکن تعجب یہ ہے کہ آگے چل کر عربی لپی کے خلاف وہ اسی دلیل کو الٹی کردیتے ہیں اور کہتے ہیں "لیکن دقت یہ ہے کہ یہ ٹائپ اتنے خوبصورت نہیں ہوتے جتنا آپ چاہتے ہیں۔ آپ کی نظروں کو تکلیف ہوتی ہے۔" ڈاکٹر صاحب کی یہ دلیلیں اردو پڑھنے والی جنتا کو کتنا سنتوش دے سکینگی یہ تو وہی بتاسکتی ہے' لیکن مجھے اس سلسلے میں یہ کہنا ہے کہ عربی لپی' فارسی لپی کی عادی جنتا کو کتنی ہی اٹ پٹی کیوں نہ لگے لیکن دیوناگری لپی سے کہیں آسان پڑیگی۔

ڈاکٹر صاحب کی ایک اور دلیل مجھے الٹی معلوم ہوئی۔ آپ کہتے ہیں کہ کچھ لوگوں کا یہ اعتراض غلط ہے کہ "لپی بدلنے سے اردو زبان ہی بدل جائیگی کیونکہ جس زبان کی لپی لی جائیگی وہ اس پر اس طرح چھا جائیگی کہ اردو اردو نہ رہ جائیگی۔" ڈاکٹر صاحب کا کہنا ہے کہ لپیوں کے بدلنے سے کوئی بھاشا نہیں بدلجاتی ہے۔ لیکن اس سے پہلے وہ کہ چکے ہیں کہ ہندی اردو کے بیر کی سب سے بڑی وجہ دونوں کی لپیوں کا الگ الگ ہونا ہے۔ سوال یہ ہے کہ جب آجکل کی ہندی اور اردو کے' جو شروع میں ایک ہی تھیں' الگ ہونےکی "سب سے بڑی وجہ" دونوں لپیوں کا الگ الگ ہونا ہے تو یہ کیسے کہا جاسکتا ہے کہ لپی بدلنے سے بھاشا جوں کی توں رہیگی۔

پھر ڈاکٹر صاحب کا کہنا ہے کہ اردو کی چھپائی میں بہت جھنجھٹ ہوتاہے۔ اور اس سے میٹر کے چھاپنے میں دیر لگتی ہے۔

यह डाक्टर साहबने कोई नई बात नहीं बताई. लेकिन वह यह भूल गये कि किताबों और पत्रों के प्रकाशक जिन्हें भाषाके माहिरों से ऐसी बातों की ज्यादा चिंता रहती है क्यों फ़ारसी लिपि से चिपके पड़े हैं. कारन सिर्फ़ एक है. और वह यह कि सारी कठिनाइयों के बावजूद उर्दू जानने वाली जनता हिन्दी के अच्छे छपे हुए अखबारों के बजाय उर्दू के ज्यादातर भद्दे छपे हुए अखबार खरीदती और पढ़ती है. जनता की इस रुचि की तरफ़ से शायद डाक्टर साहब भी आँखें न मूंद सकेंगे.

डाक्टर साहब के इस कथन से मेरा मतभेद है कि "कोई ज़बान अपने साथ अपने लिये लिपि लेकर नहीं पैदा होती. जिस मुल्क में पैदा होती है वहीं के लिहाज से उसकी लिपि भी बन जाती है क्योंकि आवाज़ आबोहवा के असर से हलक़ (कंठ) से निकलती है और जिस तरह वहां के रहने वाले आवाज़ निकालते हैं और जिस क़िस्म के शब्द बनते हैं उनको अदा करने के लिये उसी सरज़मीन का ढांचा ज्यादा सही और आसान भी होता है." उर्दू की लिपि फ़ारसी क्यों हो गई इसकी वजह डाक्टर साहब बताते हैं फ़ारसी ज़बान का बोल-बाला. पर यह रोमन लिपि रूस को छोड़ कर सारे योरप, दोनों अमरीकाओं, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के बहुत से भागों और तुरकी में क्यों रिवाज पा गई ? क्या डाक्टर साहब का यह मतलब है कि इन सभी जगहों की आबोहवा और वहां के रहनेवाले सभी लोगों की हलकों (कंठों) की आवाज़ एक सी है ? इतिहास के सभी जानकार यह मानेंगे कि जितनी तेज़ी से भाषाएं बनती हैं उतनी तेज़ी से लिपियां नहीं बनतीं. ऐसी हालत में अधिकतर भाषाएं अपने

یہ ڈاکٹر صاحب نے کوئی نئی بات نہیں بتائی . لیکن وہ یہ بھول گئے کہ کتابوں اور پتروں کے پرکاشک جنہیں بھاشا کے ماہروں سے ایسی باتوں کی زیادہ چنتا رہتی ہے کیوں فارسی لپی سے چپکے پڑے ہیں . کارن صرف ایک ہے . اور وہ یہ کہ ساری کٹھنائیوں کے باوجود اردو جاننے والی جنتا ہندی کے اچھے چھپے ہوئے اخباروں کے بجائے اردو کے زیادہ تر بھدے چھپے ہوئے اخبار خریدتی اور پڑھتی ہے . جنتا کی اس رچی کی طرف سے شاید ڈاکٹر صاحب بھی آنکھیں نہ موند سکینگے .

ڈاکٹر صاحب کے اس کتھن سے میرا مت بھید ہے کہ " کوئی زبان اپنے ساتھ اپنے لئے لپی لیکر نہیں پیدا ہوتی . جس ملک میں پیدا ہوتی ہے وہاں کے لحاظ سے اس کی لپی بھی بن جاتی ہے . کیونکہ آواز آب و ہوا کے اثر سے حلق (کنٹھ) سے نکلتی ہے اور جس طرح وہاں کے رہنے والے آواز نکالتے ہیں اور جس قسم کے شبد بنتے ہیں ان کو ادا کرنے کے لئے اسی سرزمین کا ڈھانچہ زیادہ صحیح اور آسان بھی ہوتا ہے ." اردو کی لپی فارسی کیوں ہوگئی اس کی وجہ ڈاکٹر صاحب بتاتے ہیں فارسی زبان کا بول بالا . پر یہ رومن لپی روس کو چھوڑ کر سارے یوروپ، دونوں امریکاؤں، آسٹریلیا، افریقہ کے بہت سے بھاگوں اور ترکی میں کیوں رواج پا گئی ؟ کیا ڈاکٹر صاحب کا یہ مطلب ہے کہ ان سبھی جگہوں کی آب و ہوا اور وہاں کے رہنے والے سبھی لوگوں کے حلقوں (کنٹھوں) کی آواز ایک سی ہے ؟ اتہاس کے سبھی جانکار یہ مانینگے کہ جتنی تیزی سے بھاشائیں بنتی ہیں اتنی تیزی سے لپیاں نہیں بنتیں . ایسی حالت میں ادھک تر بھاشائیں اپنے

साथ या तो कोई लिपि लेकर ही पैदा होती हैं या शुरू में उनकी कोई लिपि नहीं होती और वह बाद में किसी लिपि को अपना लेती हैं. अरबी लिपि सारे दक्खिन पच्छिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में और रूसी लिपि एशियाई रूस के अधिकतर देशों में फैल ही गई है. हर भाषा के लिये नई लिपि न कभी रही है न रहेगी.

यह तो हुई एक मोटे सिद्धांत की बात. फ़ारसी लिपि की बहस से इसका सम्बन्ध यह है कि हिन्दुस्तान के रहने वाले फ़ारसी लिपि के कुछ हर्फ़ों का उच्चारन ठीक से नहीं कर पाते और कई हर्फ़ों को एक सा बोलते हैं इसलिये लिखावट में ग़लतियाँ हो जाती हैं. यह एतराज़ काफ़ी पुराना एतराज़ होते हुए भी बिल्कुल दुरुस्त है. लेकिन किसी लिपि में कुछ कमज़ोरी होने के माने यह तो नहीं है कि लिपि ही मिटा डाली जाय. लिपियों में सुधार होते ही रहते हैं. रोमन लिपि के हर्फ़ों में अलग अलग भाषाओं में उच्चारन के ख़याल से छोटे मोटे सुधार किये गये हैं. दूर न जाइये. ख़ुद नागरी में ही फ़ारसी अरबी शब्द लाने के लिये क, ख, ग, ज, और फ के नीचे बिन्दी देने का रिवाज हो गया है (हालांकि कुछ ठेठ क़िस्म के लोग अब भी इस बिन्दी के बिना ही काम चलाते हैं चाहे इससे फ़ारसी अरबी शब्दों के उच्चारन का सत्यानाश ही क्यों न हो जाय) उर्दू के लिये फ़ारसी लिपि में ज़रूरी सुधार किया जा सकता है. इस सिलसिले में कुछ सुझाव भी आये हैं जिनपर ग़ौर किया जाना चाहिये.

लेकिन इस में भी इस बात का ध्यान रखना होगा कि हम कहीं लिपि को आसान बनाने के चक्कर में भाषा का रूप ही बिगाड़ कर न रख दें. मिसाल के लिये एक सुझाव है कि एक सी आवाज़ वाले

ساتھ یا تو کوئی لپی لیکر ہی پیدا ہوتی ہیں یا شروع میں ان کی کوئی لپی نہیں ہوتی اور وہ بعد میں کسی لپی کو اپنا لیتی ہیں۔ عربی لپی سارے دکھن پچھمی ایشیا اور اتری افریقہ میں اور روسی لپی ایشیائی روس کے ادھک تر دیشوں میں پھیل ہی گئی ہے۔ ہر بھاشا کیلئے نئی لپی نہ کبھی رہی ہے نہ رہیگی۔

یہ تو ہوئی ایک موٹے سدھانت کی بات۔ فارسی لپی کی بحث سے اس کا سمبندھ یہ ہے کہ ہندستان کے رہنے والے فارسی لپی کے کچھ حرفوں کا اچچارن ٹھیک سے نہیں کرپاتے اور کئی حرفوں کو ایک سا بولتے ہیں۔ اس لئے لکھاوٹ میں غلطیاں ہو جاتی ہیں۔ یہ اعتراض کافی پرانا اعتراض ہوتے ہوئے بھی بالکل درست ہے۔ لیکن کسی لپی میں کچھ کمزوری ہونے کے معنی یہ تو نہیں ہیں کہ لپی ہی مٹا ڈالی جائے۔ لپیوں میں سدھار ہوتے ہی رہتے ہیں۔ رومن لپی کے حرفوں میں الگ الگ بھاشاؤں میں اچچارن کے خیال سے چھوٹے موٹے سدھار کئے گئے ہیں۔ دور نہ جائیے۔ خود ناگری میں ہی فارسی عربی شبد لانے کے لئے 'क' 'ख' 'ग' 'ज' اور 'फ' کے نیچے بندی دینے کا رواج ہوگیا ہے۔ (حالانکہ کچھ ٹھیٹھ قسم کے لوگ اب بھی اس بندی کے بنا ہی کام چلاتے ہیں چاہے اس سے فارسی عربی شبدوں کے اچچارن کا ستیاناش ہی کیوں نہ ہوجائے) اردو کے لئے فارسی لپی میں ضروری سدھار کیا جاسکتا ہے۔ اس سلسلے میں کچھ سجھاؤ بھی آئے ہیں جن پر غور کیا جانا چاہئے۔

لیکن اس میں بھی اس بات کا دھیان رکھنا ہوگا کہ ہم کہیں لپی کو آسان بنانے کے چکر میں بھاشا کا روپ ہی بگاڑ کر نہ رکھدیں۔ مثال کے لئے ایک سجھاؤ ہے کہ ایک سی آواز والے

हरूफ एक तरह से लिखे जायँ. जाल (ذ), जे (ز) ज्वाद (ض) और जो (ظ) के बजाय सिर्फ जे (ز) से काम लिया जाय. इस सुझाव को अंधाधुंध अमल में लाने का नतीजा क्या होगा. सिर्फ यही नहीं कि उर्दू पढ़ने वालों को काफी अटपटा सा लगेगा बल्कि कई शब्दों के अर्थ ही बदल जायँगे. क़ाज़ी शब्द का मतलब होता है न्यायाधीश. अभी क़ाज़ी ज्वाद (ض) लिखा जाता है. जे (ز) से लिखने पर यह क़ाज़ी قازی हो जायगा. क़ाज़ (जे से) एक चिड़िया होती है. चुनान्चे इस सुधरे हुए न्यायाधीश का सम्बन्ध क़ाज़ चिड़िया से क़ायम हो जायगा.

फिर यह भी खयाल रखना चाहिये कि भाषा का विकास इन कठिनाइयों के बावजूद हो सकता है. अंगरेज़ी में पी, यू, टी, पट और पी, यू, टी, पुट की मुसीबत या 'के' और 'सी' का झमेला हमें चाहे जितना अखरे लेकिन उसकी वजह से अंगरेज़ी भाषा के रास्ते में कोई खास मुश्किलें नहीं आईं और न अंगरेज़ी बोलने वालों ने इसकी वजह से वावैला मचाया.

डाक्टर एजाज़ साहब की एक और बात पर विचार करना है. वह यह मानते हैं कि फ़ारसी लिपि जल्दी लिखी जाती है. लेकिन इसके बारे में उनका कहना है कि चूंकि आइंदा सारा लिखना मशीनों से होगा हाथ से नहीं इसलिये फ़ारसी लिपि को अभी से खत्म कर दो. घोड़े को गाड़ी के पीछे जोतना इसी को कहते हैं. अव्वल तो मेरी समझ में यही नहीं आता कि वह ज़माना कैसा होगा जब हाथ से लिखने की ज़रूरत ही ख़त्म हो जायगी. अभी तक तो किसी देश में ऐसा नहीं है. खैर यह मान लिया जाय तो भी जहां ज़रूरत न रहेगी

حروف ایک طرح سے لکھے جائیں. ذ، ز، ض اور ظ کے بجائے صرف ز سے کام لیا جائے. اس سجھاؤ کو اندھا دھند عمل میں لانے کا نتیجہ کیا ہوگا؟ صرف یہی نہیں کہ اُردو پڑھنے والوں کو کافی اٹ پٹا سا لگیگا بلکہ کئی شبدوں کے ارتھ ہی بدل جائینگے. قاضی شبد کا مطلب ہوتا ہے نیایا دھیش. ابھی قاضی ض سے لکھا جاتا ہے. ز سے لکھنے پر یہ قاضی "قازی" ہوجائیگا. قاز (ز سے) ایک چڑیا ہوتی ہے. چنانچہ اس سدھرے ہوئے نیایا دھیش کا سمبندھ قاز چڑیا سے قایم ہوجائیگا.

پھر یہ بھی خیال رکھنا چاہئے کہ بھاشا کا وکاس ان کٹھنائیوں کے باوجود ہوسکتا ہے. انگریزی میں پی، یو، ٹی، پٹ اور پی، یو، ٹی، پُٹ کی مصیبت یا 'کے' اور 'سی' کا جھمیلا ہمیں چاہے جتنا اکھرے لیکن اس کی وجہ سے انگریزی بھاشا کے راستے میں کوئی خاص مشکلیں نہیں آئیں. اور نہ انگریزی بولنے والوں نے اس کی وجہ سے واویلا مچایا

ڈاکٹر اعجاز صاحب کی ایک اور بات پر وچار کرنا ہے. وہ یہ مانتے ہیں کہ فارسی لپی جلدی لکھی جاتی ہے. لیکن اس کے بارے میں ان کا کہنا ہے کہ چونکہ آئندہ سارا لکھنا مشینوں سے ہوگا ہاتھ سے نہیں اسلئے فارسی لپی کو ابھی سے ختم کردو. گھوڑے کو گاڑی کے پیچھے جوتنا اسی کو کہتے ہیں. اول تو میری سمجھ میں یہی نہیں آتا کہ وہ زمانہ کیسا ہوگا جب ہاتھ سے لکھنے کی ضرورت ہی ختم ہوجائیگی. ابھی تو کسی دیش میں ایسا نہیں ہے. خیر یہ مان لیا جائے تو بھی جب ضرورت نہ رہیگی

तो लोग खुद ही झंझट वाली फ़ारसी लिपि को छोड़ देंगे. पेशगी सौदे की क्या जरूरत है ? अभी से जल्दी लिखी जाने वाली लिपि को इसलिये छोड़ दिया जाय कि पचास साठ साल बाद हाथ से लिखने की ज़रूरत न रहेगी ! (और उस समय तक आज के लिखने वाले क़ब्र में जा पहुँचेंगे)

मैंने डाक्टर साहब के लेख पर ही टीका की है. इसका सबब यह है कि उर्दू लिपि को ख़त्म करने के लिये इससे ज्यादा और सुलझी हुई दलीलें और कहीं नहीं दी गईं. अब सवाल यह है कि किया क्या जाय. इस सिलसिले में पहले तो इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि फ़ारसी लिपि के बारे में दो तरह के सवाल हो सकते हैं और दोनों पर दिमाग़ साफ़ कर लेना ज़रूरी है. यह मानी हुई बात है कि उर्दू और हिन्दी बुनियादी तौर पर चाहे एक हों लेकिन उनके आज के रूप रंग, विचारों, साहित्य और उच्चारन में भेद है. उर्दू कही जाने वाली भाषा की लिपि फ़ारसी है. अब सवाल यह है कि भारत की राष्ट्र भाषा के लिये फ़ारसी रखी जाय या नहीं. यहाँ पर फ़ारसी और देवनागरी लिपियों के मुक़ाबले का सवाल पैदा होता है और मेरी निजी राय भी यही है कि फ़ारसी लिपि की दिक़्क़तों को देखते हुए राष्ट्र भाषा के लिये फ़ारसी लिपि को छोड़ देना होगा.

लेकिन मैं डाक्टर एजाज़ हुसैन साहब की इस राय से सहमत नहीं हूँ कि उर्दू भाषा की तरक़्क़ी के लिये फ़ारसी लिपि छोड़ कर नागरी का प्रयोग किया जाय. किसी भाषा और लिपि को पलक झपकाते बनाया या बिगाड़ा नहीं जा सकता. राष्ट्र भाषा चाहे न हो लेकिन उर्दू मिट नहीं सकती. उर्दू की तरक़्क़ी फ़ारसी लिपि को मिटाने से नहीं बल्कि उसे

تولوگ خود ہی جھنجھٹ والی فارسی لپی کو چھوڑ دینگے . پیشگی سودے کی کیا ضرورت ہے ؟ ابھی سے جلدی لکھی جانیوالی لپی کو اس لئے چھوڑ دیا جائے کہ پچاس ساٹھ سال بعد ہاتھ سے لکھنے کی ضرورت نہ رہیگی ! (اور اس سمے تک آج کے لکھنے والے قبر میں جا پہونچینگے .)

میں نے ڈاکٹر صاحب کے لیکھ پر ہی ٹیکا کی ہے . اس کا سبب یہ ہے کہ اُردو لپی کو ختم کرنے کے لئے اس سے زیادہ اور سلجھی ہوئی دلیلیں اور کہیں نہیں دی گئیں . اب سوال یہ ہے کہ کیا کیا جائے ؟ اس سلسلے میں پہلے تو اس بات کا خیال رکھنا ضروری ہے کہ فارسی لپی کے بارے میں دو طرح کے سوال ہوسکتے ہیں اور دونوں پر دماغ صاف کرلینا ضروری ہے . یہ مانی ہوئی بات ہے کہ اُردو اور ہندی بنیادی طور پر چاہے ایک ہوں لیکن اُن کے آج کے روپ رنگ، وچاروں، ساہتیہ اور اُچّارن میں بھید ہے . اُردو کہی جانیوالی بھاشا کی لپی فارسی ہے . اب سوال یہ ہے کہ بھارت کی راشٹر بھاشا کی لپی فارسی رکھی جائے یا نہیں . یہاں پر فارسی اور دیوناگری لپیوں کے مقابلے کا سوال پیدا ہوتا ہے اور میری نجی رائے بھی یہی ہے کہ فارسی لپی کی دقتوں کو دیکھتے ہوئے راشٹر بھاشا کے لئے فارسی لپی کو چھوڑ دینا ہوگا .

لیکن میں ڈاکٹر اعجاز حسین صاحب کی اس رائے سے سہمت نہیں ہوں کہ اُردو بھاشا کی ترقی کیلئے فارسی لپی چھوڑکر ناگری کا پریوگ کیا جائے . کسی بھاشا اور لپی کو پلک جھپکاتے بنایا یا بگاڑا نہیں جاسکتا . راشٹر بھاشا چاہے نہ ہو لیکن اُردو مٹ نہیں سکتی . اُردو لپی کی ترقی فارسی لپی کو مٹانے سے نہیں بلکہ اُسے

सुधारने से होगी. उत्तर प्रदेश के मुसलमान ही नहीं पंजाब के हिन्दू भी फारसी या ज्यादा से ज्यादा अरबी लिपि में किताबें और अखबार पढ़ना चाहते हैं. उनपर कोई भाषा या लिपि थोपी नहीं जासकती. सरकार की सरपरस्ती न मिलने पर भी भाषायें अपने बल पर जिन्दा रहती हैं. उनकी ताक़त का आधार उनकी साहित्यक परम्परा होती है. उर्दू साहित्य की परम्परा बहुत कुछ ईरानी है. उससे फारसी लिपि छीन लेना उसे लुंज पुंज कर देना होगा.

अब समय का तक़ाजा यह है कि हम भाषाओं और लिपियों की वकालत न करके हर भाषा को तरक़्क़ी दें और उसे ताक़तवर बनायें. इसका तरीक़ा यह है कि हर भाषा के साहित्य को जनता के पास लाया जाय और जनता से ही उसके लिये ताक़त हासिल की जाय. जल्दी नहीं लेकिन ठीक समय पर खुद ब खुद ऐसी भाषा और ऐसी लिपि का चलन होजायगा जो जनता की भाषा और लिपि होगी और जिसके बारे में लड़ने झगड़ने की किसी को ज़रूरत नहीं रहेगी. इस समय सर फुटौवल करने से भाषा और साहित्य की बरबादी के अलावा कुछ हाथ न लगेगा.

سدھارنے سے ہوگی. اتر پردیش کے مسلمان ہی نہیں' پنجاب کے ہندو بھی فارسی یا زیادہ سے زیادہ عربی لپی میں کتابیں اور اخبار پڑھنا چاہتے ہیں. ان پر کوئی بھاشا یا لپی تھوپی نہیں جاسکتی. سرکار کی سرپرستی نہ ملنے پر بھی بھاشائیں اپنے بل پر زندہ رہتی ہیں. ان کی طاقت کا آدھار انکی ساہتیک پرمپرا ہوتی ہے. اُردو ساہتیہ کی پرمپرا بہت کچھ ایرانی ہے. اس سے فارسی لپی چھین لینا اُسے لنج پنج کردینا ہوگا.

اب سمے کا تقاضہ یہ ہے کہ ہم بھاشاؤں اور لپیوں کی وکالت نہ کرکے ہر بھاشا کو ترقی دیں اور اُسے طاقتور بنائیں. اس کا طریقہ یہ ہے کہ ہر بھاشا کے ساہتیہ کو جنتا کے پاس لایا جائے اور جنتا سے ہی اس کے لئے طاقت حاصل کیجائے. جلدی نہیں لیکن ٹھیک سمے پر خود بخود ایسی بھاشا اور ایسی لپی کا چلن ہو جائیگا جو جنتا کی بھاشا اور لپی ہوگی اور جس کے بارے میں لڑنے جھگڑنے کی کسی کو ضرورت نہیں رہیگی. اس سمے سر پھٹول کرنے سے بھاشا اور ساہتیہ کی بربادی کے علاوہ کچھ ہاتھ نہ لگیگا.

प्रकृति का सन्देश

(भाई चरन सरन 'नाज़')

मेरा एक सन्देसा सुन ले
भूक की लौ में जलने वाले,
आंसू से मुँह धोने वाले
रोने और तड़पने वाले
मेरा एक सन्देसा सुनले!

ऐ भूके मज़दूर किसान
भारत की निर्धन सन्तान
छाती फाड़ परिश्रम तेरा,
भूक से तू मजबूर जवान

मेरे अन्तर पट के तूने
राज़ हैं कितने खोल दिये,
आंधी, बदल के भी तूने
साज़ हैं कितने थाम लिये.

मेरे बवंडर में भी अक्सर
मौत का तेरी नाच हुआ है,
मेरे ओलों पालों का भी
खेत पे तेरे वार हुआ है.

मेरे कारन खेत से अकसर
भूक की बाली उगती है,
मेरे अत्याचार पे तेरी
क़िस्मत. अक्सर रोती है

मेरे अत्याचार में पागल
प्यार का मेरे भेद छिपा है;

پرکرتی کا سندیش

(بھائی چرن سرن 'ناز')

میرا ایک سندیسہ سن لے
بھوک کی لو میں جلنے والے'
آنسو سے منہ دھونے والے'
رونے اور تڑپنے والے
میرا ایک سندیسہ سن لے!

اے بھوکے مزدور کسان
بھارت کی نردھن سنتان
چھاتی پھاڑ پر شرم تیرا'
بھوک سے تو مجبور جوان

میرے انتر پٹ کے تونے
راز ہیں کتنے کھول دئیے
آندھی' بادل کے بھی تونے
ساز ہیں کتنے تھام لئے

میرے بونڈر میں بھی اکثر
موت کا تیری ناچ ہوا ہے'
میرے اولوں پالوں کا بھی
کھیت پہ تیرے وار ہوا ہے

میرے کارن کھیت سے اکثر
بھوک کی بالی اگتی ہے'
میرے اتیاچار پر تیری
قسمت اکثر روتی ہے

میرے اتیاچار میں پاگل
پیار کا میرے بھید چھپا ہے:

मेरे आंधी पानी में ही
कर्म का तेरे भेद छिपा है.

वन को मेरे काट के तूने
खेत बनाये, बाग़ बनाये;
मेरी अन्धेरी रात की ख़ातिर
तूने कितने चराग़ जलाये.

मेरे पत्थर के टुकड़ों को
तूने बना दिया है दर्पन;
मेरे खारी सागर जल में
तूने किया है अमृत-मंथन.

तूने मेरे विष से अक्सर
अमृत का भी काम लिया है,
तूने मेरे 'मीठे' को भी
ज़हरे हलाहल बना दिया है.

सागर के जल-सेज पे तूने
कर्म की अपनी नाव चलाई,
तूने अपने कर्म से उड़कर
पंछी को भी मात दिखाई.

कर्म के पुतले देख रही है
बे मौक़ा क्यों आंधी पानी ?
बिठला दे साहस से अपने
सागर की उठती तुग़यानी.

भारत तेरा देश नहीं है
मेरी खुली हथेली है यह
बूझ ले इस को बूझ ले जल्दी
तेरे लिये पहेली है यह.

गंगा, जमुना की धारायें

میرے آندھی پانی میں ہی
کرم کا تیرے بھید چھپا ہے۔

بن کو میرے کاٹ کے تونے
کھیت بنائے، باغ بنائے؛
میری اندھیری رات کی خاطر
تونے کتنے چراغ جلائے

میرے پتھر کے ٹکڑوں کو
تونے بنا دیا ہے درپن؛
میرے کھاری ساگر جل میں
تونے کیا ہے امرت منتھن۔

تو نے میرے وِش سے اکثر
امرت کا بھی کام لیا ہے،
تو نے میرے 'میٹھے' کو بھی
زہر ہلا ہل بنا دیا ہے

ساگر کے جل سیج پہ تونے
کرم کی اپنی ناؤ چلائی،
تونے اپنے کرم سے اُڑکر
پنچھی کو بھی مات دکھائی

کرم کے پتلے دیکھ رہا ہے
بے موقعہ کیوں آندھی پانی ؟
بٹھلا دے ساہس سے اپنے
ساگر کی اُٹھتی طغیانی

بھارت تیرا دیش نہیں ہے
میری کھلی ہتھیلی ہے یہ
بوجھ لے اسکو بوجھ لے جلدی
تیرے لئے پہیلی ہے یہ

گنگا جمنا کی دھارائیں

भारत की जीवन रेखा हैं
विंध्याचल, नबदा, तापती
तेरी क़िस्मत का लेखा हैं.

मेरी हथेली सदा खुली है
इस पर जो है वह तेरा है,
भारत से ले भारत वाले
तूने जो उस को दे रक्खा है.

मेरी हथेली पर तू ज़ालिम
ख़ून की छींटें मार रहा है,
भारत जैसे हाथ पे मेरे
तू भारत का भार रहा है.

ऐसे अत्याचार से ज़ालिम
तेरी क्या क़िस्मत बदले गी,
खुली हथेली से क्या यों ही
तेरे लिये दौलत बिखरेगी

आँसू देगा, आँसू लेगा,
अन्न बिखेर, अन्न उपजेगा,
मेरे हाथ पे जो रक्खेगा,
वही बहुत सा तू पायेगा.

उठ और आपस में घुल मिलकर
हाथ मेरा मज़बूत बना दे,
अपने इस अन्धेर नगर में
कर्म की अपने ज्योति जगा दे.

अब भी तुझे गर होश न आया
तो मुट्ठी बंध जाये गी,
भारत भूमि तेरे ही कारन
जग से ग़ायब हो जाये गी.

بھارت کی جیون ریکھا ہیں
وندھیا چل، نربدا، تاپتی
تیری قسمت کا لیکھا ہیں

میری ہتھیلی سدا کھلی ہے
اس پر جو ہے وہ تیرا ہے،
بھارت سے لے بھارت والے
تو نے جو اس کو دے رکھا ہے.

میری ہتھیلی پر تو ظالم
خون کی چھینٹیں مار رہا ہے
بھارت جیسے ہاتھ پہ میرے
تو بھارت کا بھار رہا ہے

ایسے اتیا چار سے ظالم
تیری کیا قسمت بدلیگی،
کھلی ہتھیلی سے کیا یونہی
تیرے لئے دولت بکھیریگی

آنسو دیگا، آنسو لیگا،
ان بکھیر، ان اپجیگا،
میرے ہاتھ پہ جو رکھیگا،
وہی بہت سا تو پائیگا

اٹھ اور آپس میں گھل مل کے
ہاتھ میرا مضبوط بنا دے،
اپنے اس اندھیر نگر میں
کرم کی اپنی جیوتی جگا دے

اب بھی تجھے گر ہوش نہ آیا
تو مٹھی بندھ جائیگی
بھارت بھومی تیرے ہی کارن
جگ سے غائب ہو جائیگی

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

एडीटर, प्रेम भाई

पानी और हवा

(भाई सुरेन्द्र कुमार)

गरमी से बेचैन थी धरती
गरम गरम थी आहें भरती
लोग थे पानी पानी कहते
आहें भरते पंखा झलते

कोई बैठे पेड़ तले थे
गरमी से हैरान बड़े थे
ठन्डी हवा पूरब से आई
दामन में खुशियाँ भर लाई

बादल गरजा पानी बरसा
मन झूमा और गाया थिरका
ठन्डी हवा और बूँदा बाँदी
यानी खुशियों की थी आँधी

ایڈیٹر - پریم بھائی

پانی اور ھوا!

(بھائی سریندر کمار)

گرمی سے بے چین تھی دھرتی
گرم گرم تھی آھیں بھرتی
لوگ تھے پانی پانی کہتے
آھیں بھرتے پنکھا جھلتے

کوئی بیٹھے پیڑ تلے تھے
گرمی سے حیران بڑے تھے
ٹھنڈی ہوا پورب سے آئی
دامن میں خوشیاں بھر لائی

بادل گرجا پانی برسا
من جھوما اور گیا تھرکا
ٹھنڈی ھوا اور بوندا باندی
یعنی خوشیوں کی تھی آندھی

ज़ुल्म का फल

(भाई विक़ार ख़लील)

रशीद बड़ा शरीर लड़का था . उसके स्कूल के सभी लोग उससे नफ़रत करते थे. वह स्कूल हमेशा देर में पहुँचता और हर काम बड़े अनमने ढंग से करता . वह बड़ा काहिल और सुस्त लड़का था. उसे पढ़ने लिखने से बिलकुल दिलचस्पी न थी और कोई अच्छा काम करने से तो वह बहुत दूर भागता था. हाँ खेल कूद और शिकार का उसे बड़ा शौक़ था. खेल कूद और शिकार ही उसकी दुनिया थी. वह सोचा करता कि क्या ही अच्छा हो अगर यह सारी धरती एक बड़ा सा जंगल बन जाय जिसके मैदानों में मैं खेला करूँ और झाड़ियों में शिकार खेला करूँ .

उसके मास्टर लाख मनाते, समझाते और अन्त में डांटते डपटते भी कि वह अपनी बुरी आदतें छोड़ दे और एक अच्छा और सच्चा देश भक्त बने पर रशीद की समझ में कुछ न आता. वह अपने शिक्षकों के उपदेश एक कान सुना करता और दूसरे कान उड़ा दिया करता .

एक दिन मास्टर जी ने भरे क्लास में रशीद से कहा "सुनो मियां रशीद ! तुम बहुत अच्छे लड़के हो. अच्छे लड़के कभी बुरे काम और बुरी बातों की ओर ध्यान नहीं देते. तुम घड़ी दो घड़ी की अपनी ख़ुशी के लिये कितना भारी पाप करते हो. तुम शिकार करके ख़ुश होते हो कि मैं ने एक ही निशाने में चिड़िया को मार गिराया. यह बुरी बात है. तुम्हारा इस तरह बेगुनाह ग़रीब जानवरों को मारना ठीक नहीं. तुम ख़ुद सोचो कि अगर कोई तुम्हें बिना क़सूर एक तमाचा मार

ظلم کا پھل

(بھائی وقار خلیل)

رشید بڑا شریر لڑکا تھا - اس کے اسکول کے سبھی لوگ اس پر نفرت کرتے تھے - وہ اسکول ہمیشہ دیر میں پہنچتا اور ہر کام بڑے انمنے ڈھنگ سے کرتا - وہ بڑا کاہل اور سست لڑکا تھا - اسے پڑھنے لکھنے سے بالکل دلچسپی نہ تھی اور کوئی اچھا کام کرنے سے تو وہ بہت دور بھاگتا تھا - ہاں کھیل کود اور شکار کا اسے بڑا شوق تھا - کھیل کود اور شکار ہی اس کی دنیا تھی - وہ سوچا کرتا کہ کیا ہی اچھا ہو اگر یہ ساری دھرتی ایک بڑا سا جنگل بن جائے جس کے میدانوں میں میں کھیلا کروں اور جھاڑیوں میں شکار کھیلا کروں -

اس کے ماسٹر لاکھ مناتے ' سمجھاتے اور انت میں ڈانٹتے ڈپٹتے بھی کہ وہ اپنی بری عادتیں چھوڑ دے اور ایک اچھا اور سچا دیش بھگت بنے پر رشید کی سمجھ میں کچھ نہ آتا - وہ اپنے شکشکوں کے اپدیش ایک کان سنا کرتا اور دوسرے کان اڑا دیا کرتا -

ایک دن ماسٹر جی نے بھرے کلاس میں رشید سے کہا - " سنو میاں رشید ! تم بہت اچھے لڑکے ہو - اچھے لڑکے کبھی برے کام اور بری باتوں کی اور دھیان نہیں دیتے - تم گھڑی دو گھڑی کی اپنی خوشی کے لئے کتنا بھاری پاپ کرتے ہو - تم شکار کرکے خوش ہوتے ہو کہ میں نے ایک ہی نشانے میں چڑیا کو مار گرایا - یہ بری بات ہے تمہارا اسطرح بے گناہ غریب جانوروں کو مارنا ٹھیک نہیں - تم خود سوچو کہ اگر کوئی تمہیں بنا قصور ایک طمانچہ مار

दे तो तुमको कितना दुख होगा. इसी तरह इन बे ज़बान पक्षियों के दिल से भी तुम्हारे खिलाफ़ क्या कुछ न फ़रियाद निकलती होगी. बताओ अब तुम्हारा क्या इरादा है? क्या अब भी तुम बेज़बान पक्षियों को सताया करोगे या दूसरों की सेवा करके उनके दिल की दुआयें लोगे?"

रशीद ने मास्टर जी की बातों को उनके डर से सुन तो लिया पर उस पर उसका कुछ असर न हुआ. उस समय भी उसका मन खेल कूद में लगा था. वह सोच रहा था कि कब स्कूल बन्द हो और वह अपनी गुलेल लेकर शिकार को निकले.

यह दूसरे दिन की बात है. रशीद का स्कूल बन्द था. वह अपनी गुलेल लेकर गांव से बाहर निकल गया. इधर उधर देखा पर उसे कोई चिड़िया न दिखाई दी. आखिर एक शीशम के पेड़ पर उसे एक मैना दिखाई पड़ी. मैना के पास ही उसका बच्चा भी बैठा था. मैना बड़े प्रेम से उसकी चोंच में चोंच डाल कर दाना खिला रही थी. रशीद चुपके से पेड़ के नीचे पहुंच गया और गुलेल में कंकर रखकर निशाना साधने लगा. एक बार रशीद के कानों में मास्टर जी के यह शब्द गूंज उठे कि बे ज़बान जानवरों को मारना ठीक नहीं है. रशीद का हाथ रुक गया लेकिन फिर उसने मास्टर जी की बात एक पागल की बड़ समझ कर भुला दी और फिर निशाना साधने लगा. रशीद चाहता था कि मैना के साथ उसका बच्चा भी गिर पड़े. बड़ी कोशिश के बाद रशीद का निशाना सधा. पर जैसे ही उसने गुलेल का रबर खेंचा वैसे ही 'ठायें' की आवाज़ हुई. रशीद का गुल्ला चल न सका और उसके बायें हाथ में बन्दूक का एक छर्रा लगा. रशीद का हाथ झूल गया.

دے تو تم کو کتنا دکھ ہوگا - اسی طرح ان بے زبان پنکھیوں کے دل سے بھی تمہارے خلاف کیا کچھ فریاد نہ نکلتی ہوگی - بتاؤ اب تمہارا کیا ارادہ ہے؟ کیا اب بھی تم بےزبان پنکھیوں کو ستایا کروگے یا دوسروں کی سیوا کرکے ان کے دل کی دعائیں لوگے؟

رشید نے ماسٹر جی کی باتوں کو ان کے ڈر سے سن تو لیا پر اس پر اس کا کچھ اثر نہ ہو - اس سمے بھی اس کا من کھیل کود میں لگا رہا - وہ سوچ رہا تھا کہ کب اسکول بند ہو اور وہ اپنی غلیل لیکر شکار کو نکلے -

یہ دوسرے دن کی بات ہے - رشید کا اسکول بند تھا - وہ اپنی غلیل لیکر گاؤں سے باہر نکل گیا - ادھر ادھر دیکھا پر اسے کوئی چڑیا نہ دکھائی دی - آخر ایک شیشم کے پیڑ پر اسے ایک مینا دکھائی پڑی - وہ مینا کے پاس ہی اس کا بچہ بھی بیٹھا تھا - مینا بڑے پریم سے اس کی چونچ میں چونچ ڈال کر دانہ کھلا رہی تھی - رشید چپکے سے پیڑ کے نیچے پہنچ گیا اور غلیل میں کنکر رکھکر نشانہ سادھنے لگا - ایک بار رشید کے کانوں میں ماسٹر جی کے یہ شبد گونج اٹھے کہ بے زبان جانوروں کو مارنا ٹھیک نہیں ہے - رشید کا ہاتھ رک گیا لیکن پھر اس نے ماسٹر جی کی بات ایک پاگل کی بڑ سمجھکر بھلادی اور پھر نشانہ سادھنے لگا - رشید چاہتا تھا کہ مینا کے ساتھ اس کا بچہ بھی گرپڑے - بڑی کوشش کے بعد رشید کا نشانہ سدھا - پر جیسے ہی اس نے غلیل کا ربڑ کھینچا ویسے ہی 'ٹھائیں' کی آواز ہوئی - رشید کا غلہ چل نہ سکا اور اس کے بائیں ہاتھ میں بندوق کا ایک چھرا لگا - رشید کا ہاتھ جھول گیا -

वह गोली एक दूसरे शिकारी की थी जिसने रशीद को देखा नहीं था. रशीद के चिल्लाने की आवाज़ सुन कर एक बूढ़े साधू वहाँ आ गये और रशीद का घायल हाथ देख कर उन्होंने पूछा "यह क्या हुआ बेटा ?"

रशीद ने रोते हुए बताया—"बाबा ! मैं अपनी गुलेल से मैना और उसके बच्चे को मार गिराना चाहता था कि किसी ज़ालिम शिकारी ने गोली चला दी और मेरा हाथ ज़ख्मी हो गया"

साधू ने झट रशीद के हाथ में पट्टी बाँधी और फिर बोला—"बेटा शिकारी सभी ज़ालिम होते हैं. तुम भी तो मैना और उसके बच्चे को मार कर ज़ुल्म ही कर रहे थे. भला तुम्हारा इन बे ज़बान पक्षियों ने क्या बिगाड़ा था ?"

रशीद को फिर मास्टर जी की बात याद आ गई. पर वह जल्दी क़ायल न होना चाहता था. बोला—"बाबा ! मैं तो शिकार खेलने निकला था."

साधू ने कहा—"तुमको यह खतरनाक खेल खेलने से किसी ने मना नहीं किया ?"

रशीद ने आँखें नीची करके कहा—"मना तो किया था. अब्बा भी मना करते थे और मास्टर जी ने भी मना किया था."

साधू ने कहा—"फिर बेटा, तुमने उनकी बात क्यों न मानी ? बड़े लोग जो कुछ कहते हैं वह छोटों के भले के लिये ही कहते हैं. जिस शिकारी की गोली ने तुम्हारा हाथ घायल कर दिया उसने भी बचपन में तुम्हारी ही तरह छोटी चिड़ियों को मार कर अपना हाथ साफ़

یہ گولی ایک دوسرے شکاری کی تھی جس نے رشید کو دیکھا نہیں تھا - رشید کے چلانے کی آواز سن کر ایک بوڑھے سادھو وہاں آگئے اور رشید کا گھائل ہاتھ دیکھکر انہوں نے پوچھا — " یہ کیا ہوا بیٹا ؟ "

رشید نے روتے ہوئے بتایا " بابا ! میں اپنی غلیل سے مینا اور اس کے بچے کو مار گرانا چاہتا تھا کہ کسی ظالم شکاری نے گولی چلادی اور میرا ہاتھ زخمی ہوگیا - "

سادھو نے جھٹ رشید کے ہاتھ میں پٹی باندھی اور پھر بولا — " بیٹا ! شکاری سبھی ظالم ہوتے ہیں - تم بھی تو مینا اور اس کے بچے کو مار کر ظلم ہی کر رہے تھے - بھلا تمہارا ان بے زبان پنچھیوں نے کیا بگاڑا تھا ؟ "

رشید کو پھر ماسٹر جی کی بات یاد آگئی - پر وہ جلدی قائل نہ ہونا چاہتا تھا - بولا - " بابا ! میں تو شکار کھیلنے نکلا تھا - "

سادھو نے کہا - " تم کو یہ خطرناک کھیل کھیلنے سے کسی نے منع نہیں کیا ؟ "

رشید نے آنکھیں نیچی کر کے کہا - " منع تو کیا تھا - ابا بھی منع کرتے تھے اور ماسٹر جی نے بھی منع کیا تھا - "

سادھو نے کہا - " پھر بیٹا ! تم نے ان کی بات کیوں نہ مانی ؟ بڑے لوگ جو کچھ کہتے ہیں وہ چھوٹوں کے بھلے کے لئے ہی کہتے ہیں - جس شکاری کی گولی نے تمہارا ہاتھ گھائل کر دیا اس نے بھی بچپن میں تمہاری ہی طرح چھوٹی چڑیوں کو مار کر اپنا ہاتھ صاف

किया होगा. बड़ा होकर अब वह बन्दूक चलाता है. अगर गोली जरा सा ऊपर को होती तो तुम्हारे सर में लग गई होती और तुम्हारी जान ही चली जाती. देखो बेटा, यह शिकार बहुत बुरी चीज़ है. जो जानवर तुम्हारा कुछ नुक्सान नहीं करते उनको सताने से क्या लाभ. तुमको चोट आगई पर इस चोट से तुमको यह सीख मिल गई कि निर्दोष पक्षियों को सताना भगवान को भी बुरा लगता है. शायद भगवान ने किसी पक्षी की प्रार्थना सुनकर तुमको सजा देने के लिये ही दूसरे शिकारी को भेज दिया था.…"

रशीद यह सुनकर बहुत रोया फिर हाथ जोड़ कर बोला—बाबा ! आज से मैं अहद (प्रतिज्ञा) करता हूँ कि कभी शिकार न खेलूँगा और दूसरों को भी ऐसा करने से रोकूँगा."

साधू यह सुनकर बहुत ख़ुश हुआ. बोला—"जाओ बेटा, अब घर जाओ. अपने पिता से साफ़ साफ़ बता देना. वह डाक्टर से कह कर तुम्हारा इलाज करा देंगे और फिर इस हाथ से तुम निर्बलों और निर्दोषों को कष्ट पहुंचाने की जगह उनकी सेवा किया करना. अच्छा ! जाओ, भगवान करे तुम ख़ूब पढ़ो लिखो और देश की सेवा करो."

यह कह कर साधू जिधर से आया था उधर चला गया. रशीद भी यह सोचता हुआ घर की तरफ़ चल पड़ा कि आगे कभी ऐसा न करेगा. उसने मन में तय कर लिया कि अब मास्टर जी और दूसरों का कहना कभी न टालेगा.

کیا ہوگا - بڑا ہوکر اب وہ بندوق چلاتا ہے - اگر گولی ذرا سا اوپر کو ہوتی تو تمہارے سر میں لگ گئی ہوتی اور تمہاری جان ہی چلی جاتی - دیکھو بیٹا یہ شکار بہت بری چیز ہے - جو جانور تمہارا کچھ نقصان نہیں کرتے اُن کو ستانے سے کیا لابھ - تم کو چوٹ آگئی پر اس چوٹ سے تم کو یہ سیکھ مل گئی کہ نردوش پکشیوں کو ستانا بھگوان کو بھی برا لگتا ہے - شاید بھگوان نے کسی پکشی کی پرارتھنا سن کر تم کو سزا دینے کے لئے دوسرے شکاری کو بھیج دیا تھا. ....'

یہ رشید یہ سن کر بہت رویا - پھر ہاتھ جوڑ کر بولا - " بابا ! آج سے میں عہد (پرتگیا) کرتا ہوں کہ کبھی شکار نہ کھیلوں گا اور دوسروں کو بھی ایسا کرنے سے روکوں گا - "

سادھو یہ سن کر بہت خوش ہوا - بولا - " جاؤ بیٹا ' اب گھر جاؤ - اپنے پتا سے صاف صاف بتا دینا - وہ ڈاکٹر سے کہہ کر تمہارا علاج کرا دیں گے اور پھر اس ہاتھ سے تم نربلوں اور نردوشوں کو کشٹ پہنچانے کی جگہ اُن کی سیوا کیا کرنا - اچھا ! جاؤ ' بھگوان کرے تم خوب پڑھو لکھو اور دیش کی سیوا کرو - "

یہ کہکر سادھو جدھر سے آیا تھا اُدھر چلا گیا - رشید بھی یہ سوچتا ہوا گھر کی طرف چل پڑا کہ آگے کبھی ایسا نہ کرے گا - اس نے من میں طے کر لیا کہ اب ماسٹر جی اور دوسروں کا کہنا کبھی نہ ٹالے گا -

चुटकुले

(भाई राकेश सरन)

रमेश—(दोस्त से) यार, मेरा चेहरा बड़ा काला हो गया है.

हरीश—धोबी के यहाँ डाल दो.

———

रोगी—डाक्टर साहब मेरा इलाज कीजिये.

डाक्टर—क्या तकलीफ है ?

रोगी—तकलीफ सिर्फ इतनी है कि मैं इतना मोटा हो गया हूँ कि झुक कर अपने जूते का फीता भी नहीं बाँध सकता. मैं बेहद परेशान हूँ, बताइये मैं क्या करूँ ?

डाक्टर—बस ! चप्पल पहना कीजिये !

———

इन तस्वीरों को ध्यान से देखो. तस्वीर बनाने वाले ने जान बूझकर हर तस्वीर में कोई न कोई चीज ग़लत बना दी है. क्या तुम उसकी सब ग़लतियाँ पकड़ सकते हो ?

چٹکلے

(بھائی راجیش سرن)

رمیش ۔ یار میرا چہرا بڑا کالا ہوگیا ہے ۔

ہریش ۔ دھوبی کے یہاں ڈال دو ۔

———

روگی ۔ ڈاکٹر صاحب میرا علاج کیجئے ۔

ڈاکٹر ۔ کیا تکلیف ہے !

روگی ۔ تکلیف صرف اتنی ہے کہ میں اتنا موٹا ہوگیا ہوں کہ جھک کر اپنے جوتے کا فیتہ بھی نہیں باندھ سکتا ۔ بےحد پریشان ہوں ' بتائیے میں کیا کروں !

ڈاکٹر ۔ بس ! چپل پہنا کیجئے ۔

———

ان تصویروں کو دھیان سے دیکھو ۔ تصویر بنانے والے نے جان بوجھ کر ہر تصویر میں کوئی نہ کوئی چیز غلط بنا دی ہے ۔ کیا تم اس کی سب غلطیاں پکڑ سکتے ہو ؟

हमारी राय ہماری رائے

कोरिया के दो टुकड़े

अखबारों में अमरीका के पत्रकार एंड्रूराथ का कोरिया पर एक लेख छपा है जो आज से कुछ महीने पहले लिखा गया था. एंड्रूराथ ने कोरिया पहुँच कर वहाँ का आँखों देखा हाल लिखा है. इस लेख में उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया के बारे में जो बातें बताई गई हैं उनमें से कुछ हम अपने शब्दों में नीचे देते हैं.

—एडीटर

कोरिया ठीक उसी राह पर चल रहा है जिस राह पर चीन गया है. चीन में भी थोड़े दिनों पहले उत्तर में कम्युनिस्टों का ज़ोर था और दक्खिन में च्यांग काई शेक की कोमिनटांग पारटी का. उत्तर वालों को रूस से बढ़ावा मिलता था और दक्खिन वालों को अमरीका से मदद मिलती रही. यही हाल अब कोरिया का है.

दक्खिन कोरिया की सरकार ने पिछले बरसों के अन्दर अपने खिलाफ़ राजकाजी विचार रखने वाले लोगों को खूब क़तल किया, वहां की नेशनल ऐसम्बली के आज़ाद ख़याल मेम्बरों को जेलों में ठूँसा, देश भर में लोगों को डराने और दबाने के लिये पुलिस ने खूब अत्याचार किये और अमरीका ने पानी की तरह अपना धन

کوریا کے دو ٹکڑے

اخباروں میں امریکہ کے پترکار اینڈرو راتھ کا کوریا پر ایک لیکھ چھپا ہے جو آج سے کچھ مہینے پہلے لکھا گیا تھا - اینڈرو راتھ نے کوریا پہونچ کر وہاں کا آنکھوں دیکھا حال لکھا ہے - اس لیکھ میں اتر کوریا اور دکھن کوریا کے بارے میں جو باتیں بتائی گئی ہیں ان میں سے کچھ ہم اپنے شبدوں میں نیچے دیتے ہیں -

—اڈیٹر

کوریا ٹھیک اسی راہ پر چل رہا ہے جس راہ پر چین گیا ہے - چین میں تھوڑے دنوں پہلے اتر میں کمیونسٹوں کا زور تھا اور دکھن میں چیانگ کائی شیک کی کومن تانگ پارٹی کا - اتر والوں کو روس سے بڑھاوا ملتا تھا اور دکھن والوں کو امریکہ سے مدد ملتی رہی - یہی حال اب کوریا کا ہے -

دکھن کوریا کی سرکار نے پچھلے برسوں کے اندر اپنے خلاف راج کاجی وچار رکھنے والے لوگوں کو خوب قتل کیا ، وہاں کی نیشنل اسمبلی کے آزاد خیال ممبروں کو جیلوں میں ٹھونسا ، دیش بھر میں لوگوں کو ڈرانے اور دبانے کے لئے پولیس نے خوب اتیاچار کئے اور امریکہ نے پانی کی طرح اپنا دھن

बढ़ाया. इन सब पर भी मालूम होता है कि दक्खिन कोरिया का अन्त वही होने वाला है जो कोमिनटांग चीन का हुआ।

कोरिया के लोग बहुत ही भावुक हैं. शायद एशिया के किसी दूसरे देश के लोग अपने भावों और जज़्बों की रौ में इतने नहीं बहते. कोरिया के ऊपर चालीस बरस तक जापानियों ने राज किया. उन दिनों कोरिया के बड़े बड़े देश भक्तों और लीडरों ने जेलों में और जिलावतनी में अपनी उमरें काटीं. कोरिया वालों के चरित्र पर इस सब का भी बहुत गहरा असर पड़ा है।

जिस तरह चीन में कोमिनटांग पारटी थी, उसी तरह और उसी के मुक़ाबले की दक्खिन कोरिया में "कोरियन डेमोक्रेटिक नेशनलिस्ट पारटी है." चीन की उस पारटी में अमीरों, साहूकारों और ज़मींदारों का ज़ोर था. कोरिया की इस पारटी में भी कोरिया के मालदारों का बोलबाला है. चीन की पारटी का नेता था च्यांग काई शेक और कोरिया की पारटी का नेता है डाक्टर सिंघमन री. दूसरी तरफ़ उत्तर चीन का सारा बल चीन के ग़रीबों का बल था और उत्तर कोरिया का सारा बल कोरिया के ग़रीबों का बल है. हाल में दक्खिन कोरिया की नेशनल एसेम्बली में वहाँ की सरकार ने जिस तरह के क़ानूनों को पास होने से रोका उनसे साफ़ दिखाई दे गया कि वह सरकार अमीरों और ज़मींदारों की सरकार है.

चीन में भी अभी हाल में जापानियों की हुकूमत रह चुकी है. च्यांग काई शेक ने शासन हाथ में लेते ही उन सब बड़े बड़े लोगों को ख़ूब बढ़ाया जो जापानी हाकिमों के दाहिने हाथ बने हुए थे. ठीक इसी तरह कोरिया में डाक्टर सिंघमन री ने उन सब लोगों को बढ़ावा दिया जो कोरिया में किसी समय जापानियों के दाहिने हाथ बने हुए थे. कोरिया का एक पूँजीपति है जिसका नाम है पाक-ह्यूंग-सिक. जापानियों को उसने खुले मदद दी

بڑھایا - اس سب پر بھی معلوم ہوتا ہے کہ دکھن کوریا کا انت وہی ہونے والا ہے جو کومن‌تانگ چین کا ہوا -

کوریا کے لوگ بہت ہی بھاوک ہیں - شاید ایشیا کے کسی دوسرے دیش کے لوگ اپنے بھاوں اور جذبوں کی رو میں اتنے نہیں بہتے - کوریا کے اوپر چالیس برس تک جاپانیوں نے راج کیا - ان دنوں کوریا کے بڑے بڑے دیش بھکتوں اور لیڈروں نے جیلوں میں اور جلاوطنی میں اپنی عمریں کاٹیں ' کوریا والوں کے چرتر پر اس سب کا بھی بہت گہرا اثر پڑا ہے -

جسطرح چین میں کومن‌تانگ پارٹی تھی ' اسی طرح اور اسکے مقابلہ کی دکھن کوریا میں " کورین ڈیموکریٹک نیشنلسٹ پارٹی " ہے - چین کی اس پارٹی میں امیروں ' ساہوکاروں اور زمینداروں کا زور تھا - کوریا کی اس پارٹی میں بھی کوریا کے مالداروں کا بول بالا ہے - چین کی پارٹی کا نیتا تھا چیانگ کائی شیک اور کوریا کی پارٹی کا نیتا ہے ڈاکٹر سنگھمن ری - دوسری طرف اتر چین کا سارا بل چین کے غریبوں کا بل تھا اور اتر کوریا کا سارا بل کوریا کے غریبوں کا بل ہے - حال میں دکھن کوریا کی نیشنلسٹ اسمبلی میں وہاں کی سرکار نے جس طرح کے قانونوں کو پاس ہونے سے روکا اُن سے صاف دکھائی دے گیا ہے کہ وہ سرکار امیروں اور زمینداروں کی سرکار ہے -

چین میں بھی ابھی حال میں جاپانیوں کی حکومت رہ چکی ہے - چیانگ کائی شیک نے شاسن اپنے ہاتھ میں لیتے ہی اُن سب بڑے بڑے لوگوں کو خوب بڑھایا جو جاپانی حاکموں کے داہنے ہاتھ بنے ہوئے تھے - ٹھیک اسی طرح کوریا میں ڈاکٹر سنگھمن ری نے اُن سب لوگوں کو بڑھاوا دیا جو کوریا میں کسی سمے جاپانیوں کے داہنے ہاتھ بنے ہوئے تھے - کوریا کا ایک پونجی پتی ہے جس کا نام ہے پاک - ہیونگ - سک - جاپانیوں کو اُس نے کھلے مدد دی

थी और उनसे खूब कमाया भी था. डाक्टर सिंघमन री का भी रुपए पैसे के मामले में सबसे बड़ा मददगार वही पाक-ह्यूंग-सिक है. पिछले दिनों इस आदमी ने इतने जुर्म किये कि जगह जगह से जनता ने उस पर मुक़दमा चलाए जाने की मांग की. डाक्टर री ने बहुत दिनों टलाया. पर आखिर जनता के क्रोध से दब कर पाक-ह्यूंग-सिक पर मुक़दमा चलाना पड़ा. दक्खिन कोरिया की नेशनल एसेम्बली में सरकार की तरफ़ के दल का सबसे बड़ा नेता है किम जून-युन, जो उस समय जब जापानियों की हुकूमत थी जापानी गवरनर-जनरल का सबसे बड़ा सलाहकार था और जापानी वार कौंसिल तक का मेम्बर था. लोग उसके यहाँ तक खिलाफ़ हैं कि नेशनल एसेम्बली के बाईस मेम्बरों ने लिख कर सरकार को दरख़ास्त दी कि इस आदमी को एसेम्बली से निकाल दिया जाय.

दक्खिन कोरिया की नेशनल एसेम्बली ही में एक दल सरकार के खिलाफ़ भी है जिसने अपनी एक कमेटी बना रक्खी है जिसका नाम है "स्पेशल कमेटी आन् नेशनल ट्रेटरस ." (यानी देश घातकों के खिलाफ़ खास कमेटी) इस कमेटी ने विदेशी जापानियों के इन मददगारों के खिलाफ़ बहुत सी सच्ची शहादतें जमा की हैं. इस काम के लिये इस कमेटी को अपनी अलग खास पुलिस रखनी पड़ी. जून के शुरू में सरकारी पुलिस ने इस कमेटी के दफ़्तर पर धावा किया. बहुत से काग़ज़ पत्तर उठा कर ले गई और बहुत से आदमियों को गिरफ़तार कर लिया. कमेटी के चेयरमैन ने जब एतराज़ किया तो धावा करने वाले पुलिस अफ़सर ने जवाब दिया कि "हमने जो कुछ किया है प्रेसिडेंट री के खास हुकुम से किया है." जिन बाईस आदमियों को गिरफ़तार किया गया था उन्हें ले जाकर सरकारी पुलिस ने उनकी खूब गत बनाई. जब यह बाईस रिहा किये गए तो उनमें से सोलह घायल थे, कुछ की पसलियाँ टूटी हुई थीं, कुछ की

تھی اور اُن سے خوب کمایا بھی تھا ۔ ڈاکٹر سنگھمن ری کا بھی روپئے پیسے کے معاملے میں سب سے بڑا مددگار وہی پاک - ھیونگ - سک ہے ۔ پچھلے دنوں اس آدمی نے اتنے جرم کئے کہ جگہ جگہ سے جنتا نے اُس پر مقدمہ چلائے جانے کی مانگ کی ۔ ڈاکٹر ری نے بہت دنوں ٹلایا ۔ پر آخر جنتا کے کرودھ سے دب کر پاک - ھیونگ - سک پر مقدمہ چلانا پڑا ۔ دکھن کوریا کی نیشنل اسمبلی میں سرکار کی طرف کے دل کا سب سے بڑا نیتا ہے کم - جون - یون ، جو اُس سمے جب جاپانیوں کی حکومت تھی جاپانی گورنر جنرل کا سب سے بڑا صلاحکار تھا اور جاپانی وار کونسل تک کا ممبر تھا ۔ لوگ اسکے یہاں تک خلاف ہیں کہ نیشنل اسمبلی کے بائیس ممبروں نے لکھ کر سرکار کو درخواست دی کہ اس آدمی کو اسمبلی سے نکالدیا جائے ۔

دکھن کوریا کی نیشنل اسمبلی ہی میں ایک دل سرکار کے خلاف بھی ہے جسنے اپنی ایک کمیٹی بنا رکھی ہے جسکا نام ہے "اسپیشل کمیٹی آن نیشنل ٹریٹرس" (یعنی دیش گھاتکوں کے خلاف خاص کمیٹی) اس کمیٹی نے ودیشی جاپانیوں کے ان مددگاروں کے خلاف بہت سی سچی شہادتیں جمع کی ہیں ۔ اسکام کیلئے اس کمیٹی کو اپنی الگ خاص پولس رکھنی پڑی ۔ جون کے شروع میں سرکاری پولس نے اس کمیٹی کے دفتر پر دھاوا کیا ۔ بہت سے کاغذ پتر اٹھا کر لیگئی اور بہت سے آدمیوں کو گرفتار کر لیا ۔ کمیٹی کے چیرمین نے جب اعتراض کیا تو دھاوا کرنیوالے پولیس افسر نے جوابدیا کہ "ہم نے جو کچھ کیا ہے پریسیڈنٹ ری کے خاص حکم سے کیا ہے" جن بائیس آدمیونکو گرفتار کیا گیا تھا انہیں لے جا کر سرکاری پولس نے انکی خوب گت بنائی ۔ جب یہ بائیس رہا کئے گئے تو اُن میں سے سولہ گھائل تھے ، کچھ کی پسلیاں ٹوٹی ہوئی تھیں ، کچھ کی

खोपड़ियाँ फटी हुई थीं और कुछ के कान के परदे फट गये थे. इससे मालूम होता है कि 'दक्खिन कोरिया' की आज कल की पुलिस ने अपने उस समय के जापानी मालिकों से यह सब काम अच्छी तरह सीख लिये हैं.

चीन में कोमिनटांग पारटी के जमाने में खुफ़िया पुलिस की भरमार थी. दक्खिन कोरिया में अब खुफ़िया पुलिस की भरमार है. यहाँ तक कि दक्खिन कोरिया का बड़ा वज़ीर ली-बुम-सुक एक समय कोमिनटांग की खुफ़िया पुलिस में रह चुका है और चीन के लोग उससे काफ़ी नफ़रत करते थे. च्यांग काई शेक ने एक किताब लिखी है "चाइनाज़ डेस्टिनी" (चीन की क़िस्मत) डाक्टर री ने एक एक किताब लिखी है "वृलमिन डाकट्रिन" (एक क़ौम का सिद्धान्त) दोनों में एक ही से उसूलों का प्रचार किया गया है.

डाक्टर री के वज़ीर मंडल में तालीम विभाग का वज़ीर है डाक्टर अहन-हो-सांग. अहन-हो-सांग ने दक्खिन कोरिया के स्कूलों से दो हज़ार अध्यापकों को पिछले दिनों केवल इस लिये बरख़ास्त कर दिया कि "उनके राजकाजी विचारों" पर उसे पूरा भरोसा नहीं था. डाक्टर अहन-हो सांग ने एक "स्टूडेंटस् नेशनल गार्ड" क़ायम किया जिसका मक़सद है लोगों के "विचारों को पाक" करना! डाक्टर अहन-जिस तरह की तालीम दक्खिन कोरिया के नौजवानों को देना चाहते हैं उसका अन्दाज़ा उनके इस मशहूर वाक्य से किया जा सकता है— "इस देश के अन्दर कोई ऐसा समाचार पत्र बरदाश्त नहीं किया जा सकता जो सरकार का विरोध करे……"

कोमिनटांग पारटी की हुकूमत के दिनों में चीन में घूसखोरी का बाज़ार ख़ूब गरम था. दक्खिन कोरिया की हालत आजकल उससे भी बदतर है. यह बुराई नीचे से ऊपर तक फैली हुई है. डाक्टर री के वज़ीर मंडल में तिजारत और उद्योग विभाग की वज़ीर हैं

کھوپڑیاں پھٹی ہوئی تھیں اور کچھ کے کان کے پردے پھٹ گئے تھے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دکھن کوریا کی آج کل کی پولیس نے اپنے اس سمے کے جاپانی مالکوں سے یہ سب کام اچھی طرح سیکھ لئے ہیں۔

چین میں کومن تانگ پارٹی کے زمانے میں خفیہ پولیس کی بھرمار تھی۔ دکھن کوریا میں اب خفیہ پولیس کی بھرمار ہے۔ یہاں تک کہ دکھن کوریا کا بڑا وزیر لی-بم-شک ایک سمے کومن تانگ کی خفیہ پولیس میں رہ چکا ہے اور چین کے لوگ اس سے کافی نفرت کرتے تھے۔ چیانگ کائی شیک نے ایک کتاب لکھی ہے "چائنیز ڈیسٹنی" (چین کی قسمت)۔ ڈاکٹر ری نے ایک کتاب لکھی ہے "المن ڈاکٹرن" (ایک قوم کا سدھانت) دونوں میں ایک ہی سے اصولوں کا پرچار کیا گیا ہے۔

ڈاکٹر ری کے وزیر منڈل میں تعلیم وبھاگ کا وزیر ہے ڈاکٹر اہن-ہو-سانگ۔ اہن-ہو-سانگ نے دکھن کوریا کے اسکولوں سے دو ہزار ادھیاپکوں کو پچھلے دنوں کیول اس لئے برخاست کر دیا کہ "ان کے راج کاجی وچاروں" پر اسے پورا بھروسہ نہیں تھا۔ ڈاکٹر اہن-ہوسانگ نے ایک "اسٹوڈنٹس نیشنل گارڈ" قائم کیا جس کا مقصد ہے لوگوں کے "وچاروں کو پاک" کرنا! ڈاکٹر اہن جس طرح کی تعلیم دکھن کوریا کے نوجوانوں کو دینا چاہتے ہیں اس کا اندازہ ان کے اس مشہور واکیہ سے کیا جا سکتا ہے ۔ "اس دیش کے اندر کوئی ایسا سماچار پتر برداشت نہیں کیا جا سکتا جو سرکار کا ورودھ کرے........"

کومن تانگ پارٹی کی حکومت کے دنوں میں چین میں گھوس خوری کا بازار خوب گرم تھا۔ دکھن کوریا کی حالت آجکل اس سے بھی بدتر ہے۔ یہ برائی اوپر سے نیچے تک پھیلی ہوئی ہے۔ ڈاکٹر ری کے وزیر منڈل میں تجارت اور ادیوگ وبھاگ کی وزیر ہیں

एक मिस लुई-यिम. मिस लुई यिम डाक्टर री की बड़ी चहेती हैं. मिस लुई-यिम ने डाक्टर री की पचहत्तरवीं साल गिरह के मौक़े पर डाक्टर री को भेंट करने के लिये उन पूंजीपतियों से, जो. मिस यिम के दबाव में थे, पाँच करोड़ वान (कोरियाई सिक्का) जमा कर लिये. लोगों ने इस पर इतना शोर मचाया कि डाक्टर री ने मिस यिम से कह कर उस रुपये को वापिस करा दिया. हाल में फिर एक तहक़ीक़ाती कमेटी ने पता लगाया कि मिस यिम ने खुद अपने फिर से चुने जाने के लिये उन्हीं लोगों पर दबाव डालकर फिर एक बहुत बड़ी रक़म जमा कर ली. यह बात क़ानून के बिलकुल खिलाफ़ थी. लोगों का कहना है कि वज़ीर मंडल ही के अन्दर दो पारटियाँ हैं जिसकी बदौलत मिस यिम की यह हरकतें खुलती रहती हैं.

च्यांग काई शेक के अधीन चीन अपनी पारटी बाज़ी के लिये खूब बढ़ा चढ़ा था, दक्खिन कोरिया में भी सरकार के अन्दर और बाहर दोनों जगह पारटी बाज़ी हद को पहुँची हुई है.

जंग के दिनों में चीनी कम्युनिस्टों की राजधानी बहुत दिनों तक येनान थी. उत्तर कोरिया के पाँच चोटी के नेताओं में से तीन येनान में रहे हुए और वहीं के पढ़े हुए हैं. वहां के बहुत से नेता चीनी कम्युनिस्ट फ़ौज में बरसों रह चुके हैं. येनान ही में एक "कोरियन इंडिपेंडेंस लीग" क़ायम हुई थी. उस लीग का सरदार किम-तु-बोंग, जो बहुत बड़ा विद्वान है, आजकल उत्तर कोरिया की मजदूर पारटी का चेयरमैन है. यह पारटी बिलकुल कम्युनिस्ट पारटी है और सोवियट रूस के रास्ते पर चलती है.

कोरिया के कम्युनिस्ट ठीक उसी ढंग पर चल रहे हैं जिस ढंग पर चीन के कम्युनिस्ट. केवल एक ख़ास बात में उनमें फ़रक़ है. चीनी कम्युनिस्ट जिन किसानों में ज़मीन बाँटते हैं उन्हें उन ज़मीनों का मालिक बना देते हैं. उत्तर कोरिया के कम्युनिस्ट जिन किसानों को ज़मीनें देते हैं उन्हें केवल बरतने के

ایک مس لوئی یم - مس لوئی یم ڈاکٹر ری کی بڑی چہیتی ہیں - مس لوئی یم نے ڈاکٹر ری کی پچھترویں سالگرہ کے موقع پر ڈاکٹر ری کو بھینٹ کرنے کیلئے اُن پونجی پتیوں سے جو مس یم کے دباؤ میں تھے، پانچ کروڑ وان (کوریائی سکہ) جمع کر لئے - لوگوں نے اس پر اتنا شور مچایا کہ ڈاکٹر ری نے مس یم سے کہہ کر اس روپے کو واپس کرا دیا - حال میں پھر ایک تحقیقاتی کمیٹی نے پتہ لگایا کہ مس یم نے خود اپنے پھر سے چنے جانیکے لئے انہی لوگوں پر دباؤ ڈال کر پھر ایک بہت بڑی رقم جمع کر لی . یہ بات قانون کے بالکل خلاف تھی - لوگوں کا کہنا ہے کہ وزیر منڈل ہی کے اندر دو پارٹیاں ہیں جس کی بدولت مس یم کی یہ حرکتیں کھلتی رہتی ہیں .

چیانگ کائی شیک کے ادھین چین اپنی پارٹی بازی کیلئے خوب بڑھا چڑھا تھا - دکھن کوریا میں بھی سرکار کے اندر اور باہر دونوں جگہ پارٹی بازی حد کو پہونچی ہوئی ہے -

جنگ کے دنوں میں چینی کمیونسٹوں کی راجدھانی بہت دنوں تک یہ نان میں تھی - اُتر کوریا کے پانچ چوٹی کے نیتاؤں میں سے تین یہ نان میں رہے ہوئے اور وہیں کے پڑھے ہوئے ہیں - وہاں کے بہت سے نیتا چینی کمیونسٹ فوج میں برسوں رہ چکے ہیں - یہ نان ہی میں ایک " کورین انڈیپینڈنس لیگ " قایم ہوئی تھی - اس لیگ کا سردار کم - تو - بونگ ' جو بہت بڑا ودوان ہے ' آج کل اُتر کوریا کی مزدور پارٹی کا چیرمین ہے - یہ پارٹی بالکل کمیونسٹ پارٹی ہے اور سوویٹ روس کے راستہ پر چلتی ہے -

کوریا کے کمیونسٹ ٹھیک اسی ڈھنگ پر چل رہے ہیں جس ڈھنگ پر چین کے کمیونسٹ - کیول ایک خاص بات میں ان میں فرق ہے : چینی کمیونسٹ جن کسانوں میں زمین بانٹتے ہیں انہیں ان زمینوں کا مالک بنا دیتے ہیں - اُتر کوریا کے کمیونسٹ جن کسانوں کو زمینیں دیتے ہیں انہیں کیول برتنے کے

लिये देते हैं. जमीन की मिलकियत एक 'गांव पंचायत' के हाथ में रहती है. कहा जाता है कि उत्तर कोरिया के किसानों को इसकी शिकायत भी है. पर यह इसलिये किया जा रहा है कि आगे चलकर किसानों की निजी मिलकियत को ख़तम करके सोवियट के ढंग पर जमीन की पंचायती मिलकियत क़ायम की जा सके.

रूस और अमरीका की खींचातानी का कोरिया पर सबसे बुरा असर पड़ा. इस खींचातानी से जितनी बरबादी चीन की हुई है उससे कहीं ज्यादा बरबादी कोरिया की हुई है. दुनिया में और कोई मुल्क ऐसा नहीं है जिसे रूस और अमरीका ने बीच से दो टुकड़े कर के आधा आधा अपने अपने क़ब्ज़े में किया हो. रूस और अमरीका दोनों कहने को कोरिया से चले आए पर दोनों दोनों टुकड़ों की सरकारों पर अपनी अपनी गहरी छाप छोड़ आए. मालूम होता है कोरिया के यह दोनों टुकड़े एक डम्बेल के दो हिस्से हैं जिनमें से एक को रूस के असर में कोरियाई ग़रीबों ने अपने हाथ में कस रक्खा है और दूसरे को अमरीका के असर में कोरियाई मालदारों ने अपने हाथों में भींच रक्खा है.

दक्खिन कोरिया के अमरीकी पिट्ठुओं में डेमाक्रेसी या लोकशाही का तो निशान भी नहीं. कम्युनिज़्म का मुक़ाबला करने के लिये और सोवियट के असर को बढ़ने से रोकने के लिये अमरीका ने कम्युनिस्टों के उन जानी दुश्मनों की मदद ली और उन्हें बढ़ावा दिया जिन्होंने पुलिस के उन सब ज़ुल्मों और अत्याचारों और उन तरीक़ों से जी भर के काम लिया जिनका इलज़ाम अमरीका वाले कम्युनिस्टों पर लगाया करते हैं. जनता की आज़ादी का तो उन्होंने ख़ात्मा ही कर दिया.

यू० एन० ओ० का जो कमीशन कोरिया गया हुआ है उसे चूँकि सोवियट रूस और उसके साथियों ने बायकाट कर रक्खा है इस लिये वह वहां बिलकुल निकम्मा है. उस कमीशन में सिवाय एक डाक्टर

لئے دیتے ہیں - زمین کی ملکیت ایک 'گاؤں پنچایت' کے ہاتھ میں رہتی ہے - کہا جاتا ہے کہ اتر کوریا کے کسانوں کو اِس کی شکایت بھی ہے - پر یہ اِس لئے کیا جا رہا ہے کہ آگے چل کر کسانوں کی نجی ملکیت کو ختم کر کے سوویت کے ڈھنگ پر زمین کی پنچایتی ملکیت قایم کی جا سکے -

روس اور امریکہ کی کھینچا تانی کا کوریا پر سب سے برا اثر پڑا - اس کھینچا تانی سے جتنی بربادی چین کی ہوئی ہے اس سے کہیں زیادہ بربادی کوریا کی ہوئی ہے - دنیا میں اور کوئی ملک ایسا نہیں ہے جسے روس اور امریکہ نے بیچ سے دو ٹکڑے کر کے آدھا آدھا اپنے قبضہ میں کیا ہو - روس اور امریکہ دونوں کہنے کو کوریا سے چلے آئے پر دونوں دونوں ٹکڑوں کی سرکاروں پر اپنی اپنی گہری چھاپ چھوڑ آئے - معلوم ہوتا ہے کہ کوریا کے یہ دونوں ٹکڑے ایک ڈمبل کے دو حصے ہیں جن میں سے ایک کو روس کے اثر میں کوریائی غریبوں نے اپنے ہاتھ میں کس رکھا ہے - اور دوسرے کو امریکہ کے اثر میں کوریائی مالداروں نے اپنے ہاتھوں میں بھینچ رکھا ہے -

دکھن کوریا کے امریکی پٹھوؤں میں ڈیمو کریسی یا لوک شاہی کا تو نشان بھی نہیں - کمیونزم کا مقابلہ کرنے کے لئے اور سوویت اثر کو بڑھنے سے روکنے کے لئے امریکہ نے کمیونسٹوں کے ان جانی دشمنوں کی مدد لی اور انہیں بڑھاوا دیا جنہوں نے پولیس کے ان سب ظلموں اور اتیاچاروں اور ان طریقوں سے جی بھر کے کام لیا جن کا الزام امریکہ والے کمیونسٹوں پر لگایا کرتے ہیں - جنتا کی آزادی کا تو انہوں نے خاتمہ ہی کر دیا -

یو - این - او کا جو کمیشن کوریا گیا ہوا ہے اسے چونکہ سوویت روس اور اس کے ساتھیوں نے بائیکاٹ کر رکھا ہے - اس لئے وہ وہاں بالکل نکما ہے - اس کمیشن میں سوائے ایک ڈاکٹر

अनूप सिंह के जो हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि हैं और सब अमरीका की पारटी के हैं.

चीन के कम्युनिस्टों में जो अपने पैरों पर खड़े होने की ताक़त दिखाई देती थी वह कोरिया के कम्युनिस्टों में कम दिखाई देती है. वह बहुत अधिक दरजे तक रूस के सहारे खड़े हैं.

दक्खिन कोरिया वालों की हालत इस बारे में और भी ज्यादा नाज़ुक है. वह तो बिलकुल ही अमरीका के सहारे जिन्दा हैं. देश वाले उन्हें देशघातक मानते हैं. चीन की कोमिनटांग पारटी में अपने पैरों पर खड़े होने की इससे कहीं ज्यादा ताक़त थी.

कोरिया कुल मिलाकर खासा धनवान देश है. उसमें सब चीज़ें पैदा होती हैं और वह अच्छी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है. दक्खिन कोरिया में दो करोड़ आदमी बसते हैं पर उनमें अधिकतर खेतिहर हैं. खानें और बड़े बड़े कारखाने ज्यादातर उत्तर कोरिया में हैं जहां की आबादी एक करोड़ है. अमरीका पानी की तरह धन बहा बहा कर दक्खिन के टुकड़े को अलग जिन्दा रख रहा है. जानने वालों का कहना है कि यह चीज बहुत दिनों तक नहीं चल सकती. दक्खिन कोरिया की पिट्ठू सरकार को घूसखोरी और पारटी बाज़ी से ही फ़ुरसत नहीं. चीन की कोमिनटांग पारटी की तरह उसे कम्युनिस्टों को मिटाने की ज्यादा फ़िक्र है, देश को खुशहाल करने की कम.

यह सब बातें एक अमरीकी पत्रकार की कही हुई हैं.

—एडीटर

انوپ سنگھ کے جو ہندوستان کے پرتیندھی ہیں اور سب امریکہ کی پارٹی کے ہیں۔

چین کے کمیونسٹوں میں جو اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی طاقت دکھائی دیتی تھی وہ کوریا کے کمیونسٹوں میں کم دکھائی دیتی ہے - وہ بہت ادھک درجہ تک روس کے سہارے کھڑے ہیں۔

دکھن کوریا والوں کی حالت اس بارے میں اور بھی زیادہ نازک ہے - وہ تو بالکل ہی امریکہ کے سہارے زندہ ہیں۔ دیش والے انہیں دیش گھاتک مانتے ہیں۔ چین کی کومن ٹانگ پارٹی میں اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی اس سے کہیں زیادہ طاقت تھی -

کوریا کل ملا کر ایک خاصہ دھنوان دیش ہے - اس میں سب چیزیں پیدا ہوتی ہیں اور وہ اچھی طرح اپنے پیروں پر کھڑا ہو سکتا ہے - دکھن کوریا میں دو کروڑ آدمی بستے ہیں - پر ان میں ادھک تر کھیتی ہر ہیں - کھانیں اور بڑے بڑے کارخانے زیادہ تر اتری کوریا میں ہیں - جہاں کی آبادی ایک کروڑ ہے - امریکہ پانی کی طرح دھن بہا بہا کر دکھن کے ٹکڑے کو الگ زندہ رکھے رہا ہے - جاننے والوں کا کہنا ہے کہ یہ چیز بہت دنوں تک نہیں چل سکتی - دکھن کوریا کی پٹھو سرکار کو گھوسخوری اور پارٹی بازی سے فرصت نہیں - چین کی کومن ٹانگ پارٹی کی طرح اسے کمیونسٹوں کو مٹانے کی زیادہ فکر ہے - دیش کو خوش حال کرنے کی کم -

یہ سب باتیں ایک امریکی پترکار کی کہی ہوئی ہیں

—ایڈیٹر

कोरिया और भारत

कोरिया के सच्चे कोरिया प्रेमियों के जी पर क्या बीती होगी जब उन्होंने भारत का फ़ैसला अपने बारे में सुना होगा ! हम उनके जी की हालत का पता अपने जी से लगा सकते हैं . भारत के तटस्थ (ना तरफ़दार) रहने की खबर सुन कर हमें तसल्ली हुई थी और ऐसा मालूम हुआ था कि इस वक्त भारत ने बहुत अंशों तक बड़ी लड़ाई को होते होते रोक दिया. और हमें यह अन्दाज़ा था कि भारत आखिर दम तक तटस्थ बना रहेगा या अगर बोला ही तो 'ना' करेगा पर उसकी 'हाँ' सुन कर तो हम दाँतों तले उँगली दाब कर रह गये. हमें तो अभी भी भरोसा है कि हिन्दुस्तान में हम जैसों की गिनती कुछ कम नहीं है. जब हमारा यह हाल हुआ तो कोरियावासी तो एक दम भौचक्के रह गये होंगे. भारत के फ़ैसले से हमारा दिल इतना मुस गया था कि उसके बाद मिस्र के फ़ैसले से ऐसा मालम हुआ कि मानो मिस्र में गांधी बोल उठा और हमारा दिल खिल उठा . अहिंसा फलती फूलती है सचाई के रूप में और सचाई का अंकुर बहादुरी की गरमी पाकर बाहर आता है . मिस्र की साफ़गोई बहादुरी से भरी हुई है. 'उसके देश में अंगरेज़ी घेरे के रूप में 'एग्रेशन' यानी 'बेजा हमला' मौजूद है. उसके पड़ोस में भी यही हाल हो रहा है फिर वह किस तरह इस नाइन्साफ़ी में साथी हो सकता है. न हो ऐसा, अगर पाकिस्तान की वही हालत होती जो आज दक्खिनी कोरिया की है और भारत की वही हालत होती जो आज उत्तरी कोरिया की है और हमारा काश्मीर की मदद को जाना पाकिस्तान पर हमला मान लिया गया होता और तब सिक्योरिटी कौंसिल (सुरक्षा समिति) ने यही फ़ैसला दिया होता और आमरीका इसी तरह पाकिस्तान की मदद को

کوریا اور بھارت

کوریا کے سچے کوریا پریمیوں کے جی پر کیا بیتی ہوگی جب انہوں نے بھارت کا فیصلہ اپنے بارے میں سنا ہوگا ! ہم ان کے جی کی حالت کا پتہ اپنے جی سے لگا سکتے ہیں - بھارت کے تٹستھ (ناطرفدار) رہنے کی خبر سن کر ہمیں تسلی ہوئی تھی اور ایسا معلوم ہوا تھا کہ اس وقت بھارت نے بہت انشوں تک بڑی لڑائی کو ہوتے ہوتے روک دیا - اور ہمیں یہ اندازہ تھا کہ بھارت آخر دم تک تٹستھ بنا رہے گا - یا اگر بولا ہی تو 'ونا' کرے گا - پر اسکی 'ہاں' سن کر تو ہم دانتوں تلے انگلی داب کر رہ گئے - ہمیں تو ابھی بھی بھروسہ ہے کہ ہندوستان میں ہم جیسوں کی گنتی کچھ کم نہیں ہے - جب ہمارا یہ حال ہوا تو کوریا واسی تو ایک دم بھونچکے رہ گئے ہوں گے - بھارت کے فیصلے سے ہمارا دل اتنا مس گیا تھا کہ اس کے بعد مصر کے فیصلے سے ایسا معلوم ہوا کہ مانو مصر میں گاندھی بول اٹھا اور ہمارا دل کھل اٹھا - اہنسا پھلتی پھولتی ہے سچائی کے روپ میں اور سچائی کا انکور بہادری کی گرمی پاکر باہر آتا ہے - مصر کی صاف گوئی بہادری سے بھری ہوئی ہے - اسکے دیش میں انگریزی گھیرے کے روپ میں 'ایگریشن' یعنی 'بیجا حملہ' موجود ہے - اسکے پڑوس میں بھی یہی حال ہو رہا ہے پھر وہ کس طرح اس ناانصافی میں ساتھی ہو سکتا ہے - نہ ہو ایسا' اگر پاکستان کی وہ حالت ہوتی جو آج دکھنی کوریا کی ہے اور بھارت کی وہی حالت ہوتی جو آج اتری کوریا کی ہے اور ہمارا کشمیر کی مدد کو جانا پاکستان پر حملہ مان لیا گیا ہوتا اور تب سکیورٹی کونسل (سرکشا سمیتی) نے بھی فیصلہ دیا ہوتا اور امریکہ اسی طرح پاکستان کی مدد کو

दौड़ा होता तब और मुल्कों के आज के हमारे जैसे फ़ैसले का हमारे ऊपर क्या असर हुआ होता ? हमारा तो यही खयाल है कि जब भी कोई सचाई बहुत सी शर्तों के घेरे में होकर आती है तो न वह खालिस सचाई रह जाती है और न अन्तरात्मा की पुकार. भारत का इस वक़्त का फ़ैसला भी, और कुछ भले ही हो, भारत के अन्तरात्मा की पुकार नहीं है.

क़ानून की बात हम नहीं करेंगे. सुरक्षा समिति ने खुद अपने क़ायदे के खिलाफ़ फ़ैसला देकर क़ानून को बे आबरू कर दिया. हमारी मामूली बुद्धि सुरक्षा समिति के फ़ैसले को पहले तो यों ठीक मानने के लिये तैयार नहीं कि जिस समिति में यह फ़ैसला दिया गया है उसमें जज की हैसियत से ऐसे दो आदमी भी शामिल हैं जो कोरिया में अपना अपना अलग अलग हित रखते हैं, यानी रूस और अमरीका. समिति के विधान में एक ऐसी धारा रहनी ही चाहिये कि जिन मुल्कों के बारे में फ़ैसला देना हो वह मुल्क न जज की हैसियत से रह सकते हैं और न उनकी राय गिनी जा सकती है. दूसरे हम यों भी मानने को तैयार नहीं कि जब एक ऐसा ठहराव समिति के सामने आये जो क़ायदे के खिलाफ़ है और उसे सभापति बे क़ायदा न ठहरा सके. तीसरे यों भी कि जब समिति के क़ायदों के मुआफ़िक़ वह प्रस्ताव पास ही नहीं हुआ था तो जनता तक भी क्यों पहुँचने दिया गया.

अमरीका की जल्दबाज़ी तो हम जैसों को और भी अखरती है और वह यह साबित करती है कि अमरीका सुरक्षा समिति की इतनी इज्जत नहीं करता जितनी इज्जत वाली वह उसको कह कर अपनी ग़लत कारवाई का समर्थन कर रहा है.

हमें और भी ज्यादा अफ़सोस इस बात का है कि वह बेक़ायदा कारवाई सुरक्षा समिति ने उस वक़्त कर डाली जब कि उसका सभापति एक भारती है और समिति के ज़रिये ऐसे वक़्त दुनिया की शान्ति खतरे में पड़ी जब गांधी भक्तों की भारती सरकार का भेजा हुआ

دوڑا ہوتا تب اور ملکوں کے آج کے ہمارے جیسے فیصلے کا ہمارے اوپر کیا اثر ہوتا ؟ ہمارا تو یہی خیال ہے کہ اب بھی کوئی سچائی بہت سی شرطوں کے گھیرے میں ہوکر آتی ہے تو نہ وہ خالص سچائی رہ جاتی ہے اور نہ انتراتما کی پکار - بھارت کا اس وقت کا فیصلہ بھی ' اور کچھ بھلے ہی ہو ' بھارت کے انتراتما کی پکار نہیں ہے -

قانون کی بات ہم نہیں کرینگے - سرکشا سمیتی نے خود اپنے قاعدے کے خلاف فیصلہ دےکر قانون کو بے آبرو کردیا - ہماری معمولی بدھی سرکشا سمیتی کے فیصلے کو پہلے تو یوں ٹھیک ماننے کے لئے تیار نہیں کہ جس سمیتی میں یہ فیصلہ دیا گیا ہے اسمیں جج کی حیثیت سے یہ دو آدمی بھی شامل ہیں جو کوریا میں اپنا اپنا الگ الگ ہت رکھتے ہیں - یعنی روس اور امریکہ - سمیتی کے ودھان میں ایک ایسی دھارا رہنی ہی چاہئے کہ جن ملکوں کے بارے میں فیصلہ دینا ہو وہ ملک نہ جج کی حیثیت سے رہ سکتے ہیں اور نہ انکی رائے گنی جاسکتی ہے - دوسرے ہم یوں بھی ماننے کو تیار نہیں کہ جب ایک ایسا ٹھہراؤ سمیتی کے سامنے آئے جو قاعدہ کے خلاف ہے اور سبھاپتی اسے بے قاعدہ نہ ٹھہرا سکے . تیسرے یوں بھی کہ جب سمیتی کے قاعدوں کے موافق وہ پرستاو پاس نہیں ہوا تھا تو جنتا تک بھی کیوں پہونچنے دیا گیا -

امریکہ کی جلدبازی تو ہم جیسوں کو اور بھی اکھرتی ہے اور وہ یہ ثابت کرتی ہے کہ امریکہ سرکشا سمیتی کی اتنی عزت نہیں کرتا جتنی عزت والی وہ اسکو کہکر اپنی غلط کارروائی کا سمرتھن کررہا ہے -

ہمیں اور بھی زیادہ افسوس اس بات کا ہے کہ یہ بے قاعدہ کارروائی سرکشا سمیتی نے اسوقت کر ڈالی جبکہ اس کا سبھاپتی ایک بھارتی ہے اور سمیتی کے ذریعے ایسے وقت دنیا کی شانتی خطرہ میں پڑی جب گاندھی بھکتوں کی بھارتی سرکار کا بھیجا ہوا

आदमी सुरछा समिति के सभापति के आसन पर मौजूद है. उत्तरी कोरिया के दक्खिनी कोरिया पर हमले से दुनिया की शान्ति भंग नहीं हुई थी. दुनिया की शान्ति भंग हो गई है अमरीका के प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन के उस हुक्म से जो उसने अपनी फ़ौजों को कोरिया की ओर बढ़ने को दिया है. और इस बात ने तो शान्ति भंग होने में कोई शक ही नहीं रखा कि उसने समिति से सब मुल्कों को अपना साथ देने के लिये कहा. अब अगर सारे मुल्क उस हुक्म को मान कर अपनी फ़ौजें कोरिया की तरफ़ भेजें तो शान्ति भंग होने में कोई शक रह जायगा ?

सुरछा समिति के मंत्री ने एक बात बड़ी अच्छी कही है और वह यह कि कोरिया सुरछा समिति का बच्चा है. पर हमें तो वह उस माँ का बच्चा दिखाई देता है जिसने उसे काट कर दो टुकड़े कर दिये हैं और सिर्फ़ उस टुकड़े को ही बच्चा मानती है जिसके हाथ में वह खेल रही है.

जल्दबाज़ी में या भड़क कर कोई आदमी या और भी आगे बढ़ कर कोई संस्था या बहुत ही आगे बढ़ कर कोई एक मुल्क ग़लती कर सकता है और ऐसी ग़लती करने की छूट इन तीनों को इनसे बड़ी संस्थाएँ ही दे सकती हैं. लेकिन अगर दुनिया की सबसे बड़ी संस्था जल्दबाज़ी करने लगे या भड़क उठे तो उसे ऐसी छूट शोभा नहीं देती. और अगर वह ऐसी छूट चाहती है तो वह उन तीनों की तरह किसी अपने से बड़े के सामने जवाबदार होने के लिये तैयार रहे. क़ानून में जल्दबाज़ी और भड़क की भी सज़ा है और क़ानून ने ही तो जल्दबाज़ी और भड़क का बंधान बनाया है, जल्दबाज़ी अपने आप में ख़ुद एक बुराई है. अगर वह भलाई भी मान ली जाय तो कोरिया के मामले में तो हरगिज़ नहीं. क्योंकि कोरिया को बचाने के लिये दौड़ा है वह मुल्क जो ख़ुद ही मक्खी कोरिया को मकड़ी की तरह दबाये हुए है.

कौंसिल न्यू इंगलिश डिक्शनरी में Academic के माने

آدمی سرکشا سمیتی کے سبھاپتی کے آسن پر موجود ہے - اُتری کوریا کے دکھنی کوریا پر حملے سے دنیا کی شانتی بھنگ نہیں ہوئی تھی - دنیا کی شانتی بھنگ ہوگئی ہے امریکہ کے پریسیڈنٹ ٹرومین کے اس حکم سے جو اس نے اپنی فوجوں کو کوریا کی اور بڑھنے کو دیا ہے - اور اس بات نے تو شانتی بھنگ ہونے میں کوئی شک ہی نہیں رکھا کہ اس نے سمیتی سے سب ملکوں کو اپنا ساتھ دینے کے لئے کہا - اب اگر سارے ملک اس حکم کو مان کر اپنی فوجیں کوریا کی طرف بھیجیں تو شانتی بھنگ ہونے میں کوئی شک رہ جائیگا ؟

سرکشا سمیتی کے منتری نے ایک بات بڑی اچھی کہی ہے اور وہ یہ ہے کہ کوریا سرکشا سمیتی کا بچہ ہے - پر ہمیں تو وہ اس ماں کا بچہ دکھائی دیتا ہے جس نے اسے کاٹ کر دو ٹکڑے کر دئے ہیں اور صرف اس ٹکڑے کو ہی بچہ مانتی ہے جس کے ہاتھ میں وہ کھیل رہی ہے -

جلد بازی میں یا بھڑک کر کوئی آدمی یا اور بھی آگے بڑھکر کوئی سنستھا یا بہت ہی آگے بڑھکر کوئی ایک ملک غلطی کر سکتا ہے اور ایسی غلطی کرنے کی چھوٹ ان تینوں کو ان سے بڑی سنستھائیں ہی دے سکتی ہیں - لیکن اگر دنیا کی سب سے بڑی سنستھا جلد بازی کرنے لگے یا بھڑک اٹھے تو اسے ایسی چھوٹ شوبھا نہیں دیتی - اور اگر وہ ایسی چھوٹ چاہتی ہے تو وہ ان تینوں کی طرح کسی اپنے سے بڑے کے سامنے جوابدار ہونے کے لئے تیار رہے - قانون میں جلد بازی اور بھڑک کی بھی سزا ہے اور قانون نے ہی تو جلد بازی اور بھڑک کا بندھان بنایا ہے - جلد بازی اپنے آپ میں خود ایک برائی ہے - اگر وہ بھلائی بھی مان لی جائے تو کوریا کے معاملے میں تو ہرگز نہیں - کیونکہ کوریا کو بچانے کے لئے دوڑا ہے وہ ملک جو خود ہی مکھی کوریا کو مکڑی کی طرح دبائے ہوئے ہے -

کونسل نیو انگلش ڈکشنری میں ایکیڈیمک Academic کے معنے

दिये हुए हैं Unpractical यानी ना व्यवहारी, यानी जो व्यवहार में न आ सके. कुछ लोगों का कहना है कि भारत का 'हाँ' करना एकेडेमिक है यानी ना व्यवहारी है यानी यह कि इस पर कुछ अमल नहीं किया जायगा. नये नये आजाद भारत को ऐसे ना व्यवहारी 'हाँ' की क्या ज़रूरत आ पड़ी और क्यों ज़रूरत आ पड़ी? यह कहने की हमारी हिम्मत नहीं होती कि भारत सरकार ने समिति की बेक़ायदगी की हाँ में हाँ मिला कर ऐसा काम किया है जो भारत की आत्मा के योग्य है.

भारत को भारत का राष्ट्र पिता अहिंसा के एख़लाक़ी पहाड़ पर बहुत ऊँचा चढ़ा गया है और सचमुच भारत इस क़ाबिल है कि अगर वह चाहे तो उसकी चोटी पर चढ़ सकता है. साथ ही साथ भारत किसी वजह से हिंसा के गहरे गढ़े में उतरने की क़ाबिलियत भी रखता है. पर अभी तक इतनी क़ाबिलियत नहीं रखता कि वह उसकी तह तक पहुँच सके इसलिये वह इस गिरावट में अपने से बड़े हुए मुल्कों से बाज़ी नहीं मार सकता. ऐसी हालत में अगर वह इस दुविधा में पड़ जाय कि तीसरी बड़ी जंग छिड़ जाने पर वह तटस्थ रह सकेगा या नहीं रह सकेगा या अगर तटस्थ रह सकेगा तो किस हद तक रह सकेगा और न रहा तो क्या करेगा तो कोई अचरज की बात नहीं. अहिंसा की ऊँची चोटी पर चढ़ पहुँचने के लिये उसने कभी अपने बाज़ू तोलने की बात भी नहीं सोची. काश! ऐसे वक़्त भारत का राष्ट्र-पिता जीवित होता तो वही भारत को तीसरी लड़ाई के समुन्दर में से होकर भारत को उसके कपड़े भीगे बग़ैर तैरा कर ले जा सकता था. और जब हम उसकी आत्मा में दाख़िल होने की कोशिश करते हैं तो हमारे जी से यही आवाज़ निकलती है कि भारत का राष्ट्र-पिता गांधी हमें इस वक़्त फ़ौजों को किसानों में तब्दील कर के और समुन्दरी बेड़े को ब्योपारी बेड़ा बना कर और तोप, तलवार, तमंचों को हल, हथौड़ा,

دئے ہوئے ہیں ان پریکٹیکل Unpractical یعنی ناویوہاری یعنی جو ویوہار میں نہ آسکے - کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ بھارت کا 'ہاں' ایکڈیمک ہے یعنی ناویوہاری ہے یعنی یہ کہ اس پر کچھ عمل نہیں کیا جائیگا - نئے نئے آزاد بھارت کو ایسے ناویوہاری 'ہاں' کی کیا ضرورت آپڑی اور کیوں ضرورت آپڑی ؟ یہ کہنے کی ہماری ہمت نہیں ہوتی کہ بھارت سرکار نے سمیتی کی بےقاعدگی کی ہاں میں ہاں ملا کر ایسا کام کیا ہے جو بھارت کی آتما کے یوگیہ ہے ۔

بھارت کو بھارت کا راشٹرپتا اہنسا کے اخلاقی پہاڑ پر بہت اونچا چڑھا گیا ہے اور سچ مچ بھارت اس قابل ہے کہ اگر وہ چاہے تو اس کی چوٹی پر چڑھ سکتا ہے - ساتھ ہی ساتھ بھارت کسی وجہ سے ہنسا کے گہرے گڈھے میں اترنے کی قابلیت بھی رکھتا ہے پر ابھی تک اتنی قابلیت نہیں رکھتا کہ وہ اس کی تہہ تک پہونچ سکے - اس لئے وہ اس گراوٹ میں اپنے سے بڑے ہوئے ملکوں سے بازی نہیں مار سکتا - ایسی حالت میں اگر وہ اس دویدھا میں پڑ جائے کہ تیسری بڑی جنگ چھڑ جانے پر وہ تٹستھ رہ سکیگا یا نہیں رہ سکیگا یا اگر تٹستھ رہ سکیگا تو کس حد تک رہ سکیگا اور نہ رہا تو کیا کریگا تو کوئی اچرج کی بات نہیں - اہنسا کی اونچی چوٹی پر پہونچنے کیلئے اس نے کبھی اپنے بازو تولنے کی بات بھی نہیں سوچی - کاش ! ایسے وقت بھارت کا راشٹرپتا جیوت ہوتا تو وہی بھارت کو تیسری لڑائی کے سمندر میں سے ہوکر بھارت کو اس کے کپڑے بھیگے بغیر تیرا کر لے جاسکتا تھا - اور جب ہم اس کی آتما میں داخل ہونےکی کوشش کرتے ہیں تو ہمارے جی سے یہی آواز نکلتی ہے کہ بھارت کا راشٹرپتا گاندھی ہمیں اس وقت فوجوں کو کسانوں میں تبدیل کرکے اور سمندری بیڑے کو بیوپاری بیڑا بناکر اور توپ' تلوار' طمنچوں کو ہل' ہتھوڑا'

हंसिया का रूप देकर हमें ऐसे तैरा ले जाता कि दुनिया के सारे मुल्क दांत तले उंगली दबा कर रह जाते. कोई मन चला या राजमद में मस्त हमारी इस ख़ामख़याली पर हँस कर यह फ़िकरे कस सकता है कि फिर तो गांधी ने भारत को समुन्दर में डुबा दिया होता. हम उसके इस जवाब से इनकार नहीं करते. ज़रूर डुबा दिया होता और डूबे कौन से मुल्क नहीं हैं, पर इस तरह डूबा हुआ भारत उन उछले हुए मुल्कों के सर पर चाँद सूरज रहते रहते छाया हुआ रहता जो मुल्क एक दूसरे के ख़ून में लथपथ हाँफते हुए अपने किये पर पछता रहे होते.

हमारी तो यही समझ में नहीं आता कि सुरक्षा समिति ने 'दक्खिनी कोरिया को बचाने को दौड़ो' की आवाज़ उठा कर और अमरीका ने उसका कहना मान उस ओर दौड़ कर सचमुच दक्खिनी कोरिया के लोगों को बचाया है? अगर वह घरेलू लड़ाई में हज़ार की गिनती में मरते तब अमरीका की मदद के साथ लाखों की गिनती में मरेंगे और अगर कहीं रूस भड़क बैठा, जिसको भड़काने में अमरीका ने कोई कसर नहीं रखी, तो अमरीका और रूस की चक्की में पिस कर कोरिया में करोड़ों का ही चूरन बन जायगा और अगर बरतानिया के सुझाये ऐटम बम की याद किसी को आ गई तो फिर तो कोरिया में न जानवर बचेंगे और न बनस्पति. और कहीं तब तक हाईड्रोजन बम बन गया तब तो फिर क्या होगा इसको आइन्स्टीन भी नहीं सोच सकता.

भारत सरकार के फ़ैसले ने, फिर चाहे वह ना व्यवहारी हो या व्यवहारी, अमरीका की हिम्मत बढ़ा दी है और न हो ऐसा, कि यह लड़ाई बड़ी लड़ाई में बदल जाय तब रूस और अमरीका में से जो भी जीतेगा भारत को उसी का ग़ुलाम बन कर रहना होगा। एक इस और इस ख़याल से ही भारत के लिये तटस्थ रहना ही ज़्यादा अच्छा था. आज वह यह कह तो रहा है कि वह तटस्थ है और किसी का दुश्मन

ہنسیا کا روپ دیکر ہمیں ایسے تیرا لیجاتا کہ دنیا کے سارے ملک دانت تلے انگلی دبا کر رہ جاتے - کوئی منچلا یا راج مد میں مست ہماری اس خام خیالی پر ہنس کر یہ فقرے کس سکتا ہے کہ پھر تو گاندھی نے بھارت کو سمندر میں ڈبا دیا ہوتا - ہم اس کے اس جواب سے انکار نہیں کرتے - ضرور ڈبا دیا ہوتا اور ڈوبے کونسے ملک نہیں ہیں، پر اس طرح ڈوبا ہوا بھارت ان اچھلے ہوئے ملکوں کے سر پر چاند سورج رہتے رہتے چھایا ہوا رہتا جو ملک ایک دوسرے کے خون میں لتھ پتھ ہانپتے ہوئے اپنے کئے پر پچھتا رہے ہوتے -

ہماری تو یہی سمجھ میں نہیں آتا کہ سرکھشا سمیتی نے 'دکھنی کوریا کے بچانے کو دوڑو' کی آواز اٹھا کر اور امریکہ نے اس کا کہنا مان اس اور دوڑ کر سچ مچ دکھنی کوریا کے لوگوں کو بچایا ہے؟ اگر وہ گھریلو لڑائی میں ہزار کی گنتی میں مرتے تب امریکہ کی مدد کے ساتھ لاکھوں کی گنتی میں مرینگے اور اگر کہیں روس بھڑک بیٹھا، جس کو بھڑکانے میں امریکہ نے کوئی کسر نہیں رکھی، تو امریکہ اور روس کی چکی میں پس کر کوریا میں کروڑوں کا ہی چورن بن جائیگا - اور اگر برطانیہ کے سجھائے اٹم بم کی یاد کسی کو آ گئی تو پھر تو کوریا میں نہ جانور بچینگے اور نہ بنسپتی - اور کہیں تب تک ہائیڈروجن بم بن گیا تب تو پھر کیا ہوگا اس کو آئن اسٹین بھی نہیں سوچ سکتا -

بھارت سرکار کے فیصلے نے، پھر چاہے وہ ناویوہاری ہو یا ویوہاری، امریکہ کی ہمت بڑھا دی ہے - اور نہ ہو ایسا، کہ یہ لڑائی بڑی لڑائی میں بدل جائے - تب روس اور امریکہ میں سے جو بھی جیتے گا بھارت کو اسی کا غلام بن کر رہنا ہوگا - ایک اس اور خیال اس سے ہی بھارت کے لئے تٹستھ رہنا ہی زیادہ اچھا تھا - آج وہ کہہ تو یہ رہا ہے کہ وہ تٹستھ ہے اور کسی کا دشمن

नहीं पर खाली दुश्मन न होने से दुनिया में शान्ति बनाये रखने की क़ाबलियत भारत नहीं रख सकता . वह दुनिया के सब मुल्कों का दोस्त होकर ही शान्ति की और इन्साफ़ की तराज़ू की डंडी सीधी रख सकता है. इस फ़ैसले के बाद भी, जिससे उसकी शान को धक्का पहुँचा है, अगर वह दक्खिनी कोरिया के साथ और उत्तरी कोरिया के साथ खुली दोस्ती का भी एलान कर दे तो फिर अपनी वही शान पा सकता है जो फ़ैसले से पहले थी. वह दोस्ती के फ़ैसले पर अमल भी कर सकता है और वह यों कि वह अपने डाक्टर, एम्बुलेन्स कोर, दक्खिनी कोरिया और उत्तरी कोरिया में भेजे और सिर्फ़ उस जनता की ख़िदमत करे जो दोनों तरफ़ से लड़ाई में भाग नहीं ले रही. सिपाहियों से उसे कोई दुश्मनी नहीं होनी चाहिये पर उनकी मरहम पट्टी के लिये तो काफ़ी इन्तज़ाम रहता है और सिपाही तो लड़ाई के वक़्त में कोयले की जगह घी से काम लेते हैं .

यह भी न हो सके तो सारे कोरिया के एक होकर सुखी रहने की प्रार्थना ही भगवान से करने का सरकार हुक्म निकाले .

ता० ९-७-५०

—भगवानदीन और सुन्दरलाल

نہیں پر خالی دشمن نہ ہونے سے دنیا میں شانتی بنائے رکھنے کی قابلیت بھارت نہیں رکھ سکتا - وہ دنیا کے سب ملکوں کا دوست ہوکر ہی شانتی کی اور انصاف کی ترازو کی ڈنڈی سیدھی رکھ سکتا ہے - اس فیصلے کے بعد بھی ' جس سے اس کی شان کو دھکا پہونچا ہے ' اگر وہ دکھنی کوریا کے ساتھ اور اُتری کوریا کے ساتھ کھلی دوستی کا بھی اعلان کردے تو پھر اپنی وہی شان پا سکتا ہے جو فیصلے سے پہلے تھی - وہ دوستی کے فیصلے پر عمل بھی کر سکتا ہے اور وہ یوں کہ وہ اپنے ڈاکٹر ' ایمبولینس کور ' دکھنی کوریا اور اُتری کوریا میں بھیجے اور صرف اُس جنتا کی خدمت کرے جو دونوں طرف سے لڑائی میں بھاگ نہیں لے رہی - سپاہیوں سے اُسے کوئی دشمنی نہیں ہونی چاہئے پر اُن کی مرہم پٹی کے لئے تو کافی انتظام رہتا ہے اور سپاہی تو لڑائی کے وقت میں کوئلہ کی جگہ گھی سے کام لیتے ہیں -

یہ بھی نہ ہو سکے تو سارے کوریا کے ایک ہوکر سکھی رہنے کی پرارتھنا ہی بھگوان سے کرنے کا سرکار حکم نکالے -

۲ - ۷ - ۵۰

—بھگوان دین اور سندر لال

तुर्की के नए चुनाव .

चौदह मई को तुर्की में नए चुनाव हो गए. अब तक तुर्की की हकूमत पीपुल्स पार्टी के हाथ में थी और प्रेसीडेन्ट थे श्री इनोनू. नये चुनाव से हकूमत की बागडोर डेमोक्रेटिक पारटी के हाथ में आगई है और उसके प्रेसीडेन्ट हैं श्री जलाल बायर .

पीपुल्स पारटी और डेमोक्रेटिक पारटी के नामों से हमारे पढ़ने वालों को तुर्की की राजकाजी हालत का ठीक ठीक पता नहीं चल सकता. हां, यह कहने से बात समझ में आ सकती है कि पीपुल्स पारटी का मतलब है बूढ़ों का दल और डेमोक्रेटिक पारटी का मतलब है नये खून वालों का दल. बस अब यह समझना चाहिये कि तुर्की की हकूमत तुर्की के जवानों के हाथ में आगई है. जवान नातजरबेकारी के लिये बदनाम होते हैं पर जिन जवानों ने तुर्की की हकूमत अपनाई है वह हमें नातजरबेकार नहीं दिखाई देते. हम नातजरबेकारी का संबंध उमर से जोड़ने के लिये तैयार नहीं. हां, उसका सम्बंध सचाई और मुहब्बत से जोड़ने के लिये तैयार हैं. । सचाई और मोहब्बत दो ऐसे गुन हैं जो दिल का मैल साफ कर देते हैं और इस मैल के साथ नातजरबेकारी के दाग धुल जाते हैं और बुद्धि चमक उठती है. तुर्की के नये जवानों में हमें यह दोनों सिफतें साफ दिखाई दे रही हैं .

श्री जलाल बायर ने प्रेसीडेन्ट की कुर्सी सँभालते ही बड़े बड़े सुलतानी महलों को नमस्कार कर दिया और बहुत जल्द ही 'सावरोना' नामी शाही नाव से छुट्टी लेने वाले हैं. प्रेसीडेन्ट के नाम से रक्खी हुई सोलह मोटर कारों की उन्हें कोई जरूरत नहीं मालूम हुई. उन्होंने उनमें से तेरह औरों को दे डाली वह तीन मोटर कारों

ترکی کے نئے چناؤ

چودہ مئی کو ترکی میں نئے چناؤ ہو گئے - اب تک ترکی کی حکومت پیپلس پارٹی کے ہاتھ میں تھی اور پریسیڈنت تھے شری انونو - نئے چناؤ سے حکومت کی باگ ڈور ڈیمو کریٹک پارٹی کے ہاتھ میں آگئی ہے اور اُس کے پریسیڈنت ہیں شری جلال بائر -

پیپلس پارٹی اور ڈیمو کریٹک پارٹی کے ناموں سے ہمارے پڑھنے والوں کو ترکی کی راج کاجی حالت کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چل سکتا - ہاں یہ کہنے سے بات سمجھ میں آ سکتی ہے کہ پیپلس پارٹی کا مطلب ہے بوڑھوں کا دل اور ڈیمو کریٹک پارٹی کا مطلب ہے نئے خون والوں کا دل - بس اب یہ سمجھنا چاہئے کہ ترکی کی حکومت ترکی کے جوانوں کے ہاتھ میں آگئی ہے - جوان نا تجربہ کاری کے لئے بد نام ہوتے ہیں پر جن جوانوں نے ترکی کی حکومت اپنائی ہے وہ ہمیں نا تجربہ کار نہیں دکھائی دیتے - ہم نا تجربہ کاری کا سمبندھ عمر سے جوڑنے کے لئے تیار نہیں - اُس کا سمبندھ سچائی اور محبت سے جوڑنے کے لئے تیار ہیں - سچائی اور محبت دو ایسے گن ہیں جو دل کا میل صاف کردیتے ہیں اور اس میل کے ساتھ ناتجربہ کاری کے داغ دھل جاتے ہیں اور بدھی چمک اُٹھتی ہے - ترکی کے نئے جوانوں میں ہمیں یہ دونوں صفتیں صاف دکھائی دے رہی ہیں -

شری جلال بائر نے پریسیڈینٹی کی کرسی سنبھالتے ہی بڑے بڑے سلطانی محلوں کو نمسکار کر دیا اور بہت جلد ہی 'ساوورونا' نامی شاہی ناؤ سے چھٹی لینے والے ہیں - پریسیڈنت کے نام سے رکھی ہوئی سولہ موٹر کاروں کی اُنہیں کوئی ضرورت نہیں معلوم ہوئی - انہوں نے اُن میں سے تیرہ اوروں کو دے ڈالیں - وہ تین موٹر کاروں

से ही काम चला सकते हैं. चार चार एडजुटेन्ट (बाडी गार्ड) उन्हें अपने लिये बेकार जंचे. वह एक से ही काम चला सकते हैं. अपने लिये मोटर साइकिल वाली पुलिस गारद को देखकर तो उन्हें हँसी आगई और कहने लगे कि "मैं राजधानी अंकरा के सब रास्ते जानता हूँ और कहीं भूल जाऊँगा तो पूछ कर पता चला सकता हूँ, इसलिये मुझे इस पुलिस गारद की जरूरत नहीं" यह है किसी मुल्क के सच्चे नेता की पहचान! जिसे सारा मुल्क चाहे उसे इतनी पुलिस की ज़रूरत?

इन नए प्रेसीडेन्ट का नारा है "खुशखर्ची, न बरबादी, न ऐय्याशी' कुर्सी पर बैठते ही कितने ही खर्च घटा दिये गये हैं और कितनी ही जगहें कम कर दी गई हैं. यह काम चाहे तजरबेकारी का सबूत न देते हों पर इस बात का सबूत जरूर हैं कि नये खून में पूरी सचाई है और अपने मुल्क के लिये पूरी मोहब्बत है. हमें उम्मीद है कि इन दो सिफतों के साथ उनकी नातजरबेकारी भी हकूमत को इस तरह सँभालेगी कि तजरबेकार दाँतों तले उँगली दबाकर रह जायँगे.

भारत के नए चुनाव सर पर हैं. वह जो आज हकूमत सँभाले हुए हैं और वह जिनके दिलों में हकूमत सँभालने की उमंगें जोर मार रही हैं दोनों ही को तुर्की के इस चुनाव से सबक लेना चाहिये. भारत की जनता इस वक्त उसी के हाथ में हकूमत देना पसंद करेगी जो इस तरह का त्याग लेकर मैदान में आने की हिम्मत करेंगे जैसा त्याग लेकर तुर्की की डेमोक्रेटिक पारटी मैदान में आई और बाजी ले गई.

१३ - ६ - ५०

भगवानदीन

سے ہی کام چلا سکتے ھیں - چار چار ایڈجوٹینٹ (باڈی گارڈ) اُنہیں اپنے لئے بیکار جنچے - وہ ایک سے ہی کام چلا سکتے ھیں - اپنے لئے موٹر سائیکل والی پولیس گارد کو دیکھکر تو اُنہیں ھنسی آگئی اور کہنے لگے کہ "میں راجدھانی انقرہ کے سب راستے جانتا ھوں اور کہیں بھول جاؤنگا تو پوچھ کر پتہ لگا سکتا ھوں' اس لئے مجھے اس پولیس گارد کی ضرورت نہیں" یہ ھے کسی ملک کے سچے نیتا کی پہچان! جسے سارا ملک چاھے اُسے اتنی پولیس کی ضرورت؟

ان نئے پریسیڈینٹ کا نعرہ ھے "خوش خرچی' نہ بربادی نہ عیاشی" کرسی پر بیٹھتے ھی کتنے ھی خرچ گھٹا دئے گئے ھیں اور کتنی ھی جگہیں کم کردی گئی ھیں - یہ کام چاھے تجربہ کاری کا ثبوت نہ دیتے ھوں پر اس بات کا ثبوت ضرور ھیں کہ نئے خون میں پوری سچائی ھے اور اپنے ملک کیلئے پوری محبت ھے - ھمیں امید ھے کہ اِن دو صفتوں کے ساتھ اُن کی ناتجربہ کاری بھی حکومت کو اسطرح سنبھالیگی کہ تجربہ‌کار دانتوں تلے اُنگلی دباکر رہ جائیں گے -

بھارت کے نئے چناؤ سر پر ھیں - وہ جو آج حکومت سنبھالے ھوئے ھیں اور وہ جن کے دلوں میں حکومت سنبھالنے کی اُمنگیں زور مار رھی ھیں دونوں ھی کو ترکی کے اِس چناؤ سے سبق لینا چاھئے - بھارت کی جنتا اس وقت اُسی کے ھاتھ میں حکومت دینا پسند کریگی جو اسطرح کا تیاگ لے کر میدان میں آنے کی ھمت کریں گے جیسا تیاگ لیکر ترکی کی ڈیموکریٹک پارٹی میدان میں آگئی اور بازی لیگئی -

بھگوان دین

۱۳ - ۶ - ۵۰

कांग्रेस और लज्जा

बिहार असेम्बली की फड़ से यह बात सुनी गई:—

"………… बेतिया राज की १२,००० बीघा जमीन बाहर वालों के नाम कर दी गई, उनमें चालीस कांग्रेस वाले शामिल हैं………"

उसी असेम्बली के एक कांग्रेसी मेम्बर के यह शब्द हैं :—

"………… इसमें कांग्रेस वालों को शर्माने की कोई बात नहीं, असल में अगर शर्माने की कोई बात है तो वह यह है कि उन्हें इससे ज्यादा जमीन न मिल सकी………"

उन्हीं का यह भी कहना है कि "असेम्बली के कांग्रेसी मेम्बर जमीन के दिये जाने का समर्थन इस लिये करते हैं कि वह जमीनें ऐसे लोगों को दी गई हैं जो देश की आजादी की कोशिश में बहुत कुछ तकलीफें उठा चुके हैं और बहुत कुछ बलिदान कर चुके हैं………"

ऊपर के कथन से यह बातें निकलती हैं :—

१— कुछ कांग्रेस वालों को जमीनें दी गईं.

२—इस जमीन की देनदारी में न उनके लिये कोई शर्म की बात है जिन कांग्रेस वालों ने जमीनें दीं और न उन कांग्रेस वालों के लिये कोई शर्म की बात है जिन्होंने जमीनें लीं.

३—देश की आजादी के लिये जिन लोगों ने दुख उठाये उनको कुछ मिले तो बुरा क्या?

कांग्रेस वाले भारत को आजादी दिलाकर अभी अभी लौटे हैं. यों उन्हें हक़ है जो जी में आये कहें. और अगर कुछ शेखी भी बघारें तो हम सब को सहन करनी चाहिये. इतने बड़े काम के बाद शेखी भी क्या बघारी जा सकती है?

کانگریس اور لجا

بہار اسمبلی کی پھڑ سے یہ بات سنی گئی :—

" .... بیتیا راج کی ١٢٠٠٠ بیگھا زمین باہر والوں کے نام کردی گئی - ان میں چالیس کانگریس والے شامل ہیں........"

اسی اسمبلی کے ایک کانگریسی ممبر کے یہ شبد ہیں :—

" ... .اس میں کانگریس والوں کو شرمانے کی کوئی بات نہیں - اصل میں اگر شرمانے کی کوئی بات ہے تو وہ یہ ہے کہ انہیں اس سے زیادہ زمین نہ مل سکی ... ."

انہیں کا یہ بھی کہنا ہے کہ " اسمبلی کے کانگریسی ممبر زمینیں کے دیئے جانے کا سمرتھن اس لئے کرتے ہیں کہ وہ زمینیں ایسے لوگوں کو دی گئی ہیں جو دیش کی آزادی کی کوشش میں بہت کچھ تکلیفیں اٹھا چکے ہیں اور بہت کچھ بلیدان کر چکے ہیں ... ..."

اوپر کے کتھن سے یہ باتیں نکلتی ہیں :—

١—کچھ کانگریس والوں کو زمینیں دی گئیں -

٢—اس زمین کی دینداری میں نہ ان کے لئے کوئی شرم کی بات ہے جن کانگریس والوں نے زمینیں دیں اور نہ ان کانگریس والوں کے لئے کوئی شرم کی بات ہے جنھوں نے زمینیں لیں -

٣—دیش کی آزادی کے لئے جن لوگوں نے دکھ اٹھائے ان کو کچھ ملے تو برا کیا؟

کانگریس والے بھارت کو آزادی دلا کر ابھی ابھی لوٹے ہیں - یوں انہیں حق ہے جو جی میں آئے کہیں - اور اگر کچھ شیخی بھی بگھاریں تو ہم سب کو سہن کرنی چاہئے - اتنے بڑے کام کے بعد شیخی بھی کیا بگھاری جاسکتی ہے؟

यह कौन नहीं जानता कि जब हम किसी रिक्शा वाले से दाम ठहराये बिना उसके रिक्शा में बैठ जाते हैं तो फिर उसका यह हक़ हो जाता है कि वह जो कुछ चाहे माँग बैठे. और क़ायदे से हमें चुप चाप वही दे देना चाहिये जो वह माँगे. मुनासिब से दुगने दाम पाकर भी रिक्शा वाला क्यों शर्माये ? बस, ऐसे रिक्शा वाले से मिलता जुलता ही कांग्रेस वालों का हाल है. उनसे बिना ठहराये ही उनको देश की आज़ादी की गाड़ी में जोत लिया गया और अब अगर वह अपनी मेहनत से कुछ ज्यादा भी पा जायें तो उन्हें शर्माने की जरूरत क्या है ? उन्हें कितना भी ज्यादा क्यों न मिले शर्माने की जरूरत नहीं. क्योंकि वह ज्यादा तो हर हालत में ही कम रहेगा. जिस तरह माँ और बाप की सेवाओं का मोल किन्हीं दामों नहीं चुकाया जा सकता, उसी तरह कांग्रेस वालों की सेवा और बलिदानों का मोल भी, जब तक वह खुद या अपनी संतानों के रूप में जीवित हैं, किसी दामों नहीं चुकाया जा सकता..

यह बात ठीक है कि जिस रिक्शा वाले से हम दाम नहीं ठहराते वह अपनी मजदूरी से अगर कम दाम पाता है तो उन दामों को मंजूर कर बैठना वह अपनी शान के खिलाफ़ समझता है और कैसा भी जरूरतमन्द क्यों न हो दाम फेंककर चलता बनता है. ऐसी हालत में दाम चुकाने वाला ढीला पड़ जाता है और रिक्शा वाले को धमका मना कर वही दाम लेने के लिये या कुछ और ज्यादा लेने के लिये तैयार करने की कोशिश करता है. यह ठीक है कि इस तरह की कोई बात किसी कांग्रेस वाले ने नहीं की यानी किसी कांग्रेस वाले ने मिलने वाली जमीन को इतना कम नहीं समझा कि वह उसको अपनी शान के खिलाफ़ समझता और रूठ कर या मुंह बना कर उसे लेने से इन्कार कर देता. इसलिये असेम्बली के कांग्रेसी मेम्बरों की यह शिकायत तो ठीक नहीं मालूम होती कि कांग्रेस वालों को अपने

یہ کون نہیں جانتا کہ جب ہم کسی رکشا والے سے دام ٹھہرائے بنا اسکے رکشا میں بیٹھ جاتے ہیں تو پھر اس کا یہ حق ہو جاتا ہے کہ وہ جو کچھ چاہے مانگ بیٹھے ۔ اور قاعدے سے ہمیں چپ چاپ وہی دے دینا چاہئے جو وہ مانگے ۔ مناسب سے دگنے دام پاکر بھی رکشا والا کیوں شرمائے ؟ بس ، ایسے رکشا والے سے ملتا جلتا ہی کانگریس والوں کا حال ہے ۔ ان سے بنا ٹھہرائے ہی ان کو دیش کی آزادی کی گاڑی میں جوت لیا گیا اور اب اگر وہ اپنی محنت سے کچھ زیادہ بھی پا جائیں تو انہیں شرمانے کی ضرورت کیا ہے ؟ انہیں کتنا بھی زیادہ کیوں نہ ملے شرمانے کی ضرورت نہیں ۔ کیونکہ وہ زیادہ تو ہر حالت میں ہی کم رہیگا ۔ جس طرح ماں اور باپ کی سیواؤں کا مول کنہی داموں نہیں چکایا جاسکتا ، اسیطرح کانگریس والوں کی سیوا اور بلیدانوں کا مول بھی ۔ جب تک وہ خود یا اپنی سنتانوں کے روپ میں جیوت ہیں ، کسی داموں نہیں چکایا جا سکتا ۔

یہ بات ٹھیک ہے کہ جس رکشا والے سے ہم دام نہیں ٹھہراتے وہ اپنی مزدوری سے اگر کم دام پاتا ہے تو ان داموں کو منظور کر بیٹھنا وہ اپنی شان کے خلاف سمجھتا ہے اور کیسا بھی ضرورت مند کیوں نہ ہو دام پھینک کر چلتا بنتا ہے ۔ ایسی حالت میں دام چکانے والا ڈھیلا پڑ جاتا ہے اور رکشا والے کو دھمکا منا کر وہی دام لینے کے لئے یا اور کچھ زیادہ لینے کے لئے تیار کرنے کی کوشش کرتا ہے ۔ یہ ٹھیک ہے کہ اس طرح کی کوئی بات کسی کانگریس والے نے نہیں کی یعنی کسی کانگریس والے نے ملنے والی زمین کو اتنا کم نہیں سمجھا کہ وہ اس کو اپنی شان کے خلاف سمجھتا اور روٹھ کر یا منہ بنا کر اسے لینے سے انکار کر دیتا ۔ اس لئے اسمبلی کے کانگریسی ممبروں کی یہ شکایت درست تو ٹھیک نہیں معلوم ہوتی کہ کانگریس والوں کو اپنے

बलिदानों के बदले में कम जमीनें मिली हैं. हाँ, यह शिकायत उनकी ज्यों की त्यों खड़ी रहती है कि उन्हें और ज्यादा जमीनें क्यों नहीं मिलीं. इसके जवाब में हम इसके सिवा और क्या कह सकते हैं कि वह जिन कांग्रेस वालों की शिकायत लेकर खड़े हुए हैं उनको देश की आजादी की गाड़ी में जोता किसने था ? जिसके खिलाफ शिकायत है उसका कम से कम नाम तो बतायें. उसको अदालत में हाजिर करना फिर अदालत का काम रह जाता है .

अगर शिकायत उन्हें उस बूढ़े गांधी के खिलाफ है जिसने यह आजादी का तूफान उठाया था, तो वह तो अब अदालत की अमलदारी से परे है और अगर शिकायत उन्हें कांग्रेस के खिलाफ है तो कांग्रेस खुद उन्हीं की बनी हुई है. और जब चाहें जब उसे जितना चाहें देने के लिये मजबूर कर सकते हैं. और अब तो कांग्रेस कोई नादार संस्था नहीं है करोड़ों की मालिक है और अरबों रुपयों पर उसका असर है. और जमीनों के लिहाज से तो भारत भर की अच्छी बुरी सारी जमीनें उसकी एक कलम की नोक से अगर आज 'अ' की हैं तो कल 'ब' की हो सकती हैं. आज कांग्रेस के पौ बारह हैं. सचमुच हमारी भी राय में कांग्रेस वालों को शर्माने की कोई जरूरत नहीं और हम भी यह कहते हुए कहाँ शर्मा रहे हैं कि शर्माने की जरूरत नहीं है ?

कांग्रेस एक संस्था है और आजकल के पंडितों का यह कहना है कि संस्था बेजान हुआ करती है. और जिसमें जान नहीं उसे शर्म से क्या लेना देना ? अगर हम कोशिश करें तो अपनी इस बात का समर्थन गांधी के लेखों से भी खोज निकाल सकते हैं पर यह काम जान बूझ कर हम अपने पढ़ने वालों पर ही छोड़ते हैं और यहीं इस नोट की अन्तिम बिन्दी लगाते हैं .

२६-६-५०   भगवानदीन

بلیدانوں کے بدلے میں کم زمینیں ملی ہیں۔ ہاں، ان کی یہ شکایت جیوں کی تیوں کھڑی رہتی ہے کہ انہیں اور زیادہ زمینیں کیوں نہیں ملیں۔ اس کے جواب میں ہم اس کے سوا اور کیا کہہ سکتے ہیں کہ وہ کانگریس والے جن کانگریس والوں کی شکایت لیکر کھڑے ہوئے ہیں اُن کو دیش کی آزادی کی گاڑی میں جوتا کس نے تھا ؟ جس کے خلاف شکایت ہے اُس کا کم سے کم نام تو بتائیں۔ اُس کو عدالت میں حاضر کرنا پھر عدالت کا کام رہ جاتا ہے۔

اگر شکایت اُنہیں اُس بوڑھے گاندھی کے خلاف ہے جس نے یہ آزادی کا طوفان اٹھایا تھا، تو وہ عدالت کی عملداری سے پرے ہے۔ اور اگر شکایت اُنہیں کانگریس کے خلاف ہے تو کانگریس خود اُنہی کی بنی ہوئی ہے۔ اور جب چاہیں جب اُسے جتنا چاہیں دینے کے لئے مجبور کر سکتے ہیں۔ اور اب تو کانگریس کوئی نادار سنستھا نہیں ہے۔ کروڑوں کی مالک ہے اور اربوں روپیوں پر اُس کا اثر ہے۔ اور زمینوں کے لحاظ سے تو بھارت بھر کی اچھی بری ساری زمینیں اُس کی ایک قلم کی نوک سے اگر آج 'الف' کی ہیں تو کل 'ب' کی ہو سکتی ہیں۔

آج کانگریس کے پوبارہ ہیں۔ سچ مچ ہماری بھی رائے میں کانگریس والوں کو شرمانے کی کوئی ضرورت نہیں اور ہم بھی یہ کہتے ہوئے کہاں شرما رہے ہیں کہ شرمانے کی ضرورت نہیں ہے ؟

کانگریس ایک سنستھا ہے اور آج کل کے پنڈتوں کا یہ کہنا ہے کہ سنستھا بے جان ہوا کرتی ہے اور جس میں جان نہیں اُسے شرم سے کیا لینا دینا ؟ اگر ہم کوشش کریں تو اپنی اس بات کا سمرتھن گاندھی کے لیکھوں سے بھی کھوج نکال سکتے ہیں پر یہ کام جان بوجھ کر ہم اپنے پڑھنے والوں پر ہی چھوڑتے ہیں اور یہیں اس نوٹ کی انتم بندی لگاتے ہیں۔

۱۶-۰۹-۵۰   بھگوان دین

शांति इनाम का हक़दार कौन ?

कोरिया में घरेलू लड़ाई छिड़ी. उससे न दुनिया के किसी मुल्क की शांति भंग हुई और न बहुत से मुल्कों की जनता को यह पता ही चला कि कोरिया में कोई लड़ाई हो रही है. भारत कोरिया के काफी पास है पर उसकी जनता ने भी यह न जाना कि कोरिया में लड़ाई हो रही है. और वह ऐसी घरेलू लड़ाई की ओर अपने कान भी क्यों लगाने लगी? पर जब से महानता के लोभी अमरीका ने कोरिया की घरेलू लड़ाई का शोर मचाया और लड़ने वालों में से एक को 'ज्यादती करने वाला' यानी 'अग्रेसर' कह कर जल्दबाजी करके सुरक्षा समिति से इजाजत लिये बिना कोरिया पर चढ़ाई कर दी तब से क्या भारत और क्या दुनिया के और मुल्क सभी कोरिया की लड़ाई को जान गये और आज तो सारे अखबार उस घरेलू लड़ाई से ऐसे ही भरे रहते हैं मानो वह दुनिया की बड़ी लड़ाई से भी बड़ी हो. और वह सचमुच दुनिया की बड़ी लड़ाई से बड़ी है. अगर दो लड़ती हुई भेड़ों को बचाने के लिये कोई शेर दौड़ पड़े और दौड़ते हुए यह पुकारता जाय कि ऐ जंगल के चीतो, हाथियो, भेड़ियो और गीदड़ो, तुम भी दौड़ो. बड़ा ग़ज़ब हो गया, दो भेड़ें लड़ बैठीं. तब सारा जंगल कांप ही जायगा. इस वक्त अमरीका ने ठीक ऐसी ही हालत पैदा कर दी है. और सारी दुनिया को बड़ी चिन्ता में डाल दिया है. अमरीका के हथकंडों से और अमरीका के पत्रकारों से हम खूब वाक़िफ़ हैं. वह जब जी में आये किसी को 'ज्यादती करने वाला' कह बैठते हैं. एक से ज्यादा बार वह हिन्दुस्तान के बारे में भी इस तरह का झूठा शोर उठा चुके हैं.

شانتی انعام کا حق دار کون؟

کوریا میں گھریلو لڑائی چھڑی۔ اس سے نہ دنیا کے کسی ملک کی شانتی بھنگ ہوئی اور نہ بہت سے ملکوں کی جنتا کو یہ پتہ ہی چلا کہ کوریا میں کوئی لڑائی ہو رہی ہے۔ بھارت کوریا کے کافی پاس ہے پر اس کی جنتا نے بھی یہ نہ جانا کہ کوریا میں لڑائی ہو رہی ہے۔ اور وہ ایسی گھریلو لڑائی کی اور اپنے کان بھی کیوں لگانے لگی؟ پر جب سے مہانتا کے لوبھی امریکہ نے کوریا کی گھریلو لڑائی پر شور مچایا اور لڑنے والوں میں سے ایک کو 'زیادتی کرنے والا' یعنی 'اگریسر' کہکر جلد بازی کرکے سرکھشا سمتی سے اجازت لئے بنا کوریا پر چڑھائی کردی تب سے کیا بھارت اور کیا دنیا کے اور ملک سبھی کوریا کی لڑائی کو جان گئے اور آج تو سارے اخبار اس گھریلو لڑائی سے ایسے ہی بھرے رہتے ہیں مانو وہ دنیا کی بڑی لڑائی سے بھی بڑی ہو۔ اور وہ سچ مچ دنیا کی بڑی لڑائی سے بڑی ہے۔ اگر دو لڑتی ہوئی بھیڑوں کو بچانے کے لئے کوئی شیر دوڑ پڑے اور دوڑتے ہوئے یہ پکارتا جائے کہ اے جنگل کے چیتو، ہاتھیو، بھیڑیو اور گیدڑو، تم بھی دوڑو۔ بڑا غضب ہوگیا۔ دو بھیڑیں لڑ بیٹھیں۔ تب سارا جنگل کانپ ہی جائیگا۔ اس وقت امریکہ نے ٹھیک ایسی ہی حالت پیدا کردی ہے۔ اور ساری دنیا کو بڑی چنتا میں ڈالدیا ہے۔ امریکہ کے ہتھکنڈوں سے اور امریکہ کے پترکاروں سے ہم خوب واقف ہیں۔ وہ جب جی میں آئے کسی کو 'زیادتی کرنے والا' کہہ بیٹھتے ہیں۔ ایک سے زیادہ بار وہ ہندوستان کے بارے میں بھی اس طرح کا جھوٹا شور اٹھا چکے ہیں۔

और कोई अजब नहीं, मौक़ा पाकर फिर उठा बैठें. इसी अमरीका ने इसी भारत को उस वक़्त 'ज्यादती करने वाला' कहा था जब भारत अपने बहके हुए हिस्से हैदराबाद को दबा समझ कर अपने में मिलाना चाहता था. पर यही ग़नीमत है कि उस वक़्त वह सुरचा समिति से हुक्म लेकर हैदराबाद की तरफ़ से भारत पर नहीं कूद पड़ा और न उसने बरतानिया को ही ऐसा करने के लिये उकसाया. अगर वह उस वक़्त ऐसा करता तो या तो चुपचाप भारत मुंह की खाकर रह जाता और हैदराबाद अमरीका की निगरानी में या बरतानिया की निगरानी में ऐसे ही आ जाता जिस तरह आज दक्खिन कोरिया उसी काका साम के हाथ में है. या अगर भारत ने कुछ हाथापाई की होती तो सारा भारत ही अमरीका के हाथों में होता और फिर शायद भारत में प्रेसीडेन्ट की जगह वाइसराय होता या एजेन्ट टू यु. एस. ए. होता. ऐसा क्यों नहीं हुआ इसे अमरीका जाने. हम इस वक़्त इस गहराई में नहीं जाना चाहते. हम तो सिर्फ़ यह बताना चाहते हैं कि इस वक़्त अमरीका ने दुनिया की शान्ति भंग कर दी है. कोरिया पर उसकी चढ़ाई क़ानून की रू से ठीक भी होती और नीति की रू से भी ठीक होती तो भी अमली रूप से जो अशांति फैली है उसकी जिम्मेदारी अमरीका पर है और अशांति फैलाकर उसने बहुत बड़ी ग़लती की. जिस तरह क़ानून की रू से और धर्म की रू से एक आदमी का मामा उसके बाप का साला होता है पर अगर वह उस क़ानूनी और धार्मिक अधिकार की रू से अपने मामा को अपने बाप का साला कह कर पुकारे तो वह कुटुम्ब की शान्ति को भंग करने का मुजरिम होगा. ठीक इसी तरह से अमरीका इस वक़्त दुनिया की शांति के भंग करने का मुजरिम है.

اور کوئی عجب نہیں' موقع پاکر پھر اٹھا بیٹھیں - اسی امریکہ نے "اِسی" بھارت کو اس وقت 'زیادتی کرنے والا' کہا تھا جب بھارت اپنے بھٹکے ہوئے حصے حیدرآباد کو دبا سمجھ کر اپنے میں ملانا چاہتا تھا - پر یہی غنیمت ہے کہ اس وقت وہ سورکشا سمیتی سے حکم لیکر حیدرآباد کی طرف سے بھارت پر نہیں کود پڑا اور اس نے برطانیہ کو ہی ایسا کرنے کے لئے اُکسایا - اگر وہ اس وقت ایسا کرتا تو یا تو چپ‌چاپ بھارت منھ کی کھاکر رہ جاتا اور حیدرآباد امریکہ کی نگرانی میں یا برطانیہ کی نگرانی میں ایسے ہی آجاتا جس طرح آج دکھن کوریا اُسی کاکا سام کے ہاتھ میں ہے - یا اگر بھارت نے کچھ ہاتھا پائی کی ہوتی تو سارا بھارت ہی امریکہ کے ہاتھوں میں ہوتا اور پھر شاید بھارت میں پریسیڈنٹ کی جگہ وائسرائے ہوتا یا ایجنٹ ٹو یو- ایس- اے- ہوتا - ایسا کیوں نہیں ہوا اسے امریکہ جانے - ہم اس وقت اس گہرائی میں نہیں جانا چاہتے - ہم تو صرف یہ بتانا چاہتے ہیں کہ اسوقت امریکہ نے دنیا کی شانتی بھنگ کردی ہے - کوریا پر اس کی چڑھائی قانون کی رو سے ٹھیک بھی ہوتی اور نیتی کی رو سے بھی ٹھیک ہوتی تو بھی عملی روپ سے جو اشانتی پھیلی ہے اس کی ذمہ‌داری امریکہ پر ہے - اور اشانتی پھیلا کر اس نے بہت بڑی غلطی کی - جس طرح قانون کی رو سے اور دھرم کی رو سے ایک آدمی کا ماما اس کے باپ کا سالا ہوتا ہے پر اگر وہ اس قانونی اور دھارمک ادھیکار کی رو سے اپنے ماما کو اپنے باپ کا سالا کہہ کر پکارے تو وہ کٹمب کی شانتی بھنگ کرنے کا مجرم ہوگا - اسی طرح سے امریکہ اس وقت دنیا کی شانتی کے بھنگ کرنے کا مجرم ہے -

सुरक्षा समिति की पुकार और अमरीका के चढ़ाई के हुकुम से अनेकों हाथ वाली शांति देवी को चोट तो पहुँची थी पर भारत और मिस्र के तटस्थ रहने से यह दो हाथ सलामत थे. थोड़ी देर में, न जाने किस वजह से भारती हाथ अगर टूटा नहीं तो कंधे से उतर कर लटक जरूर पड़ा और अब शांति, जो बच रहे थे, उनकी नजरों में भी भंग हो गई. और ऐसा होते ही हम भारत के रहने वालों पर चिंता की न दिखाई देने वाली गोलियों की बौछार होने लगी. और अब हर भारत वासी के मन में दुविधा है कि न जाने किस दिन सीसे और लोहे की गोलियों की बौछार भी उन पर होने लगे. जैसा हाल भारत का है वैसा ही हाल और मुल्कों का है. इसलिये भारत अगर सीधे नहीं तो नासीधे दुनिया में अशांति फैलाने का जिम्मेदार बन बैठा. इस गांधी पैदा करने वाले भारत को अब दुनिया क्या कहेगी, यह कौन जाने ?

नार्वे, जिसने नोबेल जैसे दानी को जन्म दिया और उस नोबेल को जो दुनिया में हमेशा के लिये और इनामों के साथ साथ एक शांति का इनाम भी रख गया है, वह भी इस चढ़ाई की इजाजत के लिये 'हां' कह कर शांति के भंग करने वालों में शामिल हो गया.

अमरीका ने इस वक्त जो दुनिया भर में आग लगाई है, इतना ही अच्छा हुआ है कि इस वक्त दुनियां के सारे मुल्क अच्छी खासी गीली लकड़ी बने हुए हैं और जल्दी आग नहीं पकड़ रहे, नहीं तो वह आग बड़ी जल्दी सारी दुनिया में फैल जाती. इस अशांति की हालत में अगर कुछ शांति बनी हुई है और दुनिया की इस बेचैनी में

سرکشا سمیتی کی پکار اور امریکہ کے چڑھائی کے حکم سے انیکوں ہاتھ والی شانتی دیوی کو چوٹ تو پہونچی تھی پر بھارت اور مصر کے تٹستھ رہنے سے یہ دو ہاتھ سلامت تھے۔ تھوڑی دیر میں نہ جانے کس وجہ سے بھارتی ہاتھ اگر ٹوٹا نہیں تو کندھے سے اتر کر لٹک ضرور گیا۔ اور اب شانتی، جو بچ رہے تھے، ان کی نظروں میں بھی بھنگ ہو گئی اور ایسا ہوتے ہی ہم بھارت کے رہنے والوں پر چنتا کی نہ دکھائی دینے والی گولیوں کی بوچھار ہونے لگی۔ اور اب ہر بھارت واسی کے من میں دودھا ہے کہ نہ جانے کس دن سیسے اور لوہے کی گولیوں کی بوچھار بھی ان پر ہونے لگے۔ جیسا حال بھارت کا ہے ویسا ہی حال اور ملکوں کا ہے۔ اس لئے بھارت اگر سیدھے نہیں تو نا سیدھے دنیا میں اشانتی پھیلانے کا ذمہ دار بن بیٹھا۔ اس گاندھی پیدا کرنے والے بھارت کو اب دنیا کیا کہیگی، یہ کون جانے؟

ناروے، جس نے نوبل جیسے دانی کو جنم دیا اور اس نوبل کو جو دنیا میں ہمیشہ کے لئے اور انعاموں کے ساتھ ساتھ ایک شانتی کا انعام بھی رکھ گیا ہے، وہ بھی اس چڑھائی کی اجازت کے لئے 'ہاں' کہکر شانتی کے بھنگ کرنے والوں میں شامل ہو گیا۔

امریکہ نے اس وقت جو دنیا بھر میں آگ لگائی ہے، اتنا ہی اچھا ہوا ہے کہ اس وقت دنیا کے سارے ملک اچھی خاصی گیلی لکڑی بنے ہوئے ہیں اور جلدی آگ نہیں پکڑ رہے، نہیں تو وہ آگ بڑی جلدی ساری دنیا میں پھیل جاتی۔ اس اشانتی کی حالت میں اگر کچھ شانتی بنی ہوئی ہے اور دنیا کی اس بےچینی میں

अगर कहीं कुछ चैन का हिस्सा बाक़ी है, तो उसका यश अगर अभी तक किसी एक मुल्क को दिया जा सकता है, तो वह है रूस और अगर अभी तक किसी एक आदमी को दिया जा सकता है तो वह है जोजेफ़ स्टालिन. और अगर २५ जून से आज चार जुलाई तक यानी दस दिन की शांति का इनाम नोबेल प्राइज़ समिति दे सकती हो तो यह इनाम रूस के हिस्से में आयेगा. कल इस इनाम का हक़दार कौन रहेगा या कौन होगा, हम नहीं जानते.

अफ़सोस हमें यही है कि इस इनाम का हक़दार सब से पहले भारत को होना चाहिये था या इसके बाद नार्वे को. क्योंकि भारत ने शांति के देवता गांधी को जन्म दिया और नार्वे ने शांति के इनाम दाता नोबेल को जन्म दिया. पर आज इस इनाम का हक़दार है रूस जिसने वर्ग युद्ध के जन्म दाता लेनिन को जन्म दिया या उसके बाद फिर इस इनाम का हक़दार है मिस्र जिसने तलवार के ज़ोर से अपने मुल्क को आज़ाद किया.

ऐ स्टालिन, हम शांति प्रिय भारत वालों की निगाहों में तुम धन्य हो. इतनी भड़क के बाद तुम्हारा हाथ अगर कुछ दिन तक भी तलवार पर नहीं गया और इस तरह से अगर तुम कुछ दिन तक भी गांधी व्रत निभाते रहे और सच्चे जी से किसान बनकर नाज उगाते रहे और जुलाहा बन कर कपड़ा बुनते रहे तो यह क्या कम है! हम भारती तो एक दिन के व्रत को भी तारने वाला समझते हैं. और अगर अब बहुत भड़काने पर तुम बिगड़ भी बैठे तो ईश्वर के दरबार में तुम्हें मन पर क़ाबू न रखने की सज़ा भले ही मिले, दुनिया की शान्ति भंग करने की सज़ा तुम्हें नहीं मिलेगी.

४—७—५०　　　　भगवानदीन

———

اگر کہیں کچھ چین کا حصہ باقی ہے، تو اس کا یش اگر ابھی تک کسی ایک ملک کو دیا جاسکتا ہے، تو وہ ہے روس - اور ابھی تک کسی ایک آدمی کو دیا جاسکتا ہے تو وہ ہے جوزف اسٹالن، اور اگر ۲۵ جون سے آج ۴ جولائی تک یعنی دس ۱۰ دن کی شانتی کا انعام نوبیل پرائز سمیتی دے سکتی ہے تو یہ انعام روس کے حصہ میں آئیگا - کل اس انعام کا حق دار کون رہے گا یا کون ہوگا، ہم نہیں جانتے -

افسوس ہمیں یہی ہے کہ اس انعام کا حق دار سب سے پہلے بھارت کو ہونا چاہئے تھا یا اس کے بعد ناروے کو - کیوں کہ بھارت نے شانتی کے دیوتا گاندھی کو جنم دیا اور ناروے نے شانتی کے انعام داتا نوبیل کو جنم دیا - پر آج اس انعام کا حق دار ہے روس جس نے ورگ یدھ کے جنم داتا لینن کو جنم دیا یا اس کے بعد پھر اس انعام کا حق دار ہے مصر جس نے تلوار کے زور سے اپنے ملک کو آزاد کیا -

اے اسٹالن، ہم شانتی پریہ بھارت والوں کی نگاہوں میں تم دھنیہ ہو - اتنی بھڑک کے بعد تمہارا ہاتھ اگر کچھ دن تک بھی تلوار پر نہیں گیا اور اگر اس طرح سے تم کچھ دن تک بھی گاندھی ورت نبھاتے رہے اور سچے جی سے کسان بن کر اناج اگاتے رہے اور جولاہا بنکر کپڑا بنتے رہے تو یہ کیا کم ہے! ہم بھارتی تو ایک دن کے ورت کو بھی تارنے والا سمجھتے ہیں - اور اگر اب بہت بھڑکانے پر تم بگڑ بھی بیٹھتے تو ایشور کے دربار میں تمہیں من پر قابو نہ رکھنے کی سزا بھلے ہی ملے، دنیا کی شانتی بھنگ کرنے کی سزا تمہیں نہیں ملیگی -

بھگوان دین　　　　۴-۷-۵۰

कोरियां बेक़सूर

मशहूर अंगरेज़ पत्रकार सर आरथर मूर ने अपने एक लेख में लिखा है कि कोरिया ने लड़ कर अमरीका और रूस को लड़ पड़ने के लिये भड़का दिया. जबकि अभी तक रूस और अमरीका ठंडे ठंडे ही लड़ रहे थे. यानी अगर एक दूसरे की खीस उड़ा रहा था तो दूसरा उसको मुस्कुरा कर चिढ़ा रहा था. कोरिया के माथे यह इलज़ाम थोपना सरासर अमरीका के साथ तरफ़दारी करना है और अमरीका की कोरिया पर बेजा चढ़ाई का समर्थन करना है.

कोरिया एक देश है. कोरिया के दो टुकड़े किये गये. इसमें कोरिया ने किसको भड़काया. कोरिया तो इस तरह उल्टा भड़काया गया.

कोरिया एक देश है, उसकी एक कलचर है. उसकी एक बोली है. वह हर तरह से एक है. उसके दो टुकड़े करके उस पर दो मुल्क क़ब्ज़ा कर बैठे. और बैठे थे गुरू बनकर भलाई सिखाने और बुराई की तालीम देने लगे. बैठे थे बाढ़ बन कर उसकी रच्छा करने और उसी को खाने लगे. इसमें कोरिया ने किसको भड़काया. उल्टा कोरिया ही भड़काया गया.

कोरिया एक देश है. हर तरह से एक है और एक रहना चाहता है. जैसे दो टूटे हुए धातु के टुकड़े गरम किये बग़ैर एक नहीं होते वैसे ही किसी मुल्क के किसी की शरारत से किये हुए दो टुकड़े बिना लड़े भिड़े आसानी से एक नहीं होते. भारत और हैदराबाद ही टैंकों की गरमी के बग़ैर एक न हो सके. इसी तरह अगर कोरिया के किसी की शरारत से हुए दो टुकड़े आपस में लड़ भिड़कर एक होना चाहते हैं तो वह किसको

کوریا بے قصور

مشہور انگریز پترکار سر آرتھر مور نے اپنے ایک لیکھ میں لکھا ہے کہ کوریا نے لڑ کر امریکہ اور روس کو لڑ پڑنے کے لئے بھڑکا دیا، جب کہ ابھی تک روس اور امریکہ ٹھنڈے ٹھنڈے ہی لڑ رہے تھے - یعنی اگر ایک دوسرے کی کھیس اڑا رہا تھا تو دوسرا اس کو مسکرا کر چڑھا رہا تھا - کوریا کے ماتھے یہ الزام تھوپنا سراسر امریکہ کے ساتھ طرفداری کرنا ہے اور امریکہ کی کوریا پر بیجا چڑھائی کا سمرتھن کرنا ہے -

کوریا ایک دیش ہے - کوریا کے دو ٹکڑے کئے گئے اس میں کوریا نے کس کو بھڑکایا؟ کوریا تو اس طرح الٹا بھڑکایا گیا -

کوریا ایک دیش ہے - اس کی ایک کلچر ہے - اس کی ایک بولی ہے - وہ ہر طرح سے ایک ہے - اس کے دو ٹکڑے کرکے اس پر دو ملک قبضہ کر بیٹھے - اور بیٹھے تھے گرو بن کر بھلائی سکھانے اور برائی کی تعلیم دینے لگے - بیٹھے تھے باڑ بن کر اس کی رکشا کرنے اور اسی کو کھانے لگے - اس میں کوریا نے کس کو بھڑکایا؟

کوریا ایک دیش ہے - ہر طرح سے ایک ہے اور ایک رہنا چاہتا ہے - جیسے دو ٹوٹے ہوئے دھاتو کے ٹکڑے گرم کئے بغیر ایک نہیں ہوتے ویسے ہی کسی ملک کے کسی کی شرارت سے کئے ہوئے دو ٹکڑے بنا لڑے بھڑے آسانی سے ایک نہیں ہوتے - بھارت اور حیدرآباد ہی ٹینکوں کی گرمی کے بغیر ایک نہ ہو سکے -- اسی طرح اگر کوریا کے کسی کی شرارت سے ہوئے دو ٹکڑے آپس میں لڑ بھڑ کر ایک ہونا چاہتے ہیں تو وہ کس کو

भड़काते हैं ? और कोई क्यों भड़के ? कोरिया से सात समुन्दर पार रहने वाला अमरीका अगर इस लड़ाई से भड़क उठे तो हमें यही कहना पड़ेगा कि "भैंस न कूदी, कूदी गौन." चीन भड़कता तो कोई बात थी. हिन्दुस्तान भड़कता तो कोई बात थी. यह अमरीका की भड़क कैसी. अमरीका की भड़क की तह में कोरिया पर और एशिया के किसी हिस्से पर क़ब्ज़ा करने की बात छिपी हुई है. इसलिये कोरिया की आपसी लड़ाई कोरिया में एक सरकार क़ायम करने की है न कि किसी को भड़काने की . कोरिया ने अमरीका को नहीं भड़काया. अमरीका ने कोरिया को भड़काया है.

दो बरस नहीं बीते सितम्बर सन् ४८ में सारे कोरिया ने यानी उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया ने मिलकर एक बड़ी जन-पंचायत बनाई थी जिसको अंगरेज़ी में सुप्रीमपीपुल्स असेम्बली कहा जाता है. इसका चुनाव आम जनता की राय से हुआ था और पर्चियों से हुआ था. इस पंचायत में सब मिल कर पाँच सौ बहत्तर पंच थे. दो सौ बारह उत्तर कोरिया के और तीन सौ साठ दक्खिन कोरिया के . इस बड़ी पंचायत ने एक ठहराव पास किया कि अमरीका और रूस दोनों फ़ौरन और एक साथ अपनी अपनी फ़ौजें कोरिया से वापस बुला लें क्योंकि इसके बग़ैर हम कोरिया वासी मिलकर एक नहीं हो सकते. और एक हुए बग़ैर हम कोरियावासी शांतिप्रिय लोकशाही कोरियाई राज न क़ायम कर सकते हैं और न उसकी माली, राजकाजी और कलचरी तरक़्क़ी कर सकते हैं .

यह प्रस्ताव पास करके कोरिया वासियों ने क्या गुनाह किया . और किसको भड़काया ? इसके जवाब में रूसी सरकार ने तो अपनी

بھڑکاتے ہیں ؟ اور کوئی کیوں بھڑکے ؟ کوریا سے سات سمندر پار رہنے والا امریکہ اگر اس لڑائی سے بھڑک اٹھے تو ہمیں یہی کہنا پڑیگا کہ "بھینس نہ کودی ؛ کودی گون" - چین بھڑکتا تو کوئی بات تھی ' ہندستان بھڑکتا تو کوئی بات تھی ' یہ امریکہ کی بھڑک کیسی ؟ امریکہ کی بھڑک کی تہہ میں کوریا اور ایشیا کے کسی حصے پر قبضہ کرنے کی بات چھپی ہوئی ہے - اس لئے کوریا کی آپسی لڑائی کوریا میں ایک سرکار قائم کرنے کی ہے نہ کہ کسی کو بھڑکانے کی - کوریا نے امریکہ کو نہیں بھڑکایا ' امریکہ نے کوریا کو بھڑکایا ہے -

دو برس نہیں بیتے ستمبر سن ۴۸ میں سارے کوریا نے یعنی اتر کوریا اور دکھن کوریا نے مل کر ایک بڑی جن پنچایت بنائی تھی جس کو انگریزی میں سپریم پیپلس اسمبلی کہا جاتا ہے - اس کا چناؤ عام جنتا کی رائے سے ہوا تھا - اور پرچیوں سے ہوا تھا - اس پنچایت میں سب مل کر پانچ سو بہتر پنچ تھے - دو سو بارہ اتر کوریا کے اور تین سو ساٹھ دکھن کوریا کے - اس بڑی پنچایت نے ایک ٹھہراؤ پاس کیا کہ امریکہ اور روس دونوں فوراً اور ایک ساتھ اپنی اپنی فوجیں کوریا سے واپس بلا لیں کیونکہ اس کے بغیر ہم کوریا واسی مل کر ایک نہیں ہو سکتے - اور ایک ہوئے بغیر ہم کوریا واسی شانتی پریہ لوکشاہی کوریائی راج نہ قائم کر سکتے ہیں اور نہ اس کی مالی ' راجکاجی اور کلچری ترقی کر سکتے ہیں -

یہ پرستاو پاس کرکے کوریا واسیوں نے کیا گناہ کیا ؟ اور کس کو بھڑکایا ؟ اس کے جواب میں روسی سرکار نے تو اپنی

फ़ौजें वापस बुला लीं लेकिन अमरीकी सरकार टस से मस न हुई. उसने दक्खिन कोरिया की "रक्षा" के नाम पर अपनी फ़ौजें वहीं बनाये रखीं और फिर दुनिया यह जान ले कि अमरीका के 'शिकागो-डेली न्यूज़' के एडीटर ने यह लफ़्ज़ लिखे थे .—

"(कोरिया से) फ़ौजें हटाना तो पूरब में (अमरीका की) शान को धक्का पहुंचाना होगा ."

अब कहिये, कोरिया ने अमरीका को भड़काया या अमरीका ने अपनी ऐंठ में आकर और ऐटम बम के घमंड में कोरिया को भड़काया और सारे एशिया को चुनौती दी ?

अमरीका आज एशिया में अपनी शान जमाये रखना चाहता है. कल ताक़त बनाये रखना चाहेगा और परसों उसके धन-दौलत को हड़पना चाहेगा. यह है "भड़काना ."

अमरीका कोरिया को भड़का कर और सारी दुनिया को भड़का कर जब यह कहता है कि कोरिया ने लड़ कर उसे भड़काया तब हमें यही कहावत याद आजाती है. "उलटा चोर कोतवाल को डांटे ."

भगवानदीन

४ . ७ . ५०

فوجیں واپس بلا لیں لیکن امریکی سرکار ٹس سے مس نہ ہوئی - اس نے دکھن کوریا کی "رکشا" کے نام پر اپنی فوجیں وہیں بنائے رکھیں اور پھر دنیا یہ جان لے کہ امریکہ کے 'شکاگو ڈیلی نیوز' کے ایڈیٹر نے یہ لفظ لکھے تھے -

"(کوریا سے) فوجیں ہٹانا تو پورب میں (امریکہ کی) شان کو دھکا پہونچانا ہوگا"

اب کہئے ' کوریا نے امریکہ کو بھڑکایا یا امریکہ نے اپنی اینٹھ میں آکر اور ایٹم بم کے گھمنڈ میں کوریا کو بھڑکایا اور سارے ایشیا کو چنوتی دی ؟

امریکہ آج ایشیا میں اپنی شان جمائے رکھنا چاہتا ہے ' کل طاقت بنائے رکھنا چاہیگا اور پرسوں اس کے دھن دولت کو ہڑپنا چاہیگا یہ ہے - "بھڑکانا' -

امریکہ کوریا کو بھڑکا کر اور ساری دنیا کو بھڑکاکر جب یہ کہتا ہے کہ کوریا نے لڑکر اسے بھڑکایا تب یہی کہاوت یاد آجاتی ہے " الٹا چور کوتوال کو ڈانٹے "

بھگوان دین

٣ . ٧ . ٥٠

शाबाश कोरिया !

आज एक पखवाड़े से ज्यादा होने को आया. तुम जिस बहादुरी से लड़ रहे हो उसकी, हम समझते हैं, दुश्मन भी तारीफ़ करते होंगे. यों तो तुम एक दिन भी अमरीका के साथ लड़कर अमरीका को कुछ पीछे हटा देते तो तुम शाबाशी के हक़दार थे. अब सत्रह रोज एक जोश के साथ लड़कर तो तुम बहादुर दुनिया की नजरों में काफ़ी ऊँचे उठ गये हो. और हम तो क्या हजारों लाखों तुम्हें शाबाशी देते होंगे.

हमने ग्वालों के मुंह से गाय को पूंछ उठा कर और बदन फुला कर अपने बच्चे या अपने पालने वाले ग्वाले को बचाने की खातिर अपने सींगों से शेर की थाप, पंजों और डाढ़ों का मुक़ाबला करने की बात सुनी है और उसी तरह गड़रियों से बकरी के अपना बच्चा बचाने के लिये अपने छोटे छोटे गुटठ्ल सींगों की मदद से भेड़िये के सामने निडर होकर डट जाने की बात सुनी है. उसी से हम तुम्हारे जोश का अन्दाजा लगा सकते हैं. तुम अपने बच्चों की हिफ़ाजत के लिये लड़ रहे हो और अमरीका तुम गाय और बकरियों के मुक़ाबले में शेर भले ही हो पर इतना जोश कहां से ला सकता है. खाने के लिये इतना जोर कब किसने लगाया है जितना जान बचाने के लिये. तुम जान बचाने के लिये जान की बाजी लगाये हुए हो. अमरीका शान बचाने के लिये ईमान को दांव पर लगा बैठा है. तुम्हें या तुम्हारे किसी हिस्से को पच्छिम बदनाम करता तो हमें अचरज न होता. पर पच्छिम के बदनाम करने वालों के साथ पूरब को मिलते हुए देख कर हम दांत तले उंगली दबा कर रह जाते हैं. पच्छिम के हथकंडों से यों तो बहुत

شاباش کوریا !

آج ایک پکھواڑے سے زیادہ ہونے کو آیا ، تم جس بہادری سے لڑ رہے ہو اسکی ، ہم سمجھتے ہیں ، دشمن بھی تعریف کرتے ہونگے - یوں تو تم ایکدن بھی امریکہ کے ساتھ لڑ کر امریکہ کو کچھ پیچھے ہٹا دیتے تو تم شاباشی کے حقدار تھے - اب سترہ روز ایک جوش کیساتھ لڑ کر تو تم بہادر دنیا کی نظروں میں کافی اونچے اٹھ گئے ہو - اور ہم تو کیا ہزاروں لاکھوں تمہیں شاباشی دیتے ہونگے -

ہم نے گوالوں کے منھ سے گائے کو پونچھ اٹھا کر اور بدن پھلا کر اپنے بچے یا اپنے پالنے والے گوالے کو بچانے کی خاطر اپنے سینگوں سے شیر کی تھاپ ، پنجوں اور ڈاڑھوں کا مقابلہ کرنے کی بات سنی ہے اور اسی طرح گڈریوں سے بکری کے اپنا بچہ بچانے کے لئے اپنے چھوٹے چھوٹے گٹھل سینگوں کی مدد سے بھیڑئیے کے سامنے نڈر ہوکر ڈٹ جانے کی بات سنی ہے - اسی سے ہم تمہارے جوش کا اندازہ لگا سکتے ہیں - تم اپنے بچوں کی حفاظت کے لئے لڑ رہے ہو اور امریکہ تم گائے اور بکریوں کے مقابلہ میں شیر بھلے ہی ہو پر اتنا جوش کہاں سے لا سکتا ہے - کھانے کے لئے اتنا زور کب کس نے لگایا ہے جتنا جان بچانے کیلئے - تم جان بچانے کیلئے جان کی بازی لگائے ہوئے ہو - امریکہ شان بچانے کے لئے ایمان کو داؤں پر لگا بیٹھا ہے - تمہیں یا تمہارے کسی حصہ کو پچھم بدنام کرتا تو ہمیں اچرج نہ ہوتا - پر پچھم کے بدنام کرنے والوں کے ساتھ پورب کو ملتے ہوئے دیکھ کر ہم دانت تلے انگلی دبا کر رہ جاتے ہیں - پچھم کے ہتھکنڈوں سے یوں تو بہت

पहले से खूब वाक़िफ़ है पर दुनिया के बाबा गांधी ने भारत के माई बाप बने अंग्रेज़ी राज को शैतानी राज कहकर पूरब वालों को हमेशा के लिये यह समझा दिया है कि पच्छिम वाले इस तरह माई बाप का नाटक करके चीते और भेड़िये साबित होते हैं. उन्हें भेड़ की खाल में भेड़िया बनने की कला बड़ी अच्छी तरह आती है. पच्छिम की यह कहावत कौन नहीं जानता कि "कुत्ते को पहले बदनाम करो और फिर उसका गला घोंट दो" और लुक़मान की उस भेड़िये की कहानी किसने नहीं सुनी जिसने मेमने के इस जवाब में कि उसे अभी पैदा हुए छै महीने हुए ही नहीं, यह कह कर फाड़ खाया था कि तू नहीं तो तेरा बाप रहा होगा. पच्छिम हमेशा से यह कहता आया है और आज भी उसी नीति पर चल रहा है. पर सचमुच दूसरे मुल्क पर चढ़ाई करने के लिये या क़ब्ज़ा रखने के लिये या घेरा डाले रखने के लिये कोई बहाना भी अगर न हो तो दुनिया के मुल्क बहकाए भी कैसे जा सकते हैं.

ऐ कोरिया, हम अमरीका की आदत से खूब वाक़िफ़ हैं और सुरक्षा समिति के फ़ैसलों का हमें खूब तजरबा है. हम भारतवासी लेकर गये थे कुछ मामला और सुरक्षा समिति ने उसको बना दिया था कुछ और. हम गये थे लड़ाई को रोकने पर उलटा उसने हमें लड़वा दिया. और रहा हमारे मामले का फ़ैसला सो वह आज तक लटका हुआ है. ऐ कोरिया, यही हाल आज तुम्हारा हुआ है. मानने की खातिर हम यह माने लेते हैं कि दक्खिन कोरिया के प्रेसीडेन्ट डाक्टर री ने ही अपने मुल्क के खिलाफ़ अपनी शिकायत सुरक्षा समिति के सामने पहुँचाई होगी, तब भी हमारी समझ में यह नहीं आता कि यह बीच बचाव करने के लिये सुरक्षा समिति ने उस अमरीका को ही क्यों लाठी लेकर भेजा जो पहले से दक्खिन कोरिया में अपने पाँव जमाये हुए था, जो दक्खिन कोरिया से लगे मुल्क जापान

(६)

پہلے سے یوروپ واقف ہے پر دنیا کے باپا گاندھی نے بھارت کے مائی باپ بنے انگریزی راج کو شیطانی راج کہکر پورب والوں کو ہمیشہ کیلئے یہ سمجھا دیا ہے کہ پچھم والے اسطرح مائی باپ کا ناٹک کرکے چیتے اور بھیڑئیے ثابت ہوتے ہیں - انہیں بھیڑ کی کھال میں بھیڑیا بننے کی کلا بڑی اچھی طرح آتی ہے - پچھم کی یہ کہاوت کون نہیں جانتا کہ " کتے کو پہلے بدنام کرو اور پھر اس کا گلا گھونٹ دو " اور لقمان کی اس بھیڑئیے کی کہانی کس نے نہیں سنی جس نے میمنے کے اس جواب میں کہ اسے ابھی پیدا ہوئے چھ مہینے ہوئے ہی نہیں ' یہ کہکر پھاڑ کھایا تھا کہ تو نہیں تو تیرا باپ رہا ہوگا - پچھم ہمیشہ سے یہ کہتا آیا ہے اور آج بھی اسی نیتی پر چل رہا ہے - پر سچ مچ دوسرے ملک پر چڑھائی کرنے کے لئے یا قبضہ بنائے رکھنے کے لئے یا گھیرا ڈالے رکھنے کے لئے کوئی بہانہ بھی اگر نہ ہو تو دنیا کے ملک بہکائے بھی کیسے جا سکتے ہیں -

اے کوریا ' ہم امریکہ کی عادت سے خوب واقف ہیں اور سرکشا سمیتی کے فیصلوں کا ہمیں خوب تجربہ ہے - ہم بھارت واسی لیکر گئے تھے کچھ معاملہ اور سرکشا سمیتی نے اس کو بنا دیا تھا کچھ اور - ہم گئے تھے لڑائی کو روکنے پر الٹا اس نے ہمیں لڑوا دیا - اور رہا ہمارے معاملے کا فیصلہ سو وہ آج تک لٹکا ہوا ہے - اے کوریا ' یہی حال آج تمہارا ہوا ہے - ماننے کی خاطر ہم یہ مانے لیتے ہیں کہ دکھن کوریا کے پریسیڈنٹ ڈاکٹر ری نے ہی اپنے ملک کے خلاف اپنی شکایت سرکشا سمیتی کے سامنے پہونچائی ہوگی ' تب بھی ہماری سمجھ میں یہ نہیں آتا کہ یہ بیچ بچاؤ کرنے کے لئے سرکشا سمیتی نے اس امریکہ کو ہی کیوں لاٹھی لیکر بھیجا جو پہلے سے دکھن کوریا میں اپنے پاؤں جمائے ہوئے تھا ' جو دکھن کوریا سے لگے ملک جاپان

(۸۹)

में घेरा डाले पड़ा था और जो आज इसी जापान से जापान में पक्के लड़ाई अड्डे बनाने की बात चीत कर रहा है और इस तरह फ़ारमूसा को हड़प कर चीन और सारे एशिया पर छा जाना चाहता है ? अगर सुरक्षा समिति अमरीका के हाथ में न खेल रही होती तो उसने कोरिया की आपसी लड़ाई में बीच बचाव करने के लिये गांधी को जन्म देने वाले भारत को चुना होता या कोरिया के पड़ोसी चीन को चुना होता या इसी तरह का कोई और तरीक़ा निकाला होता.

ऐ कोरिया, हम इस से वाक़िफ़ हैं कि उत्तर कोरिया का नेता 'सेन' और दक्खिन कोरिया का नेता 'री' एक दिन दोनों जापानी राज को उखाड़ फेंकने को कंधों से कंधा मिला कर लड़ चुके हैं और मां जाए भाइयों की तरह रहे हैं. डाक्टर री ने सेन से कुछ कम तकलीफ़ें नहीं सहीं. हां, डाक्टर री अपने मुल्क के लिये गोरीला युद्ध नहीं लड़ा था और री के पकड़े जाने के बाद सेन गोरीला बन कर जापानियों का मुक़ाबला करता रहा. हम इससे भी वाक़िफ़ हैं कि सेन रूस भाग गया था और रूस के हाथों में रहा. और वहीं उसने रूसी युद्ध कला की जानकारी हासिल की और री हवाई टापू में रहा और अमरीकियों के हाथों में खेलता रहा. आज वही बुड्ढा री अमरीकियों के साथ जुआ खेलने में कोरिया को दांव पर लगाकर हार गया है जिस तरह युधिष्ठिर द्रोपदी को हार गये थे. यह किसको नहीं मालूम कि द्रोपदी का जब चीर खींचा जा रहा था तो युधिष्ठिर ऐसे ही बैठे थे मानो कुछ हो ही नहीं रहा ? क्या आज अमरीका कोरिया का चीर नहीं खींच रहा है ? और फिर भी सिंगमन री युधिष्ठिर बने बैठे हैं क्यों कि अमरीकियों से वचन हार बैठे हैं. यह तो है, पर आज इस दुनिया में कोरिया का चीर खिंच रहा है और बड़े बड़े समझदार लोग भी न कुछ बोलते हैं

میں گھیرا ڈالے پڑا تھا اور جو آج اسی جاپان سے جاپان میں پکے لڑائی اڈے بنانے کی بات چیت کر رہا ہے اور اس طرح فارموسا کو ہڑپ کر چین اور سارے ایشیا پر چھا جانا چاہتا ہے ؟ اگر سُرکشا سمیتی امریکہ کے ہاتھ میں نہ کھیل رہی ہوتی تو اس نے کوریا کی آپسی لڑائی میں بیچ بچاؤ کرنے کے لئے گاندھی کو جنم دینے والے بھارت کو چنا ہوتا یا کوریا کے پڑوسی چین کو چنا ہوتا یا اسی طرح کا کوئی اور طریقہ نکالا ہوتا -

اے کوریا، ہم اس سے واقف ہیں کہ اتر کوریا کا نیتا 'سین' اور دکھن کوریا کا نیتا 'ری' ایک دن دونوں جاپانی راج کو اکھاڑ پھینکنے کو کندھوں سے کندھا ملا کر لڑ چکے ہیں اور ماں جائے بھائیوں کی طرح رہے ہیں - ڈاکٹر ری نے سین سے کچھ کم تکلیفیں نہیں سہیں - ہاں ڈاکٹر ری اپنے ملک کے لئے گوریلا یدھ نہیں لڑا تھا اور ری کے پکڑے جانے کے بعد سین گوریلا بن کر جاپانیوں کا مقابلہ کرتا رہا - ہم اس سے بھی واقف ہیں کہ سین روس بھاگ گیا تھا اور روس کے ہاتھوں میں رہا اور وہیں اس نے روسی یدھ کلا کی جانکاری حاصل کی اور ری ہوائی ٹاپو میں رہا اور امریکیوں کے ہاتھوں میں کھیلتا رہا - آج وہی بڈھا ری امریکیوں کے ساتھ جوا کھیلنے میں کوریا کو داؤں پر لگاکر ہار گیا ہے جس طرح یدھشٹر دروپدی کو ہار گئے تھے - یہ کس کو نہیں معلوم کہ دروپدی کا جب چیر کھینچا جا رہا تھا یدھشٹر ایسے ہی بیٹھے تھے مانو کچھ ہو ہی نہیں رہا ؟ کیا آج امریکہ کوریا کا چیر نہیں کھینچ رہا ہے ؟ اور پھر بھی سنگمن ری یدھشٹر بنے بیٹھے ہیں کیونکہ امریکیوں سے بچن ہار بیٹھے ہیں - یہ تو ہے، پر آج اس دنیا میں کوریا کا چیر کھینچ رہا ہے اور بڑے بڑے سمجھدار لوگ بھی نہ کچھ بولتے ہیں

और न अमरीका को रोकने की कोशिश करते हैं. द्रोपदी के चीर खींचने के वक्त चुप्पी के नतीजे में हुआ था महाभारत और उस महाभारत का जिम्मेदार हम उन्हीं समझदारों को मानते हैं जो उस वक्त चुप रहे थे. अगर यह कोरिया की लड़ाई दुनिया की बड़ी लड़ाई का रूप ले ले तो जिम्मेवार होंगे वह मुल्क जो चुप हैं और अमरीका के खिलाफ़ आवाज़ नहीं उठाते.

ऐ कोरिया, तुम्हें हम क्या कहें. तुम अपना जोर लगाकर अपने चीर को खिंचने से रोक रही हो. और इसमें शक नहीं कि अनेकों मुल्कों का उकसाया अमरीका पूरा जोर लगाकर भी तुम्हारा चीर खींचने के बजाय तुम्हें ही जापान की तरफ़ घसीट रहा है और जितनी तुम आगे बढ़ती हो उतना ही तुम्हारे पीछे का सारा कोरिया तुम्हारी भक्ति में डूब कर तुम्हारा जी जान से वफ़ादार होता जाता है. यह हमें मालूम है कि तुम दुनिया के किसी मुल्क के सामने गिड़गिड़ाने को तैयार नहीं हो और तुम्हारी बहादुरी इस तरह की कमजोरी बरदाश्त भी कैसे कर सकती है? बस, तुम तुम हो और दूसरा है तुम्हारा ईश्वर. बस उसी अल्लाह की मदद के सहारे तुम हिम्मत के साथ घिसटती हो और वह घिसटन तुम्हारी बहादुरी की वजह से जीत में बदलती जाती है. ईश्वर ने तुम्हारा मुल्क ही ऐसा बनाया है कि वहां अमरीका के बड़े बड़े हवाई जहाज उतर ही नहीं सकते. और अगर उतरें भी तो तुम्हारे मुल्क की जोरदार हवाएं उनके इस तरह पांव जमने नहीं देतीं जिस तरह जोर की हवा मच्छर के पांव जमने नहीं देती. सचाई तुम्हारी तरफ़ है, धर्म तुम्हारी तरफ़ है और इस लिये ईश्वर भी तुम्हारी तरफ़ है. हम भारत वासी ईश्वर में अक़ीदा रखते हैं और उसी अक़ीदे के बल पर हम यह कह सकते हैं कि वह दुनियादार का रूप लेकर तुम्हारी मदद को आयगा और ज़रूर

اور نہ امریکہ کو روکنے کی کوشش کرتے ہیں ۔ دروپدی کے چیر کھینچنے کے وقت چپی کے نتیجہ میں ہوا تھا مہابھارت اور اس مہابھارت کا ذمہ دار ہم اُن ہی سمجھداروں کو مانتے ہیں جو اس وقت چپ رہے تھے ۔ اگر یہ کوریا کی لڑائی دنیا کی بڑی لڑائی کا روپ لے لے تو ذمہ دار ہونگے وہ ملک جو چپ ہیں اور امریکہ کے خلاف آواز نہیں اٹھاتے ۔

اے کوریا ، تمہیں ہم کیا کہیں ۔ تم اپنا زور لگا کر اپنے چیر کو کھینچنے سے روک رہی ہو اور اس میں شک نہیں کہ انیکوں ملکوں کا اُکسایا امریکہ پورا زور لگا کر بھی تمہارا چیر کھینچنے کے بجائے تمہیں ہی جاپان کی طرف گھسیٹ رہا ہے اور جتنی تم آگے بڑھتی ہو اتنا ہی تمہارے پیچھے کا سارا کوریا تمہاری بھکتی میں ڈوب کر تمہارا جی جان سے وفادار ہوتا جاتا ہے ۔ یہ ہمیں معلوم ہے کہ تم دنیا کے کسی ملک کے سامنے گڑگڑانے کو تیار نہیں ہو اور تمہاری بہادری اس طرح کی کمزوری برداشت بھی کیسے کر سکتی ہے ؟ بس ، تم تم ہو اور دوسرا ہے تمہارا ایشور ۔ بس اسی اللہ کی مدد کے سہارے تم ہمت کے ساتھ گھسٹتی ہو اور وہ گھسٹن تمہاری بہادری کی وجہ سے جیت میں بدلتی جاتی ہے ۔ ایشور نے تمہارا ملک ہی ایسا بنایا ہے کہ وہاں امریکہ کے بڑے بڑے ہوائی جہاز اتر ہی نہیں سکتے ۔ اور اگر اتریں بھی تو تمہارے ملک کی زور دار ہوائیں اُن کے اس طرح پاؤں جمنے نہیں دیتیں جس طرح زور کی ہوا مچھر کے پاؤں جمنے نہیں دیتی ۔ سچائی تمہاری طرف ہے ، دھرم تمہاری طرف ہے اور اس لئے ایشور بھی تمہاری طرف ہے ۔ ہم بھارت واسی ایشور میں عقیدہ رکھتے ہیں اور اسی عقیدے کے بل پر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ وہ دنیا دار کا روپ لیکر تمہاری مدد کو آئیگا اور ضرور

आयगा. दुनिया के इस छोर से उस छोर तक इस कहावत से सब वाक़िफ़ हैं कि "ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं."

दो हाथों की मुठभेड़ होकर जब ताली की आवाज़ निकलती है तो लोग चौंकते ही हैं और उस वक़्त कहने वालों का कौन मुँह रोक सकता है. जब कोई दाएँ हाथ की ज़्यादती कह बैठे या बाएं हाथ की ज़्यादती बता बैठे. गाली देने के बाद जब गाली देने वाले के सिर पर चपत पड़ती है तब वह चपत मारने वाले की ज़्यादती बताता ही है. और दूर से देखने वाला तो यही कहेगा कि चपत मारने वाले ने ही ज़्यादती की क्योंकि पहले उसी ने चपत जमाया और चपत खाने वाला ही मुद्दई बन कर दौड़ेगा. फिर वह चाहे चपत के बदले में सामने वाले के कितने ही चपत जमाकर लाठी उठाने के लिये मजबूर कर चुका हो. हम भारतवासी १८५७ का तजरबा अपने सिरों में रखते हैं. हमारी आज़ादी की लड़ाई को ग़दर का नाम दिया गया था. और हमारे उस बहादुरशाह बादशाह को, जिसको ईस्ट इंडिया कम्पनी का गवरनर जनरल अरज़ी देते वक़्त अपने को उसका 'फ़िदवी-ए-ख़ास' लिखा करता था, बाग़ी बताया गया. जो पच्छिम वाले दूसरे के मुल्क में रह कर उसी मुल्क के आदमी और बादशाह को बाग़ी कह सकते हैं वह तुम में से किसी को ज़्यादती करने वाला (एग्रेसर) कह कर तुम्हारे मुल्क को लूटने का बहाना निकाल सकते हैं.

यह लिखते लिखते हमें ख़बर मिली है कि दक्खिन, कोरिया की फ़ौजों के कमान्डर-इन-चीफ़ सौन हो सुन ने सियोल से रेडियो पर दक्खिन कोरिया के सब अफ़सरों और सिपाहियों से इन शब्दों में अपील की है —

"अगर आप लोग अपनी जन्म भूमि और उसके रहने वालों को प्यार करते हैं और अगर आप में राष्ट्रीय चेतना है तो आप को चाहिये कि सिंगमन री के गिरोह और अमरीकी हमलावरों के ख़िलाफ़

آئیگا - دنیا کے اس چھور سے اس چھور تک اس کہاوت سے سب واقف ہیں کہ "ایشور ان کی مدد کرتا ہے جو اپنی مدد آپ کرتے ہیں" -

دو ہاتھوں کی مٹھ بھیڑ ہوکر جب تالی کی آواز نکلتی ہے تو لوگ چونکتے ہی ہیں اور اس وقت کہنے والوں کا کون منھ روک سکتا ہے جب کوئی دائیں ہاتھ کی زیادتی کہہ بیٹھے یا بائیں ہاتھ کی زیادتی بتا بیٹھے - گالی دینے کے بعد جب گالی دینے والے کے سر پر چپت پڑتی ہے تب وہ چپت مارنے والے کی زیادتی بتاتا ہی ہے - اور دور سے دیکھنے والا تو یہی کہیگا کہ چپت مارنے والے نے ہی زیادتی کی کیونکہ پہلے اسی نے چپت جمایا اور چپت کھانیوالا ہی مدعی بن کر دوڑیگا - پھر وہ چاہے چپت کے بدلے میں سامنے والے کے کتنے ہی چپت جما کر لاٹھی اٹھانے کے لئے مجبور کر چکا ہو - ہم بھارت واسی سن ۱۸۵۷ کا تجربہ اپنے سروں میں رکھتے ہیں - ہماری آزادی کی لڑائی کو غدر کا نام دیا گیا تھا - اور ہمارے اُس بہادر شاہ بادشاہ کو' جس کو ایسٹ انڈیا کمپنی کا گورنر جنرل عرضی دیتے وقت اپنے کو اس کا ' فدوی خاص ' لکھا کرتا تھا ' باغی بتایا گیا - جو پچھم والے دوسرے کے ملک میں رہ کر اسی ملک کے آدمی اور بادشاہ کو باغی کہہ سکتے ہیں وہ تم میں سے کسی کو زیادتی کرنے والا (اگریسر) کہکر تمہارے ملک کو لوٹنے کا بہانہ نکال سکتے ہیں -

یہ لکھتے لکھتے ہمیں جو خبر ملی ہے کہ دکھن کوریا کی فوجوں کے کمانڈر ان چیف، سون ہو سون نے سیول سے ریڈیو پر دکھن کوریا کے سب افسروں اور سپاہیوں سے ان شبدوں میں اپیل کی ہے -

" اگر آپ لوگ اپنی جنم بھومی اور اس کے رہنے والوں کو پیار کرتے ہیں اور اگر آپ میں راشٹریہ چیتنا ہے تو آپ کو چاہئے کہ سنگھمن ری کے گروہ اور امریکی حملہ آوروں کے خلاف

खुल कर खड़े हो जावें और जिस तरह मैंने किया है उसी तरह आप भी जनता की फ़ौज और गोरीला फ़ौज में शामिल हो जायें. मैंने जनता की एक स्वयं सेवक सेना का संगठन किया है जिसमें हजारों ऐसे योद्धा हैं जो सिंगमन री की कठपुतली फ़ौज से टूट कर आ गये हैं और जनता की फ़ौज और गोरीला फ़ौज में शामिल हो गये हैं जनता की फ़ौज के साथ कंधे से कंधा मिला कर यह सब मेरी सरदारी में आगे बढ़ रहे हैं."

सुबह का भूला शाम को घर आ जाये तो भूला नहीं कहलाता.

शाबाश अपनी जन्म भूमि के लिये जान पर खेल जाने वाले कोरिया!

भगवान दीन

यह है अमरिका

हालमें कुछ समझदार अमरीकी भारत आये. यहांसे लौट कर उन्हों ने अपने मुल्क वालों को यह बताया कि भारत वासियों का ख़याल अमरीकियों के बारे में ख़ासा बुरा है. उन्हों ने उनको यह भी बताया कि भारत वासी, उन बरतानिया वालों को, जो बरसों भारत को ग़ुलाम बनाये रहे, इतनी बुरी नज़र से नहीं देखते जितनी बुरी नज़र से अमरीका वालों को. हम उन के इस कहने को बहुत दरजे तक ठीक समझते हैं और अपने तजरबे से इतना और जोड़ देना चाहते हैं कि दिनों दिन यह बात बढ़ती जा रही है. और कोरिया की लड़ाई

کھل کر کھڑے ہو جاویں اور جس طرح میں نے کیا ہے اسی طرح آپ بھی جنتا کی فوج اور گوریلا فوج میں شامل ہو جائیں. میں نے جنتا کی ایک سویم سیوک سینا کا سنگٹھن کیا ہے جس میں ہزاروں ایسے یودھا ہیں جو سنگمن ری کی کٹھپتلی فوج سے ٹوٹ کر آ گئے ہیں اور جنتا کی فوج اور گوریلا فوج میں شامل ہو گئے ہیں. جنتا کی فوج کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر یہ سب میری سرداری میں آگے بڑھ رہے ہیں."

صبح کا بھولا شام کو گھر آجائے تو بھولا نہیں کہلاتا.

شاباش اپنی جنم بھومی کے لئے جان پر کھیل جانے والے کوریا!

بھگوان دین

یہ ہے امریکہ

حال میں کچھ امریکی بھارت آئے. یہاں سے لوٹ کر انہوں نے اپنے ملک والوں کو یہ بتایا کہ بھارت واسیوں کا خیال امریکیوں کے بارے میں خاصا برا ہے. انہوں نے ان کو یہ بھی بتایا کہ بھارت واسی، ان برطانیہ والوں کو، جو برسوں بھارت کو غلام بنائے رہے، اتنی بری نظر سے نہیں دیکھتے جتنی بری نظر سے امریکہ والوں کو. ہم ان کے اس کہنے کو بہت درجے تک ٹھیک سمجھتے ہیں اور تجربے سے اتنا اور جوڑ دینا چاہتے ہیں کہ دنوں دن یہ بات بڑھتی جا رہی ہے. اور کوریا کی لڑائی

केवाद से तो उस में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्क़ी हो रही है. थोड़े से में अगर इस की वजह बताई जा सकती है तो वह यह है कि बरतानिया हमें अभी अभी आज़ाद छोड़कर गया है और इस ख़ुशी में हम बरतानिया की सब बदकारियों को भूल गये हैं. पर अमरीका पर हमें यह शक है कि वह हमें फिर ग़ुलामी में फँसाना चाहता है. हम दूध के जले हैं छाछ को फूँक फूँक कर पीते हैं. हमें बरतानिया वालों की भारत में व्योपारी बन कर आने की कहानी याद है. हमें बरतानिया से आये मिशनरियों के धर्म फैलाने की बातें ख़ूब मालूम हैं. हम बरतानिया वालों की उस कृपा से ख़ूब वाक़िफ़ हैं जो उन्होंने ने यहाँ अंगरेज़ी कालेज और यूनीवर्सिटियाँ खोलकर की थीं. क्या रेल, क्या तार, क्या अस्पताल हर नेक काम के ज़रिये ग़ुलामी की ज़ंजीरें गढ़ने की कला पच्छिम वालों को ख़ूब आती है और अमरीका तो आज इस कला में बरतानिया का हमको गुरु बना दिखाई देता है. अभी इसी महीने की बात है ट्रूमेन साहब ने अपनी चौमुखी योजना का ज़िक्र करते हुए भारत से टेहरी की मिसाल लेकर दुनिया को यह दिखाने की कोशिश की है कि भारत कितना गिरा हुआ देश है. उन्होंने यह बताया है कि टेहरी में बरसों से कितना मलेरिया फैला हुआ है और कितने हज़ार आदमी हर साल मर जाते हैं. और टेहरी में और उसके आसपास सौ से ऊपर गाँव की ज़मीन जो बहुत अच्छा नाज पैदा कर सकती है इसी मलेरिया के कारन बिना जोती बोई पड़ी है. इसके बाद उन्होंने यह बताया है कि किस तरह उनकी चौमुखी योजना से काम लेने से टेहरी वालों का कितना भला हुआ है. और हो सकता है इसी सिलसिले में सारी एशिया को

کے بعد سے تو اس میں دن دونی رات چوگنی ترقی ہو رہی ہے. تھوڑے سے میں اگر اس کی وجہ بتائی جا سکتی ہے تو وہ یہ ہے کہ برطانیہ ہمیں ابھی ابھی آزاد چھوڑ کر گیا ہے اور اس خوشی میں ہم برطانیہ کی سب بدکاریوں کو بھول گئے ہیں. پر امریکہ پر ہمیں یہ شک ہے کہ وہ ہمیں پھر غلامی میں پھنسانا چاہتا ہے. ہم دودھ کے جلے ہیں. چھاچھ کو پھونک پھونک کر پیتے ہیں. ہمیں برطانیہ والوں کی بھارت میں بیوپاری بن کر آنے کی کہانی یاد ہے. ہمیں برطانیہ سے آئے مشنریوں کے دھرم پھیلانے کی باتیں خوب معلوم ہیں. ہم برطانیہ والوں کی اس کرپا سے خوب واقف ہیں جو انہوں نے یہاں انگریزی کالج اور یونیورسٹیاں کھول کر کی تھیں. کیا ریل، کیا تار، کیا اسپتال ہر نیک کام کے ذریعے غلامی کی زنجیریں گڑھنے کی کلا پچھم والوں کو خوب آتی ہے اور امریکہ تو آج اس کلا میں برطانیہ کا ہم کو گرو بنا دکھائی دیتا ہے. ابھی اسی مہینے کی بات ہے ٹرومین صاحب نے اپنی چومکھی یوجنا کا ذکر کرتے ہوئے بھارت سے ٹہری کی مثال لے کر دنیا کو یہ دکھانے کی کوشش کی ہے کہ بھارت کتنا گرا ہوا دیش ہے. انہوں نے یہ بتایا ہے کہ ٹہری میں برسوں سے کتنا ملیریا پھیلا ہوا ہے اور کتنے ہزار آدمی ہر سال مر جاتے ہیں. اور ٹہری میں اور اس کے آس پاس سو سے اوپر گاؤں کی زمین جو بہت اچھا ناج پیدا کر سکتی ہے اسی ملیریا کے کارن بنا جوتی بوئی پڑی ہے. اس کے بعد انہوں نے یہ بتایا ہے کہ کسطرح ان کی چومکھی یوجنا میں سے ایک یوجنا سے کام لینے سے ٹہری والوں کا کتنا بھلا ہوا ہے اور ہو سکتا ہے. اسی سلسلے میں ساری ایشیا کو

गिरा हुआ महाद्वीप (अनडेवलप एरियाज आफ दी वर्ल्ड) बताया गया है. और अपनी चौमुखी योजना को एशिया भर में फैलाने की बात कही गई है. इस सब से तो हमें उन बरतानी चालबाजियों की याद आजाती है जो शुरू में हमारे भले की बताई गई थीं और बाद में हमारी ग़ुलामी का कारन बनीं.

हमें यह कहते हुए झिझक नहीं होती कि जब तक अमरीका जापान पर घेरा डाले हुए है तब तक वह हमारी नजरों में गिरा हुआ रहेगा. चीन की सच्ची हकूमत को हकूमत मानने से इन्कार करके वह यह उम्मीद रक्खे कि भारतवासी उसे अच्छी नजर से देखेंगे तो वह गूलर के पेड़ से फूल पाने की उम्मीद करता है. अमरीका फ़ारमूसा में अड्डे बना कर भारत से इज्जत चाहता है तो वह बबूल बो कर आम पाना चाहता है. जो अमरीका बरतानिया में हवाई अड्डे बनाने की सोच रहा है वह भारत से किस दिन क्या माँग बैठे इसका क्या पता. और ऐटम बम के नाते वह कब क्या धमकी दे बैठे इसको कौन जानता है. भारत के ग़ुलाम रहते अमरीका ने जो भारत की आजादी हासिल करने में थोड़ी बहुत एख़लाक़ी मदद की थी क्या वह उसके दाम चुकाना चाहता है. फ़िलस्तीन में यहूदियों को बढ़ावा देने वाला अमरीका खुद शाईलाक बनता जा रहा है. हम भारतवासियों को ऐसा साफ़ दिखाई दे रहा है.

हम इस नोट को ज्यादा बढ़ाना नहीं चाहते. हम यहाँ उस फ़िलिपाइन वासी के कुछ शब्द देकर खतम करना चाहते हैं जो मनीला टाउन हाल आर्गनाइजेशन का प्रेसीडेन्ट है. वह इसी जुलाई की ९ तारीख को मदरास के मदुरा जिले में एक खुली सभा में

گرا ھوا مہادیپ (ان ڈیولپ ایریاز آف دی ورلڈ) بتایا گیا ھے . اور اپنی چو مکھی یوجنا کو ایشیا بھر میں پھیلانے کی بات کہی گئی ھے . اس سب سے تو ھمیں اُن برطانی چال بازیوں کی یاد آجاتی ھے جو شروع میں ھمارے بھلے کی بتائی گئی تھیں اور بعد میں ھماری غلامی کا کارن بنیں .

ھمیں یہ کہتے ھوئے جھجھک نہیں ھوتی کہ جبتک امریکہ جاپان پر گھیرا ڈالے ھوئے ھے تب تک وہ ھماری نظروں میں گرا ھوا رھیگا . چین کی سچی حکومت کو حکومت ماننے سے انکار کرکے وہ یہ اُمید رکھے کہ بھارت واسی اُسے اچھی نظر سے دیکھیں گے تو وہ گولر کے پیڑ سے پھول پانے کی اُمید کرتا ھے . امریکہ فارموسا میں اڈے بناکر بھارت سے عزت چاھتا ھے تو وہ ببول بو کر آم پانا چاھتا ھے . جو امریکہ برطانیہ میں ھوائی اڈے بنانے کی سوچ رھا ھے وہ بھارت سے کس دن کیا مانگ بیٹھے اس کا کیا پتہ . اور ایٹم بم کے ناتے وہ کب کیا دھمکی دے بیٹھے اسکو کون جانتا ھے . بھارت کے غلام رھتے امریکہ نے جو بھارت کی آزادی حاصل کرنے میں تھوڑی بہت اخلاقی مدد کی تھی کیا وہ اُس کے دام چکانا چاھتا ھے . فلسطین میں یہودیوں کو بڑھاوا دینے والا امریکہ خود شائلاک بنتا جا رھا ھے . ھم بھارت واسیوں کو ایسا صاف دکھائی دے رھا ھے .

ھم اس نوٹ کو زیادہ بڑھانا نہیں چاھتے . ھم یہاں اُس فلپائن واسی کے کچھ شبد دیکر اسے ختم کر دینا چاھتے ھیں جو منیلا ٹاؤن ھال آرگنائزیشن کا پریسیڈنٹ ھے . وہ اسی جولائی کی ۹ تاریخ کو مدراس کے مدورا ضلع میں ایک کھلی سبھا میں

अमरीकियों के बारे में इस तरह बोला था—'फ़िलिपाइन राज काज़ी निगाह से भले ही स्वाधीन हो पर वह माली और फ़ौजी ख़याल से अमरीका की एक बस्ती है. फ़िलिपाइन की स्वाधीनता 'झूटी' स्वाधीनता है. वहाँ की नई 'जमहूरियत' की नाक तक पानी आ गया है और वह डूबने ही को है."

यह अमरीका का हाल है कि वह बरसों के ग़ुलाम उस फ़िलिपाइन को आज तक आज़ादी नहीं दे रहा है जो न अमरीका के नज़दीक है और न किसी मानो में अमरीका का हो सकता है. फ़िलिपाइन टापू चीन और जापान के बहुत पास हैं. अगर दुनिया में कोई अन्तर क़ौमी दीवानी अदालत होती तो अमरीका के ख़िलाफ़ ज़रूर हक़ शुफ़ा का दावा चलता.

यह है अमरीका—और भारत की नज़रों में ऊंचा होना चाहता है!

भगवानदीन

दुनिया की बड़ी लड़ाई

कोरिया में घरेलू लड़ाई छिड़ी. उस लड़ाई से न जाने क्यों अमरीका को यह डर लगा कि कोरिया की लड़ाई की आग सारी दुनिया में फैल जायगी और वह इतना डर गया कि उसे बुझाने की ख़ातिर वह यू० एन० ओ० के सब क़ायदों को भूल कर जापान पर ज़बरदस्ती से बैठे हुए अपने जनरल मैकार्थर को हुकुम दे बैठा कि वह एक दम कोरिया की आग बुझाने को दौड़ने के लिये तैयार हो जाय.

امریکیوں کے بارے میں اسطرح بولا تھا— فلپائن راجکاجی نگاہ سے بھلے ہی سوادھین ہو پر وہ مالی اور فوجی خیال سے امریکہ کی ایک بستی ہے. فلپائن کی سوادھینتا 'جھوٹی' سوادھینتا ہے. وہاں کی نئی 'جمہوریت' کی ناک تک پانی آ گیا ہے اور وہ ڈوبنے ہی کو ہے."

یہ امریکہ کا حال ہے کہ وہ برسوں کے غلام اس فلپائن کو آج تک آزادی نہیں دے رہا ہے جو نہ امریکہ کے نزدیک ہے اور نہ کسی معنی میں امریکہ کا ہو سکتا ہے. فلپائن ٹاپو چین اور جاپان کے بہت پاس ہیں. اگر دنیا میں کوئی انٹر قومی دیوانی عدالت ہوتی تو امریکہ کے خلاف ضرور حق شفا کا دعوی چلتا.

یہ ہے امریکہ — اور بھارت کی نظروں میں اونچا ہونا چاہتا ہے!

بھگوان دین

دنیا کی بڑی لڑائی

کوریا میں گھریلو لڑائی چھڑی. اس لڑائی سے نہ جانے کیوں امریکہ کو یہ ڈر لگا کہ کوریا کی لڑائی کی آگ ساری دنیا میں پھیل جائیگی اور وہ اتنا ڈر گیا کہ اسے بجھانے کی خاطر وہ یو. این. او. کے سب قاعدوں کو بھول کر جاپان پر زبردستی سے بیٹھے ہوئے اپنے جنرل میکارتھر کو حکم دے بیٹھا کہ وہ ایکدم کوریا کی آگ بجھانے کو دوڑنے کیلئے تیار ہوجائے.

अमरीका को यह पता भी न चला कि वह आग बुझाने की जगह ऐसा काम कर रहा है जिस से चिंगारियां उड़कर हर मुल्क में गिरेंगी और कहीं भी अगर बारूद या सूखी घास हुई तो वहीं भड़क उठेंगी और इस तरह दुनिया में जगह जगह आग लग जायगी, और फिर कोरिया की जगह अमरीका खुद ही दुनियाकी बड़ी लड़ाईका सबब बन बैठेगा.

अमरीका ने कोरिया की घरेलू लड़ाई को दुनिया की बड़ी लड़ाई बना देने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी. उसने दुनिया भर की पंचायत, यू० एन० ओ० के सामने अपनी जल्दबाजी और बेजा कारवाई को ठीक ठहरवा लिया और फिर रूस की ग़ैरहाज़िरी और एक नाजायज मेम्बर की हाजिरी में एक ऐसा अहम ठहराव पास करा लिया जिस के लिये उसके साथी रूस की हाजिरी जरूरी थी. यानी यह कि उत्तर कोरिया का दक्खिन कोरिया पर हमला घरेलू लड़ाई नहीं है बल्कि एक मुल्क की दूसरे मुल्क पर बेमतलब चढ़ाई या जबरदस्ती है या अंगरेजी बोली में 'एगरेसन' है. यह सोचने को न अमरीका ने और न यू० एन० ओ० की सुरक्षा समिति के कौंसिल के किसी हाजिर मुल्क ने परवाह की कि वह हमला जवाबी हमला भी हो सकता है. एक मुल्क कोरिया को हर तरह दो मुल्क साबित करके अमरीका ने कोरिया पर अपनी चढ़ाई को यू० एन० ओ० की की हुई 'पुलिस कारवाई' का नाम दिलवा दिया और अब यह चढ़ाई सिर्फ अमरीका की तरफ से नहीं दुनिया के उन सब मुल्कों की तरफ से बताई जायगी जो यू० एन० ओ० में शामिल हैं और उन के हुकुम से की हुई कही जायगी जो यू० एन० ओ० की सुरक्षा समिति में शामिल हैं. और फिर मारके की बात यह है कि इस कारवाई के ठीक होने के लिये जिन सब मुल्कों की हाजिरी 'हां' करने के लिये जरूरी थी न वह हाजिर थे और न किसी दूसरे तरीक़े से उनकी 'हां' हासिल की गई.

वह जनरल मकार्थर जिसकी फ़ौजें पन्द्रह दिन से दक्खिन कोरिया में मुंह की खा रही हैं इस दुनिया भर की पुलिस की, जिसके

(९)

امریکہ کو یہ پتہ بھی نہ چلا کہ وہ آگ بجھانے کی جگہ ایسا کام کر رہا ہے جس سے چنگاریاں اُڑ کر ہر ملک میں گریں گی اور کہیں بھی اگر بارود یا سوکھی گھاس ہوئی تو وہیں بھڑک اُٹھینگی اور اس طرح دنیا میں جگہ جگہ آگ لگ جائیگی' اور پھر کوریا کی جگہ امریکہ خود ہی دنیا کی بڑی لڑائی کا سبب بن بیٹھیگا.

امریکہ نے کوریا کی گھریلو لڑائی کو دنیا کی بڑی لڑائی بنا دینے میں کوئی کسر اٹھا نہیں رکھی. اس نے دنیا بھر کی پنچایت یو. این. او. کے سامنے اپنی جلد بازی اور بیجا کاروائی کو ٹھیک ٹھہروالیا اور پھر روس کی غیر حاضری میں ایک ایسا اہم ٹھہراو پاس کرالیا جس کے لئے اس کے ساتھی روس کی حاضری ضروری تھی. یعنی یہ کہ اُتر کوریا کا دکھن کوریا پر حملہ گھریلو لڑائی نہیں بلکہ ایک ملک کی دوسرے ملک پر بے مطلب چڑھائی یا زبردستی ہے. یا انگریزی بولی میں 'اگریسن' ہے. یہ سوچنے کی نہ امریکہ نے اور نہ یو. این. او. کی سورکشا سمیتی کے کونسل کے کسی حاضر ملک نے پرواہ کی کہ وہ حملہ جوابی حملہ بھی ہوسکتا ہے. ایک ملک کوریا کو ہر طرح دو ملک ثابت کرکے امریکہ نے کوریا پر اپنی چڑھائی کو یو. این. او. کی کی ہوئی 'پولس کاروائی' کا نام دلوا دیا. اور اب یہ چڑھائی صرف امریکہ کی طرف سے نہیں دنیا کے ان سب ملکوں کی طرف سے بتائی جائیگی جو یو. این. او. میں شامل ہیں. اور ان کے حکم سے کی ہوئی کہی جائیگی جو یو. این. او. کی سورکشا سمیتی میں شامل ہیں. اور پھر معرکے کی بات یہ ہے کہ اس کاروائی کے ٹھیک ہونے کے لئے جن سب ملکوں کی حاضری 'ہاں' کرنے کے لئے ضروری تھی نہ وہ حاضر تھے اور نہ کسی دوسرے طریقہ سے ان کی 'ہاں' حاصل کی گئی.

وہ جنرل میکارتھر جس کی فوجیں پندرہ دن سے دکھن کوریا میں منہ کی کھا رہی ہیں' اس دنیا بھر کی پولس کے جس کے

(۹۷)

बहुत से मुल्क खिलाफ़ हैं और जिसमें बहुत कम मुल्कों के सिपाही शामिल हैं, सबसे बड़ा अफ़सर बना दिया गया और उसको यह इजाज़त दे दी गई है कि वह उस झंडे से काम ले जो दुनिया भर की पंचायत यू० एन० ओ० का अमन का झंडा है.

अमरीका हर तरह से इस कोरिया की घरेलू लड़ाई को दुनिया की बड़ी लड़ाई बना देना चाहता है. पर अचरज यह है कि न अमरीका के सब रहने वाले और न दूसरे मुल्क इस घरेलू लड़ाई को दुनिया की बड़ी लड़ाई कहने को तैयार हैं.

उत्तर कोरिया के दक्खिन कोरिया पर जिस हमले को सबसे पहले अमरीका ने 'अग्रेसन' कह कर पुकारा और जिसको सुरक्षा समिति के मेम्बरों ने भी 'एग्रेसन' कह डाला उसको न दक्खिन कोरिया की जनता 'एग्रेसन' कहती है और न वाशिंगटन के नीम सरकारी तार ही उसको एग्रेसन समझते हैं. वाशिंगटन का ९ जुलाई का यह तार कि "फ़ौजी मामलों में दक्खिन कोरिया के सिपाहियों को उत्तर कोरिया के मुकाबले में लड़ने के लिये भेजने में उन पर एतबार नहीं किया जा सकता." ना सीधे तरीक़े से साफ़ ज़ाहिर करता है कि दक्खिन कोरिया के लोग उत्तर कोरिया की चढ़ाई को न 'एग्रेसन' मानते हैं और न घरेलू लड़ाई ही मानते हैं. वह तो उत्तर कोरिया की फ़ौजों को ऐसी ख़ुदाई मदद समझते हैं जो उन्हें पाँच बरस की अमरीकी ग़ुलामी से रिहा कराने आई है. दक्खिन कोरिया की वह किसान जनता ही नहीं जो आज ज़मीनों की मालिक बन कर उत्तर कोरिया की एहसानमंद है, वह जनता भी जिन तक अभी उत्तर कोरिया की फ़ौजें नहीं पहुँची हैं, अमरीकी फ़ौजों के दक्खिन कोरिया में आने को 'एग्रेशन' यानी अपने ऊपर ज़ुल्म कहती है. यह 'मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त' कैसा.

अमरीका अपने ऐटम बम के बल पर किसी न किसी तरह से दुनिया की बड़ी लड़ाई खड़ी कर देना चाहता है. अमरीका के कई

بہت سے ملک خلاف ہیں اور جس میں بہت کم ملکوں کے سپاہی شامل ہیں، سب سے بڑا افسر بنا دیا گیا اور اس کو یہ اجازت دیدی گئی ہے کہ وہ اس جھنڈے سے کام لے جو دنیا بھر کی پنچایت یو. این. او. کا امن کا جھنڈا ہے.

امریکہ ہر طرح سے اس کوریا کی گھریلو لڑائی کو دنیا کی بڑی لڑائی بنا دینا چاہتا ہے. پر اچرج یہ ہے کہ نہ سب امریکہ کے رہنے والے اور نہ دوسرے ملک اس گھریلو لڑائی کو دنیا کی بڑی لڑائی کہنے کو تیار ہیں.

اتر کوریا کے دکھن کوریا پر جس حملہ کو سب سے پہلے امریکہ نے 'اگریسن' کہکر پکارا اور جس کو سرکشا سمیتی کے ممبروں نے بھی 'اگریسن' کہہ ڈالا اس کو نہ دکھن کوریا کی جنتا 'اگریسن' کہتی ہے اور نہ واشنگٹن کے نیم سرکاری تار ہی اس کو 'اگریسن' سمجھتے ہیں. واشنگٹن کا ۹ جولائی کا یہ تار کہ "فوجی معاملوں میں دکھن کوریا کے سپاہیوں کو اتر کوریا کے مقابلہ میں لڑنے کے لئے بھیجنے میں ان پر اعتبار نہیں کیا جا سکتا." نا سیدھے طریقے سے صاف ظاہر کرتا ہے کہ دکھن کوریا کے لوگ اتر کوریا کی چڑھائی کو نہ 'اگریسن' مانتے ہیں اور نہ گھریلو لڑائی ہی مانتے ہیں. وہ تو اتر کوریا کی فوجوں کو ایسی خدائی مدد سمجھتے ہیں جو انہیں پانچ برس کی امریکی غلامی سے رہا کرانے آئی ہے. دکھن کوریا کی وہ کسان جنتا ہی نہیں جو آج زمینوں کی مالک بن کر اتر کوریا کی احسانمند ہے، وہ جنتا بھی جن تک ابھی اتر کوریا کی فوجیں نہیں پہونچی ہیں، امریکی فوجوں کے دکھن کوریا میں آنے کو 'اگریسن' یعنی اپنے اوپر ظلم کہتی ہے. یہ 'مدعی سست اور گواہ چست' کیسا.

امریکہ اپنے ایٹم بم کے بل پر کسی نہ کسی طرح سے دنیا کی بڑی لڑائی کھڑی کر دینا چاہتا ہے. امریکہ کے کئی

जिम्मेदार अखबार कई बार अमरीकी सरकार को यह सलाह दे चुके हैं कि अमरीका को रूस से लड़ बैठने के लिये सब से अच्छा यही वक़्त है क्यों कि उन अखबारों की समझ में इस वक़्त रूस के पास ऐटम बम का भेद भले ही हो ऐटम बम बने हुए तैयार नहीं हैं. इस सलाह की जड़ में यह ख़याल मौजूद है कि रूस को हरा कर कोरिया और जापान पर हमेशा के लिये क़बज़ा किया जा सकता है और चीन को दबाकर रक्खा जा सकता है और फिर भारत या पाकिस्तान कभी सर उठाने की नहीं सोच सकते.

अमरीका के पास सोना है और सोने से भरी तिजोरी वाले सेठ को वक़्त बे वक़्त चूहे का गिराया हुआ प्याला डाकू की बन्दूक़ की आवाज़ मालूम होता है और वह झट रिवाल्वर लेकर पलंग पर बैठ जाता है और ख़तरे की घंटी बजाकर अपने सब चौकीदारों को तैयारी हुकुम दे देता है. अमरीका को सोने ने अमरीका को ऐसा ही हचौकन्ना बना दिया तभी तो उस को बहादुर कोरिया के ग़रीबों की एक होने की इस्कीम दुनिया को जीतने की इस्कीम मालूम हुई. जो जैसा होता है उस को दुनिया वैसी ही नज़र आती है. वह चीन के फ़ारमूसा पर क़बज़ा करना चाहता है या उसे जापान की मिल्कियत साबित करना चाहता है जो जापान उसके पांव के नीचे दबा हुआ है. और क्यों न चाहे. जब सर आर्थर मूर जैसे पत्रकार उसकी एख़लाक़ी मदद के लिये तैयार हो जायें और यह कह कर कि फ़ारमूसा पर पचपन बरस से जापान का क़बज़ा था इस लिये वह जापान को ही मिलना चाहिये. क्या अजब यह आर्थर मूर साहब किसी दिन यह भी कह बैठें कि भारत और पाकिस्तान बरतानिया के होने चाहियें क्योंकि इन दोनों पर १९० बरस बरतानिया का क़बज़ा रह चुका है और वह चाहें तो १९० बरस की मीआद को डेढ़ सौ बरस तक आसानी से खींच ले जा सकते हैं. ऐसे पत्रकार और ऐसे लोग ही अमरीका को सारी दुनिया का मालिक बनने के लिये उकसाते रहते हैं.

ذمہ دار اخبار کئی بار امریکی سرکار کو یہ صلاح دے چکے ہیں کہ امریکہ کو روس سے لڑ بیٹھنے کے لئے سب سے اچھا یہی وقت ہے کیونکہ اُن اخباروں کی سمجھ میں اس وقت روس کے پاس ایٹم بم کا بھید بھلے ہی ہو ایٹم بم بنے ہوئے تیار نہیں ہیں. اس صلاح کی جڑ میں یہ خیال موجود ہے کہ روس کو ہرا کر کوریا اور جاپان پر ہمیشہ کے لئے قبضہ کیا جاسکتا ہے اور چین کو دباکر رکھا جاسکتا ہے اور پھر بھارت یا پاکستان کبھی سر اُٹھانے کی نہیں سوچ سکتے.

امریکہ کے پاس سونا ہے اور سونے سے بھری تجوری والے سیٹھ کو وقت بےوقت چوہے کا گرا ہوا پیالہ ڈاکو کی بندوق کی آواز معلوم ہوتا ہے اور وہ جھٹ ریوالور لیکر پلنگ پر بیٹھ جاتا ہے اور خطرہ کی گھنٹی بجاکر اپنے سب چوکیداروں کو تیاری کا حکم دے دیتا ہے. امریکہ کے سونے نے امریکہ کو ایسا ہی چوکنا بنا دیا تبھی تو اس کو بہادر کوریا کے غریبوں کی ایک ہونے کی اسکیم دنیا کو جیتنے کی اسکیم معلوم ہوئی. جو جیسا ہوتا ہے اسکو دنیا ویسی ہی نظر آتی ہے. وہ چین کے فارموسا پر قبضہ کرنا چاہتا ہے یا اسے جاپان کی ملکیت ثابت کرنا چاہتا ہے جو جاپان اس کے پاؤں کے نیچے دبا ہوا ہے. اور کیوں نہ چاہے. جب سر آرتھر مور جیسے پترکار اس کی اخلاقی مدد کے لئے تیار ہوجائیں اور یہ کہکر کہ فارموسا پر ۵۵ برس سے جاپان کا قبضہ تھا اس لئے وہ جاپان کو ہی ملنا چاہئے. کیا عجب یہ آرتھر مور صاحب کسی دن یہ بھی کہ بیٹھیں کہ بھارت اور پاکستان برطانیہ کے ہونے چاہئیں کیونکہ ان دونوں پر ۱۹۰ برس برطانیہ کا قبضہ رہ چکا ہے اور وہ چاہیں تو ۱۹۰ برس کی میعاد کو ڈیڑھ سو برس تک آسانی سے کھینچ لے جاسکتے ہیں. ایسے پترکار اور ایسے لوگ ہی امریکہ کو ساری دنیا کا مالک بننے کے لئے اُکساتے رہتے ہیں.

अमरीका के आज के तरीक़ों से वह साफ़ ज़ाहिर है कि वह पक्का शहंशाहीवादी है; और दुनिया की बड़ी लड़ाई खड़ी करने का इतना ही भूका है जितने हिन्दुस्तान के वह राजे रहा करते थे जिनका ज़िक्र पुरानों में आया है.

अमरीका के रास्ते में मुश्किल यह आपड़ी है कि कोरिया की घरू लड़ाई या कोरिया की आज़ादी की लड़ाई दुनिया की बड़ी लड़ाई न बन पाई. मुल्क पर मुल्क शामिल हो रहे हैं पर एक रूस के मुक्का दिखाए बग़ैर यह बड़ी सी बड़ी लड़ाई दुनिया की बड़ी लड़ाई में तबदील नहीं हो सकती. इस मारके की बात से अमरीका को सीख लेनी चाहिये थी और दुनिया भर की जनता को समझ लेना चाहिये कि अब लोकशाही या जनता का राज किसी मुल्क में नहीं रहगया और न कोई मुल्क आज़ाद है. आज़ाद तो क्या मुल्क मुल्क भी नहीं रहे. बस अब दो मुल्क हैं. एक का नाम है नई दुनिया और दूसरी का नाम है पुरानी दुनिया. नई दुनिया के मालिक हैं ट्रूमेन और पुरानी दुनिया के मालिक हैं स्टैलिन. यह दो लड़ें तो दुनिया की बड़ी लड़ाई हो. मानो और सब मुल्क मुल्क ही नहीं हैं. सब मुल्कों के लिये यह बड़ी शर्म की बात है और उन मुल्कों के लिये तो बेहद शर्म की बात है जो यू. एन. ओ. में शामिल हैं. कुछ मुल्कों को मिलकर फ़ौरन जनरल असेम्बली की मीटिंग बुलानी चाहिये या जो अभी होने वाली है उस में शामिल होकर कोई ऐसी तजवीज़ तैयार करनी चाहिये जिस से न सिर्फ़ सुरक्षा समिति क़ाबू में रहे बल्कि वह मुल्क भी क़ाबू में रहें जिन्हें नामको 'विटो' की ताक़त मिली हुई है. अगर ऐसा न हो सके तो यू. एन. ओ. से सब ग़ैर ज़रूरी मुल्कों को इस्तीफ़ा दे देना चाहिये और यू. एन. ओ. का लिफ़ रूस और अमरीका के हाथ में दे देना चाहिये. यह दोनों जी भर कर लड़लें, और दूसरे मुल्क इनका तमाशा देखें. लड़ाई में शामिल होने के लिये मजबूर न किये जायें.   भगवान दीन

امریکہ کے آج کے طریقوں سے یہ صاف ظاہر ہے کہ وہ پکا شہنشاہی وادی ہے. اور دنیا کی بڑی لڑائی کھڑی کرنے کا اتنا ہی بھوکا ہے جتنے ہندستان کے وہ راجے رہا کرتے تھے جنکا ذکر پرانوں میں آیا ہے.

امریکہ کے راستے میں مشکل یہ آپڑی ہے کہ کوریا کی گھریلو لڑائی یا کوریا کی آزادی کی لڑائی دنیا کی بڑی لڑائی نہ بن پائی. ملک پر ملک شامل ہو رہے ہیں پر ایک روس کے مکا دکھائے بغیر یہ بڑی سے بڑی لڑائی دنیا کی بڑی لڑائی میں تبدیل نہیں ہوسکتی. اس معرکے کی بات سے امریکہ کو سیکھ لینی چاہئے تھی اور دنیا بھر کی جنتا کو سمجھ لینا چاہئے کہ اب لوک شاہی یا جنتا کا راج کسی ملک میں نہیں رہگیا. اور نہ کوئی ملک آزاد ہے. آزاد تو کیا ملک ملک بھی نہیں رہے. بس اب دو ملک ہیں. ایک کا نام ہے نئی دنیا اور دوسری کا نام ہے پرانی دنیا. نئی دنیا کے مالک ہیں ٹرومین اور پرانی دنیا کے مالک ہیں اسٹالن. یہ دو لڑیں تو دنیا کی بڑی لڑائی ہو. مانو اور سب ملک ملک ہی نہیں ہیں. سب ملکوں کے لئے یہ بڑی شرم کی بات ہے اور ان ملکوں کے لئے تو بے حد شرم کی بات ہے جو یو. این. او. میں شامل ہیں. کچھ ملکوں کو مل کر فوراً جنرل اسمبلی کی میٹنگ بلانی چاہئے یا جو ابھی ہونیوالی ہے اس میں شامل ہوکر کوئی ایسی تجویز تیار کرنی چاہئے جس سے نہ صرف سرکشا سمیتی قابو میں رہے بلکہ وہ ملک بھی قابو میں رہیں جنہیں نام کی 'ویٹو' کی طاقت ملی ہوئی ہے. گر ایسا نہ ہوسکے تو یو. این. او. کے سب غیر ضروری ملکوں کو استعفا دے دینا چاہئے اور یو. این. او. کو صرف روس اور امریکہ کے ہاتھ میں دے دینا چاہئے. یہ دونوں جی بھر کر لڑ لیں. اور دوسرے ملک ان کا تماشہ دیکھیں. لڑائی میں شامل ہونے کے لئے مجبور نہ کئے جائیں.

بھگوان دین

नया हिन्द

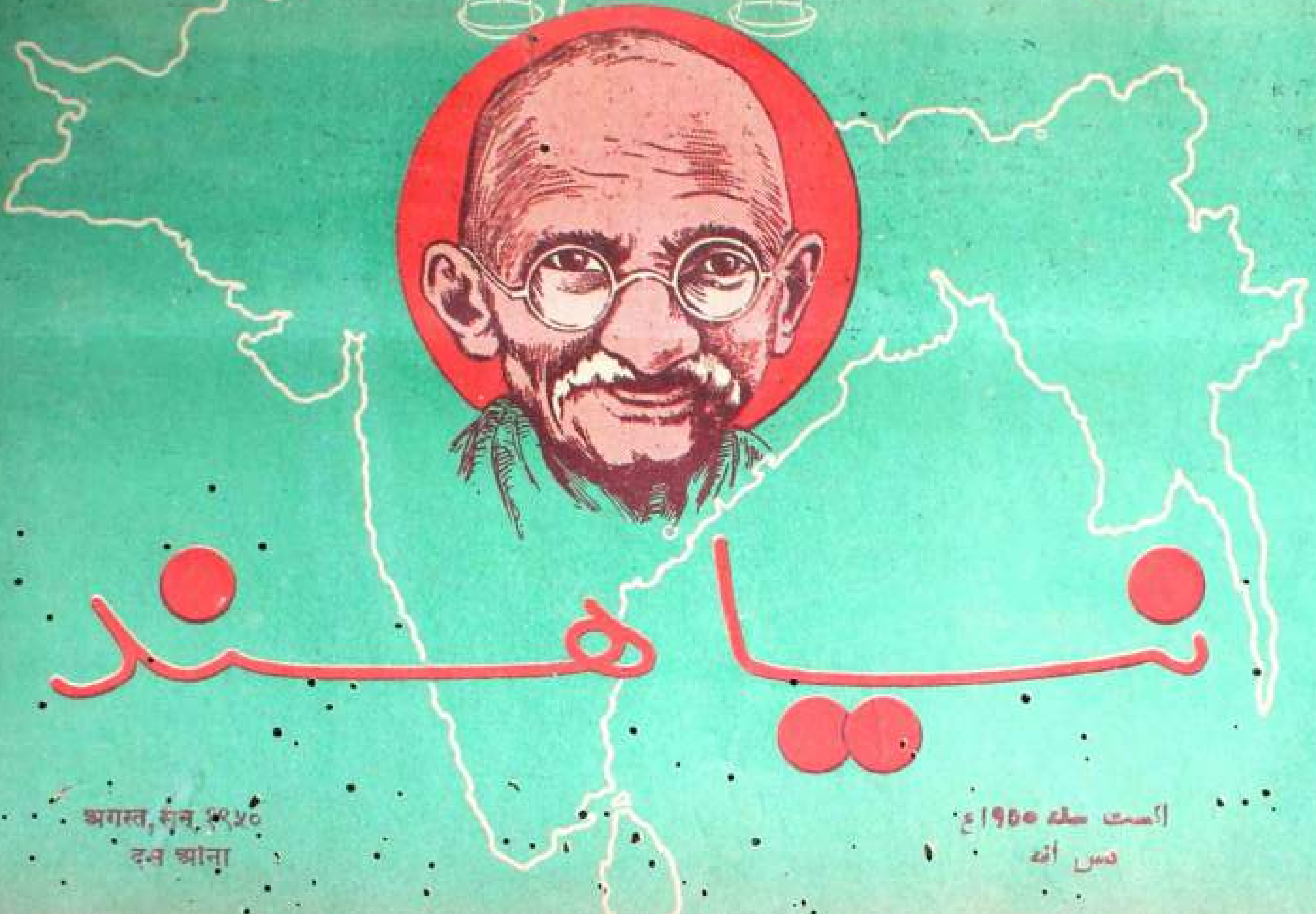

نیا ہند

अगस्त, सन् १९५०
दस आना

اگست سنہ ۱۹۵۰ع
دس آنہ

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अगस्त १९५०

क्या किस से	सफ़ा
१—जी में आता है......(कविता)—भाई 'शबनम' ...	१०१
२—अमीर ख़ुसरो—भाई फ़रहतुल्ला अन्सारी ...	१०३
३—कश्मीर का अमन और सर डिक्सन—भाई अब्दुल हलीम अन्सारी	११६
४—मराठी पर हिन्दी का हमला—भाई श्रीपाद जोशी ...	१२६
५—मसजिद में मेरा मालिक तो... —भाई गु. म. ...	१३७
६—कौटिल्य का अर्थ शास्त्र—भाई ओंकारनाथ शास्त्री ...	१४१
७—पुन्नालमा—(कहानी)—भाई भैरव प्रसाद गुप्त ...	१४८
८—डाक्टरेट को डिगरी का मज़ाक़—भाई महादेव साहा	१५७
९—दुनिया का हाल—भाई इशरत अली सिद्दीक़ी ...	१६४
१०—बच्चों की दुनिया	१८२
११—हमारी राय—(१) भारत की तीन बरस की आज़ादी—भगवानदीन, (२) दियासलाई और बारूद—भगवानदीन	१८७

क़ीमत—'हिन्दुस्तान में छे रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने.

मैनेजर

'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

"نیا ھند"

ھندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

اگست ۱۹۵۰

کیا کس سے	صفحہ
۱—جی میں آتا ہے...(کویتا) بھائی 'شبنم' ...	۱۰۱
۲—امیر خسرو—بھائی فرحت اللہ انصاری ...	۱۰۳
۳—کشمیر کا امن اور سر ڈکسن—بھائی عبدالحلیم انصاری	۱۱۶
۴—مراٹھی پر ھندی کا حملہ—بھائی شری پاد جوشی ...	۱۲۶
۵—مسجد میں تو میرا... بھائی گ. م. ...	۱۳۷
۶—کوٹلیہ کا ارتھ شاستر—بھائی اونکار ناتھ شاستری ...	۱۴۱
۷—پلھانا (کہانی)—بھائی بھیرو پرساد گپت ...	۱۴۸
۸—ڈاکٹریٹ کی ڈگری کا مذاق—بھائی مہادیو ساھا ...	۱۵۷
۹—دنیا کا حال—بھائی عشرت علی صدیقی ...	۱۶۴
۱۰—بچوں کی دنیا	۱۸۲
۱۱—ھماری رائے—(۱) بھارت کی تین برس کی آزادی بھگوان دین (۲) دیا سلائی اور بارود—بھگوان دین	۱۸۷

قیمت — ھندستان میں چھ روپیہ سال. باھر دس روپیہ سال. ایک پرچہ دس آنے.

منیجر

'نیا ھند'

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ९ अगस्त सन् '५० नम्बर २

نمبر ۲ جولائی سن ۵۰ جلد ۹

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

जी में आता है....

(भाई 'शबनम')

जी में आता है उपवन को हर एक कली मेरी होती.
हर फूल मुझे प्यारा लगता,
हर लता मुझे प्यारी लगती,
हर चीज़ एक से एक यहाँ
इन आँखों को न्यारी लगती;

جی میں آتا ھے....

(بھائی 'شبنم')

جی میں آتا ہے اپون کی ہر ایک کلی میری ہوتی۔
ہر پھول مجھے پیارا لگتا،
ہر لتا مجھے پیاری لگتی،
ہر چیز ایک سے ایک یہاں
ان آنکھوں کو نیاری لگتی،

मन कहता है—इन कुञ्जों की हर एक गली मेरी होती.

तितली की छवि मुझको भाती,
मधुकर का गीत सुहाता है,
दिल चुपके-चुपके कोयल के
रागों में राग मिलाता है,

मन में आता है—जीवन की हर बात भली मेरी होती है.

सुन्दर फूलों के होठों को
गर मैं भी पाता चूम कहीं,
मधु पीकर इठलाता फिरता
पाता मस्ती से झूम कहीं,

या काश, रागिनी मधुकर की मेरे स्वर से निकली होती.
जी में आता है—उपवन की हर एक कली मेरी होती.

من کہتا ہے—ان کنجوں کی ہر ایک گلی میری ہوتی

تتلی کی چھب مجھکو بھاتی،
مدھوکر کا گیت سہاتا ہے،
دل چپکے چپکے کوئل کے
راگوں میں راگ ملاتا ہے،

من میں آتا ہے—جیون کی ہر بات بھلی میری ہوتی .

سندر پھولوں کے ہونٹھوں کو
گر میں بھی پاتا چوم کہیں،
مدھو پی کر اتھلاتا پھرتا
پاتا مستی سے جھوم کہیں،

یا کاش، راگنی مدھوکر کی میرے سور سے نکلی ہوتی .
جی میں آتا ہے—اپون کی ہر ایک کلی میری ہوتی .

अमीर ख़ुसरो

(भाई फ़रहतउल्ला अन्सारी)

अमीर ख़ुसरो १२५३ ई० में ज़िला एटा के एक गाँव पटियाली में पैदा हुए. उन के पिता अमीर सैफ़ुद्दीन एक तुर्क सरदार थे जो सुल्तान अलतमश के समय में हिन्दुस्तान आये थे. उनकी माँ इमादुल मुल्क की बेटी थीं. यह हिन्दुस्तानी थीं जिसका सबूत यह है कि ख़ुसरो के बयान के मुताबिक़ उनका रंग काला था और उन्हें पान खाने का, जिसके मज़े से बाहर से आये हुए तुर्क और मुग़ल नावाक़िफ़ थे, बड़ा शौक़ था.

कुछ लोगों का कहना है कि अमीर ख़ुसरो अपने पिता के साथ हिन्दुस्तान आये थे. यानी हिन्दुस्तान में पैदा नहीं हुए थे. यह वह लोग हैं जिन्हें अमीर ख़ुसरो का हिन्दुस्तानी होना खटकता है. लेकिन अमीर ख़ुसरो ने हिन्दुस्तान का ज़िक्र करते हुए कहा है कि मैं यहीं पैदा हुआ और मेरा वतन यही है.

आज हिन्दुस्तान को अपना वतन समझना और हिन्दुस्तानी होने पर फ़ख़्र करना कोई बड़ी बात नहीं है. हालाँकि आज भी हम में से कितने हैं जो ईरान तूरान से नाते जोड़ा करते हैं और अपने नाम के साथ बाहरी शहरों के नाम लिखते रहते हैं, पर जिस मुसलमान ने आज से सात साढ़े सात सौ बरस पहले अपने को हिन्दुस्तानी कहा उसका वतनियत यानी राष्ट्रीता का जज़बा ज़रूर

امیر خسرو

(بھائی فرحت اللہ 'انصاری')

امیر خسرو سن ۱۲۵۳ء میں ضلع ایٹہ کے ایک چھوٹے سے گاؤں پٹیالی میں پیدا ہوئے. ان کے پتا امیر سیف الدین ایک ترک سردار تھے جو سلطان التمش کے سمے میں ہندستان آئے تھے. ان کی ماں عمادالملک کی بیٹی تھیں. یہ ہندستانی تھیں جس کا ثبوت یہ ہے کہ خسرو کے بیان کے مطابق ان کا رنگ کالا تھا اور انہیں پان کھانے کا، جس کے مزے سے باہر سے آئے ہوئے ترک اور مغل نا واقف تھے، بڑا شوق تھا.

کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ امیر خسرو اپنے پتا کے ساتھ ہندستان آئے تھے. یعنی ہندستان میں پیدا نہیں ہوئے تھے. یہ وہ لوگ ہیں جنہیں امیر خسرو کا ہندستانی ہونا کھٹکتا ہے. لیکن امیر خسرو نے ہندستان کا ذکر کرتے ہوئے کہا ہے کہ میں یہیں پیدا ہوا اور میرا وطن یہی ہے.

آج ہندستان کو اپنا وطن سمجھنا اور ہندستانی ہونے پر فخر کرنا کوئی بڑی بات نہیں ہے. حالانکہ آج بھی ہم میں سے کتنے ہیں جو ایران توران سے ناتے جوڑا کرتے ہیں اور اپنے نام کے ساتھ باہری شہروں کے نام لکھتے رہتے ہیں. پر جس مسلمان نے آج سے سات ساڑھے سات سو برس پہلے اپنے کو ہندستانی کہا اس کا وطنیت یعنی راشٹریتا کا جذبہ ضرور

क़ाबिले क़दर हैं. ख़ुसरो की एक पीढ़ी भी मुशकिल ही से हिन्दुस्तान में गुज़री थी कि उन्हों ने हिन्दुस्तान की बड़ाई भाँप ली और हिन्दुस्तानी बन गये. ऐसी ही सूझ बूझ वालों के लिये एक़बाल ने कहा है :—

हज़ारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुशकिल से होता है चमन में दीदा वर पैदा

मैंने ख़ुसरो के साथ एक़बाल का नाम सिर्फ़ इसलिये लिया है कि इस ज़माने में एक़बाल अकेला वह शायर है जिसने ब्रह्मन बच्चा होने पर फ़ख़्र किया है और आम मुलसमानों की तरह अपना सिलसिला मक्के मदीने से नहीं जोड़ा है. एक इस बात के अलावा ख़ुसरो और एक़बाल में कोई बात मिलती जुलती नहीं है. ख़ुसरो का वतन वह ज़मीन थी जिसने उनको जन्म दिया. एक़बाल के यहाँ वतन कोई चीज़ ही नहीं है. शुरू में ज़रूर एक़बाल ने वतन का गीत गाया है और कहा है कि "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" मगर थोड़े ही दिन बाद वह ऐसे फ़लसफ़े की असर में आगए जिसके बाद से वह इंसानों को भेड़ों और भेड़ियों में बाँटने लगे.

ख़ैर, ख़ुसरो हों या एक़बाल हर शख़्स अपने माहौल (वातावरन) की गोद में पलता है और बढ़ता है. ख़ुसरो ने हिन्दुस्तान में ऐसे ज़माने में आँख खोली जब यहाँ दो तहज़ीबें मिल रही थीं. वह ऐसे माँ बाप से पैदा हुए जिन में से एक की ज़बान तुर्की थी और दूसरे की ज़बान हिन्दी. ऐसे नाना के हाथों पाले गये थे जिनका हिन्दू राजाओं से बड़ा मेल जोल था. ख़ुसरो लिखते हैं कि उनका इतना असर था कि बड़े से बड़ा सरकश

قابل قدر ہے . خسرو کی ایک پیڑھی بھی مشکل ہی سے ہندستان میں گذری تھی کہ اُنھوں نے ہندستان کی بڑائی بھانپ لی اور ہندستانی بن گئے . ایسی ہی سوجھ بوجھ والوں کے لئے اقبال نے کہا ہے :—

ہزاروں سال نرگس اپنی بے نوری پہ روتی ہے
بڑی مشکل سے ہوتا ہے چمن میں دیدہ ور پیدا

میں نے خسرو کے ساتھ اقبال کا نام اس لئے لیا ہے کہ اِس زمانہ میں اقبال اکیلا وہ شاعر ہے جس نے برہمن بچہ ہونے پر فخر کیا ہے اور عام مسلمانوں کی طرح اپنا سلسلہ مکہ مدینہ سے نہیں جوڑا ہے . ایک اس بات کے علاوہ خسرو اور اقبال میں کوئی بات ملتی جلتی نہیں ہے . خسرو کا وطن وہ زمین تھی جس نے ان کو جنم دیا . اقبال کے یہاں وطن کوئی چیز ہی نہیں ہے . شروع میں ضرور اقبال نے وطن کا گیت گایا ہے اور کہا ہے کہ "سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا" مگر تھوڑے ہی دن بعد وہ ایسے فلسفے کے اثر میں آگئے جس کے بعد سے وہ انسانوں کو بھیڑوں اور بھیڑیوں میں بانٹنے لگے .

خیر، خسرو ہوں یا اقبال ہر شخص اپنے ماحول (واتاورن) کی گود میں پلتا ہے اور بڑھتا ہے . خسرو نے ہندستان میں ایسے زمانے میں آنکھ کھولی جب یہاں دو تہذیبیں مل رہی تھیں . وہ ایسے ماں باپ سے پیدا ہوئے جن میں سے ایک کی زبان ترکی تھی اور دوسرے کی زبان ہندی . ایسے نانا کے ہاتھوں پالے گئے تھے جن کا ہندو راجاؤں سے بڑا میل جول تھا . خسرو لکھتے ہیں کہ اُن کا اتنا اثر تھا کہ بڑے سے بڑا سرکش

राजा भी, जहाँ इमादुल मुल्क उसके पास पहुंचे, यार हो जाता. उनके घर के तौर तरीक़ों में हिन्दुस्तानी तहज़ीब का अच्छा ख़ासा मेल था. यह इसी बात से ज़ाहिर है कि इमादुल मुल्क की महफ़िल में पान के दौर चला करते थे.

बचपने में बाप का मर जाना आम तौर से लड़के के लिये एक बड़ी मुसीबत होता है. लेकिन ख़ुसरो के हक़ में शायद यह अच्छा ही हुआ. इसलिये कि उनके बाप जिन्दा रहते तो शायद ख़ुसरो को अपने नाना की तरफ़ से इतनी शिक्षा दीक्षा न मिलती और वह ख़ुद एक सिपाही पेशा होने के कारन अपने बेटे पर इतना ध्यान न दे पाते जितना ध्यान इमादुउल मुल्क दे सके. जो भी हो, ख़ुसरो के पिता एक काम कर ही गये थे. वह यह कि उन्होंने बचपने ही में ख़ुसरो को हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का मुरीद करा दिया था. यह वही बुज़ुर्ग हैं जिनके एक चेले हज़रत बख़तियार काकी के मज़ार पर महात्मा गांधी ने उर्स कराया था. बड़े होने के बाद ख़ुसरो हज़रत निज़ामुद्दीन के फिर से मुरीद हुए. कुछ लोगों का विचार है कि हज़रत निज़ामुद्दीन की रूहानी कृपा बचपने से ही ख़ुसरो की हिदायत करती रही. ख़ैर, यह तो अपने अपने विश्वास की बात है. हाँ इतना ज़रूर है कि यह सूफ़ी मत ही की करामात थी जिसने ख़ुसरो को रंग और नसल के झगड़ों और मसजिद व मन्दिर की भूल भुलैयों में न पड़ने दिया और उन्हें प्रेम पुजारी बना दिया, जिसका विश्वास था कि हर इंसान से प्रेम करना चाहिये और हर मज़हब की इज़्ज़त करनी चाहिये.

راجہ بھی، جہاں عمادالملک اُس کے پاس پہونچے، یار ہو جاتا. ان کے گھر کے طور طریقوں میں ہندستانی تہذیب کا اچھا خاصہ میل تھا. یہ اسی بات سے ظاہر ہے کہ عمادالملک کی محفل میں پان کے دور چلا کرتے تھے.

بچپنے میں باپ کا مر جانا عام طور سے لڑکے کے لئے ایک بڑی مصیبت ہوتا ہے. لیکن خسرو کے حق میں شاید یہ اچھا ہی ہوا. اس لئے کہ ان کے باپ زندہ رہتے تو شاید خسرو کو اپنے نانا کی طرف سے اتنی شکشا دیکشا نہ ملتی اور وہ خود ایک سپاہی پیشہ ہونے کے کارن اپنے بیٹے پر اتنا دھیان نہ دے پاتے جتنا دھیان عمادالملک دے سکے. جو بھی ہو، خسرو کے پتا ایک کام کر ہی گئے تھے. وہ یہ کہ انہوں نے بچپنے ہی میں خسرو کو حضرت نظام الدین اولیا کا مرید کرا دیا تھا. یہ وہی بزرگ ہیں جن کے ایک چیلے حضرت بختیار کاکی کے مزار پر مہاتما گاندھی نے عرس کرایا تھا. بڑے ہونے کے بعد خسرو حضرت نظام الدین کے پھر سے مرید ہوئے. کچھ لوگوں کا وچار ہے کہ حضرت نظام الدین کی روحانی کرپا بچپنے سے ہی خسرو کی ہدایت کرتی رہی. خیر، یہ تو اپنے اپنے وشواس کی بات ہے ہاں اتنا ضرور ہے کہ یہ صوفی مت کی ہی کرامات تھی جس نے خسرو کو رنگ اور نسل کے جھگڑوں اور مسجد و مندر کی بھول بھلیوں میں نہ پڑنے دیا اور انہیں پریم پجاری بنا دیا، جس کا وشواس تھا کہ ہر انسان سے پریم کرنا چاہئے اور ہر مذہب کی عزت کرنی چاہئے.

तसव्वुफ़ उस समय में फ़ारसी शायरी की एक आम रीत थी. वह तमाम शायर जिनको ख़ुसरो ने पढ़ा या जिन से उनका मुक़ाबला हुआ तसव्वुफ़ के रंग में डूबे हुए थे. यह रीत कैसे पड़ी, इसके बारे में अल्लामा शिबली लिखते हैं कि जब चंगेज़ ख़ाँ ने सन् ११९८ ई० में तातार से निकल कर ख़ुरासान से शाम तक जितने राज महल थे सब के चराग़ ठन्डे कर दिये तो इसका असर यह हुआ कि मुसलमानों में एक आम सुस्ती पैदा हो गई. उनके दिल बुझ गये. जब कभी कोई ज़बरदस्त आफ़त आती है, वह चाहे हमले की शकल में हो चाहे भूचाल या तूफ़ान की शकल में, तो इन्सान ख़ुदा की तरफ़ दौड़ता है. इसलिये मुसलमानों की दुनिया में भी सब अल्लाह अल्लाह करने लगे. शायरी पर इसका यह असर हुआ कि जहाँ बहादुरी के गीत गाये जाते थे वहाँ तसव्वुफ़ के गीत गाये जाने लगे और चूंकि मुसलमानों की उजड़ी हुई बस्तियाँ फिर जल्दी से बस गईं इसलिये तसव्वुफ़ की महफ़िल जमती ही चली गई. ग़रज़ जब ख़ुसरो ने शायरी शुरू की तो हर तरफ़ तसव्वुफ़ का ही चर्चा था. उन्हों ने भी उसी साज़ में अपनी आवाज़ मिलाई और प्रेम व प्रीत के ऐसे गीत गाये कि ईरान ने भी हिन्दुस्तान का सिक्का मान लिया.

यह सिर्फ़ बढ़ावे चढ़ावे की बात नहीं है बल्कि सच है कि ईरान ने अगर फ़ारसी के किसी हिन्दुस्तानी शायर को माना है तो वह सिर्फ़ ख़ुसरो हैं. और कैसे न मानता ? इसलिये कि उस ज़माने में बल्कि उससे पहले भी ईरान में जितने शायर हुए थे वह सब के सब एक एक मैदान के शेर थे. ऐसा शायर जो हर मैदान का शेर, हो

تصوف اس سمے میں فارسی شاعری کی ایک عام ریت تھی ۔ وہ تمام شاعر جن کو خسرو نے پڑھا یا جن سے اُن کا مقابلہ ہوا تصوف کے رنگ میں ڈوبے ہوئے تھے ۔ یہ ریت کیسے پڑی ' اس کے بارے میں علامہ شبلی لکھتے ہیں کہ جب چنگیز خاں نے سن ۱۱۹۸ع میں تاتار سے نکل کر خراسان سے شام تک جتنے راج محل تھے سب کے چراغ ٹھنڈے کر دئے تو اس کا اثر یہ ہوا کہ مسلمانوں میں ایک عام سستی پیدا ہو گئی ۔ ان کے دل بجھ گئے ۔ جب کبھی کوئی زبردست آفت آتی ہے وہ چاہے حملے کی شکل میں ہو چاہے بھونچال یا طوفان کی شکل میں تو انسان یاد کی طرف دوڑتا ہے ۔ اس لئے مسلمانوں کی دنیا میں بھی سب اللہ اللہ کرنے لگے ۔ شاعری پر اس کا یہ اثر ہوا کہ جہاں بہادری کے گیت گائے جاتے تھے وہاں تصوف کے گیت گائے جانے لگے اور چونکہ مسلمانوں کی اجڑی ہوئی بستیاں پھر جلدی سے بس گئیں اس لئے تصوف کی محفل جمتی ہی چلی گئی ۔ غرض جب خسرو نے شاعری شروع کی تو ہر طرف تصوف ہی کا چرچا تھا ۔ انہوں نے بھی اسی ساز میں اپنی آواز ملائی اور پریم و پریت کے ایسے گیت گائے کہ ایران نے بھی ہندستان کا سکہ مان لیا ۔

یہ صرف بڑھاوے چڑھاوے کی بات نہیں ہے بلکہ سچ ہے کہ ایران نے اگر فارسی کے کسی ہندستانی شاعر کو مانا ہے تو وہ صرف خسرو ہیں ۔ اور کیسے نہ مانتا ؟ اس لئے کہ اس زمانے میں بلکہ اس سے پہلے بھی ایران میں جتنے شاعر ہوئے تھے وہ سب کے سب ایک ایک میدان کے شیر تھے ۔ ایسا شاعر جو ہر میدان کا شیر ہو'

ग़ज़ल भी अच्छी कहे, क़सीदा भी अच्छा कहे, हिन्दुस्तान ही ने पैदा किया और वह खुसरो थे. यह इसलिये और भी फ़ख़्र की बात है कि फ़ारसी खुसरो की अपनी ज़बान नहीं थी. उनकी ज़बान तुर्की थी या हिन्दी. फिर भी खुसरो ने फ़ारसी शायरी में वह कमाल हासिल किया कि हाफ़िज़ शीराज़ी और शेख़ सादी ने भी, जो फ़ारसी के अहले ज़बान थे, उनकी तारीफ़ की. कहा जाता है कि एक बार शेख़ सादी खुसरो से मिलने देहली आये. यह बात सही हो या न हो मगर यह बात ज़रूर तारीख़ से साबित है कि जब सुलतान शहीद (बलबन के बड़े लड़के) ने शेख़ सादी को हिन्दुस्तान आने की दावत दी तो उन्होंने अपने बुढ़ापे का उज़्र करते हुए सुलतान शहीद को यह लिखा कि जिस दरबार में खुसरो मौजूद हो उसे किसी और की क्या ज़रूरत है. उस ज़माने में खुसरो की उमर सिर्फ़ ३२ साल थी और शेख़ सादी की उमर ८२ साल.

खुसरो के सम्बन्ध में दूसरी बात यह है कि उन्हों ने यह तो कहा है कि न उन्हें फ़ारसी आती है न हिन्दी आती है जैसे आइना की पहेली में खुसरो कहते हैं " फ़ारसी बोली आइ ना, तुर्की सोची पाई ना. हिन्दी बोले आरसी आये, मुहँ देखे जो इसे बताये" मगर दूसरे शायरों की तरह यह रोना कभी नहीं रोया है कि हिन्दी में क्या है, शायरी के लिये तो बस फ़ारसी भाषा ठीक है. ग़ालिब तक फ़ारसी की बड़ाई करते रहे हैं और अपनी ज़बान को घटिया समझते रहे हैं. पर खुसरो में इस तरह का अपने छोटे होने का भाव ज़रा भी नहीं था. वह यह हौसला रखते थे कि फ़ारसी में भी कहें तो ऐसा कहें कि हिन्द की फ़ारसी ईरान के दर्जे को पहुँच जाये. इसलिये

غزل بھي اچھی کہے، قصیده بھي اچھا کہے، هندستان هی نے پیدا کیا اور وه خسرو تھے . یه اس لئے اور بھی فخر کی بات هے که فارسي خسرو کی اپنی زبان نهیں تھی . ان کی زبان ترکی تھی یا هندی . پھر بھی خسرو نے فارسي شاعری میں وه کمال حاصل کیا که حافظ شیرازي اور شیخ سعدي نے بھي، جو فارسی کے اهل زبان تھے، ان کی تعریف کی . کہا جاتا هے که ایک بار شیخ سعدي خسرو سے ملنے دهلي آئے . یه صحیح هو یا نه هو مگر یه بات ضرور تاریخ سے ثابت هے که جب سلطان شهید (بلبن کے بڑے بیٹے) نے شیخ سعدي کو هندستان آنے کی دعوت دي تھي تو انھوں نے اپنے بڑھاپے کا عذر کرتے هوئے سلطان شهید کو یه لکھا که جس دربار میں خسرو موجود هوں اسے کسي اور کی کیا ضرورت هے . اس زمانه میں خسرو کی عمر صرف ۳۲ سال تھی اور شیخ سعدي کي عمر ۸۲ سال .

خسرو کے سمبندھ میں دوسری بات یه هے که انھوں نے یه تو کہا هے که نه انھیں فارسی آتی هے نه هندي آتي هے جیسے آئینه کی پہیلی میں خسرو کہتے هیں '' فارسی بولی آئی نا، ترکی سوچی پائی نا . هندی بولے آرسي آئے، منه دیکھے جو اسے بتائے '' مگر دوسرے شاعروں کی طرح یه رونا کبھی نهیں رویا هے که هندي میں کیا هے، شاعری کے لئے تو بس فارسی بھاشا ٹھیک هے . غالب تک فارسی کی بڑائی کرتے رهے هیں اور اپنی زبان کو گھٹیا سمجھتے رهے هیں پر خسرو میں اس طرح کا اپنے چھوٹے هونے کا بھاؤ ذرا بھی نهیں تھا . وه یه حوصله رکھتے تھے که فارسی میں بھی کہیں تو ایسا که هند کی فارسي ایران کے درجے کو پہونچ جائے . اسلئے

ऐसा ही हुआ. उन्होंने फ़ारसी में कविता कह कर अपनी इज्ज़त नहीं बढ़ाई बल्कि फ़ारसी में चार चाँद लगा दिये.

हाँ, तो ख़ुसरो ऐसे समय में पैदा हुए जब यहाँ अलग अलग तहज़ीबों का मेल हो रहा था. तुर्की से तुर्क आरहे थे तो ईरान से ईरानी और अफ़ग़ानिस्तान से अफ़ग़ानी. इन में से बाकमाल लोगों के हिन्दुस्तान आने का एक बड़ा कारन यह भी था कि उस ज़माने में दिल्ली ही एक ऐसी जगह थी जहाँ सब गुनियों और विद्वानों को शरन मिल सकती थी. बाक़ी सब जगहें तातारियों के ख़तरे में घिरी हुई थीं. ख़ुसरो ने वह तमाम इल्म व फ़न (विद्या और कला) हासिल करने की कोशिश की जो यहाँ जमा हो गये थे. यहाँ तक कि वह हिन्दुस्तानी विद्यायें भी जो मज़हब की निगाह से दुरुस्त नहीं थीं जैसे संगीत, जादू, तिलिस्म और ज्योतिप विद्या भी ख़ुसरो ने सीखी. ज़बानों में तो शायद ही कोई ज़बान हो जो ख़ुसरो ने न सीखी हो. फ़ारसी के तो वह माहिर ही थे पर संस्कृत, तुर्की और हिन्दुस्तान के कुछ सूबों की ज़बानें भी जानते थे. हाँ अरबी ज़्यादा नहीं जानते थे. इस लिये एक मौक़े पर उन्होंने अपने एक फ़ारसी शेर में कहा है :—

"मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ और हिन्दुस्तानी में जवाब देता हूँ. अरबी नहीं जानता कि अरब से बात कर सकूँ"

संस्कृत के बारे में ख़ुसरो लिखते हैं कि "संस्कृत अरबी से घट कर है और फ़ारसी से बढ़ कर है"

इन सब ज़बानों को जानने से ज़्यादा अचरज की बात यह है कि ख़ुसरो हिसाब भी जानते थे और उन तमाम मज़हबी व समाजी

ایسا ہی ہوا ، انھوں نے فارسی میں کویتا کہکر اپنی عزت نہیں بڑھائی بلکہ فارسی میں چار چاند لگا دئے ۔

ہاں ، خسرو ایسے سمے میں پیدا ہوئے جب یہاں الگ الگ تہذیبوں کا میل ہو رہا تھا ۔ ترکی سے ترک آرہے تھے تو ایران سے ایرانی اور افغانستان سے افغانی ۔ ان میں سے با کمال لوگوں کے ہندستان آنے کا ایک بڑا کارن یہ بھی تھا کہ اس زمانے میں دلی ہی ایک ایسی جگہ تھی جہاں سب گنیوں اور ودوانوں کو شرن مل سکتی تھی ۔ باقی سب جگہیں تاتاریوں کے خطرے میں گھری ہوئی تھیں ۔ خسرو نے وہ تمام علم و فن (ودیا اور کلا) حاصل کرنے کی کوشش کی جو یہاں جمع ہو گئے تھے ۔ یہاں تک کہ وہ ہندستانی ودیائیں بھی جو مذہب کی نگاہ سے درست نہیں تھیں جیسے سنگیت ، جادو ، طلسم اور جیوتش ودیا بھی خسرو نے سیکھیں ۔ زبانوں میں تو شاید ہی کوئی زبان ہو جو خسرو نے نہ سیکھی ہو ۔ فارسی کے تو وہ ماہر ہی تھے پر سنسکرت ، ترکی اور ہندستان کے کچھ صوبوں کی زبانیں بھی جانتے تھے ۔ ہاں عربی زیادہ نہیں جانتے تھے ۔ اس لئے ایک موقع پر انھوں نے اپنے ایک فارسی شعر میں کہا ہے :—

"میں ہندستانی ترک ہوں اور ہندستانی میں جواب دیتا ہوں ۔ عربی نہیں جانتا کہ عرب سے بات کر سکوں ۔"

سنسکرت کے بارے میں خسرو لکھتے ہیں کہ "سنسکرت عربی سے گھٹ کر ہے اور فارسی سے بڑھ کر ہے ۔"

ان سب زبانوں کو جاننے سے زیادہ اچرج کی بات یہ ہے کہ خسرو حساب بھی جانتے تھے اور ان تمام مذہبی و سماجی

बातों से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे जो उस ज़माने में हिन्दुस्तान में चालू थीं. ख़ुसरो ने कुछ गीत ऐसे कहे हैं जिनमें मूर्तियों पर बलिदान चढ़ाने की रस्मों को इस तरह बाँधा है और उन से इस तरह नसीहतें की हैं कि जब तक कोई दोनों धर्मों की पूरी जानकारी न रखता हो, उसको समझ ही नहीं सकता. यह गीत, जो देखने में मूर्ति पूजा की बातें हैं, हज़रत निज़ामुद्दीन की महफ़िलों में गाये जाते थे और सुनने वाले उन पर सर धुनते थे.

मज़हबी रस्म रिवाज की जानकारी से ज़्यादा अचम्भे की बात ख़ुसरो का आम तबक़ों से मेल जोल और उनके समाजी रस्म रिवाज की जानकारी है. ख़ुसरो का हिन्दी कलाम देखने से मालूम होता है कि एक ऐसा आदमी कह रहा है जिसको एक नहीं कितनी पीढ़ियाँ इन ही रस्मों में बीत गई हैं और वह उन्हें जानता ही नहीं है बल्कि चाहता भी है. हालांकि ख़ुसरो अमीर के घर पैदा हुए, अमीर घराने में पले और अमीरों ही में रहे. यह बातें ज़ाहिर करती हैं कि सूफ़ी मत का और अपने पीर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का उनपर कितना गहरा प्रभाव पड़ा. खीर, चरख़ा, कुत्ता और ढोल वाला क़िस्सा सिर्फ़ इस बात का सबूत नहीं है कि ख़ुसरो कितने हाज़िर जवाब थे बल्कि इस बात का भी सबूत है कि वह अमीर कहलाने के बावजूद एक ऐसे फ़क़ीर थे जिन्हें सब मानते थे. कहते हैं कि कुछ औरतें पनघट पर पानी भर रही थीं. उधर से ख़ुसरो गुज़रे और पानी पीने के ख़याल से कुएँ की तरफ़ बढ़े. औरतों ने ख़ुसरो को आते देखा तो ख़ुश हो कर आपस में कहने लगीं "ख़ुसरो आवत है, ख़ुसरो आवत है." ख़ुसरो ने क़रीब

باتوں سے اچھی طرح واقف تھے جو اس زمانے میں ہندستان میں چالو تھیں. خسرو نے کچھ گیت ایسے کہے ہیں جن میں مورتیوں پر بلیدان چڑھانے کی رسموں کو اس طرح باندھا ہے اور ان سے اسطرح نصیحتیں کی ہیں کہ جب تک کوئی دونوں دھرموں کی پوری جانکاری نہ رکھتا ہو، اس کو سمجھ ہی نہیں سکتا. یہ گیت، جو دیکھنے میں مورتی پوجا کی باتیں ہیں، حضرت نظام الدین کی محفلوں میں گائے جاتے تھے اور سننے والے ان پر سر دھنتے تھے.

مذہبی رسم رواج کی جانکاری سے زیادہ اچنبھے کی بات خسرو کا عام طبقوں سے میل جول اور ان کے سماجی رسم رواج کی جانکاری ہے. خسرو کا ہندی کلام دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ ایک ایسا آدمی کہہ رہا ہے جس کی ایک نہیں کتنی پیڑھیاں ان ہی رسموں میں بیت گئی ہیں اور وہ انہیں جانتا ہی نہیں ہے بلکہ چاہتا بھی ہے. حالانکہ خسرو امیر کے گھر پیدا ہوئے، امیر گھرانے میں پلے اور امیروں ہی میں رہے. یہ باتیں ظاہر کرتی ہیں کہ صوفی مت کا اور اپنے پیر حضرت نظام الدین اولیا کا ان پر کتنا گہرا پربھاؤ پڑا. کھیر، چرخہ، کتا اور ڈھول والا قصہ صرف اس بات کا ثبوت نہیں ہے کہ خسرو کتنے حاضر جواب تھے بلکہ اس بات کا بھی ثبوت ہے کہ وہ امیر کہلانے کے باوجود ایک ایسے فقیر تھے جنھیں سب مانتے تھے. کہتے ہیں کہ کچھ عورتیں پنگھٹ پر پانی بھر رہی تھیں. ادھر سے خسرو گذرے اور پانی پینے کے خیال سے کنوئیں کی طرف بڑھے. عورتوں نے خسرو کو آتے دیکھا تو خوش ہوکر آپس میں کہنے لگیں "کھسرو آوت ہیں، کھسرو آوت ہیں." خسرو نے قریب

पहुँच कर कहा, जरा पानी पिला दो. एक औरत बोली. काहे पिलावें कुछ कहो तो पिलावें खुसरोने कहा कि क्या कहूँ? एक बोली. चरखे पर कहो. दूसरी बोली. खीर पर कहो. तीसरी बोली. ढोल पर कहो. खुसरोने फ़ौरन कहा, "खीर पकाई जतन से चरखा दिया जला. कुत्ता आया खा गया, तू बैठी ढोल बजा. ला पानी पिला."

शाही दरबार में उठना बैठना और पनिहारिनों और भटियारिनों तक में इतना मक़बूल (सर्व प्रिय) होना कि वह बे तकल्लुफ़ी से फ़रमायश कर सकें और जब तक अपनी फ़रमायश पूरी न करा लें उस वक़्त तक पानी न पिलाएँ. यह ज़ाहिर करता है कि खुसरो हर दिल की ठंडक थे. हर महफ़िल की रौनक़ थे और हर घर का उजाला थे.

आज भी उनकी मक़बूलियत का यही हाल है. उत्तर भारत में शायद ही कोई घर हो जहाँ लड़की की रुख़सती (बिदाई) पर खुसरो के बाबुल न गाये जाते हों या बरसात की रुत में उनके सावन न छेड़े जाते हों. ब्याही लड़कियों के लिये अलग सावन कहे हैं और बिन ब्याही लड़कियों के लिये अलग. कहते हैं :—

जो पिया आवन कह गये, अजहूँ न आये स्वामी हो,

ऐ हो, जो पिया आवन कह गये.

आवन आवन कह गये—आये न बारह मास

ऐ हो, जो पिया आवन कह गये.

इसकी धुन भी अमीर खुसरो ही ने बिरवा रागमें बांधी है, पहेलियाँ और मुकरनियाँ तो अमीर खुसरो पर खतम हैं. शायद ही कोई

پهونچ کر کہا ذرا پانی پلا دو. ایک عورت بولی' کاهے پلاویں کچھ کہو تو پلاویں. خسرو نے کہا کہ کیا کہوں؟ ایک بولی' چرکھے پر کہو. دوسری بولی' کھیر پر کہو. تیسری بولی' ڈھول پر کہو. خسرو نے فوراً کہا' " کھیر پکائی جتن سے چرخا دیا جلا. کتا آیا کھا گیا تو بیٹھی ڈھول بجا. لا پانی پلا."

شاهی دربار میں اٹھنا بیٹھنا اور پنهارنوں اور بھٹهارنوں تک میں اتنا مقبول (سروپریہ) هونا کہ وہ بے تکلفی سے فرمائش کر سکیں اور جب تک اپنی فرمائش پوری نہ کرا لیں اس وقت تک پانی نہ پلائیں' یہ ظاهر کرتا ہے کہ خسرو هر دل کی ٹھنڈک تھے' هر محفل کی رونق تھے اور هر گھر کا اُجالا تھے.

آج بھی ان کی مقبولیت کا یہی حال ہے. اتر بھارت میں شاید هی کوئی گھر هو جہاں لڑکی کی رخصتی (بدائی) پر خسرو کے بابل نہ گائے جاتے هوں یا برسات کی رت میں ان کے ساون نہ چھیڑے جاتے هوں. بیاهی لڑکیوں کے لئے الگ ساون کہے هیں اور بن بیاهی لڑکیوں کے لئے الگ. کہتے هیں :—

جو پیا آون کہ گئے' اجہوں نہ آئے سوامی هو.

اے هو' جو پیا آون کہ گئے.

آون آون کہ گئے— آئے نہ بارہ ماس

اے هو' جو پیا آون کہ گئے

اس کی دھن بھی امیر خسرو هی نے بروا راگ میں باندھی ہے. پہیلیاں اور مکرنیاں تو امیر خسرو پر ختم هیں. شاید هی کوئی

हिन्दुस्तानी घराना हो जिसमें अमीर ख़ुसरो की पहेलियाँ न बुझाई जाती हों. कम से कम मैं ने तो अमीर ख़ुसरो का नाम सबसे पहले अपनी बूढ़ी दादी ही से सुना था. उन्हें न जाने कितनी पहेलियाँ याद थीं. जब " अमीर ख़ुसरो यूँ कहें " " अमीर ख़ुसरो यूँ कहें " सुनते सुनते मैं थक गया तो मैं ने एक दिन पूछा—" यह कौन हैं ? " कहने लगीं " एक फ़क़ीर थे. " मैंने फिर पूछा " अमीर भी फ़क़ीर भी ?" उन्होंने टालते हुए कहा " अमीर तो नाम है—थे फ़क़ीर." आज समझ में आता है कि सच मुच ख़ुसरो अमीर भी थे और फ़क़ीर भी.

उन में से दो मुकरनियाँ, जिनका नाम मुझे अब मालूम हुआ है, अब तक याद हैं :—

(१) सगरी रैन मोहे संग जागा
भोर भई तब बिछुड़न लागा.
उसके बिछड़े फाटत हिया
ऐ सखी साजन ना सखी दिया.

(२) वह आवे तब शादी होय.
उस बिन दूजा और न कोय.
मीठे लागे वाके बोल—ऐ सखी साजन ना सखी ढोल.

इस क़िस्म की पहेलियाँ, मुकरनियाँ, दोहे और न जाने क्या क्या चीज़ें ख़ुसरो ने कही हैं और कितनी कही हैं. मगर हमारी नाक़दरी ने जहाँ और चीज़ें मिट जाने दीं वहाँ ख़ुसरो का हिन्दी कलाम भी गँवा दिया. बस वही चीज़ें रह गई हैं जो सुन्दर होने के साथ साथ इतनी सख़्त जान भी थीं कि मिटाये न मिटें.

ہندستانی گھرانہ ہو جس میں امیر خسرو کی پہیلیاں نہ بجھائی جاتی ہوں . کم سے کم میں نے تو امیر خسرو کا نام سب سے پہلے اپنی بوڑھی دادی ہی سے سنا تھا . انہیں نہ جانے کتنی پہیلیاں یاد تھیں . جب "امیر خسرو یوں کہیں" "امیر خسرو یوں کہیں" سنتے سنتے میں تھک گیا تو میں نے ایک دن پوچھا — "یہ کون ہیں ؟" کہنے لگیں "ایک فقیر تھے" میں نے پھر پوچھا "امیر بھی فقیر بھی ؟" انہوں نے ٹالتے ہوئے کہا "امیر تو نام ہے — تھے فقیر ." آج سمجھ میں آتا ہے کہ سچ مچ خسرو امیر بھی تھے اور فقیر بھی .

ان میں سے دو مکرنیاں ، جن کا نام مجھے اب معلوم ہوا ہے ، اب تک یاد ہیں :—

(۱) سگری رین موہے سنگ جاگا
بھور بھئی تب بچھڑن لاگا
اس کے بچھڑے پھاٹت ہیا
اے سکھی ساجن . نا سکھی دیا

(۲) وہ آوے تب شادی ہوئے — اس بن دوجا اور نہ کوئے .
میٹھے لاگے واکے بول — اے سکھی ساجن . نا سکھی ڈھول .

اس قسم کی پہیلیاں ، مکرنیاں ، دوہے اور نہ جانے کیا کیا چیزیں خسرو نے کہی ہیں اور کتنی کہی ہیں . مگر ہماری ناقدری نے جہاں اور چیزیں مٹ جانے دیں وہاں خسرو کا ہندی کلام بھی گنوا دیا . بس وہی چیزیں رہ گئی ہیں جو سندر ہونے کے ساتھ ساتھ اتنی سخت جان بھی تھیں کہ مٹائے نہ مٹیں .

जनता की शायरी, जिसकी आजकल बड़ी चर्चा है, सच पूछो तो वही शायरी थी जो ख़ुसरो और जायसी कर गये और जनता के दिल में बिठा गये. यह नहीं कि जो रची तो जनता के नाम पर जाती है मगर ऐसी भाषा में और ऐसे कैंडे से कि जनता उस शायरी को समझ ही न सके, याद रखना और इस पर सर धुनना तो बाद की बात है. मेरा मतलब नये दौर के शायरों को घटाना नहीं है बल्कि उनका ध्यान इस तरफ़ खींचना है कि जनता उसी कलाम को याद रखती है जो जनता की भाषा में हो. जो इन्क़लाबी शायरी शाह नामे की ज़बान में की जाती है वह कालिज और यूनिवर्सिटी की चहार दीवारी के अन्दर ही और उसी वक़्त तक इन्क़लाबी शायरी कहलायेगी जब तक इन्क़लाब इन्क़लाब चीख़ने वाले बहुत हैं मगर इन्क़लाब का मतलब समझने वाले कम हैं.

मेरे विचार में तो यह आता है कि वह ख़ुसरो जिसने ईरान के सनम को अपने दिल से निकाल कर हिन्दुस्तान के साजन को अपने सीने से लगाया, जिसने एक सपाट मैदान में नई नई और सुन्दर से सुन्दर राहें निकालीं और शाही दरबार में रहते हुए भी अवाम के गीत गाये, आज के इन्क़लाबी शायरों से कहीं बड़ा इन्क़लाबी था. मगर ख़ुसरो शायर पहले था और शायर ही आख़िर में भी था. इसलिये वह इन्क़लाब भी शायरी ही की दुनिया में लाया. सब जानते हैं कि फ़ारसी शायरी में इश्क़ की बुनियाद मर्द की तरफ़ से क़ायम की जाती है. ख़ुसरो ने इस रीत को पलट दिया और अपनी गंगा जमुनी ग़ज़लों में हिन्दी शायरी के ढंग पर इश्क़ की बुनियाद

جنتا کی شاعری، جسکی آج کل بڑی چرچا ہے، سچ پوچھو تو وہی شاعری تھی جو خسرو اور جائسی کر گئے اور جنتا کے دل میں بٹھا گئے۔ یہ نہیں کہ جو رچی تو جنتا کے نام پر جاتی ہے مگر ایسی بھاشا میں اور ایسے ڈھنگ سے کہ جنتا اس شاعری کو سمجھ ہی نہ سکے۔ یاد رکھنا اور اس پر سر دھننا تو بعد کی بات ہے۔ میرا مطلب نئے دور کے شاعروں کو گھٹانا نہیں ہے بلکہ ان کا دھیان اس طرف کھینچنا ہے کہ جنتا اسی کلام کو یاد رکھتی ہے جو جنتا کی بھاشا میں ہو۔ جو انقلابی شاعری شاہ نامہ کی زبان میں کی جاتی ہے وہ کالج اور یونیورسٹی کی چہار دیواری کے اندر ہی اور اسی وقت تک انقلابی شاعری کہلائے گی جب تک انقلاب انقلاب چیخنے والے بہت ہیں مگر انقلاب کا مطلب سمجھنے والے کم ہیں۔

میرے وچار میں تو یہ آتا ہے کہ وہ خسرو جس نے ایران کے صنم کو اپنے دل سے نکال کر ہندوستان کے ساجن کو اپنے سینے سے لگایا، جس نے ایک سپاٹ میدان میں نئی نئی اور سندر سے سندر راہیں نکالیں اور شاہی دربار میں رہتے ہوئے بھی عوام کے گیت گائے، آج کے انقلابی شاعروں سے کہیں بڑا انقلابی تھا۔ مگر خسرو شاعر پہلے تھا اور شاعر ہی آخر میں بھی تھا اس لئے وہ انقلاب بھی شاعری ہی کی دنیا میں لایا۔ سب جانتے ہیں کہ فارسی شاعری میں عشق کی بنیاد مرد کی طرف سے قائم کی جاتی ہے۔ خسرو نے اس ریت کو پلٹ دیا اور اپنی گنگا جمنی غزلوں میں ہندی شاعری کے ڈھنگ پر عشق کی بنیاد

औरत की तरफ़ से क़ायम की. देखिये इस गंगा जमुनी कलाम में क्या मिठास है:—

ज़हाले मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल दुर आय नयना बनाये बतियाँ
कि ताबे हिज्रां नदारम ऐ जाँ न लेहो काहे लगाये छतियाँ.
शबाने हिज्रां दराज़ चूँ ज़ुल्फ़ रोज़े वसलत चो उम्र कोताह
(जुदाई की रातें बालों की तरह लम्बी हैं और मिलाप का दिन ज़िन्दगी की तरह ज़रा सा है.)
सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अंधेरी रतियाँ.
यकायक अज़दिल दो चश्मे जादू बसद फ़रेबम बबुर्द तसकीं
(कोई अपनी जादू भरी नज़र से मेरे दिल का चैन ले गया)
किसे पड़ी है जो जा सुनावे पियारे पी को हमारी बतियाँ.
चो शमा सोज़ाँ चो ज़र्रा हैरां ज़ मेह्‌रे आँ मह बगशतम आख़िर
(किसी के प्रेम में शमा की तरह घुल रही हूँ)
न नींद नयना न अङ्ग चैना न आप आवें न भेजें पतियाँ.

ख़ुसरो का छोटे से छोटा बयान भी उस वक़्त तक अधूरा रहेगा जब तक उसमें संगीत का ज़िक्र न हो. मौलाना शिबली ने एक पुरानी संस्कृत किताब के हवाले से, जो औरंगज़ेब के समय में तरजुमा करके राग दर्पन के नाम से फ़ारसी ज़बान में लाई गई, लिखा है कि अमीर ख़ुसरो संगीत में इस दर्जे को पहुँचे हुए थे कि उनको नायक का ख़िताब मिला. उस ज़माने में गाने के उस्तादों के यह दर्जे रखे गये थे. सब से छोटा दर्जा गायन, इसके बाद गन्धर्व, गुनी, पंडित और सब से बड़ा दर्जा नायक. अलाउद्दीन ख़िलजी के ज़माने के नायक एक गोपाल जी थे.

عورت کی طرف سے قائم کی. دیکھئے اس گنگا جمنی کلام میں کیا مٹھاس ہے :—

زحالِ مسکیں مکن تغافل درآئے نینا بنائے بتیاں
کہ تابِ ہجراں ندارم اے جاں نہ لیہو کاہے لگائے چھتیاں
شبانِ ہجراں دراز چوں زلف وروزِ وصلت چو عمر کوتاہ
(جدائی کی راتیں بالوں کی طرح لمبی ہیں اور ملاپ کا دن زندگی کی طرح ذرا سا ہے)
سکھی پیا کو جو میں نہ دیکھوں تو کیسے کاٹوں اندھیری رتیاں
یکایک از دل دو چشم جادو بصد فریبم ببرد تسکیں
(کوئی اپنی جادو بھری نظر سے میرے دل کا چین لے گیا)
کسے پڑی ہے جو جا سناوے پیارے پی کو ہماری بتیاں
چو شمع سوزاں چو ذرہ حیراں ز مہرِ آں مہ بگشتم آخر
(کسی کے پریم میں شمع کی طرح گھل رہی ہوں)
نہ نیند نینا نہ انگ چینا نہ آپ آویں نہ بھیجیں پتیاں

خسرو کا چھوٹے سے چھوٹا بیان بھی اس وقت تک ادھورا رہے گا جب تک اس میں سنگیت کا ذکر نہ ہو. مولانا شبلی نے ایک پرانی سنسکرت کتاب کے حوالے سے جو اورنگزیب کے سمے میں ترجمہ کرکے راگ درپن کے نام سے فارسی زبان میں لائی گئی، لکھا ہے کہ امیر خسرو سنگیت میں اس درجہ کو پہونچے ہوئے تھے کہ ان کو نایک کا خطاب ملا تھا. اس زمانے میں گانے کے استادوں کے یہ درجے رکھے گئے تھے. سب سے چھوٹا درجہ گاین، اس کے بعد گندھرو، گنی، پنڈت اور سب سے بڑا درجہ نایک. علاء الدین خلجی کے زمانہ کے نایک ایک گوپال جی تھے.

उनके न जाने कितने चेले थे. जिन में से बड़े बड़े शागिर्द बन के संगीत सिंघासन को अपने कन्धों पर ले कर चला करते थे और वह उस पर संगीत के राजा की हैसियत से बैठे रहते थे. जब अलाउद्दीन खिलजी ने उनको अपने दरबार में बुलाया तो वहाँ भी वह इसी शान से पहुँचे. सात दिन की महफ़िल हुई जिसमें हर रोज़ नायक गोपाल ने एक नया राग सुनाया. अमीर ख़ुसरो के बारे में कहा जाता है कि वह छै दिन तक कहीं छिपे बैठे रहे और नायक गोपाल को सुनते रहे. जब सातवें दिन वह सामने आये तो गोपाल जी ने कहा कुछ आप भी सुनायें. ख़ुसरो ने वह छहो राग सुना दिये जो गोपाल जी ने बाँधे थे. इसके बाद कहा कि यह तो आम राग थे. अब वह राग सुनिये जो मैंने बाँधा है. और कुछ ऐसा राग सुनाया कि गोपाल जी अपने सिंघासन से उठ कर खड़े हो गये और ख़ुसरो को गले से लगा लिया. इसके बाद से अमीर ख़ुसरो भी नायक कहलाने लगे.

यह कहानी कहाँ तक सच्ची है इसको तो ख़ुदा ही जाने मगर इससे इतना पता ज़रूर चलता है कि अमीर ख़ुसरो को गाने में इतनी शोहरत हासिल थी कि गोपाल जी ने भी उनसे कुछ सुनने की फ़रमाइश की. इसके अलावा राग दर्पन में एक बड़ी सी फ़ेहरिस्त दी हुई है जिसमें बताया गया है कि अमीर ख़ुसरो ने हिन्दुस्तानी और ईरानी रागों को मिला कर कौन कौन से राग ईजाद किये. ख़ुद अमीर ख़ुसरो ने भी यह लिखा है कि वह संगीत विद्या से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे. अमीर ख़ुसरो अपने बारे में कभी कोई बात

ان کے نہ جانے کتنے چیلے تھے جن میں سے بڑے بڑے شاگرد ان کے سنگیت سنگھاسن کو اپنے کندھوں پر لے کر چلا کرتے تھے اور وہ اس پر سنگیت کے راجہ کی حیثیت سے بیٹھے رہتے تھے۔ جب علاء الدین خلجی نے ان کو اپنے دربار میں بلایا تو وہاں بھی وہ اسی شان سے پہونچے۔ سات دن کی محفل ہوئی جس میں ہر روز نایک گوپال نے ایک نیا راگ سنایا۔ امیر خسرو کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ وہ چھ دن تک کہیں چھپے بیٹھے رہے اور نایک گوپال کو سنتے رہے۔ جب ساتویں دن وہ سامنے آئے تو گوپال جی نے کہا کچھ آپ بھی سنائیں۔ خسرو نے وہ چھہو راگ سنا دئے جو گوپال جی نے باندھے تھے۔ اس کے بعد کہا کہ یہ تو عام راگ تھے۔ اب وہ راگ سنئے جو میں نے باندھا ہے۔ اور کچھ ایسا راگ سنایا کہ گوپال جی اپنے سنگھاسن سے اٹھ کر کھڑے ہو گئے اور خسرو کو گلے سے لگا لیا۔ اس کے بعد سے امیر خسرو بھی نایک کہلانے لگے۔

یہ کہانی کہاں تک سچی ہے اس کو تو خدا ہی جانے مگر اس سے اتنا پتہ ضرور چلتا ہے کہ امیر خسرو کو گانے میں اتنی شہرت حاصل تھی کہ گوپال جی نے بھی ان سے کچھ سننے کی فرمائش کی۔ اس کے علاوہ راگ درپن میں ایک بڑی سی فہرست دی ہوئی ہے جس میں بتایا گیا ہے کہ امیر خسرو نے ہندستانی اور ایرانی راگوں کو ملا کر کون کون سے راگ ایجاد کئے۔ خود امیر خسرو نے بھی یہ لکھا ہے کہ وہ سنگیت ودیا سے اچھی طرح واقف تھے۔ امیر خسرو اپنے بارے میں کبھی کوئی بات

बढ़ा कर नहीं कहा करते थे. सितार के बारे में तो यह आम तौर पर मशहूर है कि यह ख़ुसरो ही को ईजाद है.

मुख़्तसर यह कि हिन्दुस्तान और ईरान की शायद ही कोई विद्या या कला हो जिसमें अमीर ख़ुसरो को किसी न किसी हद तक कमाल नहीं हासिल था. और सिर्फ़ ऐसा ही शख़्स, जिसके कमाल का यह हाल हो कि जिसकी बात छेड़ दे मालूम हो उसी का आलम है, वह गंगा जमुनी तहज़ीब पेश कर सकता था जो उस वक़्त ढल रही थी और बन रही थी.

ख़ुसरो की मौत भी एक प्रेमी की मौत हुई. वह ग़यासुद्दीन तुग़लक़ के साथ तिरहुत की लड़ाई पर गये हुए थे कि दिल्ली में उनके पीर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया इस दुनिया से कूच कर गये. जब ख़ुसरो वापस हुए और उन्हें मालूम हुआ कि हज़रत चल बसे तो वह पागलों की तरह उनके मज़ार पर गये, यह दोहा कहा और बेहोश हो कर गिर पड़े.

गोरी सोये सेज पर और मुख पर डारे केस
चल ख़ुसरो घर अपने रैन भई सब देस

उनके सालाना उर्स के लिहाज़ से ख़ुसरो ने ईद की १८, तारीख़ सन १२६७ ई० में इन्तक़ाल किया.

بڑھا کر نہیں کہا کرتے تھے . ستار کے بارے میں تو یہ عام طور پر مشہور ہے کہ یہ خسرو ہی کی ایجاد ہے .

مختصر یہ کہ ہندستان اور ایران کی شاید ہی کوئی ودیا یا کلا ہو جس میں امیر خسرو کو کسی نہ کسی حد تک کمال نہیں حاصل تھا . اور صرف ایسا ہی شخص جس کے کمال کا یہ حال ہو کہ جس کی بات چھیڑ دے معلوم ہو اسی کا عالم ہے ، وہ گنگا جمنی تہذیب پیش کر سکتا تھا جو اس وقت ڈھل رہی تھی اور بن رہی تھی .

خسرو کی موت بھی ایک پریمی کی موت ہوئی . وہ غیاث الدین تغلق کے ساتھ ترہت کی لڑائی پر گئے ہوئے تھے کہ دلی میں انکے پیر حضرت نظام الدین اولیا اس دنیا سے کوچ کر گئے . جب خسرو واپس ہوئے اور انہیں معلوم ہوا کہ حضرت چل بسے تو وہ پاگلوں کی طرح ان کے مزار پر گئے ، یہ دوہا کہا اور بے ہوش ہوکر گر پڑے .

گوری سوئے سیج پر اور مکھ پر ڈارے کیس
چل خسرو گھر اپنے رین بھئی سب دیس

ان کے سالانہ عرس کے لحاظ سے خسرو نے عید کی ۱۸ تاریخ سن ۱۲۶۷ع میں انتقال کیا .

कश्मीर का अमन और सर डिक्सन

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

आजादी मिलने के बाद कश्मीर, लगातार तीन चार साल तक लूट खसोट, मार धाड़, क़त्ल, ख़ूंरेज़ी, ग़ारत गरी और तबाहकारियों का अड्डा बना रहा है, अब कुछ दिन से वहाँ की सियासत का रंग बदलता मालूम हो रहा है. वहाँ की आग भी धीरे धीरे मन्दी पड़ रही है और फ़िज़ा भी हौले हौले ठन्डी होती जा रही है— कश्मीर की सियासत पर नेहरू-लियाक़त की मुलाक़ात का खास असर है. वहाँ की आग और फ़िज़ा में एका एकी जो तब्दीली हुई और जो फ़रक़ पड़ा है वह उसी मुलाक़ात के कारन है.

कहा गया है कि नेहरू-लियाक़त समझौता मोजज़ा (चमत्कार) है.

नेहरू-लियाक़त समझौता मोजज़ा नहीं है. मोजज़े का ताल्लुक़ मज़हबसे होता है और सियासत का खुश्क दामन मज़हब की नेमत से खाली है. इस लिये सियासी मुआहदा मोजज़ा नहीं. नेहरू लियाक़त मोआहदा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की आज़ादीके इतिहास का वह तारीखी वरक़ है जिसके न होते हुए आज़ादी बेजान और बे रौनक़ रह जाती, नातमाम और अधूरी रह जाती, या यह कि इतिहास का क़ीमती और निहायत ज़रूरी पन्ना खाली और सादा रह जाता.

नेहरू-लियाक़त समझौता अलबत्ता अवाम की जिन्दगियों पर अमन शान्ति की लहर दौड़ने वाला और दिलों की धड़कन दूर करने

کشمیر کا امن اور سر ڈکسن

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

آزادی ملنے کے بعد کشمیر، لگاتار تین چار سال تک لوٹ کھسوٹ، مار دھاڑ، قتل، خونریزی، غارتگری اور تباہ کاریوں کا اڈا بنا رہا ہے۔ اب کچھ دن سے وہاں کی سیاست کا رنگ بدلتا معلوم ہو رہا ہے۔ وہاں کی آگ بھی دھیرے دھیرے مندی پڑ رہی ہے اور فضا بھی ہولے ہولے ٹھنڈی ہوتی جا رہی ہے — کشمیر کی سیاست پر نہرو لیاقت کی ملاقات کا خاص اثر ہے۔ وہاں کی آگ اور فضا میں ایکا ایکی جو تبدیلی ہوئی اور جو فرق پڑا ہے وہ اسی ملاقات کے کارن ہیں۔

کہا گیا ہے کہ نہرو لیاقت سمجھوتہ معجزہ (چمتکار) ہے۔

نہرو لیاقت سمجھوتہ معجزہ نہیں ہے۔ معجزے کا تعلق مذہب سے ہوتا ہے اور سیاست کا خشک دامن مذہب کی نعمت سے خالی ہے۔ اس لئے سیاسی معاہدہ معجزہ نہیں۔ نہرو لیاقت معاہدہ ہندستان اور پاکستان کی آزادی کے اتہاس کا وہ تاریخی ورق ہے جس کے نہ ہوتے ہوئے آزادی بے جان اور بے رونق رہ جاتی، نا تمام اور ادھوری رہ جاتی یا یہ کہ اتہاس کا قیمتی اور نہایت ضروری پنا خالی اور سادہ رہ جاتا۔

نہرو لیاقت سمجھوتہ البتہ عوام کی زندگیوں پر امن شانتی کی لہر دوڑانے والا اور دلوں کی دھڑکن دور کرنے

वाला एक अच्छा असर हो सकता है अगर वह अपनी रूह को बाक़ी रखे. ऐसी ही हालत में यह भी इमकान है कि इसकी बरकत से कश्मीर के मैदान का फ़ौजी इन्सान ख़ूनी लबादा उतार कर अमन का लिबास पहने और जंग का झंडा गिराकर अमन का बढ़वारा खड़ा करे—और ऐसीही सूरत में यह भी गुमान कर लेना आसान हो जाता है कि कश्मीरकी क़िस्मत का सितारा जो ख़ून के बादलों में डूबा हुआ था, सुलह और अमन के जल से स्नान कर के दुनिया को दर्शन दे. यू० एन० ओ० से सर डिक्सन अमन का मिशन लेकर हिन्दुस्तान आचुके हैं—पिछले दिनों की बात है कि जून के मास में शादाब कश्मीर के आकाश तले उनका स्वागत हुआ जहाँ उन्होंने काफ़ी दिन क़याम कर के ख़ूब जन्नती डिनर उड़ाये, जन्नती फ़्रूट खाये. जन्नती शराबें पीं.

नेहरू-लियाक़त समझौता जब अमल में आ चुका है तो फिर कश्मीर के अमन के बारे में किसी दूसरी या तीसरी ताक़त या शख़्सियत का नाम, बराये नाम ही रह जाता है. फिर किसी की ज़रूरत ही बाक़ी नहीं रहती.

आज सारी दुनिया में जम्हूरियत के डंके बज रहे हैं. फिर भी आपस में झगड़े क़िस्से चल रहे हैं.

जम्हूरी दुनिया की जंग, राय की जंग होती है. याद रहे कि जंग के अन्दर झूट, मक्कारी, फ़रेब कारी, धोके बाज़ी सब जायज़ है.

आजका दौर सियासतका दौर है. भूलना न चाहिये कि सियासत में "पालिसी" को वहीदर्जा और अख़्तियार हासिल है जो जंग में मक्कारी, बे ईमानी और चाल बाज़ी को.

والا ایک اچھا اثر ہوسکتا ہے اگر وہ اپنی روح کو باقی رکھے . ایسی ہی حالت میں یہ بھی امکان ہے کہ اسکی برکت سے کشمیر کے میدان کا فوجی انسان خونی لبادہ اتار کر امن کا لباس پہنے اور جنگ کا جھنڈا گرا کر امن کا باڑا کھڑا کرے — اور ایسی ہی صورت میں یہ بھی گمان کرلینا آسان ہوجاتا ہے کہ کشمیر کی قسمت کا ستارہ جو خون کے بادلوں میں ڈوبا ہوا تھا' صلح اور امن کے جل سے اشنان کرکے دنیا کو درشن دے . یو . این . او . سے سر ڈکسن امن کا مشن لیکر ہندستان آچکے ہیں — پچھلے دنوں کی بات ہے کہ جون کے ماس میں شاداب کشمیر کے آکاش تلے ان کا سواگت ہوا . جہاں انہوں نے کافی دن قیام کرکے خوب جنتی ڈنر اڑائے' جنتی فروٹ کھائے' جنتی شرابیں پیں .

نہرو لیاقت سمجھوتہ جب عمل میں آچکا ہے تو پھر کشمیر کے امن کے بارے میں کسی دوسری یا تیسری طاقت یا شخصیت کا نام' برائے نام ہی رہ جاتا ہے . پھر کسی کی ضرورت ہی باقی نہیں رہتی .

آج ساری دنیا میں جمہوریت کے ڈنکے بج رہے ہیں . پھر بھی آپس میں جھگڑے قصے چل رہے ہیں .

جمہوری دنیا کی جنگ' رائے کی جنگ ہوتی ہے . یاد رہے کہ جنگ کے اندر جھوٹ' مکاری' فریب کاری' دھوکے بازی سب جائز ہے .

آج کا دور سیاست کا دور ہے . بھولنا نہ چاہئے کہ سیاست میں '' پالیسی '' کو وہی درجہ اور اختیار حاصل ہے جو جنگ میں مکاری' بے ایمانی اور چالبازی کو .

ऐसे ही समय तमाम जायज और नाजायज तरकीबें और चालें काम में लाई जाती हैं. ऐसी सूरत और नाजुक हालत में वक़्त की सियासत पर सच्ची राय जाहिर करना मुश्किल तो नहीं है पर मसलेहत के खिलाफ़ है--खास कर किसी ऐसी रियासत पर जिसकी सियासत दो रुखी हो.

देखा यह जा रहा है कि जहाँ सच बात कही गई वहीं गरदन मारी गई. अगर किसी की गरदन फ़ालतू हो तो मुज़ायक़ा नहीं लेकिन हमको अपनी प्यारी गरदन बचाने के लिये मुनासिब और बेहतर यही मालूम होता है कि जब तक यह बादल न छट जायँ अपनी राय बचाकर रखी जाये.

कोई शक नहीं कि कश्मीर की सियासत बड़ी पेचीदा है और वहाँ का मामला बुरी तरह उलझा हुआ है. मगर शुक्र है कि अब सुलझने के क़ाबिल होता जा रहा है. देश की पुरानी गाँठे ढीली पड़ रही हैं और मोहब्बत की नई नई राहें खुलती जा रही हैं. यही कारन है कि दुनिया की आँखें बड़ी बेचैनी के साथ कश्मीर की तरफ़ लगी हुई हैं और उसका हश्र (परिनाम) हश्र (क़यामत) से पहले देखना चाहती हैं.

यह तय है कि अवाम की ठोस और आज़ाद राय पर आज़ाद कश्मीर की क़िस्मत का फ़ैसला होने को है—देखना यह है कि कश्मीर की जन्नत या जन्नत की सियासत का ऊँट किस करवट बैठता है.

कश्मीर की क़िस्मत के फ़ैसले के लिये सर ओवन डिक्सन से पहले कितने ही कमीशन अमन का सन्देश लेकर पच्छिम देश से कश्मीर आये और गये लेकिन उनकी दिमाग़ी और सियासी क़ाबलियत

ایسے ھی سمے تمام جائز اور ناجائز ترکیبیں اور چالیں کام میں لائی جاتی ھیں . ایسی صورت اور نازک حالت میں وقت کی سیاست پر سچی رائے ظاھر کرنا مشکل تو نہیں ھے پر مصلحت کے خلاف ھے — خاصکر کسی ایسی ریاست پر جس کی سیاست دو رخی ھو .

دیکھا یہ جا رھا ھے کہ جہاں سچ بات کہی گئی وھیں گردن ماری گئی . اگر کسی کی گردن فالتو ھو تو مضائقہ نہیں لیکن ھم کو اپنی پیاری گردن بچانے کے لئے مناسب اور بہتر یہی معلوم ھوتا ھے کہ جبتک یہ بادل نہ چھٹ جائیں اپنی رائے بچاکر رکھی جائے .

کوئی شک نہیں کہ کشمیر کی سیاست بڑی پیچیدہ ھے اور وھاں کا معاملہ بری طرح الجھا ھوا ھے . مگر شکر ھے کہ اب سلجھنے کے قابل ھوتا جارھا ھے . دیش کی پرانی گانٹھیں ڈھیلی پڑ رھی ھیں اور محبت کی نئی نئی راھیں کھلتی جارھی ھیں . یہی کارن ھے کہ دنیا کی آنکھیں بڑی بے چینی کے ساتھ کشمیر کی طرف لگی ھوئی ھیں اور اس کا حشر (پرنام) حشر (قیامت) سے پہلے دیکھنا چاھتی ھیں .

یہ طے ھے کہ عوام کی ٹھوس اور آزاد رائے پر آزاد کشمیر کی قسمت کا فیصلہ ھونے کو ھے — دیکھنا یہ ھے کہ کشمیر کی جنت یا جنت کی سیاست کا اونٹ کس کروٹ بیٹھتا ھے .

کشمیر کی قسمت کے فیصلے کے لئے سر اوون ڈکسن سے پہلے کتنے ھی کمیشن امن کا سندیش لے کر پچھم دیش سے کشمیر آئے اور گئے لیکن ان کی دماغی اور سیاسی قابلیت

का यह कमाल ज़रूर तारीफ़ के क़ाबिल है कि दोनों फ़ौजों में लड़ाई भी बराबर जारी रही और ख़ून भी दोनों तरफ़ बराबर बहता रहा — उन कमीशनों पर लखों रुपया क़ौम के ख़ज़ाने से जो ख़र्च हुआ है—वह रुपया अमन के नाम लिखा जाये या उनकी सैर के नाम.

नेहरू-लियाक़त समझौता बहुत ख़ूब, बड़ा मुबारक! लेकिन दोनों फ़ौजें अब भी अपने अपने मोरचों पर कील काँटे से होशियार हैं, उनकी नंगी तलवारें अचल और चुप ज़रूर हैं मगर अवाम की ज़बान की दुधारी तलवारें बाराबर काट कर रही हैं. और वह उन बेचारों को भी घायल कर रही हैं जो सुबह शाम थोड़ी देर के लिये किसी तरफ़ हवाख़ोरी और चहलक़दमी के लिये निकल जाया करते हैं, या जो कोई थका माँदा "बे आराम और बे इतमीनान इन्सान" किसी- ठन्डे वक़्त लाल क़िले के लान या मैदान में कभी कभी जा कर बैठ जाया करता है.

सर डिक्सन ने शहर कश्मीर के नगर नगर और श्रीनगर का दौरा करके तमाम कश्मीर को अमन का पैग़ाम पहुँचाया. वही पैग़ाम वादी वादी गूँजा.

बे शक उनकी ज़बान से अमन का नाम निकला और उनके होठों से अमन का पैग़ाम फैला — पर हमें क्या ख़बर कि उनके सीने में क्या छिपा है?

पयामे अमन होटों पर, ख़रोशे जंग सीने में
ज़बाँ से अमन का प्रचार, दिल से जंग की ख़ाहिश.

हम फिर कह सकते हैं कि डिक्सन की निगाहमें एक ख़ास नुक़ते की तलाश है और उनके दिमाग़ में एक ख़ास मोरचे का ख़याल है.

کا یہ کمال ضرور تعریف کے قابل ہے کہ دونوں فوجوں میں لڑائی بھی برابر جاری رہی اور خون بھی دونوں طرف برابر بہتا رہا — ان کمیشنوں پر لاکھوں روپیہ قوم کے خزانے سے جو خرچ ہوا ہے — وہ روپیہ امن کے نام لکھا جائے یا ان کی سیر کے نام.

نہرو لیاقت سمجھوتہ بہت خوب، بڑا مبارک! لیکن دونوں فوجیں اب بھی اپنے اپنے مورچوں پر کیل کانٹے سے ہشیار ہیں، ان کی ننگی تلواریں اچل اور چپ ضرور ہیں مگر عوام کی زبان کی دو دھاری تلواریں برابر کاٹ کر رہی ہیں. اور وہ ان بیچاروں کو بھی گھائل کر رہی ہیں جو صبح شام تھوڑی دیر کے لئے کسی طرف ہوا خوری اور چہل قدمی کے لئے نکل جایا کرتے ہیں یا جو کوئی تھکا ماندہ "بے آرام اور بے اطمینان انسان" کسی ٹھنڈے وقت لال قلعے کی لان یا میدان میں کبھی کبھی جاکر بیٹھ جایا کرتا ہے.

سر ڈکسن نے شہر کشمیر کے نگر نگر اور سری نگر کا دورہ کرکے تمام کشمیر کو امن کا پیغام پہونچایا — وہی پیغام وادی وادی گونجا.

بے شک اُن کی زبان سے امن کا نام نکلا اور ان کے ہونٹوں سے امن کا پیغام پھیلا — پر ہمیں کیا خبر کہ ان کے سینے میں کیا چھپا ہے؟

پیام امن ہونٹوں پر، خروش جنگ سینے میں
زبان سے امن کا پرچار، دل سے جنگ کی خواہش.

ہم پھر کہہ سکتے ہیں کہ ڈکسن کی نگاہ میں ایک خاص نقطے کی تلاش ہے اور ان کے دماغ میں ایک خاص مورچے کا خیال ہے.

और यह बात तो साफ़ है कि अमरीकन ब्लाक रूस के खिलाफ़ है.

लेकिन देखो तो सही !

कहाँ का आदमी, कहाँ आकर डोरे डाले और कहाँ कहाँ.

कहाँ का वासी, कहाँ से जाल फेंके और किधर किधर.

यह न सिर्फ़ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिये खतरनाक है बल्कि दुनिया के अमन को ग़ारत करने वाला ज़हरीला कार्य क्रम !

इन तमाम हालात को देखने और समझने के बाद हमें डर है कि—

कश्मीर का भविष्य भयानक है.

कश्मीर का अमन ख़तरे में है.

कश्मीर का फ़ैसला खटाई में है—और

कश्मीर जन्नत निशान में नरक का निरमान है.

—अब रहा मुआहदा (यानी नेहरू लियाक़त पैक्ट) जब मुआहदा जन्म ले चुका है तो उसको भी अपनी आज़ादी के राज में बदलते बदलाते हालात के अनुसार आगे पीछे हटनेका अधिकार होना चाहिये. उसको भी अपना जीवन बनाये रखने के लिये बात का रुख और खुद का पहलू बदलने की ज़रूरत है. जब कि हर चीज़ बदल रही है और बहुत कुछ बदल चुकी है. ऐसी दशा में अच्छा है कि—वह भी अपना मिज़ाज बदले और जहाँ ज़रूरत हो वहाँ अलफ़ाज़ बदले—ऐसा करने से वह ज़्यादा सुन्दर और अच्छे रूप में सामने आ सकेगा और नया जीवन ले कर नई शक्ति पा सकेगा.

اور یہ بات تو صاف ہے کہ امریکن بلاک روس کے خلاف ہے .

لیکن دیکھو تو سہی !

کہاں کا آدمی، کہاں آکر ڈورے ڈالے اور کہاں کہاں .

کہاں کا واسی، کہاں سے جال پھینکے اور کدھر کدھر .

یہ نہ صرف ہندستان اور پاکستان کے لئے خطرناک ہے بلکہ دنیا کے امن کو غارت کرنے والا زہریلا کاریہ کرم !

ان تمام حالات کو دیکھنے اور سمجھنے کے بعد ہمیں ڈر ہے کہ —

کشمیر کا بھوشیہ بھیانک ہے .

کشمیر کا امن خطرے میں ہے .

کشمیر کا فیصلہ کھٹائی میں ہے —— اور

کشمیر جنت نشان میں نرک کا نرمان ہے .

—— اب رہا معاهدہ (یعنی نہرو لیاقت پیکٹ) جب معاهدہ جنم لے چکا ہے تو اس کو بھی اپنی آزادی کے راج میں بدلتے بدلاتے حالات کے انوسار آگے پیچھے ہٹنے کا ادھیکار ہونا چاہئے . اس کو بھی اپنا جیون بنائے رکھنے کے لئے بات کا رخ اور خود کا پہلو بدلنے کی ضرورت ہے . جبکہ ہر چیز بدل رہی ہے اور بہت کچھ بدل چکی ہے . ایسی دشا میں اچھا ہے کہ — وہ بھی اپنا مزاج بدلے اور جہاں ضرورت ہو وہاں الفاظ بدلے — ایسا کرنے سے وہ زیادہ سندر اور اچھے روپ میں سامنے آسکیگا اور نیا جیون لے کر نئی شکتی پاسکے گا .

उस वक़्त जब जंग ख़त्म हुई है और अमन का ढोल पिटा है. जैसे ही हमारे कानों में अमन की आवाज़ पड़ी थी हमने उसी वक़्त अचरजके साथ यह सवाल किया था—क्या दुनिया में सचमुच अमन है? और फिर ख़ुद ही इस बात का जवाब दिया था—इन शब्दों में.

• "हाँ हाँ अमन है लेकिन इसमें छिपी एक और जंग है. अमन एक हसीन आस्तीन है जिसमें बे हद बाँकपन है मगर उसके अन्दर एक ख़ूबसूरत साँपिन है. वही डसने वाली नागन है—उसके नाम में शान्ति की लहर है जिसके अन्दर विलायती जहर है"

आजसे साढ़े चार साल पहले अमन के बारे में हमने अपना जो विचार प्रकट किया था और अमन की गोद में जो नक़्शा भविष्य का पेश किया था आज वह हू बहू सामने मौजूद है—अमन की वही साँपिन पच्छिम की हसीन आस्तीन से लहराती और फन मारती निकल खड़ी हुई है, जिसका जहर फ़िज़ा में फैलना और फ़िज़ा का जहरीला होना लाज़मी है—

अमन अमन की पुकार के बाद जंग का बिगुल —

इससे दिलों का निफ़ाक़ और दिलों के अन्दर अदावत की परवरिश का भेद खुलता है.

सच की कमी का पता चलता है और सचाई में झूट का राज़ मालूम होता है.

अब किसी क़ौम को अपनी दौलत और शक्ति पर घमन्ड होता है. साइन्स और ईजाद पर घमन्ड होता है, मशीन और आलात पर

* "आज का समाँ और ज़ख़्मी राज नीति" — 'नया हिन्द' दिसम्बर सन् ४६. सफ़ा ५६५.

اس وقت جب جنگ ختم ہوئی ہے اور امن کا ڈھول پٹا ہے. جیسے ہی ہمارے کانوں میں امن کی آواز پڑی تھی ہم نے اسی وقت اچرج کے ساتھ یہ سوال کیا تھا — کیا دنیا میں سچ مچ امن ہے؟ اور پھر خود ہی اس کا جواب دیا تھا — ان شبدوں میں.

• "ہاں ہاں امن ہے لیکن اس میں چھپی ایک اور جنگ ہے. امن ایک حسین آستین ہے جس میں بے حد بانکپن ہے مگر اس کے اندر ایک خوبصورت سانپن ہے. وہی ڈسنے والی ناگن ہے — اس کے نام میں شانتی کی لہر ہے جس کے اندر ولایتی زہر ہے."

آج سے ساڑھے چار سال پہلے امن کے بارے میں ہم نے اپنا جو وچار پرکٹ کیا تھا اور امن کی گود میں جو نقشہ بھوشیہ کا پیش کیا تھا، آج وہ ہو بہو سامنے موجود ہے — امن کی وہی سانپن پچھم کی حسین آستین سے لہراتی اور پھن مارتی نکل کھڑی ہوئی ہے، جس کا زہر فضا میں پھیلنا اور فضا کا زہریلا ہونا لازمی ہے —

امن امن کی پکار کے بعد جنگ کا بگل —

اس سے دلوں کا نفاق اور دلوں کے اندر عداوت کی پرورش کا بھید کھلتا ہے.

سچ کی کمی کا پتہ چلتا ہے اور سچائی میں جھوٹ کا راز معلوم ہوتا ہے.

جب کسی قوم کو اپنی دولت اور شکتی پر گھمنڈ ہوتا ہے، سائنس اور ایجاد پر گھمنڈ ہوتا ہے، مشین اور آلات پر

* "آج کا سماں اور زخمی راج نیت" - 'نیا ھند' - دسمبر سن ۴۶ء صفحہ ۵۶۵

घमन्ड होता है, पेट्रोल और जहाज़ पर घमंड होता है या ऐटम के कनों पर घमन्ड होता है तो उसके दिमाग़ में एक तरह का बल खाता हुआ जोश उठता है. दूसरे शब्दों में यूँ समझना चाहिये कि उसके दिमाग़ में एक तरह का फ़तूर पैदा हो जाता है, यानी इन्सानी विवेक जाता है और जनून उसके सर पर सवार हो जाता है. जिसके कारन वह ख़ुद ब ख़ुद अपना सर पहाड़ों पर दे दे मारता है—यहाँ तक कि अगर उसके सामने कोई चट्टान या फ़ौलादी इन्सान भी आ जाये तो वह उस से टक्कर लेने की ठान लेता है. यह सब कुछ उसकी हकूमत पसन्दी और ताना शाही का नतीजा होता है जो उसके दिमाग़ में छया हुआ होता है. परन्तु जब नशा उतर जाता है तो उसको ख़ुद एक तरह की कमज़ोरी और पशेमानी महसूस होती है. लेकिन यह अजीब बात है कि ऐसा ही मनुष्य अपने आप को दुनिया का सब से बड़ा आदमी मनवाता है और दुनिया की ज़बान से अपने आप को "सच्चा आदमी" कहलवाने में सोलह आने कामयाब होता है. चाहे सच और इन्साफ़ की तराज़ू में वह पूरा न उतर रहा हो.

ऐटम पर बल और तबाहकारी के सामान.
दौलत पर घमन्ड और मशीनों पर ईमान.

जो ईश्वर की शक्ति और क़ुदरत को भूल कर दूसरों को तबाह बरबाद और नेस्त नाबूद करने का बीड़ा उठाता है, ईश्वर उसका बेड़ा डुबाता है. मिस्र में नील नदी के किनारे जाकर ज़रा खड़े तो हो जाओ—उसकी एक एक बूंद गवाही देगी—वह शोर मचा कर और ... —हाँ हाँ यही वह नदी है.

گھمنڈ ہوتا ہے' پٹرول اور جہاز پر گھمنڈ ہوتا ہے یا ایٹم کے کنوں پر گھمنڈ ہوتا ہے تو اس کے دماغ میں ایک طرح کا بل کھاتا ہوا جوش اٹھتا ہے. دوسرے شبدوں میں یوں سمجھنا چاہئے کہ اس کے دماغ میں ایک طرح کا فتور پیدا ہوجاتا ہے' یعنی انسانی وویک جاتا ہے اور جنون اس کے سر پر سوار ہوجاتا ہے. جس کے کارن وہ خود بخود اپنا سر پہاڑوں پر دے دے مارتا ہے -- یہاں تک کہ اگر اس کے سامنے کوئی چٹان یا فولادی انسان بھی آجائے تو وہ اس سے ٹکر لینے کی ٹھان لیتا ہے. یہ سب کچھ اس کی حکومت پسندی اور تانا شاہی کا نتیجہ ہوتا ہے جو اس کے دماغ میں چھایا ہوا ہوتا ہے. پرنتو جب نشہ اتر جاتا ہے تو اس کو خود ایک طرح کی کمزوری اور پشیمانی محسوس ہوتی ہے. لیکن یہ عجیب بات ہے کہ ایسا ہی منشیہ اپنے آپ کو دنیا کا سب سے بڑا آدمی منواتا ہے اور دنیا کی زبان سے اپنے آپ کو "سچا آدمی" کہلوانے میں سولہ آنے کامیاب ہوتا ہے. چاہے سچ اور انصاف کی ترازو میں وہ پورا نہ اتر رہا ہو.

ایٹم پر بل اور تباہ کاری کے سامان.
دولت پر گھمنڈ اور مشینوں پر ایمان.

جو ایشور کی شکتی اور قدرت کو بھول کر دوسروں کو تباہ برباد اور نیست نابود کرنے کا بیڑا اٹھاتا ہے' ایشور اس کا بیڑا ڈباتا ہے — مصر میں نیل ندی کے کنارے جاکر ذرا کھڑے تو ہوجاؤ — اس کی ایک ایک بوند گواہی دے گی —— وہ شور مچاکر اور سر اٹھا اٹھا کر کہے گی — ہاں ہاں یہی وہ ندی ہے.

औरहाँ !

मैं ही वह नदी हूँ जहाँ अत्याचारी और घमंडी, ईश्वर की ताक़त और क़ुदरत का नास्तिक और—ख़ुदाई का दावा करने वाले फ़िरऔन का बेड़ा ग़रक़ हुआ है और वह घमंड और अत्याचार का देवता अपने किरदार को पहुँचा है.

दूर क्यों जाओ ? हिटलर की ताज़ा मिसाल सामने है जो कल की बात है और जो आज के बच्चे बच्चे को याद है. फिर भी हम देख रहे हैं कि इस थोड़े अरसे में हर देश और हर मुल्क में कितने नये नये फ़िरऔन और हिटलर पैदा हो गये हैं. और जो कल तक हिटलर के कट्टर दुश्मन थे वही आज हिटलरी किरदार और लिबास में हैं.

आग और जज़्बात की नई बाढ़ जो फूट पड़ी है.

ग़ुस्से और बदले का नया तूफ़ान जो उठ खड़ा हुआ है.

हमें डर है कि अगर आग लम्बी गई और अगर तूफ़ान ज्यादा आगे-बढ़ा तो अमरीका या इङ्गलिस्तान, यह या वह, चन्द क़दम आगे चलकर या चन्द उड़ानें ऊँची भर कर अपने पुराने दोस्त को धोका दे दे और आँखें फेर ले. और जिसको इस से वफ़ा की उम्मीद भी नहीं उससे दोस्ती गाँठ ले.

यह बात बहुत पहले कही जा रही है—हो सकता है कि यह किसी वक़्त दुनिया के लिये अचरज का कारन बने.

लेकिन यह बात क्यों कर कही गई ?

फ़िज़ा की जाँच परताल और रंगों के हाल अहवाल से.

फ़ितरत (प्रकृति) के रंग, आर्टिस्ट के मुख़बिर होते हैं, जासूस होते हैं, भेदिया होते हैं; वही प्रकृति के पैग़ाम होते हैं जो

اور ہاں !

میں ہی وہ ندی ہوں جہاں اتیاچاری اور گھمنڈی، ایشور کی طاقت اور قدرت کا ناستک اور — خدائی کا دعویٰ کرنے والے فرعون کا بیڑا غرق ہوا ہے اور وہ گھمنڈ اور اتیاچار کا دیوتا اپنے کردار کو پہونچا ہے ۔

دور کیوں جاؤ ؟ ہٹلر کی تازہ مثال سامنے ہے جو کل کی بات ہے اور جو آج کے بچے بچے کو یاد ہے ۔ پھر بھی ہم دیکھ رہے ہیں کہ اس تھوڑے عرصے میں ہر دیش اور ہر ملک میں کتنے نئے نئے فرعون اور ہٹلر پیدا ہوگئے ہیں ۔ اور جو کل تک ہٹلر کے کٹر دشمن تھے وہی آج ہٹلری کردار اور لباس میں ہیں ۔

آگ اور جذبات کی نئی باڑھ جو پھوٹ پڑی ہے ۔

غصے اور بدلے کا نیا طوفان جو اٹھ کھڑا ہوا ہے ۔

ہمیں ڈر ہے کہ اگر آگ لمبی گئی اور اگر طوفان زیادہ آگے بڑھا تو امریکہ یا انگلستان' یہ یا وہ' چند قدم آگے چل کر یا چند اڑانیں اونچی بھر کر اپنے پرانے دوست کو دھوکا دے دے اور آنکھیں پھیر لے ۔ اور جس کو اس سے وفا کی امید بھی نہیں اس سے دوستی گانٹھ لے ۔

یہ بات بہت پہلے کہی جارہی ہے —— ہوسکتا ہے کہ یہ کسی وقت دنیا کے لئے اچرج کا کارن بنے ۔

لیکن یہ بات کیونکر کہی گئی ؟

فضا کی جانچ پرتال اور رنگوں کے حال احوال سے ۔

فطرت (پرکرتی) کے رنگ آرٹسٹ کے مخبر ہوتے ہیں ۔ جاسوس ہوتے ہیں' بھیدیہ ہوتے ہیں ۔ وہی پرکرتی کے پیغام ہوتے ہیں جو

सिर्फ़ आर्टिस्ट ही से हम कलाम होते हैं—इसलिये आर्टिस्ट सारी सृष्टि के हाल से जान कारी और उसके भीतरी भेदों से ख़बरदारी रखता है.

आज की विकासी दुनिया के सियासी दिमाग़ों ने नई नई तरह के माद्दे जो फैलाए हैं और हवाएँ जो चलाई हैं, उनही ख़राब माद्दों और गन्दी हवाओं से मौजूदा सियासत की गन्दी फ़िज़ा में भाँत भाँत के सियासी कीड़े मकोड़े पैदा हो गये हैं और नये नये शैतान, तूफ़ान जन्म पा गये हैं. जिनकी औलाद फ़ौलाद के साँचों में ढल ढल कर या मशीनों के पेटों से निकल निकल कर और दल के दल बन बन कर सामने आरही है.

अपने नारों की गूँज में और अपने भन्डों की भीड़ में,

उनकी "लीडर शिप" में क़ौमें बुरी तरह गहराई और तबाही की तरफ़ बढ़ती चली जा रही हैं यानी "सुराते मुस्तक़ीम" (सीधी राह) से हट कर टेढ़ी राह पर जा लगी हैं जिनमें उनकी ख़ैर और सलामती नज़र नहीं आती—न दीन की न दुनिया की.

दीन से तो उनको वास्ता ही क्या? दुनिया भी उनकी बुरी तरह बरबाद और ख़राब होने को है. उनके सारे ठाट बाट छिनने को हैं. उनके ऐश और नाच घरों में बिजली गिरने वाली है और उन ज़ालिमों की ऊँची ऊँची पिटारियाँ बुलन्द बुलन्द शोलों से खेलने वाली हैं.

वक़्त फ़ैसला देने को है.

बमबार इन्तज़ार कर रहा है.

साहूकारी पर बमबारी होने को है ताकि वह जल भुन कर ख़ाक हो जाए.

صرف آرتسٹ هي سے هم کلام هوتے هیں—اسی لئے آرتسٹ ساری سرشتی کے حال سے جان کاری اور اس کے بهیتری بهیدوں سے خبرداري رکهتا هے .

آج کي وکاسي دنیا کے سیاسي دماغوں نے نئي نئي طرح کے مادے جو پهیلائے هیں اور هوائیں جو چلائي هیں' اُن هی خراب مادوں اور گندي هواؤں سے موجوده سیاست کی گندی فضا میں بهانت بهانت کے سیاسی کیڑے مکوڑے پیدا هو گئے هیں اور نئے نئے شیطان' طوفان جنم پا گئے هیں . جن کی اولاد فولاد کے سانچوں میں ڈهل ڈهل کر یا مشینوں کے پیٹوں سے نکل نکل کر اور دل کے دل بن بن کر سامنے آرهی هے .

اپنے نعروں کي گونج میں اور اپنے جهنڈوں کي بهیڑ میں'

اُن کي "لیڈر شپ" میں قومیں بری طرح گهرائی اور تباهی کی طرف بڑهتي چلي جارهی هیں . یعنی "صراط مستقیم" (سیدهی راه) سے هٹ کر ٹیڑهی راه پر جا لگی هیں جن میں اُن کي خیر اور سلامتي نظر نهیں آتي —— نه دین کی نه دنیا کی .

دین سے تو اُن کو واسطه هی کیا ؟ دنیا بهي اُن کی بری طرح برباد اور خراب هونے کو هے . اُن کے سارے ٹهاٹه باٹه چهننے کو هیں . اُن کے عیش اور ناچ گهروں میں بجلي گرنے والی هے اور اُن ظالموں کي اونچي اونچي پٹاریاں بلند بلند شعلوں سے کهیلنے والی هیں .

وقت فیصله دینے کو هے .

بمبار انتظار کر رها هے .

ساهوکاري پر بمباري هونے کو هے تاکه وه جل بهن کر خاک هو جائے .

सरमायादारी के सर पर ठन्डा पहाड़ गिरने को है ताकि उसके नीचे दब कर वह ठन्डी हो जाये और हमेशा के लिये ठन्डी,

समय निकट है कि ग़रीब इन्सानका ख़ून पीने और तरस न खाने वालों के दिलों में इन्सानी हड्डियों की माला डाली जायगी. गोया ग़रीब समाज की तरफ़ से उनके लिये यह क़ीमती भेंट होगी, ——यही मान उनके लिये अधिक है.

अमन और सिर्फ़ अमन सुन्दर और शान्तिपूर्ण शब्द है. लेकिन—अमन और डिक्सन! ख़ारजी और अन्तरराष्ट्री पालिसी का सियासी नाम है. नाम तो बेशक अमन का है, पर अमन के पीछे कुछ और ही जतन है. ऐसी सूरत में अमन के आईने में अमन की तस्वीर हमें साफ़ और उजली दिखाई देती मालूम नहीं पड़ती.

हिन्दू मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दर लाल के

चार लेक्चर जो उन्होंने सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारा आने.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

मैनेजर "नया हिन्द", ३८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

سرمایہ‌داری کے سر پر ٹھنڈا پہاڑ گرنے کو ہے تاکہ اس کے نیچے دب کر وہ ٹھنڈی ہوجائے اور ہمیشہ کے لئے ٹھنڈی،

سمے نکٹ ہے کہ غریب انسانوں کا خون پینے اور ترس نہ کھانے والوں کے دلوں میں انسانی ہڈیوں کی مالا ڈالی جائے گی. گویا غریب سماج کی طرف سے اُن کے لئے یہ قیمتی بھینٹ ہوگی، —— یہی مان اُن کے لئے ادھک ہے.

امن اور صرف امن سندر اور شانتی پورن شبد ہے. لیکن — امن اور ڈکسن! خارجی اور انتر راشٹری پالیسی کا سیاسی نام ہے. نام تو بے شک امن کا ہے پر امن کے پیچھے کچھ اور ہی جتن ہے. ایسی صورت میں امن کے آئینے میں امن کی تصویر ہمیں صاف اور اجلی دکھائی دیتی معلوم نہیں پڑتی.

ھندو مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے

چار لکچر جو اُنہوں نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے.

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے.

کتاب ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے.

مینیجر "نیا ھند"، ۳۸ بائی کا باغ، الہ‌آباد.

मराठी पर हिन्द का हमला

(भाई श्रीपाद जोशी)

मैं यह लेख उनके लिये नहीं लिख रहा हूँ जो अपने को बहुत ज्यादा समझदार या बहुत विशाल हृदय के मानते हैं. यह तो उन लोगों के विचार के लिये है जो मेरे जैसे ही कम समझदार और तंग नजर समझे जाते हैं. आजकल भाषा की नींव पर प्रान्तों के फिर संगठन की माँग करने वालों को स्वार्थी और तंगनजर कहा जाता है. इस लिहाज से समाजवादी, साम्यवादी और भाषावार प्रान्त रचना चाहने वाले कांग्रेसी, सभी तंग खयाल हो जाते हैं. मैं अपने को इन्हीं आदमियों में शामिल करता हूँ, क्यों कि मैं आम जनता की शक्ति और बुद्धि पर विश्वास रखता हूँ. मेरा अक़ीदा है कि जनता की उसकी अपनी भाषा में शिक्षा-दीक्षा मिलने से ही—जैसा कि रूस और दूसरे प्रगतिशील देशों में हो रहा है—उसकी उचित प्रगति जल्द से जल्द हो सकती है. मुझे यह पक्का विश्वास है कि इस महाद्वीप जैसे देश में चलने वाली छोटी-बड़ी अनगिनत भाषाओं को मिटाकर एक ही भाषा को रिवाज देना न संभव है न उचित ही. और इसलिये मैं समझता हूँ कि हर जबान को अपने अपने दायरे में पनपने का मौक़ा देने के लिये भाषावार प्रान्त-रचना होने की सख्त ज़रूरत है.

लेकिन लगभग सभी छोटे बड़े हिन्दी भाषी नेता भाषावार

مراٹھی پر ہندی کا حملہ

(بھائی شری پاد جوشی)

میں یہ لیکھ ان کے لئے نہیں لکھ رہا ہوں جو اپنے کو بہت زیادہ سمجھدار یا بہت وشال ہردیہ کے مانتے ہیں. یہ تو ان لوگوں کے وچار کے لئے ہے جو میرے جیسے ہی کم سمجھدار اور تنگ نظر سمجھے جاتے ہیں. آجکل بھاشا کی نیو پر پرانتوں کے پھر سنگٹھن کی مانگ کرنے والوں کو سوارتھی اور تنگ نظر کہا جاتا ہے. اس لحاظ سے سماجوادی، سامیہ وادی اور بھاشاوار پرانت رچنا چاہنے والے کانگریسی، سبھی تنگ خیال ہوجاتے ہیں. میں اپنے کو ان ہی آدمیوں میں شامل کرتا ہوں. کیونکہ میں عام جنتا کی شکتی اور بدھی پر وشواس رکھتا ہوں. میرا عقیدہ ہے کہ جنتا کو اس کی اپنی بھاشا میں شکشا دیکشا ملنے سے ہی — جیسا کہ روس اور دوسرے پرگتی شیل دیشوں میں ہو رہا ہے — اس کی اچت پرگتی جلد سے جلد ہوسکتی ہے. مجھے یہ پکا وشواس ہے کہ اس مہادیپ جیسے دیش میں چلنے والی چھوٹی بڑی ان گنت بھاشاؤں کو مٹاکر ایک ہی بھاشا کو رواج دینا نہ سمبھو ہے نہ اچت ہی. اور اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ ہر زبان کو اپنے اپنے دائرے میں پنپنے کا موقعہ دینے کے لئے بھاشاوار پرانت رچنا ہونے کی سخت ضرورت ہے.

لیکن لگ بھگ سبھی چھوٹے بڑے ہندی بھاشی نیتا بھاشاوار

प्रान्त-रचना का कसकर विरोध करते चले आ रहे हैं. जब हिन्दी राज भाषा नहीं बनी थी तब यह विरोध कुछ छिपा और हलका था लेकिन जबसे हिन्दी पर राज भाषा की मुहर लग गई है, हिन्दी वालों के दिमाग़ आठवें आसमान पर चढ़े हुए हैं. वह भाषावार प्रान्त रचना का विरोध तो करते ही हैं साथ में उसकी माँग करने वालों को तुच्छ और तंग ख़याल भी समझते हैं. असल में देखा जाय तो जिनकी मादरी ज़बान हिन्दी या उर्दू नहीं है वह सब लोग भाषावार प्रान्त रचना चाहते हैं—फिर वह पंजाबी हों, मराठी हों, कन्नड़ हों या और कोई हों. उसके सबूत के तौर पर डाक्टर पट्टाभि सीता रमय्या और श्री पुरुषोत्तम दास टंडन का कांग्रेस की सदारत के लिये जो मुक़ाबला हुआ था उसकी मिसाल पेश की जा सकती है. उसमें श्री पट्टाभि भाषावार प्रान्त-रचना के हामी थे और टंडन जी उस के मुख़ालिफ़. अहिन्दी भाषी जनता ने श्री पट्टाभि को बहुमत से चुनकर अपनी राय ज़ाहिर कर दी थी. विधान परिषद् में भी हमने देखा है कि हिन्दी वालों की ताना शाही से ऊबकर अहिन्दी वालों ने किस तरह उनका डटकर मुक़ाबला किया और किस तरह 'अंतरराष्ट्री भारती' अंकों को हिन्दी के मत्थे मढ़कर उसे उसका उचित स्थान बतला दिया.

विधान परिषद का फ़ैसला होते ही हिन्दी वालों ने देश भर पर छा जाने के मनसूबे बाँधना शुरू किये. वह तो पहले से ही 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' और 'राष्ट्रलिपी नागरी' के नारे लगाते आये हैं. इस लिये विधान परिषद के निर्नय से उनमें बेहद जोश उमड़ आया और उन्हों ने अपने पड़ोस के अहिन्दी प्रान्तों पर हमला शुरू किया. इस हमले

پرانت رچنا کا کس کر وِرودھ کرتے چلے آرہے ہیں. جب ہلدی راج بھاشا نہیں بنی تھی تب یہ وِرودھ کچھ چھپا اور ہلکا تھا لیکن جب سے ہلدی پر راج بھاشا کی مہر لگ گئی ہے' ہلدی والوں کے دماغ آٹھویں آسمان پر چڑھے ہوئے ہیں. وہ بھاشا وار پرانت رچنا کا وِرودھ تو کرتے ہی ہیں' ساتھ میں اس کی مانگ کرنے والوں کو تچھ اور تنگ خیال بھی سمجھتے ہیں. اصل میں دیکھا جائے تو جنکی مادری زبان ہلدی یا اردو نہیں ہے وہ سب لوگ بھاشا وار پرانت رچنا چاہتے ہیں — پھر وہ پنجابی ہوں' مراٹھی ہوں' کنڑ ہوں یا اور کوئی ہوں. اس کے ثبوت کے طور پر ڈاکٹر پٹا بھی سیتا رمیا اور شری پرشوتم داس ٹنڈن کا کانگریس کی صدارت کے لئے جو مقابلہ ہوا تھا اس کی مثال پیش کی جاسکتی ہے. اس میں شری پٹا بھی بھاشا وار پرانت رچنا کے حامی تھے اور ٹنڈن جی اس کے مخالف. اہلدی بھاشی جنتا نے شری پٹا بھی کو بہو مت سے چنکر اپنی رائے ظاہر کردی تھی. ودھان پریشد میں بھی ہم نے دیکھا ہے کہ ہلدی والوں کی تانا شاہی سے اوب کر اہلدی والوں نے کس طرح انکا ڈٹ کر مقابلہ کیا اور کس طرح 'انتر راشٹری بھارتی' انکوں کو ہلدی کے متھے مڑھکر اسے اس کا اُچت استھان بتلا دیا.

ودھان پریشد کا فیصلہ ہوتے ہی ہلدی والوں نے دیش بھر پر چھا جانے کے منصوبے باندھنا شروع کئے. وہ تو پہلے سے ہی 'راشٹر بھاشا ہلدی' اور 'راشٹر لپی ناگری' کے نعرے لگاتے آئے ہیں. اسلئے ودھان پریشد کے نرنے سے ان میں بے حد جوش امڑ آیا اور انہوں نے اپنے پڑوس کے اہلدی پرانتوں پر حملہ شروع کیا. اس حملے

के रूप के बारे में सोचने से पहले हम इस बात पर विचार करें कि आया हिन्दीके सर राष्ट्र भाषा का सेहरा बँधा भी है या नहीं. विधान परिषद के ठहराव में हिन्दी को 'राजभाषा' (State language) के तौर पर माना गयाहै. उसे कहीं भी 'राष्ट्रभाषा' (Lingua franca or National language) नहीं बताया गया. राष्ट्र भाषाका निर्णय दस-बीस या सौ-दो सौ चुने हुए आदमी बैठकर कर ही नहीं सकते. वह तो सारी जनता का सवाल है. विधान परिषद सिर्फ 'राजभाषा' का ही फ़ैसला कर सकती थी और वही उसने किया. जब सारी जनता को हिन्दी के बड़प्पन और उपयोगिता का पूरा पूरा विश्वास हो जायगा और हिन्दी की तानाशाही का डर दूसरी प्रांती भाषाओं के दिल से निकल जायगा तभी वह राष्ट्रभाषा की गद्दी पर बैठ सकेगी. तबतक हिन्दी का दर्जा मामूली राज भाषा का ही रहेगा. केन्द्री सरकार और रियासती (सूबाई) सरकारों के बीच सम्बन्ध रखने वाली अंग्रेज़ी की जगह हिन्दी एक कड़ी का काम करेगी. उसे रियासती सरकारों के कामों में दखल देने का कोई अधिकार नहीं. एक एक रियासत का कारोबार वहाँ की मुक़ामी भाषाओं में ही चला करेगा. अंतर प्रान्ती कारबार में हिन्दी का इस्तेमाल ज़रूर बढ़ता जायेगा, लेकिन इस तरह अंतर प्रान्ती क्षेत्र में काम करने वाले लोग हमेशा कम ही रहेंगे. इसका मतलब यह हुआ कि हिन्दी को सिर्फ़ राज काज के कामोंमें ही थोड़ा बहुत बड़प्पन मिला है और वह भी इसपर निर्भर है कि पंद्रह साल बाद अंग्रेज़ी का स्थान क्या रहेगा. अंग्रेज़ी को तो इस देश से निकल जाना ही पड़ेगा. लेकिन अहिन्दी वाले यह कभी गवारा न करेंगे कि अंग्रेज़ी की जगह हिन्दी

کے روپ کے بارے میں سوچنے سے پہلے ہم اس بات پر وچار کریں کہ آیا ہندی کے سر راشٹر بھاشا کا سہرا بندھا بھی ہے یا نہیں . ودھان پریشد کے ٹھہراؤ میں ہندی کو 'راج بھاشا' (State Language) کے طور پر مانا گیا ہے . اسے کہیں بھی (Lingua franca or National Language) 'راشٹر بھاشا' نہیں بتایا گیا . راشٹر بھاشا کا نرنے دس بیس یا سو دو سو چنے ہوئے آدمی بیٹھ کر کر ہی نہیں سکتے . وہ تو ساری جنتا کا سوال ہے . ودھان پریشد صرف راج بھاشا کا ہی فیصلہ کر سکتی تھی اور وہی اس نے کیا . جب ساری جنتا کو ہندی کے بڑپن اور اپیوگتا کا پورا پورا وشواس ہوجائیگا اور ہندی کی تانا شاہی کا ڈر دوسری پرانتی بھاشاؤں کے دل سے نکل جائیگا تبھی وہ راشٹر بھاشا کی گدی پر بیٹھ سکیگی . تب تک ہندی کا درجہ معمولی راج بھاشا کا ہی رہیگا . کیندری سرکار اور ریاستی (صوبائی) سرکاروں کے بیچ سمبندھ رکھنے والی انگریزی کی جگہ ہندی ایک کڑی کا کام کریگی . اسے ریاستی سرکاروں کے کاموں میں دخل دینے کا کوئی ادھیکار نہیں . ہر ایک ریاست کا کاروبار وہاں کی مقامی بھاشاؤں میں ہی چلا کریگا . انتر پرانتی کاروبار میں ہندی کا استعمال ضرور بڑھتا جائیگا لیکن اس طرح انتر پرانتی چھیتر میں کام کرنے والے لوگ ہمیشہ کم ہی رہینگے . اس کا مطلب یہ ہوا کہ ہندی کو صرف راج کاج کے کاموں میں ہی تھوڑا بہت بڑپن ملا ہے اور وہ بھی اس پر نربھر ہے کہ پندرہ سال کے بعد انگریزی کا استھان کیا رہیگا . انگریزی کو تو اس دیش سے نکل جانا ہی پڑیگا لیکن اہندی والے یہ کبھی گوارا نہ کرینگے کہ انگریزی کی جگہ ہندی

आये और वह अपनी साम्राजवादी नीति से प्रान्ती भाषाओं को जीना दूभर करदे.

इस डर का एक कारन है. चूंकि हिन्दी एक ख़ास हिस्से की—उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, मध्यभारत रियासतों की प्रान्ती भाषा है इसलिये हिन्दीवाले सामझते हैं कि हिन्दी के राष्ट्र-भाषा होने से मानो उनके हाथ में भाषा का साम्राज आ गया है. इस ख़तरे से महाराष्ट्र वाले बहुत पहले से आगाह हो चुके थे. इसीलिये उनमें से प्रगतिशील लोगों ने—तरक़्क़ी पसंद तबक़े ने—हिन्दी को उसके प्रान्ती रूप में कभी राष्ट्रभाषा नहीं माना. जबतक गांधी जी रहे, महाराष्ट्र के बहुगिनत लोग और समूचे कांग्रेस वाले हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा मानते रहे. या यों कहिये कि हिन्दी के हिन्दुस्तानी रूप को उन्होंने राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया. जिसका सत यही है कि बम्बई सरकार ने अपने स्कूलों में हिन्दी की नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी की शिक्षा को लाज़िमी कर रखा था. आचार्य काका कालेलकर, श्री शंकर राव देव, आचार्य स. ज. भागवत और महामहोपाध्याय द.वा. पोतदार हिन्दुस्तानी के सबसे बड़े हिमायती हैं. पिछले कुछ वर्षों से महाराष्ट्र के हिन्दू सभा वादी लोगों ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन वालों से मिलकर, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार करके 'राष्ट्रभाषा प्राचार समिति' के ज़रिये उसका प्रचार शुरू तो किया है, और रूढ़िवादी यानी कट्टरपंथी और पिछगामी वर्गों ने उनको बढ़ावा भी दिया है. लेकिन श्री देव और पोतदार जी की अगवाई में जो 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा' पूना में काम कर रही है उसको सभी तरक़्क़ी पसन्द वर्गों की हिमायत हासिल है. कांग्रेसी

آئے اور وہ اپنی سامراج وادی نیتی سے پرانتی بھاشاؤں کو جینا دوبھر کردے.

اس ڈر کا ایک کارن ہے. چونکہ ہندی ایک خاص حصے کی—اُتر پردیش، بہار، راجستھان، مدھیہ پردیش، مدھیہ بھارت ریاستوں کی پرانتی بھاشا ہے. اس لئے ہندی والے سمجھتے ہیں کہ ہندی کے راج بھاشا ہونے سے مانو اُن کے ہاتھ میں بھاشا کا سامراج آگیا ہے. اس خطرہ سے مہا راشٹر والے بہت پہلے سے آگاہ ہو چکے تھے. اسی لئے اُن میں سے پرگتی شیل لوگوں نے— ترقی پسند طبقے نے— ہندی کو اس کے پرانتی روپ میں کبھی راشٹر بھاشا نہیں مانا. جب تک گاندھی جی رہے' مہا راشٹر کے بہو گنت اور سموچے کانگریس والے ہندستانی کو راشٹر بھاشا مانتے رہے. یا یوں کہئے کہ ہندی کے ہندستانی روپ کو انہوں نے راشٹر بھاشا کے طور پر سویکار کیا. اس کا ثبوت یہی ہے کہ بمبئی سرکار نے اپنے اسکولوں میں ہندی کی نہیں بلکہ ہندستانی کی شکشھا کو لازمی کر رکھا تھا. آچاریہ کاکا کالیکر' شری شنکر راؤ دیو' آچاریہ س. ج. بھاگوت اور مہامہوپادھیا د. و. پوتدار ہندستانی کے سب سے بڑے حمایتی ہیں. پچھلے کچھ برسوں سے مہا راشٹر کے ہندو سبھا وادی لوگوں نے ہندی ساہتیہ سمیلن والوں سے مل کر' ہندی کو راشٹر بھاشا کے طور پر سویکار کرکے 'راشٹر بھاشا پرچار سمیتی' کے ذریعہ اُس کا پرچار شروع تو کیا ہے' اور روڑھی وادی یعنی کٹر پنتھی اور پچھ گامی ورگوں نے اُن کو بڑھاوا بھی دیا ہے. لیکن شری دیو اور پوتدار جی کی اگوائی میں جو 'مہا راشٹر راشٹر بھاشا پرچار سبھا' پونا میں کام کر رہی ہے اُسکو سبھی ترقی پسند ورگوں کی حمایت حاصل ہے. کانگریسی

और समाज वादी कार कर्ताओं की मदद से इस सभा का काम बड़े ज़ोर शोर से चल रहा है और हर साल हज़ारों स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ हिन्दुस्तानी का ज्ञान हासिल कर रही हैं. इस सभा का यह विश्वास है कि हिन्दी का वह रूप ही राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकता है जिसमें उर्दू और हिन्दुस्तानी की शैलियाँ भी शामिल हों और जिसका दरवाजा सभी प्रान्ती भाषाओं के खिराज के लिये हमेशा खुला हो.

हिन्दीभाषा की दो प्रधान धाराएँ हैं. एक उसकी प्रान्ती धारा और दूसरी कुलहिन्द धारा. इस कुलहिन्द धारा को ही, जिसमें उर्दू और दूसरी प्रान्ती भाषाओं के छोटे मोटे प्रवाहों को जज़्ब किया जा सकता है और किया जाना चाहिये, हम अहिन्दी भाषी लोग हिन्दुस्तानी नाम देते हैं. जहाँ तक इस कुलहिन्द धारा का सवाल है, उसका विरोध करने की इच्छा किसी के दिल में नहीं होगी, क्योंकि जिस धारा को बलवान और प्राणदायिनी बनाने का काम सारे भारत को करना है, उस राष्ट्रभाषा के रूप का फ़ैसला किसी एक भाषा-भाषी बाबूओं की इच्छा से नहीं होगा.

लेकिन जहाँ तक प्रान्ती धारा का सवाल है उसकी ताना शाही भी प्रान्ती भाषा बर्दाश्त नहीं कर सकेगी. इलाहाबाद का हिन्दी साहित्य सम्मेलन पूना में आकर हमें यह सिखाये कि 'हम जो बोलें वही तुम्हारी राष्ट्रभाषा होगी' तो दूसरे प्रान्तों की बात तो मैं नहीं जानता, कम से कम प्रगतिशील महाराष्ट्र तो इसे कभी मंज़ूर नहीं करेगा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन को चाहिये कि वह हिन्दी साहित्य के विकास की तरकीबें सोचता रहे क्यों कि हमारी प्रान्ती

اور سماج وادی کار کرتاؤں کی مدد سے اِس سبھا کا کام بڑے زور شور سے چل رہا ہے اور ہر سال ہزاروں استری پرش، لڑکے لڑکیاں ہندستانی کا حاصل گیان کر رہی ہیں . اس سبھا کا یہ وشواس ہے کہ ہندی کا وہ روپ ہی راشٹر بھاشا کا استھان لے سکتا ہے جسمیں اُردو اور ہندستانی کی شیلیاں بھی شامل ہوں اور جس کا دروازہ سبھی پرانتی بھاشاؤں کے خراج کے لئے ہمیشہ کھلا ہو .

ہندی بھاشا کی دو پردھان دھارائیں ہیں . ایک اسکی پرانتی دھارا اور دوسری کل ہند دھارا . اس کل ہند دھارا کو ہی، جس میں اُردو اور دوسری پرانتی بھاشاؤں کے چھوٹے موٹے پرواہوں کو جذب کیا جاسکتا ہے اور کیا جانا چاہئے، ہم اہندی بھاشی لوگ ہندستانی نام دیتے ہیں . جہاں تک اس کل ہند دھارا کا سوال ہے، اُسکا ورودھ کرنے کی اِچھا کسی کے دل میں نہیں ہوگی، کیونکہ اس دھارا کو بلوان اور پران دائنی بنانے کا کام سارے بھارت کو کرنا ہے، راشٹر بھاشا کے روپ کا فیصلہ کسی ایک بھاشا بھاشی بابوؤں کی اِچھا سے نہیں ہوگا .

لیکن جہاں تک پرانتی دھارا کا سوال ہے اُس کی تانا شاہی کوئی بھی پرانتی بھاشا برداشت نہیں کرسکیگی . الہ آباد کا ہندی ساھتیہ سمیلن پونا میں آکر ہمیں یہ سکھائے کہ 'ہم جو بولیں وہی تمہاری راشٹر بھاشا ہوگی' تو دوسرے پرانتوں کی بات تو میں نہیں جانتا' کم سے کم پرگتی شیل مہاراشٹر تو اسے کبھی منظور نہیں کریگا . ہندی ساھتیہ سمیلن کو چاہئے کہ وہ ہندی ساھتیہ کے وکاس کی ترکیبیں سوچتا رہے کیونکہ ہماری پرانتی

भाषाओंके सामने हिन्दी बहुत ही पिछड़ी हुई और ढीली ढाली भाषा है. उसका व्याकरन अभी तक तै नहीं हुआ है. उसका साहित्य चौमुखी प्रगति नहीं कर सका है. इसलिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन भाषा साम्राजवाद के नशे में सस्ते क़िस्म के प्रचार के पीछे न पड़कर राष्ट्र भाष. के प्रचार की जिम्मेवारी सरकार पर या भारत की जनता पर छोड़कर, अपनी प्रान्ती भाषा की उन्नति करता रहे तो उससे हिन्दी का बहुत कुछ भला होगा. लेकिन आजकल के सम्मेलन के करता धरता लोगों की मनोदशा को देखते हुए इस आशा के पूरा होने का कोई लच्छन नहीं दिखाई देता.

हिन्दुस्तानी भाषा किसी खास प्रान्त या फ़िरक़े की बपौती नहीं है, इसलिये उससे यह डर नहीं था कि वह प्रान्ती भाषाओं में दखल देगी. बल्कि हिन्दी वालों और उर्दू वालों को भी औरों की तरह उसे सीखना पड़ता और वह अहिन्दी-भाषी जनता पर आज की तरह रोब न जमा पाते.

यह तो हुआ हिन्दी और दूसरी प्रान्ती भाषाओं का आपसी संबंध. इसमें मैंने जो डर दिखाया है उसके लिये मेरे पास खुले सबूत हैं. हिन्दी और मराठी की सरहदें मध्यप्रदेश (सी. पी.) में एक दूसरी से सटी हुई हैं. वहाँ हिन्दीवालों ने मराठी पर हमला तो पहले से ही शुरू कर दिया था, लेकिन जबतक राज भाषा का निर्नय नहीं हुआ था, इस हमले का रूप कुछ छिपा हुआ था. अब जब कि हिन्दी राजभाषा हो चुकी है, सी.पी. के हिन्दीवालों ने मराठी पर खुल्लम खुल्ला धावा बोल दिया है. मराठी पढ़ाने वाले स्कूल बन्द कराके हिन्दी के स्कूल खोले जा रहे हैं. नागपुर विद्यापीठ में हिन्दी

بھاشاؤں کے سامنے ہندی بہت ہی پچھڑی ہوئی اور ڈھیلی ڈھالی بھاشا ہے. اسکا ویاکرن ابھی تک طے نہیں ہوا ہے. اسکا ساہتیہ چومکھی پرگتی نہیں کرسکا ہے. اسلئے ہندی ساہتیہ سمیلن بھاشا سامراج واد کے نشے میں سستے قسم کے پرچار کے پیچھے نہ پڑکر راشٹر بھاشا کے پرچار کی ذمہداری سرکار پر یا بھارت کی جنتا پر چھوڑ کر' اپنی پرانتی بھاشا کی اُنتی کرتا رہے تو اُس سے ہندی کا بہت کچھ بھلا ہوگا. لیکن آجکل کے سمیلن کے کرتا دھرتا لوگوں کی منو دشا دیکھتے ہوئے اس آشا کے پورا ہونے کا کوئی لچھن دکھائی نہیں دیتا.

ہندستانی بھاشا کسی خاص پرانت یا فرقہ کی بپوتی نہیں ہے' اسلئے اس میں یہ ڈر نہیں تھا کہ وہ پرانتی بھاشاؤں میں دخل دیگی بلکہ ہندی والوں اور اُردو والوں کو بھی اوروں کی طرح اُسے سیکھنا پڑتا اور وہ اہندی بھاشی جنتا پر آج کی طرح رعب نہ جما پاتے.

یہ تو ہوا ہندی اور دوسری پرانتی بھاشاؤں کا آپسی سمبندھ. اس میں جو میں نے ڈر دکھایا ہے اس کے لئے میرے پاس کھلے ثبوت ہیں. ہندی اور مراٹھی کی سرحدیں مدھیہ پردیش (سی. پی.) میں ایک دوسرے سے سٹی ہوئی ہیں. وہاں ہندی والوں نے مراٹھی پر حملہ تو پہلے سے ہی شروع کردیا تھا' لیکن جب تک راج بھاشا کا نرنے نہیں ہوا تھا' اس حملے کا روپ کچھ چھپا ہوا تھا. اب جب کہ ہندی راج بھاشا ہوچکی ہے' سی. پی. کے ہندی والوں نے مراٹھی پر کھلم کھلا دھاوا بول دیا ہے. مراٹھی پڑھانے والے اسکول بند کراکے ہندی کے اسکول کھولے جارہے ہیں. ناگپور ودیا پیٹھ میں ہندی

का दौर दौरा शुरू हो गया है. (हालाँ कि हिन्दी वालों को अब सागर का अलग विद्यापीठ मिल गया है.) और हर तरह से मराठी का नामो निशान मिटाकर हिन्दी को ज़बरदस्ती लोगों पर लादने की कोशिश की जा रही है. और कोई हिन्दी वाला माई का लाल ऐसा नहीं निकलता जो इस अत्याचार को रोकना तो दूर रहा, उसकी निन्दा भी करे. यह सब मैं अपने मन की बातें नहीं कह रहा हूँ. अभी पिछले महीने चांदा (सी. पी.) में जो विदर्भ (बेरार) साहित्य सम्मेलन हुआ उसमें इस सम्बन्ध में जो ठहराव पास हुआ उसका अनुवाद नीचे दिया जा रहा है. छठा ठहराव यह है—

"(सी. पी.) में राजकाज की सहूलियत के लिये ज़िला, तहसील या जनपद वग़ैरा जो विभाग किये गये हैं उनमें कई ज़िलों, तहसीलों और जनपदों में हिन्दी-मराठी हिस्से ख़िल्त-मिल्त हो गये हैं और उससे हिन्दी-मराठी के सीमा प्रदेश में मराठी भाषा-भाषियों पर शिक्षा और दूसरी बातों में अन्याय हो रहा है. नये विधान में हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं को रियासती (प्रान्ती) (State Language) के तौर पर माना गया है. ऐसी हालत में यह सम्मेलन मध्यप्रदेश सरकार से अनुरोध करता है कि ज़िलों, तहसीलों और जनपदों की सीमाएँ नये सिरे से इस तरह तय की जायें जिससे मध्यप्रदेश की मराठी भाषी जनता को हिन्दी भाषी विभागों में कम गिनत जमात की हैसियत से न रहना पड़े.

"इसी तरह बहु गिनत मराठी भाषी विभागों में मराठी के प्रायमरी स्कूलों को बन्द करके हिन्दी का जो हमला शुरू हुआ है उसे भी रोका जाय."

کا دور دورا شروع ہوگیا ہے . (حالانکہ ہندی والوں کو اب ساگر کا الگ ودیا پیٹھ مل گیا ہے) اور ہر طرح سے مراٹھی کا نام و نشان، مٹاکر ہندی کو زبردستی لوگوں پر لادنےکی کوشش کی جارہی ہے اور کوئی ہندی والا مائی کا لال ایسا نہیں نکلتا جو اس اتیاچار کو روکنا تو دور رہا اُسکی نندا بھی کرے . یہ سب میں اپنے من کی باتیں نہیں کہہ رہا ہوں . ابھی پچھلے مہینے چاندا (سی . پی .) میں جو ودربھ (برار) ساہتیہ سمیلن ہوا اُس میں اس سمبندھ میں جو ٹھہراؤ پاس ہوا اسکا انوواد نیچے دیا جارہا ہے . چھٹا ٹھہراؤ یہ ہے —

" (سی . پی .) میں راج کاج کی سہولت کے لئے ضلع، تحصیل یا جنپد وغیرہ جو وبھاگ کئے گئے ہیں انمیں کئی ضلعوں، تحصیلوں اور جنپدوں میں ہندی مراٹھی حصے خلط ملط ہوگئے ہیں اور اس سے ہندی مراٹھی کے سیما پردیش میں مراٹھی بھاشا بھاشیوں پر شکشا اور دوسری باتوں میں انیائے ہو رہا ہے . نئے ودھان میں ہندی اور مراٹھی دونوں بھاشاؤں کو ریاستی (پرانتی) (State Language) کے طور پر مانا گیا ہے . ایسی حالت میں یہ سمیلن مدھیہ پردیش سرکار سے انورودھ کرتا ہے کہ ضلعوں، تحصیلوں اور جنپدوں کی سیمائیں نئے سرے سے اسطرح طے کی جائیں جس سے مدھیہ پردیش کی مراٹھی بھاشی جنتا کو ہندی بھاشی وبھاگوں میں کم گنت جماعت کی حیثیت سے نہ رہنا پڑے .

" اسی طرح بہو گنت مراٹھی بھاشی وبھاگوں میں مراٹھی کے پرائمری اسکولوں کو بند کرکے ہندی کا جو حملہ شروع ہوا ہے اُسے بھی روکا جائے ."

यहीं हालत नागपुर रेडियो की भी है. असल में वहाँ मराठी के प्रोग्रामों को प्रधानता मिलनी चाहिये. लेकिन वहाँ तो हिन्दी का राज इस तरह चल रहा है कि मराठी बेचारी पराये घर में मेहमान की तरह दुबकी रहती है. इस बारे में भी विदर्भ साहित्य सम्मेलन ने एक ठहराव पास किया है.

यहाँ एक बात साफ़ कर देना चाहता हूँ. जो लोग इस तरह हिन्दी के हमले से परेशान होकर दुहाई दे रहे हैं वह कोई हिन्दी वालों के दुश्मन या प्रान्तीयता की कीचड़ में फँसे हुए नहीं हैं. उनमें से ज्यादा तर कांग्रेसी हैं, मध्यप्रदेश की सरकार पर उन्हें भी उतना ही विश्वास है जितना कि दूसरे प्रांतों के कांग्रेसियों का अपनी अपनी सरकारों पर होता है. और कई हिन्दीवाले उनके निजी मित्र हैं. फिर भी उन्हें कमर बाँधकर अपनी मातृभाषा की रक्षा के लिये खड़ा होना पड़ा है.

इस सम्बन्ध में श्री पु. य. देश पांडे का भाषन, जो उन्होंने विदर्भ साहित्य सम्मेलन में दिया था, मराठी वालों की भूमिका का ठीक ठीक प्रतिनिधित्व करता है. श्री देश पांडे मध्यप्रदेश के उन इने गिने विचारकों में से हैं जो हर सवाल की तह तक जाते हैं. मध्यप्रदेश के घर मंत्री श्री मिश्र जी जैसे हिन्दी भाषी नेताओं से उनकी बड़ी दोस्ती है. इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि वह तंग प्रान्तवाद या संकुचित भाषावाद के चक्कर में फँसे हुए हैं. वह अपने भाषन में कहते हैं :—

"यह किसी को नहीं भूलना चाहिये कि सबसे पहले महाराष्ट्र के लोगों ने ही यह आवाज बुलन्द की थी कि हिन्दी पूरे भारत

یہی حالت ناگپور ریڈیو کی بھی ہے . اصل میں وہاں مراٹھی کے پروگراموں کو پردھانتا ملنی چاہئے ؛ لیکن وہاں تو ہندی کا راج اس طرح چل رہا ہے کہ مراٹھی بیچاری پرائے گھر میں مہمان کی طرح دبکی رہتی ہے . اس بارے میں بھی ودربھ ساہتیہ سمیلن نے ایک ٹھہراؤ پاس کیا ہے .

یہاں ایک بات صاف کردینا چاہتا ہوں . جو لوگ اس طرح ہندی کے حملے سے پریشان ہوکر دہائی دے رہے ہیں وہ کوئی ہندی والوں کے دشمن یا پرانتیتا کی کیچڑ میں پھنسے ہوئے نہیں ہیں . اُن میں سے زیادہ تر کانگریسی ہیں . مدھیہ پردیش کی سرکار پر انہیں بھی اُتنا ہی وشواس ہے جتنا کہ دوسرے پرانتوں کے کانگریسیوں کا اپنی اپنی سرکاروں پر ہوتا ہے ، اور کئی ہندی والے اُن کے نجی مِتر ہیں . پھر بھی اُنہیں کمر باندھ کر اپنی ماتر بھاشا کی رکشا کے لئے کھڑا ہونا پڑا ہے .

اس سمبندھ میں شری پ . ی . دیش پانڈے کا بھاشن ، جو اُنہوں نے ودربھ ساہتیہ سمیلن میں دیا تھا ، مراٹھی والوں کی بھومیکا کا ٹھیک ٹھیک پرتی ندھتو کرتا ہے . شری دیش پانڈے مدھیہ پردیش کے اُن اِنے گنے وچارکوں میں سے ہیں جو ہر سوال کی تہہ تک جاتے ہیں . مدھیہ پردیش کے گھر منتری شری مشر جی جیسے ہندی بھاشی نیتاؤں سے اُن کی بڑی دوستی ہے . اسلئے یہ نہیں کہا جا سکتا کہ وہ تنگ پرانتواد یا سنکوچت بھاشاواد کے چکر میں پھنسے ہوئے ہیں . وہ اپنے بھاشن میں کہتے ہیں :—

"یہ کسی کو نہیں بھولنا چاہئے کہ سب سے پہلے مہا راشٹر کے لوگوں نے ہی یہ آواز بلند کی تھی کہ ہندی پورے بھارت

की राज भाषा होनी चाहिये. हिन्दुस्तान में 'सर्वोपर लोकशाही जनराज, के क़ायम होते ही हिन्दी उसकी राज्यभाषा बनी इसके लिये हम महाराष्ट्र के लोगों को खुशी ही हुई है. लेकिन राजभाषा के नाते देश के राज काज में और सार्वजनिक व्यवहार में हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिये उसे मानते हुए भी अपनी मातृभाषा की रक्षा और बढ़ौती करना हम अपना पहला कर्त्तव्य मानते हैं. इसलिये आज की हालत मे विदर्भ साहित्य संघ का यह पहला कर्तव्य है कि मराठी प्रांत में रहने वाला एक भी मराठी भाषी अमराठी नहीं होगा, इसकी फ़िक्र वह करे. आज नागपूर शहर में सब जगह हिन्दी का इतना बोलबाला है कि जिस तरह आज यह सवाल खड़ा किया गया है कि बम्बई शहर महाराष्ट्र का है या नहीं. उसी तरह मुझे डर है कि कल यही सवाल नागपूर शहर के सम्बन्ध में भी खड़ा होगा. हिन्दी के यश का हमें ज़रा सा भी रंज नहीं है, लेकिन हमें सिर्फ़ इतना ही देखना है कि हिन्दी का यश मराठी जनता की मातृ-भाषा के विकास में किसी तरह की बाधा न डाले.......

"जनता राज की स्थापना के साथ साथ भाषावार प्रांत रचना के न होने से अपनी मातृभाषा को जीवित रखने का महान प्रश्न आज हमारे सामने खड़ा है.......

"राजभाषा के नाते हिन्दी भाषा सीखना हमारा कर्त्तव्य है और महाराष्ट्र की जनता को राष्ट्रीयता के पाठ पढ़ाने के लिये किसी दूसरेको तकलीफ़ उठानेकी ज़रूरत नहीं है. राजभाषा और मातृभाषाके सम्बन्ध और काम एक दूसरेके पोषक होने चाहिये. लेकिन बदकिस्मती से नागपूर विद्यापीठ में आज इससे उलटी ही हालत दिखाई देरही है.

کی راج بھاشا ہونی چاہئے . ہندستان میں 'سروو پر لوک شاہی جنراج' کے قائم ہوتے ہی ہندی اس کی راج بھاشا بنی . اس کے لئے ہم مہاراشٹر کے لوگوں کو خوشی ہی ہوئی ہے . لیکن راج بھاشا کے ناتے دیش کے راج کاج میں اور سارو جنک ویوہار میں ہندی کو جو استھان ملنا چاہئے اسے مانتے ہوئے بھی اپنی ماتر بھاشا کی رکشا اور بڑھوتی کرنا ہم اپنا پہلا کرتویہ مانتے ہیں . اس لئے آج کی حالت میں ودربھ ساہتیہ سنگھ کا یہ پہلا کرتویہ کہ مراٹھی پرانت میں رہنے والا ایک بھی مراٹھی بھاشی امراٹھی نہیں ہوگا' اس کی فکر وہ کرے . آج ناگپور شہر میں سب جگہ ہندی کا اتنا بول بالا ہے کہ جس طرح آج یہ سوال کھڑا کیا گیا ہے کہ بمبئی شہر مہاراشٹر کا ہے یا نہیں . اسی طرح مجھے ڈر ہے کہ کل یہی سوال ناگپور شہر کے سمبندھ میں بھی کھڑا ہوگا . ہندی کے یش کا ہمیں ذرا سا بھی رنج نہیں ہے' لیکن ہمیں صرف اتنا ہی دیکھنا ہے کہ ہندی کا یش مراٹھی جنتا کی ماتر بھاشا کے وکاس میں کسی طرح کی بادھا نہ ڈالے ......

" جنتا راج کی استھاپنا کے ساتھ ساتھ بھاشاوار پرانت رچنا کے نہ ہونے سے اپنی ماتر بھاشا کو جیوت رکھنے کا مہان پرشن آج ہمارے سامنے کھڑا ہے ......

" راج بھاشا کے ناتے ہندی بھاشا سیکھنا ہمارا کرتویہ ہے اور مہاراشٹر کی جنتا کو راشٹریتا کے پاٹھ پڑھانے کے لئے کسی دوسرے کو تکلیف اٹھانے کی ضرورت نہیں ہے . راج بھاشا اور ماتر بھاشا کے سمبندھ اور کام ایک دوسرے کے پوشک ہونے چاہئے . لیکن بدقسمتی سے ناگپور ودیا پیٹھ میں آج اس سے الٹی ہی حالت دیکھائی دے رہی ہے .

"हिन्दी की सीनाजोरी से आज इस प्रांत के नागपुर, वर्धा, चांदा और भंडारा इन चारों जिलों पर अपना हक़ जमाने का झुकाव हिन्दी भाषा भाषियों में ज़ोर पकड़ता जा रहा है. जिन सर-हदी जिलों में हिन्दी और मराठी भागों का संगम हो गया है वहाँ पुराने मराठी स्कूलों को बन्द करके उनके बदले हिन्दी में प्रायमरी शिक्षा देने की कोशिश शुरू हो गई है. भाषावार प्रान्त रचना न होने से राजभाषा बनी हुई हिन्दी का आज प्रांती भाषाओं पर बाक़ायदा हमला शुरू हो गया है.......

"दर असल हिन्दी भाषा-भाषियों को ही चाहिये कि वह ऐसी कोशिश करें कि प्रांती भाषाओं पर हिन्दी किसी भी तरह हमला न करे, क्योंकि राष्ट्रभाषा का विकास आपसी सहयोग और आपसी विश्वास से ही होने वाला है. लेकिन बद क़िस्मती से हिन्दी वालों को इस बात का भान नहीं है. इसलिये आज मराठी भाषा की रक्षा का सवाल पैदा हुआ है...."

देखा आपने, हिन्दी के हमले से मराठी वाले कितने परेशान हो गये हैं ? आप तो अभी हिन्दी-उर्दू के झगड़े में ही फँसे हुए हैं. लेकिन हम तो इस नई राजभाषा के बोझ के नीचे दबे ही जा रहे हैं. हाँ, यह ठीक है कि मराठी भाषा और महाराष्ट्र की जनता किसी से दबने वाली नहीं है, लेकिन अच्छा तो यह है कि बड़े संघर्ष की नौबत आने से पहले ही हम सब चेत जायँ और एक-दिल हो कर अपना यह घरेलू सवाल आपस में ही हल कर लें.

नोट—विद्वान लेखक के हर विचार से हम पूरी तरह सहमत ... आदर के साथ छाप

" ہندی کی سینہ زوری سے آج اس پرانت کے ناگپور، واردھا، چاندا اور بھنڈارا ان چاروں ضلعوں پر اپنا حق جمانیکا جھکاؤ ہندی بھاشا بھاشیوں میں زور پکڑتا جا رہا ہے. جن سرحدی ضلعوں میں ہندی اور مراٹھی بھاگوں کا سنگم ہوگیا ہے وہاں پرانے مراٹھی اسکولوں کو بند کرکے ان کے بدلے ہندی میں پرائمری شکشا دینے کی کوشش شروع ہوگئی ہے. بھاشا وار پرانت رچنا نہ ہونے سے راج بھاشا بنی ہوئی ہندی کا آج پرانتی بھاشاؤں پر باقاعدہ حملہ شروع ہوگیا ہے......

" در اصل ہندی بھاشا بھاشیوں کو ہی چاہئے کہ وہ ایسی کوشش کریں کہ پرانتی بھاشاؤں پر ہندی کسی بھی طرح حملہ نہ کرے کیونکہ راشٹر بھاشا کا وکاس آپسی سہیوگ اور آپسی وشواس سے ہی ہونے والا ہے. لیکن بدقسمتی سے ہندی والوں کو اس بات کا بھان نہیں ہے. اس لئے آج مراٹھی بھاشا کی رکشا کا سوال پیدا ہوا ہے ......"

دیکھا آپ نے، ہندی کے حملے سے مراٹھی والے کتنے پریشان ہوگئے ہیں؟ آپ تو ابھی ہندی اُردو کے جھگڑے میں ہی پھنسے ہوئے ہیں. لیکن ہم تو اس نئی راج بھاشا کے بوجھ کے نیچے دبے ہی جا رہے ہیں. ہاں، یہ ٹھیک ہے کہ مراٹھی بھاشا اور مہاراشٹر کی جنتا کسی سے دبنے والی نہیں ہے، لیکن اچھا تو یہ ہے کہ بڑے سنگھرش کی نوبت آنے سے پہلے ہی ہم سب چیت جائیں اور ایک دل ہوکر اپنا یہ گھریلو سوال آپس میں ہی حل کرلیں.

نوٹ — ودوان لیکھک کے ہر وچار سے ہم پوری طرح سہمت نہیں ہیں. پھر بھی اس لیکھ کو ہم اسلئے آدر کے ساتھ چھاپ

रहे हैं क्योंकि लेखक के विचार बहुत से लोगों के विचार हैं. केवल एक बात लेखक की ठीक कर देना हम ज़रूरी समझते हैं. नये विधान के अनुसार हिन्दी को राजभाषा (State Language), जैसा लेखक ने कहना चाहा है, नहीं कहा जा सकता. विधान सभा के मेम्बरों में इस सवाल पर बहस होते समय हिन्दी के पक्षवालों ने पहले यह चाहा था कि हिन्दी को विधान में राष्ट्रभाषा (नैशनल लैंग्वेज) कहा जाय. लोगों ने नहीं माना. इसपर उन्होंने चाहा कि हिन्दी को राजभाषा (State Language) ही कहा जाय. लोगों ने इसे भी नहीं माना. तब बहुत बहस के बाद तय हुआ कि हिन्दी को यूनियन की 'आफ़िशल लैंगवेज' कहा जाय जिसका अनुवाद, खास कर इस परिस्थिति में, दफ़्तरी भाषा या शायद सरकारी भाषा हो सकता है, राष्ट्रभाषा या राजभाषा नहीं. हम लेखक को यह भी याद दिला देना चाहते हैं कि विधान सभा के ठहराव में हिन्दी का वही रूप तय किया गया है जो विद्वान लेखक ने चाहा है और जिसे अब तक बहुत से लोग हिन्दुस्तानी कहते रहे हैं. इसके विरुद्ध हिन्दी प्रेमियों की जितनी कोशिशें हैं वह विधान का साफ़ उलंघन हैं. विधान के ठहराव के शब्द किसी प्रनती या किसी भी दूसरी इस देश की भाषा की बढ़ौती और उसके विकास को किसी तरह भी रोकना नहीं चाहते.

—एडीटर

رہے ہیں کیونکہ لیکھک کے وچار بہت سے لوگوں کے وچار ہیں۔ کیول ایک بات لیکھک کی ٹھیک کر دینا ہم ضروری سمجھتے ہیں۔ نئے ودھان کے انوسار ہندی کو راج بھاشا (State Language) جیسا لیکھک نے کہنا چاہا ہے، نہیں کہا جاسکتا۔ ودھان سبھا کے ممبروں میں اس سوال پر بحث ہوتے سمے ہندی کے پکش والوں نے پہلے یہ چاہا تھا کہ ہندی کو ودھان میں راشٹر بھاشا (National Language) کہا جائے۔ لوگوں نے نہیں مانا۔ اس پر انہوں نے چاہا کہ ہندی کو راج بھاشا (State Language) ہی کہا جائے۔ لوگوں نے اسے بھی نہیں مانا۔ تب بہت بحث کے بعد طے ہوا کہ ہندی کو یونین کی 'آفیشل لینگویج' کہا جائے۔ جسکا انواد، خاصکر اس پرستھتی میں، دفتری بھاشا یا شاید سرکاری بھاشا ہوسکتا ہے، راشٹر بھاشا یا راج بھاشا نہیں۔ ہم لیکھک کو یہ بھی یاد دلا دینا چاہتے ہیں کہ ودھان سبھا کے ٹھہراؤ میں ہندی کا وہی روپ طے کیا گیا ہے جو ودوان لیکھک نے چاہا ہے اور جسے اب تک بہت سے لوگ ہندستانی کہتے رہے ہیں۔ اس کے ورودھ ہندی پریمیوں کی جتنی کوششیں ہیں وہ ودھان کا صاف الٹگھن ہیں۔ ودھان کے ٹھہراؤ کے شبد کسی پرانتی یا کسی بھی دوسری اس دیش کی بھاشا کی بڑھوتی اور اس کے وکاس کو کسی طرح بھی روکنا نہیں چاہتے۔

—ایڈیٹر

"मसजिद में मेरा मालिक तो मुझे मिला ही नहीं"

(गु. म.)

कई दिन हुए मुझे बाँदरा (जो बम्बई शहर के पास है) स्टेशन के नजदीक एक बूढ़े मुसलमान भाई दिखाई पड़े. वह अकेले एक कोने में खड़े हुए बार बार कह रहे थे–"मसजिद में मेरा मालिक तो मुझे मिला ही नहीं !" उनके यह शब्द सुन कर मैं अपनी चहल क़दमी में, जो मैं प्लेट फ़ार्म पर कर रहा था, कुछ देर के लिये रुक गया. फिर मैं ने उनकी तरफ़ बड़े ध्यान से देखा और मुझे उनसे बात करने का एक अन्दरूनी खिंचाव और ख़्वाहिश हुई.

"सलाम भाई साहब !" उनके पास पहुँच कर मैंने बड़े अदब से कहा.

'सलाम !" उन्होंने जवाब दिया. अगरचे उनकी आवाज़ के लहजे से मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उन्हें मेरा उनसे मिलना कुछ ज्यादा पसंद नहीं आया. फिर भी मैं ने उनसे कहा—"भाई साहब, क्या मैं आप से पूछ सकता हूँ कि मसजिद में 'ख़ुदा बन्देताला' आपको क्यों नहीं मिले ?"

वह चुप रहे पर मैं ने अपना बोलना बंद न किया—"मसजिद तो 'ख़ुदा बन्देताला' का एक मुक़द्दस (पवित्र) मकान है. इसलिये आप उन्हें वहाँ ज़रूर मिल सकते हैं.'

"مسجد میں میرا مالک تو مجھے ملا ھی نہیں"

(گ — م)

کئی دن ہوئے مجھے باندرا (جو بمبئی شہر کے پاس ہے) اسٹوشن کے نزدیک ایک بوڑھے مسلمان بھائی دکھائی پڑے . وہ اکیلے ایک کونے میں کھڑے ہوئے بار بار کہہ رہے تھے — "مسجد میں میرا مالک تو مجھے ملا ہی نہیں !" انکے یہ شبد سنکر میں اپنی چہل قدمی میں، جو میں پلیٹ فارم پر کر رہا تھا، کچھ دیر کے لئے رک گیا . پھر میں نے اُن کی طرف بڑے دھیان سے دیکھا اور مجھے اُن سے بات کرنے کا ایک اندرونی کھنچاؤ اور خواہش ہوئی .

"سلام بھائی صاحب !" اُن کے پاس پہونچ کر میں نے بڑے ادب سے کہا .

"سلام !" اُنہوں نے جواب دیا . اگرچہ اُن کی آواز کے لہجہ سے مجھے ایسا معلوم ہوا کہ اُنہیں میرا اُن سے ملنا کچھ زیادہ پسند نہیں آیا . پھر بھی میں نے اُن سے کہا—"بھائی صاحب، کیا میں آپ سے پوچھ سکتا ہوں کہ 'مسجد میں خدا وند تعالیٰ' آپ کو کیوں نہیں ملے ؟"

وہ چپ رہے پر میں نے اپنا بولنا بند نہ کیا . "مسجد تو 'خدا وند تعالیٰ' کا ایک مقدس (پوتر) مکان ہے . اسلئے آپ اُنہیں وہاں ضرور مل سکتے ہیں ."

इस पर वह ज़रा चिढ़ से गये. पर शायद मुझसे अपना पीछा छुड़ाने के इरादे से उन्होंने त्योरी चढ़ा कर कहा—"तो सुन लो तुम भी मेरे दुख की दास्तान. मैं लग भग पचास बरस से, वह मसजिद जो तुम्हें दूर नजर आ रही है, उसमें हर रोज़ सुबह और शाम नमाज पढ़ता हूँ, हर हफ़्ता ग़रीबों को एक दिन खाना भी खिलाता हूँ. कुछ यतीमों की परवरिश और पढ़ाई के लिये हर महिने थोड़े रुपये भी ख़ैरात के तौर पर देता हूँ. अपने रोजाना व्योपार में किसी को ठगता नहीं और अपने बरताव से भी किसी को जान बूझ कर नाराज नहीं करता. इस तरह मैंने अपनी जिन्दगी आज तक बसर की है. मगर बहुत अरसा नहीं गुजरा कि एक शाम जब मैं अपनी नमाज पूरी कर चुका था कि मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई ग़ैबी (दैवी) आवाज कह रही है:—"इस तरह तुम चाहे हजार बरस तक मेरे सामने सजदा करते रहो मगर मैं तुम्हें कभी नहीं मिल सकता." यह सुनकर मैं बड़ा हैरान हुआ और तब ही से मैं सब को कहता फिरता हूँ. "मसजिद में मेरा मालिक मुझे तो मिला ही नहीं."

उनकी दास्तान सुन कर मैंने उनसे कहा.—"शुकरिया भाई साहब, मगर बेअदबी माफ़, क्या मैं आप से यह पूछ सकता हूँ कि जिनको आप ख़ैरात देते हैं और जिन्हें आप अपने व्योपार में ठगते नहीं, जैसा कि आपने अभी फ़रमाया, वह सिर्फ़ मुसलमान ही हैं या और किसी धर्म के लोग भी हैं ?"

इस पर उन्होंने मेरी तरफ़ ज़रा ग़ुस्से भरी आँखों से देखा और

اس پر وہ ذرا چڑھ سے گئے. پر شاید مجھسے اپنا پیچھا چھڑانے کے ارادے سے اُنھوں نے تیوری چڑھا کر کہا—"تو سن لو تم بھی میرے دکھ کی داستان. میں لگ بھگ پچاس برس سے' وہ مسجد جو تمھیں دور نظر آ رہی ہے' اُس میں ہر روز صبح اور شام نماز پڑھتا ہوں' ہر ہفتہ غریبوں کو ایک دن کھانا بھی کھلاتا ہوں. کچھ یتیموں کی پرورش اور پڑھائی کے لئے ہر مہینہ تھوڑے روپئے بھی خیرات کے طور پر دیتا ہوں. اپنے روزانہ بیوپار میں کسی کو ٹھگتا نہیں اور اپنے برتاؤ سے بھی کسی کو جان بوجھ کر ناراض نہیں کرتا. اِس طرح میں نے اپنی زندگی آج تک بسر کی ہے. مگر بہت عرصہ نہیں گزرا کہ ایک شام جب میں اپنی نماز پوری کرچکا تھا کہ مجھے ایسا معلوم ہوا جیسے کوئی غیبی (دیوی) آواز کہ رہی ہے:—"اِس طرح تم چاہے ہزار برس تک میرے سامنے سجدہ کرتے رہو مگر میں تمھیں کبھی نہیں مل سکتا." یہ سنکر میں بڑا حیران ہوا اور تب ہی سے میں سب کو کہتا پھرتا ہوں. "مسجد میں میرا مالک مجھے تو ملا ہی نہیں."

اُنکی داستان سنکر میں نے اُن سے کہا—"شکریہ بھائی صاحب. مگر بے ادبی معاف. کیا میں آپ سے یہ پوچھ سکتا ہوں کہ جن کو آپ خیرات دیتے ہیں اور جنھیں آپ اپنے بیوپار میں ٹھگتے نہیں' جیسا کہ آپ نے ابھی فرمایا' وہ صرف مسلمان ہی ہیں یا اور کسی دھرم کے لوگ بھی ہیں؟"

اِس پر اُنھوں نے میری طرف ذرا غصے بھری آنکھوں سے دیکھا

मैंने जवाब दिया—"भाई साहब मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि अगर आप अपने मुसलमान लोगों के अलावा और धर्म वाले लोगों को भी कभी कभी प्रेम और मोहब्बत और सदाक़त से ख़ैरात और सेवा किया करेंगे तो यह नामुमकिन नहीं कि मालिक की कृपा आप पर हो और वह आपको सिर्फ़ मसजिद में ही नहीं बल्कि मसजिद के बाहर भी मिल जायें."

यह सुनकर उन्होंने मेरे सर की तरफ़ अपने एक हाथ से इशारा किया और कहा—"क्या आपकी ऊपर की मंज़िल ख़ाली है ? या आपके दिमाग़ में कुछ ख़लल है ?"

मैं ने जवाब दिया—"आपकी दोनों बातें सही हैं क्योंकि अदालत ने ख़ुद मुझे ऐसा एक सर्टीफ़िकिट एक बार दिया था"

इस पर मालूम नहीं कैसे या क्यों उनका ग़ुस्सा कुछ ठन्डा हो गया और वह अपने घर की तरफ़ रवाना हो गये. और मैं रेल में, जो उसी वक़्त प्लेट फ़ार्म पर आ चुकी थी, बैठकर अपने घर की तरफ़ चला गया.

लेकिन हाल में ही उसी मुसलमान भाई से एक बार फिर रेल में मुलाक़ात हो गई. मुझे देखते ही वह अपनी जगह से उठ कर मेरे पास आ बैठे और उन्होंने कहा—"दोस्त ! तुम तो ख़ूब रहे. उस दिन से तुमने मुझे इस शक में डाल दिया है कि आया तुम ही पागल हो या मैं भी."

मैं ने आहिस्ता से जवाब दिया—"शायद हम दोनों ही."

میں نے جواب دیا—"بھائی صاحب مجھے تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اگر آپ اپنے مسلمان لوگوں کے علاوہ اور دھرم والے لوگوں کی بھی کبھی کبھی پریم اور محبت اور صداقت سے خیرات اور سیوا کیا کریں گے تو یہ نا ممکن نہیں کہ مالک کی کرپا آپ پر ہو اور وہ آپ کو صرف مسجد میں ہی نہیں بلکہ مسجد کے باہر بھی مل جائیں."

یہ سن کر انہوں نے میرے سر کی طرف اپنے ایک ہاتھ سے اشارہ کیا اور کہا—"کیا آپ کی اوپر کی منزل خالی ہے؟ یا آپ کے دماغ میں کچھ خلل ہے؟"

میں نے جواب دیا—"آپکی دونوں باتیں صحیح ہیں کیونکہ عدالت نے خود مجھے ایسا ایک سرٹیفکیٹ ایک بار دیا تھا."

اِس پر معلوم نہیں کیسے یا کیوں اُن کا غصہ کچھ ٹھنڈا ہو گیا اور وہ اپنے گھر کی طرف روانہ ہو گئے. اور میں ریل میں، جو اُسی وقت پلیٹ فارم پر آچکی تھی، بیٹھ کر اپنے گھر کی طرف چلا گیا.

لیکن حال ہی میں اُسی مسلمان بھائی سے ایک بار پھر ریل میں ملاقات ہو گئی. مجھے دیکھتے ہی وہ اپنی جگہ سے اُٹھ کر میرے پاس آ بیٹھے اور اُنہوں نے کہا—"دوست! تم تو خوب رہے. اُس دن سے تم نے مجھے اِس شک میں ڈال دیا ہے کہ آیا تم ہی پاگل ہو یا میں بھی."

میں نے آہستہ سے جواب دیا—"شاید ہم دونوں ہی!"

इस पर हम दोनों खूब हँसे. मगर कौन कह सकता है कि उनके और मेरे एक दूसरे से इतनी मोहब्बत से मिलने के पीछे ख़ुदा वन्दे ताला ख़ुद मौजूद नहीं थे.

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल वंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेज़ी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे. किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

اس پر ہم دونوں خوب ہنسے. مگر کون کہہ سکتا ہے کہ اُن کے اور میرے ایک دوسرے سے اتنی محبت سے ملنے کے پیچھے خداوند تعالیٰ خود موجود نہیں تھے.

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُنکے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی انکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اُن کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر اُنہوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے. قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

مینیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ – الہ آباد

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

३२१-३०० ईसा के पहले के बीच लिखी हुई इस किताब का लेखक चन्द्र गुप्त मौर्य का मशहूर मंत्री चाणक्य था. उसका नाम विष्णु गुप्त और कौटिल्य भी है. इस किताब का ऐतिहासिक बड़प्पन सभी मानते हैं. इस निगाह से कुछ लोग तो इसको हर आदमी को खरीद कर रखने की सलाह देते हैं. इसमें बयान की हुई बातों की उपयोगिता के सम्बन्ध में बहुत पुराने समय से ही दो रायें रही हैं. इसके पहिले कि मैं एक एक विषय को ले कर उसकी अहमियत पर अपना खयाल जाहिर करूँ, शुरू में इन दोनों रायों का चरचा कर देना ज़रूरी समझता हूँ.

कामन्दक नीति का लेखक लिखता है :—"कामन्दक नीति उसी विद्वान के ग्रन्थ की बुनियाद पर लिखी गई है, जिसके वज्र से, पहाड़ की तरह क़ायम नन्द, जड़ से उखड़ गया, जिसने चन्द्र गुप्त को पृथ्वी का राजा बनाया. जिसने अर्थ शास्त्रके समुद्र से नीति शास्त्र के अमृत को निकाला. उसी विष्णु गुप्त को प्रनाम है." इस तरह अर्थ शास्त्र एक आलिम के बड़े दिमाग़ की क़ीमती उपज माना गया है.

ठीक इसके खिलाफ़ दण्डी ने लिखा है—"उन लोगों के लिये क्या कहा जाय, जो कि गिरे से गिरे कामों को ठीक बताने वाले कौटिल्य अर्थ शास्त्र को प्रमान मानते हैं, जिनकी आदतें माया और

کوتلیہ کا ارتھ شاستر

(بھائي اونکار ناتھ شاسترِي)

سنہ ۳۲۱ - ۳۰۰ عیسی کے پہلے کے بیچ لکھی ہوئی اس کتاب کا لیکھک چندر گپت موریہ کا مشہور منتري چانکیہ تھا . اسکا نام وشنو گپت اور کوتلیہ بھی ہے . اس کتاب کا اتہاسک بڑپپن سبھي مانتے ھیں . اس نگاہ سے کچھ لوگ تو اس کو ہر آدمی کو خرید کر رکھنے کی صلاح دیتے ھیں . اسمیں بیان کی ہوئي باتوں کي اپیوگتا کے سمبندھ میں بہت پرانے سمے سے ھی دو رائیں رھي ھیں . اسکے پہلے کہ میں ایک ایک وشے کو لیکر اس کی اھمیت پر اپنا خیال ظاہر کروں' شروع میں ان دونوں رایوں کا چرچا کردینا ضروری سمجھتا ھوں .

کامندک نیتي کا لیکھک لکھتا ھے :— '' کامندک نیتی اُسی ودوان کے گرنتھ کی بنیاد پر لکھی گئی ھے' جس کے بجر سے' پہاڑ کی طرح قائم نند' جڑ سے اکھڑ گیا' جس نے چندر گپت کو پرتھوی کا راجہ بنایا' جس نے ارتھ شاستر کے سمدر سے نیتي شاستر کے امرت کو نکالا . اُسي وشنو گپت کو پرنام ھے .'' اِس طرح ارتھ شاستر ایک عالم کے بڑے دماغ کي قیمتي اپج مانا گیا ھے .

ٹھیک اس کے خلاف دنڈی نے لکھا ھے — '' اُن لوگوں کے لئے کیا کہا جائے' جو کہ گرے سے گرے کاموں کو ٹھیک بتانے والے کوتلیہ ارتھ شاستر کو پرمان مانتے ھیں' جن کی عادتیں مایا اور

भोग वामन सम्बन्धी कर्मों के करने के कारन क्रूर हैं. जिनके गुरु, पुरोहित और सलाहकार ऐसे मन्त्री हैं जो कि दूसरे को धोखा देना ही ठीक समझते हैं. जिनके लिये हजारों राजाओं का छीना हुआ धन ही सब कुछ है. जो मारने वाले शास्त्रों का प्रयोग करते हैं और भाई तक को मारना पसन्द करते हैं."

मेरे विचार से अर्थशास्त्र के बारे में पहली राय हर्फ़ ब हर्फ़ गलत और दूसरी राय हर्फ़ ब हर्फ़ सही है. हर्फ़ ब हर्फ़ गलत इसलिये कि अर्थ शास्त्र के रचैता ने सन ३०० ईसा से पहले के इक़तसादी सियासी मसलों के हल के लिये भी जो उपाय बताये हैं वह अमृत नहीं विष हैं. विष इसलिये कि ऐसे लग भग सभी पुराने ग्रन्थों में शोषकों, मालिकों और सामन्तों के स्वार्थों से ही सोचा और लिखा गया है. उनमें जनता, गुलामों, शूद्रों, दासों, चण्डालों, किसानों के फ़र्ज़ों पर अगर कोई एक बात मिलती है तो यह कि वह आँखें बन्द कर के अपने राजाओं की गुलामी बजाते और उनके जुल्मों और लूटों, उनकी भोग बिलास की जिन्दगी और पतन को उनका पैदायशी हक़ समझ कर बरदाश्त करते रहें.

इस किताब पर कुछ लिखने से मेरा मतलब महज़ यह है कि इस में दी हुई इतिहासी बातों को सामने रख कर इस देश की भोली भाली जनता को इस भ्रम से छुटकारा दिलाऊँ कि हर प्राचीन किताब को रिषियों, मुनियों के नाम पर वरदान समझकर वह अपनी आँखों के दरवाजों को बन्द न रक्खे. क्योंकि यह दिमाग़ी गुलामी, उसे आज भी अपने शोषकों के जुल्मों को बरदाश्त करते रहने का सबक़ देगी.

بھوگ وامن سمبندھی کاموں کے کرنے کے کارن کرور ہیں۔ جن کے گرو، پروہت اور صلاح کار ایسے منتری ہیں جو کہ دوسرے کو دھوکہ دینا ہی ٹھیک سمجھتے ہیں۔ جن کے لئے ہزاروں راجاؤں کا چھینا ہوا دھن ہی سب کچھ ہے۔ جو مارنے والے شاستروں کا پریوگ کرتے ہیں اور بھائی تک کو مارنا پسند کرتے ہیں۔"

میرے وچار سے ارتھ شاستر کے بارے میں پہلی رائے حرف بحرف غلط اور دوسری رائے حرف بحرف صحیح ہے۔ حرف بحرف غلط اسلئے کہ ارتھشاستر کے رچیتا نے سنہ ۳۰۰ عیسیٰ سے پہلے کے اقتصادی سیاسی مسئلوں کے حل کے لئے بھی جو اپائے بتائے ہیں، وہ امرت نہیں وش ہیں۔ وش اسلئے کہ ایسے لگ بھگ سبھی پرانے گرنتھوں میں شوشکوں، مالکوں اور سامنتوں کے سوارتھوں سے ہی سوچا اور لکھا گیا ہے۔ ان میں جنتا، غلاموں، شودروں، داسوں، چنڈالوں، کسانوں کے فرضوں پر اگر کوئی ایک بات ملتی ہے تو یہ کہ وہ آنکھیں بند کرکے اپنے راجاؤں کی غلامی بجاتے اور ان کے ظلموں اور لوٹوں، ان کی بھوگ ولاس کی زندگی اور پتن کو انکا پیدایشی حق سمجھ کر برداشت کرتے رہیں۔

اس کتاب پر کچھ لکھنے سے میرا مطلب محض یہ ہے کہ اسمیں دی ہوئی اتہاسی باتوں کو سامنے رکھکر اس دیش کی بھولی بھالی جنتا کو اس بھرم سے چھٹکارا دلاؤں کہ ہر پراچین کتاب کو رشیوں، منیوں کے نام پر وردان سمجھ کر وہ اپنی آنکھوں کے دروازوں کو بند نہ رکھیں۔ کیونکہ یہ دماغی غلامی، اسے آج بھی اپنے شوشکوں کے ظلموں کو برداشت کرتے رہنے کا سبق دے گی۔

लेकिन एक एक बात पर अलग अलग विचार करने से पहले मैं इस किताब के नाम की सार्थकता पर विचार करना चाहता हूँ. क्योंकि पुस्तक पढ़ जाने के बाद जो बातें खास तौर से खटकती हैं, उनमें अर्थ शास्त्र नाम भी एक है.

कौटिल्य अर्थ शास्त्र में इतने विषयों पर रोशनी डालने की कोशिश की गई है कि सब पर मामूली निगाह डालने से भी यह मालूम हुए बिना नहीं रहता कि वैज्ञानिक दृष्टि से यह नाम सार्थक नहीं है. इसमें अर्थशास्त्र से ताल्लुक रखने वाली बहुत सी बातों पर विचार जरूर किया गया है. लेकिन यह देखर हँसी आये बिना नहीं रहती कि इस तरह के विषय, जैसे 'दूत के काम' सेना-पतियों की घात, खुफिया पुलिस का इस्तेमाल, क़िले का घेरना, हारे हुए राजा से व्यहार, दंड विधान, राजद्रोहियों और दुश्मनों के साथी वग़ैरा विषय अर्थशास्त्र के अन्दर कैसे आते हैं. मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि समाज से सम्बन्ध रखने वाली शायद ही कोई बात रही होगी जिसका बयान अर्थशास्त्र में न हुआ हो.

मिसाल के लिये १६२ प्रकरन को लीजिये. इसकी सुर्ख़ी है दूत के काम. इसमें अर्थशास्त्र की बात तो दूर रही, दूत के बारे में भी कुछ नहीं है. जैसा कि इसकी छोटी सुर्खियों—धर्म विजयी, लोभ विजयी, असुर विजयी, दंडसन्धि, पुरुष सन्धि, कोष सन्धि वग़ैरा से जाहिर होता है.

और तशरीह में जाना हो तो इस इबारत को पढ़िये :—

"कमज़ोर राजा पर अगर कोई मज़बूत राजा हमला करे, तो

لیکن ایک ایک بات پر الگ الگ وچار کرنے سے پہلے میں اس کتاب کے نام کی سارتھکتا پر وچار کرنا چاہتا ہوں. کیونکہ پستک پڑھ جانے کے بعد جو باتیں خاص طور سے کھٹکتی ہیں' اُن میں ارتھ شاستر نام بھی ایک ہے .

کوٹلیہ ارتھ شاستر میں اتنے وشیوں پر روشنی ڈالنے کی کوشش کی گئی ہے کہ سب پر معمولی نگاہ ڈالنے سے بھی یہ معلوم ہوئے بنا نہیں رہتا کہ ویگیانک درشٹی سے یہ نام سارتھک نہیں ہے . اسمیں ارتھ شاستر سے تعلق رکھنے والی بہت سی باتوں پر وچار ضرور کیا گیا ہے' لیکن یہ دیکھکر ہنسی آئے بنا نہیں رہتی کہ اس طرح کے وشے' جیسے ' دوت کے کام ' سینا پتیوں کی گھات' خفیہ پولیس کا استعمال' قلعہ کا گھیرنا' ہارے ہوئے راجہ سے بیوہار' دنڈ ودھان' راج دروہیوں اور دشمنوں کے ساتھی وغیرہ وشے ارتھ شاستر کے اندر کیسے آتے ہیں . مجھے تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ سماج سے سمبندھ رکھنے والی شاید ہی کوئی بات رہی ہوگی جس کا بیان ارتھ شاستر میں نہ ہوا ہو .

مثال کے لئے ۱۶۲ پرکرن کو لیجئے . اسکی سرخی ہے دوت کے کام . اس میں ارتھ شاستر کی بات تو دور رہی' دوت کے بارے میں بھی کچھ نہیں ہے . جیسا کہ اس کی چھوٹی سرخیوں — دھرم وجئی' لوبھ وجئی' اسور وجئی' دنڈ سندھی' پرش سندھی' کوش سندھی وغیرہ سے ظاہر ہوتا ہے .

اور تشریح میں جانا ہو تو اس عبارت کو پڑھئے :—

" کمزور راجہ پر اگر کوئی مضبوط راجہ حملہ کرے' تو

वह अपने लड़के, लड़कियों को उसके मातहत कर बेंत की तरह उसके सामने झुक जाय. भरद्वाज का मत है कि जो बलवान के सामने झुकता है, एक तरह से वह साक्षात इन्द्र को प्रनाम करता है."

अजीब सी बात है. यह दूत के फ़र्ज़ का बयान है या किसी कमज़ोर पराजित राजा के फ़र्ज़ का. फिर दूत का फ़र्ज़ भी होता, तो वह अर्थशास्त्र नाम को सार्थक कैसे बनाता.

लोग कह सकते हैं कि "अर्थशास्त्र" से चाणक्य का कुछ और मतलब रहा होगा. लेकिन आख़िरी अध्याय पढ़ने से, इस दलील का भी जवाब मिल जाता है और यह साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि इस नाम से चाणक्य का भी उसी से मिलता जुलता मतलब था जो आज समझा जाता है. लिखा है:—

"आदमियों की रोज़ी और आदमियों के लायक़ ज़मीन का नाम अर्थ है. ज़मीन के फ़ायदे और परवरिश के उपाय को ज़ाहिर करने वाले इल्म को अर्थशास्त्र कहते हैं."

जहाँ तक इस परिभाषा (तारीफ़) के वैज्ञानिक होने की बात है, साफ़ न होते हुए भी इसे वैज्ञानिक माना जा सकता है. सारे समन्तवादी ज़माने में पैदावार का ख़ास ज़रिया ज़मीन था. फिर भी हाथ के रोज़गार और तिजारत की बहुत शुरू ज़माने में भी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी. इसीलिये जहाँ चाणक्य ने अर्थशास्त्र का ख़ास विषय खेती माना है, वहाँ उन्होंने 'पालन के उपाय' की बात कह कर अर्थशास्त्र के अर्थ की व्यापकता का भी इज़हार

وہ اپنے لڑکے، لڑکیوں کو اس کے ماتحت کر بینت کی طرح اسکے سامنے جھک جائے . بھردواج کا مت ھے کہ جو بلوان کے سامنے جھکتا ھے، ایک طرح وہ ساکشات اندر کو پرنام کرتا ھے .''

عجیب سی بات ھے . یہ دوت کے فرض کا بیان ھے یا کسی کمزور پراجت راجہ کے فرض کا . پھر دوت کا فرض بھی ھوتا، تو وہ ارتھ شاستر نام کو سارتھک کیسے بناتا .

لوگ کہہ سکتے ھیں کہ " ارتھ شاستر " سے چانکیہ کا کچھ اور مطلب رھا ھوگا . لیکن آخری ادھیائے پڑھنے سے، اس دلیل کا بھی جواب مل جاتا ھے اور یہ صاف ظاھر ھو جاتا ھے کہ اس نام سے چانکیہ کا بھی اُسی سے ملتا جلتا مطلب تھا جو آج سمجھا جاتا ھے . لکھا ھے :—

" آدمیوں کی روزی اور آدمیوں کے لائق زمین کا نام ارتھ ھے . زمین کے فائدے اور پرورش کے اُپائے کو ظاھر کرنے والے علم کو ارتھ شاستر کہتے ھیں .''

جہاں تک اس پریبھاشا (تعریف) کے ویگیانک ھونے کی بات ھے، صاف نہ ھوتے ھوئے بھی اسے ویگیانک مانا جاسکتا ھے . سارے سامنتوادی زمانہ میں پیداوار کا خاص ذریعہ زمین تھا . پھر بھی ھاتھ کے روزگار اور تجارت کی بہت شروع زمانہ میں بھی اُپیکشا نہیں کی جاسکتی تھی . اسی لئے جہاں چانکیہ نے ارتھ شاستر کا خاص وشے کھیتی مانا ھے، وھاں اُنھوں نے 'پالن کے اُپائے' کی بات کہکر ارتھ شاستر کے ارتھ کی 'ویاپکتا' کا بھی اظہار

कर दिया है. चाणक्य का ज़माना आजका उन्नत ज़माना नहीं था, जब किसी शास्त्र की परिभाषा करते समय एक पूरी तवारीख़ का ख़याल रक्खा जा सकता हो. औद्योगिक क्रान्ति यानी सनअती इन्क़लाब सदियों आगे था. कल कारख़ाने नहीं बने थे. रोज़ी के नये तरीक़ों की कल्पना भी नामुकिन थी. तब ऊपर की तारीफ़ ही बहुत थी. और इस ख़याल से कौटिल्य की तारीफ़ करने में किसी को संकोच नहीं होना चाहिये. अचरज तो यह है कि ऐसी परिभाषा कर लेने के बाद भी उन्होंने ऐसे सारे विषयों पर रोशनी डाली जिनका अर्थशास्त्र से सीधा सम्बन्ध नहीं था.

इसी प्रकरन में किसी विषय के समझाने की ३२ युक्तियाँ (नुक्ते) दी गई हैं. इन युक्तियों के साइन्सी ना साइन्सी होने पर अलग विचार होगा. मगर इन पर विचार करते समय भी, यह ताज्जुब की बात है, कि अर्थशास्त्र के लेखक का ध्यान इस बात की ओर नहीं गया कि क्या जिन बेमौक़ा बातों का बयान लेखक ने किया है, वह भी किसी उक्ति के अन्दर आ सकती हैं.

एक दूसरा विषय—विवाहितों के सम्बन्ध में नियम—लीजिये. इस में लिखा है—"बारह साल की लड़की और सोलह साल का लड़का बालिग़ होता है,......"नंगी, अधनंगी, लूली, लंगड़ी, बाप मरी, मां मरी, वग़ैरा गालियाँ दिये बिना ही ढंग की बातें सिखाई जायँ. अगर यह मुमकिन न हो, तो बाँस की खपची, कोड़ा या थप्पड़ पीठ पर तीन बार मारा जाय. घर के दरवाज़े पर या बाहर बाग़ीचे में होने वाले खेल तमाशों में जो औरत शामिल हो, उसके लिये

کردیا ہے . چانکیہ کا زمانہ آج کا اُنّت زمانہ نہیں تھا' جب کسی شاستر کی پری بھاشا کرتے سمے ایک پوری تواریخ کا خیال رکھا جاسکتا ہو . آدیوگک کرانتی یعنی صنعتی انقلاب صدیوں آگے تھا' کل کارخانے نہیں بنے تھے' روزی کے نئے طریقوں کی کلپنا بھی ناممکن تھی . تب اوپر کی تعریف ہی بہت تھی' اور اس خیال سے کوٹلیہ کی تعریف کرنے میں کسی کو سنکوچ نہیں ہونا چاہئے . اچرج تو یہ ہے کہ ایسی پری بھاشا کرلینے کے بعد بھی انہوں نے ایسے سارے وشیوں پر روشنی ڈالی جن کا ارتھ شاستر سے سیدھا سمبندھ نہیں تھا .

اسی پرکرن میں کسی وشے کے سمجھانے کی ۳۲ یکتیاں (نکتے) دی گئی ہیں . ان یکتیوں کے سائنسی نا سائنسی ہونے پر الگ وچار ہوگا . مگر ان پر وچار کرتے سمے بھی' یہ تعجب کی بات ہے' کہ ارتھ شاستر کے لیکھک کا دھیان اس بات کی اور نہیں گیا کہ کیا جن بے موقعہ باتوں کا بیان لیکھک نے کیا ہے' وہ بھی کسی اُکتی کے اندر آسکتی ہیں .

ایک دوسرا وشے — وواہتوں کے سمبندھ میں نیم — لیجئے . اس میں لکھا ہے—" بارہ سال کی لڑکی اور سولہ سال کا لڑکا بالغ ہوتا ہے' .. "ننگی' ادھ ننگی' لولی' لنگڑی' باپ مری' ماں مری وغیرہ گالیاں دئے بنا ہی ڈھنگ کی باتیں سکھائی جائیں . اگر یہ ممکن نہ ہو' تو بانس کی کھپچی' کوڑا یا تھپڑ پیٹھ پر تین بار مارا جائے . گھر کے دروازے پر یا باہر باغیچہ میں ہونے والے کھیل تماشوں میں جو عورت شامل ہو' اس کے لئے

दंड आगे दिया जायगा; अगर कोई ब्राह्मन बाहर कहीं पढ़ने गया हो, तो उसकी स्त्री को दस साल तक और उसके बच्चे को बारह साल तक और अगर कोई क्षत्री राजा के काम से बाहर गया हो, तो उसकी स्त्री ताउम्र उसका इन्तज़ार करे'''. "अगर किसी समाज के आदमी के ज़रिये उससे बच्चा पैदा हो गया हो, तो इसमें उनकी बदनामी किसी को भी न करनी चाहिये." वग़ैरा बातों का अर्थशास्त्र से क्या सम्बन्ध है.

तब फिर जान पड़ता है, "अर्थशास्त्र" नाम की सार्थकता समझने के लिये चाणक्य के सूत्रों की मदद लेनी पड़ेगी. कुछ सूत्र ये हैं—सुख का मूल धर्म है, धर्म का मूल अर्थ है, अर्थ का मूल राज है, राज्य का मूल इन्द्रि जय है. इन्द्रि जय का मूल विनय, या शिक्षन है. विनय का मूल बुज़ुरगों की ख़िदमत है. बुज़ुरगों की सेवा से ज्ञान बढ़ता है. ज्ञान से आत्मा का ज्ञान होता है. आत्मा के ज्ञान से आत्मशक्ति प्राप्त होती है. आत्मशक्ति से सब अर्थ प्राप्त हो जाते हैं.'' इस तरह के सूत्रों के ज़रिये चाणक्य ने एक विषय का दूसरे विषय से सम्बन्ध दिखलाया है. इसलिये हिंदुस्तान के पुराने रिवाज के मुताबिक़ एक ही विषय पर रोशनी डालते समय सब विषयों पर कुछ न कुछ कहना ज़रूरी हो गया. मगर आज का विकसित समाज इस सब के मूल को एक मान कर चलने की शैली को छोड़ चुका है. वह अलग अलग बातों को अलग अलग लेता है. इसीलिये, फ़िलासफ़ी की किताबों में हिसाब या केमेस्ट्री वग़ैरा की बात का ज़िक्र महज़ प्रसंग के लिये होता है. राजनीति और अर्थशास्त्र एक दूसरे से बहुत सम्बन्धित होते हुए भी दो

دنڈ آگے دیا جائیگا؛ اگر کوئی برہمن باہر کہیں پڑھنے گیا ہو، تو اس کی استری کو دس سال تک اور اسکے بچے کو بارہ سال تک اور اگر کوئی چھتری راجہ کے کام سے باہر گیا ہو، تو اس کی استری تا عمر اس کا انتظار کرے .... " اگر کسی سماج کے آدمی کے ذریعہ اس کے بچہ پیدا ہوگیا ہو، تو اس میں ان کی بدنامی کسی کو بھی نہ کرنی چاہئے." وغیرہ باتوں کا ارتھ شاستر سے کیا سمبندھ ہے.

تب پھر جان پڑتا ہے، " ارتھ شاستر " نام کی سارتھکتا سمجھنے کے لئے چانکیہ کے سوتروں کی مدد لینی پڑیگی. کچھ سوتر یہ ہیں — سکھ کا مول دھرم ہے، دھرم کا مول ارتھ ہے، ارتھ کا مول راج ہے، راج کا مول اندری جے ہے. اندری جے کا مول ونے یا شکشن ہے. ونے کا مول بزرگوں کی خدمت ہے. بزرگوں کی سیوا سے گیان بڑھتا ہے. گیان سے آتما کا گیان ہوتا ہے. آتما کے گیان سے آتم شکتی پراپت ہوتی ہے. آتم شکتی سے سب ارتھ پراپت ہوجاتے ہیں." اس طرح کے سوتروں کے ذریعے چانکیہ نے ایک وشے کا دوسرے وشے سے سمبندھ دکھلایا ہے. اس لئے ہندستان کے پرانے رواج کے مطابق ایک ہی وشے پر روشنی ڈالتے سمے سب وشیوں پر کچھ نہ کچھ کہنا ضروری ہوگیا مگر آج کا وکست سماج اس سب کے مول کو ایک مان کر چلنے کی شیلی کو چھوڑ چکا ہے. وہ الگ الگ باتوں کو الگ الگ لیتا ہے. اسی لئے فلاسفی کی کتابوں میں حساب یا کیمسٹری وغیرہ کی بات کا ذکر محض پرسنگ کے لئے ہوتا ہے. راج نیتی اور ارتھ شاستر ایک دوسرے سے بہت سمبندھت ہوتے ہوئے بھی دو

अलग विषय माने जाते हैं और एक इल्म पर किताब लिखते समय दूसरे इल्म का बेमौक़ा ज़िक्र नहीं होता. अर्थशास्त्र नाम देकर ख़ुफ़िया पुलिस के फ़र्ज़ का बर्णन बिलकुल बेमानी था.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक, पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक बर्नन किया है. अख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें बिश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

बेचने वालों या कम से कम दस कापी ख़रीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.

मैनेजर—'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

الگ وشے مانے جاتے ہیں اور ایک علم پر کتاب لکھتے سمے دوسرے علم کا بے موقعہ ذکر نہیں ہوتا ۔ ارتھ شاستر نام دے کر خفیہ پولیس کے فرض کا ورنن بالکل بے معنی تھا ۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک، پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے ' مہاتما گاندھی کی صلاح سے' اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا. اِس چھوٹے سے بیان میں اُنہوں نے وہاں کی بھیانکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے. آخیر میں' آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے' کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں. ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے. قیمت چار آنے.

بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا.

مینیجر—'نیا ہند' ۴۸ 'بائی کا باغ' اِلہ آباد.

पुन्यात्मा

(भाई भैरव प्रसाद गुप्ता)

लचमी जी जब दुनिया की सैर कर के लौटीं, तो भाग्य देव पर बुरी तरह बरस पड़ीं.

भाग्य देव ने लचमी जी को बहुत समझाया, लेकिन उन्होंने उसकी एक न सुनी. उसे उसी तरह खरी-खोटी सुनाती रहीं.

भाग्य देव आखिर कब तक सहन करता ? वह जनता था कि लचमी जी ग़ुस्से में हैं. उनकी समझ में इस समय कोई बात नहीं आ सकती. और अगर वह भी उन्हीं की तरह ग़ुस्से में आकर उन्हें खरी खोटी सुनाने लगे, तो इस झगड़े का कभी अन्त न होगा. इस लिये धीरज से काम ले कर, नम्रता भरे शब्दों में बोला—"लचमी जी आप तो बेकार ही मुझ बेक़सूर पर कीचड़ उछाल रही हैं. इस तरह अगर आप अपनी ही फेंटती रहेंगी, तो फल कुछ न होगा. मेरी बात अगर आपको ग़लत लग रही है, तो चलिये किसी ऐसे के पास, जो हम दोनों से अधिक ज्ञानी हो. हम दोनों अपनी अपनी बातें उससे कहें. और वह जो न्याय करे उसे मान लें. अगर मैं अपराधी ठहराया गया, तो आपको मुझे दंड देने का पूरा पूरा अधिकार होगा."

लचमी जी को भाग्य देव की यह बात जच गई. बोलीं—"तो आप ही कहिये, किसके पास चला जाय ?

" پنیاتما "

(بھائی بھیرو پرساد گپت)

لکشمی جی جب دنیا کی سیر کرکے لوٹیں، تو بھاگیہ دیو پر بری طرح برس پڑیں۔

بھاگیہ دیو نے لکشمی جی کو بہت سمجھایا لیکن انہوں نے اس کی ایک نہ سنی ۔ اسے اسی طرح کھری کھوٹی سناتی رہیں ۔

بھاگیہ دیو آخر کب تک سہن کرتا ؟ وہ جانتا تھا کہ لکشمی جی غصہ میں ہیں. ان کی سمجھ میں اس سمے کوئی بات نہیں آسکتی ۔ اور اگر وہ بھی انہیں کی طرح غصہ میں آکر انہیں کھری کھوٹی سنانے لگے، تو اس جھگڑے کا کبھی انت نہ ہوگا ۔ اس لئے دھیرج سے کام لیکر، نمرتا بھرے شبدوں میں بولا — " لکشمی جی، آپ تو بیکار ہی مجھ بے قصور پر کیچڑ اچھال رہی ہیں ۔ اس طرح اگر آپ اپنی ہی پھینکتی رہینگی، تو پھل کچھ نہ ہوگا ۔ میری بات اگر آپ کو غلط لگ رہی ہے، تو چلئے کسی ایسے کے پاس، جو ہم دونوں سے ادھک گیانی ہو ۔ ہم دونوں اپنی اپنی باتیں اس سے کہیں ۔ اور وہ جو نیائے کرے اسے مان لیں ۔ اگر میں اپرادھی ٹھہرایا گیا، تو آپ کو مجھے ڈنڈ دینے کا پورا پورا ادھیکار ہوگا ۔"

لکشمی جی کو بھاگیہ دیو کی یہ بات جنچ گئی ۔ بولیں — " تو آپ ہی کہئے، کس کے پاس چلا جائے ؟"

"न न, मैं किसी का नाम न लूंगा ! कहीं आपको विश्वास न हुआ तो बेकार मेरे आत्म सम्मान को धक्का लगेगा. आपका क्या ठिकाना ? इस समय आप ग़ुस्से में हैं. आपके मन का दशा ऐसी नहीं कि आप मेरी बात मानें. इसलिये, देवी जी, मेरा तो निवेदन है कि आप ही जिसे चाहें चुन लें. मुझ पर विश्वास करें, मैं किसी तरह की आपत्ति न करूंगा." भाग्य देव ने नम्रता से निवेदन किया.

लक्ष्मी जी कुछ देर तक अच्छी तरह सोच-विचार कर बोलीं—"अच्छा, चलिये विष्णु भगवान के यहाँ."

भाग्य देव के मन में विष्णु का नाम सुन कर यह विचार ज़रूर उठा कि विष्णु लक्ष्मी जी के पति हैं. वह, सम्भव है, लक्ष्मी जी का पक्ष लें, और शायद यही सोच कर लक्ष्मीजी ने उन्हें चुना हो. मगर वह इस शंका को मन में ही दबा गया. कहा—"जैसी आपकी इच्छा. चलिये."

(२)

विष्णु भगवान के सामने दोनों जा खड़े हुए. विष्णुजी ने लक्ष्मी जी का तमतमाया चेहरा, लाल आँखें, काँपती देह देखी तो कहा—"क्यों देवी, कुशल तो है ? आज आपकी मुद्रा इस तरह असाधारन क्यों हो उठी है. आप दुनिया की सैर करने गई थीं न ? वहाँ कहीं कुछ ऐसा तो नहीं देखा, जिससे आपकी दशा ऐसी हो उठी हो ?"

"हाँ, देव, देखा है. तभी तो जी में आता है कि इस पापी भाग्य देव का गला घोंट दूँ !" होठों को दांतों से चबाते हुए लक्ष्मीजी ने कहा.

'' نہ نہ، میں کسی کا نام نہ لونگا ! کہیں آپ کو وشواس نہ ہوا تو بیکار میرے آتم سمان کو دھکا لگیگا . آپ کا کیا ٹھکانا ؟ اس سمے آپ غصہ میں ہیں . آپ کے من کی دشا ایسی نہیں کہ آپ میری بات مانیں . اسلئے دیوی جی، میرا تو نویدن ہے کہ آپ ہی جسے چاہیں چن لیں . مجھ پر وشواس کریں، میں کسی طرح کی آپتی نہ کرونگا .'' بھاگیہ دیو نے نمرتا سے نویدن کیا .

لکشمی جی کچھ دیر تک اچھی طرح سوچ وچار کر بولیں — '' اچھا، چلئے وشنو بھگوان کے یہاں . ''

بھاگیہ دیو کے من میں وشنو کا نام سنکر یہ وچار ضرور اٹھا کہ وشنو لکشمی جی کے پتی ہیں . وہ، سمبھو ہے، لکشمی جی کا پکش لیں، اور شاید یہی سوچ کر لکشمی جی نے انہیں چنا ہو . مگر وہ اس شنکا کو من میں ہی دبا گیا . کہا — '' جیسی آپ کی اچھا . چلئے .''

(۲)

وشنو بھگوان کے سامنے دونوں جا کھڑے ہوئے . وشنو جی نے لکشمی جی کا تمتمایا چہرا، لال آنکھیں، کانپتی دیہ دیکھی تو کہا — '' کیوں دیوی، کشل تو ہے ؟ آج آپ کی مدرا اس طرح اسادھارن کیوں ہو اٹھی ہے . آپ دنیا کی سیر کرنے گئی تھیں نہ ؟ وہاں کہیں کچھ ایسا تو نہیں دیکھا، جس سے آپکی دشا ایسی ہو اٹھی ہو ؟ ''

'' ہاں، دیو، دیکھا ہے . تبھی تو جی میں آتا ہے کہ اس پاپی بھاگیہ دیو کا گلا گھونٹ دوں ! '' ہونٹوں کو دانتوں سے چباتے ہوئے لکشمی جی نے کہا .

"हैं हैं, लक्ष्मीजी, आप गुस्से में भूलती हैं कि विष्णु भगवान के सामने हम न्याय के लिये आये हैं. यहाँ हम दोनों बराबर हैं, आपको कोई अधिकार नहीं कि यहाँ किसी तरह भी मेरा अपमान करें !" जरा गुस्से में आकर भाग्य देव बोला.

"शान्त हूजिये, भाग्य देव ! जरुर देवी के हृदय को कोई गहरी चोट लगी है. देवी, आप भी शान्त हों. शान्ति के साथ आपको जो कहना हो, कहें. मैं न्याय करने की कोशिश करूँगा. हाँ, तो कहिये, भला भाग्य देव से कौन-सा अपराध हो गया है ?" कह कर विष्णु जी ने अपनी आँखें लक्ष्मी जी पर गड़ा दीं.

शान्त होने की कोशिश करती हुई लक्ष्मीजी बोलीं—"सैर करते-करते एक स्थान पर देखा कि एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में एक पुन्यात्मा, धर्म परायण, सत्यवादी, कर्मशील इन्सान का अधनंगा शरीर ज्यादा ठण्ड होने के कारन थर-थर काँप रहा था. उसके पास ठंड से अपनी रक्षा करने का साधन सिर्फ आग थी. उसकी पत्नी बार-बार फूंक मार कर आग को जगाने की कोशिश करती थी, लेकिन ठंड इतनी अधिक थी कि आग भी ठंडी हुई जा रही थी. उनके पास ईंधन भी इतना न था कि वह उससे भी अधिक देर तक अपने शरीर को गर्मी पहुंचा पाते. उसे इस हालत में देख कर भाग्यदेव पर गुस्से से मेरा हृदय भर उठा. मैं ने देखा कि संसार के पापियों, अधर्मियों, झूटों, आलसियों, मक्कारों, धूर्तों, चोरों, डाकुओं, शोषकों को तो इन्होंने ऊँचे-ऊँचे सुन्दर महल, गरम ऊन के कपड़े, ताक़तवर और स्वादिष्ट भोजन, तरह-तरह के गर्मी पहुंचाने के साधन और हर तरह के बेजरूरत भोग-विलास के समान दे रखे हैं. भला आप

"ہیں ہیں، لکشمی جی، آپ غصے میں بھولتی ہیں کہ وشنو بھگوان کے سامنے ہم نیائے کے لئے آئے ہیں۔ یہاں ہم دونوں برابر ہیں۔ آپ کو کوئی ادھیکار نہیں کہ یہاں کسی طرح بھی میرا اپمان کریں!" ذرا غصے میں آکر بھاگیہ دیو بولا۔

"شانت ہو جئے، بھاگیہ دیو! ضرور دیوی کے ہردیہ کو کوئی گہری چوٹ لگی ہے۔ دیوی، آپ بھی شانت ہوں۔ شانتی کے ساتھ آپکو جو کہنا ہو کہیں۔ میں نیائے کرنے کی کوشش کرونگا۔ ہاں تو کہئے، بھلا بھاگیہ دیو سے کونسا اپرادھ ہوگیا ہے؟" کہکر وشنو جی نے اپنی آنکھیں لکشمی جی پر گڑا دیں۔

شانت ہونے کی کوشش کرتی ہوئی لکشمی جی بولیں—"سیر کرتے کرتے ایک استھان پر دیکھا کہ ایک ٹوٹی پھوٹی جھونپڑی میں ایک پنیاتما، دھرم پرائن، ستیہ وادی، کرم شیل انسان کا ادھ ننگا شریر زیادہ ٹھنڈ ہونے کے کارن تھر تھر کانپ رہا تھا۔ اُس کے پاس ٹھنڈ سے اپنی رکشا کرنے کا سادھن صرف آگ تھی۔ اس کی پتنی بار بار پھونک مار کر آگ کو جگانے کی کوشش کرتی تھی، لیکن ٹھنڈ اتنی ادھک تھی کہ آگ بھی ٹھنڈی ہوتی جارہی تھی۔ اُن کے پاس ایندھن بھی اتنا نہ تھا کہ وہ اس سے بھی ادھک دیر تک اپنے شریر کو گرمی پہونچا پاتے۔ اُسے اس حالت میں دیکھکر بھاگیہ دیو پر غصے سے میرا ہردیہ بھر اُٹھا۔ میں نے دیکھا کہ سنسار کے پاپیوں، ادھرمیوں، جھوٹوں، آلسیوں، مکاروں، دھورتوں، چوروں، ڈاکوؤں، شوشکوں کو تو انہوں نے اونچے اونچے، سندر محل، گرم اون کے کپڑے، طاقتور اور سوادشت بھوجن، طرح طرح کے گرمی پہونچانے کے سادھن اور ہر طرح کے بےضرورت بھوگ ولاس کے سامان دے رکھے ہیں۔ بھلا آپ

ही बताइये देव, यह कहाँ का न्याय है कि पापी जाड़े में भी सुहानी गर्मी का आनन्द लूटे और एक धर्मात्मा ठण्ड में ठिठुर-ठिठुर कर जान दे दे. उस समय तो मेरे जी में आया कि सारे पापियों को छोड़ कर मैं उस पुन्यात्मा की झोपड़ी में जा बैठूँ. लेकिन ब्रह्मा के विधान से मजबूर हो कर बिना भाग्य देव की आज्ञा पाये मैं ऐसा कैसे कर सकती थी ? देव, उस पुन्यात्मा की विकट दशा देखकर मेरा हृदय हाहाकार कर उठा ! मेरी शान्ति नष्ट हो गई है ! मैं ब्रह्मा के इस विधान को तोड़-फोड़ बिना न रहूँगी ! अब मैं भाग्य देव के अधीन रह कर एक छन भी काम करना नहीं चाहती ! " कहते-कहते लक्ष्मी जी की आँखों से चिनगारियाँ छिटकने लगीं. शरीर मारे गुस्से के काँपने लगा.

विष्णुजी लक्ष्मीजी की बातें सुन कर सन्नाटे में आ गये. भाग्य देव का मुख पीला पड़ गया. अपने पक्ष में वह बहुत कुछ कहना चाह कर भी कुछ न कह सका.

कुछ देर के बाद गम्भीर हो कर विष्णुजी ने कहा—"देवी के इस तरह गुस्सा होने का कारन उचित ही जान पड़ता है. लेकिन..." गहरे सोच में धीरे-धीरे सिर हिलाते हुए उन्होंने कहा—"डर है कि जल्दी में मैं कुछ अन्याय न कर बैठूँ. इसलिये आप लोग मुझे कुछ सोचने का समय दें."

भाग्य देव के हृदय में धुकधुकी लग गई. लक्ष्मीजी के चेहरे पर विजय की आभा झलकने लगी.

काफी देर के बाद विष्णुजी ने सोच से सिर उठाया. भाग्य देव और लक्ष्मीजी उनका फैसला सुनने के लिये बेचैन हो उठे.

ھی بتائیے دیو، یہ کہاں کا نیائے ھے کہ پاپی جاڑے میں بھی سہانی گرمی کا آنند لوٹے اور ایک دھرماتما ٹھنڈ میں ٹھٹھر ٹھٹھر کر جان دیدے . اس سمے تو میرے جی میں آیا کہ سارے پاپیوں کو چھوڑ کر میں اس پنیاتما کی جھونپڑی میں جابیٹھوں . لیکن برھما کے ودھان سے مجبور ھوکر بنا بھاگیہ دیو کی آگیا پائے میں ایسا کیسے کرسکتی تھی ؟ دیو، اس پنیاتما کی وکٹ دشا دیکھکر میرا ھردیہ ھاھا کار کر اٹھا ! میری شانتی نشٹ ھو گئی ھے ! میں برھما کے اس ودھان کو توڑے پھوڑے بنا نہ رھونگی ! اب میں بھاگیہ دیو کے ادھین رھکر ایک چھن بھی کام کرنا نہیں چاھتی !" کہتے کہتے لکشمی جی کی آنکھوں سے چنگاریاں چھٹکنے لگیں . شریر مارے غصہ کے کانپنے لگا .

وشنو جی لکشمی جی کی باتیں سنکر سناٹے میں آگئے . بھاگیہ دیو کا مکھ پیلا پڑگیا . اپنے پکش میں وہ بہت کچھ کہنا چاہ کر بھی کچھ نہ کہ سکا .

کچھ دیر کے بعد گمبھیر ھوکر وشنو جی نے کہا — " دیوی کے اس طرح غصہ ھونے کا کارن اُچت ھی جان پڑتا ھے . لیکن..." گہرے سوچ میں دھیرے دھیرے سر ھلاتے ھوئے انھوں نے کہا — "ڈر ھے کہ جلدی میں میں کچھ انیائے نہ کر بیٹھوں . اس لئے آپ لوگ مجھے کچھ سوچنے کا سمے دیں ."

بھاگیہ دیو کے ھردیہ میں دھک دھکی لگ گئی . لکشمی جی کے چہرہ پر وجے کی آبھا جھلکنے لگی .

کافی دیر کے بعد وشنو جی نے سوچ سے سر اُٹھایا . بھاگیہ دیو اور لکشمی جی انکا فیصلہ سننے کے لئے بیچین ھو اٹھے .

विष्णु बहुत गम्भीर थे. धीरे-धीरे बोले—"किसी फ़ैसले पर पहुँचने के पहले मैं ने एक प्रयोग करने का निश्चय किया है. प्रयोग के फल पर ही मेरा फ़ैसला होगा. आप दोनों से मेरा निवेदन है कि आप इस प्रयोग में मेरा साथ दें!"

"कैसा प्रयोग, देव ?" लक्ष्मी जी और भाग्य देव साथ ही बोल उठे.

"अभी बताऊँगा." सिंहासन से उठकर विष्णु बोले—"आइये मेरे साथ. हम अभी उस अभागे पुन्यात्मा की झोंपड़ी में चलेंगे."

(३)

"अच्छा तो भाग्यदेव जी, अब आप जाइये. मेरी बातें याद रखियेगा. आओ देवी, तब तक हम यहीं रुकेंगे." विष्णु ने यह कह कर भाग्य देव को विदा किया.

कड़ी मेहनत से थका हुआ पुन्यात्मा हाथ-मुँह धोकर एक गुड़ की डली मुँह में डाल रहा था. उसकी गृहिनी पास ही हाथ में पीतल के चमचम लोटे में निर्मल जल लिये खड़ी थी.

भाग्य देव उसके पास जा कर खड़ा हो गया. पुन्यात्मा गुड़ खा कर पानी लेने को गृहिनी की ओर मुड़ा तो भाग्यदेव पर नज़र पड़ गई. बोला—"आप कौन हैं महाराज ?"

गृहिनी अकचका कर अपरिचित की ओर देखने लगी. "मैं भाग्य देव हूँ. तुम्हारे पुण्य कार्यों से मैं प्रसन्न हुआ हूँ. मैं तुम्हें वर देने आया हूँ. जो माँगो गे वही पाओगे! माँगो, पुन्यात्मा, अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहो, माँगो." कह कर भाग्य देव ने अपना दाहिना हाथ उसके सिर पर फैला दिया.

وشنو بہت گمبھیر تھے. دھیرے دھیرے بولے — "کسی فیصلہ پر پہونچنے کے پہلے میں نے ایک پریوگ کرنے کا نشچے کیا ہے. پریوگ کے پھل پر ہی میرا فیصلہ ہوگا. آپ دونوں سے میرا نویدن ہے کہ آپ اس پریوگ میں میرا ساتھ دیں!"

"کیسا پریوگ، دیو؟" لکشمی جی اور بھاگیہ دیو ساتھ ہی بول اٹھے.

"ابھی بتاؤنگا." سنگھاسن سے اٹھ کر وشنو بولے —"آئیے میرے ساتھ. ہم ابھی اس ابھاگے پنیاتما کی جھونپڑی میں چلیں گے."

(۳)

"اچھا تو بھاگیہ دیو جی، اب آپ جائیے. میری باتیں یاد رکھئے گا. آؤ دیوی، تب تک ہم یہیں رکیں گے." وشنو نے یہ کہکر بھاگیہ دیو کو ودا کیا.

کڑی محنت سے تھکا ہوا پنیاتما ہاتھ منہ دھوکر ایک گڑ کی ڈلی منہ میں ڈال رہا تھا. اس کی گرہنی پاس ہی ہاتھ میں پیتل کے چم چم لوٹے میں نرمل جل لئے کھڑی تھی.

بھاگیہ دیو اس کے پاس جاکر کھڑا ہوگیا. پنیاتما گڑ کھا کر پانی لینے کو گرہنی کی اور مڑا تو بھاگیہ دیو پر نظر پڑگئی. بولا — "آپ کون ہیں مہاراج؟"

گرہنی اکچکا کر اپریچت کی اور دیکھنے لگی. "میں بھاگیہ دیو ہوں. تمہارے پنیہ کاریوں سے میں پرسن ہوا ہوں. میں تمہیں بر دینے آیا ہوں. جو مانگوگے وہی پاؤگے! مانگو، پنیاتما، اپنی اچھا کے انوسار جو چاہو، مانگو." کہ کر بھاگیہ دیو نے اپنا داھنا ہاتھ اس کے سر پر پھیلا دیا.

गृहिनी खुशी से बावली हो तन मन की सुध खो बैठी. उसके हाथ का जल भरा लोटा भूमि पर गिर पड़ा और उसका पानी बह गया. वह पागल की तरह बोल पड़ी—"माँग लो खेत, बैल, घर, धन, बेटा, बेटी..." और अभी पूरी बात कह भी न पाई थी कि खुशी के मारे बेहोश हो कर गिर पड़ी.

"हाँ, पुन्यात्मा, जो इच्छा हो, माँगो!" भाग्यदेव ने फिर कहा.

पुन्यात्मा के चेहरे पर किसी तरह का विकार न आया. उसने साधारन स्वर में कहा—"आप मुझ पर प्रसन्न हैं, यह जान कर धन्य हुआ. लेकिन इतनी जल्दी में मैं आप से क्या माँगूं? मुझे कुछ सोचने-विचारने का समय दें. तै करने के बाद मैं आप से कुछ माँग सकूँगा."

"जो तुम्हारी इच्छा! मैं फिर आऊँगा. तब तक तुम तै कर लो." कह कर भाग्य देव ग़ायब हो गये.

गृहिनी का ज्ञान जब लौटा, तो उसने पति को विचारों में डूबा पाया. कहा—"क्यों, क्या माँगा तुमने?"

"अभी तो कुछ नहीं माँगा." पुन्यात्मा ने कहा.

"अरे, खेत, बैल, घर, धन, बेटा, बेटी कुछ भी तुम ने नहीं माँगा?" अचरज में पड़ी गृहिनी बोली.

"जब भाग्यदेव प्रसन्न ही हुए हैं, तो उनसे यह मामूली चीज़ें क्या माँगूं? हमें तो उनसे कोई बहुत बड़ी चीज़ माँगना चाहिये. मैं सोच रहा हूं. वह फिर आने का वचन दे गये हैं." पुन्यात्मा कह कर काम पर चला गया. गृहिनी हैरत में पड़ी उसकी ओर देखती रह गई.

گرهنی خوشی سے باؤلی ہو تن من کی سدھ کھو بیٹھی ۔ اس کے ہاتھ کا جل بھرا لوٹا بھومی پر گر پڑا اور اس کا پانی بہ گیا ۔ وہ پاگل کی طرح بول پڑی — " مانگ لو کھیت، بیل، گھر، دھن، بیٹا، بیٹی ......" اور ابھی پوری بات کہ بھی نہ پائی تھی کہ خوشی کے مارے بیہوش ہوکر گر پڑی ۔

" ہاں، پنیاتما، جو اچھا ہو، مانگو !" بھاگیہ دیو نے پھر کہا ۔

پنیاتما کے چہرے پر کسی طرح کا وکار نہ آیا ۔ اس نے سادھارن سور میں کہا — " آپ مجھ پر پرسن ہیں، یہ جان کر دھنیہ ہوا ۔ لیکن اتنی جلدی میں میں آپ سے کیا مانگوں ؟ مجھے کچھ سوچنے وچارنے کا سمے دیں ۔ طے کرنے کے بعد میں آپ سے کچھ مانگ سکونگا ۔"

" جو تمہاری اچھا ! میں پھر آؤنگا ۔ تب تک تم طے کرلو ۔" کہ کر بھاگیہ دیو غائب ہوگئے ۔

گرهنی کا گیان جب لوٹا، تب اس نے پتی کو وچاروں میں ڈوبا پایا ۔ کہا — " کیوں، کیا مانگا تم نے ؟"

" ابھی تو کچھ نہیں مانگا ۔" پنیاتما نے کہا ۔

" ارے، کھیت، بیل، گھر، دھن، بیٹا، بیٹی کچھ بھی تم نے نہیں مانگا ؟" اچرج میں پڑی گرهنی بولی ۔

" جب بھاگیہ دیو پرسن ہی ہوئے ہیں، تو اُن سے یہ معمولی چیزیں کیا مانگوں ؟ ہمیں تو ان سے کوئی بہت بڑی چیز مانگنی چاہئے ۔ میں سوچ رہا ہوں ۔ وہ پھر آنے کا وچن دے گئے ہیں ۔" پنیاتما کہ کر کام پر چلا گیا ۔ گرهنی حیرت میں پڑی اس کی اور دیکھتی رہ گئی ۔

दिन बीते, महीने बीते, देखते देखते कितने साल बीत गये. भाग्य देव कितनी ही बार आया और वापस चला गया. लेकिन पुन्यात्मा लाख सोचने विचारने के बाद भी तै न कर सका कि वह भाग्य देव से क्या माँगे. सुख सम्पति, वैभव प्रतिष्ठा, शान शौकत, बेटा बेटी, सांसारिक ऐश्वर्य, कोई भी चीज़ उसे न जँचती. इन चीज़ों में कोई न कोई ऐसी घातक बात दिखाई देती, जिससे उसके पुन्य कर्मों के नष्ट हो जाने की सम्भावना, चरित्र ख़राब हो जाने का डर, इन्सानियत से डिग जाने की शंका और आत्मा के पतित हो जाने का ख़याल मन में उठ जाता. इन चीज़ों की क़ीमत पर वह अपने जीवन का आदर्श बेच देने की बात मन में ला भी नहीं सकता था. फिर भी जब भाग्य देव ख़ुश हुए हैं तो उसे कुछ न कुछ तो माँगना ही है. इसी विचार में वह हमेशा खोया रहता, लेकिन कुछ भी माँगने की बात तै न कर पाता.

गृहिनी अपने घर की गिरी हालत पर झुँझला झुँझला कर पुन्यात्मा को कोसती. संसार का वैभव जिसके चरनों पर लोटने को तैयार है, उसकी पत्नी इस तरह तकलीफ़ का जीवन बिताये, यह बात उसे असह्य हो उठती थी. फिर भी पुन्यात्मा उसकी बातों पर ध्यान न देता.

(४)

देखते-देखते पुन्यात्मा बूढ़ा हो चला. उसका शरीर जर्जर हो गया. कड़ी मेहनत अब वह कर न सकता था इस लिये घर की हालत और बदतर हो गई. इस समय भी वह चाहता तो एक छन में सब कुछ बदला जा सकता था. लेकिन वह अपने आदर्श पर

دن بیتے' مہینے بیتے' دیکھتے دیکھتے کتنے سال بیت گئے . بھاگیہ دیو کتنی ہی بار آیا اور واپس چلا گیا . لیکن پنیاتما لاکھ سوچنے وچارنے کے بعد بھی طے نہ کرسکا کہ وہ بھاگیہ دیو سے کیا مانگے . سکھ سمپتی' ویبھو پرتشٹھا' شان شوکت' بیٹا بیٹی' سانساری ایشوریہ' کوئی بھی چیز اسے نہ جنچتی . ان چیزوں میں کوئی نہ کوئی ایسی گھاتک بات دکھائی دیتی' جس سے اس کے پنیہ کرموں کے نشٹ ہو جانے کی سمبھاونا' چرتر خراب ہو جانے کا ڈر' انسانیت سے ڈگ جانے کی شنکا اور آتما کے پتت ہوجانے کا خیال من میں اٹھ جاتا . ان چیزوں کی قیمت پر وہ اپنے جیون کا آدرش بیچ دینے کی بات من میں لا بھی نہیں سکتا تھا . پھر بھی جب بھاگیہ دیو خوش ہوئے ہیں' تو اسے کچھ نہ کچھ تو مانگنا ہی ہے . اسی وچار میں وہ ہمیشہ کھویا رہتا' لیکن کچھ بھی مانگنے کی بات طے نہ کر پاتا .

گرہنی اپنے گھر کی گری حالت پر جھنجھلا جھنجھلا کر پنیاتما کو کوستی . سنسار کا ویبھو جس کے چرنوں پر لوٹنے کو تیار ہے' اس کی پتنی اس طرح تکلیف کا جیون بتائے' یہ بات اسے اسہیہ ہو اٹھتی تھی . پھر بھی پنیاتما اس کی باتوں پر دھیان نہ دیتا .

(۴)

دیکھتے دیکھتے پنیاتما بوڑھا ہو چلا . اس کا شریر جرجر ہوگیا . کڑی محنت اب وہ کر نہ سکتا تھا اس لئے گھر کی حالت اور بدتر ہوگئی . اس سمے بھی وہ چاہتا تو ایک چھن میں سب کچھ بدلا جاسکتا تھا . لیکن وہ اپنے آدرش پر

जमा था. संसार की किसी चीज़ का उसे लोभ न था. वह संसार की कोई चीज़ माँगता, तो कैसे? फिर भी वह कुछ न कुछ माँगने की बात पर सोच-विचार करता रहता था. भाग्य देव आ-आ कर लौटता रहा.

एक दिन पुन्यात्मा बुख़ार में खाट पर पड़ गया. बुढ़ापा ख़ुद एक रोग है, उस पर तेज़ बुख़ार! पुन्यातमा के जर्जर शरीर का बचा खुचा ख़ून भी सूखने लगा. गृहिनी ने समझाया कि अब वह भाग्य देव से कुछ नहीं तो एक लम्बे जीवन का वर ही माँग ले. जीवन से बढ़ कर तो संसार में कोई चीज़ नहीं. लेकिन पुन्यात्मा ने एक करुण मुस्कान में उसकी बात उड़ा दी. गृहिनी ने अपना सिर पीट लिया.

रोग बढ़ता ही गया. दरिद्र के पास रोग से छुटकारा पाने का साधन ही क्या था. अन्त में वह दिन भी आया, जब पुन्यात्मा विकट पीड़ा से छटपटाने लगा. रह रह कर वह चीख़ता, चिल्लाता और बेहोश हो जाता. दुख सहते सहते उसकी हालत ऐसी हो गई कि जब वह बेहोशी से छन भर को भी होश में आता, तो चीख़ कर कहता—"भगवान, अब तो मुक्ति दो इस पीड़ा से!"

इसी अवसर पर भाग्य देव फिर हाज़िर हुआ. मरने के क़रीब, पीड़ा से छटपटाते पुन्यात्मा के मुँह के पास मुँह लाकर वह बोला—"पुन्यात्मा, पुन्यात्मा! अब तो कुछ माँग लो! कहीं ऐसा न हो कि जीवन का यह सुनहरा मौक़ा तुम खो बैठो!"

पुन्यात्मा की पथराई आँखें खुल गईं. एक दुख भरी मुस्कान उसके होंठों पर खेल गई. घुटी हुई आवाज़ में उसने रुक रुक कर

جما تھا ۔ سنسار کی کسی چیز کا اُسے لوبھ نہ تھا ۔ وہ سنسار کی کوئی چیز مانگتا' تو کیسے ؟ پھر بھی وہ کچھ نہ کچھ مانگنے کی بات پر سوچ وچار کرتا رہتا تھا ۔ بھاگیہ دیو آ آ کر لوٹتا رہا ۔

ایک دن پنیاتما بخار میں کھاٹ پر پڑگیا ۔ بڑھاپا خود ایک روگ ہے' اس پر تیز بخار ! پنیاتما کے جر جر شریر کا بچا کھچا خون بھی سوکھنے لگا ۔ گرہنی نے سمجھایا کہ اب وہ بھاگیہ دیو سے کچھ نہیں تو ایک لمبے جیون کا بر ہی مانگ لے ۔ جیون سے بڑھکر تو سنسار میں کوئی چیز نہیں ۔ لیکن پنیاتما نے ایک کرون مسکان میں اس کی بات اڑادی ۔ گرہنی نے اپنا سر پیٹ لیا ۔

روگ بڑھتا ہی گیا ۔ دردر کے پاس روگ سے چھٹکارا پانے کا سادھن ہی کیا تھا ۔ انت میں وہ دن بھی آیا' جب پنیاتما وکٹ پیڑا سے چھٹپٹانے لگا ۔ رہ رہ کر وہ چیختا چلاتا اور بیہوش ہوجاتا ۔ دکھ سہتے سہتے اس کی حالت ایسی ہوگئی' کہ جب وہ بیہوشی سے چھن بھر کو بھی ہوش میں آتا' تو چیخ کر کہتا— '' بھگوان' اب تو مکتی دو اس پیڑا سے ۔''

اسی اوسر پر بھاگیہ دیو پھر حاضر ہوا ۔ مرنے کے قریب' پیڑا سے چھٹپٹاتے پنیاتما کے منھ کے پاس منھ لاکر وہ بولا—''پنیاتما' پنیاتما ! اب تو کچھ مانگ لو ! کہیں ایسا نہ ہو کہ جیون کا یہ سنہرا موقعہ تم کھو بیٹھو !''

پنیاتما کی پتھرائی آنکھیں کھل گئیں ۔ ایک دکھ بھری مسکان اسکے ہونٹوں پر کھیل گئی ۔ گھٹی ہوئی آواز میں اسنے رک رک کر

कहा—"नहीं, भाग्य देव जी, आज यह मौक़ा हाथ से न जाने दूँगा. मैं ने आज तै कर लिया है !"

"तो माँगो, पुन्यात्मा ! तुम्हें कुछ देने को मेरा जी छटपटा रहा है !" यह कह कर भाग्य देव ने अपने दाहिने हाथ की छाया पुन्यात्मा की आँखों पर कर दी.

"भाग्य देव, आप मुझे इस पीड़ा से सदा के लिये मुक्त कर दीजिये ! मुझे इस झूठी, छलनामयी, दुखपूर्न दुनिया से मुक्ति प्रदान कीजिये ! मुझे अभी मौत दीजिये, मौत !" पुन्यात्मा ने आत्मा का सारा बल लगा कर किसी तरह कहा.

"ऐसा ही होगा !" भाग्य देव के मुँह से ऐसे निकला, जैसे यह शब्द पहले ही से उसके होंठों पर थे.

दूसरे ही छन पुन्यात्मा की जान शरीरके बन्धन से मुक्त हो गई. गृहिनी चीख़ मार कर रो उठी. भाग्य देव ठक रह गये.

भाग्य देव ने लौट कर जब यह बात विष्णु जी से बताई, तो न तो उनमें कोई फ़ैसला सुनाने का उत्साह रहा और न लक्ष्मीजी में फ़ैसला सुनने का. विष्णु जी ने बहुत गम्भीर हो कर सिर्फ़ यही कहा—"मालूम होता है कि पापियों, अधर्मियों, झूठों, मक्कारों, चोरों, डाकुओं और शोषकों ने संसार को ऐसा बना दिया है, जिसमें कोई पुन्यात्मा रहना पसन्द नहीं कर सकता ! मैं ब्रह्मा के यहाँ अभी जाऊँगा. इस गम्भीर मसले को तै किये बिना मुझे चैन न मिलेगा."

کہا— "نہیں، بھاگیہ دیو جی، آج یہ موقع ہاتھ سے نہ جانے دونگا. میں نے آج طے کر لیا ہے !"

"تو مانگو، پنھاتما ! تمہیں کچھ دینے کو میرا جی چھٹپٹا رہا ہے !" یہ کہکر بھاگیہ دیو نے اپنے داھنے ہاتھ کی چھایا پنھاتما کی آنکھوں پر کر دی.

"بھاگیہ دیو، آپ مجھے اس پیڑا سے سدا کے لئے مکت کر دیجئے ! مجھے اس جھوٹی، چھلنامئی، دکھ پورن دنیا سے مکتی پردان کیجئے ! مجھے ابھی موت دیجئے، موت !" پنھاتما نے آتما کا سارا بل لگا کر کسی طرح کہا.

"ایسا ہی ہوگا !" بھاگیہ دیو کے منھ سے ایسے نکلا جیسے یہ شبد پہلے ہی سے اسکے ہونٹھوں پر تھے.

دوسرے ہی چھن پنھاتما کی جان شریر کے بندھن سے مکت ہو گئی. گرھنی چیخ مارکر رو اٹھی. بھاگیہ دیو ٹھک رہ گئے.

بھاگیہ دیو نے لوٹ کر جب یہ بات وشنو جی سے بتائی، تو نہ تو ان میں کوئی فیصلہ سنانے کا اتساہ رہا اور نہ لکشمی جی میں فیصلہ سننے کا. وشنو جی نے بہت گمبھیر ہو کر صرف یہی کہا— "معلوم ہوتا ہے کہ پاپیوں، ادھرمیوں، جھوٹوں، مکاروں، چوروں، ڈاکوؤں اور شوشکوں نے سنسار کو ایسا بنا دیا ہے، جس میں کوئی پنھاتما رہنا پسند نہیں کر سکتا ! میں برہما کے یہاں ابھی جاؤں گا. اس گمبھیر مسئلے کو طے کئے بنا مجھے چین نہ ملیگا."

डाक्टरेट की डिगरी का मज़ाक़

[भाई महादेव साहा पी-एच. डी. (बुडापेस्ट)]

डाक्टर (लातीन शिक्षक) की डिगरी यूनिवरसिटी की आखरी डिगरी मानी जाती है. १०००, १२०० ई० के आस पास जब यूरप में पहले पहल यूनिवरसिटियाँ बनीं तो वहाँ बी. ए. और एम. ए. यह ही दो डिगरियाँ थीं. डाक्टर की डिगरी खास इज्जत के लिये कुछ एम. ए. पास लोगों को ही दी जाती थी. बोलोग्ना यूनिवरसिटी में १२ वीं सदी में क़ानून की फ़ैकलटी में डाक्टर की डिगरी दिये जाने की बात सुनाई पड़ती है. पैरिस यूनिवरसिटी का इतिहास लेखक ऐंटनी वह लिखता है कि ११५० ई० के बाद वहाँ यह डिगरी मजहब की फ़ैकलटी में दी जाने लगी. बरतानिया में इस डिगरी का देना १३ वीं सदी से शुरू हुआ, पर यूरपी महा देश की यूनिवरसिटियों की तरह वहाँ भी बत यह डिगरी क़ानून और मजहब की फ़ैकलटी में ही दी जाती थी. १४ वीं सदी में बीमारों का इलाज करने वालों को भी इस डिगरी का दिया जाना शुरू हुआ. जर्मनी में कला की फ़ैकलटी में पहले मैजिस्टर (मास्टर) की डिगरी दी जाती थी, बाद में उसकी जगह डाक्टर की डिगरी दी जाने लगी.

इसके अलावा ईसाई धर्म के डाक्टर (डाक्टर आफ़ दी चर्च) भी हुआ करते थे. यह डिगरी उन गिने चुने ईसाई संतों, महन्तों को दी जाती थी जिनके उपदेशों को सब पादरियों की राय से या

ڈاکٹریت کی ڈگری کا مذاق

(بھائی مہادیو ساہا . پی . ایچ . ڈی (بوڈا پیسٹ)

ڈاکٹر (لاطینی شکشک) کی ڈگری یونیورسٹی کی آخری ڈگری مانی جاتی ہے . ۱۰۰۰ ' ۱۲۰۰ عیسوی کے آس پاس جب یورپ میں پہلے پہل یونیورسٹیاں بنیں تو وہاں بی . اے . اور ایم . اے . یہ ہی دو ڈگریاں تھیں . ڈاکٹر کی ڈگری خاص عزت کے لئے کچھ ایم . اے . پاس لوگوں کو ہی دی جاتی تھی . بولوگنا یونیورسٹی میں ۱۲ ویں صدی میں قانون کی فیکلٹی میں ڈاکٹر کی ڈگری دیئے جانے کی بات سنائی پڑتی ہے . پیرس یونیورسٹی کا اتہاس لیکھک اینٹنی اُوڈ لکھتا ہے کہ سن ۱۱۵۰ع کے بعد وہاں یہ ڈگری مذہب کی فیکلٹی میں دی جانے لگی . برطانیہ میں اس ڈگری کا دینا ۱۳ ویں صدی میں شروع ہوا' پر یورپی مہادیش کی یونیورسٹیوں کی طرح وہاں بھی تب یہ ڈگری قانون اور مذہب کی فیکلٹی میں ہی دی جاتی تھی . ۱۴ ویں صدی میں بیماروں کا علاج کرنے والوں کو بھی اس ڈگری کا دیا جانا شروع ہوا . جرمنی میں کلا کی فیکلٹی میں پہلے میجسٹر (ماسٹر) کی ڈگری دی جاتی تھی' بعد میں اُس کی جگہ ڈاکٹر کی ڈگری دی جانے لگی .

اس کے علاوہ عیسائی دھرم کے ڈاکٹر (ڈاکٹر آف دی چرچ) بھی ہوا کرتے تھے . یہ ڈگری ان گنے چنے عیسائی سنتوں' مہنتوں کو دی جاتی تھی جن کے اپدیشوں کو سب پادریوں کی رائے سے یا

पोप के फ़र्मान के मुताबिक़ ख़ास तौर से प्रमान समझा जाता था. बीच ज़माने के बड़े बड़े शिक्षकों, स्कूल मैन या स्कोलैस्टिक दर्शन के आचार्यों को डाक्टर की डिगरी के साथ कुछ और उपाधियाँ भी दी जाती थीं. जैसे टामस अक्सेना को एंजिलिक्स, बर्नर्ड को मेलिफ़्लूअस वग़ैरा. लेकिन ईसाई चर्च के उन डाक्टरों की तादाद अनगिनत नहीं थी. यूरप के संतों में अथनासियस नज़ियानज़ुस के ग्रेगरी महीनये-सिलवान क्राईसोस्टम को ही डाक्टर की उपाधि मिली थी. बाद में नये पोप अलफ़ान्सो देई लिगोरी का नाम भी इस फ़ेहरिस्त में जोड़ दिया था.

जैसे पुराने ज़माने में महर्षि और राजर्षि हुआ करते थे उसी तरह बीच काल के भारतमें भी ब्राह्मन, बौद्ध और जैन सच्चे पंडितों को सम्मान के लिये आचार्य, महा पंडित, महो पाध्याय, महा महोपाध्याय सर्व भौम वग़ैराकी बड़ी बड़ी उपाधियाँ दी जाती थीं. दरबारी कवियों को उनके मालिक कवि राय, कवि शेखर, कवि कंकन, कवि राज वग़ैरा की उपाधियाँ देते थे. अब फिर यूनिवरसिटियों को लें. बीच के युग के बाद जब जब बरतनिया, फ़्रांस वग़ैरा में राष्ट्री क्रांतियों के बाद पूंजीवाद का ज़माना आया तो बरतनिया में पुराने लार्ड, काउन्ट, ड्यूक, वग़ैरा के साथ नये शासकों यानी पूंजी पतियों को भी आनरेरी डिगरियाँ बटने लगीं. उस समय उनमें एक तरह का झूट वहम था. वह भी पंडित बनना या कहलवाना चाहते थे. पढ़ लिख कर इस डिगरी को हासिल करना उनके बूते के बाहर की बात थी. वह पैसे के बल पर डिगरियाँ ख़रीदने लगे. अभी १८३२ के सुधार क़ानून के पहले बरतनिया में सब को वोट देने का हक़ नहीं था.

پوپ کے فرمان کے مطابق خاص طور سے پرمان سمجھا جاتا تھا. بیچ زمانہ کے بڑے بڑے شکشکوں' اسکول مین یا اسکولیسٹک درشن کے آچاریوں کو ڈاکٹر کی ڈگری کے ساتھ کچھ اور اُپادھیاں بھی دی جاتی تھیں. جیسے تامس ایکسنا کو اینجلکس' برنرڈ کو میلی فلوئس وغیرہ. لیکن عیسائی چرچ کے ان ڈاکٹروں کی تعداد انگنت نہیں تھی. یورپ کے سنتوں میں ایتھاسئیوس نزیانجس کے گریگری میھنئے سل‌وان کرائسوسٹم کو ہی ڈاکٹر کی اُپادھی ملی تھی. بعد میں نئے پوپ الفانسو دیئی لگوری کا نام بھی اس فہرست میں جوڑ دیا تھا.

جیسے پرانے زمانے میں مہرشی اور راج رشی ہوا کرتے تھے اسی طرح بیچ کال کے بھارت میں بھی براہمن' بودھ اور جین سچے پنڈتوں کو سمان کے لئے آچاریہ' مہاپنڈت' مہوپادھیائے' مہا مہوپادھیائے' سرو بھوم وغیرہ کی بڑی بڑی اُپادھیاں دی جاتی تھیں. درباری کویوں کو ان کے مالک کوی رائے' کوی شیکھر' کوی کنکن' کوی راج وغیرہ کی اُپادھیاں دیتے تھے. اب پھر یونیورسٹیوں کو لیں. بیچ کے یگ کے بعد جب جب برطانیہ' فرانس وغیرہ میں راشٹری کرانتیوں کے بعد پونجی واد کا زمانہ آیا تو برطانیہ میں پرانے لارڈ' کاونٹ' ڈیوک' وغیرہ کے ساتھ نئے شاسکوں یعنی پونجی پتیوں کو بھی آنریری ڈگریاں بٹنے لگیں. اس سے ان میں ایک طرح کا جھوٹ وہم تھا. وہ بھی پنڈت بننا یا کہلوانا چاہتے تھے. پڑھ لکھکر اس ڈگری کو حاصل کرنا ان کے بوتے کے باہر کی بات تھی. وہ پیسے کے بل پر ڈگریاں خریدنے لگے. ابھی ۱۸۳۲ کے سدھار قانون کے پہلے برطانیہ میں سب کو ووٹ دینے کا حق نہیں تھا.

पारलीमेन्ट की सीटें तब नीलाम में बिकती थीं. उसी तरह लार्ड और पूंजी पति अपने नाम के लिये डाक्टर की डिगरियाँ ख़रीदा करते थे. पूंजी पति पैसा खर्च करके लार्ड बन जाया करते थे. ठीक इसी तरह से जैसे इस देश में राय साहब, राय बहादुर, ख़ाँ साहब, ख़ान बहादुर, सर, राजा वग़ैरा.

पूँजी पति युग में आनरेरी डिगरी देने की बीमारी लग भग सभी देशों में हैज़े की तरह फैल गई है. सेठ साहूकारों, राजकाजियों के साथ ही माने हुए विद्वानों को भी आनरेरी डिगरी देने का रिवाज चल पड़ा.

पूंजी वाद ने पुराने ज़माने में कवि, पुरोहित, वैद्य, वकील वग़ैरा के पेशे में पहले जो एक आदर्श का मुलम्मा चढ़ा हुआ था उसे रगड़ कर उतार दिया और सब को कारोबार में बदल दिया. यहाँ तक कि विद्या तक को भी. यूरप, अमरीका में कितनी ही जगह नक़ली डिगरियाँ बेचने की दुकानें खुल गईं. जैसे असली देशी घी की जगह डालडा की दुकानें. विज्ञान कला की कोई भी डिगरी एक ख़ास रक़म देने पर मिल जाती थी. यहाँ डाक्टरेट के साथ ही बी. ए., एम. ए., साइन्स और कला दोनों की डिगरियाँ मिलती थीं. लेकिन ऐसा होने से बड़ी और मशहूर यूनिवरसिटियों की रोज़ी मारी जाती थी. इसलिये अमरीका में इन डिगरियों की दुकानों को बन्द करने के लिये क़ानून बनाने की नौबत आ गई थी. इस देश में कितने ही सम्मेलन और परिषद वग़ैरा डिगरियों की दुकानें चल रही हैं. अभी क़ानून बनाकर इन्हें बन्द करने की नौबत नहीं आई है

پارلیمنٹ کی سیٹیں تب نیلام میں بکتی تھیں . اسی طرح لارڈ اور پونجی پتی اپنے نام کے لئے ڈاکٹر کی ڈگریاں خریدا کرتے تھے . پونجی پتی پیسہ خرچ کرکے لارڈ بن جایا کرتے تھے . ٹھیک اسی طرح جیسے اس دیش میں رائے صاحب' رائے بہادر' خاں صاحب' خان بہادر' سر' راجہ وغیرہ .

پونجی پتی یگ میں آنریری ڈگری دینے کی بیماری لگ بھگ سبھی دیشوں میں ہیضہ کی طرح پھیل گئی ہے . سیٹھ ساہوکاروں' راج کاجیوں کے ساتھ ہی مانے ہوئے ودوانوں کو بھی آنریری ڈگری دینے کا رواج چل پڑا .

پونجی واد نے پرانے زمانہ میں کوی' پروہت' وید' وکیل وغیرہ کے پیشہ میں پہلے جو ایک آدرش کا ملمع چڑھا ہوا تھا اسے رگڑ کر اتار دیا اور سب کو کاروبار میں بدل دیا . یہاں تک کہ ودیا تک کو بھی . یورپ' امریکہ میں کتنی ہی جگہ نقلی ڈگریاں بیچنے کی دوکانیں کھل گئیں . جیسے اصلی دیشی گھی کی جگہ ڈالڈا کی دوکانیں . وگیان کلا کی کوئی بھی ڈگری ایک خاص رقم دینے پر مل جاتی تھی . یہاں ڈاکٹریٹ کے ساتھ ہی بی . اے .' ایم . اے .' سائنس اور کلا دونوں کی ڈگریاں مل سکتی تھیں . لیکن ایسا ہونے سے بڑی اور مشہور یونیورسٹیوں کی روزی ماری جاتی تھی . اس لئے امریکہ میں ان ڈگریوں کی دوکانوں کو بند کرنے کے لئے قانون بنانے کی نوبت آگئی تھی . اس دیش میں کتنے ہی سمیلن اور پریشد وغیرہ ڈگریوں کی دوکانیں چل رہی ہیں . ابھی قانون بنا کر انہیں بند کرنے کی نوبت نہیں آئی ہے .

लेखक के दोस्त डाक्टर (नक़ली यानी आनरेरी नहीं) सुनीत कुमार चट्टोपाध्या ने एक बार डिगरियों की दुकान के बारे में एक बड़ी मजेदार कहानी सुनाई थी. पैरिस की एक डिगरी की दुकान पर एक मालदार खरीदार घोड़े पर चढ़ कर डिगरी लेने गया. अपने लिये तो उसने डिगरी ले ली. लेकिन वह अपने घोड़े को भी यह सम्मान दिलाना चाहता था. दुकान दार से उसने घोड़े के लिये भी एक डिगरी देने के लिये कहा. इस पर दुकानदार ने जवाब दिया कि डिगरी सिर्फ़ गधों को ही बेची जाती है, घोड़ों को नहीं. प्राचीन रोमन राजाओं और रानियों ने अपने प्यारे जानवरों तक को शौक़ से गद्दी पर बिठाया था, तो घोड़े के सवार ने अपने घोड़े के लिये डिगरी माँग कर क्या अन्याय किया.

१५ अगस्त की अहिंसक क्रांति के बाद और बातों के साथ डिगरी देने में भी यहाँ क्रांति हो गई है. किसी जमाने में हिन्दू यूनिवरसिटि के लिये श्री मदन मोहन मालवी राजा, महाराजा, सेठों से रुपया लेने के लिये उनको डाक्टरेट की डिगरियाँ दिया करते थे. बिरला भाइयों के वालिद श्री बलदेव दास बिरला को अंगरेज़ सरकार ने राजा की उपाधि दी. मालवी जी महाराज ने उन्हें डाक्टर आफ लिट्रेचर की उपाधि दी. इस पर दिल्ली के "नैशनल काल" के सम्पादक श्री साहनी ने लिखा था कि इस डिगरी की जगह अगर उन्हें "डाक्टर आफ फाटका बाजार" की उपाधि दी जाती तो कितना अच्छा होता. क्यों कि इस विषय का इतना बड़ा आचार्य शायद ही कोई दूसरा हो. हिन्दू यूनिवरसिटी ने बनारस के नाबालिग महाराजा

لیکھک کے دوست ڈاکٹر (نقلی یعنی آنریری نہیں) سنیت کمار چٹوپادھیائے نے ایک بار ڈگریوں کی دوکان کے بارے میں ایک بڑی مزیدار کہانی سنائی تھی. پیرس کی ایک ڈگری کی دوکان پر ایک مالدار خریدار گھوڑے پر چڑھ کر ڈگری لینے گیا. اپنے لئے تو اُسنے ڈگری لے لی. لیکن وہ اپنے گھوڑے کو بھی یہ سمان دلانا چاہتا تھا. دوکاندار سے اس نے گھوڑے کے لئے بھی ایک ڈگری دینے کے لئے کہا. اس پر دوکاندار نے جواب دیا کہ ڈگری صرف گدھوں کو ہی بیچی جاتی ہے' گھوڑوں کو نہیں. پراچین رومن راجاؤں اور رانیوں نے اپنے پیارے جانوروں تک کو شوق سے گدی پر بٹھایا تھا' تو گھوڑے کے سوار نے اپنے گھوڑے کے لئے ڈگری مانگ کر کیا انیائے کیا.

١٥ اگست کی اہنسک کرانتی کے بعد اور باتوں کے ساتھ ڈگری دینے میں بھی یہاں کرانتی ہوگئی ہے. کسی زمانے میں ہندو یونیورسٹی کے لئے شری مدن موہن مالوی راجہ' مہا راجا' سیٹھوں سے روپیہ لینے کے لئے اُن کو ڈاکٹریٹ کی ڈگریاں دیا کرتے تھے. برلا بھائیوں کے والد شری بلدیو داس برلا کو انگریز سرکار نے راجہ کی اُپادھی دی تھی. مالوی جی مہاراج نے انہیں ڈاکٹر آف لٹریچر کی اُپادھی دی. اسپر دلی کے "نیشنل کال" کے سمپادک شری ساہنی نے لکھا تھا کہ اس ڈگری کی جگہ اگر انہیں "ڈاکٹر آف پھاٹکا بازار" کی اُپادھی دی جاتی تو کتنا اچھا ہوتا. کیونکہ اس وشے کا اتنا بڑا آچاریہ شاید ہی کوئی دوسرا ہو. ہندو یونیورسٹی نے بنارس کے نابالغ مہاراجہ

को भी डाक्टर की उपाधि दी थी. पाठकों को इस पर अचरज नहीं करना चाहिये, सोने में सब गुन हुआ करते हैं. वह सच है झूट नहीं.

अमरीका के पूंजी पति हर बात को हद तक पहुँचाने. के आदी हैं. डाक्टरी बाँटने में भी उन्होंने हद कर दी है. अमरीका के एक पिछले प्रेसिडेन्ट हूवर को बावन यूनिवरसिटियों से डाक्टरेट की आनरेरी उपाधि मिली है. रूज़वेल्ट बत्तीस यूनिवरसिटियों के ही डाक्टर हो कर मरे. ट्रूमैन साहब अभी तक सैत्ताईस यूनिवरसिटियों के ही डाक्टर बन पाये हैं. कामनवैल्थी भारत के कितने ही मंत्रियों के डाक्टरेट की संख्या कम से कम एक दर्जन तो हो गई होगी. केन्द्री मंत्रियों के क़दमों पर चल कर रियासतों के बड़े और दूसरे मंत्री भी डाक्टर बनने के लिये आपस में होड़ लगा रहे हैं. अभिनन्दन ग्रन्थों की तरह डाक्टरी का बाजार गर्म है. रियासती मंत्री बेचारे घाटे में हैं. एक तो उनकी दौड़ राज के अन्दर ही सीमित है दूसरे राजों में इतनी यूनिवरसिटियाँ नहीं कि वह केन्द्र वालों का मुक़ाबला कर सकें.

मंत्रियों की तरह कितने ही सेठ भी डाक्टरेट के उम्मीद वार हैं. वह डाक्टर बनने के लिये तरह तरह की तिकड़मों से काम लेते हैं. लेकिन अभी तक इस मामले में उन्हें मन चाही सफलता नहीं मिल रही है. कुछ दिन हुए कानपुरी सेठ सिंघानिया ने अपने बाप कमला पति के नाम पर भौतिक विज्ञान का एक इन्स्टीट्यूट खोलने के लिये इलाहाबाद यूनिवरसिटी को कई लाख रुपया देने का ऐलान किया. यूनिवरसिटी की डायमन्ड जुबली मनाई जा रही थी. वहाँ

کو بھی ڈاکٹر کی اپادھی دی تھی. پاٹھکوں کو اس پر اچرج نہیں کرنا چاہئے، سونے میں سب گن ہوا کرتے ہیں. یہ سچ ہے جھوٹ نہیں.

امریکہ کے پونجی پتی ہر بات کو حد تک پہونچانے کے عادی ہیں. ڈاکٹری بانٹنے میں بھی انہوں نے حد کر دی ہے. امریکہ کے ایک پچھلے پریسیڈنٹ ہوور کو باون یونیورسٹیوں سے ڈاکٹریٹ کی آنریری اپادھی ملی ہے. روز ویلٹ بتیس یونیورسٹیوں کے ہی ڈاکٹر ہوکر مرے. ترومین صاحب ابھی تک ستائیس یونیورسٹیوں کے ہی ڈاکٹر بن پائے ہیں. کامن ویلتھی بھارت کے کتنے ہی منتریوں کے ڈاکٹریٹ کی سنکھیا کم سے کم ایک درجن تو ہوگئی ہوگی. کیندری منتریوں کے قدموں پر چل کر ریاستوں کے بڑے اور دوسرے منتری بھی ڈاکٹر بننے کے لئے آپس میں ہوڑ لگا رہے ہیں. ابھی نندن گرنتھوں کی طرح ڈاکٹری کا بازار گرم ہے. ریاستی منتری بیچارے گھاٹے میں ہیں. ایک تو انکی دوڑ راج کے اندر ہی سیمت ہے دوسرے راجوں میں اتنی یونیورسٹیاں نہیں کہ وہ کیندر والوں کا مقابلہ کر سکیں.

منتریوں کی طرح کتنے ہی سیٹھ بھی ڈاکٹریٹ کے امیدوار ہیں. وہ ڈاکٹر بننے کے لئے طرح طرح کی تکڑموں سے کام لیتے ہیں. لیکن ابھی تک اس معاملہ میں انہیں من چاہی سپھلتا نہیں مل رہی ہے. کچھ دن ہوئے کانپوری سیٹھ سنگھانیا نے اپنے باپ کملا پتی کے نام پر بھوتک وگیان کا ایک انسٹی ٹیوٹ کھولنے کے لئے الہ آباد یونیورسٹی کو کئی لاکھ روپیہ دینے کا اعلان کیا. یونیورسٹی کی ڈائمنڈ جوبلی منائی جا رہی تھی. وہاں

के शिक्षक और राजकाजी अधिकारियों ने सेठ जी को डाक्टर बना कर धन्य बनाना और ख़ुद भी धन्य होना चाहा. पर बुरा हो इस यूनिवरसिटी के लेकचरारों और अध्यापकों का जिन्होंने हाय तोबा मचाकर "सैटिल्ड फ़ैक्ट" को "अन सैटिल्ड" कर दिया.

इस तरह की एक घटना हिटलर के जीवन में भी हुई थी. साहब बहादुर ज़्यादा पढ़े हुए नहीं थे. फिर भी फ़ुरर बन जाने के बाद उन्हें भी डाक्टर बनने का शौक़ चर्राया. ट्यूबिनजेन यूनिवरसिटी के सिनेट में उन्हें डाक्टर की उपाधि देने का प्रस्ताव पेश हुआ. जर्मनी में एक क़ायदा सा बना हुआ है कि सिनेट की एक राय से ही आनरेरी डिगरी दी जा सकती है. बुरा हो इस यूनिवरसिटी के इन्डियन इन्सटीट्यूट के डायरेक्टर प्रोफ़ेसर जे. डब्लू. हावर का (उन्होंने योग पर अनूठे ग्रन्थ लिखे हैं और भारत में बरसों मिशनरी का काम कर चुके हैं) जिन्होंने विरोध में अकेला हाथ उठाकर हिटलर के डाक्टर बनने के अरमान पर पानी फेर दिया. लेकिन प्रोफ़ेसर साहब को इसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ी थी. सिनेट की सभा से घर पर पहुँचते ही उनको आर्मर्ड कारों ने घेर लिया. इसके बाद उनका क्या हुआ होगा यह पढ़ने वाले ख़ुद सोच सकते हैं. इलाहाबादी शिक्षक भाई अगर हावर की गति से बच गये तो इसे तीर्थराज प्रयाग का बरदान ही समझना चाहिये.

दुनिया में एक ऐसा भी देश है जहाँ डाक्टर की डिगरियों के साथ मज़ाक़ नहीं किया जाता. वह ख़रीद फ़रोख़्त की चीज़ नहीं समझी जाती. वहाँ उसे ख़ैरात में नहीं बाँटा जाता. उस देश वाले दूसरे देशों की दी हुई आनरेरी डिगरी भी नहीं लेते. व

کے شکشک اور راج کاجی ادھیکاریوں نے سیٹھ جی کو ڈاکٹر بنا کر دھنیہ بنانا اور خود بھی دھنیہ ہونا چاہا. پر برا ہو اس یونیورسٹی کے لیکچراروں اور ادھیاپکوں کا جنھوں نے ہائے توبہ مچاکر "سیٹلڈ فیکٹ" کو "انسیٹلڈ" کردیا.

اسطرح کی ایک گھٹنا ہٹلر کے جیون میں بھی ہوئی تھی. صاحب بہادر زیادہ پڑھے ہوئے نہیں تھے. پھر بھی فیورر بن جانے کے بعد انھیں بھی ڈاکٹر بننے کا شوق چرایا. ٹوبن جن یونیورسٹی کے سینیٹ میں انھیں ڈاکٹر کی اپادھی دینے کا پرستاؤ پیش ہوا. جرمنی میں ایک قاعدہ سا بنا ہوا ہے کہ سینیٹ کی ایک رائے سے ہی آنریری ڈگری دیجا سکتی ہے. برا ہو اس یونیورسٹی کے انڈین انسٹیٹیوٹ کے ڈائرکٹر پروفیسر جے. ڈبلو. ہاور کا (انھوں نے یوگ پر انوٹھے گرنتھ لکھے ہیں اور بھارت میں برسوں مشنری کا کام کر چکے ہیں) جنھوں نے ورودھ میں اکیلا ہاتھ اُٹھاکر ہٹلر کے ڈاکٹر بننے کے ارمان پر پانی پھیر دیا. لیکن پروفیسر صاحب کو اس کی قیمت بھی چکانی پڑی تھی. سینیٹ کی سبھا سے گھر پر پہونچتے ہی ان کو آرمرڈ کاروں نے گھیر لیا. اس کے بعد ان کا کیا ہوا ہوگا یہ پڑھنے والے خود سوچ سکتے ہیں. الہ آبادی شکشک بھائی اگر ہاور کی گتی سے بچ گئے تو اسے تیرتھ راج پریاگ کا وردان ہی سمجھنا چاہئے.

دنیا میں ایک ایسا بھی دیش ہے جہاں ڈاکٹر کی ڈگریوں کے ساتھ مذاق نہیں کیا جاتا. وہ خرید فروخت کی چیز نہیں سمجھی جاتی. وہاں اُسے خیرات میں نہیں بانٹا جاتا. اُس دیش والے

देश है सोवियत रूस. वहाँ इस सम्मान की डिगरी के लिये (यह सच मुच ही सम्मान की चीज़ समझी जाती है) कम से कम छे से दस साल कठिन मेहनत करने की ज़रूरत पड़ती है.

हिन्दुस्तान के विद्यार्थी और अध्यापक डिगरी का सदा व्रत बन्द करायें. इसे फ़रोख़्त की चीज़ बनने से बचायें. पत्रकार भाई इसमें पूरी मदद और सहयोग दें यही हमारी प्रार्थना है.

دیش ہے سوویت روس . وہاں اس سمان کی ڈگری کے لئے (یہ سچ مچ ہی سمان کی چیز سمجھی جاتی ہے) کم سے کم چھ سے دس سال کٹھن محنت کرنے کی ضرورت پڑتی ہے .

ہندستان کے ودیارتھی اور ادھیاپک ڈگری کا سدا برت بند کرائیں . اسے خرید فروخت کی چیز بننے سے بچائیں . پترکار بھائی اس میں پوری مدد اور سہیوگ دیں یہی ہماری پرارتھنا ہے .

आज के शहीद

(सम्पादक श्री रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी, उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्हों ने फूट और नफ़रत के अंधेरे में रोशनी बनकर दूसरों को रास्ता दिखाया.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरों के साथ. इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

[नोट—बेचने वालों या कम से कम दस कापी ख़रीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.]

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

آج کے شہید

(سمپادک شری رتن لال بنسل)

آج کے شہید میں اُن بہادروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے بدیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کردی، اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے پھوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بنکر دوسروں کو راستہ دکھایا .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ . اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ رکھا گیا ہے . کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے .

[نوٹ—بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

منیجر 'نیا ہند' ۴۷ بائی کا باغ، الہ آباد .

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सद्दीक़ी)

कोरिया की लड़ाई जिसके दुनिया की लड़ाई बन जाने की सम्भावना, पंडित जवाहर लाल नेहरू की राय में रुपये में आठ आने भर है, दर असल दूसरी बड़ी लड़ाई के समय से ही शुरू हो चुकी थी. यह लड़ाई कुछ समझौतों के सहारे थोड़े दिनों टलती रही. पर यह समझौते वैसे ही कमज़ोर थे जैसे कि लड़ाई के बाद के समझौते आम तौर पर हुआ करते हैं और जो लड़ाई को थोड़े दिनों के लिये रोक कर लड़ने वालों को तैयारी करने का मौक़ा दे देते हैं.

इस तरह का पहला समझौता रूस, बरतानिया और अमरीका के बीच २७, दिसम्बर सन ४५ ई० को हुआ था. बाद को इस पर चीन ने भी दस्तख़त कर दिये. इसका मतलब यह था कि कोरिया को पाँच बरस में एक आज़ाद रियासत बना दिया जाये. और इस बीच में उसे आज़ादी के वास्ते तैयार करने के लिये उस पर चारों बड़े राष्ट्रों की निगरानी रहे. मगर उस से पहले जापान, जिसने

دنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

کوریا کی لڑائی جس کے دنیا کی لڑائی بن جانے کی سمبھاونا' پنڈت جواہر لال نہرو کی رائے میں روپیہ میں آٹھ آنے بھر ہے' دراصل دوسری بڑی لڑائی کے سمے سے ہی شروع ہوچکی تھی. یہ لڑائی کچھ سمجھوتوں کے سہارے تھوڑے دنوں تک ٹلتی رہی پر یہ سمجھوتے ویسے ہی کمزور تھے جیسے کہ لڑائی کے بعد کے سمجھوتے عام طور پر ہوا کرتے ہیں اور جو لڑائی کو تھوڑے دنوں کے لئے روک کر لڑنے والوں کو تیاری کرنے کا موقع دے دیتے ہیں.

اس طرح کا پہلا سمجھوتہ روس' برطانیہ اور امریکہ کے بیچ ۲۷ دسمبر سن ۴۵ء کو ہوا تھا بعد کو اس پر چین نے بھی دستخط کردیئے. اس کا مطلب یہ تھا. کہ کوریا کو پانچ برس میں ایک آزاد ریاست بنا دیا جائے. اور اس بیچ میں اسے آزادی کے واسطے تیار کرنے کے لئے اس پر چاروں بڑے راشٹروں کی نگرانی رہے. مگر اس سے پہلے جاپان' جس نے

सन १९१० ई० से कोरिया पर क़ब्ज़ा कर रखा था, लड़ाई हार चुका था और कोरिया के उत्तरी इलाक़े पर, जो आबादी के हिसाब से पूरे मुल्क का एक तिहाई हिस्सा था, रूस का और दक्खिनी इलाक़े पर अमरीका का क़ब्ज़ा हो गया था.

<u>झगड़े की जड़</u>

यह दोनों राष्ट्र दूर पूर्वी एशिया के बारे में जो नक़्शे बना रहे थे, उनमें कोरिया बहुत बड़ी अहमियत रखता था. रूस ने कोरिया से मिले हुए चीनी सूबे मन्चूरिया में चीनी सरकार से कुछ अधिकार हासिल कर लिये थे और चीनी कम्युनिस्टों के चलन से उसे और पूरी दुनिया को यक़ीन हो गया था कि एक दिन वह च्यांग काई शेक की सरकार को हरा कर पूरे चीन में कम्युनिस्ट राज क़ायम कर लेंगे. ऐसी हालत में कोरिया पर अमरीका के क़ब्ज़े या असर से रूस और दूर पूरब में उस के असर वाला इलाक़ा ख़तरे में पड़ा रहता. दूसरी तरफ़ अमरीका जापान पर अपना पूरा असर जमाने का इरादा कर रहा था. कोरिया, चीन और जापान के बीच एक पुल की हैसियत रखता था. अगर इस पुल पर कम्युनिस्टों का क़ब्ज़ा हो जाता तो कम्युनिस्ट एक सीधी छलांग मार कर जापान तक पहुंच सकते थे.

कोरिया को इसी अहमियत के कारन उसकी एकता और आज़ादी के बारे में रूस और अमरीका के बीच कोई समझौता नहीं हो सका. मास्को के समझौते के अनुसार एक रूसी-अमरीकी कमीशन क़ायम हुआ था और उसे सब से पहले यह तै करना था कि कोरिया के मसले पर वहाँ किन संस्थाओं से बात चीत की

سن ۱۹۱۰ع سے کوریا پر قبضہ کر رکھا تھا، لڑائی ہار چکا تھا اور کوریا کے اتری علاقے پر، جو آبادی کے حساب سے پورے ملک کا ایک تہائی حصہ تھا، روس کا اور دکھنی علاقے پر امریکہ کا قبضہ ہوگیا تھا۔

<u>جھگڑے کی جڑ</u>

یہ دونوں راشٹر دور پوربی ایشیا کے بارے میں جو نقشے بنا رہے تھے ان میں کوریا بہت بڑی اہمیت رکھتا تھا۔ روس نے کوریا سے ملے ہوئے چینی صوبے منچوریا میں چینی سرکار سے کچھ ادھیکار حاصل کر لئے تھے اور چینی کمیونسٹوں کے چلن سے اسے اور پوری دنیا کو یقین ہوگیا تھا کہ ایک دن وہ چیانگ کائی شیک کی سرکار کو ہرا کر پورے چین میں کمیونسٹ راج قائم کرلینگے۔ ایسی حالت میں کوریا پر امریکہ کے قبضے یا اثر سے روس اور دور پورب میں اس کے اثر والا علاقہ خطرے میں پڑا رہتا۔ دوسری طرف امریکہ جاپان پر اپنا پورا اثر جمانے کا ارادہ کر رہا تھا۔ کوریا، چین یا جاپان کے بیچ ایک پل کی حیثیت رکھتا تھا۔ اگر اس پل پر کمیونسٹوں کا قبضہ ہوجاتا تو کمیونسٹ ایک ہی سیدھی چھلانگ مارکر جاپان تک پہنچ سکتے تھے۔

کوریا کی اسی اہمیت کے کارن اس کی ایکتا اور آزادی کے بارے میں روس اور امریکہ کے بیچ کوئی سمجھوتہ نہیں ہوسکا۔ ماسکو کے سمجھوتے کے انوسار ایک روسی امریکی کمیشن قائم ہوا تھا، اور اسے سب سے پہلے یہ طے کرنا تھا کہ کوریا کے مسئلے پر وہاں کی سنستھاؤں سے بات چیت کی

जाये और किन लोगों को अधिकार सौंपा जाये. रूस सिर्फ़ कम्युनिस्ट पार्टी और उसके साथियों को इसका अधिकारी समझता था. और अमरीका दूसरी संस्थाओं को भी इस मामले में शरीक करना चाहता था.

एक देश, दो सरकारें

दोनों का मक़सद यह था कि कोरिया में अपने असर वाली सरकार क़ायम करा दें. और अमरीका ने यह देखकर कि रूस उसकी राह में अड़ंगा लगा रहा है, कोरिया के मामले को यू. एन. ओ. में पेश कर दिया, जहाँ उसकी मरज़ी के मुताबिक़ और रूस की मरज़ी के ख़िलाफ़ यह तै हो गया कि कोरिया में एलेक्शन कराने और एलेक्शन के ज़रिये क़ायम होने वाली सरकार को अधिकार दिलाने के लिये एक कमीशन मुक़र्रर कर दिया जाये. रूस ने यह सोच कर कि कमीशन क़ायम करना अमरीका की एक चाल है और शायद यह देख कर कि कम्युनिस्ट अभी मुक़ाबले के लिये नहीं तैयार हैं, इस कमीशन को उत्तरी कोरिया में नहीं आने दिया और एलेक्शन सिर्फ़ दक्खिनी कोरिया में हो सका. इस एलेक्शन के बाद जो सरकार बनी उसे यू. एन. ओ. की जनरल असेम्बली और अमरीका, बरतानिया और दस दूसरे राष्ट्रों ने भी मान लिया. मगर रूस ने इसे नहीं माना और दक्खिनी कोरिया के एलेक्शन के तीन महीने बाद उत्तरी कोरिया से उसके अफ़सरों ने ऐलान कर दिया कि वहाँ भी एलेक्शन हुए हैं और एक सरकार क़ायम हो गई है.

बाहर का हाथ

मसल मशहूर है कि एक गुदड़ी में दस फ़क़ीर सो सकते हैं,

جائے اور کن لوگوں کو ادھیکار سونپا جائے۔ روس صرف کمیونسٹ پارٹی اور اس کے ساتھیوں کو اس کا ادھیکاری سمجھتا تھا اور امریکہ دوسری سنستھاؤں کو بھی اس معاملے میں شریک کرنا چاہتا تھا۔

ایک دیش، دو سرکاریں

دونوں کا مقصد یہ تھا کہ کوریا میں اپنے اثر والی سرکار قائم کرا دیں۔ اور امریکہ نے یہ دیکھکر کہ روس اس کی راہ میں اڑنگا لگا رہا ہے کوریا کے معاملے کو یو۔ این۔ او۔ میں پیش کردیا، جہاں اُس کی مرضی کے مطابق اور روس کی مرضی کے خلاف یہ طے ہوگیا کہ کوریا میں الکشن کرانے اور الکشن کے ذریعے قائم ہونے والی کوریائی سرکار کو ادھیکار دلانے کے لئے ایک کمیشن مقرر کردیا جائے۔ روس نے یہ سوچ کر کہ کمیشن قائم کرنا امریکہ کی ایک چال ہے اور شاید یہ دیکھکر کہ کمیونسٹ ابھی مقابلے کے لئے نہیں تیار ہیں اس کمیشن کو اُتری کوریا میں نہیں آنے دیا۔ اور الکشن صرف دکھنی کوریا میں ہوسکا۔ اس الکشن کے بعد جو سرکار بنی اسے یو۔ این۔ او۔ کی جنرل اسمبلی اور امریکہ، برطانیہ اور دس دوسرے راشٹروں نے بھی مان لیا۔ مگر روس نے اسے نہیں مانا اور دکھنی کوریا کے الکشن کے تین مہینے بعد اتری کوریا سے اس کے افسروں نے اعلان کردیا کہ وہاں بھی الکشن ہوئے ہیں اور ایک سرکار قائم ہوگئی ہے۔

باہر کا ہاتھ

مثل مشہور ہے کہ ایک گدڑی میں دس فقیر تو سو سکتے ہیں،

मगर एक देश में दो राजा नहीं रह सकते. इसलिये कोरिया के उत्तरी और दक्खिनी हिस्से में अलग अलग सरकारों के बन जाने के बाद उनकी टक्कर यक़ीनी हो गई थी. उत्तरी कोरिया के रेडियो ने २१, जून को एलान किया कि "हमारे मुल्क को एक बनाने की कारवाइयाँ १५, अगस्त तक पूरी हो जायँगी" और उसी ज़माने में दक्खिनी कोरिया के प्रधान ने कहा कि "हमारे उत्तरी भाइयों का दुख ज़्यादा दिनों तक टाला नहीं जा सकता." अगर कोरिया वालों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाता तो शायद एक मुल्क के दो टुकड़े नहीं होते. और अगर टुकड़े हो जाने के बाद भी रूस और अमरीका अपनी फ़ौजों के साथ साथ अपने ध्यान को भी हटा लेते तो कोरिया थोड़े दिनों के बाद फिर एक मुल्क बन जाता या कम से कम दुनिया की शान्ति के लिये इतना बड़ा ख़तरा न बनता जितना इस समय बन गया है. मगर उत्तरी कोरिया रूस के इशारे पर चलता रहा और दक्खिनी कोरिया अमरीका के हाथ की कठ पुतली बन गया. नतीजा यह हुआ कि जैसे जैसे दूसरे अन्तर राष्ट्री मामलों में अमरीका और रूस की तनातनी बढ़ी वैसे ही वैसे दक्खिनी और उत्तरी कोरिया के झगड़े बढ़ते गये. पहले सरहदी झड़पें हुईं और आख़िर २५, जून को बाक़ायदा लड़ाई शुरू हो गई.

पहल किसकी ?

उत्तरी कोरिया की सरकार और रूस का कहना है कि इस लड़ाई में दक्खिनी कोरिया ने अमरीका के हुक्म और उसकी मदद से पहल की है और दूसरी तरफ़ से यह कहा जाता है कि रूस उत्तरी कोरिया को अपना आला बना कर कम्युनिस्ट राज को फैलाने की

مگر ایک دیش میں دو راجہ نہیں رہ سکتے. اور اس لئے کوریا کے اُتری اور دکھنی حصے میں الگ الگ سرکاروں کے بن جانے کے بعد ان کی ٹکر یقینی ہوگئی تھی. اُتری کوریا کے ریڈیو نے ۲۱ جون کو اعلان کیا کہ "ہمارے ملک کو ایک بنانے کی کاروائیاں ۱۵ اگست تک پوری ہوجائیں گی." اور اسی زمانے میں دکھنی کوریا کے پردھان نے کہا کہ "ہمارے اُتری بھائیوں کا دکھ زیادہ دنوں تک ٹالا نہیں جاسکتا." اگر کوریا والوں کو ان کے حال پر چھوڑ دیا جاتا تو شاید ایک ملک کے دو ٹکڑے نہیں ہوتے اور اگر ٹکڑے ہوجانے کے بعد بھی روس اور امریکہ اپنی فوجوں کے ساتھ ساتھ اپنے دھیان کو بھی ہٹا لیتے تو کوریا تھوڑے دنوں کے بعد پھر ایک ملک بن جاتا یا کم سے کم دنیا کی شانتی کے لئے اتنا بڑا خطرہ نہ بنتا جتنا اس سمے بن گیا ہے. مگر اُتری کوریا روس کے اشارے پر چلتا رہا اور دکھنی کوریا امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی بن گیا. نتیجہ یہ ہوا کہ جیسے جیسے دوسرے انتر راشٹری معاملوں میں امریکہ اور روس کی تناتنی بڑھی ویسے ہی ویسے دکھنی اور اُتری کوریا کے جھگڑے بڑھتے گئے. پہلے سرحدی جھڑپیں ہوئیں اور آخر ۲۵ جون کو باقاعدہ لڑائی شروع ہوگئی.

پہل کس کی ؟

اُتری کوریا کی سرکار اور روس کا کہنا ہے کہ اس لڑائی میں دکھنی کوریا نے امریکہ کے حکم اور اس کی مدد سے پہل کی ہے اور دوسری طرف سے یہ کہا جاتا ہے کہ روس اُتری کوریا کو اپنا آلہ بنا کر کمیونسٹ راج کو پھیلانے کی

कोशिश कर रहा है. यह दोनों बातें एक हद तक ठीक हो सकती हैं. इसलिये कि दक्खिनी कोरिया की तरफ़ से उत्तरी कोरिया की सरहद पर कुछ धावे हो चुके हैं, और अमरीका ने जून, ४९ ई० में अपनी फ़ौजें हटा लेने के बाद "दक्खिनी कोरियाई सरकार के कहने से" अपने पाँच सौ आदमी वहाँ की फ़ौज को काम सिखाने के लिये छोड़ दिये थे. इस तरह मुमकिन है कि २५, जून को या इस से दो चार दिन पहले दक्खिनी कोरिया की सेना ने उत्तरी कोरिया के किसी सरहद्दी मोर्चे पर कोई हमला किया हो. पर लड़ाई की चाल से पता चलता है कि उत्तरी कोरिया इसके लिये पूरी तरह से तैयार था. हो सकता है कि उसने दक्खिन के हमले से फ़ायदा उठाया हो. अगरचे यू. एन. ओ. के कोरिया कमीशन का कहना है कि पहल उसी ने की है. उस के टैंक और हवाई जहाज़ रूस के बने हुए हैं, उसकी फ़ौजें जिस तेज़ी से आगे बढ़ी हैं उससे मालूम होता है कि उनको बड़े बड़े माहिरों ने काम सिखाया है और उन्हीं के बनाये हुए नक़शे और बताई हुई तरकीबों पर फ़ौजें चल रही हैं. ऐसे माहिर उत्तरी कोरिया के पास नहीं थे और उसे चीन या रूस के अलावा कहीं और से नहीं मिल सकते थे.

अमरीका की हिचकिचाहट

इन माहिरों ने दक्खिनी कोरिया को ख़त्म करने या दूसरे शब्दों में कोरिया को एक करने के लिये बड़ा अच्छा वक़्त चुना है. बरसात के दिनों में वहाँ अमरीकी हवाई जहाज़ों को उड़ने और उतरने में बड़ी मुश्किल पड़ रही है. और उत्तर के छापा मार दस्ते अमरीकी फ़ौजों को बड़ी आसानी से घेर लेते हैं.

کوشش کر رہا ہے. یہ دونوں باتیں ایک حد تک ٹھیک ہوسکتی ہیں. اس لئے کہ دکھنی کوریا کی طرف سے اُتری کوریا کی سرحد پر کچھ دھاوے ہو چکے ہیں اور امریکہ نے جون' ۴۹ع میں اپنی فوجیں ہٹا لینے کے بعد "دکھنی کوریائی سرکار کے کہنے سے" اپنے پانچ سو آدمی وہاں کی فوج کو کام سکھانے کے لئے چھوڑ دیئے تھے. اسطرح ممکن ہے کہ ۲۵ جون کو یا اس سے دو چار دن پہلے دکھنی کوریا کی سینا نے اُتری کوریا کے کسی سرحدی مورچے پر کوئی حملہ کیا ہو. پر لڑائی کی چال سے پتہ چلتا ہے کہ اُتری کوریا اسکے لئے پوری طرح سے تیار تھا. ہو سکتا ہے کہ اس نے دکھن کے حملے سے فائدہ اُٹھایا ہو. اگرچہ یو. این. او. کے کوریا کمیشن کا کہنا ہے کہ پہل اسی نے کی ہے. اس کے ٹینک اور ہوائی جہاز روس کے بنے ہوئے ہیں اور اس کی فوجیں جس تیزی سے آگے بڑھی ہیں اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کو بڑے بڑے ماہروں نے کام سکھایا ہے اور انھی کے بنائے ہوئے نقشے اور بتائی ہوئی ترکیبوں پر یہ فوجیں چل رہی ہیں. ایسے ماہر اُتری کوریا کے پاس نہیں تھے اور اسے چین یا روس کے علاوہ کہیں اور سے نہیں مل سکتے تھے.

امریکہ کی ہچکچاہٹ

ان ماہروں نے دکھنی کوریا کو ختم کرنے یا دوسرے شبدوں میں کوریا کو ایک کرنے کے لئے بڑا اچھا وقت چنا ہے. برسات کے دنوں میں، وہاں امریکی ہوائی جہازوں کو اُڑنے اور اترنے میں بڑی مشکل پڑ رہی ہے اور اتر کے چھاپہ مار دستے امریکی فوجوں کو بڑی آسانی سے گھیر لیتے ہیں.

इसके अलावा हालाँकि अमरीका ने दिसम्बर सन् ४८ ई० में दक्खिनी कोरिया को आर्थिक मदद देने का एक समझौता कर लिया था और बचाव के एक समझौते के मातहत फ़ौजी मदद देने का भी वायदा कर चुका था. मगर अभी तक वह कुछ ज़्यादा मदद नहीं दे सका था. इसका एक बड़ा कारन यह था कि चीन में च्यांग काई शेक की मदद पर अमरीका के अरबों डालर बरबाद हो जाने के बाद वहाँ कुछ लोग ऐसी मदद के ख़िलाफ़ हो गये थे. इसलिये इस साल के शुरू में अमरीकी प्रधान ट्रूमैन ने ऐलान कर दिया था कि अमरीका चीन के टापू फ़ारमूसा को, जहाँ च्यांग ने भाग कर पनाह ले रखी है, चीनी कम्युनिस्टों से बचाने के लिये नहीं जायगा. और इसके साथ यह बात आम तौर पर मशहूर हो गई थी कि अमरीका का जंगी महकमा कोरिया की तरफ़ से निराश हो गया है और वहाँ जम कर लड़ने का इरादा नहीं रखता.

दक्खिन की हालत

दक्खिनी कोरिया की मदद से अमरीका के हाथ खेंच लेने का एक दूसरा कारन यह भी था कि वहाँ के लोग यह देख रहे थे कि डाक्टर सिंघमन री की सरकार देखने में चाहे जितनी बाक़ायदा हो मगर उसकी बुनियाद उतनी ही कमज़ोर थी जितनी कि चीन में च्यांग सरकार की. जनता इस सरकार के साथ नहीं थी और दक्खिनी कोरिया की पुलिस तक कई दफ़ा बग़ावत कर चुकी थी. उत्तरी कोरिया के साथ मिलाप का आन्दोलन बराबर बढ़ता जा रहा था और उसे कुचलने के लिये री सरकार कम्युनिस्टों के अलावा

اس کے علاوہ حالانکہ امریکہ نے دسمبر سن ۴۸ء میں دکھنی کوریا کو آرتھک مدد دینے کا ایک سمجھوتہ کر لیا تھا اور بچاؤ کے ایک سمجھوتے کے ماتحت فوجی مدد دینے کا بھی وعدہ کرچکا تھا مگر ابھی تک وہ کچھ زیادہ مدد نہیں دے سکا تھا۔ اس کا ایک بڑا کارن یہ تھا کہ چین میں چیانگ کائی شیک کی مدد پر امریکہ کے اربوں ڈالر برباد ہوجانے کے بعد وہاں کچھ لوگ ایسی مدد کے خلاف ہوگئے تھے اسلئے اس سال کے شروع میں امریکی پردھان ٹرومین نے اعلان کر دیا تھا کہ امریکہ چین کے ٹاپو فارموسا کو، جہاں چیانگ نے بھاگ کر پناہ لے رکھی ہے، چینی کمیونسٹوں سے بچانے کے لئے نہیں جائیگا اور اس کے ساتھ یہ بات عام طور پر مشہور ہوگئی تھی کہ امریکہ کا جنگی محکمہ کوریا کی طرف سے نراش ہوگیا ہے اور وہاں جم کر لڑنے کا ارادہ نہیں رکھتا۔

دکھن کی حالت

دکھنی کوریا کی مدد سے امریکہ کے ہاتھ کھینچ لینے کا ایک دوسرا کارن یہ بھی تھا کہ وہاں کے لوگ یہ دیکھ رہے تھے کہ ڈاکٹر سنگ من ری کی سرکار دیکھنے میں چاہے جتنی باقاعدہ ہو مگر اس کی بنیاد اتنی ہی کمزور تھی جتنی کہ چین میں چیانگ سرکار کی۔ جنتا اس سرکار کے ساتھ نہیں تھی اور دکھنی کوریائی پولیس تک کئی دفعہ بغاوت کرچکی تھی۔ اتری کوریا کے ساتھ ملاپ کا آندولن برابر بڑھتا جارہا تھا اور اسے کچلنے کے لئے ری سرکار کمیونسٹوں کے علاوہ

बहुत से दूसरे लोगों को भी क़ैद कर चुकी थी. ऐसी हालत में अगर उत्तरी कोरिया हमला न करता तब भी दक्खिनी कोरिया में री की अमरीका-दोस्त सरकार ज्यादा दिनों तक टिक न सकती और जब तक टिकी रहती उस वक़्त तक परेशानियों में फँसी रहती.

हमला क्यों ?

सवाल यह है कि फिर यह हमला क्यों हुआ? शायद इसलिये कि उत्तरी कोरिया की सरकार और उसके रूसी सरपरस्त उन तैयारियों का तोड़ करना चाहते थे, जो अमरीका जापान में कर रहा था, और जिनका सिलसिला दक्खिनी कोरिया तक फैलता हुआ मालूम हो रहा था. इसलिये कि अमरीकी सरकार एक तरफ़ तो कोरिया को मदद देते हिचकिचा रही थी और दूसरी तरफ़ उसके जिम्मेदार लोग दक्खिनी कोरिया के मोर्चों और अड्डों को मजबूत बनाने की तरकीबों पर सोच-विचार कर रहे थे. ऐसे कुछ लोग जून के शुरू मे दक्खिनी कोरिया गये थे और उनकी बातों से पता चलता था कि अमरीका में बहुत से लोग, जो सरकारी पालिसी बनाते और चलाते हैं, दक्खिनी कोरिया से हाथ धो लेने के लिये नहीं तैयार हैं. अगर थोड़ा समय और बीत जाता तो हो सकता था कि यह लोग अमरीकी सरकार पर दबाव डालकर दक्खिनी कोरिया को दूसरा जापान बनवा देते. दूसरी तरफ़ अगर दक्खिनी कोरिया में छेड़ छाड़ शुरू हो जाती, तो न केवल यह कि अमरीका की राह में एक रुकावट पड़ जाती. बल्कि उस के यहाँ उलझ जाने से यूरप और दूर पूरब के दूसरे मोर्चों पर उसका ध्यान कम हो जाता.

بہت سے دوسرے لوگوں کو بھی قید کرچکی تھی . ایسی حالت میں اگر اتری کوریا حملہ نہ کرتا تب بھی دکھنی کوریا میں ری کی امریکہ دوست سرکار زیادہ دنوں تک نہ ٹک سکتی اور جب تک ٹکی رہتی اس وقت تک پریشانیوں میں پھنسی رہتی .

حملہ کیوں ؟

سوال یہ ہے کہ پھر یہ حملہ کیوں ہوا ؟ شاید اس لئے کہ اتری کوریا کی سرکار اور اس کے روسی سرپرست ان تیاریوں کا توڑ کرنا چاہتے تھے، جو امریکہ جاپان میں کررہا تھا، اور جنکا سلسلہ دکھنی کوریا تک پھیلتا ہوا معلوم ہو رہا تھا . اس لئے کہ امریکی سرکار ایک طرف تو کوریا کو مدد دیتے ہچکچا رہی تھی اور دوسری طرف اس کے ذمہ دار لوگ دکھنی کوریا کے مورچوں اور اڈوں کو مضبوط بنانے کی ترکیبوں پر سوچ بچار کر رہے تھے . ایسے کچھ لوگ جون کے شروع میں دکھنی کوریا گئے تھے اور ان کی باتوں سے پتہ چلتا تھا کہ امریکہ میں بہت سے لوگ، جو سرکاری پالیسی بناتے اور چلاتے ہیں، دکھنی کوریا سے ہاتھ دھولینے کے لئے نہیں تیار ہیں . اگر تھوڑا سمے اور بیت جاتا تو ہو سکتا تھا کہ یہ لوگ امریکی سرکار پر دباؤ ڈال کر دکھنی کوریا کو دوسرا جاپان بنوا دیتے . دوسری طرف اگر دکھنی کوریا میں چھیڑ چھاڑ شروع ہوجاتی تو نہ کیول یہ کہ امریکہ کی راہ میں ایک رکاوٹ پڑ جاتی بلکہ اس کے یہاں الجھ جانے سے یورپ اور دور پورب کے دوسرے مورچوں پر اس کا دھیان کم ہو جاتا .

यू. एन. ओ. का रुख.

एक और बात जो उत्तरी कोरिया और रूस के ध्यान में रही होगी, यह है कि आज कल यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति रूस के अलग हो जाने के कारन लंगड़ी होगई है. रूस ने उसे इस कारन छोड़ रखा है कि अमरीका ने उसमें चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि को नहीं आने दिया और इसी कारन उसने ऐलान कर दिया है कि वह अपने आपको उस समिति के फ़ैसलों का पाबन्द नहीं समझता. वह उस समिति में शरीक रहकर भी उसके फ़ैसलों को नामंज़ूर कर सकता था पर तब उसकी बदनामी होती और अब अमरीका की बदनामी हो रही है. इसलिये कि दुनिया और खासकर एशिया में बहुत से लोग यह समझते हैं कि सुरक्षा समिति अमरीका के हाथ की कठपुतली बन गई है और उसी के कहे पर चलती है. इसी कारन वह फ़िलस्तीन और कश्मीर की लड़ाई में तो चुप रही मगर कोरिया के मामले में ताल ठोंक कर मैदान में आगई. उसने यहाँ लड़ाई छेड़ने में उत्तरी कोरिया को हमले का अपराधी ठहरा दिया और फिर उसके खिलाफ़ फ़ौजी कारवाई करने का ऐलान कर दिया. इस ऐलान से भी चौबीस घंटा पहले अमरीका के प्रधान ट्रूमैन ने अपनी हवाई फ़ौज को दक्खिनी कोरिया की मदद के लिये भेज दिया और अपनी समुन्दरी फ़ौज को हुक्म दे दिया कि अगर चीन की कम्युनिस्ट सरकार फ़ारमूसा के टापू पर, जहाँ च्यांग काई शेक और उनके साथियों ने पनाह ले रखी है, क़ब्ज़ा करने की कोशिश करे तो उसका मुक़ाबला किया जाय.

یو . این . او . کا رخ

ایک اور بات جو اتری کوریا اور روس کے دھیان میں رہی ہوگی یہ ہے کہ آج کل یو . این . او . کی سورکشا سمیتی روس کے الگ ہوجانے کے کارن لنگڑی ہوگئی ہے . روس نے اسے اس کارن چھوڑ رکھا ہے کہ امریکہ نے اس میں چین کی نئی سرکار کے پرتی ندھی کو نہیں آنے دیا . اور اسی کارن اس نے اعلان کر دیا ہے کہ وہ اپنے آپ کو اس سمیتی کے فیصلوں کا پابند نہیں سمجھتا . وہ اس سمیتی میں شریک رہ کر بھی اس کے فیصلوں کو نا منظور کر سکتا تھا پر تب اس کی بدنامی ہوتی اور اب امریکہ کی بدنامی ہو رہی ہے . اس لئے کہ دنیا اور خاصکر ایشیا میں بہت سے لوگ سمجھتے ہیں کہ سورکشا سمیتی امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی بن گئی ہے اور اسی کے کہے پر چلتی ہے . اسی کارن وہ فلسطین اور کشمیر کی لڑائی میں تو چپ رہی مگر کوریا کے معاملہ میں تال ٹھونک کر میدان میں آگئی . اس نے یہاں لڑائی چھیڑنے میں اتری کوریا کو حملے کا اپرادھی ٹھہرادیا اور پھر اس کے خلاف فوجی کاروائی کرنے کا اعلان کر دیا . اس اعلان سے بھی چوبیس گھنٹہ پہلے امریکہ کے پردھان ترومین نے اپنی ہوائی فوج کو دکھنی کوریا کی مدد کے لئے بھیج دیا اور اپنی سمندری فوج کو حکم دیدیا کہ اگر چین کی کمیونسٹ سرکار فارموسا کے ٹاپو پر' جہاں چیانگ کائی شیک اور ان کے ساتھیوں نے پناہ لے رکھی ہے' قبضہ کرنے کی کوشش کرے تو اسکا مقابلہ کیا جائے .

प्रधान ट्रूमैन ने यह हुक्म इस कारन दिया था कि वह उत्तरी कोरिया के हमले को कम्युनिज़्म के अन्तर राष्ट्री धावे का एक हिस्सा समझते हैं, और बरतानिया का विचार भी क़रीब क़रीब यही है. वह, जैसा कि पारलीमेन्ट में सरकार की तरफ़ से कहा गया है, कोरिया और मलाया के मसलों को एक ही जैसा मानती है. मगर सुरक्षा समिति के ठहराव में ऐसी कोई बात नहीं कही गई है और इसीलिये हिन्दुस्तान जैसे उन राष्ट्रों ने, जो रूस की इस दलील को नहीं मानते कि उस की ग़ैर हाज़िरी में सुरक्षा समिति के फ़ैसले ग़ैर क़ानूनी हैं और जिन्हों ने कोरिया के बारे में उस समिति के ठहराव मान लिये हैं, इस लड़ाई में कोई भाग नहीं लिया है और ट्रूमैन और एटली ने जो बात कही है उससे अपने अलग होने का एलान कर दिया है.

नेहरू का सुझाव

हिन्द सरकार इतनी सावधानी बरतने पर भी रूस और उसके कारिन्दों के एतराज़ और गाली गलौज से बच नहीं सकी. लेकिन जब से पंडित नेहरू ने कोरिया के झगड़े के शान्ति के साथ ते होने के बारे में अमरीका के विदेश मंत्री एचीसन और रूस के प्रधान मंत्री स्टालिन को चिट्ठियाँ लिखी हैं तब से एतराज़ करने वालों का रुख़ कुछ बदल गया है. पर अब दूसरी तरफ़ से एतराज़ और शिकायतें शुरू हो गई हैं. इसलिये कि उन चिट्ठियों में पंडित नेहरू ने यह सुझाव रखा था कि चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि को सुरक्षा समिति में शामिल कर लिया जाय जिसमें कि रूस भी इस

پردھان ٹرومین نے یہ حکم اس کارن دیا تھا کہ وہ اُتری کوریا کے حملے کو کمیونزم کے انتر راشٹری دھاوے کا ایک حصہ سمجھتے ہیں اور برطانیہ کا وچار بھی قریب قریب یہی ہے. وہ' جیسا کہ پارلیمنٹ میں سرکار کی طرف سے کہا گیا ہے' کوریا اور ملایا کے مسئلوں کو ایک ہی جیسا مانتی ہے. مگر سورکشا سمیتی کے ٹھہراؤ میں ایسی کوئی بات نہیں کہی گئی ہے اور اسی لئے ہندستان جیسے اُن راشٹروں نے جو روس کی اس دلیل کو نہیں مانتے کہ اُس کی غیر حاضری میں سورکشا سمیتی کے فیصلے غیر قانونی ہیں' اور جنھوں نے کوریا کے بارے میں اس سمیتی کے ٹھہراؤ مان لئے ہیں' اس لڑائی میں کوئی بھاگ نہیں لیا ہے اور ٹرومین اور ایٹلی نے جو بات کہی ہے اس سے اپنے الگ ہونے کا اعلان کردیا ہے.

نہرو کا سجھاؤ

ہند سرکار اتنی ساودھانی برتنے پر بھی روس اور اس کے کارندوں کے اعتراض اور گالی گلوج سے بچ نہیں سکی. لیکن جب سے پنڈت نہرو نے کوریا کے جھگڑے کے شانتی کے ساتھ طے ہونے کے بارے میں امریکہ کے ودیش منتری ایچیسن اور روس کے پردھان منتری اسٹالن کو چٹھیاں لکھی ہیں تب سے اعتراض کرنے والوں کا رخ کچھ بدل گیا ہے. پر اب دوسری طرف سے اعتراض اور شکایتیں شروع ہوگئی ہیں. اس لئے کہ ان چٹھیوں میں پنڈت نہرو نے یہ سجھاؤ رکھا تھا کہ چین کی نئی سرکار کے پرتی ندھی کو سورکشا سمیتی میں شامل کرلیا جائے جس میں کہ روس بھی اس

समिति में लौट आये और वहाँ बैठ कर कोरिया के झगड़े को चुकाने पर सोच विचार किया जासके. इससे अमरीका और बरतानिया ने यह मतलब निकाला कि इस तरह उत्तरी कोरिया और रूस पर दबाव पड़ने के बजाये उसे मुँह भराई मिल जायगी. इसी कारन उन्होंने इस सुझाव को नामन्ज़ूर कर दिया. पर रूस ने उसे मन्ज़ूर कर लिया और इस तरह राजनीति के मैदान में पच्छिमी राष्ट्रों को हरा दिया.

रूस की जीत

पंडित नेहरू का सुझाव मानकर रूस की जो जीत हुई थी वह सुरक्षा समिति में लौट आने के फ़ैसले से और पक्की हो गई है. इस फ़ैसले को पच्छिमी राष्ट्र अपनी जीत बताते हैं इसलिये कि रूस ने सुरक्षा समिति का बाईकाट इस वजह से किया था कि वहाँ चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि को बैठने नहीं दिया गया था और च्यांग सरकार के प्रतिनिधि को रूस की राय में सुरक्षा समिति में बैठने का कोई अधिकार नहीं था. अभी तक उसी सरकार का प्रतिनिधि सुरक्षा समिति में मौजूद है और उसको हटाने के बारे में अपनी शर्त पूरी कराये बिना रूस ने अपना रुख़ बदल दिया है. देखने में यह उसकी हार है पर असल में यह जीत है. एक तो इसलिये कि दुनिया के इन्साफ़ पसन्द लोग रूस की शर्त को ठीक समझते थे और पंडित नेहरू ने सुरक्षा समिति को ठोस काम के लायक़ और शान्ति की रख-वाली के क़ाबिल बनाने के लिये जो सुझाव रखा था उसमें इस

سمیتی میں لوٹ آئے اور یہاں بیٹھ کر کوریا کے جھگڑے کو چکانے پر سوچ وچار کیا جا سکے۔ اس سے امریکہ اور برطانیہ نے یہ مطلب نکالا کہ اس طرح اتری کوریا اور روس پر دباؤ پڑنے کے بجائے اسے منھ بھرائی مل جائے گی۔ اسی کارن انھوں نے اس سجھاؤ کو نا منظور کر دیا۔ پر روس نے اسے منظور کر لیا اور اس طرح راج نیتی کے میدان میں پچھمی راشٹروں کو ہرا دیا۔

روس کی جیت

پنڈت نہرو کا سجھاؤ مان کر روس کی جو جیت ہوئی تھی وہ سورکشا سمیتی میں لوٹ آنے کے فیصلے سے اور پکی ہوگئی ہے۔ اس فیصلے کو پچھمی راشٹر اپنی جیت بتاتے ہیں اس لئے کہ روس نے سورکشا سمیتی کا بائیکاٹ اس وجہ سے کیا تھا کہ وہاں چین کی نئی سرکار کے پرتی ندھی کو بیٹھنے نہیں دیا گیا تھا اور چیانگ سرکار کے پرتی ندھی کو روس کی رائے میں سورکشا سمیتی میں بیٹھنے کا کوئی ادھیکار نہیں تھا۔ ابھی تک اسی سرکار کا پرتی ندھی سورکشا سمیتی میں موجود ہے اور اس کو ہٹانے کے بارے میں اپنی شرط پوری کرائے بنا روس نے اپنا رخ بدل دیا ہے۔ دیکھنے میں یہ اس کی ہار ہے پر اصل میں یہ جیت ہے۔ ایک تو اسلئے کہ دنیا کے انصاف پسند لوگ روس کی شرط کو ٹھیک سمجھتے تھے اور پنڈت نہرو نے سورکشا سمیتی کو ٹھوس کام کے لائق اور شانتی کی رکھوالی کے قابل بنانے کے لئے جو سجھاؤ رکھا تھا اسمیں اس

शर्त का समर्थन किया था. ऐसी हालत में रूस के इस शर्त को छोड़ देने से उसकी साख गिरने के बजाय और बढ़ जायगी.

यही नहीं बल्कि सुरक्षा समिति में रूस के वापस आ जाने से अमरीका की राह में एक बहुत बड़ी रुकावट पड़ जायगी. रूस को इस समिति में 'विटो' का अधिकार हासिल है जिसका मतलब यह है कि अगर किसी कारवाई के लिये समिति के ग्यारह में से दस मेम्बर भी एक राय हो जायें तो भी रूस अकेला इसके खिलाफ़ वोट देकर उसे नामन्जूर करा सकता है. इसके अलावा वह इस संस्था में अपनी बात कह कर पूरी दुनिया को सुना सकता है. और यह दिखा कर कि वह शान्ति चाहता है, दूसरे देशों को अपने साथ ला सकता है. इसलिये उसके प्रतिनिधि ने जब पहली अगस्त को यह बात कही कि चीन का जो प्रतिनिधि इस वक़्त समिति में मौजूद है उसे उस देश की तरफ़ से बात करने का कोई अधिकार नहीं है तो हिन्दुस्तान ने उसके गरोह से अलग रहते हुए भी और योगोसलाविया ने रूस से आजकल अन बन रहते हुए भी इस बात का समर्थन किया.

इस तरह रूस हार कर जीत गया और उसके विरोधी राष्ट्र जिन्होंने च्यांग सरकार के प्रतिनिधि को अपने वोट के बल पर सुरक्षा समिति में टिकाये रखा, जीत कर हार गये.

लड़ाई का हाल

लड़ाई के मैदान में भी उत्तरी कोरिया की सेना, जिसे रूस से

شرط کا سمرتھن کیا تھا. ایسی حالت میں روس کے اس شرط کو چھوڑ دینے سے اس کی ساکھ گرنے کے بجائے اور بڑھ جائیگی.

یہی نہیں بلکہ سورکشا سمیتی میں روس کے واپس آجانے سے امریکہ کی راہ میں ایک بہت بڑی روکاٹ پڑجائیگی. روس کو اس سمیتی میں 'ویٹو' کا ادھیکار حاصل ہے جسکا مطلب یہ ہے کہ اگر کسی کاروائی کے لئے سمیتی کے گیارہ میں سے دس ممبر بھی ایک رائے ہوجائیں تو بھی روس اکیلا اسکے خلاف ووٹ دے کر اسے نامنظور کرا سکتا ہے. اس کے علاوہ وہ اس سنستھا میں اپنی بات کہکر پوری دنیا کو سنا سکتا ہے. اور یہ دکھا کر کہ وہ شانتی چاہتا ہے دوسرے دیشوں کو اپنے ساتھ لا سکتا ہے. اس لئے اسکے پرتی ندھی نے جب پہلی اگست کو یہ بات کہی کہ چین کا جو پرتی ندھی اس وقت سمیتی میں موجود ہے اسے اس دیش کی طرف سے بات کرنے کا کوئی ادھیکار نہیں ہے تو ہندستان نے اسکے گروہ سے الگ رہتے ہوئے بھی اور یوگوسلاویہ نے روس سے آج کل ان بن رہتے ہوئے بھی اس بات کا سمرتھن کیا.

اسطرح روس ہار کر جیت گیا اور اسکے وِرودھی راشٹر جنہوں نے چیانگ سرکار کے پرتی ندھی کو اپنے ووٹ کے بل پر سورکشا سمیتی میں ٹکائے رکھا، جیت کر ہار گئے.

لڑائی کا حال

لڑائی کے میدان میں بھی اُتری کوریا کی سینا، جسے روس نے

फ़ौज तो नहीं पर सामान और सलाह ज़रूर मिल रही है, बराबर आगे बढ़ती जा रही है और दक्खिनी कोरिया और अमरीका की सेनायें बराबर पीछे हटती जा रही हैं. दक्खिनी कोरिया की सरकार अपनी दो राजधानियाँ छोड़ चुकी है और तीसरी राजधानी (ताइगो) से भागने की तैयारियाँ कर रही है. उत्तर की कम्युनिस्ट सेना उस से सिर्फ़ ३५ मील पर बताई जाती है. और इतना ही बड़ा ख़तरा अमरीका के सबसे बड़े अड्डे पुसान बन्दरगाह के लिये भी पैदा हो गया है. इसके दो कारन हैं. एक तो यह कि अमरीका के लिये उत्तरी कोरिया का हमला अचानक था और वह लड़ाई के मैदान से लगभग सात हज़ार मील दूर होने के कारन अभी तक जितनी चाहिये उतनी सेना और सामान वहाँ तक नहीं पहुंचा सका है. दूसरा कारन यह है कि दक्खिनी कोरिया की सेना शुरू ही में हिम्मत हार गई और जनता जगह जगह उत्तर की कम्युनिस्ट सेना से मिल गई. जब वह सेना किसी शहर पर बाहर से धावा करती है तो जनता उसे अन्दर से मदद देती है जिसके कारन अमरीका के दस्ते घिर जाते हैं.

इस घेरे से बचने के लिये उनको पीछे हटना पड़ता है. जनरल मेकार्थर ने यू. एन. ओ. की सेना के सेनापति की हैसियत से सुरक्षा समिति के सामने अपनी पहली रिपोर्ट में बताया है कि वक़्त जीतने के लिये उनको ज़मीन हारना पड़ी है. इस सिलसिले में एक बात यह भी कही जा रही थी कि लड़ाई का मैदान दूर दूर तक फैला होने के कारन जनरल मेकार्थर को अपनी थोड़ी सी सेना छोटे छोटे टुकड़ों में बाँटना पड़ी है और मैदान छोटा हो जाने पर वह उसे इकट्ठा कर के जम कर मुक़ाबला कर सकेंगे. मगर मैदान

فوج تو نہیں پر سامان اور صلاح ضرور مل رہی ہے' برابر آگے بڑھتی جارہی ہے اور دکھنی کوریا اور امریکہ کی سینائیں برابر پیچھے ہٹتی جارہی ہیں . دکھنی کوریا کی سرکار اپنی دو راج دھانیاں چھوڑ چکی ہے اور تیسری راج دھانی (تائی گو) سے بھاگنے کی تیاریاں کر رہی ہے . اتر کی کمیونسٹ سینا اس سے صرف ۳۵ میل پر بتائی جاتی ہے . اور اتنا ہی بڑا خطرہ امریکہ کے سب سے بڑے اڈے پوسان بندرگاہ کے لئے بھی پیدا ہوگیا ہے . اسکے دو کارن ہیں . ایک تو یہ کہ امریکہ کے لئے اتری کوریا کا حملہ اچانک تھا اور وہ لڑائی کے میدان سے لگ بھگ سات ہزار میل دور ہونے کے کارن ابھی تک جتنی چاہئے اتنی سینا اور سامان وہاں تک نہیں پہونچا سکا ہے . دوسرا کارن یہ ہے کہ دکھنی کوریا کی سینا شروع ہی میں ہمت ہار گئی اور جنتا جگہ جگہ اتری کمیونسٹ سینا سے مل گئی . جب یہ سینا کسی شہر پر باہر سے دھاوا کرتی ہے اتو جنتا اسے اندر سے مدد دیتی ہے جس کے کارن امریکہ کے دستے گھر جاتے ہیں !۔

اس گھیرے سے بچنے کے لئے اُن کو پیچھے ہٹنا پڑتا ہے . جنرل میک آرتھر نے یو . این . او . کی سینا کے سینا پتی کی حیثیت سے سورکشا سمیتی کے سامنے اپنی پہلی رپورٹ میں بتایا ہے کہ وقت جیتنے کے لئے اُن کو زمین ہارنا پڑی ہے . اس سلسلے میں ایک بات یہ بھی کہی جارہی تھی کہ لڑائی کا میدان دور دور تک پھیلا ہونے کے کارن جنرل میک آرتھر کو اپنی تھوڑی سی سینا چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں میں بانٹنا پڑی ہے اور میدان چھوٹا ہوجانے پر وہ اُسے اکٹھا کرکے جم کر مقابلہ کرسکیں گے . مگر میدان

बहुत ज्यादा छोटा हो जाने से दुश्मन को धोका देने का मौक़ा ख़तम हो जाता है और उसके हौसले बढ़ जाते हैं.

टोकियो (जापान) की एक ताज़ा खबर में कोरिया की लड़ाई पर बेलाग निगाह से यह राय ज़ाहिर की गई है कि उसको कम्युनिस्टों ने क़रीब क़रीब जीत लिया है, और जिस तरह दूसरी बड़ी लड़ाई में बरतानी सेना को फ़रांस के बन्दरगाह डंकर्क से अपना तमाम सामान छोड़ कर और बहुत से आदमी कटा कर भागना पड़ा था उसी तरह पूसान और दक्खिनी कोरिया के दूसरे मोर्चों से अमरीकी सेना को भागना पड़ेगा. या फिर अगर उन्होंने जमे रहने की कोशिश की तो उसके बहुत ही महँगे दाम देने होंगे और ऐसे दाम देने पर भी न तो शान्ति प्राप्त हो सकेगी और न कोई गुत्थी ही सुलझ सकेगी.

यह बात चाहे जिस ख़याल से कही गई हो पर है बड़े पते की. इसलिये कि उत्तरी कोरियाकी सेनाको दक्खिनी कोरिया की जनता की जो हमदर्दी हासिल हो गई है और जो मदद मिल रही है उसे देखते हुए अमरीका को या यू. एन. ओ. की सेना को क़दम जमाये रखने में लोहे के चने चबाने पड़ जायेंगे और हारी हुई ज़मीन को वापस लेना नामुमकिन हो जायगा. अगर उन्होंने इसकी कोशिश की तो उस इलाक़े की जनता ख़ुद उनका मुक़ाबला करेगी. वह उत्तरी कोरिया के हमले और ज़बरदस्ती के बारे में अमरीका की बातों पर, चाहे यह बातें यू. एन. ओ. के मुँह से ही क्यों न कहलवाई जायें, उतना ध्यान नहीं देगी जितना कि देश की एकता के बारे में उत्तर

بہت زیادہ چھوٹا ہوجانے سے دشمن کو دھوکہ دینے کا موقع ختم ہوجاتا ہے اور اُس کے حوصلے بڑھ جاتے ہیں .

توکیو (جاپان) کی ایک تازہ خبر میں کوریا کی لڑائی پر بے لاگ نگاہ سے یہ رائے ظاہر کی گئی ہے کہ اس کو کمیونسٹوں نے قریب قریب جیت لیا ہے . اور جس طرح دوسری بڑی لڑائی میں برطانی سینا کو فرانس کے بندرگاہ ڈنکرک سے اپنا تمام سامان چھوڑ کر اور بہت سے آدمی کٹاکر بھاگنا پڑا تھا اسی طرح پوسان اور دکھنی کوریا کے دوسرے مورچوں سے امریکی سینا کو بھاگنا پڑیگا . یا پھر اگر اُنہوں نے جمے رہنے کی کوشش کی تو اس کے بہت ہی مہنگے دام دینے ہونگے اور ایسے دام دینے پر بھی نہ تو شانتی پراپت ہوسکےگی اور نہ کوئی گتھی ہی سلجھ سکے گی .

یہ بات چاہے جس خیال سے کہی گئی ہو مگر ہے بڑے پتے کی . اس لئے کہ اُتری کوریا کی سینا کو دکھنی کوریا کی جنتا کی جو ہمدردی حاصل ہو گئی ہے اور جو مدد مل رہی ہے اسے دیکھتے ہوئے امریکہ کو یا یو . این . او . کی سینا کو قدم جمائے رکھنے میں لوہے کے چنے چبانے پڑ جائیں گے اور ہاری ہوئی زمین کو واپس لینا ناممکن ہو جائے گا . اگر اُنہوں نے اس کی کوشش کی تو اس علاقے کی جنتا خود ان کا مقابلہ کرے گی . وہ اُتری کوریا کے حملے اور زبردستی کے بارے میں امریکہ کی باتوں پر، چاہے یہ باتیں یو . این . او . کے منھ سے ہی کیوں نہ کہلوائی جائیں، اُتنا دھیان نہیں دے گی جتنا کہ دیش کی ایکتا کے بارے میں اُتر

से आने वाली आवाज़ और री सरकार की नलायक़ी के बारे में अपने निजी तजरबे पर.

जनून की हालत

अमरीका और उसके साथी उतनी दूर तक नहीं देखते. वह पिछली बातों से भी यह सबक़ नहीं सीखते कि चीन और हिन्द चीन में च्यांग काई-शेक और बावडाई की तरह उन्होंने कोरिया में सिंघमन री की पीठ पर हाथ रख कर एक बार फिर एक ऐसे घोड़े पर बाज़ी लगाई है जिसका पेट रिशवत, लूट और दान के पैसे से चाहे जितना फूल गया हो पर उसकी टाँगों में दौड़ना तो दूर रहा चलने तक का भी दम नहीं है, और जिसकी हार तै है—देर हो या सवेर.

पच्छिमी राष्ट्रों को अगर कुछ दिखाई देता है तो सिर्फ़ यह कि कम्युनिज़्म का सैलाब उनके साम्राजवाद और आर्थिक लूट को ख़तम करने के लिये आगे बढ़ रहा है, इस डर ने उनमें एक जनून की हालत पैदा करदी है जिसका पता उनके लीडरों के हाल के बयानों से चलता है. अमरीका के प्रधान ट्रूमैन साहब ने फ़ौज बढ़ाने, टैक्स लगाने और फ़ौजी कामों और तैयारियों पर बजट से ज़्यादा रक़म ख़र्च करने का अधिकार माँगा है. इसी तरह बरतानिया के प्रधान मंत्री एटली ने रूस का हौवा उछाल कर दूसरी बड़ी लड़ाई के इस "सबक़" को याद दिलाया है कि "एक बुरे लगने वाले लेकिन ज़रूरी फ़र्ज़ को अंजाम न देने से मुसीबत ख़तम नहीं होती बल्कि सिर्फ़ टल जाती है और बाद को पहले से अधिक दुख पहुंचाती है."

سے آنے والی آواز اور ری سرکار کی نالائقی کے بارے میں اپنے نجی تجربے پر.

جنون کی حالت

امریکہ اور اُسکے ساتھی اتنی دور تک نہیں دیکھتے . وہ پچھلی باتوں سے بھی یہ سبق نہیں سیکھتے کہ چین اور ہند چین میں چیانگ کائی شیک اور باؤدائی کی طرح اُنھوں نے کوریا میں سنگ من ری کی پیٹھ پر ہاتھ رکھکر ایک بار پھر ایک ایسے گھوڑے پر بازی لگائی ہے جسکا پیٹ رشوت، لوٹ اور دان کے پیسے سے چاہے جتنا پھول گیا ہو پر اس کی ٹانگوں میں دوڑنا تو دور رہا چلنے تک کا بھی دم نہیں ہے اور جسکی ہار طے ہے—دیر ہو یا سویر .

پچھمی راشٹروں کو اگر کچھ دکھائی دیتا ہے تو صرف یہ کہ کمیونزم کا سیلاب اُن کے سامراج واد اور آرتھک لوٹ کو ختم کرنے کے لئے آگے بڑھ رہا ہے . اِس ڈر نے ان میں ایک جنون کی حالت پیدا کردی ہے جس کا پتہ ان کے لیڈروں کے حال کے بیانوں سے چلتا ہے. امریکہ کے پردھان ٹرومین صاحب نے فوج بڑھانے ، ٹیکس لگانے اور فوجی کاموں اور تیاریوں پر بجٹ سے زیادہ رقم خرچ کرنے کا ادھیکار مانگا ہے . اسی طرح برطانیہ کے پردھان منتری ایٹلی نے روس کا ہوّا اُچھال کر دوسری بڑی لڑائی کے اِس "سبق" کو یاد دلایا ہے کہ " ایک بُرے لگنے والے لیکن ضروری فرض کو انجام نہ دینے سے مصیبت ختم نہیں ہوتی بلکہ صرف ٹل جاتی ہے اور بعد کو پہلے سے ادھک دکھ پہنچاتی ہے ."

इसी सिलसिले में टोरी लीडर चर्चिल ने कहा है कि रूस सेना और सामान में बरतानिया पर भारी होते हुए भी अमरीका के ऐटम बम को मात नहीं दे सका है और अभी इस बम से डरा कर उसे समझौते पर राज़ी किया जा सकता है.

यह बातें खोखली नहीं हैं. बरतानिया, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड और तुरकी ने भी कोरिया की लड़ाई में अपनी पैदल सेना भेजने का ऐलान कर दिया है. अमरीकी पारलीमेन्ट कम्युनिस्ट दुश्मन मुल्कों को फ़ौजी सामान देने के लिये चार अरब डालर की मन्ज़ूरी पर सोच विचार कर रही है. इस काम के लिये लगभग सवा अरब डालर पहले ही मन्ज़ूर किये जा चुके हैं. इसके अलावा जनरल मेकार्थर, जो कहने को तो कोरिया में यू. एन. ओ. की तरफ़ से सेनापति मुक़र्रर किये गये हैं, फ़ारमूसा जा कर चीनी कम्युनिस्टों से कह आये हैं कि वह इस टापू पर, जो जापान से निकाला जा चुका है और जिसपर चीन का अधिकार माना जा चुका है और जहाँ आज कल च्यांग काई शेक ने दिखावे की सरकार क़ायम कर रखी है, हमला करने की हिम्मत न करें. हालाँ कि प्रधान ट्रूमैन पिछली जनवरी में यह ऐलान कर चुके हैं कि वह फ़ारमूसा को बचाने के लिये अपनी सेना नहीं भेजेंगे और आख़िर जुलाई में उनकी सरकार ने हिन्द सरकार के नाते चीन की कम्युनिस्ट सरकार को यह यक़ीन दिलाया था कि अमरीका फ़ारमूसा पर क़ब्ज़ा करना नहीं चाहता.

रूस का रुख़

कोरिया की लड़ाई से रूस के अलग रहनेका कारन कुछ तो यह

اِسی سلسلے میں توری لیڈر چرچل نے کہا ہے کہ روس سینا اور سامان میں برطانیہ پر بھاری ہوتے ہوئے بھی امریکہ کے ایٹم بم کو مات نہیں دے سکا ہے اور ابھی اِس بم سے ڈرا کر اُسے سمجھوتے پر راضی کیا جا سکتا ہے .

یہ باتیں کھوکھلی نہیں ہیں . برطانیہ' آسٹریلیا' نیوزی لینڈ اور ترکی نے بھی کوریا کی لڑائی میں اپنی پیدل سینا بھیجنے کا اعلان کر دیا ہے . امریکی پارلیمنٹ کمیونسٹ دشمن ملکوں کو فوجی سامان دینے کے لئے ,چار ارب ڈالر کی منظوری پر سوچ وچار کر رہی ہے . اس کام کے لئے لگ بھگ سوا ارب ڈالر پہلے ہی منظور کئے جا چکے ہیں . اِس کے علاوہ جنرل میک آرتھر' جو کہنے کو تو کوریا میں یو . این . او . کی طرف سے سینا پتی مقرر کئے گئے ہیں' فارموسا جاکر چینی کمیونسٹوں سے کہ آئے ہیں کہ وہ اس ٹاپو پر' جو جاپان سے نکالا جا چکا ہے اور جس پر چین کا ادھیکار مانا جا چکا ہے اور جہاں آج کل چیانگ کائی شیک نے دکھاوے کی سرکار قائم کر رکھی ہے' حملہ کرنے کی ہمت نہ کریں . حالانکہ پردھان ٹرومین پچھلے جنوری میں یہ اعلان کرچکے ہیں کہ وہ فارموسا کو بچانے کے لئے اپنی سینا نہیں بھیجیں گے اور آخر جولائی میں اُن کی سرکار نے ہند سرکار کے ناتے چین کی کمیونسٹ سرکار کو یہ یقین دلایا تھا کہ امریکہ فارموسا پر قبضہ کرنا نہیں چاہتا .

روس کا رخ

کوریا کی لڑائی سے روس کے الگ رہنے کا کارن کچھ تو یہ

है कि उसके मैदान में आये बग़ैर ही उसका काम बना जाता है, कुछ यह कि उसकी फ़ौजी शक्ति पच्छिमी राष्ट्रों की शक्ति से कम है और कुछ यह कि उसके अपने देश की तरक़्क़ी और दूसरे देशों में कम्युनिस्ट आन्दोलन की कामयाबी के लिये शान्ति एक ज़रूरी चीज़ है. पच्छिमी राष्ट्रों की हालत और पालिसी इसके बिलकुल उलटी है. मगर रूस इतना कमज़ोर भी नहीं है कि बराबर दबता चला जाय. अगर कोरिया की लड़ाई उत्तरी कोरिया के पूरी तरह या बड़ी हद तक जीत जाने के बाद भी जारी रही तो कोई नहीं कह सकता कि अमरीका, रूस और उसके साथियों को किस हद तक दबाना चाहेगा और रूस किस जगह से जवाबी वार शुरू करेगा.

एक ही रास्ता

यही सोच कर प्रधान मंत्री नेहरू ने कोरिया के मसले पर अपनी पहली प्रेस कानफ़रेन्स में कहा था कि इस लड़ाई के दुनिया की लड़ाई बन जाने का इमकान रुपये में आठ आने भर है. उस मौक़े पर उन्होंने उस सुझाव का भी चरचा कर दिया था जो बाद को उन्होंने अमरीका और रूस के मंत्रियों के सामने रखा. और इसलिये यह कहना ग़लत है कि हिन्द सरकार ने अपने शुरू के रुख़ को ग़लत समझ कर या देश और विदेश के किसी दबाव से दब कर अपना रुख़ बदल दिया. सच तो यह है कि वह कोरिया की लड़ाई छिड़ने से बहुत पहले चीन की कम्युनिस्ट सरकार के प्रतिनिधि के सुरक्षा समिति में शामिल कर लिये जाने की ताईद कर रही थी. इसलिये कि उसके बग़ैर सुरक्षा समिति की साख गिरती और

ہے کہ اسکے میدان میں آئے بغیر ہی اسکا کام بنا جاتا ہے۔ کچھ یہ کہ اسکی فوجی شکتی پچھمی راشٹروں کی شکتی سے کم ہے اور کچھ یہ کہ اسکے اپنے دیش کی ترقی اور دوسرے دیشوں میں کمیونسٹ آندولن کی کامیابی کے لئے شانتی ایک ضروری چیز ہے۔ پچھمی راشٹروں کی حالت اور پالیسی اسکے بالکل الٹی ہے۔ مگر روس اتنا کمزور بھی نہیں ہے کہ برابر دبتا چلا جائے۔ اگر کوریا کی لڑائی اتری کوریا کے پوری طرح یا بڑی حد تک جیت جانے کے بعد بھی جاری رہی تو کوئی نہیں کہہ سکتا کہ امریکہ روس اور اسکے ساتھیوں کو کس حد تک دبانا چاہیگا اور روس کس جگہ سے جوابی وار شروع کرے گا۔

ایک ہی راستہ

یہی سوچ کر پردھان منتری نہرو نے کوریا کے مسئلے پر اپنی پہلی پریس کانفرنس میں کہا تھا کہ اس لڑائی کے دنیا کی لڑائی بن جانے کا امکان روپیہ میں آٹھ آنے بھر ہے۔ اسی موقع پر انہوں نے اس سجھاؤ کا بھی چرچا کردیا تھا جو بعد کو انہوں نے امریکہ اور روس کے منتریوں کے سامنے رکھا۔ اور اس لئے یہ کہنا غلط ہے کہ ہند سرکار نے اپنے شروع کے رخ کو غلط سمجھکر یا دیش اور ودیش کے کسی دباؤ سے دب کر اپنا رخ بدل دیا۔ سچ تو یہ ہے کہ وہ کوریا کی لڑائی چھڑنے سے بہت پہلے چین کی کمیونسٹ سرکار کے پرتی ندھی کے سورکشا سمیتی میں شامل کر لئے جانے کی تائید کر رہی تھی۔ اسلئے کہ اس کے بغیر سورکشا سمیتی کی ساکھ گرتی اور

काम रुकता है. इसी बात को अब पंडित नेहरू ने दोहरा दिया है. इसलिये कि इस संस्था को और उसकी साख को बनाये रखे बिना कोरिया के झगड़े को, जो रूस और पच्छिमी राष्ट्रों के बड़े झगड़े का एक हिस्सा है, अमन और शान्ति के साथ चुकाया नहीं जा सकता.

सौदेबाजी और गरोह बन्दी

पंडित नेहरू ने मिस्र के प्रधान मंत्री नहास पाशा को भी यह सलाह दी थी की वह चीन की नई सरकार को मान लें और अगरचे मिस्र शाम में बग़ावत के बाद बनने वाली सरकार को मान चुका है मगर उसने चीन के बारे में यह कहा है कि वहाँ की नई सरकार ज़बरदस्ती बनी है इसलिये उसे माना नहीं जा सकता. दूसरी तरफ़ मिस्री सरकार ने कोरिया के बारे में सुरक्षा समिति के प्रस्तावों को भी नहीं माना है और उसे बेलाग रहने के सबूत के तौर पर पेश किया जाता है. पर उसमान मुहर्रम पाशाने, जो आज कल प्रधान मंत्री का काम कर रहे हैं, एक इशारा ऐसा किया है जिससे ख़याल होता है कि अगर बरतानिया सूडान पर मिस्र का अधिकार मानने और सुएज़ के इलाक़े से अपनी फ़ौजें हटाने लिये तैयार हो जाये तो मिस्र कोरिया के मामले में उसके साथ आ सकता है.

सौदे बाजी की यह ज़ेहनियत अकेले मिस्र ही की नहीं है. दुनिया के ज़्यादा तर देश यही दृष्टि रखते हैं. वह अपने दाम तै करके बड़े राष्ट्रों से अपने ऊपर बोली बुलवाते हैं और जिसकी बोली ज़्यादा होती है उसके हाथ बिक जाते हैं. इसी कारन दुनिया दो बड़े गरोहों

کام رکتا ہے ۔ اسی بات کو اب پنڈت نہرو نے دوہرا دیا ہے ۔ اسلئے کہ اس سنستھا اور اسکی ساکھ کو بنائے رکھے بنا کوریا کے جھگڑے کو، جو روس اور پچھمی راشٹروں کے بڑے جھگڑے کا ایک حصہ ہے، امن اور شانتی کے ساتھ چکایا نہیں جاسکتا ۔

سودے بازی اور گروہ بندی

پنڈت نہرو نے مصر کے پردھان منتری نحاس پاشا کو بھی یہ صلاح دی تھی کہ وہ چین کی نئی سرکار کو مان لیں اور اگرچہ مصر شام میں بغاوت کے بعد بننے والی سرکار کو مان چکا ہے مگر اس نے چین کے بارے میں یہ کہا ہے کہ وہاں کی نئی سرکار زبردستی بنی ہے اسلئے اسے مانا نہیں جاسکتا ۔ دوسری طرف مصری سرکار نے کوریا کے بارے میں سورکشا سمیتی کے پرستاؤں کو بھی نہیں مانا ہے اور اسے بے لاگ رہنے کے ثبوت کے طور پر پیش کیا جاتا ہے ۔ پر عثمان محرم پاشا نے جو آج کل پردھان منتری کا کام کر رہے ہیں، ایک اشارہ ایسا کیا ہے جس سے خیال ہوتا ہے کہ اگر برطانیہ سوڈان پر مصر کا ادھیکار ماننے اور سوئز کے علاقے سے اپنی فوجیں ہٹانے کے لئے تیار ہوجائے تو مصر کوریا کے معاملے میں اس کے ساتھ آسکتا ہے ۔

سودے بازی کی یہ ذہنیت اکیلے مصر ہی کی نہیں ہے ۔ دنیا کے زیادہ تر دیش یہی درشٹی رکھتے ہیں ۔ وہ اپنے دام طے کرکے بڑے راشٹروں سے اپنے اوپر بولی بلواتے ہیں اور جسکی بولی زیادہ ہوتی ہے اسکے ہاتھ بک جاتے ہیں ۔ اسی کارن دنیا دو بڑے گروہوں

में बँट गई है, और जो मुल्क इस गरोहबन्दी से अलग रहता है उस पर दोनों तरफ़ से गालियों की बौछार होती रहती है. लेकिन अगर हिन्दुस्तान की तरह कुछ और मुल्क यह गालियाँ सुनने के लिये तैयार नहीं होते तो दुनिया ज़्यादा दिनों तक तीसरी बड़ी लड़ाई के भूचाल से बच नहीं सकती.

रूस के सुरक्षा समिति में वापस आ जाने पर लड़ाई एक बड़ी मुद्दत तक के लिये टल सकती है. मगर शर्त यह है कि चीन के मामले में अमरीका अपनी हट छोड़ दे और कोरिया का झगड़ा चुकाते वक़्त अमरीका की साख से ज़्यादा वहाँ की जनता का ख़याल रखा जाये.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया! क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

[नोट—बेचने वालों या कम से कम दस कापी ख़रीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.]

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

میں بٹ گئی ہے . اور جو ملک اس گروہ بندی سے الگ رہتا ہے اس پر دونوں طرف سے گالیوں کی بوچھار ہوتی رہتی ہے . لیکن اگر ھندستان کی طرح کچھ اور ملک یہ گالیاں سننے کے لئے تیار نہیں ہوتے تو دنیا زیادہ دنوں تک تیسری بڑی لڑائی کے بھونچال سے بچ نہیں سکتی .

روس کے سورکشا سمیتی میں واپس آجانے پر لڑائی ایک بڑی مدت تک کے لئے ٹل سکتی ہے . مگر شرط یہ ہے کہ چین کے معاملے میں امریکہ اپنی ہٹ چھوڑ دے اور کوریا کا جھگڑا چکاتے وقت امریکہ کی ساکھ سے زیادہ وہاں کی جنتا کا خیال رکھا جائے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی ، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج ، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا ! قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے .

[نوٹ — بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

منیجر " نیا ھند "
۴۸ بائی کا باغ ، الہ آباد

एडीटर, प्रेम भाई   ایڈیٹر، پریم بھائی

राम रहीम

(बहन खुर्शीद बेगम)

मस्जिद में शान तेरी   मन्दिर में आन तेरी
होती है सब में पूजा,   ए मेहरबान तेरी
इस में भजन हैं तेरे   उसमें अज़ान तेरी
यह भी है तेरी बोली   वह भी ज़बान तेरी
हर दिल में है तेरा घर   हर मन है तेरा मन्दिर
राम और रहीम तू है   गाड और ईश्वर है

हर एक ज़बाँ पे चरचा
है सुबह शाम तेरा
मैं भी कभी न भूलूँ
भगवान! नाम तेरा

رام رحیم

(بہن خورشید بیگم)

مسجد میں شان تیری   مندر میں آن تیری
ہوتی ہے سب میں پوجا   اے مہربان تیری
اسمیں بھجن ہیں تیرے   اُس میں اذان تیری
یہ بھی ہے تیری بولی   وہ بھی زبان تیری
ہر دل میں ہے تیرا گھر   ہر من ہے تیرا مندر
رام اور رحیم تو ہے   گاڈ اور ایشور ہے

ہر ایک زباں پہ چرچا
ہے صبح شام تیرا
میں بھی کبھی نہ بھولوں
بھگوان! نام تیرا

सपना

भाई—मुबारक

हमारे मकान में आम रास्ते की तरफ़ जो ज़ीना है, वह अक्सर बंद रहता है. इसके ज़रिये आने-जाने का काम बहुत कम लिया जाता है. इसकी एक ख़ास वजह है—ज़ीने में जो खिड़की है, वह हमेशा खुली रहती है. डाकिया इसी की राह आने वाली डाक ज़ीने में फेंक कर चला जाता है.

एक दिन की बात है—मैं डाक उठाने ज़ीने में उतरा, तो देखता क्या हूँ कि ज़ीने की सीढ़ियों पर दस-दस और सौ-सौ रुपये वाले नोटों के ऊँचे-ऊँचे ढेर लगे हैं. मेरे ताज्जुब की हद न रही. कहाँ से आए ये नोट, कौन फेंक गया इन्हें यहाँ. कुछ समझ में न आया. मैंने उलटे पैरों लौट कर अब्बाजान को यह अनोखी ख़बर सुनाई.

अब्बाजान फ़ौरन क़लम पटक कर ज़ीने में पहुँचे और लगे उठा-उठाकर नोट देखने-परखने. सभी नोट बिलकुल नये और असली थे, मानो अभी-अभी सरकारी ख़ज़ाने से निकल कर आए थे. अब्बाजान कुछ देर तक तो उन पर ताज्जुब भरी नज़र डालते रहे, फिर मुझ से बोले—"जाओ, भुला, भूरी, नन्हीं और अमीरन को बुला लाओ. बस, दौड़ो... जल्दी."

भुला, भुरी, नन्हीं और अमीरन बूढ़ी नानियाँ हैं, जो मुद्दत हुई, कुछ फ़ासले पर हमारे पुराने घर में रहती और मेहनत-मज़दूरी

سپنا

(بھائی مبارک علی)

ہمارے مکان میں عام راستے کی طرف جو زینہ ہے' وہ اکثر بند رہتا ہے . اسکے ذریعے آنے جانے کا کام بہت کم لیا جاتا ہے . اس کی ایک خاص وجہ ہے — زینے میں جو کھڑکی ہے' وہ ہمیشہ کھلی رہتی ہے . ڈاکیہ اسی—راہ آنے والی ڈاک زینے میں پھینک کر چلا جاتا ہے .

ایک دن کی بات ہے — میں ڈاک اٹھانے زینے میں اترا تو دیکھتا کیا ہوں کہ زینے کی سیڑھیوں پر دس دس اور سو سو روپیے والے نوٹوںکے اونچے اونچے ڈھیر لگے ہیں . میرے تعجب کی حد نہ رہی . کہاں سے آئے یہ نوٹ' کون پھینک گیا انہیں یہاں . کچھ سمجھ میں نہ آیا . میں نے الٹے پیروں لوٹ کر ابا جان کو یہ انوکھی خبر سنائی .

ابا جان فوراً قلم پٹک کر زینے میں پہونچے اور لگے اٹھا اٹھا کر نوٹ دیکھنے پرکھنے . سبھی نوٹ بالکل نئے اور اصلی تھے' مانو ابھی ابھی سرکاری خزانے سے نکل کر آئے تھے . ابا جان کچھ دیر تک تو اُن پر تعجب بھری نظر ڈالتے رہے' پھر مجھ سے بولے—"جاؤ' بھولا' بھوری' ننھی اور امیرن کو بلا لاؤ . بس' دوڑو ... جلدی ."

بھولا' بھوری' ننھی اور امیرن بوڑھی نانیاں ہیں' جو مدت ہوئی' کچھ فاصلے پر ہمارے پرانے گھر میں رہتی اور محنت مزدوری

करती हैं. वह चारों फ़ौरन मेरे साथ आ पहुंचीं. उनको देखते ही अब्बाजान ने कहा—"यह नोट देख रही हो न ? बस, जितने बन सकें, उठा ले जाओ और मज़े से खाओ पियो. मगर देखो, किसी को कानों कान ख़बर न हो."

चारों नानियाँ निहाल हो गईं. जल्दी-जल्दी नोटों से झोलियाँ भर कर दुआओं का मेंह बरसाती हुई भागीं. इसके बाद अब्बाजान सर पर हाथ रख कर बैठ गये और भर्राई हुई आवाज़ में बोले—"या अल्लाह ! यह क्या ग़ज़ब हुआ ! मालूम नहीं, किस दुश्मन ने बदला चुकाने की ठानी है. बस, अभी पुलिस आ जायगी और तमाम इज़्ज़त—आबरू धूल में मिला देगी."

अम्मीजान ने बिगड़ कर कहा—"बुरी आदत है तुम्हारी. ज़रा सी बात हुई नहीं, कि सर पकड़ कर बैठ गए. तुमने न चोरी की है, न डाका डाला है, फिर पुलिस को तुम्हारी इज़्ज़त-आबरू धूल में मिलाने का क्या अख़्तियार ? बेटा मुबारक, चले तो जाओ, और पुलिस-कोतवाल को बुला लाओ. कहना, अभी चलिये; बड़ा ज़रूरी काम है."

पुलिस-कोतवाल मेरे साथ आए और मुसकराकर अब्बाजान से बोले—"क्या मामला है मास्टर साहब ?" अब्बाजान ने नोटों की तरफ़ उँगली उठाई और जवाब दिया—"यह देखिये, हज़ारों-लाखों रुपये के नोट ! मालूम नहीं, कौन फेंक गया है. बताइये, मैं क्या करूँ ?"

"मज़ा कीजिये—ख़ुशियाँ मनाइये ! ख़ुद खाइये दोस्तों को खिलाइये."

کرتی ہیں۔ یہ چاروں فوراً میرے ساتھ آ پہونچیں۔ ان کو دیکھتے ہی ابا جان نے کہا—"یہ نوٹ دیکھ رہی ہو نہ؟ بس، جتنے بن سکے، اٹھا لے جاؤ اور مزے سے کھاؤ پیو۔ مگر دیکھو، کسی کو کانوں کان خبر نہ ہو۔"

چاروں نانیاں نہال ہو گئیں۔ جلدی جلدی نوٹوں سے جھولیاں بھر کر دعاؤں کا مینھ برساتی ہوئی بھاگیں۔ اس کے بعد ابا جان سر پر ہاتھ رکھکر بیٹھ گئے اور بھرائی ہوئی آواز میں بولے— "یا اللہ! یہ کیا غضب ہوا! معلوم نہیں، کس دشمن نے بدلہ چکانے کی ٹھانی ہے۔ بس، ابھی پولیس آجائیگی اور تمام عزت آبرو دھول میں ملادیگی۔"

امی جان نے بگڑ کر کہا—"بری عادت ہے تمہاری۔ ذرا سی بات ہوئی نہیں کہ سر پکڑ کر بیٹھ گئے۔ تم نے نہ چوری کی ہے، نہ ڈاکہ ڈالا ہے، پھر پولیس کو تمہاری عزت آبرو دھول میں ملانے کا کیا اختیار؟ بیٹا مبارک، چلے تو جاؤ، اور پولیس کوتوال کو بلا لاؤ، کہنا ابھی چلئے؛ بڑا ضروری کام ہے۔"

پولیس کوتوال میرے ساتھ آئے اور مسکرا کر ابا جان سے بولے— "کیا معاملہ ہے ماسٹرصاحب؟" ابا جان نے نوٹوں کی طرف انگلی اٹھائی اور جواب دیا—"یہ دیکھئے، ہزاروں لاکھوں روپیوں کے نوٹ! معلوم نہیں، کون پھینک گیا ہے۔ بتائیے، میں کیا کروں؟"

"مزا کیجئے — خوشیاں منائیے! خود کھائیے دوستوں کو کھلائیے۔"

"ऐसा न कहिये कोतवाल साहब ! मैं ग़रीब आदमी हूँ. कोई कारवाई कीजिये."

"किसलिये ? ईश्वर आपको छप्पर फाड़कर दे और मैं दाल-भात में मूसल चंद की तरह फट पड़ूँ ? वाह ! आप भी खूब रहे !"

यह कह कर कोतवाल साहब तो चलते बने, मगर अब्बाजान को कब तसल्ली होने वाली थी. उन्होंने दुखभरी आवाज़ में अम्मीजान से कहा—"यह तो बहुत बुरा हुआ ! पुलिस वाले का क्या भरोसा, कहीं पीछे कोई कारवाई कर बैठा, तो यहाँ लेने के देने पड़ जायँगे ? बताओ, अब क्या करना चाहिये ? मुझे तो ऐसा जान पड़ता है, जैसे नोटों के इस ढेर में हज़ारों-लाखों नाग फुफकारें मार रहे हों."

अम्मीजान हँसकर बोलीं—"फ़ज़ूल घबराते हो ! जब तुमने चोरी नहीं की है, डाका नहीं डाला है; तो कोई तुम्हारा क्या लिये लेता है ? अच्छा, एक काम करो. बड़े साहब को बुलवा लो. अगर वह आ जायँगे, तो फिर किसी तरह का झगड़ा-बखेड़ा न रहेगा."

अब्बाजान को यह बात जँच गई. उन्होंने मुझ पर नज़र डाली और कहा—"सुनते हो बेटा मुबारक ? बस, चले जाओ, ज़रा जल्दी-जल्दी और ले आओ बड़े साहब को. हम तुम्हें पेट-भर मिठाई खिला देंगे. समझे ?"

यह सुनते ही मैं बड़े साहब के बँगले की ओर दौड़ चला. बड़े साहब बग़ीचे में घूम रहे थे. मुझे देखते ही बड़े प्रेम से बोले—"क्या है बच्चे ? इस तरह क्यों भागे आ रहे हो ?"

मैंने सब हाल सुनाया तो बड़े साहब फ़ौरन मोटर में बैठ मेरे साथ चले आये. अब्बाजान ने उनको आदर से बिठाया और

"ایسا نہ کہئے کوتوال صاحب! میں غریب آدمی ہوں۔ کوئی کارروائی کیجئے۔"

"کس لئے؟ ایشور آپ کو چھپر پھاڑ کر دے اور میں دال بھات میں موسل چند کی طرح پھٹ پڑوں؟ واہ! آپ بھی خوب رہے!"

یہ کہکر کوتوال صاحب تو چلتے بنے، مگر ابا جان کو کب تسلی ہونے والی تھی۔ انہوں نے دکھ بھری آواز میں امی جان سے کہا—"یہ تو بہت برا ہوا! پولیس والے کا کیا بھروسہ، کہیں پیچھے کوئی کارروائی کر بیٹھا، تو یہاں لینے کے دینے پڑ جائینگے! بتاؤ، اب کیا کرنا چاہئے؟ مجھے تو ایسا جان پڑتا ہے، جیسے نوٹوں کے اس ڈھیر میں ہزاروں، لاکھوں ناگ پھنکاریں مار رہے ہوں!"

امی جان ہنس کر بولیں—"فضول گھبراتے ہو! جب تم نے چوری نہیں کی ہے، ڈاکہ نہیں ڈالا ہے؛ تو کوئی تمہارا کیا لئے لیتا ہے؟ اچھا، ایک کام کرو۔ بڑے صاحب کو بلوا لو۔ اگر وہ آجائینگے، تو پھر کسیطرح کا جھگڑا بکھیڑا نہ رہیگا۔"

ابا جان کو یہ بات جچ گئی۔ انہوں نے مجھ پر نظر ڈالی اور کہا—"سنتے ہو بیٹا مبارک؟ بس، چلے جاؤ، ذرا جلدی جلدی اور لے آؤ بڑے صاحب کو۔ ہم تمہیں پیٹ بھر مٹھائی کھلوائینگے۔ سمجھے؟"

یہ سنتے ہی میں بڑے صاحب کے بنگلے کی اور دوڑ چلا۔ بڑے صاحب باغیچے میں گھوم رہے تھے۔ مجھے دیکھتے ہی بڑے پریم سے بولے—"کیا ہے بچے؟ اس طرح کیوں بھاگے آرہے ہو؟"

میں نے سب حال سنایا! تو بڑے صاحب فوراً موٹر میں بیٹھ میرے ساتھ چلے آئے۔ ابا جان نے انکو آدر سے بٹھایا اور

नोटों का वह ढेर दिखाते हुए कहा—"जनाब, मेरी जान मुसीबत में फँस गई है, मालूम नहीं, कौन भला आदमी मेरे घर में लाखों की दौलत फेंक गया है. कोतवाल साहब कोई कारवाई नहीं करना चाहते. अब आप ही बताइये, मैं क्या करूँ ? मेरी तो अक़्ल काम नहीं करती."

बड़े साहब ही-ही कर के हँस पड़े और बोले—"इस ख़ुश क़िस्मती पर मैं आपको बधाई देता हूँ. बस, बेफ़िकरी से ख़ूब ख़र्च कीजिये और ख़ूब कहानियाँ लिखिये."

यह कहकर बड़े साहब मोटर में बैठ कर चल दिये. इस तरह जब अब्बाजान की तबीयत ठिकाने आ गई, तो उन्होंने हम लोगों की तरफ़ देखते हुए कहा—"मालूम नहीं किस का धन है. मैं तो छूने से रहा, बस, तुम्हीं पाँचों भाई-बहिन लूटो और खाओ. अल्लाह ने तुम्हीं लोगों की क़िस्मत से भेजा है."

अब क्या था, हम पाँचों भाई-बहिन नोटों पर टूट पड़े, और लगे एक दूसरे को चपतें घूँसे जमाने. इसी बीच मलका आपा ने जो मुझे तड़ाक से एक चाँटा रसीद किया, तो मेरी आँखें खुल गईं. मैं घबरा कर लालटैन लिये-लिये जीने में दौड़ा तो देखता हूँ कि "बाल-भारती" के संपादक जी ने मलका आपा की कहानी लौटा दी है. उसके फटे हुए पन्ने इधर उधर बिखड़े पड़े हैं और हवा के झकोरों के साथ अपनी बदक़िस्मती पर सांसें भर रहे हैं.

نوٹوں کا وہ ڈھیر دکھاتے ہوئے کہا—"جناب، میری جان مصیبت میں پھنس گئی ہے. معلوم نہیں، کون بھلا آدمی میرے گھر میں لاکھوں کی دولت پھینک گیا ہے. کوتوال صاحب کوئی کاروائی کرنا نہیں چاہتے. اب آپ ہی بتائیے، میں کیا کروں؟ میری تو عقل کام نہیں کرتی."

بڑے صاحب ہی ہی کرکے ہنس پڑے اور بولے—"اس خوش قسمتی پر میں آپ کو بدھائی دیتا ہوں. بس بے فکری سے خوب خرچ کیجئے اور خوب کہانیاں لکھئے."

یہ کہکر بڑے صاحب موٹر میں بیٹھ کر چلدیئے. اس طرح جب ابا جان کی طبیعت ٹھکانے آگئی، تو انھوں نے ہم لوگوں کی طرف دیکھتے ہوئے کہا—"معلوم نہیں، کس کا دھن ہے. میں تو چھونے سے رہا، بس تم ہی پانچوں بھائی بہن لوٹو کھاؤ. اللہ نے تم ہی لوگوں کی قسمت سے بھیجا ہے."

اب کیا تھا ہم پانچوں بھائی بہن نوٹوں کے ڈھیروں پر ٹوٹ پڑے، اور لگے ایک دوسرے کو چپتیں، گھونسے جمانے. اسی بیچ ملکہ آپا نے جو مجھے تڑاق سے ایک چانٹا رسید کیا، تو میری آنکھیں کھل گئیں. میں گھبرا کر لالٹین لئے لئے زینے میں دوڑا تو دیکھتا ہوں کہ "بال بھارتی" کے سمپادک جی نے ملکہ آپا کی کہانی لوٹا دی ہے. اس کے پھٹے ہوئے پنے ادھر ادھر بکھرے پڑے ہیں اور ہوا کے جھکوروں کے ساتھ اپنی بدقسمتی پر سانسیں بھر رہے ہیں.

हमारी राय / ہماری رائے

भारत की तीन बरस की आज़ादी

आदमी की उमर के मुक़ाबले में हुकूमत की उमर कुछ लम्बी ही मानी गई है. इसलिये हमारी तीन बरस की उमर वाली भारती हुकूमत की बची आदमी के तीन बरस के बच्चे से अभी छोटी है. छोटी है तो क्या, बरमाकी हुकूमत के बराबर की है, चीनी हुकूमत से बड़ी है और इन्डोनेशिया की हुकूमत को तो गोद खिलाया है. इसलिये इतनी छोटी होते हुए भी उसके सिर बड़ी ज़िम्मेदारियाँ आ गई हैं और इसी से उसकी दिमाग़ी उमर उसकी जिस्मानी उमर से कुछ ज्यादा दिखाई दे तो किसी को अचरज नहीं करना चाहिये. मां जब अपने तीन बरस के बच्चे के सिर कोई छै महीने का बच्चा छोड़ मरे तो तीन बरस के बच्चे को ईश्वर आप ही समझदार बना देता है.

आम तौर से आदमी अपने नौकरके बच्चेके किये नुक़सान नज़र में रखता है और यही हाल उसका बैरी के बच्चोंके साथ होता है. पर

بھارت کی تین برس کی آزادی

آدمی کی عمر کے مقابلے میں حکومت کی عمر کچھ لمبی ہی مانی گئی ہے. اسلئے ہماری تین برس کی عمر والی بھارتی حکومت کی بچی آدمی کے تین برس کے بچے سے ابھی چھوٹی ہے. چھوٹی ہے تو کیا، برما کی حکومت کے برابر کی ہے، چینی حکومت سے بڑی ہے اور انڈونیشیا کی حکومت کو تو گود کھلایا ہے. اسلئے اتنی چھوٹی ہوتے ہوئے بھی اس کے سر بڑی ذمہ داریاں آگئی ہیں اور اسی سے اس کی دماغی عمر اس کی جسمانی عمر سے کچھ زیادہ دکھائی دے تو کسی کو اچرج نہیں کرنا چاہئے. ماں جب اپنے تین برس کے بچے کے سر کوئی چھ مہینے کا بچہ چھوڑ مرے تو تین برس کے بچے کو ایشور آپ ہی سمجھدار بنا دیتا ہے.

عام طور سے آدمی اپنے نوکر کے بچے کے لئے نقصان نظر میں رکھتا ہے اور یہی حال اسکا بیری کے بچوں کے ساتھ ہوتا ہے. پر

अपने बच्चे के साथ वह इससे उलटा बरताव करता है. अपने बच्चे के किये नुकसान उसे याद ही नहीं रहते. उसे याद रहती है अपने बच्चे की मुस्कराहट, किलकारियाँ, चंचलता, तोतले शब्द अ सी तरह की और मीठी शरारतें. यही वजह है कि हम भारति हो अपनी हुकूमत की की हुई न तो टूट फूट याद आती है और न मार धाड़ याद आती है. लूट खसोट तो याद ही कैसे आ सकती है? बच्चे के मक्खन चुराने और मां बाप के हाथ से चीज छीन कर खा जाने को कब किसी ने लूट खसोट का नाम दिया है? हमने तो हर किसी को उसका जिक्र करते हुए स्याते ही देखा है.

भारतमाता सचमुच इस तीन बरस की बच्ची को देखकर कितनी स्याती होगी इसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता. हो सकता है भारत माता की अमरीका और बरतानिया सहेलियों की नजर शायद इस बच्ची की टूट फूट, मारधाड़ और लूट खसोट पर ही हो. पर भारत माता को उन से क्या लेना देना.

आइये.अब इस तीन बरस की बच्ची हुकूमत की तरफ एक प्यार की नजर डालें और देखें कि वह किस तरह से मुस्कराती, किलकारती, हाथ पांव चलाती और घुटनों चलती है और किस तरह भारतमाता से छीन छीन कर चीजें खाती और जल्दी से जल्दी खड़े हो कर अपने पैरों पर चलने के लिये बेचैन दिखाई देती है.

पैदा होते ही इसने अपने आंगन में एक तरफ नहीं दो तरफ दीवार खड़ी देखी. और वह दीवार भी ऐसी जिससे हवा रुकती थी पर धूप और तेजी से आकर बदन जलाती थी. इस नादान बच्ची ने उसका मुकाबला किया, कभी चुप रह कर और कभी हाथ पांव

اپنے بچے کے ساتھ وہ اس سے اُلٹا برتاؤ کرتا ہے . اپنے بچے کے کئے نقصان اسے یاد ہی نہیں رہتے . اسے یاد رہتی ہے اپنے بچے کی مُسکراھٹ' کلکاریاں' چلچلتا' توتلے شبد اور اُسی طرح کی اور میٹھی شرارتیں . یہی وجہ ہے کہ ہم بھارتیوں کو اپنی حکومت کی کی ہوئی نہ تو توڑ پھوڑ یاد آتی ہے اور نہ مار دھاڑ یاد آتی ہے . لوٹ کھسوٹ تو یاد ہی کیسے آسکتی ہے ؟ بچے کے مکھن چرانے اور ماں باپ کے ہاتھ سے چیز چھین کر کھا جانے کو کب کسی نے لوٹ کھسوٹ کا نام دیا ہے ؟ ہم نے تو ہر کسی کو اُسکا ذکر کرتے ہوئے سہاتے ہی دیکھا ہے .

بھارت ماتا سچ مچ اس تین برس کی بچی کو دیکھکر کتنی سہاتی ہوگی اسکا اندازہ نہیں لگایا جاسکتا . ہوسکتا ہے بھارت ماتا کی امریکہ اور برطانیہ سہیلیوں کی نظر شاید اس بچی کی توڑ پھوڑ' مار دھاڑ اور لوٹ کھسوٹ پر ہی ہو . پر بھارت ماتا کو اُن سے کیا لینا دینا .

آئیے' اب اس تین برس کی بچی حکومت کی طرف ایک پیار کی نظر ڈالیں اور دیکھیں کہ وہ کس طرح سے مسکراتی' کلکارتی' ہاتھ پاؤں چلاتی اور گھٹنوں چلتی ہے اور کس طرح بھارت ماتا سے چھین چھین کر چیزیں کھاتی اور جلدی سے جلدی کھڑے ہوکر اپنے پیروں پر چلنے کے لئے بیچین دکھائی دیتی ہے .

پیدا ہوتے ہی اسنے اپنے آنگن میں ایک طرف نہیں دو طرف دیوار کھڑی دیکھی . اور وہ دیوار بھی ایسی جس سے ہوا رکتی تھی پر دھوپ اور تیزی سے آکر بدن جلاتی تھی . اس نادان بچی نے اسکا مقابلہ کیا' کبھی چپ رہ کر اور کبھی ہاتھ پاؤں

मारकर. आज तीन बरस के बाद कोई धूप तकलीफ देने वाली नहीं रह गई और अगर भारत-पाक समझौते का पौदा ठीक ठीक हवा पानी पाता रहा तो यह धूप एक दिन चाँदनी में बदल कर रहेगी. कौन है जो इस काम को इस बच्ची का चमत्कार नहीं मानता ?

पैदा होते ही इसने घर में बेहद गरीबी देखी. यह ठीक है कि यह सत्तरह अरब की नक़दी की मालिक होकर जनमी थी पर वह नक़दी तो ऐसे साहूकार के हाथ में थी जिससे वसूल करना कोई आसान काम नहीं था. उधार की लेनदारी कुछ धाक भले ही जमा सकती हो और साख बनाये रखने में कुछ मदद भी दे सकती हो, पर भूक मिटाने का काम नहीं कर सकती. इसलिये इस मालदार बच्ची को पैदा होने के दिन से ही मुर्गी के बच्चे की तरह अंडे से निकलतेही दाने के लिये जमीन पर चोंच मारनी पड़ी. और आख़िर इसने अपनी मेहनत से किसी न किसी तरह पेट भर ही लिया. इसमें शक नहीं कि इसने उस सत्तरह अरब में से आधे से ज्यादा ख़र्च कर डाला है. हो सकता है कुछ लोगों की नजर में यह इस बच्ची की फ़जूल ख़र्ची और ना समझी समझी जाय, पर भारत माता की नजर में यह उसकी ख़ुश ख़र्ची और समझदारी ही है और फिर यह आठ नौ अरब रुपया नक़द ही कब मिला. पुराने बेकार जहाज़ों की शकल में मिला या फिर इसी तरह और लड़ाई के सामान के रूप में. उस साहूकार से इस शकल में भी वसूली कर लेना चमत्कार ही समझना चाहिये.

पैदा होते ही इस बच्ची ने यह देखा कि उसकी माँ का दुनिया के मुल्कों में कोई ऐसा स्थान नहीं है जिसका फ़ायदा उठाकर यह

مارکر. آج تین برس کے بعد کوئی دھوپ تکلیف دینے والی نہیں رھگئی اور اگر بھارت پاک سمجھوتے کا پودا ٹھیک ٹھیک ھوا پانی پاتا رھا تو یہ دھوپ ایک دن چاندنی میں بدل کر رھیگی. کون ھے جو اس کام کو اس بچی کا چمتکار نہیں مانتا ؟

پیدا ھوتے ھی اسنے گھر میں بے حد غریبی دیکھی. یہ ٹھیک ھے کہ یہ سترہ ارب کی نقدی کی مالک ھوکر جنمی تھی پر وہ نقدی تو ایسے ساھوکار کے ھاتھ میں تھی جس سے وصول کرنا کوئی آسان کام نہیں تھا. اُدھار کی لین داری کچھ دھاک بھلے ھی جما سکتی ھو اور ساکھ بنائے رکھنے میں کچھ مدد بھی دے سکتی ھو پر بھوک مٹانے کا کام نہیں کرسکتی. اسلئے اس مالدار بچی کو پیدا ھونے کے دن سے ھی مرغی کے بچے کی طرح انڈے سے نکلتے ھی دانے کے لئے زمین پر چونچ مارنی پڑی. اور آخر اس نے اپنی محنت سے کسی نہ کسی طرح پیٹ بھر ھی لیا. اس میں شک نہیں کہ اس نے اس سترہ ارب میں سے آدھے سے زیادہ خرچ کر ڈالا ھے. ھوسکتا ھے کچھ لوگوں کی نظر میں یہ اس بچی کی فضول خرچی اور نا سمجھی سمجھی جائے' پر بھارت ماتا کی نظر میں یہ اس کی خوش خرچی اور سمجھداری ھی ھے اور پھر یہ آٹھ نو ارب روپیہ نقد ھی کب ملا. پرانے بیکار جہازوں کی شکل میں ملا یا پھر اسی طرح اور لڑائی کے سامان کے روپ میں. اس ساھوکار سے اس شکل میں بھی وصولی کرلینا چمتکار ھی سمجھنا چاھئے.

پیدا ھوتے ھی اس بچی نے یہ دیکھا کہ اس کی ماں کا دنیا کے ملکوں میں کوئی ایسا استھان نہیں ھے جسکا فائدہ اٹھاکر یہ

अपनी तमाम ताक़त अपने ऊपर ही खर्च कर सके. इसलिये इसने अपने मासूम और हंसमुख चेहरे से दुनिया के मुल्कों पर वह असर डाला कि सब इसको गोद लेने के लिये विकल हो उठे और आज इसने अपनी बच्चों जैसी साफ़ दिली की वजह से दुनिया में जगह बनाली. इसके पास न मुल्क जीतने वाले नये वीरों की कथाएँ हैं और न दूसरे मुल्कों को माल भेज कर धन बटोर लाने वाले सौदागरों की कहानियां हैं और न मिनटों में लाखों आदमियों की जान लेने वाले हथियार बनाने वालों के कारनामे. इसके पास तो सिर्फ़ भारत के राष्ट्रपिता की दी हुई सचाई और अहिन्सा की देन का एक कन है और उसी को लेकर इसने दुनिया में जो जगह बनाई है उसे चमत्कार नहीं तो और क्या कहा जा सकता है.

पैदा होते ही इसने अपने घर में खूनी झगड़े देखे, आग की लपटें देखीं, भुकमरी और बीमारी देखी, पर इन सबसे वह नहीं घबराई. पैदा होते ही जो बच्चे जिस आफ़त का मुक़ाबला कर लेते हैं उससे उनको मरते दम तक डर नहीं लगता. यही हाल इसका हुआ. इसको न अब खून की बाढ़ से डर लगता है और न आग की लपट से यह घबराती है और न भुकमरी और महामारी से यह काँपती है. यह चमत्कार नहीं तो क्या है? कुछ की नजरों में यह मालूम होता हो कि इस हुकूमत में यह सब चीजें पहले से ज्यादा हो गई हैं, हम भी मानते हैं कि यह ज्यादा हो गई हैं, पर ज्यादा होने का यहाँ सवाल कहाँ है? सवाल तो यहाँ यह है कि यह तीन बरस की बच्ची उनका मुक़ाबला कर लेती है या नहीं. और इस बारे में हमारी क्या

اپنی تمام طاقت اپنے اوپر ہی خرچ کر سکے. اس لئے اس نے اپنے معصوم اور ہنس مکھ چہرے سے دنیا کے ملکوں پر وہ اثر ڈالا کہ سب اس کو گود لینے کے لئے وکل ہو اٹھے اور آج اس نے اپنی بچوں جیسی صاف دلی کی وجہ سے دنیا میں جگہ بنالی. اس کے پاس نہ ملک جیتنے والے نئے ویروں کی کتھائیں ہیں اور نہ دوسرے ملکوں کو مال بھیج کر دھن بٹورنے والے سوداگروں کی کہانیاں ہیں اور نہ منٹوں میں لاکھوں آدمیوں کی جان لینے والے ہتھیار بنانے والوں کے کارنامے. اس کے پاس تو صرف بھارت کے راشٹرپتا کی دی ہوئی سچائی اور اہنسا کی دین کا ایک کن ہے اور اسی کو لیکر اس نے دنیا میں جو جگہ بنائی ہے اسے چمتکار نہیں تو اور کیا کہا جاسکتا ہے.

پیدا ہوتے ہی اس نے اپنے گھر میں خونی جھگڑے دیکھے' آگ کی لپٹیں دیکھیں' بھکمری اور بیماری دیکھی' پر ان سب سے وہ نہیں گھبرائی. پیدا ہوتے ہی جو بچے جس آفت کا مقابلہ کر لیتے ہیں اس سے ان کو مرتے دم تک ڈر نہیں لگتا. یہی حال اس کا ہوا. اس کو نہ اب خون کی باڑھ سے ڈر لگتا ہے اور نہ آگ کی لپٹ سے یہ گھبراتی ہے اور نہ بھکمری اور مہاماری سے یہ کانپتی ہے. یہ چمتکار نہیں تو کیا ہے؟ کچھ کی نظروں میں یہ معلوم ہوتا ہو کہ اس حکومت میں یہ سب چیزیں پہلے سے زیادہ ہوگئی ہیں' ہم بھی مانتے ہیں کہ یہ زیادہ ہوگئی ہیں' پر زیادہ ہونے کا یہاں سوال کہاں ہے؟ سوال تو یہاں یہ ہے کہ یہ تین برس کی بچی انکا مقابلہ کر لیتی ہے یا نہیں. اور اس بارے میں ہماری کیا

सभी की यह राय है कि यह उसका मुक़ाबला कर लेती है और खूब कर लेती है.

कोरिया के मामले में यह कहा जा सकता है कि इस बच्ची ने भूल की. पर भारत माता तो इस भूल से भी ख़ुश ही होगी. कोई मा अपने बच्चे से क़ीमती लैम्प के टूट जाने का नुक़सान ध्यान में नहीं लाती, उसका ध्यान तो अपने बच्चे के उस सबक़ की तरफ़ रहता है जो उसने लैम्प तोड़ कर सीखा होता है और वह यह कि लैम्प गरम होता है. और कोरिया के मामले में आज किसको यह इन्कार है कि इस तीन बरस की बच्ची ने बहुत बड़ा सबक़ लिया है और क्यों न लेती आख़िर चीन और इन्डोनेशिया से तो उमर में बड़ी ही है!

तीन बरस का वक़्त सामने रखते हुए और भारत की इस बिगड़ी हुई हालत के रहते भारत की हुकूमत ने तीन बरस में जो बुरा भला किया है, हम तो उसे भला ही समझते हैं और वह यों कि वह हर अपनी ग़लती से सबक़ लेती हुई मालूम होती है.

जब जब इस बच्ची को सांस लेने का वक़्त मिला है तब तब इसने अपने घर की तरफ़ नज़र डाली है. फ़िरक़ेबाज़ी को मिटाने की कोशिश की है, शराब कम करने के लिये तरह तरह के जतन किये हैं. अछूतपने की जड़ में मठा डाल कर हमेशा के लिये मिटाने की कोशिश की है. हिन्दुस्तान भर में एक सीधी सादी बोली फैलाने की तरफ़ क़दम उठाये हैं और भी तरह तरह की तकलीफ़ें मिटाने के सोच बिचार किये हैं. पर कुछ लोगों की नज़र में यह तीन बरस की बच्ची जवान मालूम होती है और वह इसी वजह से इस पर तरह तरह की कमियों के इलज़ाम लगाते हैं और यह बच्ची उन इलज़ामों

سبھی کی یہ رائے ہے کہ یہ اس کا مقابلہ کر لیتی ہے اور خوب کر لیتی ہے.

کوریا کے معاملے میں یہ کہا جا سکتا ہے کہ اس بچی نے بھول کی. پر بھارت ماتا تو اس بھول سے بھی خوش ہی ہوگی. کوئی ماں اپنے بچے سے قیمتی لیمپ کے ٹوٹ جانے کا نقصان دھیان میں نہیں لاتی، اسکا دھیان تو اپنے بچے کے اس سبق کی طرف رہتا ہے جو اس نے لیمپ توڑ کر سیکھا ہوتا ہے اور وہ یہ کہ لیمپ گرم ہوتا ہے. اور کوریا کے معاملے میں آج کس کو یہ انکار ہے کہ اس تین برس کی بچی نے بہت بڑا سبق لیا ہے اور کیوں نہ لیتی آخر چین اور انڈونیشیا سے تو عمر میں بڑی ہی ہے.

تین برس کا وقت سامنے رکھتے ہوئے اور بھارت کی اس بگڑی ہوئی حالت کے رہتے بھارت کی حکومت نے تین برس میں جو برا بھلا کیا ہے، ہم تو اسے بھلا ہی سمجھتے ہیں اور وہ یوں کہ وہ ہر اپنی غلطی سے سبق لیتی ہوئی معلوم ہوتی ہے.

جب جب اس بچی کو سانس لینے کا وقت ملا ہے تب تب اسنے اپنے گھر کی طرف نظر ڈالی ہے. فرقہ واری کو مٹانے کی کوشش کی ہے، شراب کم کرنے کے لئے طرح طرح کے جتن کئے ہیں، اچھوت پنے کی جڑ میں مٹھا ڈالکر ہمیشہ کے لئے مٹانے کی کوشش کی ہے. ہندستان بھر میں ایک سیدھی سادی بولی پھیلانے کی طرف قدم اٹھائے ہیں اور بھی طرح طرح کی تکلیفیں مٹانے کے سوچ وچار کئے ہیں. پر کچھ لوگوں کی نظر میں یہ تین برس کی بچی جوان معلوم ہوتی ہے اور وہ اسی وجہ سے اس پر طرح طرح کی کمیوں کے الزام لگاتے ہیں اور یہ بچی ان الزاموں

को ऐसे ही सुन लेती है मानो, पचीस बरस की गृहस्थिनी ही हो. और चट उन कमियों के दूर करने में अपने छोटे छोटे हाथ लेकर जुट जाती है. जब यह असफल होती है तो भारत मां इसकी बेजा हिम्मत पर हंसती है और खोट निकालने वाले इसे बदनाम करके आंसुओं से रुलाने की कोशिश करते हैं. पर यह उस तरफ नजर भी नहीं डालती और अपने काम में जुटी रहती है.

अब यह चौथे बरस में पाँव रखती है और हम भारत मां की ओर से इसे यह आशीर्वाद देते हैं कि यह नित नये कपड़े बदलने पर भी अपनी हिम्मत और अपनी आत्मा को अटल और कभी न बदलने वाली बनाये रखे. और राष्ट्रपिता की दी हुई देन को किसी अंश में भी बनाये रखे तो इसका आगे का रास्ता साफ रहेगा और यह दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करती हुई सब पड़ोसी मुल्कों को सुख पहुँचाती इस दुनिया के आकाश में चमकती रहेगी.

७—८—५०. भगवान दीन

दियासलाई और बारूद

राजा जी ने हाल ही में उत्तर कोरिया के दक्खिन कोरिया पर हमले के बारे में यह शब्द कहे हैं :—

"बारूद के ढेर पर दियासलाई फेंकते हुए देखकर भारत कैसे चुप बैठ सकता था."

हमने इसे समझने की बड़ी कोशिश की और जितनी तरह हम समझ पाये हमारी तसल्ली न हुई. एक बार हमने उत्तर कोरिया को

کو ایسے هی سن لیتی هے مانو پچیس برس کی گرهستنی هی هو . اور چٹ اُن کمیوں کے دور کرنے میں اپنے چھوٹے چھوٹے هاتھ لیکر جٹ جاتی هے . جب یہ اسپهل هوتی هے تو بهارت ماں اس کی بیجا همت پر هنستی هے اور کھوٹ نکالنے والے اسے بدنام کرکے آنسوؤں سے رلانے کی کوشش کرتے هیں . پر یہ اس طرف نظر بھی نهیں ڈالتی اور اپنے کام میں جٹی رهتی هے .

اب یہ چوتھے برس میں پاؤں رکھتی هے اور هم بهارت ماں کی اور سے اسے یہ آشیرواد دیتے هیں کہ یہ نت نئے کپڑے بدلنے پر بھی اپنی همت اور اپنی آتما کو اٹل اور کبھی نہ بدلنے والی بنائے رکھے اور راشٹر پتا کی دی هوئی دین کو کسی انش میں بھی بنائے رکھے تو اسکا آگے کا راستہ صاف رهیگا اور یہ دن دونی رات چوگنی ترقی کرتی هوئی سب پڑوسی ملکوں کو سکھ پهونچاتی اس دنیا کے آکاش میں چمکتی رهیگی .

۷-۸-۵۰ع بھگوان دین

دیاسلائی اور بارود

راجه جی نے حال هی میں اُتر کوریا کے دکھن کوریا پر حملے کے بارے میں یہ شبد کهے هیں :—

" بارود کے ڈھیر پر دیا سلائی پھینکتے هوئے دیکھکر بهارت کیسے چپ بیٹھ سکتا تھا ."

هم نے اسے سمجھنے کی بڑی کوشش کی اور جتنی طرح هم سمجھ پائے هماری تسلی نہ هوئی . ایک بار هم نے اُتر کوریا کو

दियासलाई समझा और दक्खिन कोरिया को बारूद. तब यह सवाल पैदा हुआ कि यह बारूद किसने जमा की. और जिसने जमा की वह ज्यादा क़सूरवार है या दियासलाई या दियासलाई फेंकने वाला. न बारूद होती, न दियासलाई फेंकी जाती. और अगर फेंकी भी जाती तो वह कोई नुकसान न करती.

दूसरी बार हमने दक्खिन कोरिया को दियासलाई समझा क्योंकि यह भी कहा जाता है कि उत्तर कोरिया के बड़े हमले से पहले दक्खिन कोरिया भी छोटे मोटे हमले करता रहा है पर जब हम दक्खिन कोरिया को दियासलाई मानते हैं तब राजा जी की बात बेमतलब हो जाती है. क्योंकि वह दक्खिन कोरिया पर कोई इलजाम लगाते मालूम नहीं होते, वह तो अपनी बात उस हमले के बारे में कह रहे हैं जो उत्तर कोरिया ने दक्खिन कोरिया पर किया और ज्यादती बता रहे हैं.

तीसरी बार हम यह मान कर चले कि उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया दोनों बारूद के थैले हैं. अब अगर बारूद का थैला बारूद पर गिरे तो न किसी के भागने की ज़रूरत है और न किसी के भड़कने की. इसलिये दियासलाई की खोज फिर हुई. और अब वह हो सकता था तो अमरीका. तब बेशक भारत को क्या दुनिया भर को दौड़ पड़ने की ज़रूरत पड़ जाती. पर राजा जी यह बात तो नहीं कह रहे. अमरीका को दियासलाई कहना तो उत्तर कोरिया का समर्थन करना है, जो काम भारत सरकार ने कभी नहीं किया.

दियासलाई समझने के लिये हमने रूस की तरफ़ नज़र डालने की कोशिश की. पर उसे तरफ़ हमारी नज़र जाते जाते रुक गई. क्योंकि

دیاسلائی سمجھا اور دکھن کوریا کو بارود . تب یہ سوال پیدا ہوا کہ یہ بارود کس نے جمع کی . اور جس نے جمع کی وہ زیادہ قصوروار ہے یا دیا سلائی یا دیا سلائی پھینکنے والا . نہ بارود ہوتی، نہ دیاسلائی پھینکی جاتی . اور اگر پھینکی بھی جاتی تو وہ کوئی نقصان نہ کرتی .

دوسری بار ہم نے دکھن کوریا کو دیا سلائی سمجھا کیونکہ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اُتر کوریا کے بڑے حملے سے پہلے دکھن کوریا بھی چھوٹے موٹے حملے کرتا رہا ہے پر جب ہم دکھن کوریا کو دیاسلائی مانتے ہیں تب راجہ جی کی بات بے مطلب ہوجاتی ہے . کیونکہ وہ دکھن کوریا پر کوئی الزام لگاتے معلوم نہیں ہوتے. وہ تو اپنی بات اُس حملے کے بارے میں کہہ رہے ہیں جو اُتر کوریا نے دکھن کوریا پر کیا اور زیادتی بتا رہے ہیں .

تیسری بار ہم یہ مان کر چلے کہ اُتر کوریا اور دکھن کوریا دونوں بارود کے تھیلے ہیں . اب اگر بارود کا تھیلا بارود پر گرے تو نہ کسی کے بھاگنے کی ضرورت ہے اور نہ کسی کے بھڑکنے کی . اس لئے دیاسلائی کی کھوج پھر ہوئی . اور اب وہ ہو سکتا تھا تو امریکہ . تب بیشک بھارت کو کیا دنیا بھر کو دوڑ پڑنے کی ضرورت پڑجاتی . پر راجہ جی یہ بات تو نہیں کہہ رہے . امریکہ کو دیاسلائی کہنا تو اُتر کوریا کا سمرتھن کرنا ہے ' جو کام بھارت سرکار نے کبھی نہیں کیا .

دیاسلائی سمجھنے کے لئے ہم نے روس کی طرف نظر ڈالنے کی کوشش کی . پر اُس طرف ہماری نظر جاتے جاتے رک گئی . کیونکہ

अभी तक उन अमरीकियों ने भी, जो कम्युनिज्म को खुले खुले बदनाम कर रहे हैं, यह नहीं कहा कि रूस खुले या छिपे उत्तर कोरिया की फ़ौजों से मदद कर रहा है. जब अमरीकी ही उसको दियासलाई नहीं कहते तो राजा जी उसको दियासलाई क्यों कहने लगे ? इसलिये हम इस नतीजे पर अभी तक नहीं पहुँच पाये कि राजा जी किसको दियासलाई और किसको बारूद कह रहे हैं.

अगर हम बहस के लिये उत्तर कोरिया को 'मेनसल' और दक्खिन कोरिया को 'पोटाश' मान लें और दक्खिन कोरिया में बसने वाले अमरीकियों को कंकरी मान लें, तब भी सिर्फ़ पटाखा बनता है. विस्फोट और धड़ाके के लिये फिर भी हथौड़े की जरूरत पड़ती है और वह हथौड़ा हमें सिवाय अमरीका के और कोई दिखाई नहीं पड़ता.

कोरिया से पहले चीन में इससे बड़े पैमाने पर घरेलू लड़ाई हो चुकी है. पर उस समय किसी को बारूद के थैलों पर दियासलाई फेंकने की बात नहीं सूझी और न बारूद के थैलों की कल्पना ही किसी के सिर में आई. फिर आज कोरिया की छोटी सी लड़ाई क्यों बारूद के थैले और जलती हुई दियासलाई जँची ? क्या सिर्फ़ इसी वजह से कि कुछ लोगों ने कोरिया को दो मुल्कों में बँटा हुआ मान लिया है ? इस लिहाज से देखा जाय तो चीन भी उस दिन दो मुल्कों में बँट गया जब रूसी सरकार ने चीन की लाल सरकार को मान लिया. उसके बाद बरमा, भारत, बरतानिया कई मुल्कों ने मान लिया. चीन के दूसरे हिस्से को अमरीका और उसके दोस्त मुल्क बराबर अलग मुल्क मानते रहे. इस तरह तीन महीनों से

ابھی تک اُن امریکیوں نے بھی، جو کمیونزم کو کھلے کھلے بدنام کر رہے ھیں، یہ نہیں کہا کہ روس کھلے یا چھپے اُتر کوریا کی فوجوں سے مدد کر رہا ھے. جب امریکی ھی اُس کو دیاسلائی نہیں کہتے تو راجہ جی اُس کو دیاسلائی کیوں کہنے لگے ؟ اس لئے ھم اس نتیجے پر ابھی تک نہیں پہونچ پائے کہ راجہ جی کسکو دیاسلائی اور کسکو بارود کہہ رہے ھیں.

اگر ھم بحث کے لئے اُتر کوریا کو 'مینسل' اور دکھن کوریا کو 'پوٹاس' مان لیں اور دکھن کوریا میں بسنے والے امریکیوں کو کنکری مان لیں، تب بھی صرف پٹاخا بنتا ھے. وسپھوٹ اور دھماکے کے لئے پھر بھی ھتھوڑے کی ضرورت ہوتی ھے اور وہ ھتھوڑا ھمیں سوائے امریکہ کے اور کوئی دکھائی نہیں دیتا.

کوریا سے پہلے چین میں اس سے بڑے پیمانے پر گھریلو لڑائی ھو چکی ھے. پر اُس سمے کسیکو بارود کے تھیلوں پر دیاسلائی پھینکنے کی بات نہیں سوجھی اور نہ بارود کے تھیلوں کی کلپنا ھی کسی کے سر میں آئی. پھر آج کوریا کی چھوٹی سی لڑائی کیوں بارود کے تھیلے اور جلتی ہوئی دیاسلائی جنچی ؟ کیا صرف اسی وجہ سے کہ کچھ لوگوں نے کوریا کو دو ملکوں میں بٹا ھوا مان لیا ھے ؟ اس لحاظ سے دیکھا جائے تو چین بھی اُسدن دو ملکوں میں بٹ گیا جب روسی سرکار نے چین کی لال سرکار کو مان لیا. اُس کے بعد برما، بھارت، برطانیہ کئی ملکوں نے مان لیا. چین کے دوسرے حصے کو امریکہ اور اُس کے دوست ملک

मुल्कों में बँटा हुआ आपस में लड़ता रहा. पर किसी ने उस वक़्त न एक का दूसरे पर हमला माना न दियासलाई फेंकना माना और न कोई उस तरफ़ दौड़ा. फिर आज कोरिया के लिये ही यह बारूद और दियासलाई से तुलना कैसी ?

हमारे साथी और हमारे पढ़ने वाले हमारी मदद करें और हमें बतायें कि राजा जी किसको दियासलाई और किसको बारूद कहते हैं और कौन क्यों दियासलाई फेंकने वाला है ?

७—८—५०.

भगवान दीन

ملکوں میں بٹا ہوا آپس میں لڑتا رہا. پر کسی نے اس وقت نہ ایک دوسرے پر حملہ مانا نہ دیاسلائی پھینکنا مانا اور نہ کوئی اس طرف دوڑا. پھر آج کوریا کے لئے ہی یہ بارود اور دیا سلائی سے تلنا کیسی ؟

ہمارے ساتھی اور ہمارے پڑھنے والے ہماری مدد کریں اور ہمیں بتائیں کہ راجہ جی کسکو دیاسلائی اور کسکو بارود کہتے ہیں اور کون کیوں دیاسلائی پھینکنے والا ہے ؟

۷-۸-۵۰ء

بھگوان دین

हिन्द के विधान

की

अंगरेजी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

जिसमें

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके
लग भग चौदह सौ खास खास अंगरेजी
शब्दों के लिए आसान हिन्दुस्तानी
शब्द महात्मा भगवान दीन
और कुछ दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं.

शुरू में 'दो शब्द' लिखे हैं—काका कालेलकर,
श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मो० सत्य नारायण
और पंडित सुन्दर लाल ने.

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने.

क़ीमत दो रुपे.

[नोट—बेचने वालों को या कम से कम दस कापी खरीदने वालों को ३३ फीसदी कमीशन दिया जायगा.]

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

ہند کے ودھان

کی

انگریزی ہندستانی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

جس میں ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اس کے
لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی
شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد
مہاتما بھگوان دین اور کچھ دوسرے
ودوانوں نے سجھائے ہیں،

شروع میں 'دو شبد' لکھے ہیں—کاکا کالیلکر، شریمتی
رامیشوری نہرو، شری م . ستیہ نارائن
اور پنڈت سندر لال نے .

نکالی ہے—ہندستانی پرچار سبھا وردھا نے .

قیمت ۲ روپے

[نوٹ — بیچنے والوں کو یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

नया हिन्द

نیا ہند

सितम्बर सन् १९५०
दस आना

ستمبر سنہ ۱۹۵۰ع
دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—
ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

सितम्बर १९५०

क्या किस से	सफ़ा
१—समय की पुकार (कविता)—भाई मुज़फ़्फ़र शाहजहाँपुरी	१९७
२—सत्याग्रह की ज़रूरत—भाई सुरेश राम भाई	२००
३—जन्नत में खून और आग—भाई अब्दुल हलीम अन्सारी	२०६
४—एशिया की आज़ादी और भारत—भाई ए० हुसैन ...	२१९
५—आज़ादी के बाद—भाई श्रीकृष्णदास	२३६
६—एटम-मन्थन (मथना)—भाई जगदीश एम० एस-सी०	२४४
७—भारत का विधान—सुन्दरलाल	२५३
८—तोता (कहानी)—भाई भैरव प्रसाद गुप्त ...	२६४
९—बच्चों की दुनिया—एडीटर, प्रेम भाई ...	२६९
१०—हमारी राय—अयोध्या के मुसलमान—सुन्दरलाल सर डिक्सन और कशमीर—सुन्दरलाल, हिरोशिमा में एटम बम के नतीजे—सुन्दरलाल ...	२७३

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
१२५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद .

ہندستانی کلچر سوسایٹی کا پرچا

ایڈیٹر —
تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

ستمبر ۱۹۵۰

کیا کس سے	صفحہ
۱—سمے کی پکار (کویتا)—بھائی مظفر شاہجہانپوری	۱۹۷
۲—ستیا گرہ کی ضرورت—بھائی سریش رام بھائی ...	۲۰۰
۳—جنت میں خون اور آگ—بھائی عبدالحلیم انصاری	۲۰۶
۴—ایشیا کی آزادی اور بھارت—بھائی اے . حسین ...	۲۱۹
۵—آزادی کے بعد—بھائی شری کرشن داس ...	۲۳۶
۶—ایٹم منتھن (متھنا) — بھائی جگدیش، ایم . ایس سی	۲۴۴
۷—بھارت کا ودھان—سندر لال ...	۲۵۳
۸—طوطا (کہانی)—بھائی بھیرو پرساد گپت ...	۲۶۴
۹—بچوں کی دنیا—ایڈیٹر - پریم بھائی ...	۲۶۹
۱۰—ہماری راے — ایودھیا کے مسلمان — سندر لال، سر ڈکسن اور کشمیر—سندر لال، ہیروشیما میں ایٹم بم کے نتیجے—سندر لال... ...	۲۷۳

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
' نیا ہند '
۱۲۵، مٹھی گنج الہ آباد .

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ९ | सितम्बर सन '५० | नम्बर ३

جلد ۹ | ستمبر سن ۵۰ | نمبر ۳

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

समय की पुकार

(भाई मुजफ्फर शाहजहाँपुरी)

कर न आराम अरे गाफिल है बहुत दूर अभी,
रास्ता मिल गया मंजिल है बहुत दूर अभी.
नाव को रोक न साहिल है बहुत दूर अभी,
अपने क़ाबू में हर एक मौज को लाना है अभी.
देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

سمے کی پکار

(بھائی مظفر شاہجہانپوری)

کر نہ آرام ارے غافل ہے بہت دور ابھی،
راستہ مل گیا منزل ہے بہت دور ابھی۔
ناؤ کو روک نہ ساحل ہے بہت دور ابھی،
اپنے قابو میں ہر اک موج کو لانا ہے ابھی۔
دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ہے ابھی۔

चोर बाज़ारों ने फिर जन्म दिये भूटे काल,
जाग उठा फिर कई सूबों में वह भूका बंगाल.
दे गई मात हकूमत को वह सरमाये की चाल,
ऐसी हर चाल को दुनिया से मिटाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

चोर बाजारी की बीमारी का करना है इलाज,
चाटे जाती है जो दीमक की तरह अपना समाज.
हमको अब जड़ से मिटाना है यह धनवानों का राज,
भुकमरी रोग की बुनियाद को ढाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

कारख़ानों में यह हड़ताल का कारन क्या है ?
दाम चढ़ते हुए हर माल का कारन क्या है ?
आज जनता के बुरे हाल का कारन क्या है ?
जो भी कारन हो, उसे जड़ से मिटाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

बन्द करना है मिलावट का यह काला व्योपार,
नक़ली घी तेल से भी शुद्ध है करना बाज़ार.
दिन ब दिन क़ौम हुई जाती है अपनी बीमार,
देश के बच्चों को बलवान बनाना है अभी.

देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

چور بازاروں نے پھر جنم دئے جھوٹے کال،
جاگ اٹھا پھر کئی صوبوں میں وہ بھوکا بنگال.
دے گئی مات حکومت کو وہ سرمائے کی چال،
ایسی ہر چال کو دنیا سے مٹانا ہے ابھی.

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ہے ابھی.

چور بازاری کی بیماری کا کرنا ہے علاج،
چاٹے جاتی ہے جو دیمک کی طرح اپنا سماج.
ہمکو اب جڑ سے مٹانا ہے یہ دھنوانوں کا راج،
بھکمری روگ کی بنیاد کو ڈھانا ہے ابھی.

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ہے ابھی.

کارخانوں میں یہ ہڑتال کا کارن کیا ہے؟
دام چڑھتے ہوئے ہر مال کا کارن کیا ہے؟
آج جنتا کے برے حال کا کارن کیا ہے؟
جو بھی کارن ہو، اسے جڑ سے مٹانا ہے ابھی.

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ہے ابھی.

بند کرنا ہے ملاوٹ کا یہ کالا بیوپار،
نقلی گھی تیل سے بھی شدھ ہے کرنا بازار.
دن بہ دن قوم ہوئی جاتی ہے اپنی بیمار،
دیش کے بچوں کو بلوان بنانا ہے ابھی.

دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ہے ابھی.

धर्म की आड़ में फिर जंग की है तैयारी,
राम के रूप में रावन की यह अगुआकारी.
फिरक़ेवारी की उगलने लगी फिर चिन्गारी,
इस सुलगती हुई भट्टी को बुझाना है अभी.
देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

रह के बेगुन हो तरक़्क़ी यह कुछ आसान नहीं,
धर्म पर जोर है दुनिया का मगर ज्ञान नहीं.
और साइन्स की शिक्षा की तरफ़ ध्यान नहीं,
इस महाशक्ति को भी अपना बनाना है अभी.
देश को अपने बहुत ऊँचा उठाना है अभी.

دھرم کی آڑ میں پھر جنگ کی ہے تیاری،
رام کے روپ میں راون کی یہ اگواکاری.
فرقہ واری کی اگلنے لگی پھر چنگاری،
اس سلگتی ہوئی بھٹی کو بجھانا ہے ابھی.
دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ہے ابھی.

رہ کے بے گن ہو ترقی یہ کچھ آسان نہیں،
دھرم پر زور ہے دنیا کا مگر گیان نہیں.
اور سائنس کی شکشا کی طرف دھیان نہیں،
اس مہا شکتی کو بھی اپنا بنانا ہے ابھی.
دیش کو اپنے بہت اونچا اٹھانا ہے ابھی.

सत्याग्रह की ज़रूरत

(भाई सुरेश राम भाई)

सितारे, सूरज, जमीन और चाँद ने अपनी गरदिश की एक मंजिल और पूरी की. १५ अगस्त दोबारा आई और चली गई. आज तीन साल हुए इसी १५ अगस्त को दुनिया के सामने देखते देखते अंगरेज़ी हकूमत हमारे मुल्क से चली गई और हम अपने घर के खुद मालिक बने. एक लम्बे अरसे के बाद हिन्दुस्तान की गिरती पड़ती, उठती चलती जिन्दगी में यह सुनहरा मौक़ा आया.

लेकिन हमारे जिगर के दो टुकड़े हो चुके थे. जिस लाहौर में रावी नदी के किनारे १९२९ के खत्म होते होते और १९३० के शुरू होते होते आधी रात के घंटे की टन टनाहट में हमने आज़ादी की क़सम ली थी उसी लाहौर में आज एक दूसरा झंडा लहलहा रहा है. इसके बाद १९३१ की मार्च में जिस कराची में हमने अपने बुनियादी हक़ों का एलान किया था वह कराची भी आज अपना नहीं है. बल्कि एक दूसरी हकूमत की राज धानी है. लेकिन दिल में जहाँ एक चोट है वहाँ यह भी संतोष है कि उन लाहौर और कराची में कम से कम उस विदेशी हकूमत का झंडा तो नहीं लहलहा रहा है जो उस वक़्त उन्हें ग़ुलामों की बस्ती बनाये हुए थी.

तीन साल गुज़र गये, मगर नहीं ऐसा मालूम होता है कि सदियाँ निकल गईं. बापू, जो हमारी लड़ाई के रहबर थे, हमारी नाव के

ستیا گرہ کی ضرورت

(بھائی سریش رام بھائی)

ستارے، سورج، زمین اور چاند نے اپنی گردش کی ایک منزل اور پوری کی ۔ ۱۵ اگست دوبارہ آئی اور چلی گئی ۔ آج تین سال ہوئے اسی ۱۵ اگست کو دنیا کے سامنے دیکھتے دیکھتے انگریزی حکومت ہمارے ملک سے چلی گئی ۔ اور ہم اپنے گھر کے خود مالک بنے ۔ ایک لمبے عرصے کے بعد ہندستان کی گرتی پڑتی، اٹھتی چلتی زندگی میں یہ سنہرا موقعہ آیا ۔

لیکن ہمارے جگر کے دو ٹکڑے ہو چکے تھے ۔ جس لاہور میں راوی ندی کے کنارے ۱۹۲۹ کے ختم ہوتے ہوتے اور ۱۹۳۰ کے شروع ہوتے ہوتے آدھی رات کے گھنٹے کی ٹن ٹناہٹ میں ہم نے آزادی کی قسم لی تھی اسی لاہور میں آج ایک دوسرا جھنڈا لہلہا رہا ہے ۔ اس کے بعد ۱۹۳۱ کے مارچ میں جس کراچی میں ہم نے اپنے بنیادی حقوں کا اعلان کیا تھا وہ کراچی بھی آج اپنا نہیں ہے ۔ بلکہ ایک دوسری حکومت کی راجدھانی ہے ۔ لیکن دل میں جہاں ایک چوٹ ہے وہاں یہ بھی سنتوش ہے کہ ان لاہور اور کراچی میں کم سے کم اس ودیشی حکومت کا جھنڈا تو نہیں لہلہا رہا ہے جو اسوقت انہیں غلاموں کی بستی بنائے ہوئے تھی ۔

تین سال گذر گئے، مگر نہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ صدیاں نکل گئیں ۔ باپو، جو ہماری لڑائی کے رہبر تھے، ہماری ناؤ کے

तारन हार थे, इस अरसे में हमें छोड़ कर चले गये और उनकी याद ही बाक़ी रह गई. इस वजह से बोझ और भी बढ़ गया. हकूमत करने का तजरबा वैसे भी नहीं था और न उसकी दुशवारियों या आसानियों और न उसकी मशीनरी के कल पुरजों की रविश से हमें वाक़फ़ियत थी. ख़ास कर हमारे हुक्कामी भाई बापू का नाम ले ले कर उसी सब्ज़ बाग़ के नक़शे दिखला रहे थे. जिस की चरचा वह पहले किया करते थे. इसलिये जो सोचा था, जो समझा था वह अमल में नहीं आ पाया. मुसीबतों का पहाड़ और नातजरबेकारी दोनों का इतना ज़बरदस्त दुखदायी नतीजा हुआ कि सारी हकूमत से जनता का जी भर गया.

जनता दिन पर दिन बेचैन होती गई. महँगाई से परेशान. पैसा होने पर भी चीज़ न मिलने से परेशान. वह दुखी हो गई और मामूली से मामूली चीज़ को पाने की ख़ातिर अपना ईमान तक उसे अकसर बेचना पड़ा या झूट का रास्ता अख़तियार करना पड़ा. इस तरह जहाँ जनता में हकूमत के ख़िलाफ़ बेएतबारी है, हकूमत के ख़तम हो जाने की चाह है, वहाँ साथ ही साथ एक बुज़दिली है, कमज़ोरी है और डर है. उसकी वजह से वह कुछ कर नहीं पाती. अपने घर पर बैठे बैठे दूसरों को बुरा कहने से तो कोई काम नहीं चलता. अपने को पाक और दूसरे को गंदा ख़याल करने से किसी की तरक़्क़ी नहीं होती. जिस ख़याल के पीछे अमल नहीं है वह धोका है और दग़ाबाज़ी है. तो क्या हम आज की जनता को निकम्मा और झूटा समझें ? क्या वही जनता जिसने अंगरेज़ी हकूमत जैसी बड़ी ताक़त का मटिया मेट कर दिया, वह इतनी गिर गई कि कुछ साल पुरानी

تارن ہار تھے، اس عرصہ میں ہمیں چھوڑ کر چلے گئے اور اُن کی یاد ہی باقی رہ گئی . اسوجہ سے بوجھ اور بھی بڑھ گیا . حکومت کرنے کا تجربہ ویسے بھی نہیں تھا اور نہ اسکی دشواریوں یا آسانیوں اور نہ اُس کی مشینری کے کل پرزوں کی روش سے ہمیں واقفیت تھی . خاص کر ہمارے حکامی بھائی باپو کا نام لے لے کر اُسی سبز باغ کے نقشے دکھلا رہے تھے، جس کی چرچا وہ پہلے کیا کرتے تھے . اسلئے جو سوچا تھا، جو سمجھا تھا وہ عمل میں نہیں آ پایا . مصیبتوں کا پہاڑ اور نا تجربہ کاری دونوں کا اتنا زبردست دکھدائی نتیجہ ہوا کہ ساری حکومت سے جنتا کا جی بھر گیا .

جنتا دن پر دن بے چین ہوتی گئی . مہنگائی سے پریشان . پیسہ ہونے پر بھی چیز نہ ملنے سے پریشان . وہ دکھی ہو گئی اور معمولی سے معمولی چیز کو پانے کی خاطر اپنا ایمان تک اُسے اکثر بیچنا پڑا یا جھوٹ کا راستہ اختیار کرنا پڑا . اس طرح جہاں جنتا میں حکومت کے خلاف بے اعتباری ہے، حکومت کے ختم ہو جانے کی چاہ ہے، وہاں ساتھ ہی ساتھ ایک بزدلی ہے، کمزوری ہے اور ڈر ہے . اُس کی وجہ سے وہ کچھ کر نہیں پاتی . اپنے گھر پر بیٹھے بیٹھے دوسروں کو برا کہنے سے تو کوئی کام نہیں چلتا . اپنے کو پاک اور دوسرے کو گندا خیال کرنے سے کسی کی ترقی نہیں ہوتی . جس خیال کے پیچھے عمل نہیں ہے وہ دھوکا ہے اور دغا بازی ہے . تو کیا ہم آج کی جنتا کو نکما اور جھوٹا سمجھیں ؟ کیا وہی جنتا جسنے انگریزی حکومت جیسی بڑی طاقت کو مٹیا میٹ کر دیا، وہ اتنا گر گئی کہ کچھ سال پرانی

अपनी ही हुकूमतको ठीक नहीं कर सकती. नहीं, ऐसी नहीं है. जनता न बद्तर है न बेहतर. जैसी थी वैसी हमेशा से रही है और वैसी आज भी है.

लेकिन आज की जनता में पहले की जनता के मुक़ाबले में एक फ़र्क़ है. मिसाल के तौर पर किसी छोटे से गाँव को लीजिये, जहाँ के लोग अमन चैन की जिन्दगी गुजार रहे हों. मान लीजिये कि कुछ अरसे के बाद बाहरी असर से या अन्दर की खराबियों से चार पाँच ऐसे जवान खड़े हो जाते हैं जो वहाँ की सारी शान्ति को बरबाद करने पर उतारू हैं. तब शुरू में इन पाँचों को कामयाबी मिलती चली जायगी और गाँव भर की अकसरियत सिर्फ़ हैरत में पड़कर इस बरबादी का तमाशा देखती रहेगी. अगर गाँव वाले उन चार पाँच की सिर्फ़ बुराई करते रहें और कोई खास क़दम नहीं उठायें तो उन गुन्डों की बनती चली जायगी और गाँव का जीवन हराम हो जायगा. लेकिन अगर गाँव की जनता हिम्मत के साथ मिल कर क़दम उठाये—यानी अगर जनताके सीधे सादे और अमन पसन्द लोग भी आपस में वैसा संगठन कर लें जैसा उन गुन्डों का आपस में है, तो देखते देखते गुन्डों की ताक़त हवा हो जायगी और गाँव में फिर से अमन क़ायम हो सकेगा.

एक दूसरी मिसाल और लीजिये. हिन्दुस्तान में सिर्फ़ कुछ लाख अंगरेज थे और हुकूमत कर रहे थे चालीस करोड़ इन्सानों पर. सच यह है कि इस हिसाब से एक आदमी इतनी भेड़ों पर भी क़ाबू नहीं रख सकता. तो क्या हम हिन्दुस्तान के रहने वाले भेड़ बकरियों से भी गये गुजरे थे ? हाँ थे, हम में कमी थी संगठन की. लेकिन जिस वक़्त

اپنی ہی حکومت کو ٹھیک نہیں کر سکتی . نہیں ' ایسا نہیں ہے . جنتا نہ بدتر ہے نہ بہتر . جیسی تھی ویسی ہمیشہ سے رہی ہے اور ویسی آج بھی ہے .

لیکن آج کی جنتا میں پہلے کی جنتا کے مقابلے میں ایک فرق ہے . مثال کے طور پر کسی چھوٹے سے گاؤں کو لیجئے ' جہاں کے لوگ امن چین کی زندگی گذار رہے ہوں . مان لیجئے کہ کچھ عرصے کے بعد باہری اثر سے یا اندر کی خرابیوں سے چار پانچ ایسے جوان کھڑے ہو جاتے ہیں جو وہاں کی ساری شانتی کو برباد کرنے پر اُتارو ہیں . تب شروع میں ان پانچوں کو کامیابی ملتی چلی جائیگی اور گاؤں بھر کی اکثریت صرف حیرت میں پڑ کر اس بربادی کا تماشا دیکھتی رہے گی . اگر گاؤں والے ان چار پانچ کی صرف برائی کرتے رہیں اور کوئی خاص قدم نہیں اُٹھائیں تو اُن گنڈوں کی بنتی چلی جائے گی اور گاؤں کا جیون حرام ہو جائیگا . لیکن اگر گاؤں کی جنتا ہمت کے ساتھ ملکر قدم اُٹھائے—یعنی اگر جنتا کے سیدھے سادے اور امن پسند لوگ بھی آپس میں ویسا سنگٹھن کر لیں جیسا اُن گنڈوں کا آپس میں ہے ' تو دیکھتے دیکھتے گنڈوں کی طاقت ہوا ہو جائیگی اور گاؤں میں پھر سے امن قائم ہو سکے گا .

ایک دوسری مثال اور لیجئے . ہندستان میں صرف کچھ لاکھ انگریز تھے اور حکومت کر رہے تھے چالیس کروڑ انسانوں پر . سچ یہ ہے کہ اِس حساب سے ایک آدمی اتنی بھیڑوں پر بھی قابو نہیں رکھ سکتا . تو کیا ہم ہندستان کے رہنے والے بھیڑ بکریوں سے بھی گئے گذرے تھے ؟ ہاں تھے ' ہم میں کمی تھی سنگٹھن کی . لیکن جس وقت

१९१९ की ६ अप्रैल को महात्मा गांधी की पुकार पर सारे मुल्क ने एक हो कर हड़ताल करदी उस वक़्त ही अंगरेज़ी हकूमत की जड़ें हिन्दुस्तान में हिल गईं. संगठन का नाम ताक़त है. चाहे वह नेक आदमियों का हो या बुरों का. यह दूसरी बात है कि बुरों की ताक़त बुरे काम में ख़र्च हो कर जल्दी ही ख़तम हो जाती है. नेक आदमियों की ताक़त नेक काम में लग कर दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है.

इस तरह मौजूदा हिन्दुस्तान में आज कमी है जनता के संगठन की. हमारे यहाँ हकूमत का एक संगठन है. उसकी एक आवाज़ है. उसका एक प्रोग्राम है जिसको चौराहे के सिपाही से लेकर नई दिल्ली में बैठा राजपति तक पूरा कर रहा है. लेकिन जनता की कोई आवाज़ नहीं है. न उसका कोई प्रोग्राम है. न कोई उसका अलमबरदार. जनता की मिली जुली ताक़त को ही बापू ने सत्याग्रह का नाम दिया था. उसी सत्याग्रह की ताक़त से उन्होंने दक्खिन अफ़रीक़ा में वह करशमा दिखाया था जो संसार के लिये अनहोनी चीज़ थी. और इसी सत्याग्रह की ताक़त से उन्होंने अंगरेज़ी हकूमत को हिन्दुस्तान से बाहर जाने को मजबूर कर दिया.

सवाल यह है कि इस सत्याग्रह की ताक़त कहाँ से आये. कौन हिन्दुस्तान के नौजवानों में यह दम फूंके और सत्याग्रही फ़ौज का लशकर आगे बढ़े. हम सब चूहे की तरह हो रहे हैं जो हकूमत रूपी बिल्ली से घबराये हुए हैं लेकिन गले में घंटी कौन बाँधे यही सवाल है.

जवाब कह देने का नहीं कर डालने का है, और इस रोग में इन लकीरों का लिखने वाला भी उतनी ही बुरी तरह फँसा हुआ है.

1919 کی ۶ اپریل کو مہاتما گاندھی کی پکار پر سارے ملک نے ایک ھو کر ھڑتال کر دی اس وقت ھی انگریزی حکومت کی جڑیں ھندستان میں ھل گئیں . سنگٹھن کا نام طاقت ھے . چاھے وہ نیک آدمیوں کا ھو یا بروں کا . یہ دوسری بات ھے کہ بروں کی طاقت برے کام میں خرچ ھو کر جلدی ھی ختم ھو جاتی ھے . نیک آدمیوں کی طاقت نیک کام میں لگ کر دن دونی رات چوگنی بڑھتی ھے .

اس طرح موجودہ ھندستان میں آج کمی ھے جنتا کے سنگٹھن کی . ھمارے یہاں حکومت کا ایک سنگٹھن ھے . اسکی ایک آواز ھے . اس کا ایک پروگرام ھے جس کو چوراھے کے سپاھی سے لیکر نئی دلی میں بیٹھا راج پتی تک پورا کر رھا ھے . لیکن جنتا کی کوئی آواز نہیں ھے . نہ اس کا کوئی پروگرام ھے . نہ کوئی اس کا علم بردار . جنتا کی ملی جلی طاقت کو ھی باپو نے ستیاگرہ کا نام دیا تھا . اسی ستیاگرہ کی طاقت سے انھوں نے دکھن افریقہ میں وہ کرشمہ دکھایا تھا جو سنسار کے لئے انہونی چیز تھی . اور اسی ستیا گرہ کی طاقت سے انھوں نے انگریزی حکومت کو ھندستان سے باھر جانے کو مجبور کر دیا .

سوال یہ ھے کہ اس ستیا گرہ کی طاقت کہاں سے آئے . کون ھندستان کے نوجوانوں میں یہ دم پھونکے اور ستیا گرھی فوج کا لشکر آگے بڑھے . ھم سب چوھے کے طرح ھو رھے ھیں جو حکومت روپی بلی سے گھبرائے ھوئے ھیں لیکن گلے میں گھنٹی کون باندھے یہی سوال ھے .

جواب کہدینے کا نہیں کر ڈالنے کا ھے ' اور اس روگ میں ان لکیروں کا لکھنے والا بھی اتنی ھی بری طرح پھنسا ھوا ھے .

जितना कि कोई दूसरा. इसलिये यह सवाल यहीं खतम हो जाता है. और मालिक से यही दुआ करने, को मन करता है कि हम में इतनी ताक़त दे कि हम अपने अन्दर के रोग़ को निकाल सकें और अपना मक़सद हासिल कर सकें.

जैसा हमने अभी कहा इस सवाल में हम नहीं जा सकते कि सत्याग्रह कब और कैसे किया जाये. लेकिन सत्याग्रह का प्रोग्राम क्या है, इस पर ज़रूर रोशनी डाली जा सकती है. हमारा अनजाना मुखिया हमें क़दम बढ़ाने का हुक्म जब भी दे हमें उसकी परवाह नहीं. लेकिन हम एक काम ज़रूर कर सकते हैं, वह यह कि हम अपनी अपनी जगह पर अपने अपने काम में अपने को इस सत्याग्रही फ़ौज का सिपाही मान लें.

ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने को सिपाही मान लें और किसी बात की न फ़िकर करें न परेशान हों. हम यह ख़याल छोड़ दें कि हिन्दुस्तान का क्या होगा या दुनिया किधर जायगी. हम अपनी अपनी जगह पर ज़मीन के उस छोटे से टुकड़े को जो हमें भगवान ने दिया है सुन्दर और उपजाऊ बना लें. अपने हाथ में इस वक़्त जो काम करने को है—चाहे वह सरकारी दफ़्तर का हो, चाहे किसी पूंजी पति के कारख़ाने का हो, चाहे किसी अदालत या स्कूल का, थाना या तहसील का, ब्योपार या मज़दूरी का, तीमारदारी या मेहमानदारी का—जो काम भी हो उसे लगन के साथ करें. उसे पूरा करने में कोई कसर उठा न रखें. उसे ईमानदारी से पूरा करके ही चैन लें—बस इतना कर लेने से हमारी मन्शा पूरी हो गई. सत्याग्रही फ़ौज

جتنا کہ کوئی دوسرا ۔ اسلئے یہ سوال یہیں ختم ہوجاتا ہے ۔ اور مالک سے یہی دعا کرنے کو من کرتا ہے کہ ہم میں اتنی طاقت دے کہ ہم اپنے اندر کے روگ کو نکال سکیں اور اپنا مقصد حاصل کر سکیں ۔

جیسا ہم نے ابھی کہا اس سوال میں ہم نہیں جا سکتے کہ ستیا گرہ کب اور کیسے کیا جائے ۔ لیکن ستیا گرہ کا پروگرام کیا ہے، اس پر ضرور روشنی ڈالی جا سکتی ہے ۔ ہمارا انجانا مکھیا ہمیں قدم بڑھانے کا حکم جب بھی دے ہمیں اسکی پرواہ نہیں ۔ لیکن ہم ایک کام ضرور کر سکتے ہیں، وہ یہ کہ ہم اپنی اپنی جگہ پر اپنے اپنے کام میں اپنے کو اس ستیا گرہی فوج کا سپاہی مان لیں ۔

ضرورت اس بات کی ہے کہ ہم اپنے کو سپاہی مان لیں اور کسی بات کی نہ فکر کریں نہ پریشان ہوں ۔ ہم یہ خیال چھوڑ دیں کہ ہندستان کا کیا ہوگا یا دنیا کدھر جائیگی ۔ ہم اپنی اپنی جگہ پر زمین کے اس چھوٹے سے ٹکڑے کو جو ہمیں بھگوان نے دیا ہے سندر اور اپجاؤ بنا لیں ۔ اپنے ہاتھ میں اس وقت جو کام کرنے کو ہے—چاہے وہ سرکاری دفتر کا ہو، چاہے کسی پونجی پتی کے کارخانے کا ہو، چاہے کسی عدالت یا اسکول کا، تھانہ یا تحصیل کا، بیوپار یا مزدوری کا، تیمارداری یا مہمانداری کا— جو کام بھی ہو اُسے لگن کے ساتھ کریں ۔ اُسے پورا کرنے میں کوئی کسر اُٹھا نہ رکھیں ۔ اُسے ایمانداری سے پورا کرکے ہی چین لیں—بس اتنا ... ہماری منشا پوری ہو گئی ۔ ستیا گرہی فوج

के सिपाही होने के नाते हमारा फ़र्ज़ अदा हो गया. और बात की बात में हम देखेंगे कि मुल्क की शकल क्या से क्या हो गई. हमारे बापू की ही यह सलाह है. यह उन्हीं का बताया हुआ प्रोग्राम है. आज से चालीस साल पहले से ज्यादा अरसा हुआ उन्हों ने एक ख़त में एक भाई को लिखा था—"सारे हिन्दुस्तान के उद्धार का बोझ बिला कारन सर पर मत लो. अपना ख़ुद का ही उद्धार करो. इतना ही बोझ काफ़ी है. सब कुछ अपने पर ही लागू करना चाहिये. हम ख़ुद ही हिन्दुस्तान हैं—बस यही मानने में आत्मा का बड़प्पन है. हमारा उद्धार ही हिन्दुस्तान का उद्धार है. बाक़ी सब बेकार है, ढोंग है."

आइये ! इस प्रोग्राम को लेकर सत्याग्रही फ़ौज में भरती होवें—फिर स्वराज का सुराज बनालें और हिन्दुस्तान में राम राज क़ायम हो जायेगा.

"अहिन्सक ढंग के हिन्दुस्तान में अपराध होंगे लेकिन अपराधी न होंगे. उन्हें सज़ा नहीं दी जायगी. किसी भी मरज़ की तरह अपराध भी एक मरज़ या बीमारी है और मौजूदा समाजी व्यवस्था का फल है. इस लिये हत्या वग़ैरा सभी तरह के अपराधों को बीमारी समझा जायगा और उनका वैसा ही इलाज भी होगा. यह बात दूसरी है कि हिन्दुस्तान कभी ऐसा बनेगा भी या नहीं ?"

— महात्मा गांधी

کے سپاہی ہونے کے ناتے ہمارا فرض ادا ہو گیا . اور بات کی بات میں ہم دیکھیں گے کہ ملک کی شکل کیا سے کیا ہو گئی . ہمارے باپو کی ہی یہ صلاح ہے . یہ انہیں کا بتایا ہوا پروگرام ہے . آج سے چالیس سال پہلے سے زیادہ عرصہ ہوا انہوں نے ایک خط میں ایک بھائی کو لکھا تھا— " سارے ہندستان کے ادھار کا بوجھ بلا کارن سر پر مت لو . اپنا خود کا ہی ادھار کرو . اتنا ہی بوجھ کافی ہے . سب کچھ اپنے پر ہی لاگو کرنا چاہئے . ہم خود ہی ہندستان ہیں— بس یہی ماننے میں آتما کا بڑپن ہے . ہمارا ادھار ہی ہندستان کا ادھار ہے . باقی سب بیکار ہے ' ڈھونگ ہے ."

آئیے ! اس پروگرام کو لیکر ستیا گرہی فوج میں بھرتی ہو ویں— پھر سوراج کا سوراج بنالیں اور ہندستان میں رام راج قائم ہو جائیگا .

" اہنسک ڈھنگ کے ہندستان میں اپرادھ ہونگے لیکن اپرادھی نہ ہونگے . انہیں سزا نہیں دی جائیگی . کسی بھی مرض کی طرح اپرادھ بھی ایک مرض یا بیماری ہے اور موجودہ سماجی ویوستھا کا پھل ہے . اس لئے ہتیا وغیرہ سبھی طرح کے اپرادھوں کو بیماری سمجھا جائیگا اور ان کا ویسا ہی علاج بھی ہوگا . یہ بات دوسری ہے کہ ہندستان کبھی ایسا بنے گا بھی یا نہیں ؟"

— مہاتما گاندھی

जन्नत में ख़ून और आग

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

कश्मीर के नीचे बादल, ऊँचे आसमान

कश्मीर में हिन्दू कम, अधिक मुसलमान

कश्मीर एक रियासत :

दो वज़ीरों की जो बिसाते सियासत

कश्मीर एक दिलकश वायु मंडल और दिलचस्प स्थान !

कश्मीर रंगों और रागों का एक हसीन ख़ित्ता है. और पंडित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में—

" कश्मीर रंगों और रागों की जान है "

कश्मीर क़ुदरत की क़लमकारियों का ख़ूबसूरत निगारख़ाना है. जिसका नाम ही आर्टिस्ट की रूह को गुदगुदाता है. और फ़ौरन क़ुदरत और आर्टिस्ट के सम्बन्ध को ज़ाहिर करके उसके रिशते को जोड़ता है. उसी सम्बन्ध और रिशते से कश्मीर के साथ आर्टिस्ट को ख़ास लगाव और दिलचस्पी है.

कश्मीर की झीलों पर रंगीन रंगीन कश्तियाँ और पीछे उनके सफ़ेद सफ़ेद पहाड़ियाँ

कश्मीर के मीठे मीठे मेवे और मीठे मीठे चेहरे

अनार और चनार के बाग़

جنت میں خون اور آگ

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

کشمیر کے نیچے بادل، اونچے آسمان

کشمیر میں ہندو کم، ادھک مسلمان

کشمیر ایک ریاست :

دو وزیروں کی جو بساط سیاست

کشمیر ایک دلکش وایو منڈل اور دل چسپ استھان !

کشمیر رنگوں اور راگوں کا ایک حسین خطہ ہے . اور پنڈت جواہر لال نہرو کے شبدوں میں —

''کشمیر رنگوں اور راگوں کی جان ہے . ''

کشمیر قدرت کی قلمکاریوں کا خوبصورت نگارخانہ ہے . جس کا نام ہی آرٹسٹ کی روح کو گدگداتا ہے . اور فوراً قدرت اور آرٹسٹ کے سمبندھ کو ظاہر کرکے اس کے رشتے کو جوڑتا ہے . اسی سمبندھ اور رشتے سے کشمیر کے ساتھ آرٹسٹ کو خاص لگاؤ اور دلچسپی ہے .

کشمیر کی جھیلوں پر رنگین رنگین کشتیاں اور پیچھے ان کے سفید سفید پہاڑیاں

کشمیر کے میٹھے میٹھے میوے اور میٹھے میٹھے چہرے

انار اور چنار کے باغ

अंगूर की टट्टियां और शराब की नहरें

कश्मीर की रूह परवर फ़िज़ा और अमृत भरी हवा.

कश्मीर की अनार जैसी बेटियाँ और ज़ाफ़रान की खेतियाँ.

यह सब की सब कश्मीर की दिलचस्पियाँ, और खूबसूरतियाँ फ़ितरत के परस्तारों और प्रकृति के पुजारियों के लिये रूहानी सामान अपने अन्दर रखता है. कुद्रत की यह आत्मिक यादगारें, आसभरी आत्माओं के लिये उसके फ़ैज़ और दया के चश्मे हैं. जिनसे रूहों के सूखे सूखे बासन शान्ति की शबनम से लबरेज़ होते हैं. जिनकी शादाबी से दिल और दिमाग़ बाग़ बाग़ होते हैं.

कश्मीर वह जगह है जिसके अन्दर हुस्न ही हुस्न, शबाब ही शबाब, शराब ही शराब और जिन्दगी ही जिन्दगी है. इसीलिये कश्मीर हिन्दुस्तान की जन्नत कहलाती है बल्कि दुनिया की जन्नत. यानी भूगोल का स्वर्ग—किसी फ़ारसी कवि ने कहा है—

❀ अगर फ़िरदौस बर रूये ज़मीन अस्त

हमीन अस्तो हमीन अस्तो हमीन अस्त

कश्मीरी बाग़ों के फूल फल गोया जन्नती मेवे हैं. कश्मीर के क़ुद्रती बाग़ाचों और हसीन वादियों में लहराती फिरने वाली देवियाँ उस भूमि जन्नत की रौनक़ और आबादियाँ हैं यानी हूरें.

जवान जवान और मोहनी मोहनी

हुस्न और जमाल से भरी हुई इनकी जिन्दगियाँ और शबाब के मेवों से लदी हुई उनकी जवानियां उस जन्नत की जीती जागती

❀ अगर दुनिया में कहीं जन्नत है तो वह यहीं है यहीं है यहीं है.

انگور کی ٹٹیاں اور شراب کی نہریں

کشمیر کی روح پرور فضا اور امرت بھری ھوا

کشمیر کی انار جیسی بیٹیاں اور زعفران کی کھیتیاں ۔

یہ سب کی سب کشمیر کی دلچسپیاں اور خوبصورتیاں فطرت کے پرستاروں اور پرکرتی کے پجاریوں کے لئے روحانی سامان اپنے اندر رکھتی ھیں ۔ قدرت کی یہ آتمک یادگاریں' آس بھری آتماؤں کے لئے اُس کے فیض اور دیا کے چشمے ھیں ۔ جن سے روحوں کے سوکھے سوکھے باسن شانتی کی شبنم سے لبریز ہوتے ھیں ۔ جن کی شادابی سے دل اور دماغ باغ باغ ہوتے ھیں ۔

کشمیر وہ جگہ ھے جس کے اندر حسن ھی حسن' شباب ھی شباب شراب ھی شراب اور زندگی ھی زندگی ھے ۔ اسی لئے کشمیر ھندستان کی جنت کہلاتی ھے بلکہ دنیا کی جنت ۔ یعنی بھوگول کا سورگ — کسی فارسی کوی نے کہا ھے —

* اگر فردوس بر روئے زمین است

ھمین است و ھمین است و ھمین است

کشمیری باغوں کے پھول پھل گویا جنتی میوے ھیں ۔ کشمیر کے قدرتی باغیچوں اور حسین وادیوں میں لہراتی پھرنے والی دیویاں اس بھومی جنت کی رونق اور آبادیاں ھیں یعنی حوریں ۔

جوان جوان اور موھنی موھنی

حسن اور جمال سے بھری ہوئی اُن کی زندگیاں اور شباب کے میووں سے لدی ہوئی اُن کی جوانیاں اس جنت کی جیتی جاگتی

* اگر دنیا میں کہیں جنت ھے تو وہ یہی ھے یہی ھے یہی ھے ۔

तसवीरें हैं, जिनके अन्दर मस्ती है, शबाब है.

डाक्टर एक़बाल जब कश्मीर के "निशात बाग़" में दाख़िल हुए तो बेसाख़्ता बोल उठे—

"शराबे, किताबे, रबाबे, निगारे" यानी "कश्मीर एक नशा है, कश्मीर एक किताब है, कश्मीर एक बाजा है, कश्मीर एक तसवीर है" गोया खड़े खड़े चार लफ़्ज़ों में कश्मीर पर एक किताब लिख डाली.

पंडित नेहरू जब कश्मीर की वादियों में घूमे फिरे तो उन्होंने भी अपने को भूल कर कह डाला—

"मैं इस वादी में इस तरह खोगया जैसे कोई शराब से सरशार हो" उस सुन्दर ज़मीन की दिलकशी और ख़ूबसूरती से असर लेकर और हुस्न पर गिरवीदा हो कर वह सुन्दरता और प्रकृति का दिलदादा आख़िर बोल ही उठा—

"सर ज़मीन कश्मीर की दिलकशी ने मुझे अपना गिरवीदा कर लिया."

कश्मीर नेचर की ख़ूबसूरतियों का मंडल है.

कश्मीर फ़ितरत की फ़ैयाज़ियों का भंडार है यानी रंगों और रागों का ख़ज़ाना!

नेचर की ख़ूबसूरतियों से लुत्फ़ न उठाना, फ़ितरत की फ़ैया-ज़ियों से हिस्सा न बटाना और उसके रागों और रंगों से ज़िन्दगी न पाना बेहिसी और बदरुचि की दलील है.

सुन्दरता और ख़ूबसूरती का मतवाला और प्रकृति से प्रेम रखने

تصویریں ہیں جن کے اندر مستی ہے، شباب ہے۔

ڈاکٹر اقبال جب کشمیر کے "نشاط باغ" میں داخل ہوئے تو بے ساختہ بول اٹھے --

"شرابے، کتابے، ربابے، نگارے" یعنی "کشمیر ایک نشہ ہے، کشمیر ایک کتاب ہے، کشمیر ایک باجا ہے، کشمیر ایک تصویر ہے" گویا کھڑے کھڑے چار لفظوں میں کشمیر پر ایک کتاب لکھ ڈالی۔

پنڈت نہرو جب کشمیر کی وادیوں میں گھومے پھرے تو انہوں نے بھی اپنے کو بھول کر کہہ ڈالا —

"میں اس وادی میں اس طرح کھو گیا جیسے کوئی شراب سے سرشار ہو" اس سندر زمین کی دل کشی اور خوبصورتی سے اثر لے کر اور حسن پر گرویدہ ہو کر وہ سندرتا اور پرکرتی کا دلدادہ آخر بول ہی اٹھا —

"سرزمین کشمیر کی دل کشی نے مجھے اپنا گرویدہ کرلیا"

کشمیر نیچر کی خوبصورتیوں کا منڈل ہے۔

کشمیر فطرت کی فیاضیوں کا بھنڈار ہے یعنی رنگوں اور راگوں کا خزانہ!

نیچر کی خوبصورتیوں سے لطف نہ اٹھانا، فطرت کی فیاضیوں سے حصہ نہ بٹانا اور اس کے راگوں اور رنگوں سے زندگی نہ پانا بےحسی اور بد رچی کی دلیل ہے۔

سندرتا اور خوبصورتی کا متوالا اور پرکرتی سے پریم رکھنے

वाला जब कश्मीर जन्नत नज़ीर की सैर का इरादा करता है और फ़ितरत के उस सुन्दर मन्दिर की पूजा को जब कोई श्रद्धावान यात्री जाता है तो शौक़ और अरमान का बड़ा क़ाफ़ला उसके साथ होता है. सम्राट अकबर ने जब कश्मीर का सफ़र किया तो उसका दरबारी कवि फ़ैज़ी बादशाह के साथ था. वह उस समय यह कहे बिना न रह सका—

*हज़ार क़ाफ़लये शौक़ मी कुनद शबगीर
कि बारे ऐश मी कशायद बख़ित्तये कश्मीर " फ़ैज़ी "

हिन्दुस्तान में आई हुई आज़ादी और बढ़ती हुई बरबादी जब कश्मीर की वादी वादी तक पहुंची तो वहाँ भी वही माद्दा फूट पड़ा जो नगर नगर का नास मार कर श्रीनगर तक पहुँचा था. कश्मीर की तक़दीर में जो दिन बदे हैं वह तो पूरे होकर ही रहेंगे. आज नहीं कल—मगर कहना यह ज़रूर पड़ता है कि तरह तरह के संकट उस पर जो पड़ रहे हैं अपने हाथों बुलाये हुए हैं. इसलिये इसका इलज़ाम क़ुदरत के ऊपर रखना या भगवान को इसका दोषी ठहराना ग़लत !

कश्मीर की जंग मूल में हिन्द के बँटवारे का नतीजा है. इसीलिये कश्मीर जंग के देवता का मेहमान खाना है. इसी कारन

* कश्मीर वह जगह है जहाँ अगर एक रात भी शौक़ के क़ाफ़ले का पड़ाव हो जाये तो वहाँ उसके लिये सुख.शान्ति के दरवाज़े खुल जाते हैं.

والا جب کشمیر جنت نظیر کی سیر کا ارادہ کرتا ہے اور فطرت کے اُس سندر مندر کی پوجا کو جب کوئی شردھاوان یاتری جاتا ہے تو شوق اور ارمان کا بڑا قافلہ اُس کے ساتھ ہوتا ہے. سمراٹ اکبر نے جب کشمیر کا سفر کیا تو اُس کا درباری کوی فیضی بادشاہ کے ساتھ تھا. وہ اُس سمے یہ کہے بنا نہ رہ سکا—

* ہزار قافلۂ شوق می کند شبگیر
کہ بار عیش می کشاید بہ خطۂ کشمیر "فیضی"

ہندستان میں آئی ہوئی آزادی اور بڑھتی ہوئی بربادی جب کشمیر کی وادی وادی تک پہونچی تو وہاں بھی وہی مادہ پھوٹ پڑا جو نگر نگر کا ناس مار کر سری نگر تک پہونچا تھا. کشمیر کی تقدیر میں جو دن بدے ہیں وہ تو پورے ہو کر ہی رہیں گے. آج نہیں کل — مگر کہنا یہ ضرور پڑتا ہے کہ طرح طرح کے سنکٹ اُس پر جو پڑ رہے ہیں اپنے ہاتھوں بلائے ہوئے ہیں. اس لئے اس کا الزام قدرت کے اوپر رکھنا یا بھگوان کو اس کا دوشی ٹھہرانا غلط !

کشمیر کی جنگ مول میں ہند کے بٹوارے کا نتیجہ ہے. اِسی لئے کشمیر جنگ کے دیوتا کا مہمان خانہ ہے. اِسی کارن

* کشمیر وہ جگہ ہے جہاں اگر ایک رات بھی شوق کے قافلے کا پڑاؤ ہو جائے تو وہاں اس کے لئے سکھ شانتی کے دروازے کھل جاتے ہیں.

कश्मीर अपनी सुन्दर जन्नत में आदम ख़ोर देवता को मेहमान ठहरा कर रोज़ रोज़ नये नये नौजवानों की भेंट देता रहा है और वह ख़ूनी देवता गरम गरम और ताज़ा ताज़ा ख़ून पीकर अपनी हविस और चाट बढ़ाता रहता है. जिससे पता चलता है कि उसकी ज़बान को हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी ख़ून का चसका लग गया है. गोया कि मिला जुला ख़ून पीकर उसको अधिक आनन्द मिल रहा है.

कितना दुख होता है कि आज यह जन्नत दोज़ख़ बनी हुई है. जहाँ अदावत की आग भड़क रही है. ख़ून के चश्मे उबल रहे हैं. कल तक इसकी हवा अमृत थी—और अब ? अब साँस लेते बदबू आती है.

यही वह कश्मीर है जहाँ बीमार तन्दुरुस्ती की ख़ातिर जाते थे. कमज़ोर और नाताक़त, ताक़त और शक्ति पाने जाते थे और ख़ुशी ख़ुशी वहाँ से नई ज़िन्दगी, नया जीवन, नई उमंगें और नये वलवले लेकर वापस आते थे. इसलिये कि वहाँ की हवा का असर क़ुदरती तौर पर बीमारों के लिये यह था—

एक आन में सेहत हो जो बरसों का हो बीमार

अब सारा कश्मीर बीमार है. सारे देश को रोग लगा है. मगर उसके पास इलाज नहीं जब कि दस हज़ार तपेदिक़ के मरीज़ * उसके अन्दर मौजूद हैं.

यही वह शहर है और सेहत का शहर,

---

* अख़बार 'मिलाप' देहली २५ जून सन् ५० की ख़बर के अनुसार.

کشمیر اپنی سندر جنت میں آدم خور دیوتا کو مہمان ٹھہرا کر روز روز نئے نئے نوجوانوں کی بھینٹ دیتا رہا ہے اور وہ خونی دیوتا گرم گرم اور تازہ تازہ خون پی کر اپنی ھوس اور چاٹ بڑھاتا رھتا ہے ۔ جس سے پتہ چلتا ہے کہ اسکی زبان کو ھندستانی اور پاکستانی خون کا چسکا لگ گیا ہے ۔ گویا کہ ملا جلا خون پی کر اسکو ادھک آنند مل رہا ہے ۔

کتنا دکھ ھوتا ہے کہ آج یہ جنت دوزخ بنی ھوئی ہے ۔ جہاں عداوت کی آگ بھڑک رھی ہے ۔ خون کے چشمے ابل رہے ھیں ۔ کل تک اس کی ھوا امرت تھی — اور اب ؟ اب سانس لیتے بدبو آتی ہے ۔

یہی وہ کشمیر ہے جہاں بیمار تندرستی کی خاطر جاتے تھے ۔ کمزور اور ناطاقت ، طاقت اور شکتی پانے جاتے تھے اور خوشی خوشی وھاں سے نئی زندگی ، نیا جیون ، نئی امنگیں اور نئے ولولے لیکر واپس آتے تھے ۔ اس لئے کہ وھاں کی ھوا کا اثر قدرتی طور پر بیماروں کے لئے یہ تھا —

اک آن میں صحت ہو جو برسوں کا ہو بیمار

اب سارا کشمیر بیمار ہے ۔ سارے دیش کو روگ لگا ہے ۔ مگر اُس کے پاس علاج نہیں جبکہ دس ھزار تپ دق کے مریض * اس کے اندر موجود ھیں ۔

یہی وہ شہر ہے اور صحت کا شہر '،

---

* اخبار ' ملاپ '، دھلی ۲۵ جون سن ۵۰' کی خبر کے انوسار

जहाँ मौत ज़िन्दगी पाने जाती थी—और जहाँ बीमारी सेहत लेने आती थी.

जहाँ देस देस से सैकड़ों मरीज़, अमीर ग़रीब, शफ़ा पाने आते थे और शफ़ा पाकर जाते थे.

जहाँ दुनिया के भाग भाग से शौक़ीन मिज़ाज साल के साल सैर तफ़रीह करने आते थे और ख़ुश ख़ुश वापस जाते थे.

यही कश्मीर जो पहले शान्ति का मुक़ाम था अब वहाँ संग्राम है.

यही कश्मीर जो पहले अमन शान्ति का स्थान था. अब वहाँ बद अमनी का सामान है.

यही श्रीनगर जो दुनिया की नज़र में शान्ति नगर था वही अब ख़ून ख़च्चर का घर है.

राजनीति का यह इन्क़लाब भी अजीब और आज़ादी की यह तरकीब भी ख़ूब !

इतनी जल्दी कश्मीर की फ़िज़ा बदल गई. फ़िज़ा का रंग बदल गया. हवा बदल गई. हवा का असर बदल गया

पच्छिम से जिसके पास अपनी शिकायत और रोग लेकर गोरे लोग आते थे अब यह अपनी शिकायत और रोग लेकर गोरे लोगों के पास है. उनके इलाज में है यानी—अन्तर राष्ट्री हस्पताल में है और उसके स्पेशल वार्ड में—जिसके द्वार पर मोटे मोटे शब्दों में लिखा हुआ है: ज़ख़्मी कश्मीर ! बीमार कश्मीर !! फ़रियादी कश्मीर !!!

जहाँ उसका ख़ून भी लिया जायगा और जहाँ उसका टैम्प्रेचर भी देखा जायगा—हम देख रहे हैं कि उसका मशरिक़ी ख़ून मग़रिबी

جہاں موت زندگی پانے جاتی تھی — اور جہاں بیماری صحت لینے آتی تھی .

جہاں دیس دیس سے سیکڑوں مریض ، امیر غریب ، شفا پانے آتے تھے اور شفا پاکر جاتے تھے .

جہاں دنیا کے بھاگ بھاگ سے شوقین مزاج سال کے سال سیر تفریح کرنے آتے تھے اور خوش خوش واپس جاتے تھے .

یہی کشمیر جو پہلے شانتی کا مقام تھا اب وہاں سنگرام ہے .

یہی کشمیر جو پہلے امن شانتی کا استھان تھا . اب وہاں بدامنی کا سامان ہے .

یہی سری نگر جو دنیا کی نظر میں شانتی نگر تھا . وہی اب خون خچر کا گھر ہے .

راجنیتی کا یہ انقلاب بھی عجیب اور آزادی کی یہ ترکیب بھی خوب !

اِتنی جلدی کشمیر کی فضا بدل گئی . فضا کا رنگ بدل گیا . ہوا بدل گئی . ہوا کا اثر بدل گیا .

پچھم سے جس کے پاس اپنی شکایت اور روگ لیکر گورے لوگ آتے تھے . اب یہ اپنی شکایت اور روگ لیکر گورے لوگوں کے پاس ہے اُن کے علاج میں ہے یعنی — انتر راشٹری ہسپتال میں ہے اور اس کے اسپیشل وارڈ میں — جس کے دوار پر موٹے موٹے شبدوں میں لکھا ہوا ہے : زخمی کشمیر ! بیمار کشمیر !! فریادی کشمیر !!!

جہاں اس کا خون بھی لیا جائیگا اور جہاں اس کا ٹمپریچر بھی دیکھا جائیگا — ہم دیکھ رہے ہیں کہ اس کا مشرقی خون مغربی

शीशों में झलक रहा है, जिसकी रिपोर्ट तैयार होकर नतीजा ब्रॉडकास्ट किया जायगा और आख़िरी फ़ैसला सुनाया जायगा. जिसके सुनने के लिये दुनिया के कान लगे हुए हैं.

दुखी और ज़ख़्मी कश्मीर की नाड़ी उसके क़रीब के तीमारदारों ने इलाज से तंग आकर पच्छिमी डाक्टरों के हाथ में थमा दी है—अब उसकी नाड़ी भी उनके हाथ में है और उसका ख़ून भी उनके क़ब्ज़े में.

हिन्दुस्तान के सियासी डाक्टरों ने ज़ख़्मी कश्मीर के नाज़ुक केस को "होप लेस" समझ कर जब जवाब दे दिया और कोई इलाज नहीं बन पड़ा तो अन्तर राष्ट्री हस्पताल में उस केस को दाख़िल करना पड़ा. लेकिन केस चूँकि नाज़ुक है और मरीज़ इस हाल में गया है कि ख़ून गिराता गिराता,—फिर भी इतनी आशा ज़रूर की जा सकती है कि वहाँ उसकी ड्रेसिंग अच्छी हो सकेगी—यानी ऊपरी लीपा पोती—क्योंकि पच्छिम मरहम पट्टी के काम में अधिक चतुर है—रहा मामला इलाज का,

हमारे ख़याल में पच्छिमी डाक्टरों की दवा दारू जन्नत वासियों के मिज़ाज को रास्त न आसके गी—भला अंगरेज़ी दवा जिसमें दारू की मिलावट हो, जन्नत में उसका क्या काम ?

स्वर्ग कश्मीर के भोले भाले वाशिन्दों ने अन्तरराष्ट्री सभा को मसीहा (ज़िन्दा करने वाला) जान कर नई जान की उससे आशा बाँध ली और उसे क़िस्मत बनाने वाला समझ कर उसकी बनाई क़िस्मत पर ईमान भी धर लिया—लेकिन नादान कश्मीर यह न समझा

شیشوں میں جھلک رہا ہے، جس کی رپورٹ تیار ہوکر نتیجہ براڈ کاسٹ کیا جائیگا اور آخری فیصلہ سنایا جائیگا. جس کے سننے کے لئے دنیا کے کان لگے ہوئے ہیں.

دکھی اور زخمی کشمیر کی ناڑی اُس کے قریب کے تیمارداروں نے علاج سے تنگ آکر پچھمی ڈاکٹروں کے ہاتھ میں تھمادی ہے — اب اس کی ناڑی بھی ان کے ہاتھ میں ہے اور اس کا خون بھی ان کے قبضہ میں.

ھندستان کے سیاسی ڈاکٹروں نے زخمی کشمیر کے نازک کیس کو "ھوپ لیس" سمجھکر جب جواب دے دیا اور کوئی علاج بن نہیں پڑا تو انتر راشٹری ھسپتال میں اس کیس کو داخل کرنا پڑا. لیکن کیس چونکہ نازک ہے اور مریض اس حال میں گیا ہے کہ خون گراتا گراتا — پھر بھی اتنی آشا ضرور کی جا سکتی ہے کہ وہاں اُس کی ڈریسنگ اچھی ہو سکے گی — یعنی اوپری لیپا پوتی — کیونکہ پچھم مرہم پٹی کے کام میں ادھک چتر ہے — رہا معاملہ علاج کا.

ھمارے خیال میں پچھمی ڈاکٹروں کی دوا دارو جنت واسیوں کے مزاج کو راست نہ آسکے گی — بھلا انگریزی دوا جس میں دارو کی ملاوٹ ہو، جنت میں اس کا کیا کام ؟

سورگ کشمیر کے بھولے بھالے باشندوں نے انتر راشٹری سبھا کو مسیحا (زندہ کرنے والا) جان کر نئی جان کی اُس سے آشا باندھ لی. اور اُسے قسمت بنانے والا سمجھکر اس کی بنائی قسمت پر ایمان بھی دھر لیا — لیکن نادان کشمیر یہ نہ سمجھا

और न कश्मीर का आला विचारवान, कि वहाँ जो कुछ है वह झूटे नगीनों की मीना कारी है—और,

यूनिवरसल मार्केट में किस बला की चोरबाजारी है, और किस ग़जब की लूट खसोट जारी है,

अन्तरराष्ट्री नामी मन्दिर के महान महान और लाल लाल देवताओं ने कश्मीर की भेंट को अपने सन्मुख क़बूल कर लिया—क़बूल करके दो मुल्कों पर डबल एहसान किया.

सोचने की बात यह है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिये वह आखिर क्या चीज़ है ?

वह है ग़ैरों की मोहताजी !

उसी मोहताजी का दूसरा नाम है ग़ुलामी !

ग़ुलामी या मोहताजी का मतलब :

ग़ैरों के फ़ैसलों के मोहताज और इन्साफ़ के मोहताज !

क्या यही है क़ौमी खुद दारी ?

और क्या यही है क़ौमी पासदारी ?

वही बरतानिया और उसके गुट वाले जिनको कल तक दुश्मन दुश्मन कह कर पुकारा, और जिनको ज़ालिम ज़ालिम कह कर ललकारा,

उन्हीं से बात बात में इन्साफ़ उन्हीं से फ़रियाद पे फ़रियाद और मदद की दरख्वास्त.

यह है कितनी शर्म वाली बात .

हिन्दुस्तान के लिये भी और पाकिस्तान के लिये भी !

اور نہ کشمیر کا اعلیٰ وچاروان، کہ وہاں جو کچھ ہے وہ جھوٹے نگینوں کی مینا کاری ہے — اور،

یونیورسل مارکیٹ میں کس بلا کی چور بازاری ہے. اور کس غضب کی لوٹ کھسوٹ جاری ہے.

انتر راشٹری نامی مندر کے مہان مہان اور لال لال دیوتاؤں نے کشمیر کی بھینٹ کو اپنے سنمکھ قبول کر لیا—قبول کرکے دو ملکوں پر ڈبل احسان کیا.

سوچنے کی بات یہ ہے کہ ہندستان اور پاکستان کے لئے وہ آخر کیا چیز ہے ؟

وہ ہے غیروں کی محتاجی !

اسی محتاجی کا دوسرا نام ہے غلامی !

غلامی یا محتاجی کا مطلب :

غیروں کے فیصلوں کے محتاج اور انصاف کے محتاج !

کیا یہی ہے قومی خود داری ؟

اور کیا یہی ہے قومی پاسداری ؟

وہی برطانیہ اور اس کے گٹ والے جن کو کل تک دشمن دشمن کہہ کر پکارا. اور جن کو ظالم ظالم کہہ کر للکارا.

انہیں سے بات بات میں انصاف

انہیں سے فریاد پہ فریاد اور مدد کی درخواست.

یہ ہے کتنی شرم والی بات.

ہندستان کے لئے بھی اور پاکستان کے لئے بھی !

कश्मीर में कितनी बार अन्तरराष्ट्री अमन कमीशन आये यानी पीस मेकर (Peace Maker) पर नतीजे में रहा सिफर !

कश्मीर में कमीशनों का आना अमन और इन्साफ का तो बहाना होता है. असल में तफ़रीह और मतलब से उनका आना जाना होता है. क़ौम के पैसे से, इस हीले से जन्नत की सैर भी हो जाती है. जन्नत के मेवे खाने को मिलते हैं और जन्नत की शरावें पीने को, हमारे ख़याल में इन खुद ग़रज़ और मतलब परस्त यात्रियों से कोई अच्छी आशा रखना क़ौमी ग़लत फ़हमी होगी.

क़ुदरत ने अपनी फ़ैयाज़ी से कश्मीर की वादी वादी को जो शादाबी बख़्शी है और जिन रंगीनियों और ख़ूबसूरतियों से उसे माला माल किया है.

अफ़सोस ! वहाँ का वासी उसे बरतना जानता ही नहीं. न वह यह जानता है कि कैसे उनसे लुत्फ़ उठाये, न वह यह समझता है कि कैसे उनको काम में लाये ?

कश्मीर की ज़मीन और आसमान

कश्मीर के बाग़ और मैदान

कश्मीर के रंगीन रंगीन दर्रे और हसीन हसीन परे.

इस फ़िरदौसी, वायुमंडल के दिलचस्प और रूह परवर नज़्ज़ारे हैं.

वह दर्रे वरदान हैं क़ुदरत के

वह परे मुजस्समे हैं मुहब्बत के

जिनके अन्दर पैग़ाम भी हैं इलहाम भी—लेकिन इन पैग़ामों और इलहामों को समझना इस देश के इन्सान का काम नहीं क्योंकि वह

کشمیر میں کتنی بار انتر راشٹری امن کمیشن آئے یعنی پیس میکر (Peace Maker) پر نتیجے میں رہا صفر !

کشمیر میں کمیشنوں کا آنا امن اور انصاف کا تو بہانہ ہوتا ہے . اصل میں تفریح اور مطلب سے اُن کا آنا جانا ہوتا ہے . قوم کے پیسے سے' اس حیلے سے جنت کی سیر بھی ہوجاتی ہے . جنت کے میوے کھانے کو ملتے ہیں اور جنت کی شرابیں پینے کو' ہمارے خیال میں اِن خود غرض اور مطلب پرست یاتریوں سے کوئی اچھی آشا رکھنا قومی غلط فہمی ہوگی .

قدرت نے اپنی فیاضی سے کشمیر کی وادی وادی کو جو شادابی بخشی ہے اور جن رنگینیوں اور خوبصورتیوں سے مالا مال کیا ہے .

افسوس ! وہاں کا واسی اُسے برتنا جانتا ہی نہیں . نہ وہ یہ جانتا ہے کہ کیسے اُن سے لطف اُٹھائے' نہ وہ یہ سمجھتا ہے کہ کیسے اُن کو کام میں لائے ؟

کشمیر کی زمین اور آسمان

کشمیر کے باغ اور میدان

کشمیر کے رنگین رنگین درے اور حسین حسین پرے .

اس فردوسی وایو منڈل کے دلچسپ اور روح پرور نظارے ہیں .

وہ درے وردان ہیں قدرت کے

وہ پرے مجسمے ہیں محبت کے

جن کے اندر پیغام بھی ہیں الہام بھی — لیکن اِن پیغاموں اور الہاموں کو سمجھنا اس دیش کے انسان کا کام نہیں کیونکہ وہ

उसके पैग़ामों को नहीं समझ रहा. इसी लिये उसने जन्नत की क़दर करना जाना ही नहीं.

जन्नत की नाक़दरी बड़ी हद तक जन्नत की हतक है.

वह चूँकि जन्नत को अभी तक समझा ही नहीं . और स्वर्ग की हक़ीक़त को उसने जाना ही नहीं . तबही तो वह अपने को स्वर्ग के लायक़ साबित नहीं कर रहा. और इसीलिये क़ुदरत ने उसके लिये देश भर में जहन्नुमी फ़िज़ा बनाये रखी है ताकि वह जहन्नुमी वायु मण्डल में रह कर जहन्नुमी ज़िन्दगी बसर करे. यानी आग और ख़ून से खेलता और जलता भुनता रहे—और शायद इसी कारन बहुत से उस जन्नत से अपना रहना सहना तर्क करके नरक आबाद कर चुके हैं—

पच्छिम वाला प्रकृति का प्रेमी होता है. वह जानता और समझता है कि फ़ितरत के नज़्ज़ारे और क़ुदरत के कारनामे किस क़दर अज़ीमुश्शान और अचरज भरे हैं. उनके अन्दर कितनी रंगीनियाँ हैं और उन रंगीनियों में कितनी रोशनियाँ—वह उन रंगीनियों से ज़िन्दगियों को सँवारता है और उन रोशनियों से तरक़्क़ी की नई नई राहें निकालता है.

वह सुन्दरता का पारखी है और सुन्दरता का पुजारी है इसलिये वह सुन्दरता की क़दर करना और उससे लुत्फ़ उठाना जानता है. इसी ज्ञान और सलाहियत के सबब उम्दा चीज़ों को बरतने का वह अच्छा सलीक़ा रखता है और बुरी चीज़ों को सुन्दर रूप देने के गुर जानता है. यही वजह है जहाँ वह रहता है अगर दोज़ख़ भी हो

اس کے پیغاموں کو نہیں سمجھ رہا . اسی لئے اس نے جنت کی قدر کرنا جانا ہی نہیں .

جنت کی ناقدری بڑی حد تک جنت کی ہتک ہے .

وہ چونکہ جنت کو ابھی تک سمجھا ہی نہیں . اور سورگ کی حقیقت کو اس نے جانا ہی نہیں . تب ہی تو وہ اپنے کو سورگ کے لائق ثابت نہیں کر رہا . اور اسی لئے قدرت نے اس کے لئے دیش بھر میں جہنمی فضا بنائے رکھی ہے تاکہ وہ جہنمی وایو منڈل میں رہ کر جہنمی زندگی بسر کرے . یعنی آگ اور خون سے کھیلتا اور جلتا بھنتا رہے — اور شاید اسی کارن بہت سے اس جنت سے اپنا رہنا سہنا ترک کرکے نرک آباد کر چکے ہیں —

پچھم والا پرکرتی کا پریمی ہوتا ہے . وہ جانتا اور سمجھتا ہے کہ فطرت کے نظارے اور قدرت کے کارنامے کس قدر عظیم الشان اور اچرج بھرے ہیں . ان کے اندر کتنی رنگینیاں ہیں اور ان رنگینیوں میں کتنی روشنیاں — وہ ان رنگینیوں سے زندگیوں کو سنوارتا ہے اور ان روشنیوں سے ترقی کی نئی نئی راہیں نکالتا ہے .

وہ سندرتا کا پارکھی ہے اور سندرتا کا پجاری ہے . اس لئے وہ سندرتا کی قدر کرنا اور اس سے لطف اٹھانا جانتا ہے . اسی گیان اور صلاحیت کے سبب عمدہ چیزوں کو برتنے کا وہ اچھا سلیقہ رکھتا ہے اور بری چیزوں کو سندر روپ دینے کے گر جانتا ہے . یہی وجہ ہے جہاں وہ رہتا ہے اگر دوزخ بھی ہو .

तो उसे अपने लिये जन्नत बना लेता है और जहाँ यह रहता है अगर जन्नत भी हो तो उसे अपने लिये दोज़ख़ बना लेता है.

कश्मीर की जंग, आज़ादी की पहली जंग है—

नेताओं का कहना है कि इसके अन्दर जनता की रक्षा है. देश का विकास है—हमने माना नेताओं का कहना, लेकिन दुख होता है यह देखकर कि ख़ूबसूरत कश्मीर का एक एक भाग अदावत की आग में जल रहा है. सारा देश तबाही में है.

जम्मू जंग का अड्डा बरसों बना रहा है. श्रीनगर ख़ून के आँसू अभी तक बहा रहा है. नौशहरा, नौशागा, बारा मूला और गिलगट इस जन्नत के यह सारे के सारे हिस्से जहन्नुम के ख़ित्ते मालूम पड़ रहे हैं. जहाँ आगें भड़क चुकी हैं और जहाँ ख़ून खदक चुके हैं.

ज़रा ग़ौर करने और ध्यान देने से मालूम पड़ता है कि इस क़ौमी और घरेलू लड़ाई में दो भावों का बड़ा अमल दख़ल रहा है, .

हकूमतों का शाहाना इन्तक़ाम और शाहाना इक़्तदार

यानी मुक़ाबले की बदला बदली और बराबरी की लाग डाट

इनहीं भावों के अमल और असर से कुछ ही समय आगे कश्मीर का सारा वायु मंडल आग और अंगारा हो रहा था. उसके ठंडे पहाड़ों से गर्म गर्म चश्मे निकले. उस की सफ़ेद सफ़ेद दरारों से लाल लाल दरिया उबले. कश्मीर का ठंडा आसमान तपा. जिस की गर्मी से उस भूमि का ज़र्रा ज़र्रा भाप ही भाप उगलने लग गया था और पाप ही पाप.

تو اسے اپنے لئے جنت بنا لیتا ھے اور جہاں یہ رھتا ھے اگر جنت بھی ھو تو اسے اپنے لئے دوزخ بنا لیتا ھے.

کشمیر کی جنگ، آزادی کی پہلی جنگ ھے —

نیتاؤں کا کہنا ھے کہ اس کے اندر جنتا کی رکشا ھے. دیش کا وکس ھے — ھم نے مانا نیتاؤں کا کہنا، لیکن دکھ ھوتا ھے یہ دیکھکر کہ خوبصورت کشمیر کا ایک ایک بھاگ عداوت کی آگ میں جل رھا ھے. سارا دیش تباھی میں ھے.

جموں جنگ کا اڈا برسوں بنا رھا ھے. شری نگر خون کے آنسو ابھی تک بہا رھا ھے. نوشہرہ، نوشاگا، بارا مولا اور گلگت اس جنت کے یہ سارے کے سارے حصے جہنم کے خطے معلوم پڑ رھے ھیں. جہاں آگیں بھڑک چکی ھیں اور خون جہاں کھدک چکے ھیں.

ذرا غور کرنے اور دھیان دینے سے معلوم ہوتا ھے کہ اس قومی اور گھریلو لڑائی میں دو بھاؤں کا بڑا عمل دخل رھا ھے.

حکومتوں کا شاھانہ انتقام اور شاھانہ اقتدار

یعنی مقابلہ کی بدلا بدلی اور برابری کی لاگ ڈانٹ

ان ھی بھاؤں کے عمل اور اثر سے کچھ ھی سمے آگے کشمیر کا سارا وایو منڈل آگ اور انگارا ھو رھا تھا. اس کے ٹھنڈے پہاڑوں سے گرم گرم چشمے نکلے. اس کی سفید سفید دراڑوں سے لال لال دریا ابلے. کشمیر کا ٹھنڈا آسمان تپا. جس کی گرمی سے اس بھومی کا ذرہ ذرہ بھاپ ھی بھاپ اگلنے لگ گیا تھا اور پاپ ھی پاپ.

कश्मीर के बाग़ और चमन मतभेद की अग्नि से भुलस भुलस कर रह गये और कश्मीरी आशाओं की लाखों हरी भरी डालियाँ अन्दर ही अन्दर मुरझा गईं और झड़ गिर कर खाक हो गईं.

कश्मीर की मशहूर झीलें जो अपने प्रेमियों के लिये अमन शान्ति की सफ़ेद चादर बिछाये रहती थीं वह इन्सानी खून में रंग गई थीं— कुछ दिन पहले की बात है कि इन झीलों की नैया नैया का एक खिवैया उस आन पड़ी मुसीबत पर दैया दैया कर रहा था.

कश्मीर की सारी आबादी और आबादी की बरबादी को देखते हुए उसका रंगीन आसमान और हरा भरा मैदान हमारी नज़रों के सामने आजाता है और उस हसीन फ़िज़ा का पूरा नक़्शा हमारी आँखों में फिर जाता है.

जिसकी फ़िज़ा के ऊपर बिखरे बिखरे अब्र के टुकड़े
जैसे उड़ते फिरते रूई के गाले
इसके गाते और गुन गुनाते झरने
जिनके सुरीले राग और नग़मे
जिसकी फ़िज़ा में शेरियत और रागिनी
जिसकी हवा में तरन्नुम ही तरन्नुम
आज वह जहन्नुम है जहन्नुम!
जन्नत, नाम है सवाब घर का—पुन्य निकेतन का,
जन्नत, नाम है सुख घर का—शान्ती भवन का,
जन्नत, उस मुक़ाम का नाम है, जहाँ दुख न हो,
जन्नत, उस जगह का नाम है, जहाँ सुख ही सुख हो,

کشمیر کے باغ اور چمن مت بھید کی اگنی سے جھلس جھلس کر رہ گئے اور کشمیری آشاؤں کی لاکھوں ہری بھری ڈالیاں اندر ہی اندر مرجھا گئیں اور جھڑ کر خاک ہو گئیں .

کشمیر کی مشہور جھیلیں جو اپنے پریمیوں کے لئے امن شانتی کی سفید چادر بچھائے رہتی تھیں وہ انسانی خون میں رنگ گئی تھیں — کچھ دن پہلے کی بات ہے کہ ان جھیلوں کی نیا نیا کا ایک کھیویا اس آن پڑی مصیبت پر دیا دیا کر رہا تھا .

کشمیر کی ساری آبادی اور آبادی کی بربادی کو دیکھتے ہوئے اس کا رنگین آسما . اور ہرا بھرا میدان ہماری نظروں کے سامنے آجاتا ہے اور اس حسین فضا کا پورا نقشہ ہماری آنکھوں میں پھر جاتا ہے .

جسکی فضا کے اوپر بکھرے بکھرے ابر کے ٹکڑے
جیسے اڑتے پھرتے روئی کے گالے
اس کے گاتے اور گنگناتے جھرنے
جنکے سریلے راگ اور نغمے
جس کی فضا میں شعریت اور راگنی
جس کی ہوا میں ترنم ہی ترنم
آج وہ جہنم ہے جہنم !
جنت' نام ہے ثواب گھر کا — پنیہ نکیتن کا '
جنت' نام ہے سکھ گھر کا — شانتی بھون کا '
جنت' اس مقام کا نام ہے ' جہاں دکھ نہو '
جنت' اس جگہ کا نام ہے' جہاں سکھ ہی سکھ ہو '

बेशक कश्मीर ऐसी ही जगह थी, जहाँ सुख ही सुख था, अमन ही अमन, शान्ति ही शान्ति—इसी लिये वह जन्नत कहलाई और स्वर्ग नाम पाया.

वही कश्मीर जिसके आकाश से बर्फ़ बरसता था और हुन गिरता था, जिसके पहाड़ों से बर्फ़ पिघलती थी और ठंडक उबलती थी—हाँ हाँ, वही कश्मीर !

यह कश्मीर ! आह यह जन्नत और इसमें इनक़लाब ऐसा ?

आज के शहीद

(सम्पादक श्री रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी, उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्हों ने फूट और नफ़रत के अंधेरे में रोशनी बनकर दूसरों को रास्ता दिखाया.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

[नोट—बेचने वालों या कम से कम दस कापी खरीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.]

मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

بیشک کشمیر ایسی ہی جگہ تھی ، جہاں سکھ ہی سکھ تھا ، امن ہی امن ، شانتی ہی شانتی — اسی لئے وہ جنت کہلائی اور سورگ نام پایا .

وہی کشمیر جس کے آکاش سے برف برستا تھا اور ھن گرتا تھا . جس کے پہاڑوں سے برف پگھلتی تھی اور ٹھنڈک ابلتی تھی — ہاں ہاں ، وہی کشمیر !

یہ کشمیر ! آہ یہ جنت اور اس میں انقلاب ایسا ؟

آج کے شہید

(سمپادک شری رتن لال بنسل)

آج کے شہید میں اُن بہادروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے بدیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی ، اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے پھوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بنکر دوسروں کو راستہ دکھایا .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ رکھا گیا ہے . کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے .

[نوٹ—بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

مینیجر ' نیا ھند ' ۱۴۵ ، مٹھی گنج ، الہ آباد .

ऐशिया की आज़ादी और भारत

(भाई ए. हुसेन)

अभी बहुत से भारत वासियों को वह दिन याद हैं जब कांगरेस एक राज काजी पार्टी ही नहीं बल्कि एशिया का सबसे बड़ा जन आन्दोलन भी थी. देश की कितनी ही विचार धारायें, कितने ही छोटे बड़े संगठन और कितने ही आन्दोलन इसके अन्दर शामिल थे. इन सब का एक ही उद्देश्य, एक ही मक़सद था और वह यह कि अंगरेज़ी साम्राज से भारत को आज़ाद किया जाय. इन सब लोगों और संस्थाओं और विचारों में आपस में कितने ही मतभेद रहे हों—और इसमें शक नहीं कि उनमें मतभेद थे—लेकिन इस एक सवाल पर कोई मतभेद नहीं था.

लेकिन जब हम भारत की आज़ादी के लिये लड़ते थे तो हम केवल अपने देश की सरहदों के अन्दर ही अपनी निगाह को सीमित नहीं रखते थे बल्कि अन्तर राष्ट्री हालत पर भी हमारी नज़रें जाती थीं, क्योंकि जैसे जैसे हमारी आज़ादी की लड़ाई तेज़ होती जाती थी, यह बात हम पर साफ़ होती जाती थी कि अन्तरराष्ट्री हालत का हमारी लड़ाई पर गहरा असर पड़ता है. ख़ास तौर पर पूरबी देशों और एशिया और अफ़रीक़ा के देशों की तरफ़ हमारी नज़रें जाती थीं क्योंकि हम देखते थे कि अकेले हम ही ग़ुलाम नहीं बल्कि इन देशों में से भी बहुत से ऐसे हैं जो या तो वैधानिक ढंग से ग़ुलाम

ایشیا کی آزادی اور بھارت

(بھائی اے . حسین)

ابھی بہت سے بھارت واسیوں کو وہ دن یاد ہیں جب کانگریس ایک راج کاجی پارٹی ہی نہیں بلکہ ایشیا کا سب سے بڑا جن آندولن بھی تھی . دیش کی کتنی ہی وچار دھارائیں، کتنے ہی چھوٹے بڑے سنگٹھن اور کتنے ہی آندولن اِس کے اندر شامل تھے . ان سب کا ایک ہی اُدیش، ایک ہی مقصد تھا اور وہ یہ کہ انگریزی سامراج سے بھارت کو آزاد کیا جائے . اِن سب لوگوں اور سنستھاؤں اور وچاروں میں آپس میں کتنے ہی مت بھید رہے ہوں—اور اِس میں شک نہیں کہ اُن میں مت بھید تھے—لیکن اس ایک سوال پر کوئی مت بھید نہیں تھا .

لیکن جب ہم بھارت کی آزادی کے لئے لڑتے تھے تو ہم کیول اپنے دیش کی سرحدوں کے اندر ہی اپنی نگاہ کو سیمت نہیں رکھتے تھے . بلکہ انتر راشٹری حالت پر بھی ہماری نظریں جاتی تھیں، کیونکہ جیسے جیسے ہماری آزادی کی لڑائی تیز ہوتی جاتی تھی، یہ بات ہم پر صاف ہوتی جاتی تھی کہ انتر راشٹری حالت کا ہماری لڑائی پر گہرا اثر پڑتا ہے . خاص طور پر پوربی دیشوں اور ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کی طرف ہماری نظریں جاتی تھیں کیونکہ ہم دیکھتے تھے کہ اکیلے ہم ہی غلام نہیں بلکہ اِن دیشوں میں سے بھی بہت سے ایسے ہیں جو یا تو ویدھانک ڈھنگ سے غلام

हैं और या फिर उनकी वैधानिक आजादी के पीछे असली गुलामी छिपी हुई है, और उनको गुलाम बनाने वाले भी वही पच्छिम के अंगरेज, फरान्सीसी, डच या पुर्तगाली हाकिम हैं जिनके हमारी सीमाओं के अन्दर छोटे बड़े राज क़ायम हैं. हम यह भी देखते थे कि इन सब देशों में शासन की रीत भी वही है जो हमारे देश में है. मुझे याद है कि कांगरेस के प्लेटफार्म से जब हिन्दू मुसलिम एकता की अपील होती थी तो बहुत से बोलने वाले मिस्र की मिसाल दिया करते थे कि किस तरह वहाँ भी यही अंगरेज़ 'फूट डालो और राज करो' की नीति के अनुसार ईसाइयों और मुसलमानों में बल्कि मुसलमानों के अन्दर के अलग अलग फिरक़ों में भी फूट डालते थे. लेकिन फिर किस तरह ज़ग़लोल पाशा ने राष्ट्री एकता पैदा करके अंगरेजी चालों को मात दे दी और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया. इसी तरह अगर हम भी अंगरेजों के शिकन्जे से मुक्ति हासिल करना चाहते हैं तो हम दोनों को मिलकर एकता क़ायम करनी होगी.

यही नहीं बल्कि हम यह भी देखते थे और यह बात हमारे ऊपर दिन पर दिन भयंकर रूप से प्रकट होती जाती है कि पूरब की इस गुलामी की ज़ंजीर एक है. जब यह ज़ंजीर एक जगह पर कसती है तो दूसरी जगहों पर भी गले घुटने लगते हैं. अगर अंगरेजों का हिन्दुस्तान पर अधिकार रहता है तो इसका नतीजा इतना ही नहीं होता कि वह हमारे देश को लूटते हैं बल्कि अगर दूसरे गुलाम देशों की जनता कहीं अपनी आजादी के लिये हाथ पैर मारती है तो वह हमारे देश से हमारी जनता की राय लिये बिना और उस राय के खिलाफ इस आजादी की लड़ाइयों को कुचलने के लिये

ھیں اور یا پھر اُن کی ویدھانک آزادی کے پیچھے اصلی غلامی چھپی ھوئی ھے، اور اُن کو غلام بنانے والے بھی وھی پچھم کے انگریز، فرانسیسی، ڈچ یا پرتگالی حاکم ھیں جن کے ھماری سیماؤں کے اندر چھوٹے بڑے راج قائم ھیں. ھم یہ بھی دیکھتے تھے کہ اِن سب دیشوں میں شاسن کی ریت بھی وھی ھے جو ھمارے دیش میں ھے. مجھے یاد ھے کہ کانگریس کے پلیٹ فارم سے جب ھندو مسلم ایکتا کی اپیل ھوتی تھی تو بہت سے بولنے والے مصر کی مثال دیا کرتے تھے کہ کس طرح وھاں بھی یہی انگریز 'پھوٹ ڈالو اور راج کرو' کی نیتی کے انوسار عیسائیوں اور مسلمانوں میں بلکہ مسلمانوں کے اندر کے الگ الگ فرقوں میں بھی پھوٹ ڈالتے تھے. لیکن پھر کس طرح زغلول پاشا نے راشٹری ایکتا پیدا کرکے انگریزی چالوں کو مات دے دی اور انہیں پیچھے ھٹنے پر مجبور کر دیا. اسی طرح اگر ھم بھی انگریزوں کے شکنجے سے مکتی حاصل کرنا چاھتے ھیں تو ھم دونوں کو مل کر ایکتا قائم کرنی ھوگی.

یہی نہیں بلکہ ھم یہ بھی دیکھتے تھے اور یہ بات ھمارے اُوپر دن پر دن بھینکر روپ سے پرکٹ ھوتی جاتی ھے کہ پورب کی اِس غلامی کی زنجیر ایک ھے. جب یہ زنجیر ایک جگہ پر کستی ھے تو دوسری جگہوں پر بھی گلے گھٹنے لگتے ھیں. اگر انگریزوں کا ھندستان پر ادھیکار رھتا ھے تو اِس کا نتیجہ اتنا ھی نہیں ھوتا کہ وہ ھمارے دیش کو لوٹتے ھیں بلکہ اگر دوسرے غلام دیشوں کی جنتا کہیں اپنی آزادی کے لئے ھاتھ پیر مارتی ھے تو وہ ھمارے دیش سے ھماری جنتا کی رائے لئے بنا اور

हमारे ही देश के आदमी ले जाते हैं. पहली अन्तर राष्ट्री जंग में उन्हों ने हिन्दुस्तान ही की फ़ौजों से अरब देशों को कुचला, हालाँकि मुसलमान अरब देशों की आजादी पर छापा मारने वाली हिन्दुस्तानी फ़ौजों के अन्दर लड़ने वाले सिपाहियों में बड़ी गिनती भी मुसलमानों ही की थी. इसी तरह बर्मा की आजादी को हड़प करने के लिये भी हिन्दुस्तान ही की फ़ौजें इस्तेमाल हुई थीं. ऐसी ही सब बातों के कारन हम समझने लगे थे और बिलकुल ठीक समझने लगे थे कि अगर हम पूरबी देशों में से कोई देश भी आजाद होता है तो इससे दूसरे गुलाम देशों को भी बड़ी सहायता मिलेगी. उस आजाद देश से फिर दूसरों को गुलाम बनाने या उनकी गुलामी की जंजीरों को और ज्यादा कसने के लिये फ़ौजें नहीं ले जाई जा सकेंगी और गुलाम बनानेवाला दुश्मन कमजोर पड़ेगा जिससे कि दूसरे गुलामों को भी उससे निपटने में आसानी हो जायगी. मुझे फिर याद आता है कि पिछले जमाने में जब हम कांगरेसी लोग आम मुसलमानों से कांगरेस में शामिल हो कर मुल्क की आजादी के लिये लड़ने की अपील करते थे और यह समझाते थे कि मुस्लिम लीग दरअसल आम मुसलमानों की भी भलाई नहीं चाहती तो हम यह दलील बहुत दिया करते थे कि हिन्दुस्तान अंगरेजी ताज का सबसे बड़ा हीरा है, उस पर अपना राज क़ायम रखने के लिये अंगरेजों ने पास पूरब और बीच पूरब के अरब और मुसलमान देशों पर अपना शिकन्जा कस रखा है, यानी हम मुसलमान लोग अगर हिन्दुस्तान की राष्ट्री एकता को मुस्लिम लीग के कहने पर खंड खंड कर के अपनी गुलामी की जंजीरों को मजबूत करते हैं तो इस से

ہمارے ہی دیش کے آدمی لے جاتے ہیں. پہلی انتر راشٹری جنگ میں انہوں نے ہندستان ہی کی فوجوں سے عرب دیشوں کو کچلا حالانکہ مسلمان عرب دیشوں کی آزادی پر چھاپا مارنے والی ہندستانی فوجوں کے اندر لڑنے والے سپاہیوں میں بڑی گنتی بھی مسلمانوں ہی کی تھی. اسی طرح برما کی آزادی کو ہڑپ کرنے کے لئے بھی ہندستان ہی کی فوجیں استعمال ہوئی تھیں. ایسی ہی سب باتوں کے کارن ہم سمجھنے لگے تھے اور بالکل ٹھیک سمجھنے لگے تھے کہ اگر ہم پوربی دیشوں میں سے کوئی دیش بھی آزاد ہوتا ہے تو اس سے دوسرے غلام دیشوں کو بھی بڑی سہایتا ملے گی. اس آزاد دیش سے پھر دوسروں کو غلام بنانے یا ان کی غلامی کی زنجیروں کو اور زیادہ کسنے کے لئے فوجیں نہیں لے جائی جا سکیں گی اور غلام بنانے والا دشمن کمزور پڑے گا جس سے کہ دوسرے غلاموں کو بھی اس سے نپٹنے میں آسانی ہو جائے گی. مجھے پھر یاد آتا ہے کہ پچھلے زمانے میں جب ہم کانگریسی لوگ عام مسلمانوں سے کانگریس میں شامل ہو کر ملک کی آزادی کے لئے لڑنے کی اپیل کرتے تھے اور یہ سمجھاتے تھے کہ مسلم لیگ دراصل عام مسلمانوں کی بھی بھلائی نہیں چاہتی تو ہم یہ دلیل بہت دیا کرتے تھے کہ ہندستان انگریزی تاج کا سب سے بڑا ہیرا ہے، اس پر اپنا راج قائم رکھنے کے لئے انگریزوں نے پاس پورب اور بیچ پورب کے عرب اور مسلمان دیشوں پر اپنا شکنجہ کس رکھا ہے، یعنی ہم مسلمان لوگ اگر ہندستان کی راشٹری ایکتا کو مسلم لیگ کے کہنے پر کھنڈ کھنڈ کرکے اپنی غلامی کی زنجیروں کو مضبوط کرتے ہیں تو اس سے

हम हिन्दुस्तान के आठ करोड़ मुसलमानों ही के जीवन को जहन्नुम नहीं बनाये रहते बल्कि अरब और मुसलमान देशों की और भी करोड़ों मुसलमान जनता को भी ग़ुलाम बनाये रखते हैं और इनके हक़ में भी हम काँटे बोते हैं.

इस तरह हमारे राष्ट्री आन्दोलन ने एक गहरा अन्तर राष्ट्री दृष्टि कोन पैदा कर लिया था जिसका मतलब यह था कि हम हर ग़ुलाम देश की ख़ास तौर से पूरब के और एशियाई देशों की आज़ादी चाहते हैं.

यह अन्तर राष्ट्री दृष्टि कोन वैसे तो स्वर्गीय लोकमान्य तिलक के ज़माने से ही पैदा हो चला था, फिर सन् ११ ई० से जब मुस्लिम लीग कांगरेस के कुछ क़रीब आ रही थी, तुर्की में मेडिकल सहायता भेज कर एक और क़दम आगे बढ़ाया गया. यहाँ इस पर सन्देह हो सकता है कि यह एक सही क़दम था या नहीं, इसके बाद सन् १४ ई० से लेकर सन् १८ ई० तक के युद्ध ने सारे मुल्क में इस भावना को बहुत गहरा कर दिया और हिन्दुस्तान का जो पहला जन आन्दोलन चला वह सच पूछिये तो बहुत कुछ अन्तर राष्ट्री हालत और एशिया में ग़ुलामी के ख़िलाफ़ एक आम उभरते हुए विरोध का भी नतीजा था. ख़ुद ख़िलाफ़त का आन्दोलन जो केवल हिन्दी मुसलमानों ही का आन्दोलन नहीं था बल्कि उसके साथ पूरी तरह राष्ट्री आन्दोलन भी था, बुनियादी तौर पर अंगरेज़ों और फ़रान्सीसियों की उन कोशिशों के ख़िलाफ़ एक आन्दोलन था जिनके ज़रिये यह देश हारे हुए तुर्की को आपस में बाँट बूँट कर हड़प कर जाना चाहते थे. १९२९ के दुनिया के आर्थिक संकट ने, जिसका सोता सबसे पहले अमरीका

ہم ہندستان کے آٹھ کروڑ مسلمانوں ہی کے جیون کو جہنم نہیں بنائے رکھتے بلکہ عرب اور مسلمان دیشوں کی اور بھی کروڑوں مسلمان جنتا کو بھی غلام بنائے رکھتے ہیں اور انکے حق میں بھی ہم کانٹے بوتے ہیں۔

اس طرح ہمارے راشٹری آندولن نے ایک گہرا انتر راشٹری درشٹی کون پیدا کر لیا تھا جس کا مطلب یہ تھا کہ ہم ہر غلام دیش کی خاص طور سے پورب کے اور ایشیائی دیشوں کی آزادی چاہتے ہیں۔

یہ انتر راشٹری درشٹی کون ویسے تو سورگیہ لوکمانیہ تلک کے زمانے سے ہی پیدا ہو چلا تھا، پھر سن ۱۱ ع سے جب مسلم لیگ کانگریس کے کچھ قریب آ رہی تھی، ترکی میں میڈیکل سہایتا بھیج کر ایک اور قدم آگے بڑھایا گیا۔ یہاں اس پر سندیہ ہو سکتا ہے کہ یہ ایک صحیح قدم تھا یا نہیں، اس کے بعد سن ۱۴ ع سے لیکر سن ۱۸ ع تک کے یدھ نے سارے ملک میں اس بھاونا کو بہت گہرا کر دیا اور ہندستان کا جو پہلا جن آندولن چلا وہ سچ پوچھئے تو بہت کچھ انتر راشٹری حالت اور ایشیا میں غلامی کے خلاف ایک عام ابھرتے ہوئے وِرودھ کا بھی نتیجہ تھا۔ خود خلافت کا آندولن جو کیول ہندی مسلمانوں ہی کا آندولن نہیں تھا بلکہ اس کے ساتھ پوری طرح راشٹری آندولن بھی تھا، بنیادی طور پر انگریزوں اور فرانسیسیوں کی ان کوششوں کے خلاف ایک آندولن تھا جن کے ذریعے یہ دیش ہارے ہوئے ترکی کو آپس میں بانٹ بونٹ کر ہڑپ کر جانا چاہتے تھے۔ ۱۹۲۹ کے دنیا کے آرتھک سنکٹ نے، جس کا سوتا سب سے پہلے امریکہ

में फूटा था, हमारी जनता की अन्तर राष्ट्री चेतना को और ज़्यादा गहरा बनाया. और जब हमने यह देखा कि उन देशों में भी, जिनके लोग हमारे ऊपर राज कर रहे हैं, आर्थिक संकट आया है और वहाँ भी साधारन जनता बेरोज़गारी के कारन भूकी मर रही है तो हमारा ध्यान इस तरफ़ गया कि हमको राज काजी आज़ादी ही नहीं चाहिये, जैसी कि फ़रान्स, बरतानिया और अमरीका वालों के पास है, बल्कि उसके बाद हमें आर्थिक आज़ादी के लिये भी शायद कोशिश करनी होगी जिसमें कि हमारे देश में वैसे संकट न आ सकें जैसे कि इन देशों में आये हैं. इन्हीं आर्थिक आज़ादी के विचारों को लेकर काँगरेस के अन्दर सन् ३५ ई० में समाजवादी दल बना और सन् ३६ ई० में पंडित नेहरू, जो समाजवादी विचारों से बड़ी हमदर्दी रखते थे, राष्ट्र पति चुने गये और लखनऊ काँगरेस में उन्होंने जो लेक्चर दिया और फिर उसके बाद बराबर काँगरेस को जिस रास्ते पर डाला वह ऐसा था कि अन्तर राष्ट्री समस्याओं से हमारी दिलचस्पी एक थोड़ी थोड़ी देर की बात नहीं बल्कि एक मुस्तक़िल बात हो गई. और अब तक जो बातें धुंधले रूप में हमारे अन्दर थीं उन्हें हमने साफ़ तौर से खुल कर कहा कि हम एशिया के सब देशों की आज़ादी चाहते हैं. हम चीन की आज़ादी की लड़ाई में चीन के साथ और जापान के ख़िलाफ़ हैं. हम हिन्द चीनी, मलाया, बरमा और इन्डोनेशिया की आज़ादी चाहते हैं, हम पास पूरब के मुसलमान देशों की आज़ादी चाहते हैं. हम ने यह भी कहा कि जब हम आज़ाद होंगे तो अंगरेज़ों, फ़रान्सीसियों और डचों की तरह साम्राजी नीति पर नहीं चलेंगे, हम किसी को अपना ग़ुलाम नहीं

میں پھوٹا تھا، ہماری جنتا کی انتر راشٹری چیتنا کو اور زیادہ گہرا بنایا۔ اور جب ہم نے یہ دیکھا کہ اُن دیشوں میں بھی، جن کے لوگ ہمارے اوپر راج کر رہے ہیں، آرتھک سنکٹ آیا ہے اور وہاں بھی سادھارن جنتا بے روزگاری کے کارن بھوکی مر رہی ہے تو ہمارا دھیان اس طرف گیا کہ ہم کو راج کاجی آزادی ہی نہیں چاہئے، جیسی کہ فرانس، برطانیہ اور امریکہ والوں کے پاس ہے، بلکہ اس کے بعد ہمیں آرتھک آزادی کے لئے بھی شاید کوشش کرنی ہوگی جسمیں کہ ہمارے دیش میں ویسے سنکٹ نہ آسکیں جیسے کہ ان دیشوں میں آئے ہیں۔ انہیں آرتھک آزادی کے وچاروں کو لے کر کانگرس کے اندر سن ۳۵ ع میں سماجوادی دل بنا اور سن ۳۶ع میں پنڈت نہرو، جو سماجوادی وچاروں سے بڑی ہمدردی رکھتے تھے، راشٹر پتی چنے گئے اور لکھنؤ کانگریس میں اُنہوں نے جو لیکچر دیا اور پھر اُس کے بعد برابر کانگریس کو جس راستے پر ڈالا وہ ایسا تھا کہ انتر راشٹری سمسیاؤں سے ہماری دلچسپی ایک تھوڑی تھوڑی دیر کی بات نہیں بلکہ ایک مستقل بات ہوگئی۔ اور اب تک جو باتیں دھندلے روپ میں ہمارے اندر تھیں اُنہیں ہم نے صاف طور سے کھل کر کہا کہ ہم ایشیا کے سب دیشوں کی آزادی چاہتے ہیں۔ ہم چین کی آزادی کی لڑائی میں چین کے ساتھ اور جاپان کے خلاف ہیں۔ ہم ہند چینی، ملایا، برما اور انڈونیشیا کی آزادی چاہتے ہیں، ہم پاس پورب کے مسلمان دیشوں کی آزادی چاہتے ہیں۔ ہم نے یہ بھی کہا کہ جب ہم آزاد ہوں گے تو انگریزوں، فرانسیسیوں اور ڈچوں کی طرح سامراجی نیتی پر نہیں چلیں گے، ہم کسی کو اپنا غلام نہیں۔

वनाना चाहेंगे चाहे हमारे पास इसके लिये जरूरी शक्ति भी हो. हम साम्राजी नीतियों का समर्थन भी नहीं करेंगे. हम हरगिज इस की इजाजत नहीं देंगे कि हमारे मुल्क की फौज या रुपया या आदमी दूसरे देशों खासकर एशिया के देशों को गुलाम रखने के लिये इस्तेमाल किये जायें. बल्कि एशिया की आजादी और साम्राज की लड़ाई में हम एशिया वालों और अपनी आजादी के लिये संघर्ष करने वालों के मित्र होंगे साम्राज के नहीं, और हमसे जहां तक हो सकेगा हम राष्ट्री आजादी के हर आन्दोलन की सहायता करेंगे.

और यह सब कोरी बातें ही नहीं थीं, बल्कि जब इटली ने हब्श पर हमला किया और उसको गुलाम बनाया तो हमने—हालाँकि तब हम गुलाम ही थे—पूरी ताक़त से आवाज उठाई कि हम हब्श की दुखी जनता के साथ और इटली के विरोधी हैं. हमने बड़ी बड़ी सभायें और प्रदर्शन करके अपनी दोस्ती का हाथ हब्श की तरफ़ बढ़ाया. इसी तरह जब चीन पर जापान का हमला शुरू हुआ तो हमने कांग्रेस की तरफ़ से चीन को मेडिकल मिशन तक भेजा और जापान अगरचे एक एशियाई मुल्क था लेकिन चीन की आजादी का दुश्मन होने के कारन हमने उसका घोर विरोध किया.

यही नहीं बल्कि पंडित नेहरू के प्रभाव से हमने एशिया से अपनी नजर फैला कर देखा कि दुनिया के हर कोने में किसी न किसी रूप में आजादी और गुलामी, प्रगतिवाद और प्रतिक्रियावाद का संघर्ष चल रहा है और हमने हर ऐसे मामले में आजादी की शक्तियों का, प्रगतिवाद का साथ दिया. हमने स्पेन की घरेलू लड़ाई में फ़ासिस्ट फ़्रान्को की ज़ोर शोरसे मुख़ालफ़त की और जनवादी

بنانا چاہیں گے چاہے ہمارے پاس اسکے لئے ضروری شکتی بھی ہو. ہم سامراجی نیتیوں کا سمرتھن بھی نہیں کریں گے' ہم ہرگز اس کی اجازت نہیں دیں گے کہ ہمارے ملک کی فوج یا روپیہ یا آدمی دوسرے دیشوں خاص کر ایشیا کے دیشوں کو غلام رکھنے کے لئے استعمال کئے جائیں. بلکہ ایشیا کی آزادی اور سامراج کی لڑائی میں ہم ایشیا والوں اور اپنی آزادی کے لئے سنگھرش کرنے والوں کے متر ہوں گے سامراج کے نہیں' اور ہم سے جہاں تک ہوسکے گا ہم راشٹری آزادی کے ہر آندولن کی سہایتا کریں گے.

اور یہ سب کوری باتیں ہی نہیں تھیں' بلکہ جب اٹلی نے حبش حملہ کیا اور اُس کو غلام بنایا تو ہم نے—حالانکہ تب ہم غلام ہی تھے—پوری طاقت سے آواز اُٹھائی کہ ہم حبش کی دکھی جنتا کے ساتھ اور اٹلی کے ورودھی ہیں. ہم نے بڑی بڑی سبھائیں اور پردرشن کرکے اپنی دوستی کا ہاتھ حبش کی طرف بڑھایا. اسی طرح جب چین پر جاپان کا حملہ شروع ہوا تو ہم نے کانگریس کی طرف سے چین کو میڈیکل مشن تک بھیجا اور جاپان اگرچہ ایک ایشیائی ملک تھا لیکن چین کی آزادی کا دشمن ہونے کے کارن ہم نے اُس کا گھور ورودھ کیا.

یہی نہیں بلکہ پنڈت نہرو کے پربھاو سے ہم نے ایشیا سے اپنی نظر پھیلا کر دیکھا کہ دنیا کے ہر کونے میں کسی نہ کسی روپ میں آزادی اور غلامی' پرگتی واد اور پرتی کریا واد کا سنگھرش چل رہا ہے اور ہم نے ہر ایسے معاملے میں آزادی کی شکتیوں کا' پرگتی واد کا ساتھ دیا. ہم نے اسپین کی گھریلو لڑائی میں فاشسٹ فرانکو کی زور شور سے مخالفت کی اور جن وادی

सरकार का समर्थन किया. हमने फ़ाशिज़्म और फ़ाशिस्ट विरोधी शक्तियों के संघर्ष में फ़ाशिज़्म के खिलाफ़ आवाज उठाई.

सन् ४२ ई० के बाद से सन् ४५ ई० तक अंगरेज साम्राजियों ने हमारे ऊपर बहुत कुछ फ़ाशिस्टों का दोस्त होने का इलजाम लगाना चाहा लेकिन हमने इस विषय में अपनी पोजीशन इतनी साफ़ करदी थी कि उनका एक भूट नहीं चला. मौलाना आजाद, पंडित नेहरू, राजाजी, श्रीमती सरोजिनी नायडू, महाकवि रविन्द्र नाथ टैगोर और हर उस नेता ने, जिसकी आवाज दबाई जाने के बावजूद सुनी जा सकी, यही कहा कि हम चीन और रूस के तरफ़दार हैं, हम उनकी जीत चाहते हैं, हम जर्मनी और जापान को हर नेकी का दुश्मन समझते हैं, लेकिन इन सब चीज़ों के होते हुए भी हम अपनी आजादी चाहते हैं.

यहाँ तक कि सन् ४७ ई० में भी, जब कि कांगरेस एक राज करने वाली पार्टी भी बन चुकी थी, एशिया की आजादी का मामला जनता के सामने इतना आगे था कि पंडित नेहरू ने एशियाई देशों की एक कानफ़रेन्स बुलाई और उसमें एक बार फिर एशिया की आजादी का एलान किया गया.

लेकिन, यह सब कुछ होने के बाद भी आज हम एशिया में क्या देख रहे हैं. हम देखते हैं कि हिन्द चीनी कई साल से फ़रान्सीसी साम्राज के खिलाफ़ जीवन मरन का एक कठिन संघर्ष कर रहा है और डेढ़ लाख फ़रान्सीसी फ़ौज वहाँ मौजूद है. फ़रान्स उसको पहले की तरह ग़ुलाम बनाये रखना चाहता है. उसे अभी आजादी

سرکار کا سمرتھن کیا. ہم نے فاشزم اور فاشسٹ وِرودھی شکتیوں کے سنگھرش میں فاشزم کے خلاف آواز اُٹھائی.

سن ۴۲ع کے بعد سے سن ۴۵ع تک انگریز سامراجیوں نے ہمارے اوپر بہت کچھ فاشسٹوں کا دوست ہونے کا اِلزام لگانا چاہا لیکن ہم نے اِس وشے میں اپنی پوزیشن اتنی صاف کردی تھی کہ اُن کا ایک جھوٹ نہیں چلا. مولانا آزاد، پنڈت نہرو، راجہ جی، شریمتی سروجنی نائیڈو، مہا کوی رابندر ناتھ ٹھکور اور ہر اُس نیتا نے، جس کی آواز دبائی جانے کے باوجود سنی جاسکی، یہی کہا کہ ہم چین اور روس کے طرفدار ہیں، ہم اُن کی جیت چاہتے ہیں، ہم جرمنی اور جاپان کو ہر نیکی کا دشمن سمجھتے ہیں، لیکن اِن سب چیزوں کے ہوتے ہوئے بھی ہم اپنی آزادی چاہتے ہیں.

یہاں تک کہ سن ۴۷ع میں بھی، جبکہ کانگریس ایک راج کرنے والی پارٹی بھی بن چکی تھی، ایشیا کی آزادی کا معاملہ جنتا کے سامنے اتنا آگے تھا کہ پنڈت نہرو نے ایشیائی دیشوں کی ایک کانفرنس بلائی اور اُس میں ایکبار پھر ایشیا کی آزادی کا اعلان کیا گیا.

لیکن یہ سب کچھ ہونے کے بعد بھی آج ہم ایشیا میں کیا دیکھ رہے ہیں. ہم دیکھتے ہیں کہ ہند چینی کئی سال سے فرانسیسی سامراج کے خلاف جیون مرن کا ایک کٹھن سنگھرش کر رہا ہے اور ڈیڑھ لاکھ فرانسیسی فوج وہاں موجود ہے. فرانس اُسکو پہلے کی طرح غلام بنائے رکھنا چاہتا ہے. اُسے ابھی آزادی

हासिल नहीं हुई बल्कि उसकी आज़ादी की लड़ाई चल रही है, ऐसे समय हम अपनी कांगरेस से, जिसने अपने हाथ में जनता की शक्ति के सिवा और कुछ न होते हुए भी जापान और इटली और जर्मनी का विरोध किया था, आज क्या आशा कर सकते हैं जब कि उसके हाथ में राज काज का अधिकार और शक्ति भी मौजूद है. हम यही आशा कर सकते हैं कि कांगरेस फ़्रान्सीसी साम्राजवाद का विरोध करेगी और हिन्द चीन के राष्ट्री आज़ादी के आन्दोलन का साथ देगी. अगर हम स्पेन में जनतन्त्रवाद का गला घोंटने के दंड में सन् ३६ ई० से आज तक फ़्रान्को के स्पेन से राजनैतिक सम्बन्ध तोड़े रह सकते हैं जो कि हमारे देश से बहुत दूर का मामला है तो क्या फ़्रान्स की साम्राजी सरकार से आज ही अपने पड़ोस के मामले के लिये नाता नहीं तोड़ सकते. क्या इस तरह हम फ़्रान्स पर पूरा राजनैतिक दबाव नहीं डाल सकते कि जनाब आप लोग अब वहां से निकल ही आयें तो अच्छा है, आपने अगर वह राज तलवार के ज़ोर से लिया था तो सन् ४२ ई० में आपको जापान ने मार भगाया और जापान को आपकी किसी भी सहायता के बिना हिन्द चीन के देश भक्तों ने मार भगाया, अब आप वहां कौन सा अधिकार रखते हैं और वहां क्या कर रहे हैं, आपको किसने बुलाया है?

और अगर यह कहा जाये कि साहब वह तो बाओडाई महोदय की रक्षा कर रहे हैं तो भारत और हमारी कांगरेस तो बाओ डाई की असलियत को अपने तजरुबे से अच्छी तरह जानती है. वहां तो सिर्फ़ एक बाओ डाई है, हमारे यहां तो हर रजवाड़े में एक न

حاصل نہیں ہوئی بلکہ اُس کی آزادی کی لڑائی چل رہی ہے، ایسے سمے ہم اپنی کانگریس سے، جس نے اپنے ہاتھ میں جنتا کی شکتی کے سوا اور کچھ نہ ہوتے ہوئے بھی جاپان اور اٹلی اور جرمنی کا ورودھ کیا تھا، آج کیا آشا کر سکتے ہیں جبکہ اُس کے ہاتھ میں راج کاج کا ادھیکار اور شکتی بھی موجود ہے. ہم یہی آشا کر سکتے ہیں کہ کانگریس فرانسیسی سامراج واد کا ورودھ کرے گی اور ہند چین کے راشٹری آزادی کے آندولن کا ساتھ دے گی. اگر ہم اسپین میں جن تنتر واد کا گلا گھونٹنے کے ڈنڈ میں سن ۳۶ء سے آج تک فرانکو کے اسپین سے راج نیتک سمبندھ توڑے رہ سکتے ہیں جو کہ ہمارے دیش سے بہت دور کا معاملہ ہے تو کیا فرانس کی سامراجی سرکار سے آج ہی اپنے پڑوس کے معاملے کے لئے ناتا نہیں توڑ سکتے. کیا اس طرح ہم فرانس پر پورا راج نیتک دباؤ نہیں ڈال سکتے کہ جناب آپ لوگ اب وہاں سے نکل ہی آئیں تو اچھا ہے، آپ نے اگر وہ راج تلوار کے زور سے لیا تھا تو سن ۴۲ء میں آپ کو جاپان نے مار بھگایا اور جاپان کو آپ کی کسی بھی سہایتا کے بنا ہند چین کے دیش بھکتوں نے مار بھگایا اب آپ وہاں کون سا ادھیکار رکھتے ہیں اور وہاں کیا کر رہے ہیں، آپکو کس نے بلایا ہے؟

اور اگر یہ کہا جائے کہ صاحب وہ تو باؤ ڈائی مہودے کی رکشا کر رہے ہیں تو بھارت اور ہماری کانگریس، تو باؤ ڈائی کی اصلیت کو اپنے تجربے سے اچھی طرح جانتی ہے. وہاں تو صرف ایک باؤ ڈائی ہے، ہمارے یہاں تو ہر رجواڑے میں ایک نہ

एक अंगरेज़ों का बिठाया हुआ पिट्ठू बाओडाई बैठा था और अंगरेज़ कह सकते थे कि साहब हम भी पूरे पाँच सौ अस्सी बाओ-डाइयों की रक्षा करना चाहते हैं इसलिये हम भारत छोड़कर नहीं जा सकते, बल्कि कभी कभी वह यह कहते भी थे. लेकिन हमने या कांगरेस ने कभी इस दलील को माना ? कभी नहीं. तो फिर हम इन बिलकुल नये नवीले बाओडाई महाशय की रक्षा को इतना बड़ा कर्त्तव्य कैसे मान सकते हैं कि उसके लिये डेढ़ लाख फ़रान्सीसी सेना हिन्द चीन के सीने पर मूंग दलती रहे और एक राष्ट्र अपनी आज़ादी हासिल न कर सके ?

लेकिन कांगरेस की तरफ़से, हमारी सरकार या उसके विदेश विभाग की तरफ़ से ऐसी कोई आवाज़ नहीं उठ रही, बल्कि और उलटा हमारा तो फ़रान्स से पूरा सहयोग है. उसका राजदूत दिल्ली में मौजूद है, अगर नहीं है तो हिन्द चीन की राष्ट्री जनवादी सरकार का राजदूत. अगर हमारा कोई सम्पर्क नहीं है तो हिन्द चीन के राष्ट्री आज़ादी के आन्दोलन से. पंडित नेहरू ख़ुद बराबर कहते रहते हैं कि पच्छिम अभी पूरब के अनुभव और विचारों को अच्छी तरह नहीं समझ रहा, लेकिन हम को साफ़ तौर से यह कहने से कौन रोकता है कि हम हिन्द चीन की क़ौमी आज़ादी के साथ हैं, जिसका मतलब यह है कि वहाँ से फ़रान्सीसी सेना को फ़ौरन निकलना चाहिये और हिन्द चीन की जनता को अपनी क़िस्मत का फ़ैसला करने के लिये छोड़ देना चाहिये कि वह बाओडाई की हकूमत चाहती है या हो ची मैंह की.

ایک انگریزوں کا بٹھایا ہوا پٹھو باؤ ڈائی بیٹھا تھا اور انگریز کہہ سکتے تھے کہ صاحب ہم بھی پورے پانچ سو اسی باؤ ڈائیوں کی رکشا کرنا چاہتے ہیں اس لئے ہم بھارت چھوڑ کر نہیں جا سکتے' بلکہ کبھی کبھی وہ یہ کہتے بھی تھے' لیکن ہم نے یا کانگریس نے کبھی اس دلیل کو مانا ؟ کبھی نہیں ۔ تو پھر ہم ان بالکل نئے نویلے باؤ ڈائی مہاشے کی رکشا کو اتنا بڑا کرتویہ کیسے مان سکتے ہیں کہ اس کے لئے ڈیڑھ لاکھ فرانسیسی سینا هند چین کے سینے پر مونگ دلتی رہے اور ایک راشٹر اپنی آزادی حاصل نہ کر سکے ؟

لیکن کانگریس کی طرف سے' ہماری سرکار یا اس کے ودیش وبھاگ کی طرف سے ایسی کوئی آواز نہیں اٹھ رہی' بلکہ اور الٹا ہمارا تو فرانس سے پورا سہیوگ ہے ۔ اس کا راج دوت دلی میں موجود ہے' اگر نہیں ہے تو هند چین کی راشٹری جن وادی سرکار کا راج دوت ۔ اگر ہمارا کوئی سمپرک نہیں ہے تو هند چین کے راشٹری آزادی کے آندولن سے ۔ پنڈت نہرو خود برابر کہتے رہتے ہیں کہ پچھم ابھی پورب کے انوبھو اور وچاروں کو اچھی طرح نہیں سمجھ رہا لیکن ہم کو صاف طور سے یہ کہنے سے کون روکتا ہے کہ ہم هند چین کی قومی آزادی کے ساتھ ہیں جس کا مطلب یہ ہے کہ وہاں سے فرانسیسی سینا کو فوراً نکلنا چاہئے اور هند چین کی جنتا کو اپنی قسمت کا فیصلہ کرنے کے لئے چھوڑ دینا چاہئے کہ وہ باؤ ڈائی کی حکومت چاہتی ہے یا ہوچی منہ کی ۔

इसी तरह मलाया का मामला है. वहाँ तो खुद हमारे पहले आक़ाओं ने अपना राज क़ायम कर रखा है और हमारे देश की तरह चीनियों, मलायों और मद्रासियों को लड़ाते रहते हैं. वहां की ग़ुलामी इतनी नंगी है कि अंगरेज़शासकों ने कोई बाओडाई भी नहीं बनाया है. वैधानिक अधिकारों में से देश की जनता को कोई अधिकार, यहाँ तक कि दिखावे के प्रतिनिधि चुनने तक का अधिकार नहीं है. और यही मलाया आज बरसों से अंगरेज साम्राजियों के ख़िलाफ़ अपनी राष्ट्री आज़ादी के लिये लड़ रहा है. उसकी आज़ादी की समस्या हमारे लिये हिन्द चीन से भी ज्यादा अपने खास हित की समस्या है, क्योंकि हिन्द चीन में तो हमारे देश के लोग नहीं रहते लेकिन मलाया में तो रबड़ के बाग़ों और खानों के मज़दूर ज्यादा तर हमारे ही देश के तामिल भाई हैं. उनकी राष्ट्री आज़ादी में हर तरह की मदद देना ही हमारा क़ौमी फ़र्ज़ हो जाता है. लेकिन क्या हमने आज तक मलाया की आज़ादी के लिये कभी कोई आवाज़ उठाई? मलाया की जनता पर साम्राजी अत्याचार यहाँ तक बढ़ा कि वही अंगरेज़ जो अपने को सभ्यता के ठेकेदार बतलाते थे बोर्नियो के जंगलों से आदम खोर वनमानुसों को पकड़ लाये और मलाया की जनता पर छोड़ दिया कि वह जहाँ भी पायें उनको कच्चा चबा जाया करें. लेकिन इस अत्याचार से भी हमारे कान पर जूं तक नहीं रेंगी और हम वैसे ही कान में तेल डाले बैठे रहे. बैठे ही नहीं रहे बल्कि हमने अपनी पिछली सारी नीति को भुलाकर मलाया की आज़ादी का खून करने में अपने हाथ भी रंगे हैं. आज हमारे ही देश के गोरखा सिपाहियों को अंगरेज़ मलाया में वहाँ की आज़ादी

اسی طرح ملایا کا معاملہ ھے . وھاں تو خود ھمارے پہلے آقاؤں نے اپنا راج قائم کر رکھا ھے اور ھمارے دیش کی طرح چینیوں، ملیوں اور مدراسیوں کو لڑاتے رھتے ھیں . وھاں کی غلامی اتنی ننگی ھے کہ انگریز شاسکوں نے کوئی باؤ ڈائی بھی نہیں بنایا ھے . ویدھانک ادھیکاروں میں سے دیش کی جنتا کو کوئی ادھیکار، یہاں تک کہ دکھاوے کے پرتی ندھی چننے تک کا ادھیکار نہیں ھے . اور یہی ملایا آج برسوں سے انگریز سامراجیوں کے خلاف اپنی راشٹری آزادی کے لئے لڑ رھا ھے . اس کی آزادی کی سمسیا ھمارے لئے ھند چین سے بھی زیادہ اپنے خاص ھت کی سمسیا ھے، کیونکہ ھند چین میں تو ھمارے دیش کے لوگ نہیں رھتے لیکن ملایا میں تو ربڑ کے باغوں اور کھانوں کے مزدور زیادہ تر ھمارے ھی دیش کے تامل بھائی ھیں . ان کی راشٹری آزادی میں ھر طرح کی مدد دینا ھی ھمارا قومی فرض ھو جاتا ھے . لیکن کیا ھم نے آج تک ملایا کی آزادی کے لئے کبھی کوئی آواز اٹھائی ؟ ملایا کی جنتا پر سامراجی اتیاچار یہاں تک بڑھا کہ وھی انگریز جو اپنے کو سبھیتا کے ٹھیکیدار بتلاتے تھے، بورنیو کے جنگلوں سے آدم خور بن مانسوں کو پکڑ لائے اور ملایا کی جنتا پر چھوڑ دیا کہ وہ جہاں بھی پائیں انکو کچا چباجایا کریں . لیکن اس اتیاچار سے بھی ھمارے کان پر جوں تک نہیں رینگی اور ھم ویسے ھی کان میں تیل ڈالے بیٹھے رھے . بیٹھے ھی نہیں رھے بلکہ ھم نے اپنی پچھلی ساری نیتی کو بھلاکر ملایا کی آزادی کا خون کرنے میں اپنے ھاتھ بھی رنگے ھیں . آج ھمارے ھی دیش کے گورکھا سپاھیوں کو انگریز ملایا میں وھاں کی آزادی

के आन्दोलन को कुचलने के लिये इस्तेमाल कर रहे हैं. और अब जब कि कोरिया में अंगरेज़ी फ़ौजें भेजने की ज़रूरत पड़ी है तो यही हमारे गोरखे भाई हाँग काँग भेजे जा रहे हैं ताकि हाँग काँग की अंगरेज़ी फ़ौज कोरिया की लड़ाई में हिस्सा ले सके.

इस तरह हम एशिया की आज़ादी के मददगार और दोस्त बनने के बजाए कम से कम अपने अमल से उसके दुश्मन मालूम होने लगे हैं.

यह ज़रूर है कि इन्डोनेशिया के मामले में हमने डच साम्राजियों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी और इससे पता चलता है कि जब हम चाहें तो अपनी आवाज़ से दूर दूर तक काफ़ी खलबली मचा सकते हैं और अपने दोस्तों के साथ जंग में कूदे बिना भी उनको बहुत कुछ मज़बूत बना सकते हैं. लेकिन इन्डोनेशिया का मामला ऐसा था जिसमें अंगरेज़ साम्राजी भी डच हमले के ख़िलाफ़ थे और अमरीकी भी. इसी तरह यह भी सच है कि हमने चीन की जनवादी सरकार को मान कर एशिया की आज़ादी के हित में एक बड़ा भारी क़दम उठाया है. लेकिन फिर यह भी एक ऐसा क़दम है जो हमने अंगरेज़ों के पूरे समर्थन और सहयोग के साथ उठाया है, अगरचे अमरीकी शासकों को हमारी या अंगरेज़ों की यह हरकत बिलकुल पसन्द नहीं आई.

अब यह आख़िरी मामला कोरिया का सामने है. इसमें भी स्टालिन को चिट्ठी लिखकर पंडित नेहरू ने एशिया के फ़ायदे ही के लिये क़दम उठाया था, लेकिन जब तक अमरीका भी मानने को तैयार न होता, इस क़दम का अमली नतीजा कुछ नहीं निकल सकता

کے اندولن کو کچلنے کے لئے استعمال کر رہے ہیں. اور اب جبکہ کوریا میں انگریزی فوجیں بھیجنے کی ضرورت پڑی ہے تو یہی ہمارے گورکھے بھائی ہانگ کانگ بھیجے جا رہے ہیں تاکہ ہانگ کانگ کی انگریزی فوج کوریا کی لڑائی میں حصہ لے سکے.

اس طرح ہم ایشیا کی آزادی کے مددگار اور دوست بننے کے بجائے کم سے کم اپنے عمل سے اس کے دشمن معلوم ہونے لگے ہیں.

یہ ضرور ہے کہ انڈونیشیا کے معاملے میں ہم نے ڈچ سامراجیوں کے خلاف آواز اٹھائی تھی اور اس سے پتہ چلتا ہے کہ جب ہم چاہیں تو اپنی آواز سے دور دور تک کافی کھل بلی مچا سکتے ہیں اور اپنے دوستوں کے ساتھ جنگ میں کودے بنا بھی ان کو بہت کچھ مضبوط بنا سکتے ہیں. لیکن انڈونیشیا کا معاملہ ایسا تھا جس میں انگریز سامراجی بھی ڈچ حملے کے خلاف تھے اور امریکی بھی. اسی طرح یہ بھی سچ ہے کہ ہم نے چین کی جن وادی سرکار کو مان کر ایشیا کی آزادی کے ہت میں ایک بڑا بھاری قدم اٹھایا ہے. لیکن پھر یہ بھی ایک ایسا قدم ہے جو ہم نے انگریزوں کے پورے سمرتھن اور سہیوگ کے ساتھ اٹھایا ہے، اگرچہ امریکی شاسکوں کو ہماری یا انگریزوں کی یہ حرکت بالکل پسند نہیں آئی.

اب یہ آخری معاملہ کوریا کا سامنے ہے. اس میں بھی اسٹالن کو چٹھی لکھ کر پنڈت نہرو نے ایشیا کے فائدے ہی کے لئے قدم اٹھایا تھا، لیکن جب تک امریکہ بھی ماننے کو تیار نہ ہوتا، اس قدم کا عملی نتیجہ کچھ نہیں نکل سکتا

था. लेकिन साथ ही साथ हमारी कांगरेस सरकार ने उत्तरी कोरियाँ को हमला आवर ठहराने में अमरीका का भी साथ दिया और यह उस वक़्त हुआ जब कि उत्तरी कोरिया की एक बात तक नहीं सुनी गई. उसे अपनी सफ़ाई देने के लिये सुरक्षा समिति के अन्दर बुलाया तक नहीं गया और अब तक नहीं बुलाया जा रहा है. हालाँ कि आज ही की तरह सन् ३६ ई० में जब हब्श का गला घोंटने के लिये इटली आगे बढ़ा था और फ़रान्स और बरतानिया ने अपने अमल से उसकी हिम्मत बढ़ाई थी और उसे हब्श को हड़प करने की पूरी सहूलत दी थी तो उस वक़्त कांगरेस ने कहा था कि हम लीग आफ़ नेशन्ज़ को नहीं मानते, वह तो अंगरेज़ों और फ़रान्सीसियों की हाँ में हाँ मिलाने वाली एक जमाअत है. लीग आफ़ नेशन्ज़ ने अगरचे दिखावे के लिये इटली पर व्योपारी रुकावटें भी लगाई थीं लेकिन फिर भी हमने अपना असन्तोष ज़ाहिर किया था और साफ़ कहा था कि दिखावे के लिये लीग जो कुछ भी कह रही हो लेकिन असल में तो वह इटली की मदद ही कर रही है. लेकिन आज हम यह भूल गये हैं कि यू० एन० ओ० भी अमरीका और बरतानिया की जमाअत है. फ़िलस्तीन, इन्डोनेशिया, कश्मीर, दक्खिनी अफ़रीक़ा और भारत के मामलों को उसने कई बरस चला-या और तय नहीं किया. यह बात भी अभी तक तय नहीं होने दी कि ऐटम बम और ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल पर पाबन्दी लगाई जाय जिस पर पूरी दुनिया की ९९ फ़ीसदी जनता का एक मत है. लेकिन इस सम्बन्ध में एक तरफ़ तो अमरीकी जनरल मैकार्थर ने

تھا . لیکن ساتھ ھی ساتھ ھماري کانگریس سرکار نے اُتری کوریا کو حملہ آور ٹھہرانے میں امریکہ کا بھی ساتھ دیا اور یہ اُس وقت ھوا جبکہ اُتري کوریا کی ایک بات تک نہیں سنی گئی . اُسے اپنی صفائی دینے کے لئے سورکشا سمیتي کے اندر بلایا تک نہیں گیا اور ابتک نہیں بلایا جارہا ھے . حالانکہ آج ھی کی طرح سن ۳۶ء میں جب حبش کا گلا گھونٹنے کے لئے اِٹلي آگے بڑھا تھا اور فرانس اور برطانیہ نے اپنے عمل سے اُس کی ھمت بڑھائی تھی اور اُسے حبش کو ھڑپ کرنے کی پوری سہولت دي تھی تو اُس وقت کانگریس نے کہا تھا کہ ھم لیگ آف نیشنز کو نہیں مانتے ، وہ تو انگریزوں اور فرانسیسیوں کی ھاں میں ھاں ملانے والي ایک جماعت ھے . لیگ آف نیشنز نے اگرچہ دکھاوے کے لئے اِٹلی پر بیوپاری رکاوٹیں بھی لگائی تھیں لیکن پھر بھی ھم نے اپنا اسنتوش ظاھر کیا تھا اور صاف کہا تھا کہ دکھاوے کے لئے لیگ جو کچھ بھی کہ رھی ھو لیکن اصل میں تو وہ اٹلي کی مدد ھی کر رھی ھے . لیکن آج ھم یہ بھول گئے ھیں کہ یو . این . او . بھی امریکہ اور برطانیہ کی جماعت ھے . فلسطین ، انڈونیشیا ، کشمیر ، دکھنی افریقہ اور بھارت کے معاملوں کو اُس نے کئی برس چلایا اور طے نہیں کیا . یہ بات بھي ابھی تک طے نہیں ھونے دی کہ ایٹم بم اور ایٹمی ھتھیاروں کے استعمال پر پابندي لگائي جائے جس پر پوری دنیا کی ۹۹ فیصدي جنتا کا ایک مت ھے . لیکن اِس سمبندھ میں ایک طرف تو امریکي جنرل

और दूसरी ओर खुद ही हमला शुरू करके अपने बहुमत के बल पर उत्तरी कोरिया को हमला करने वाला एलान करा दिया. अगर भारत को भी अपने साधनों से प्राप्त हुई खबरों पर इतना ही यक़ीन था और वह यह जानता था कि लड़ाई उत्तरी कोरिया ने छेड़ी है तो फिर उसने सुरक्षा समिति में क्यों नहीं जोर लगाया कि उत्तरी और दक्खिनी दोनों कोरिया वहाँ आ कर अपनी बात कहें. दुनिया इस बात को खुद जान लेगी कि हमला करने वाला और अत्याचारी कौन है ?

और अगर अमरीकी फ़ौजें कोरिया में ऐसा ही भला काम करने गई थीं तो देश की दो तिहाई आबादी पर अधिकार होते हुए, दक्खिनी कोरिया की इतनी बड़ी फ़ौज होते हुए, अमरीका के अपने अच्छे से अच्छे और अधिक से अधिक हथियार होते हुए, सिर्फ़ साठ मील के फ़ासले पर अमरीका का जापान जैसा महान गढ़ होते हुए और अमरीकियों के इतने जनतंत्र वादी और देश प्रेमी होते हुए कामयाबी उन्हें क्यों नहीं हुई. दक्खिनी कोरिया की पूरी फ़ौज की फ़ौज लड़ाई शुरू होने के तीन दिन के ही अन्दर इस तरह क्यों पिघल कर खतम हो गई जैसे बरफ़ धूप में पिघल कर खतम हो जाती है. कौन सी ऐसी बात थी जो उसके बड़े बड़े अफ़सरों, जनरलों और कर्नलों तक को आत्महत्या करने पर उकसा रही थी ? अगर ऐसा नहीं है कि कोरिया का एक एक बच्चा तक अमरीका के खिलाफ़ है तो फिर अमरीकी फ़ौज को यह हुक्म क्यों निकालना पड़ा कि गहराई में मीलों दूर तक फैली हुई अमरीकी फ़ौजी लाइन में कोई भी कोरियन दिखाई देगा तो उसे फ़ौरन गोली मार दी जायगी चाहे

اور دوسری اور خود ہی حملہ شروع کر کے اپنے بہومت کے بل پر اتری کوریا کو حملہ کرنے والا اعلان کرا دیا . اگر بھارت کو بھی اپنے سادھنوں سے پراپت ہوئی خبروں پر اتنا ہی یقین تھا اور وہ یہ جانتا تھا کہ لڑائی اتری کوریا نے چھیڑی ہے تو پھر اس نے سورکشا سمیتی میں کیوں نہیں زور لگایا کہ اتری اور دکھنی دونوں کوریا وہاں آ کر اپنی بات کہیں . دنیا اس بات کو خود جان لے گی کہ حملہ کرنے والا اور اتیاچاری کون ہے ؟

اور اگر امریکی فوجیں کوریا میں ایسا ہی بھلا کام کرنے گئی تھیں تو دیش کی دوتہائی آبادی پر ادھیکار ہوتے ہوئے ' دکھنی کوریا کی اتنی بڑی فوج ہوتے ہوئے ' امریکہ کے اپنے اچھے سے اچھے اور ادھک سے ادھک ہتھیار ہوتے ہوئے ' صرف ساٹھ میل کے فاصلے پر امریکہ کا جاپان جیسا مہان گڑھ ہوتے ہوئے اور امریکیوں کے اتنے جن تنتر وادی اور دیش پریمی ہوتے ہوئے کامیابی انہیں کیوں نہیں ہوئی . دکھنی کوریا کی پوری فوج کی فوج لڑائی شروع ہونے کے تین دن کے ہی اندر اس طرح کیوں پگھل کر ختم ہو گئی جیسے برف دھوپ میں پگھل کر ختم ہو جاتی ہے . کون سی ایسی بات تھی جو اس کے بڑے بڑے افسروں ' جنرلوں اور کرنلوں تک کو آتم ہتیا کرنے پر اکسا رہی تھی ؟ اگر ایسا نہیں ہے کہ کوریا کا ایک ایک بچہ تک امریکہ کے خلاف ہے تو پھر امریکی فوج کو یہ حکم کیوں نکالنا پڑا کہ گہرائی میں میلوں دور تک پھیلی ہوئی امریکی فوجی لائن میں کوئی بھی کوریین دکھائی دے گا تو اسے فوراً گولی مار دی جائے گی چاہے

वह दक्खिनी कोरिया ही की फ़ौजी वर्दी क्यों न पहने हो ? जिन शहरों पर अमरीकी अधिकार था उनमें अमरीकी सिपाहियों के सिवाय पूरे पूरे नगर की आबादी के लिये बहत्तर बहत्तर घंटों का करफ़्यू क्यों लगाया गया और उसमें इतनी सख़्ती क्यों हुई कि कोई बच्चा भी करफ़्यु के वक़्त घर से निकलेगा तो उसे फ़ौरन गोली से उड़ा दिया जायगा ? आख़िर यह करफ़्यु उत्तरी कोरिया की फ़ौज को क्यों नहीं लगाना पड़ा ? वह तो करफ़्यू लगाने की जगह जहाँ जाते हैं ज़मीनें किसानों में बाँटते चलते हैं. और फिर आख़िर में यह कि ऐसा क्यों होता है कि छापा मार कोरियन अमरीकियों ही को तंग करने के लिये उनकी लाइन के पीछे निकल आते हैं. आख़िर उत्तरी कोरिया की सरकार और फ़ौज को तंग करने के लिये हज़ार दो हज़ार ही सही लेकिन नाम के भी दक्खिनी कोरिया के छापा मार क्यों नहीं भेजे जा सके ? और यह सब बातें ऐसी क्यों हैं जिनकी ख़ुद अमरीकी अख़बारचियों को ख़बरें देनी पड़ीं.

मानना पड़ेगा कि इस वक़्त कोरिया में दक्खिनी और उत्तरी कोरिया का सवाल नहीं है, बल्कि सवाल है सिर्फ़ कोरिया और अमरीका का. उत्तरी कोरिया ने दक्खिनी कोरिया पर हमला नहीं किया, बल्कि अमरीका ने अपनी ताक़त के घमन्ड में आकर एक देश की आज़ादी को हड़प करना चाहा, लेकिन राष्ट्री आन्दोलन के आगे, जनता में मिले जुले कोरिया की भावना के कारन, उसे मुँह की खानी पड़ रही है और रहेगी.

तो फिर इस लड़ाई में हमारा स्थान कहाँ था ? कोरिया के साथ या अमरीका के ? और असल में हमने किस का साथ दिया.

وہ دکھنی کوریا ہی کی فوجی وردی کیوں نہ پہنے ہو؟ جن شہروں پر امریکی ادھیکار تھا اُن میں امریکی سپاہیوں کے سوائے پورے پورے نگر کی آبادی کے لئے بہتر بہتر گھنٹوں کا کرفیو کیوں لگایا گیا اور اُس میں اتنی سختی کیوں ہوئی کہ کوئی بچہ بھی کرفیو کے وقت گھر سے نکلے گا تو اُسے فوراً گولی سے اُڑا دیا جائے گا؟ آخر یہ کرفیو اُتری کوریا کی فوج کو کیوں نہیں لگانا پڑا؟ وہ تو کرفیو لگانے کی جگہ جہاں جاتے ہیں زمینیں کسانوں میں بانٹتے چلتے ہیں. اور پھر آخر میں یہ کہ ایسا کیوں ہوتا ہے کہ چھاپہ مار کورین امریکیوں ہی کو تنگ کرنے کے لئے ان کی لائن کے پیچھے نکل آتے ہیں. آخر اُتری کوریا کی سرکار اور فوج کو تنگ کرنے کے لئے ہزار دو ہزار ہی سہی لیکن نام کے بھی دکھنی کوریا کے چھاپہ مار کیوں نہیں بھیجے جا سکے؟ اور یہ سب باتیں ایسی کیوں ہیں جن کی خود امریکی اخبارچیوں کو خبریں دینی پڑیں.

ماننا پڑیگا کہ اِس وقت کوریا میں دکھنی اور اُتری کوریا کا سوال نہیں ہے، بلکہ سوال ہے صرف کوریا اور امریکہ کا. اُتری کوریا نے دکھنی کوریا پر حملہ نہیں کیا، بلکہ امریکہ نے اپنی طاقت کے گھمنڈ میں آکر ایک دیش کی آزادی کو ہڑپ کرنا چاہا لیکن راشٹری اندولن کے آگے، جنتا میں ملے جلے کوریا کی بھاؤنا کے کارن، اُسے منھ کی کھانی پڑ رہی ہے اور رہے گی.

تو پھر اس لڑائی میں ہمارا استھان کہاں تھا؟ کوریا کے ساتھ یا امریکہ کے؟ اور اصل میں ہم نے کس کا ساتھ دیا.

आखिर मिस्र जैसे हम से कहीं ज्यादा छोटे और कहीं कम शक्तिशाली देशों ने साफ़ साफ़ यू० एन० ओ० के ढोंग का भांडा कैसे फोड़ दिया ? हमारे मित्र इन्डो नेशिया तक ने, जिसकी आज़ादी भी अभी खटाई में पड़ी हुई है और बिलकुल पक्की नहीं हुई, सुरक्षा समिति के २७ जून वाले प्रस्ताव का विरोध करने का क्यों कर साहस किया ? और हम जो एशिया की आज़ादी के सब से बड़े हिमायती कहलाते हैं कोरिया का साथ देने से क्यों हिचकिचाने लगे ? हालाँकि आज हमारे देश में भी बहुमत एक छोटी सी एशियाई क़ौम पर महा पापी अमरीका के वार को देख कर दुखी और कोरिया की बहादुरी पर ताज्जुब ही नहीं कर रहा बल्कि बेहद खुश भी है.

मेरा यह कहना है कि अगर हम साफ़ साफ़ कोरिया का साथ नहीं दे सकते थे तो कम से कम इतना तो कर सकते थे कि कोरिया की असलियत को हमारी जनता से छिपाने की जो कोशिशें हो रही हैं उन्हें ही सफल न होने देते, फिर तो जनता खुद ही अपनी राय इस गूँजगरज के साथ बता देती कि न्युयार्क की आसमान से बातें करने वाली इमारतें तक हिल जातीं. हमको कम से कम यह तो मालूम करने से न रोका जाता कि आज अमरीकी हवाई जहाज़ कोरिया के छोटे छोटे शहरों और देहातों पर उस से भी ज्यादा भयानक बमबारी कर रहे हैं जो पिछली लड़ाई में जर्मनी जैसे बड़े और तैयार मुल्क के शहरों पर लड़ाई के आखिरी ज़माने में की जाती थी. हमको यह मालूम होने नहीं दिया जाता कि कोरिया के शहरों में हज़ारों देशभक्तों को, जिन्हें दक्खिनी कोरिया की अमरीकी पिट्ठू हकूमत ने जेलों में बन्द कर रखा था रोज़ाना अमरीकी सिपाही गोलियों से उड़ा देते हैं.

آخر مصر جیسے ہم سے کہیں زیادہ چھوٹے اور کہیں کم شکتی شالی دیشوں نے صاف صاف یو. این. او. کے ڈھونگ کا بھانڈا کیسے پھوڑ دیا ؟ ہمارے متر انڈونیشیا تک نے ' جس کی آزادی بھی ابھی کھٹائی میں پڑی ہوئی ہے اور بالکل پکی نہیں ہوئی ' سورکشا سمیتی کے ۲۷ جون والے پرستاؤ کا ورودھ کرنے کا کیونکر ساہس کیا ؟ اور ہم جو ایشیا کی آزادی کے سب سے بڑے حمایتی کہلاتے ہیں کوریا کا ساتھ دینے سے کیوں ہچکچانے لگے ؟ حالانکہ آج ہمارے بھی دیش میں بہومت ایک چھوٹی سی ایشیائی قوم پر مہا پاپی امریکہ کے وار کو دیکھ کر دکھی اور کوریا کی بہادری پر تعجب ہی نہیں کررہا بلکہ بے حد خوش بھی ہے .

میرا یہ کہنا ہے کہ اگر ہم صاف صاف کوریا کا ساتھ نہیں دے سکتے تھے تو کم سے کم اتنا تو کر سکتے تھے کہ کوریا کی اصلیت کو ہماری جنتا سے چھپانے کی جو کوششیں ہو رہی ہیں انہیں ہی سپھل نہ ہونے دیتے ' پھر تو جنتا خود ہی اپنی رائے اس گونج گرج کے ساتھ بتا دیتی کہ نیویارک کی آسمان سے باتیں کرنے والی عمارتیں تک ہل جاتیں . ہم کو کم سے کم یہ تو معلوم کرنے سے نہ روکا جاتا کہ آج امریکی ہوائی جہاز کوریا کے چھوٹے چھوٹے شہروں اور دیہاتوں پر اس سے بھی زیادہ بھیانک بمباری کر رہے ہیں جو پچھلی لڑائی میں جرمنی جیسے بڑے اور تیار ملک کے شہروں پر لڑائی کے آخری زمانے میں کی جاتی تھی . ہم کو یہ معلوم ہونے نہیں دیا جاتا کہ کوریا کے شہروں میں ہزاروں دیش بھکتوں کو ' جنہیں دکھنی کوریا کی امریکی پٹھو حکومت نے جیلوں میں بند کر رکھا تھا روزانہ امریکی سپاہی گولیوں سے اڑا دیتے ہیں .

इंगलैन्ड का "इकनामिस्ट" जैसा अखबार, जो एशिया वालों और एशिया की आज़ादी का बहुत बड़ा दुश्मन है, वह तो यह लिखता है कि कोरिया पर अमरीकी बमबारी से सारा एशिया अमरीका के खिलाफ़ होता जा रहा है. इंगलैन्ड के बिलकुल चर्चिल वादी अखबारों तक में कोरिया के देश भक्तों को ज़िन्दा दफ़नाने की तसवीरें, जो अमरीकी सिपाहियों की जेबों से निकलती हैं, छप जाती हैं, लेकिन भारत में, जहाँ की जनता कोरिया के भविष्य से गहरी दिलचस्पी रखती है, उस को कुछ नहीं बतलाया जाता. उसके लिये खबरों के सारे दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं.

लेकिन सचाई किसी से भी कब तक छिपाई जा सकती है और फिर आज कल के ज़माने में जब कि रेडियो भी है, कम से कम इंगलिस्तान के अखबारों ही का एक ज़रिया मौजूद है, और फिर खुद अमरीकी खबर भेजने वालों ही को बात छिपाने का कौन सा ऐसा खास हुनर आता है. आज भारत की जनता को मालूम हो चला है कि अमरीका न सिर्फ़ पूरे कोरिया पर हमला कर रहा है, बल्कि यह भी कि यह हमला बिलकुल फ़ासिस्ट ढंग से किया जा रहा है.

ऐसी हालत में हमारे देश की जनता, जिसको पहले से भी साम्राजी अत्याचारों का बहुत कुछ तजरबा है और जो जानती है कि अभी एशिया साम्राजकी गुलामी से आज़ाद नहीं हुआ है, खुद उसके देश में पुर्तगाली और फ़रान्सीसी साम्राज अभी तक क़ायम है, एशियाकी आज़ादी का और ज़्यादा साहस और जोश के साथ समर्थन करने और उस की हर तरह की मदद करनेके लिये तैयार होगी और यह माँग करेगी कि एशिया के चप्पे चप्पे से हर रंग के साम्राजी का मुँह काला किया

انگلینڈ کا "اکنامسٹ" جیسا اخبار، جو ایشیا والوں اور ایشیا کی آزادی کا بہت بڑا دشمن ہے، وہ تو یہ لکھتا ہے کہ کوریا پر امریکی بمباری سے سارا ایشیا امریکہ کے خلاف ہوتا جا رہا ہے. انگلینڈ کے بالکل چرچل وادی اخباروں تک میں کوریا کے دیش بھکتوں کو زندہ دفنانے کی تصویریں، جو امریکی سپاہیوں کی جیبوں سے نکلتی ہیں، چھپ جاتی ہیں، لیکن بھارت میں، جہاں کی جنتا کوریا کے بھوشیہ سے گہری دلچسپی رکھتی ہے، اس کو کچھ نہیں بتایا جاتا. اس کے لئے خبروں کے سارے دروازے بند کر دیئے جاتے ہیں.

لیکن سچائی کسی سے بھی کب تک چھپائی جا سکتی ہے اور پھر آجکل کے زمانے میں جبکہ ریڈیو بھی ہے، کم سے کم انگلستان کے اخباروں ہی کا ایک ذریعہ موجود ہے، اور پھر خود امریکی خبر بھیجنے والوں ہی کو بات چھپانے کا کون سا ایسا خاص ہنر آتا ہے. آج بھارت کی جنتا کو معلوم ہو چلا ہے کہ امریکہ نہ صرف پورے کوریا پر حملہ کر رہا ہے، بلکہ یہ بھی کہ یہ حملہ بالکل فاشسٹ ڈھنگ سے کیا جا رہا ہے.

ایسی حالت میں ہمارے دیش کی جنتا جس کو پہلے سے بھی سامراجی اتیاچاروں کا بہت کچھ تجربہ ہے اور جو جانتی ہے کہ ابھی ایشیا سامراج کی غلامی سے آزاد نہیں ہوا ہے، خود اس کے دیش میں پرتگالی اور فرانسیسی سامراج ابھی تک قائم ہیں، ایشیا کی آزادی کا اور زیادہ ساہس اور جوش کے ساتھ سمرتھن کرنے اور اس کی ہر طرح کی مدد کرنے کے لئے تیار ہوگی اور یہ مانگ کرے گی کہ ایشیا کے چپے چپے سے ہر رنگ کے سامراجی کا منھ کالا کیا

जाये, चाहे वह अंगरेज हो या अमरीकी, फरान्सीसी हो या डच. इन साम्राजियों को एशिया में जरा क़दम रखने की भी जगह नहीं दी जायगी. उनकी फौजें, अड्डे, अफ़सर, मन्डियाँ और उनकी पूँजी सबको एक झाड़ू में समेट कर साफ़ कर दिया जायगा.

मुस्लिम देश भक्त

[लिखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेजों के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाजा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन १८५७ से भी पहले से आजादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेजी हकूमत का किस तरह मुकाबला किया यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायेंगे. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में अलग अलग मिलती है. क़ीमत १ रुपया ०१२ आने.

[नोट—बेचने वालों या कम से कम दस कापी खरीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायेगा.]

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
१४९ मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

جائے ۔ چاہے وہ انگریز ھو ۔ یا امریکی' فرانسیسی ھو یا ڈچ ۔ ان سامراجیوں کو ایشیا میں ذرا قدم رکھنے کی بھی جگہ نہیں دی جائے گی ۔ اُن کی فوجیں' اڈے' افسر' منڈیاں اور اُن کی پونجی سب کو ایک جھاڑو میں سمیٹ کر صاف کر دیا جائے گا ۔

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اِس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُنکے کارنامے بیان کئے گئے ھیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ھی انکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اُن کو ھندستان سے نکال بھگانے میں ھی ھند کی بھلائی دیکھی تھی ۔

اِس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ھوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی ۔ اپنی جان ھتھیلی پر رکھ کر اُنہوں نے ھندستان اور ودیشوں میں رھتے ھوئے بھی انگریزی حکومت کا کسطرح مقابلہ کیا' یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے ۔ کتاب اُردو اور انگریزی دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ ملتی ھے ۔ قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

[نوٹ — بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا ۔]

منیجر' 'نیا ھند'
۱۴۹' مٹھی گنج – الہ آباد

आज़ादी के बाद

(भाई श्रीकृष्ण दास)

१५ अगस्त अब पुरानी ग़ुलामी के ख़ात्मे और नई ग़ुलामी के आरम्भ का एक दोराहा बन चुका है . हमें ख़ुशी है कि देश ने उसे उसी रूपमें मनाया. यह इस बात का सबूत है कि देश की साधारन जनता की समझ अभी भी ठिकाने है और उसकी निगाह धुँधली नहीं हुई है. फ़ौजी मार्च-परेड, सलामी,तोपों की गरज और 'जन गन मन' के बैन्ड के बीच कुछ नेताओं के तोता रटू भाषनों के अलावा अगर किसी तरह के जश्न को इन आँखों ने देखा तो वह ऊँची कोठियों और बंगलों में ही दिखाई दिया . ग़रीब की झोपड़ी अंधेरी ही रही. उनके चालों में आशा या ज़िन्दगी की किरन न जासकी, न जा सकी .

पुरानी ग़ुलामी के ख़ात्मे के समय, इसी १५ अगस्त के दिन जिन आँखों में ख़ुशी के आंसू छलछला आये थे उन्हीं आँखों के आँसू,पिछले तीन बरस की जलन और आहों के कारन सूख गये थे . ऐसा क्यों ? आज़ादी की ख़ुशी पिसी-चुसी जनता से अधिक दूसरे किस आदमी या तबक़े को हो सकती है ? मगर काग़ज़ी आज़ादी या विधान की आज़ादी एक चीज़ है, ज़िन्दा रहने की आज़ादी, खाने-पीने, कपड़ा पहनने और घर बसाने, हँसने-बोलने, प्रेम मुहब्बत करने, मिल जुल कर देश में अमन शान्ति क़ायम करने की आज़ादी

آزادی کے بعد

(بھائی شری کرشن داس)

۱۵ اگست اب پرانی غلامی کے خاتمے اورنئی غلامی کے آرمبھ کا ایک دو راہا بن چکا ہے . ہمیں خوشی ہے کہ دیش نے اسے اسی روپ میں منایا . یہ اس بات کا ثبوت ہے کہ دیش کی سادھارن جنتا کی سمجھ ابھی بھی ٹھکانے ہے اور اس کی نگاہ دھندلی نہیں ہوئی ہے : فوجی مارچ پریڈ ، سلامی ، توپوں کی گرج اور 'جن گن من' کے بینڈ کے بیچ کچھ نیتاؤں کے طوطا رٹو بھاشنوں کے علاوہ اگر کسی طرح کے جشن کو ان آنکھوں نے دیکھا تو وہ اونچی کوٹھیوں اور بنگلوں میں ہی دکھائی دیا . غریب کی جھونپڑی اندھیری ہی رہی ' انکے چالوں میں آشا یا زندگی کی کرن نہ جاسکی ' نہ جاسکی .

پرانی غلامی کے خاتمے کے سمے ' اسی پندرہ اگست کے دن جن آنکھوں میں خوشی کے آنسو چھل چھلا آئے تھے انہیں آنکھوں کے آنسو پچھلے تین برس کی جلن اور آہوں کے کارن سوکھ گئے تھے . ایسا کیوں ؟ آزادی کی خوشی پسی چسی جنتا سے ادھک دوسرے کس آدمی یا طبقے کو ہو سکتی ہے ؟ مگر کاغذی آزادی یا ودھان کی آزادی ایک چیز ہے ' زندہ رہنے کی آزادی ' کھانے پینے ' کپڑا پہننے اور گھر بسانے ' ہنسنے بولنے ' پریم محبت کرنے ' مل جل کر دیش میں امن شانتی قائم کرنے کی آزادی

बिलकुल दूसरी चीज़ है. आप कहेंगे, हमारे लोकतंत्रवादी विधान में तो जनता को, हर नागरिक को, यह अधिकार दे दिये गये हैं. मगर यही तो मुश्किल है. काग़ज़ पर, विधान में, क़ानून में तो सब को सब तरह की आज़ादी दी गई है. मगर उस आज़ादी को, उस अधिकार को भोगने की आज़ादी जनता को मिली है या नहीं? कपड़ा पहनने की आज़ादी सबको है. मगर पहनने के लिये वाजिब दामों पर कपड़ा मिलता कहाँ है? खाना खाने का सबको अधिकार है. मगर पेट भर खाना दोनों जून मिलता किसको है? अधिक ठंड, गरमी और पानी, आँधी तूफ़ान से बचने और आराम की नींद सोने के लिये घर बनाने की आज़ादी सबको है. मगर आज पक्की हवेली तो क्या छप्पर डाल लेना, फूस खपरैल की छाजन लगा लेना भी किसको नसीब है? पढ़ने-लिखने, अपने शरीर और दिमाग़ को चुस्त, तेज़ और योग्य बना लेने की आज़ादी सबको है. मगर आज क्या हमारे बच्चे सचमुच अच्छी और पूरी शिक्षा पा रहे हैं? क्या उनका दिमाग़ और शरीर सचमुच पूरी तरह बढ़ने, तरक़्क़ी करने का पूरा मौक़ा पा रहा है? हमें मेल-मुहब्बत से रहने, भाई चारा निभाने और शान्ति और अमन को क़ायम रखने की पूरी आज़ादी है. मगर इस क़ीमती और खूबसूरत आज़ादी को खत्म कर देने की भी आज़ादी तो लोगों को हासिल है.

१५ अगस्त के पहिले, आसमान में सूरज, चांद, तारे चमकते थे, हवा चलती थी, नदियाँ कल कल करती बहती थीं, फूल खिलते थे, कलियाँ चटखती थीं, चिड़ियाँ चहकती थीं, भौंरे गुनगुनाते थे, खेतों

بالکل دوسری چیز ہے. آپ کہینگے' ہمارے لوک تنتر وادی ودھان میں تو جنتا کو' ہر ناگرک کو' یہ ادھیکار دے دئے گئے ہیں. مگر یہی تو مشکل ہے. کاغذ پر' ودھان میں' قانون میں تو سبکو سبطرح کی آزادی دی گئی ہے. مگر اُس آزادی کو' اُس ادھیکار کو بھوگنے کی آزادی جنتا کو ملی ہے یا نہیں؟ کپڑا پہننے کی آزادی سب کو ہے. مگر پہننے کے لئے واجب داموں پر کپڑا ملتا کہاں ہے؟ کھانا کھانے کا سبکو ادھیکار ہے. مگر پیٹ بھر کھانا دونوں جون ملتا کسکو ہے؟ ادھک ٹھنڈ' گرمی اور پانی' آندھی طوفان سے بچنے اور آرام کی نیند سونے کے لئے گھر بنانے کی آزادی سبکو ہے. مگر آج پکی حویلی تو کیا چھپر ڈال لینا' پھوس کھپریل کی چھاجن لگا لینا بھی کسکو نصیب ہے؟ پڑھنے لکھنے' اپنے شریر اور دماغ کو چست' تیز اور یوگیہ بنا لینے کی آزادی سبکو ہے. مگر آج کیا ہمارے بچے سچ مچ اچھی اور پوری شکشا پا رہے ہیں؟ کیا اُن کا دماغ اور شریر سچ مچ پوری طرح بڑھنے' ترقی کرنے کا پورا موقع پا رہا ہے؟ ہمیں میل محبت سے رہنے' بھائی چارہ نبھانے اور شانتی اور امن کو قائم رکھنے کی پوری آزادی ہے. مگر اِس قیمتی اور خوبصورت آزادی کو ختم کردینے کی بھی آزادی تو لوگوں کو حاصل ہے.

۱۵ اگست کے پہلے' آسمان میں سورج' چاند' تارے چمکتے تھے' ہوا چلتی تھی' ندیاں کل کل کرتی بہتی تھیں' پھول کھلتے تھے' کلیاں چٹختی تھیں' چڑیاں چہکتی تھیں' بھونرے گنگناتے تھے' کھیتوں

की बालियाँ झूमती थीं, आम बौराते थे, टेसू फूलते थे, महुए महकते थे. आजादी के बाद भी यह सारा का सारा कारोबार ज्यों का त्यों चल रहा है. आजादी के पहले गरीब की ईद मोहर्रम बनी रहती थी. सूरज, चांद, तारे, हवा, नदी, फूल, फल, चिड़ियां भौंरों, खेत बाग़, किसी पर उसका अधिकार न था. उसके लिये सभी बेगाने थे, सभी ग़ैर. अंगरेजों की मेहरबानी से आजादी मिली तो सदा की भूकी, प्यासी, उदास, परेशान जनता को विश्वास हुआ कि अब उसको राहत मिलेगी. मगर जनता की आजादी और ख़ुशी के चोर, जो कमन्द लगाये बैठे थे, जनता की ख़ुशी और शान्ति तो ले ही गये, जनता के बाप को भी ले गये. पहरुए ताकते रह गये, नक़ब लग गई और देश के हीरे मोती जवाहरात चोरी चले गये.

इस तरह इस देश की जनता ग़रीब की ग़रीब और भुक्खड़ की भुक्खड़ ही रह गई. उसे न खाना मिला, न कपड़ा, न घर मिला, न खेती बाड़ी. आजादी के कुछ ही दिन बाद उसे महसूस होने लगा कि उसकी आजादी काग़ज़ी थी उसके सपने धूल में मिल गये. वही पुलिस, फ़ौज, लाठी, गोली, जेल, नजरबन्दी जिसे पिछले तीस बरस से वह भुगतती चली आई थी, अब भी उसके आगे पीछे थी. हाँ, उसकी परेशानियों, तकलीफ़ों और नाउम्मीदियों में इज़ाफ़ा करने के लिये क़ानूनी रहज़नी, चोर बाज़ारी, मुनाफ़ा ख़ोरी और घूसख़ोरी का बाज़ार गरम हो गया और जब पवित्र खादी पहन कर लोगों ने इस पाप और कमीने पन को समाजी रूप देना शुरू कर दिया तो हमारी गिरावट अपनी हद को पहुँच गई. जिस जनता ने अपनी कोशिशों से मज़बूत साम्राजशाही की चूलें हिला दी थीं वही जनता इस नये

کی بالیاں جھومتی تھیں، آم بوراتے تھے، ٹیسو پھولتے تھے، مہوے مہکتے تھے. آزادی کے بعد بھی یہ سارا کا سارا کاروبار جوں کا توں چل رہا ہے. آزادی کے پہلے غریب کی عید محرم بنی رہتی تھی. سورج، چاند، تارے، ہوا، ندی، پھول، پھل، چڑیوں، بھونروں، کھیت باغ کسی پر اُسکا ادھیکار نہ تھا. اُس کے لئے سبھی بیگانے تھے، سبھی غیر. انگریزوں کی مہربانی سے آزادی ملی تو سدا کی بھوکی، پیاسی، اداس، پریشان جنتا کو وشواس ہوا کہ اب اُس کو راحت ملیگی. مگر جنتا کی آزادی اور خوشی کے چور جو کمند لگائے بیٹھے تھے، جنتا کی خوشی اور شانتی تو لے ہی گئے، جنتا کے باپ کو بھی لے گئے. پہرے تاکتے رہ گئے، نقب لگ گئی اور دیش کے ہیرے موتی جواہرات چوری چلے گئے.

اس طرح اس دیش کی جنتا غریب کی غریب اور بھکڑ کی بھکڑ ہی رہ گئی. اُسے نہ کھانا ملا، نہ کپڑا، نہ گھر ملا، نہ کھیتی باڑی. آزادی کے کچھ ہی دن بعد اُسے محسوس ہونے لگا کہ اُس کی آزادی کاغذی تھی. اُس کے سپنے دھول میں مل گئے. وہی پولس، فوج، لاٹھی، گولی، جیل، نظر بندی جسے پچھلے تیس برس سے وہ بھگتتی چلی آئی تھی، اب بھی اُس کے آگے پیچھے تھی. ہاں، اُسکی پریشانیوں، تکلیفوں اور نا اُمیدیوں میں اضافہ کرنے کے لئے قانونی رہزنی، چور بازاری، منافع خوری اور گھوس خوری کا بازار گرم ہو گیا اور جب پوتر کھادی پہن کر لوگوں نے اس پاپ اور کمینے پن کو سماجی روپ دینا شروع کر دیا تو ہماری گراوٹ اپنی حد کو پہنچ گئی. جس جنتا نے اپنی کوششوں سے مضبوط سامراج شاہی کی چولیں ہلا دی تھیں وہی جنتا اس نئے

दौर में अपने ही लोगों और हमदर्दों को देश द्रोही कामों में लगे देख कर भौंचक्की रहगई. उसे कुछ समय यह विश्वास करने में ज़रूर लगा कि जनता की हमदर्दी का दम भरने वालों में से अधिकतर जनता के दुश्मनों के ख़ेमे में चले गये हैं. मगर अब अधिक समय ख़राब न कर के वह विरोध और विद्रोह करने लगी है. आज खादी का जामा मज़ाक़ ही नहीं नफ़रत की चीज़ बनता जा रहा है. खादी के भेस में अब अधिकतर ऐसे ही लोग दिखाई पड़ते हैं जो हमेशा के ग़द्दार और सरकार परस्त और आज के, इस नये ज़माने के, देश भक्त हैं. पुराने और सच्चे देश भक्तों की शक्ति दिनों दिन कम होती जा रही है. नये लोग, देशभक्ति को बेच कर खाना जिनका पेशा है, अब मंडल, हलक़ा, ज़िला, सूबा कांगरेस कमेटियों में घुस गये हैं. इसका जो नतीजा होना था, हो रहा है. जनता की ग़ुलामी, पस्त हिम्मती, परेशानी और मुसीबत पहले से ज़्यादा ख़ौफ़नाक होकर अपना मुँह फैलाती जा रही है. पुरानी ग़ुलामी का ख़ात्मा पूरी तरह से हो भी न पाया था कि यह नई तरह की ग़ुलामी आ धमकी.

यह ग़ुलामी पहली ग़ुलामी से ज़्यादा ख़तरनाक है. विदेशी ग़ुलामी से लड़ना आसान था, क्यों कि उस समय दोस्त और दुश्मन की तमीज़ करना भी आसान था. कौन अपने हैं और कौन बेगाने यह जान लेना आसान था. मगर आज, जबकि अपने ही बेगाने होते जा रहे हैं, जब कि पुराने साथी और रहनुमा दुश्मन और रहज़न बनते जा रहे हैं, जब कि तपे तपाये लोग भी अपने स्वार्थों की आंच में दूसरों

دور میں اپنے ہی لوگوں اور ہمدردوں کو دیش دروہی کاموں میں لگے دیکھکر بھونچکی رہ گئی . اُسے کچھ سمے یہ وشواس کرنے میں ضرور لگا کہ جنتا کی ہمدردی کا دم بھرنے والوں میں سے ادھک تو جنتا کے دشمنوں کے خیمے میں چلے گئے ہیں . مگر اب ادھک سمے خراب نہ کرکے وہ وِرودھ اور وِدروہ کرنے لگی ہے . آج کھادی کا جامہ مذاق ہی نہیں نفرت کی چیز بنتا جارہا ہے . کھادی کے بھیس میں اب ادھک تو ایسے ہی لوگ دکھائی پڑتے ہیں جو ہمیشہ کے غدار اور سرکار پرست اور آج کے ، اس نئے زمانے کے ، دیش بھکت ہیں . پرانے اور سچے دیش بھکتوں کی شکتی دنوں دن کم ہوتی جارہی ہے . نئے لوگ ، دیش بھکتی کو بیچ کر کھانا جنکا پیشہ ہے ، اب منڈل ، حلقہ ، ضلع ، صوبہ کانگریس کمیٹیوں میں گھس گئے ہیں . اسکا جو نتیجہ ہونا تھا ، ہو رہا ہے . جنتا کی غلامی ، پست ہمتی ، پریشانی اور مصیبت پہلے سے زیادہ خوفناک ہوکر اپنا منہ پھیلاتی جارہی ہے . پرانی غلامی کا خاتمہ پوری طرح سے ہو بھی نہ پایا تھا کہ یہ نئی طرح کی غلامی آ دھمکی .

یہ غلامی پہلی غلامی سے زیادہ خطرناک ہے . ودیشی غلامی سے لڑنا آسان تھا ، کیونکہ اُس سمے دوست اور دشمن کی تمیز کرنا بھی آسان تھا . کون اپنے ہیں اور کون بیگانے یہ جان لینا آسان تھا . مگر آج ، جبکہ اپنے ہی بیگانے ہوتے جارہے ہیں ، جبکہ پرانے ساتھی اور رہنما دشمن اور رہزن بنتے جارہے ہیں ، جبکہ تپے تپائے لوگ بھی اپنے سوارتھوں کی آنچ میں دوسروں

को झुलसा रहे हैं, सचमुच यह जानना कठिन होता जा रहा है कि कौन अपने हैं और कौन बेगाने, कौन दोस्त हैं और कौन दुश्मन.

प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू से लेकर नीचे के नेताओं तक सबका यही रोना है कि कांगरेस और देश पतन की ओर जा रहे हैं. मगर पतन की ओर इस यात्रा को कोई नहीं रोक पा रहा है. इसी पन्द्रह अगस्त को, आज़ादी दिवस को लोगों ने जिस तरह मनाया, वह मेरे इस कथन का सबूत है कि इस आज़ादी से लोगों की दिलचस्पी कम होती जा रही है और लोग परिवर्तन की कामना करने लगे हैं. आज़ादी के तीन साल बाद ही आज़ादी लाने वालों पर से लोगों का विश्वास उठने लगा है, और मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है कि वह दिन दूर नहीं जब कि इन में से अधिकतर लोगों का नाम लेवा भी कोई नहीं रह जायगा. मुझे लगता है कि जिन लोगों ने राष्ट्रपिता बापू और उनके उपदेशों को भूलने की कोशिश की है वह जल्द ही जनता के दिलो दिमाग़ से भी उतर जायेंगे.

अकसर लोग इस बात को भूल जाते हैं कि इतिहास बदला लेता है और वह बदला बहुत कड़ा और बेरहम होता है. बापू को जिस समय हमने मर जाने दिया उस समय शायद इस बात का अन्दाज़ा न था कि इस राष्ट्री पाप का बदला हमें अपने ख़ून से, अपनी मां बहनों की लाज से और अपने मासूम बच्चों की चीख़ पुकार से अदा करना होगा. आपसी दंगे फ़साद ही नहीं, बिहार, मद्रास, काठियावाड़ की भुखमरी, मज़दूरों की हड़ताल, नीचे तबक़े के लोगों की उथल पुथल और ग़ुस्सा, काला बाज़ारी और गिरानी की दिन-दिन बढ़ौती, कांगरेस कार करताओं का नैतिक पतन वग़ैरा

جھلسا رہے ہیں، سچ مچ یہ جاننا کٹھن ہوتا جارہا ہے کہ کون پے ہیں اور کون بیگانے، کون دوست ہیں اور کون دشمن۔

پردھان منتری جواہر لال نہرو سے لیکر نیچے کے نیتاؤں تک سب کا یہی رونا ہے کہ کانگریس اور دیش پتن کی اور جارہے ہیں۔ مگر پتن کی اور اس یاترا کو کوئی نہیں روک پارہا ہے۔ اسی ۱۵ اگست کو، آزادی دوس کو لوگوں نے جسطرح منایا، وہ میرے اس کتھن کا ثبوت ہے کہ اس آزادی سے لوگوں کی دلچسپی کم ہوتی جارہی ہے اور لوگ پریورتن کی کامنا کرنے لگے ہیں۔ آزادی کے تین سال بعد ہی آزادی لانے والوں پر سے لوگوں کا وشواس اٹھنے لگا ہے۔ اور مجھے صاف دکھائی دے رہا ہے کہ وہ دن دور نہیں جبکہ ان میں سے ادھک تر لوگوں کا نام لیوا بھی کوئی نہیں رہ جائیگا۔ مجھے لگتا ہے کہ جن لوگوں نے راشٹر پتا باپو اور اُن کے اپدیشوں کو بھولنے کی کوشش کی ہے وہ جلد ہی جنتا کے دل و دماغ سے بھی اتر جائینگے۔

اکثر لوگ اس بات کو بھول جاتے ہیں کہ اتہاس بدلہ لیتا ہے اور وہ بدلہ بہت کڑا اور بے رحم ہوتا ہے۔ باپو کو جس سمے ہم نے مرجانے دیا اُس سمے شاید اِسبات کا اندازہ نہ تھا کہ اِس راشٹری پاپ کا بدلہ ہمیں اپنے خون سے، اپنی ماں بہنوں کی لاج سے اور اپنے معصوم بچوں کی چیخ پکار سے ادا کرنا ہوگا۔ آپسی دنگے فساد ہی نہیں، بہار، مدراس، کاٹھیاواڑ کی بھکمری، مزدوروں کی ہڑتال، نیچے طبقے کے لوگوں کی اُتھل پتھل اور غصہ، کالا بازاری اور گرانی کی دن دن بڑھوتی، کانگریس کار کرتاؤں کا نیتک پتن وغیرہ

आखिर किस क़ौमी गिरावट और बदहाली के निशान हैं! जब विदेशी हुकूमत थी उस समय बापू की आवाज़ पर और कांगरेस के नेताओं की पुकार पर सारा देश बिहार के भूकम्प दुखियों की सहायता में जुट पड़ा था. मगर आज असाम की हालत पर क्या सचमुच हमारे नेता रहम खा रहे हैं और क्या हमारी राष्ट्री सरकार और हमारे देश की जनता सचमुच वह सब कुछ कर रही है जो उसे करना चाहिये था?

इसी तरह के सैकड़ों सवाल आज देश के सामने हैं. अनाज, कपड़े, घर और काम के सवाल दिनों दिन कठिन होते जा रहे हैं. लड़ाई का जो असर हमारे देश की आर्थिक और नैतिक जिन्दगी पर पड़ा था वह दूर होने के बजाय ज्यादा कठिन होता जा रहा है. शरनार्थियों के सवाल ने सरकारी इन्तज़ाम और जाति-प्रेम का नारा बुलन्द करने वाले फिरक़ा परस्तों का भाँडा फोड़ दिया है. जिस वक़्त यह झगड़े शुरू हुए उस समय लाख मना करने पर भी यह लोग फ़सादों को बढ़ावा देते थे. आज जब उसी सवाल ने अपना नक़ाब उतार फेंका और आध करोड़ आदमियों के बसाने का काम सामने आया तो सारे के सारे तीस मार खाँ जाने किस बिल में घुस गये.

इसी पृष्ठ भूमि यानी पस मंज़र में आज़ादी का दिन मनाया गया था. राज करने वाले यह भूलने लगे थे कि जिनके ऊपर वह राज कर रहे हैं उनकी रज़ामन्दी के बग़ैर वह एक दिन भी राज काज चला न सकेंगे. जनता से उनका सम्पर्क ही नहीं टूट चुका था बल्कि जनता उन्हें गुलछर्रे उड़ाने वाले समाज द्रोहियों में गिनने लगी

آخر کس قومی گراوٹ اور بدحالی کے نشان ھیں! جب ودیشی حکومت تھی اس سمے باپو کی آواز پر اور کانگریس کے نیتاؤں کی پکار پر سارا دیش بہار کے بھوکمپ دکھیوں کی سہایتا میں جٹ پڑا تھا. مگر آج آسام کی حالت پر کیا سچ مچ ھمارے نیتا رحم کھا رھے ھیں اور کیا ھماری راشٹری سرکار اور ھمارے دیش کی جنتا سچ مچ وہ سب کچھ کر رھی ھے جو اسے کرنا چاھئے تھا؟

اسی طرح کے سیکڑوں سوال آج دیش کے سامنے ھیں. اناج، کپڑے، گھر اور کام کے سوال دنوں دن کٹھن ھوتے جارھے ھیں. لڑائی کا جو اثر ھمارے دیش کی آرتھک اور نیتک زندگی پر پڑا تھا وہ دور ھونے کے بجائے زیادہ کٹھن ھوتا جارھا ھے. شرنارتھیوں کے سوال نے سرکاری انتظام اور جاتی پریم کا نعرہ بلند کرنیوالے فرقہ پرستوں کا بھانڈا پھوڑ دیا ھے. جسوقت یہ جھگڑے شروع ھوئے اس سمے لاکھ منع کرنے پر بھی یہ لوگ فسادوں کو بڑھاوا دیتے تھے. آج جب اسی سوال نے اپنا نقاب اتار پھینکا اور آدھ کروڑ آدمیوں کے بسانے کا کام سامنے آیا تو سارے کے سارے تیس مار خاں جانے کس بل میں گھس گئے.

اسی پرشٹھ بھومی یعنی پس منظر میں آزادی کا دن منایا گیا تھا. راج کرنے والے یہ بھولنے لگے تھے کہ جن کے اوپر وہ راج کر رھے ھیں انکی رضامندی کے بغیر وہ ایکدن بھی راج کاج چلا نہ سکینگے. جنتا سے انکا سمپرک ھی نہیں ٹوٹ چکا تھا بلکہ جنتا انہیں گلچھرے اڑانے والے سماج دروھیوں میں گننے لگی تھی.

थी . इस लिये, हालाँ कि इस जश्न और त्योहार के दिन यह तो हुआ कि एक बार लोगों को फिर पता चला कि भारत की छाती पर से गोरी हुकूमत का बोझ उठ गया है, मगर साथ ही उसे यह भी पता लगा कि उसके स्थान पर अधिक भारी बोझिल काली हुकूमत सवार है. उसे लगता रहा है कि यह हुकूमत किसी भी माने में पहले वाली हुकूमत से अच्छी नहीं है, क्योंकि इसके ज़रिये उसकी रोटी और उसके कपड़े की समस्या ज़रा भी हल नहीं हुई . इसके नतीजे में, जनता सोचने लगी है कि क्यों न अब इस हुकूमत को छोड़ कर किसी नई हुकूमत के क़ायम होने में मदद दी जाय. यही सवाल लोगों के दिल दिमाग़ में चक्कर काट रहा है . और अगर पिछली कांगरेस की तरह इस समय कोई भी दूसरी पार्टी ऐसी होती जिसे जनता का पूरा सहयोग प्राप्त होता तो अब तक वह शासन की बाग डोर अपने हाथ में ले चुकी होती.

मैंने इस लेख के शुरू में ही दोराहे की बात कही—पुरानी और नई ग़ुलामी का दोराहा ! अब, इस दोराहे पर खड़ी जनता सोच रही है कि वह क्या करे. पुराने रहबरों में से ज्यादा तर रहज़न बन गये हैं. जो बचे खुचे ईमानदार साथी हैं उनकी कुछ चलती नहीं. जनता की दिमाग़ी हालत कुछ ऐसी है कि वह पुराने लोगों से ऊब चुकी है, अगरचे नये लोगों पर भी उसे यक़ीन नहीं है. वह सोचती है कि जब इतने तपे तपाये लोग इतनी जल्दी ताक़त हाथ में आते ही गिर सकते हैं तो उन नये आदमियों से क्या आशा की जाय जो अभी जन सेवा के इम्तहान में पास ही नहीं हुए हैं.

इस तरह हम देखते हैं कि जनता में एक असमंजस है. वह

تھی. اسلئے، حالانکہ اس جشن اور تیوھار کے دن یہ تو ھوا کہ ایکبار لوگوں کو پھر پتہ چلا کہ بھارت کی چھاتی پر سے گوری حکومت کا بوجھ اٹھ گیا ھے مگر ساتھ ھی اُسے یہ بھی پتہ لگا کہ اُسکے استھان پر ادھک بھاری بوجھل کالی حکومت سوار ھے. اُسے لگتا رھا ھے کہ یہ حکومت کسی بھی معنی میں پہلے والی حکومت سے اچھی نہیں ھے، کیونکہ اس کے ذریعہ اُسکی روٹی اور اُسکے کپڑے کی سمسیا ذرا بھی حل نہیں ھوئی. اس کے نتیجے میں، جنتا سوچنے لگی ھے کہ کیوں نہ اب اس حکومت کو چھوڑ کر کسی نئی حکومت کے قائم ھونے میں مدد دی جائے. یہی سوال لوگوں کے دل دماغ میں چکر کاٹ رھا ھے. اور اگر پچھلی کانگریس کی طرح اس سمے کوئی بھی دوسری پارٹی ایسی ھوتی جسے جنتا کا پورا سہیوگ پراپت ھوتا تو ابتک وہ شاسن کی باگ ڈور اپنے ھاتھ میں لے چکی ھوتی.

میں نے اس لیکھ کے شروع میں ھی دوراھے کی بات کہی — پرانی اور نئی غلامی کا دوراھا ! اب، اس دوراھے پر کھڑی جنتا سوچ رھی ھے کہ وہ کیا کرے. پرانے رھبروں میں سے زیادہ تر رھزن بن گئے ھیں. جو بچے کھچے ایماندار ساتھی ھیں ان کی کچھ چلتی نہیں. جنتا کی دماغی حالت کچھ ایسی ھے کہ وہ پرانے لوگوں سے اُوب چکی ھے، اگرچہ نئے لوگوں پر بھی اُسے یقین نہیں ھے. وہ سوچتی ھے کہ جب اتنے تپے تپائے لوگ اتنی جلدی طاقت ھاتھ میں آتے ھی گر سکتے ھیں تو ان نئے آدمیوں سے کیا آشا کی جائے جو ابھی جن سیوا کے امتحان میں پاس ھی نہیں ھوئے ھیں.

اسطرح ھم دیکھتے ھیں کہ جنتا میں ایک اسمنجس ھے. وہ

अपना दिल मजबूत करके इधर या उधर फ़ैसला नहीं कर पा रही है. मगर यह हालत ठीक नहीं है. यह दिमागी कैफ़ियत बड़ी खतरनाक है क्योंकि ऐसी हालत में वह देश की तरक़्क़ी के किसी भी काम में जी खोल कर नहीं लग सकती. उसके मन में हमेशा यह शक बना रहता है कि वह जो कुछ कर या कह रही है वह सही भी है या नहीं.

आजादी के तीन वर्ष के बाद जहाँ देश और क़ौम को बहुत मज़बूत और खुश हाल होना चाहिये था वहाँ वह इस समय बहुत कमजोर और परेशान है. अमरीकी और बरतानी साम्राजवादी उसकी ओर दाँत लगाये हुए हैं. भारत-पाकिस्तान के आपसी झगड़े और भारत की भीतरी कमजोरी से फ़ायदा उठा कर वह किसी भी समय झपट कर आसकते हैं. भीतर ही भीतर लोग इतने असन्तुष्ट हैं कि उनका असन्तोष किसी भी समय ज्वालामुखी बनकर फूट सकता है. गहरी निराशा, असंतोष और अविश्वास की ज्वाला में झुलसता समाजी जीवन देश को किसी भी दिन ऐसे भयानक संकट में डाल सकता है जिससे बाहर निकलना शायद उसके लिये नामुमकिन हो जायगा. उस समय हमारे इस पुराने देश, इसकी सभ्यता, संस्कृति, आर्थिक और समाजी जीवन का क्या होगा ? जनता की आजादी और तरक़्क़ी का क्या होगा ?

इस खतरनाक संकट के समय हम अपने नेताओं और देशवासियों से यही कह सकते हैं :

"बहुत गई, थोड़ी रही, अजहूँ चेत अचेत"

اپنا دل مضبوط کرکے ادھر یا ادھر فیصلہ نہیں کر پارہی ہے. مگر یہ حالت ٹھیک نہیں ہے. یہ دماغی کیفیت بڑی خطرناک ہے کیونکہ ایسی حالت میں وہ دیش کی ترقی کے کسی بھی کام میں جی کھول کر نہیں لگ سکتی. اس کے من میں ہمیشہ یہ شک بنا رہتا ہے کہ وہ جو کچھ کر یا کہہ رہی ہے وہ صحیح بھی ہے یا نہیں.

آزادی کے تین برس کے بعد جہاں دیش اور قوم کو بہت مضبوط اور خوشحال ہونا چاہئے تھا وہاں وہ اس سمے بہت کمزور اور پریشان ہے. امریکی اور برطانی سامراجوادی اسکی اور دانت لگائے ہوئے ہیں. بھارت پاکستان کے آپسی جھگڑے اور بھارت کی بھیتری کمزوری سے فائدہ اٹھاکر وہ کسی بھی سمے جھپٹ کر آسکتے ہیں. بھیتر ہی بھیتر لوگ اتنے اسنتشٹ ہیں کہ ان کا اسنتوش کسی بھی سمے جوالا مکھی بن کر پھوٹ سکتا ہے. گہری نراشا، اسنتوش اور اوشواس کی جوالا میں جھلستا سماجی جیون دیش کو کسی بھی دن ایسے بھیانک سنکٹ میں ڈال سکتا ہے جس سے باہر نکلنا شاید اس کے لئے ناممکن ہو جائیگا. اس سمے ہمارے اس پرانے دیش، اس کی سبھیتا، سنسکرتی، آرتھک اور سماجی جیون کا کیا ہوگا؟ جنتا کی آزادی اور ترقی کا کیا ہوگا؟

اس خطرناک سنکٹ کے سمے ہم اپنے نیتاؤں اور دیش واسیوں سے یہی کہہ سکتے ہیں :

"بہت گئی، تھوڑی رہی، اجہوں چیت اچیت."

ऐटम–मन्थन (मथना)

(भाई जगदीश एम. एस सी.)

[इस लेख में विद्वान लेखक ने ऐटम क्या है और ऐटम बम कैसे बनता है इन गहरे मामलों को बहुत आसान और दिलचस्प ढंग से समझाया है. लेख ज़रा ध्यान से पढ़ने लायक़ है. इस सिलसिले के और लेख भी आगे 'नया हिन्द' में निकलेंगे.

—एडीटर]

समुद्र मन्थन की कथा तो आप ने सुनी होगी. देवताओं और दानवों (शैतानों) ने शेषनाग की रस्सी और पर्वत को राई बनाकर समुद्र को मथ कर बहुत सी अच्छी और कुछ बुरी चीज़ें निकालीं. अमृत और लक्ष्मी जी देवताओं को मिलीं और मदिरा यानी शराब दानवों को. शिवजी का एक महाविस धारन करना भी इस कथा की एक कड़ी है.

यह तो हुई पुरानों की बात जिसको हम लोग मनगढ़ंत समझते हैं. पर आज कल जो इसका नमूना मिला है उस को देख कर सोचना पड़ता है कि क्या यह कथाएँ कुछ तारीख़ी घटनाओं को तरफ़ इशारा नहीं करतीं. आख़िर कथा गढ़ने का भी तो कुछ मतलब होता है और उस की जड़ में कुछ न कुछ सबक़ इन्सान के लिये होता है

अगर आप साइन्स को समुद्र मान लें तो इस कथा के सारे पात्र भी बने बनाए मिल जाते हैं. 'अच्छी चीज़ें' भी मिली हैं. डाक, तार, रेडियो, रोगों के नए इलाज, हवाई जहाज़ वग़ैरा और बुरी भी जैसे

ایٹم منتھن .(متھنا)

(بھائی جگدیش ایم - ایس سی)

[اس لیکھ میں ودوان لیکھک نے ایٹم کیا ہے اور ایٹم بم کیسے بنتا ہے اِن گہرے معاملوں کو بہت آسان اور دلچسپ ڈھنگ سے سمجھایا ہے . لیکھ ذرا دھیان سے پڑھنے لائق ہے . اس سلسلے کے اور لیکھ بھی آگے 'نیا ھند' میں نکلیں گے .

—اڈیٹر]

سمدر منتھن کی کتھا تو آپ نے سنی ہوگی . دیوتاؤں اور دانوں (شیطانوں) نے شیش ناگ کی رسی اور پربت کی رئی بنا کر سمدر کو متھ کر بہت سی اچھی اور کچھ بری چیزیں نکالیں . امرت اور لکشمی جی دیوتاؤں کو ملیں اور مدرا یعنی شراب دانوں کو . شیو جی کا ایک مہابس دھارن کرنا بھی اس کتھا کی ایک کڑی ہے .

یہ تو ہوئی پورانوں کی بات جس کو ہم لوگ من گھڑنت سمجھتے ہیں . پر آج کل جو اِس کا نمونہ ملا ہے اُس کو دیکھکر سوچنا پڑتا ہے کہ کیا یہ کتھائیں کچھ تاریخی گھٹناؤں کی طرف اشارہ نہیں کرتیں . آخر کتھا گھڑنے کا بھی تو کچھ مطلب ہوتا ہے اور اُس کی جڑ میں کچھ نہ کچھ سبق انسان کے لئے ہوتا ہے .

اگر آپ سائنس کو سمدر مان لیں تو اس کتھا کے سارے پاتر بھی بنے بنائے مل جاتے ہیں . اچھی چیزیں بھی ملی ہیں . ڈاک، تار، ریڈیو، روگوں کے نئے علاج، ہوائی جہاز وغیرہ . اور بری بھی جیسے

बीमारियों के जर्म, तोप, बन्दूक और लड़ाई के हथियार, देवता और दानव आप अपने मन में पायेंगें. इन में संग्राम हमेशा होता रहता है. साइन्सी खोज लगाने वालों में देवता और दानव दोनों पाए जाते हैं. जितने बिस समुद्र मन्थन में निकले उन से ज्यादा साइन्स-मन्थन में निकले. उन सब को तो जनता महादेव पी गई. हाल में निकला ऐटम बम और जल्दी ही निकलने को है हाइड्रोजन बम. ताक़त के पुजारी इन्सान के लिये क्या यह बम महा बिस साबित नहीं होंगे? सवाल है कि इस महा बिस को कौन पियेगा. इससे कहीं देवता और दानव दोनों का ही नाश न हो जाय.

आख़िर यह ऐटम बम है क्या जिस से सारी दुनिया में तहलका मच गया है? इस ने जापान के शहर हीरोशिमा और नागासाकी का लाखों रहने वालों समेत सफ़ाया कर दिया. इस बम का असर बादको आने वाली इन्सानी नसल और पेड़ पौधों पर भी पड़ता है.

इसका भेद छिपा है मैटर (Matter) के उस छोटे से छोटे टुकड़े में जिस को हम ऐटम कहते हैं. सब तत्वों यानी उनसुरों (Elements) के अलग अलग ऐटम होते हैं. तत्व 92 तरह के हैं. हर एक के अलग अलग वज़न के ऐटम होते हैं. सब से हलका ऐटम हाइड्रोजन (Hydrogen) का होता है. सब से भारी यूरेनियम (Uranium) का. यह हाइड्रोजन (Hydrogen) के ऐटम से 12 गुना भारी होता है.

पहिले साइन्सदां ऐटम को 'अकट' यानी 'न कट सकने वाला' मानते थे. पर रेडियम की, जो एक भारी तत्व (Element) है, जांच करने पर पता चला कि इस का ऐटम अपने आप ही टूटता रहता.

بیماریوں کے جرم، توپ، بندوق، اور لڑائی کے ہتھیار. دیوتا اور دانو آپ اپنے من میں پائیں گے. ان میں سنگرام ہمیشہ ہوتا رہتا ہے. سائنسی کھوج لگانے والوں میں دیوتا اور دانو دونوں پائے جاتے ہیں. جتنے بس سمدر منتھن میں نکلے اُن سے زیادہ سائنس منتھن میں نکلے. اُن سب کو تو جنتا مہادیو پی گئی. حال میں نکلا ایٹم بم اور جلدی ہی نکلنے کو ہے ہائیڈروجن بم. طاقت کے پجاری انسان کے لئے کیا یہ بم مہابس ثابت نہیں ہونگے؟ سوال ہے کہ اس مہابس کو کون پئے گا. اس سے کہیں دیوتا اور دانو دونوں کا ہی ناش نہ ہوجائے.

آخر یہ ایٹم بم ہے کیا جس سے ساری دنیا میں تہلکہ مچ گیا ہے؟ اِس نے جاپان کے شہر ہیروشیما اور ناگاساکی کا لاکھوں رہنے والوں سمیت صفایا کر دیا. اس بم کا اثر بعد کی آنے والی انسانی نسل اور پیڑ پودوں پر بھی پڑتا ہے.

اس کا بھید چھپا ہے میٹر (Matter) کے اُس چھوٹے سے چھوٹے ٹکڑے میں جس کو ہم ایٹم کہتے ہیں. سب تتووں یعنی عنصروں (Elements) کے الگ الگ ایٹم ہوتے ہیں. تتو 92 طرح کے ہیں. ہر ایک کے الگ الگ وزن کے ایٹم ہوتے ہیں. سب سے ہلکا ایٹم ہائیڈروجن (Hydrogen) کا ہوتا ہے. سب سے بھاری یورینیم (Uranium) کا. یہ ہائیڈروجن (Hydrogen) کے ایٹم سے 12 گنا بھاری ہوتا ہے.

پہلے سائنسداں ایٹم کو 'اکٹ' یعنی 'نہ کٹ سکنے والا' مانتے تھے. پر ریڈیم کی، جو ایک بھاری تتو (Element) ہے، جانچ کرنے پر پتہ چلا کہ اس کا ایٹم اپنے آپ ہی ٹوٹتا رہتا

है. इस टूटने से और भी छोटे छोटे टुकड़े निकलते हैं जो बड़ी तेज़ी से ऐटम के बाहर आते हैं. साथ ही बिजली की एक किरन (Atomic ray) भी निकलती है. इस से यह विश्वास तो ग़लत हो गया कि ऐटम अकट होते हैं. अब सब लोग इस खोज में लग गए कि ऐटम के अन्दर की जांच की जाये. मुश्किल यह थी कि ऐटम इतना छोटा होता है कि न वह दिखाई देता है और न पकड़ में आता है. एक सुई की नोक पर दस करोड़ ऐटम रखे जा सकते हैं.

भला इतनी छोटी चीज़ के अंदर का हाल कैसे मालूम किया जा सकता था पर रेडियम (Radium) के किरन-फिकाव से ऐटम पोला साबित हो ही चुका था. अब उसकी पोल में दाख़िल होने के लिये ऐटम से भी छोटी चीज़ की ज़रूरत थी. वह भी लगे हाथों मिल गई. रेडियम के ऐटम के अंदर से जो छोटे छोटे टुकड़े निकलते हैं वह दो तरह के होते हैं. एक हलका और एक भारी. हलका वाला हाइड्रोजन के ऐटम से भी 1/ 800 गुना हलका होता है. इस का नाम इलेक्ट्रोन (Electron) है. भारी वाला हाइड्रोजन के ऐटम के बराबर वज़नी. इस का नाम प्रोटोन (Proton) रखा गया. प्रोटोन इलकट्रोन से 1800 गुना भारी होता है. दूसरी अजीब बात यह थी कि यह दोनों टुकड़े बिजली से भरे (Electrically-charged) हैं. इलकट्रोन पर 'नरम' (Negative) बिजली और प्रोटोन पर 'गरम' (Positive) बिजली. यह दोनों ही ऐटम के मुक़ाबले में एक लाख गुना छोटे होते हैं. जैसे पहाड़ के मुक़ाबले में राई के दाने. रेडियम से एक दूसरा टुकड़ा भी निकलता है जो आकार में प्रोटोन

ہے . اس ٹوٹنے سے اور بھی چھوٹے چھوٹے ٹکڑے نکلتے ہیں جو بڑی تیزی سے ایٹم کے باہر آتے ہیں . ساتھ ہی بجلی کی ایک کرن (Atomic ray) بھی نکلتی ہے . اس سے یہ وشواس تو غلط ہوگیا کہ ایٹم اکٹ ہوتے ہیں . اب سب لوگ اس کھوج میں لگ گئے کہ ایٹم کے اندر کی جانچ کی جائے . مشکل یہ تھی کہ ایٹم اتنا چھوٹا ہوتا ہے کہ نہ وہ دکھائی دیتا ہے اور نہ پکڑ میں آتا ہے . ایک سوئی کی نوک پر دس کروڑ ایٹم رکھے جاسکتے ہیں .

بھلا اتنی چھوٹی چیز کے اندر کا حال کیسے معلوم کیا جاسکتا تھا . پر ریڈیم (Radium) کے کرن پھیلاؤ سے ایٹم پولا ثابت ہو ہی چکا تھا . اب اس کی پول میں داخل ہونے کے لئے ایٹم سے بھی چھوٹی چیز کی ضرورت تھی . وہ بھی لگے ہاتھوں مل گئی . ریڈیم کے ایٹم کے اندر سے جو چھوٹے چھوٹے ٹکڑے نکلتے ہیں وہ دو طرح کے ہوتے ہیں . ایک ہلکا اور ایک بھاری . ہلکا والا ہائیڈروجن کے ایٹم سے بھی 1/1800 گنا ہلکا ہوتا ہے . اس کا نام الیکٹرون (Electron) ہے . بھاری والا ہائیڈروجن کے ایٹم کے برابر وزنی . اس کا نام پروٹون (Proton) رکھا گیا . پروٹون الیکٹرون سے 1800 گنا بھاری ہوتا ہے . دوسری عجیب بات یہ تھی کہ یہ دونوں ٹکڑے بجلی سے بھرے (Electrically-charged) ہیں . الیکٹرون پر 'نرم' (Negative) بجلی اور پروٹون پر 'گرم' (Positive) بجلی . یہ دونوں ہی ایٹم کے مقابلے میں ایک لاکھ گنا چھوٹے ہوتے ہیں . جیسے پہاڑ کے مقابلے میں رائی کے دانے . ریڈیم سے ایک دوسرا ٹکڑا بھی نکلتا ہے جو آکار میں پروٹون

भारी. इस पर बिजली भी प्रोटोन की तरह 'गरम' यानी 'पाज़ीटिव' (Positive) होती है. इस का नाम एलफ़ा-पारटिकिल (Alpha-particle) रखा गया.

इस खोखले ऐटम का भांडाफोड़ करने के लिये तेज़ चाल से चलने वाले यह छोटे छोटे इलकट्रोन, प्रोटोन और एलफ़ा-पारटिकिल मिल गए. सब से भारी होने की वजह से एलफ़ा-पारटिकिल ऐटम के अन्दर दूर तक पहुँच जाता है. इलकट्रोन इतनी दूर तक नहीं पहुँच पाता. एलफ़ा-पारटिकिल पहिले तो रुकता ही मुशकिल से है. दूसरे इस की चोट ऐटम के अन्दर के हिस्सों पर ज़ोरों की पड़ती है और ऐटम के टूट जाने की ज़्यादा सम्भावना रहती है.

इन इलकट्रोन, प्रोटोन और एलफ़ा-पारटिकिल नाम के हथौड़ों से साइन्स वालों ने 92 तरह के तत्वों के ऐटमों पर चोटें लगानी शुरू कर दीं. दिखाई तो न ऐटम ही देता है और न उस से भी छोटे यह इलकट्रोन, प्रोटोन वग़ैरा, पर इन के हवा में गुज़रने से एक रोशनी और बिजली की चमकती लकीर बनती थी. इस को अंधेरे में ख़ुर्दबीन (Microscope) से देखने पर यह अन्दाज़ा हो सकता था कि ऐटम पर क्या असर हुआ. इन असरों को साइन्स वाले इस तरह जानने लगे:—जब चमकती हुई लकीर बिलकुल सीधी बनती थी तब वह यह समझ लेते थे कि ऐटम के पोले हिस्से में से होकर हथौड़ा साफ़ निकल गया. लेकिन जब चमकती हुई लकीर ऐटम से टकरा कर फिर पीछे को लौटती थी या ऐटम से टकरा कर कोना काटती हुई दाएँ या बाएँ कतरा जाती थी तो समझते थे कि हथौड़ा ऐटम के बीच के हिस्से से टकराया. तीसरे यह कि जब उनको फेंका

بھاری . اس پر بجلی بھی پروٹون کی طرح 'گرم' یعنی 'پوزیٹو' (Positive) ہوتی ہے . اس کا نام الفا پارٹیکل (Alpha-Particle) رکھا گیا .

اس کھوکھلے ایٹم کا بھانڈا پھوڑ کرنے کے لئے تیز چال سے چلنے والے یہ چھوٹے چھوٹے الیکٹرون' پروٹون اور الفا پارٹیکل مل گئے . سب سے بھاری ہونے کی وجہ سے الفا پارٹیکل ایٹم کے اندر دور تک پہنچ جاتا ہے . الیکٹرون اتنی دور تک نہیں پہنچ پاتا . الفاپارٹیکل پہلے تو رکتا ہی مشکل سے ہے . دوسرے اس کی چوٹ ایٹم کے اندر کے حصوں پر زوروں کی پڑتی ہے اور ایٹم کے ٹوٹ جانے کی زیادہ سمبھاونا رہتی ہے .

ان الیکٹرون پروٹون اور الفاپارٹیکل نام کے ہتھوڑوں سے سائنس والوں نے 92 طرح کے تتووں کے ایٹموں پر چوٹیں لگانی شروع کردیں . دکھائی تو نہ ایٹم ہی دیتا ہے اور نہ اس سے بھی چھوٹے یہ الیکٹرون ' پروٹون وغیرہ . پر ان کے ہوا میں گزرنے سے ایک روشنی اور بجلی کی چمکتی لکیر بنتی تھی . اس کو اندھیرے میں خوردبین (Microscope) سے دیکھنے پر یہ اندازہ ہوسکتا تھا کہ ایٹم پر کیا اثر ہوا . ان اثروں کو سائنس والے اس طرح جاننے لگے :—جب چمکتی ہوئی لکیر بالکل سیدھی بنتی تھی تب وہ یہ سمجھ لیتے تھے کہ ایٹم کے پولے حصے میں سے ہوکر ہتھوڑا صاف نکل گیا . لیکن جب چمکتی ہوئی لکیر ایٹم سے ٹکرا کر پھر پیچھے کو لوٹتی تھی یا ایٹم سے ٹکرا کر کونا کاٹتی ہوئی دائیں یا بائیں کترا جاتی تھی تو سمجھتے تھے کہ ہتھوڑا ایٹم کے بیچ کے حصے سے ٹکرایا . تیسرے یہ کہ جب انکا پھینکا

हुआ हथौड़ा ऐटम के बीच के हिस्से से टकरा कर आगे की तरफ़ एक साथ दायें बायें दो चमकती लकीरें बनाता था तो वह यह समझ लेते थे कि ऐटम के बीच का हिस्सा टूट गया और उसका एक टुकड़ा टूट कर चमकती हुई लकीर बनाता हुआ भाग गया.

इस खोज से मालूम हुआ कि ऐटम दो हिस्सों में बँटा है एक बाहरी और एक भीतरी हिस्सा. बाहरी हिस्से में हलके हलके इलकट्रोनों का झुन्ड रहता है, और भीतरी वज़नी और ठोस हिस्से में प्रोटोनों का झुन्ड जिस में ऐटम का सारा मसाला होता है. इन दोनों झुन्डों की बिजली अलग अलग होती है. इसी वजह से बाहरी इलकट्रोन का झुन्ड बड़ी तेज़ी से भीतरी प्रोटोन के झुन्ड के चारों तरफ़ चक्कर काटता रहता है. और यह बाहरी भीतरी झुन्ड मिल कर ऐटम बनता है.

हाइड्रोजन के ऐटम के अन्दर एक प्रोटोन होता है और एक इलकट्रोन उस के चारों तरफ़ चक्कर काटता रहता है. हाइड्रोजन के ऐटम से भारी ऐटम के अन्दर एक से ज्यादा प्रोटोन और बाहर एक से ज्यादा इलकट्रोन होते हैं. यूरेनियम के ऐटम में 92 प्रोटोन के चारों तरफ़ 92 इलकट्रोन चक्कर लगाते रहते हैं. हाइड्रोजन के बाद जो तत्व आता है उसका नाम हीलियम (helium) है. यह हाइड्रोजन से चार गुना भारी होता है. इस ऐटम के अन्दर के बीज में चार प्रोटोन होते हैं. जिनमें दो इलकट्रोन भी चिपके रहते हैं. इस ठोस बीज के चारों तरफ़ दो इलकट्रोन चक्कर काटते रहते हैं. इसी ठोस हिस्से का नाम एलफ़ा-पारटिकिल है जो रेडियम के ऐटम के

ہوا ہتھوڑا ایٹم کے بیچ کے حصے سے ٹکرا کر آگے کی طرف ایک ساتھ دائیں بائیں دو چمکتی لکیریں بناتا تھا تو وہ یہ سمجھ لیتے تھے کہ ایٹم کے بیچ کا حصہ ٹوٹ گیا اور اسکا ایک ٹکڑا ٹوٹ کر چمکتی ہوئی لکیر بناتا ہوا بھاگ گیا۔

اِس کھوج سے معلوم ہوا کہ ایٹم دو حصوں میں بٹا ہے۔ ایک باہری اور ایک بھیتری حصہ۔ باہری حصے میں ہلکے ہلکے الیکٹرونوں کا جھنڈ رہتا ہے اور بھیتری وزنی اور ٹھوس حصے میں پروٹونوں کا جھنڈ جس میں ایٹم کا سارا مسالا ہوتا ہے۔ ان دونوں جھنڈوں کی بجلی الگ الگ ہوتی ہے۔ اسی وجہ سے باہری الیکٹرون کا جھنڈ بڑی تیزی سے بھیتری پروٹون کے جھنڈ کے چاروںطرف چکر کاٹتا رہتا ہے۔ اور یہ باہری بھیتری جھنڈ مل کر ایٹم بنتا ہے۔

ہائیڈروجن کے ایٹم کے اندر ایک پروٹون ہوتا ہے اور ایک الیکٹرون اُس کے چاروںطرف چکر کاٹتا رہتا ہے۔ ہائیڈروجن کے ایٹم سے بھاری ایٹم کے اندر ایک سے زیادہ پروٹون اور باہر ایک سے زیادہ الیکٹرون ہوتے ہیں۔ یورینیم کے ایٹم میں 92 پروٹون کے چاروںطرف 92 الیکٹرون چکر لگاتے رہتے ہیں۔ ہائیڈروجن کے بعد جو تتو آتا ہے اُس کا نام ہیلیم (Helium) ہے۔ یہ ہائیڈروجن سے چارگنا بھاری ہوتا ہے۔ اس ایٹم کے اندر کے بیج میں چار پروٹون ہوتے ہیں جن میں دو الیکٹرون بھی چپکے رہتے ہیں۔ اس ٹھوس بیج کے چاروںطرف دو الیکٹرون چکر کاٹتے رہتے ہیں۔ اس ٹھوس حصے کا نام الفا پارٹیکل ہے جو ریڈیم کے ایٹم کے

अन्दर से निकलता है. हाइड्रोजन के ठोस बीज का नाम तो प्रोटोन है ही जैसा पहिले लिखा जा चुका है.

आप ने देखा कि जिस ऐटम को हम लोग अकट मानते थे वह घड़ी से कहीं ज्यादा बारीक पुरज़ों की ऐंचक पेंची मशीन निकला. इसी ऐंचक पेंची मशीन के अन्दर का प्रोटोन-झुन्ड जब टूटता या बनता है तो बड़ी भारी ताक़त बिजली और गरमी के रूप में इससे बाहर निकलती है और एक एक्स-रे (X-ray) की तरह की लहर भी निकती है जो ऐटम में से निकल कर आने वाली इन्सानी नसल पर जबरदस्त असर डाल देती है. यह ताक़त उस ताक़त से कई करोड़ गुना ज्यादा होती है जो कोयले या लकड़ी के जलने से पैदा हो सकती है.

साइन्स वाले इस नतीजे पर पहुँचे कि 92 क़िस्म के तत्व दो या तीन तरह की ईंटों से बने हैं जिनका नाम इलक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन है. न्यूट्रोन प्रोटोन के बराबर भारी तो होता है पर उस में बिजली नहीं भरी होती. प्रोटोन और एलफा पार्टिकल दोनों गरम बिजली (Positive Electricity) से भरे होते हैं और जब यह ऐटम-बीज (Uncleus) के पास पहुंचते हैं तो उस की गरम बिजली से टकरा कर वापस चले आते हैं. और ऐटम-बीज के टूटने की संभावना कम रहती है. न्यूट्रोन में बिजली नहीं होती इस लिये यह ऐटम-बीज की बिजली की दीवार को पार करता हुआ ऐटम-बीज को भेद कर जाता है और ऐटम-बीज के अन्दर के बिजली के खिंचे ताने बाने को बिगाड़ देता है. यह ताना बाना ऐटम-बीज के अन्दर के प्रोटोन

اندر سے نکلتا ہے ۔ ہائیڈروجن کے ٹھوس بیج کا نام تو پروٹون ہے ہی جیسا پہلے لکھا جا چکا ہے ۔

آپ نے دیکھا کہ جس ایٹم کو ہم لوگ اکٹ مانتے تھے وہ گھڑی سے کہیں زیادہ باریک پرزوں کی اینچک پینچی مشین نکلا ۔ اسی اینچک پینچی مشین کے اندر کا پروٹون جھنڈ جب ٹوٹتا یا بنتا ہے تو بڑی بھاری طاقت بجلی اور گرمی کے روپ میں اس سے باہر نکلتی ہے اور ایک ایکس رے (X-ray) کی طرح کی لہر بھی نکلتی ہے جو ایٹم میں سے نکل کر آنے والی انسانی نسل پر زبردست اثر ڈال دیتی ہے ۔ یہ طاقت اس طاقت سے کئی کروڑ گونا زیادہ ہوتی ہے جو کوئلے یا لکڑی کے جلنے سے پیدا ہو سکتی ہے ۔

سائنس والے اس نتیجے پر پہنچے کہ 92 قسم کے تتو دو یا تین طرح کی اینٹوں سے بنے ہیں جن کا نام الیکٹرون ' پروٹون اور نیوٹرون ہے ۔ نیوٹرون پروٹون کے برابر بھاری تو ہوتا ہے پر اس میں بجلی نہیں بھری ہوتی ۔ پروٹون اور الفا پارٹیکل دونوں گرم بجلی (Positive Electricity) سے بھرے ہوتے ہیں اور جب یہ ایٹم بیج (Nucleus) کے پاس پہونچتے ہیں تو اس کی گرم بجلی سے ٹکرا کر واپس چلے آتے ہیں اور ایٹم بیج کے ٹوٹنے کی سمبھاونا کم رہتی ہے ۔ نیوٹرون میں بجلی نہیں ہوتی اس لئے یہ ایٹم بیج کی بجلی کی دیوار کو پار کرتا ہوا ایٹم بیج کو بھید کر جاتا ہے اور ایٹم بیج کے اندر کے بجلی کے کھنچے تانے بانے کو بگاڑ دیتا ہے ۔ یہ تانا بانا ایٹم بیج کے اندر کے پروٹون

और इलकट्रोन में बुना रहता है और यह ताना बाना न्यूट्रोन के घुस जाने से टूट जाता है. कुछ प्रोटोन और इलकट्रोन इस ताने बाने में से इस तरह बाहर भाग जाते हैं जैसे कड़ी कमान का तीर. और बाक़ी बचे हुओं में से एक नये तत्व का जन्म होता है. साथ ही एक बहुत बड़ी ताक़त जो ऐटम-बीज के अन्दर के ताने बाने में छिपी हुई थी गरमी और बिजली के रूप में बाहर निकल पड़ती है. कभी कभी ऐसा भी होता है कि न्यूट्रोन अन्दर जाकर ऐटम-बीज में मिल जाता है और एक ज़्यादा भारी नए तत्व का जन्म होता है. इसी तरह से साइन्स वालों ने सोने के ऐटम से पारा और पारे के ऐटम से सोना बना लिया, ऐटम-बीज में से केवल उसकी ईंटें घटा बढ़ा कर.

देखा आपने. आख़िर पारे से सोना बन ही गया. यह पारस पत्थर की ही तलाश थी जिस ने पांच सौ बरस पहिले रसायन शास्त्र (Chemistry) को जन्म दिया. ऐटम-मन्थन से यह एक नई चीज़ निकली.

आप यह न समझें कि आप जितना चाहें उतना सोना बना सकते हैं. ऐसी बात नहीं है. इस तरह जो सोना बन सकता है वह इतना थोड़ा होता है कि शायद ख़ुर्दबीन से भी दिखाई न दे. यह क्यों ? इस की क्या वजह ? याद रखिये कि ऐटम-बीज ऐटम के अन्दर इतनी थोड़ी जगह लेता है जितनी एक मक्खी किसी घड़े के बीचों बीच में. अब अगर आप आंख बन्द कर के एक सींक घड़े के मुंह में डाल कर इस मक्खी को छेदने की कोशिश करें तो शायद लाखों दफ़ा कोशिश करने के बाद आप एक बार सफल हों. इसी

اور الیکٹرون میں بنا رہتا ہے اور یہ تانا بانا نیوٹرون کے گھس جانے سے ٹوٹ جاتا ہے . کچھ پروٹون اور الیکٹرون اس تانے بانے میں سے اس طرح باہر بھاگ جاتے ہیں جیسے کڑی کمان کا تیر اور باقی بچے ہوؤں میں سے ایک نئے تتو کا جنم ہوتا ہے . ساتھ ہی ایک بہت بڑی طاقت جو ایٹم بیج کے اندر کے تانے بانے میں چھپی ہوئی تھی گرمی اور بجلی کے روپ میں باہر نکل پڑتی ہے . کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ نیوٹرون اندر جاکر ایٹم بیج میں مل جاتا ہے اور ایک زیادہ بھاری نئے تتو کا جنم ہوتا ہے . اسی طرح سے سائنس والوں نے سونے کے ایٹم سے پارہ اور پارے کے ایٹم سے سونا بنا لیا ' ایٹم بیج میں سے کیول اس کی اینٹیں گھٹا بڑھا کر .

دیکھا آپ نے . آخر پارے سے سونا بن ہی گیا . یہ پارس پتھر کی ہی تلاش تھی جس نے پانچ سو برس پہلے رسائن شاستر (Chemistry) کو جنم دیا . ایٹم ملتھن سے یہ ایک نئی چیز نکلی .

آپ یہ نہ سمجھیں کہ آپ جتنا چاہے اتنا سونا بنا سکتے ہیں . ایسی بات نہیں ہے . اس طرح جو سونا بن سکتا ہے وہ اتنا تھوڑا ہوتا ہے کہ شاید خوردبین سے بھی دکھائی نہ دے . یہ کیوں ؟ اسکی کیا وجہ ؟ یاد رکھئے کہ ایٹم بیج ایٹم کے اندر اتنی تھوڑی جگہ لیتا ہے جتنی ایک مکھی کسی گھڑے کے بیچوں بیچ میں . اب اگر آپ آنکھ بند کرکے ایک سینک گھڑے کے منہ میں ڈال کر اس مکھی کو چھیدنے کی کوشش کریں تو شاید لاکھ دفعہ کوشش کرنے کے بعد آپ ایک بار سپھل ہوں . اسی

तरह लाखों न्यूट्रोन ऐटम के अन्दर भेजने पर शायद एक ही ऐसा हो जो ऐटम-बीज के पास पहुँच जाय. इस तरह बहुत कम मात्रा में सोना बन सकता है.

मगर खोज तो उस कुन्जी की थी जो ऐटम की अपार ताक़त की कोठरी इन्सान के लिये खोल सके. इस के लिये ज़रूरत हुई पहिले तो न्यूट्रोन बनाने वाली चीज़ की. दूसरे किसी ऐसे तत्व की जो दुनिया में आसानी के साथ मिल भी जाये और जिसके ऐटम के टूटने पर ज़्यादा से ज़्यादा मात्रा में ताक़त मिल सके.

सन् १६३६ ई० में एक जरमन रसायन शास्त्री (Chemist) ओटोहान (Ottohahn) ने यह मालूम कर लिया कि जब यूरेनियम धातु के एक तरह के ऐटम U235 पर धीमी चाल का न्यूट्रोन टकराता है तो U235 के ऐटम के दो टुकड़े हो जाते हैं. साथ ही दो न्यूट्रोन भी बड़ी तेज़ी के साथ ऐटम-बीज में से निकलते हैं. और दो हज़ार करोड़ वोल्ट (Volt) की बिजली की ताक़त टूटे हुए ऐटम-बीज में से फूट पड़ती हैं. अगर किसी तरह इन दो न्यूट्रेन की चाल को भी धीमा कर दिया जाय तो बजाय बाहर हवा में भाग जाने के वह न्यूट्रोन पास के U235 के दूसरे दो ऐटम को तोड़ सकते हैं. इस तरह टूटने वाले U235 के एटमो की तादाद एक से दो और दो से चार होती हुई बढ़ती ही जायगी और पलक मारते ही करोड़ों की तादाद में U235 के ऐटम फट जायँगे और ऐटम बम का बनना मुमकिन हो सकेगा. ओटोहान को दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद इस बड़ी खोज पर नोबेल प्राइज़ (Nobel Prize) इनाम मिला. यूँ समझिये कि अगर ईंट पर ईंट रख कर आप एक घरौंदा बनायें और उस पर एक ईंट फेंक दें

طرح لاکھوں نیوٹرون ایٹم کے اندر بھیجنے پر شاید ایک ہی ایسا ہو جو ایٹم بیج کے پاس پہنچ جائے ۔ اس طرح بہت کم ماترا میں سونا بن سکتا ہے ۔

مگر کھوج تو اُس کنجی کی تھی جو ایٹم کی اپار طاقت کی کوٹھری انسان کے لئے کھول سکے ۔ اس کے لئے ضرورت ہوئی پہلے تو نیوٹرون بنانے والی چیز کی ۔ دوسرے کسی ایسے تتو کی جو دنیا میں آسانی کے ساتھ مل بھی جائے اور جس کے ایٹم کے ٹوٹنے پر زیادہ سے زیادہ ماترا میں طاقت مل سکے ۔

سن ۱۹۳۹ع میں ایک جرمن رسائن شاستری (Chemist) اوتوھان (Ottohahn) نے یہ معلوم کرلیا کہ جب یوریشیم دھات کے ایک طرح کے ایٹم U235 پر دھیمی چال کا نیوٹرون ٹکراتا ہے تو U235 کے ایٹم کے دو ٹکڑے ہوجاتے ہیں ۔ ساتھ ہی دو نیوٹرون بھی بڑی تیزی کے ساتھ ایٹم بیج میں سے نکلتے ہیں اور دو ہزار کروڑ وولٹ (Volt) کی بجلی کی طاقت ٹوٹے ہوئے ایٹم بیج میں سے پھوٹ پڑتی ہے ۔ اگر کسی طرح اِن دو نیوٹرون کی چال کو بھی دھیما کردیا جائے تو بجائے باہر ہوا میں بھاگ جانے کے وہ نیوٹرون پاس کے U235 کے دوسرے دو ایٹم کو توڑ سکتے ہیں ۔ اس طرح ٹوٹنے والے U235 کے ایٹموں کی تعداد ایک سے دو اور دو سے چار ہوتی ہوئی بڑھتی ہی جائیگی اور پلک مارتے ہی کروڑوں کی تعداد میں U235 کے ایٹم پھٹ جائینگے اور ایٹم بم کا بننا ممکن ہو سکیگا ۔ اوتوھان کو دوسری بڑی لڑائی کے بعد اِس بڑی کھوج پر نوبل پرائز (Nobel Prize) انعام ملا ۔ یوں سمجھئے کہ اگر اینٹ پر اینٹ رکھکر آپ ایک گھروندا بنائیں اور اس پر ایک اینٹ پھینک دیں

तो ऊपर से जो ईंट गिरेगी वह बाक़ी ईंटों को आपस में टकराती और उनको गिराती हुई सारे घरौंदे को गिरा देगी. अगर इसी ईंट को आप बड़ी तेज़ी से फेंकते तो शायद घरौंदे की एक दो ईंट को अपने साथ ले कर बाहर को निकल जाती और घरौंदा बाक़ी बच जाता.

इस खोज की खबर छपते ही सन् १९४० में अमरीका, इंगलैंड और जरमनी में गुप्त रूप से बहुत बड़े पैमाने पर ऐटम-बम बनाने की खोज शुरू हो गई. तीनों को मालूम था कि जो पहिले ऐटम-बम बना लेगा वही लड़ाई जीतेगा और बाक़ी मुल्क बरबाद हो जायेंगे.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया!   क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

[नोट—बेचने वालों या कम से कम दस कापी खरीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायेगा.]

मैनेजर "नया हिन्द"
१४५ मुठीगंज, इलाहाबाद.

تو اوپر سے جو اینٹ گرے گی وہ باقی اینٹوں کو آپس میں ٹکراتی اور اُن کو گراتی ہوئی سارے گھروندے کو گرا دیگی. اگر اسی اینٹ کو آپ بڑی تیزی سے پھینکتے تو شاید گھروندے کی ایک دو اینٹ کو اپنے ساتھ لیکر باہر کو نکل جاتی اور گھروندا باقی بچ جاتا.

اس کھوج کی خبر چھپتے ہی سن ۱۹۴۰ء میں امریکہ، انگلینڈ اور جرمنی میں گپت روپ سے بہت بڑے پیمانے پر ایٹم بم بنانے کی کھوج شروع ہو گئی. تینوں کو معلوم تھا کہ جو پہلے ایٹم بم بنا لیگا وہی لڑائی جیتیگا اور باقی ملک برباد ہو جائینگے.

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردائکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا!   قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اُردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے.

[نوٹ — بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا.]

منیجر "نیا ہند"
۲۸ بائی کا باغ، الہ آباد

भारत का विधान

[भारत के विधान का एक पूरा और ठीक ठीक हिन्दी तरजुमा हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने निकाला है. इसका विज्ञापन 'नया हिन्द' के इस नम्बर में छपा है. यह तरजुमा क्यों कराया गया इसे बताने के लिये उस तरजुमे की 'पहल-बात' हम ज्यूं की त्यूं नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

पहल बात

छब्बीस नवम्बर सन् 1949 को विधान सभा ने भारत के विधान को अपना कर भारत की दफ़्तरी भाशा के सवाल का फ़ैसला कर दिया और देश भर ने शान्ति का सांस लिया. भारत की दफ़्तरी भाशा (official language) का नाम हिन्दी रखा गया. वह हिन्दी क्या होगी इसकी तफ़सील दफ़ा 343 और 351 में खोल कर कर दी गई. वह दोनों दफ़ा यह हैं :—

"343—(1) यूनियन की दफ़्तरी भाशा देवनागरी लिखावट में हिन्दी होगी.

"यूनियन के दफ़्तरी मतलबों के लिये हिन्दसों का जो रूप काम में लाया जायगा वह हिन्दुस्तानी हिन्दसों का अन्तर क़ौमी रूप होगा.

× × × × ×"

"351—यूनियन का फ़र्ज़ होगा कि हिन्दी भाशा के फैलाव को बढ़ाए, और उसका इस तरह विकास करे कि वह भारत की मिली

بھارت کا ودھان

[بھارت کے ودھان کا ایک پورا اور ٹھیک ٹھیک ہندی ترجمہ ہندستانی کلچر سوسائیٹی نے نکالا ہے. اس کا وگیاپن 'نیا ہند' کے اس نمبر میں چھپا ہے. یہ ترجمہ کیوں کرایا گیا اسے بتانے کے لئے اس ترجمے کی 'پہل بات' ہم جیوں کی تیوں نیچے دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

پہل بات

چھبیس نومبر سن 1949 کو ودھان سبھا نے بھارت کے ودھان کو اپنا کر بھارت کی دفتری بھاشا کے سوال کا فیصلہ کر دیا اور دیش بھر نے شانتی کا سانس لیا. بھارت کی دفتری بھاشا (official language) کا نام ہندی رکھا گیا. وہ ہندی کیا ہوگی اس کی تفصیل دفعہ 343 اور 351 میں کھول کر کر دی گئی. وہ دونوں دفعہ یہ ہیں :—

" 343—(1) یونین کی دفتری بھاشا دیو ناگری لکھاوٹ میں ہندی ہوگی.

" یونین کے دفتری مطلبوں کے لئے ہندسوں کا جو روپ کام میں لایا جائیگا وہ ہندستانی ہندسوں کا انٹر قومی روپ ہوگا.

"× × × ×

" 351— یونین کا فرض ہوگا کہ ہندی بھاشا کے پھیلاؤ کو بڑھائے، اور اس کا اس طرح وکاس کرے کہ وہ بھارت کی ملی

जुली कलचर के सब अंगों को जाहिर करने का साधन बन सके और, उसकी आत्मा को छेड़े बिना, वो जो रूप, जो शैली और जो मुहाविरे हिन्दुस्तानी में और आठवीं पट्टी में दर्ज भारत की दूसरी भाषाओं में काम में आते हैं उनको उसमें रचा पचा कर, और, जहाँ कहीं जरूरी या चाहनी हो, उसकी शब्दावली के लिये पहले संस्कृत से और फिर दूसरी भाषाओं से शब्द लेकर, उसे मालामाल करे."

आठवीं पट्टी में दर्ज भाषाएँ यह हैं:—1. आसामी, 2. बंगला, 3. गुजराती, 4. हिन्दी, 5. कन्नड़ 6. कश्मीरी, 7. मलयालम, 8. मराठी, 9. उड़िया, 10. पंजाबी, 11. संस्कृत, 12. तामिल, 13 तेलगू, 14. उर्दू .

इस तरह जिस हिन्दी की विधान में व्याख्या की गई है उसमें और उस भाषा में कोई फरक नहीं रह जाता जो भारत के बहुत बड़े भाग की जनबोली है, जो पेशावर से आसाम तक और हिमालय से रासकुमारी तक बोली या समझी जाती है, और जिसे देसी और बिदेसी दोनों ने सैकड़ों बरस पहले हिन्दुस्तान की बोली जानकर हिन्दुस्तानी नाम दिया था. यही एक ऐसी भाषा रही है जो सच्चे मानी में भारत की मिली जुली कलचर के सब अंगों को जाहिर करती है और अपनी आत्मा को नुकसान पहुँचाए बिना भारत की दूसरी भाषाओं के ही नहीं बाहर की भाषाओं के भी शब्द, शैलियां और मुहाविरों को अपने अन्दर समा कर अपने आपको मालामाल करने की सकत रखती है. हमारे देश की इसी भाषा को विधान ने हिन्दी नाम दिया है. जिन लोगों को भारत की इस मिली जुली कलचर से प्रेम है और

جلی کلچر کے سب انگوں کو ظاہر کرنے کا سادھن بن سکے ' اور اس کی آتما کو چھیڑے بنا ' جو جو روپ ' جو شیلی اور جو محاورے ہندستانی میں اور آٹھویں پٹی میں درج بھارت کی دوسری بھاشاؤں میں کام میں آتے ہیں ان کو اس میں رچا پچا کر ' اور ' جہاں کہیں ضروری یا چاہنی ہو ' اس کی شبد اولی کے لئے پہلے سنسکرت سے اور پھر دوسری بھاشاؤں سے شبد لیکر ' اسے مالا مال کرے . "

آٹھویں پٹی میں درج بھاشائیں یہ ہیں :— 1. آسامی ' 2. بنگلہ ' 3. گجراتی ' 4. ہندی ' 5. کنڑ ' 6. کشمیری ' 7. ملیالم ' 8. مراٹھی ' 9. اڑیا ' 10. پنجابی ' 11. سنسکرت ' 12. تامل ' 13. تیلگو ' 14. اردو .

اس طرح جس ہندی کی ودھان میں ویاکھیا کی گئی ہے اس میں اور اس بھاشا میں کوئی فرق نہیں رہ جاتا جو بھارت کے بہت بڑے بھاگ کی جن بولی ہے ' جو پشاور سے آسام تک اور ہمالیہ سے راس کماری تک بولی یا سمجھی جاتی ہے ' اور جسے دیسی اور بدیسی دونوں نے سیکڑوں برس پہلے ہندستان کی بولی جان کر ہندستانی نام دیا تھا . یہی ایک ایسی بھاشا رہی ہے جو سچے معنی میں بھارت کی ملی جلی کلچر کے سب انگوں کو ظاہر کرتی ہے اور اپنی آتما کو نقصان پہونچائے بنا بھارت کی دوسری بھاشاؤں کے ہی نہیں باہر کی بھاشاؤں کے بھی شبد ' شیلیاں اور محاوروں کو اپنے اندر سما کر اپنے آپ کو مالا مال کرنے کی سکت رکھتی ہے . ہمارے دیش کی اسی بھاشا کو ودھان نے ہندی نام

जो भारत को एक शक्तिशाली और गठा हुआ देश बनाना चाहते हैं उन्होंने विधान की इस दफ़ा का खुले दिल से स्वागत किया. पर विधान का जो हिन्दी अनुवाद सरकार की तरफ़ से निकला है वह न तो विधान की ऊपर लिखी दफ़ाओं को निभाता मालूम होता है और न बहुत से पत्रकारों और समझदारों की नज़र चढ़ पाया है. जनता को उसके समझ में न आने की शिकायत तो है ही. उस अनुवाद की आत्मा हिन्दी है यह कहना कठिन है. फिर हिन्दुस्तानी या किसी दूसरी देसी भाषा के रूप, शैली और मुहाविरे उसमें कैसे निभते. गुजराती, कन्नड़, उर्दू वग़ैरा में से किसी एक दो के इक्का दुक्का शब्द लेकर विधान की दफ़ा के अक्षर भले ही निभाए गए हों रूह नहीं निभाई गई. अनुवाद करने वालों ने संस्कृत का इतना अधिक सहारा लिया है कि बेचारी हिन्दी तो दब कर रह गई.

संसार की भाषाओं के इतिहास से पता चलता है कि जब तक कोई भाषा किसी प्राचीन भाषा की शब्दावली के बोझ से दबी रहती है तब तक वह कभी तरक़्क़ी नहीं कर पाती. मिसाल के लिये जब तक अंगरेज़ी भाषा लातीनी, यूनानी जैसी पुरानी भाषाओं के बोझ से दबी रही, वह तरक़्क़ी न कर सकी. जब शेक्सपियर और उसके साथियों ने उस पर से इन भाषाओं का जुआ उतार फेंका उस के बाद ही अंगरेज़ी भाषा ऐसी फली फूली कि आज संसार की भाषाओं में उसका नाम सबसे आगे लिया जाता है. अब अगर अंगरेज़ी भाषा के सब चालू शब्दों को निकाल कर उनकी जगह लातीनी और यूनानी के शब्द भर दिये जांय और उनके रूप भी लातीनी और यूनानी के व्याकरन के अनुसार बनाए जांय तो अंगरेज़ी भाषा का

جو بھارت کو ایک شکتی شالی اور گٹھا ہوا دیش بنانا چاہتے ہیں انہوں نے ودھان کی اس دفعہ کا کھلے دل سے سواگت کیا . پر ودھان کا جو ہندی انوواد سرکار کی طرف سے نکلا ہے وہ نہ تو ودھان کی اوپر لکھی دفعاؤں کو نبھاتا معلوم ہوتا ہے اور نہ بہت سے پترکاروں اور سمجھداروں کی نظر چڑھ پایا ہے . جنتا کو اس کے سمجھ میں نہ آنے کی شکایت تو ہے ہی . اس انوواد کی آتما ہندی ہے یہ کہنا کٹھن ہے . پھر ہندستانی یا کسی دوسری دیشی بھاشا کے روپ ' شیلی اور محاورے اس میں کیسے نبھتے . گجراتی ' کنڑ ' اردو وغیرہ میں سے کسی ایک دو کے اکا دکا شبد لیکر ودھان کی دفعہ کے اکشر بھلے ہی نبھائے گئے ہوں روح نہیں نبھائی گئی . انوواد کرنے والوں نے سنسکرت کا اتنا ادھک سہارا لیا ہے کہ بیچاری ہندی تو دب کر رہ گئی .

سنسار کی بھاشاؤں کے اتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ جب تک کوئی بھاشا کسی پراچین بھاشا کی شبداولی کے بوجھ سے دبی رہتی ہے تب تک وہ کبھی ترقی نہیں کر پاتی . مثال کے لئے جب تک انگریزی بھاشا لاطینی ' یونانی جیسی پرانی بھاشاؤں کے بوجھ سے دبی رہی ' وہ ترقی نہ کر سکی . جب شیکسپیئر اور اس کے ساتھیوں نے اس پر سے ان بھاشاؤں کا جوا اتار پھینکا اس کے بعد انگریزی بھاشا ایسی پھولی پھولی کہ آج سنسار کی بھاشاؤں میں اس کا نام سب سے آگے لیا جاتا ہے . اب اگر انگریزی بھاشا کے سب چالو شبدوں کو نکالکر ان کی جگہ لاطینی اور یونانی کے شبد بھر دئے جائیں اور ان کے روپ بھی لاطینی اور یونانی کے ویاکرن کے انوسار بنائے جائیں تو انگریزی بھاشا کا

क्या हाल होगा. यह हम सहज ही में समझ सकते हैं. सरकार की ओर से निकले हिन्दी अनुवाद की भाषा कुछ ऐसी ही होगई है. 'मिलावट' की जगह 'अपमिश्रण', 'गोद लेना' की जगह 'दत्तकग्रहण,' 'कम करना' की जगह 'अल्पीकरण,' 'दिवाला' (Insolvency) की जगह 'शोधाक्षमता,' 'इकहरे बदलते वोट' (Single transferable vote) की जगह 'एकल संक्रमणीय मत', 'परची' (Ballot) की जगह 'शलाका', 'बुढ़ापा पेनशन' (Old age pension) की जगह 'वार्धक्य निवृत्ति वेतन', 'साख' (Credit) की जगह 'आकलन' 'वेवसीयती' (Intestacy) की जग 'इच्छापत्रहीनत्व', 'उधार लेना' की जगह 'उद्धारग्रहण', 'किया माना गया' की जगह 'कर्तुमभिप्रेत', 'जुआ' की जगह 'द्यूत', 'तखमीना' (Estimate) की जगह 'प्राक्कलन', 'इस काम से' की जगह 'एतद्द्वारा', 'मिली जुली कलचर' (Composite culture) की जगह 'सामाजिक (?) संस्कृति', इसी तरह के सैकड़ों नहीं हजारों शब्द इस अनुवाद में भरे पड़े हैं.

इससे हिन्दी की हमें कोई भलाई होती दिखाई नहीं देती. इस तरह की भाषा भारत की मिली जुली कलचर को तो किसी भी तरह ज़ाहिर नहीं करती. वह न कहीं बोली जाती है और न देश के किसी भाग की भाषा है. उसे समझने में तो क्या पढ़ने में भी कष्ट होता है. फिर उसमें हिन्दी हिन्दुस्तानी की रवानी और उसके मुहाविरे आ ही कैसे सकते हैं.

अंगरेज़ी मूल को ही देखिये कि उसे शुरू से आखिर तक पढ़ जाइये और शायद एक बार भी आपको किसी शब्द के माने समझने

کیا حال ہوگا، یہ ہم سہج ہی میں سمجھ سکتے ہیں . سرکار کی اور سے نکلے ہندی انوواد کی بھاشا کچھ ایسی ہی ہو گئی ہے . 'ملاوٹ' کی جگہ ' اپمشرن '، ' گود لینا ' کی جگہ ' دتک گرہن '، ' کم کرنا ' کی جگہ ' الپیکرن '، ' دیوالہ ' (Insolvency) کی جگہ ' شودھاکشمتا '، ' اکہرے بدلتے ووٹ ' (Single transferable vote) کی جگہ ' ایکل سنکرمنیہ مت '، ' پرچی ' (Ballot) کی جگہ ' شلاکا '، ' بوڑھاپا پینشن ' (Old age pension) کی جگہ ' وار دھکیہ نیورتی ویتن '، ' ساکھ ' (Credit) کی جگہ ' آکلن '، ' بے وصیتی ' (Intestacy) کی جگہ ' اچھا پتر ہینتو '، ' ادھار لینا ' کی جگہ ' ادھار گرہنو '، ' کیا مانا گیا ' کی جگہ ' کرتمبھی پریت '، ' جوا ' کی جگہ ' دیوت '، ' تخمینہ ' (Estimate) کی جگہ ' پراکلن '، ' اس کام سے ' کی جگہ ' ایتد دوارا '، ' ملی جلی کلچر ' (Composite culture) کی جگہ ' ساماجک (؟) سنسکرتی '، اسی طرح کے سیکڑوں نہیں ہزاروں شبد اس انوواد میں بھرے پڑے ہیں .

اس سے ہندی کی ہمیں کوئی بھلائی ہوتی دکھائی نہیں دیتی . اس طرح کی بھاشا بھارت کی ملی جلی کلچر کو تو کسی بھی طرح ظاہر نہیں کرتی . وہ نہ کہیں بولی جاتی ہے اور نہ دیش کے کسی بھاگ کی بھاشا ہے . اسے سمجھنے میں تو کیا پڑھنے میں بھی کشٹ ہوتا ہے . پھر اس میں ہندی ہندستانی کی روانی اور اس کے محاورے آ ہی کیسے سکتے ہیں .

انگریزی مول کو ہی دیکھئے کہ اسے شروع سے آخر تک پڑھ جائیے اور شاید ایک بار بھی آپکو کسی شبد کے معنی سمجھنے

के लिये कोश का सहारा नहीं लेना पड़ेगा और इस अनुवाद को देखिये कि बिना अंगरेज़ी मूल को देखे और पग पग पर उसकी शब्दावली का सहारा लिये इसका समझना लगभग असम्भव है.

जनता की ज़रूरत और इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने यह मुनासिब समझा कि हमारे विधान का एक ऐसा अनुवाद तैयार किया जाय जिसकी भाशा वही हो जो विधान की दफ़ा 343 और 351 में बताई गई है, जिसमें अंगरेज़ी मूल का अर्थ ज्यों का त्यों आ जाय और जिसे देश की जनता पढ़ सके और समझ सके.

हमारे अनुवाद करने वालों ने भाशा की सरलता और मुहाविरे का तो ध्यान रखा ही है उनकी यह भी कोशिश रही है कि अंगरेज़ी मूल का हर शब्द और हर वाक्य जिन मानों में आया है ठीक वही माने अनुवाद में भी आ जांय. इसके लिये यह ज़रूरी नहीं कि एक अंगरेज़ी शब्द के लिये हर जगह एक ही हिन्दी का शब्द रखा जाय. शब्दों के ठीक ठीक माने प्रसंग से ही जाने जाते हैं. अंगरेज़ी मूल में कई जगह एक एक शब्द कई कई अर्थों में आया है. हिन्दी में उसका एक ही शब्द से अर्थ करने में अर्थ का अनर्थ हो सकता था. इसलिये अनुवाद करने वालों ने कहीं कहीं एक अंगरेज़ी शब्द के लिये, जहां जैसा जंचा, एक से अधिक हिन्दी शब्द रखे हैं, जैसे—'public service' में पबलिक का अर्थ 'सरकारी' है तो 'public welfare' में पबलिक का अर्थ 'जनता की', 'civil court' में 'civil' का अर्थ 'दीवानी' है तो 'civil service' में 'civil' का अर्थ 'नागरी' है, 'adopt' का अर्थ कहीं 'गोद लेना' है तो कहीं 'अपनाना',

کے لئے کوش کا سہارا نہیں لینا پڑیگا اور اس انوواد کو دیکھئے کہ بنا انگریزی مول کو دیکھے اور پگ پگ پر اُسکی شبداولی کا سہارا لئے اِسکا سمجھنا لگ بھگ اسمبھو ہے .

جنتا کی ضرورت اور ان سب باتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے ہندستانی کلچر سوسائٹی نے یہ مناسب سمجھا کہ ہمارے ودھان کا ایک ایسا انوواد تیار کیا جائے جس کی بھاشا وہی ہو جو ودھان کی دفعہ 343 اور 351 میں بتائی گئی ہے ' جس میں انگریزی مول کا ارتھ جیوں کا تیوں آجائے اور جسے دیش کی جنتا پڑھ سکے اور سمجھ سکے .

ہمارے انوواد کرنے والوں نے بھاشا کی سرلتا اور محاورے کا تو دھیان رکھا ہی ہے اُن کی یہ بھی کوشش رہی ہے کہ انگریزی مول کا ہر شبد اور ہر واکیہ جن معنوں میں آیا ہے ٹھیک وہی معنے انوواد میں بھی آجائیں . اس کے لئے یہ ضروری نہیں کہ ایک انگریزی شبد کے لئے ہر جگہ ایک ہی ہندی کا شبد رکھا جائے . شبدوں کے ٹھیک ٹھیک معنے پرسنگ سے ہی جانے جاتے ہیں . انگریزی مول میں کئی جگہ ایک ایک شبد کئی کئی ارتھوں میں آیا ہے . ہندی میں اُسکا ایک ہی شبد سے ارتھ کرنے میں ارتھ کا انرتھ ہو سکتا تھا . اسلئے انوواد کرنے والوں نے کہیں کہیں ایک انگریزی شبد کے لئے ' جہاں جیسا جچا ' ایک سے ادھک ہندی شبد رکھے ہیں ' جیسے— ' public service ' میں پبلک کا ارتھ "سرکاری' ہے تو ' public welfare ' میں پبلک کا ارتھ ' جنتا کی '، ' civil court ' میں ' civil ' کا ارتھ ' دیوانی ' ہے تو ' civil service ' میں ' civil ' کا ارتھ ' ناگری ' ہے ' adopt ' کا ارتھ کہیں ' گود لینا ' ہے تو کہیں ' اپنانا '،

'constitution' का अर्थ कहीं 'विधान' है तो कहीं 'बनावट'. फिर भी अनुवादकों ने यह कोशिश की है कि जहां तक हो सके एक अंगरेज़ी शब्द के लिये एक ही हिन्दी शब्द आवे.

इंडिया का अनुवाद 'भारत' और 'हिन्द' दोनों किया गया है. इस विधान के आरंभ होने से पहले वाले 'इंडिया' को अनुवादकों ने 'हिन्द' कहा है, और जहां कहीं इंडिया का मतलब उस पूरे देश से है जिसमें भारत और पाकिस्तान दोनों शामिल थे वहां भी इंडिया का अर्थ 'हिन्द' किया गया है. और सब जगह 'भारत' अर्थ किया गया है.

गवरनर शब्द का अर्थ 'रियासत पति' किया गया है, पर विधान के आरंभ होने से पहले के सूबों के गवरनरों को गवरनर ही कहा गया है.

विधान के भाग पांच और भाग छै की बहुत सी दफ़ाएँ मिलती जुलती हैं. अनुवाद में इन दोनों भागों की जवाबी दफ़ाओं का जहां तक ठीक समझा गया एक सा अनुवाद किया गया, पर भाग छै की कुछ दफ़ाओं के अनुवाद की वाक्य रचना में कहीं कहीं अन्तर भी है क्योंकि शुरू के फ़ार्म छप जाने के बाद अनुवादकों को बाद की वाक्य रचना ज्यादा अच्छी मालूम हुई. इससे मतलब में ज़रा भी फ़रक़ नहीं पड़ा है. इसी तरह की एक दो मिसालें और भी हैं.

जहां तक हो सका अनुवाद करने वालों ने उन शब्दों से काम लिया है जो उत्तर भारत में आम तौर पर बोले और समझे जाते हैं. दूसरी प्रांतीय भाषाओं के भी चालू शब्द जहां तहां लिये गए हैं. यूनानी, अंगरेज़ी, फ़रांसीसी, पुर्तगाली, तुर्की, फ़ारसी, अरबी

'constitution' کا ارتھ کہیں ' ودھان ' ہے تو کہیں ' بناوٹ ' . پھر بھی انوادکوں نے یہ کوشش کی ہے کہ جہاں تک ہو سکے ایک انگریزی شبد کے لئے ایک ہی ہندی شبد آوے .

انڈیا کا انواد ' بھارت ' اور ' ہند ' دونوں کیا گیا ہے . اس ودھان کے آرمبھ ہونے سے پہلے والے ' انڈیا ' کو انوادکوں نے ' ہند ' کہا ہے ' اور جہاں کہیں انڈیا کا مطلب اس پورے دیش سے ہے جس میں بھارت اور پاکستان دونوں شامل تھے وہاں بھی انڈیا کا ارتھ ' ہند ' کیا گیا ہے . اور سب جگہ ' بھارت ' ارتھ کیا گیا ہے .

گورنر شبد کا ارتھ ' ریاست پتی ' کیا گیا ہے ' پر ودھان کے آرمبھ ہونے سے پہلے کے صوبوں کے گورنروں کو گورنر ہی کہا گیا ہے .

ودھان کے بھاگ پانچ اور بھاگ چھ کی بہت سی دفعائیں ملتی جلتی ہیں . انواد میں ان دونوں بھاگوں کی جوابی دفعاؤں کا جہاں تک ٹھیک سمجھا گیا ایک سا انواد کیا گیا ' پر بھاگ چھ کی کچھ دفعاؤں کے انواد کی واکیہ رچنا میں کہیں کہیں انتر بھی ہے کیونکہ شروع کے فارم چھپ جانے کے بعد انوادکوں کو بعد کی واکیہ رچنا زیادہ اچھی معلوم ہوئی . اس سے مطلب میں ذرا بھی فرق نہیں پڑا ہے . اسی طرح کی ایک دو مثالیں اور بھی ہیں .

جہاں تک ہو سکا انواد کرنے والوں نے ان شبدوں سے کام لیا ہے جو اتر بھارت میں عام طور پر بولے اور سمجھے جاتے ہیں . دوسری پرانتی بھاشاؤں کے بھی چالو شبد جہاں تہاں لئے گئے ہیں . یونانی ' انگریزی ' فرانسیسی ' پرتگالی ' ترکی ' فارسی ' عربی

जैसी भाषाओं के जो शब्द हिन्दी में चल पड़े हैं और देश के कोने कोने में समझे जाते हैं, उनसे भी इस अनुवाद में काम लिया गया है.

आज अंगरेज़ी भाषा संसार की सब भाषाओं से आगे है. उसका मूल कारन यही है कि अंगरेज़ी लेखक संसार की लगभग सभी भाषाओं से शब्द लेकर अपने शब्द भंडार को बढ़ाने में कभी नहीं हिचके. अंगरेज़ी भाषा का मूल आधार पुरानी जर्मनिक भाषा का एक अंग पुरानी सेक्सन भाषा है, पर आजकल की अंगरेज़ी के तीन चौथाई से भी अधिक शब्द दूसरी भाषाओं से लिये हुए हैं, जिनमें अरबी, तुर्की, चीनी, जापानी, हिन्दुस्तानी और अफ़रीक़ी भाषाएं भी शामिल हैं. अंगरेज़ी में हिन्दुस्तानी से लिये शब्दों की गिनती अब हज़ारों में होती है और इन शब्दों को सिर्फ़ आम बोल चाल की भाषा में ही नहीं क़ानूनी भाषा तक में जगह मिल गई है. इन शब्दों को अंगरेज़ी ने अपने अन्दर पूरी तरह पचा लिया है. हिन्दी में भी यह पाचन शक्ति हमेशा से थी और है. आज हमें इस पाचन शक्ति को क़ायम रखना और बढ़ाना है. पड़ोसी प्रान्तों की भाषाओं से तो बहुत कुछ हिन्दी ने लिया ही है इसे दक्खिन की भाषाओं से भी अभी बहुत कुछ लेना है. और जैसे जैसे नए भारत का संसार के दूसरे देशों से मेल जोल बढ़ता जायगा वैसे वैसे चीनी, जापानी, बर्मी, श्यामी, हिन्दचीनी, इन्डोनेशी आदि भाषाओं के शब्द भंडार भी हिन्दी के लिये खुल जायंगे और हिन्दी के लेखकों को जहां तक भी हो सके उनसे लाभ उठाने की कोशिश करनी होगी. हिन्दी का जो विशाल भवन तैयार

جیسی بھاشاؤں کے جو شبد ہندی میں چل پڑے ہیں اور دیش کے کونے کونے میں سمجھے جاتے ہیں' اُن سے بھی اس انوواد میں کام لیا گیا ہے.

آج انگریزی بھاشا سنسار کی سب بھاشاؤں سے آگے ہے. اس کا مول کارن یہی ہے کہ انگریزی لیکھک سنسار کی لگ بھگ سبھی بھاشاؤں سے شبد لیکر اپنے شبد بھنڈار کو بڑھانے میں کبھی نہیں ہچکے. انگریزی بھاشا کا مول آدھار پرانی جرمنک بھاشا کا ایک انگ پرانی سکسن بھاشا ہے' پر آج کل کی انگریزی کے تین چوتھائی سے بھی ادھک شبد دوسری بھاشاؤں سے لئے ہوئے ہیں' جن میں عربی' ترکی' چینی' جاپانی' ہندستانی اور افریقی بھاشائیں بھی شامل ہیں. انگریزی میں ہندستانی سے لئے شبدوں کی گنتی اب ہزاروں میں ہوتی ہے اور ان شبدوں کو صرف عام بول چال کی بھاشا میں ہی نہیں قانونی بھاشا تک میں جگہ مل گئی ہے. ان شبدوں کو انگریزی نے اپنے اندر پوری طرح پچا لیا ہے. ہندی میں بھی یہ پاچن شکتی ہمیشہ سے تھی اور ہے. آج ہمیں اس پاچن شکتی کو قائم رکھنا اور بڑھانا ہے. پڑوسی پرانتوں کی بھاشاؤں سے تو بہت کچھ ہندی نے لیا ہی ہے اسے دکھن کی بھاشاؤں سے بھی ابھی بہت کچھ لینا ہے. اور جیسے جیسے نئے بھارت کا سنسار کے دوسرے دیشوں سے میل جول بڑھتا جائیگا ویسے ویسے چینی' جاپانی' برمی' شیامی' ہند چینی' انڈونیشی آدی بھاشاؤں کے شبد بھنڈار بھی ہندی کے لئے کھل جائینگے اور ہندی کے لیکھکوں کو جہاں تک بھی ہو سکے اُن سے لابھ اُٹھانے کی کوشش کرنی ہوگی. ہندی کا جو وشال بھون تیار

हो रहा है उसके दरवाज़े हमें बन्द नहीं खोलकर रखने होंगे जिससे उसमें हमेशा ताज़ा हवा आती रहे.

शब्दों के चुनने में अनुवाद करने वालों ने एक और सिद्धान्त का भी ध्यान रखा है. एक ही माने रखने वाले अलग अलग मूल के दो शब्द कभी कभी अलग अलग मानों में इस्तेमाल होने लगते हैं. इससे भाषा की शक्ति बढ़ती है. हिन्दी में भी एक ही अर्थ रखने वाले अलग अलग मूल के अनेक शब्द हैं. उन्हें विशेष मानों में लगाना अब हमारा काम है. अनुवाद करने वालों ने इस तरह के कुछ शब्दों को अलग अलग मानों में बरता है, जैसे:—Rule—नियम; Regelation—क़ायदा; Article—दफ़ा; Clause—धारा; Minister—वज़ीर; Secretary—मंत्री; Road—सड़क; Way—मार्ग.

हिन्दी का धातु भंडार अथाह है. पर शब्द भंडार अभी इतना बड़ा नहीं है कि आजकल के सब विचारों और पदार्थों के लिये काफ़ी हो. इसलिये नए शब्द बनाना भी ज़रूरी हो जाता है. इसके लिये संस्कृत, अरबी, लातीनी, यूनानी जैसी प्राचीन भाषाओं से तत्सम शब्द ले लेना या उनके व्याकरन की मदद से बना लेना सहल है पर यह वही मार्ग है जिसे हम 'कन्ने काटना' (escapism) कहते हैं. किसी भी जीती जागती भाषा के लिये यह विनाश का मार्ग है. जहां ज़रूरत हो वहां हम संस्कृत से और दूसरी भाषाओं से भी शब्द ले सकते हैं पर जो शब्द हम बनाएं वह हमारे मुहाविरे और हमारे व्याकरन के अनुकूल होने चाहिएं. अनुवाद करने वालों ने इसी सिद्धान्त पर कुछ नए शब्द बनाए हैं, जैसे:—Adjustment—

ہو رہا ہے اُس کے دروازے ہمیں بند نہیں کھول کر رکھنے ہونگے جس سے اُس میں ہمیشہ تازہ ہوا آتی رہے.

شبدوں کے چننے میں انوواد کرنے والوں نے ایک اور سدھانت کا بھی دھیان رکھا ہے. ایک ہی معنی رکھنے والے الگ الگ مول کے دو شبد کبھی کبھی الگ الگ معنوں میں استعمال ہونے لگتے ہیں. اس سے بھاشا کی شکتی بڑھتی ہے. ہندی میں بھی ایک ہی ارتھ رکھنے والے الگ الگ مول کے انیک شبد ہیں. اُنہیں وشیش معنوں میں لگانا اب ہمارا کام ہے. انواد کرنے والوں نے اس طرح کے کچھ شبدوں کو الگ الگ معنی میں برتا ہے، جیسے:— Rule—نیم؛ Regulation—قاعدہ؛ Article—دفعہ؛ Clause—دھارا؛ Minister—وزیر؛ Secretary—منتری؛ Road—سڑک؛ Way—مارگ.

ہندی کا دھاتو بھنڈار اتھاہ ہے. پر شبد بھنڈار ابھی اتنا بڑا نہیں ہے کہ آجکل کے سب وچاروں اور پدارتھوں کے لئے کافی ہو. اس لئے سنسکرت، عربی، لاطینی، یونانی جیسی پراچین بھاشاؤں سے تت سم شبد لے لینا یا اُن کے ویاکرن کی مدد سے بنا لینا سہل ہے پر یہ وہی مارگ ہے جسے ہم 'کنّے کاٹنا' (escapism) کہتے ہیں. کسی بھی جیتی جاگتی بھاشا کے لئے یہ وناش کا مارگ ہے. جہاں ضرورت ہو وہاں ہم سنسکرت سے اور دوسری بھاشاؤں سے بھی شبد لے سکتے ہیں پر جو شبد ہم بنائیں وہ ہمارے محاورے اور ہمارے ویاکرن کے انوکول ہونے چاہئیں. انواد کرنے والوں نے اسی سدھانت پر کچھ نئے شبد بنائے ہیں، جیسے:—Adjustment—

बैठबिठाव; Successor—पैदगाही; International—अन्तरी; क़ौमी; Corporation—एकतनी; Entry—अन्तरी; Contingency—जोगाजोग; Import—आयासी; Export—निकासी; Appointment—नियोजन.

कुछ पुरानी ध्वनियां जैसे ञ, ण, ष ब्रजभाषा आदि में और खड़ी बोली में क्रम से अनुस्वार, नकार और 'श', 'स' या 'ख' की ध्वनियों में बदल गई हैं और बदलती जा रही हैं. जब हिन्दी की खड़ी बोली में संस्कृत तत्सम शब्दों की बाढ़ आई तभी से यह ध्वनियां संस्कृत तत्सम शब्दों के रास्ते हिन्दी में फिर रख दी गईं, पर अब भी हम इनको आम बोल चाल में नहीं बोलते. 'कञ्चन' को 'कंचन', 'कारण' को 'कारन', 'रोष' को 'रोश', 'विष' को 'विस' और 'वर्षा' को 'बरखा' कहते ही हैं. इसीलिये अनुवादकों ने इन ध्वनियों को नहीं रखा. उन्होंने इनका चालू रूप अपनाया है. इससे शब्दों के बोलने में मदद मिलती है और लिखावट भी काफ़ी सरल हो जाती है.

हमारी पहल बात कुछ लम्बी हो गई पर यह सब इसलिये लिखा गया है कि भाशा के संबंध में तरह तरह के विचार लोगों में फैल रहे हैं. हिन्दी एक भाशा है और उन सबकी है जो उसे बोलते हैं. इस भाशा को ऐसा रूप नहीं देना चाहिये कि फिर वह इने गिने आदमियों की ही चीज़ रह जाय. यह भाशा सैकड़ों बरस से भारत के बड़े भाग की भाशा रही है और अब यह सारे देश की अन्तर-रियासती भाशा है या होने जा रही है. विधान की दफ़ा 351 में इस भाशा के सम्बन्ध में हमें वह बीज नज़र आते

بیٹھ بیٹھاو ؛ Successor—پدگاهی؛ International—انتر قومی؛ Corporation—ایک تنی؛— Entry انتری؛ Contingency—جوگا جوگ؛ Import—آیاسی؛ Export نکاسی؛— Appointment—نیوجن .

کچھ پرانی دهونیاں جیسے 'ञ' 'ण' 'ष' برج بهاشا آدی میں اور کهڑی بولی میں کرم سے انوسوار، نکار اور 'श' 'स' یا 'ख' کی دهونیوں میں بدل گئی هیں اور بدلتی جارهی هیں . جب هندی کی کهڑی بولی میں سنسکرت تت سم شبدوں کی باڑه آئی تبهی سے یه دهونیاں سنسکرت تت سم شبدوں کے راستے هندی میں پهر رکھ دی گئیں ' پر اب بهی هم ان کو عام بول چال میں نهیں بولتے . ' कञ्चन ' کو ' कंचन ' ' कारण ' کو 'कारन' ' रोष ' کو ' रोश ' ' विष ' کو ' विस ' اور ' वर्षा ' کو ' बरखा ' کهتے هی هیں . اسی لئے انوادکوں نے ان دهونیوں کو نهیں رکها . انهوں نے ان کا چالو روپ اپنایا هے . اس سے شبدوں کے بولنے میں مدد ملتی هے اور لکهاوٹ بهی کافی سرل هوجاتی هے .

هماری پهل بات کچھ لمبی هو گئی پر یه سب اس لئے لکها گیا هے که بهاشا کے سمبندھ میں طرح طرح کے وچار لوگوں میں پهیل رهے هیں . هندی ایک بهاشا هے اور ان سب کی هے جو اسے بولتے هیں . اس بهاشا کو ایسا روپ نهیں دینا چاهئے که پهر وه انے گنے آدمیوں کی هی چیز ره جائے . یه بهاشا سیکڑوں برس سے بهارت کے بڑے بهاگ کی بهاشا رهی هے اور اب یه سارے دیش کی انتر ریاستی بهاشا هے یا هونے جارهی هے . ودهان کی دفعه 351 میں اس بهاشا کے سمبندھ میں همیں وه بیج نظر آتے

हैं जिनको अगर सचाई से और ठीक ठीक पानी मिलता रहा तो भारत की सूबाई और फ़िरक़ावारी गुटबन्दी मिट कर भारत के लोग सच्चे मानों में एक 'नेशन' का रूप ले सकेंगे. बोली जिस तरह आदमी आदमी को पास लाती है उसी तरह आदमी आदमी को दूर भी कर सकती है. जाने अनजाने मुद्दतों से जगह जगह यह रीत चली आई है कि हुकूमत और पंडित लोग कुछ और बोली बोलते हैं और जनता कुछ और. इस तरह बोली के दो रूप हो जाते हैं. हुकूमत और पंडित तो जनता की बोली समझते हैं पर जनता उनकी बहुत कम बात समझ पाती है. हो सकता है यह ढंग उस समय काम देता हो जब देशों की बागडोर राजाओं और रईसों के हाथ में हुआ करती थी और विद्या पर पंडितों का इजारा था. अब जब कि हुकूमत की बागडोर क़ानूनी रूप से जनता के हाथ में मान ली गई है तब सरकार और जनता की दो अलग अलग बोलियों का होना बेजा और बड़ी ख़तरनाक बात है. जनता की बोली में ही हमारा अधिक से अधिक काम होना चाहिये. जनता का दिया विधान भी जनता की बोली में ही होना चाहिये. सरकार का सारा काम भी जहां तक हो सके उसी बोली में किया जाना चाहिये. विधान की दफ़ा 351 इसी सचाई को ध्यान में रख कर बनाई गई है.

अगर हिन्दी को सचमुच केवल दफ़्तरी भाशा से बढ़ते बढ़ते क़ौमी और अन्तरक़ौमी भाशा बनना है और फलना फूलना है और संसार की बड़ी बड़ी भाशाओं में अपना स्थान लेना है तो इसको खुली हवा में पनपना होगा, दूसरी देशी और विदेशी भाशाओं के साथ अपना मेलजोल बढ़ाना होगा और बिना हिचक नये शब्द,

ہیں جن کو اگر سچائی سے اور ٹھیک ٹھیک پانی ملتا رہا تو بھارت کی صوبائی اور فرقہ واری گٹ بندی مٹ کر بھارت کے لوگ سچے معنوں میں ایک ' نیشن ' کا روپ لے سکینگے . بولی جس طرح آدمی آدمی کو پاس لاتی ہے اسی طرح آدمی آدمی کو دور بھی کر سکتی ہے . جانے ان جانے مدتوں سے جگہ جگہ یہ ریت چلی آئی ہے کہ حکومت اور پنڈت لوگ کچھ اور بولی بولتے ہیں اور جنتا کچھ اور . اس طرح بولی کے دو روپ ہوجاتے ہیں . حکومت اور پنڈت تو جنتا کی بولی سمجھتے ہیں پر جنتا ان کی بہت کم بات سمجھ پاتی ہے . ہوسکتا ہے یہ ڈھنگ اس سمے کام دیتا ہو جب دیشوں کی باگ ڈور راجاؤں اور رئیسوں کے ہاتھ میں ہوا کرتی تھی اور ودیا پر پنڈتوں کا اجارا تھا . اب جبکہ حکومت کی باگ ڈور قانونی روپ سے جنتا کے ہاتھ میں مان لی گئی ہے تب سرکار اور جنتا کی دو الگ الگ بولیوں کا ہونا بیجا اور بڑی خطرناک بات ہے . جنتا کی بولی میں ہی ہمارا ادھک سے ادھک کام ہونا چاہئے . جنتا کا دیا ودھان بھی جنتا کی بولی میں ہی ہونا چاہئے . سرکار کا سارا کام بھی جہاں تک ہوسکے اسی بولی میں کیا جانا چاہئے . ودھان کی دفعہ 351 اسی سچائی کو دھیان میں رکھکر بنائی گئی ہے .

اگر ہندی کو سچ مچ کیول دفتری بھاشا سے بڑھتے بڑھتے قومی اور انتر قومی بھاشا بننا ہے اور پھلنا پھولنا ہے اور سنسار کی بڑی بڑی بھاشاؤں میں اپنا استھان لینا ہے تو اس کو کھلی ہوا میں پنپنا ہوگا ' دوسری دیشی اور ودیشی بھاشاؤں کے ساتھ اپنا میل جول بڑھانا ہوگا اور بنا ہچک نئے شبد '

नए वाक्य और नए मुहाविरे अपने ढंग पर ढाल कर अपने अन्दर समाने होंगे. यही इसकी तरक़्क़ी का रास्ता है, यही कल्यान का मार्ग.

हम मानते हैं कि हमारे इस अनुवाद में भी सुधार की गुंजाइश है. भाषा के संबंध में विधान सभा ने विधान के अन्दर जो कुछ तय किया है उसके अनुसार हिन्दी को अभी बढ़ना और रूप लेना है. उसके दरवाज़े अभी पूरी तरह खुले रखे गए हैं. अभी उसकी न कोई शैली आख़िरी शैली है और न कोई शब्दावली आख़िरी शब्दावली है. आगे के लिये यही एक उम्मीद का रास्ता है. इसीलिये हम विधान के इस अनुवाद को सरकार और जनता के सामने रख रहे हैं ताकि इसे पढ़कर देश के बहुत से लोग अपने विधान को समझ सकें और हमारे अनुवाद करनेवालों की यह छोटी सी कोशिश हिन्दी को क़ानूनी और क़ौमी रूप देने और बढ़ाने में सरकार और जनता दोनों को थोड़ी बहुत मदद दे सके.

40-A, हनुमान रोड, सुन्दरलाल

नई दिल्ली. मंत्री हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

15 अगस्त, 1950.

نئے واکیہ اور نئے محاورے اپنے ڈھنگ پر ڈھال کر اپنے اندر سمانے ہونگے . یہی اس کی ترقی کا راستہ ہے ' یہی کلیان کا مارگ .

ہم مانتے ہیں کہ ہمارے اس انوواد میں بھی سدھار کی گنجائش ہے . بھاشا کے سمبندھ میں ودھان سبھا نے ودھان کے اندر جو کچھ طے کیا ہے اس کے انوسار ہندی کو ابھی بڑھنا اور روپ لینا ہے . اس کے دروازے ابھی پوری طرح کھلے رکھے گئے ہیں . ابھی اس کی نہ کوئی شیلی آخری شیلی ہے اور نہ کوئی شبداولی آخری شبداولی ہے . آگے کے لئے یہی ایک امید کا راستہ ہے . اسی لئے ہم ودھان کے اس انوواد کو سرکار اور جنتا کے سامنے رکھ رہے ہیں تاکہ اسے پڑھ کر دیش کے بہت سے لوگ اپنے ودھان کو سمجھ سکیں اور ہمارے انوواد کرنےوالوں کی یہ چھوٹی سی کوشش ہندی کو قانونی اور قومی روپ دینے اور بڑھانے میں سرکار اور جنتا دونوں کو تھوڑی بہت مدد دے سکے .

40-A ہنومان روڈ، سندر لال

نئی دہلی . منتری ہندستانی کلچر سوسائٹی

15 اگست 1950

तोता

(भाइ भैरव प्रसाद गुप्त)

रोज की तरह उस दिन सुबह अपने सात साल के लड़के का हाथ पकड़े मैं गाँव के बाहर बाग़ में टहलने निकल गया.

पिछली रात खूब बरखा हुई थी. पत्थर भी गिरा था. इसलिये हवा बहुत तेज और ठंडी थी. बाग़ की जमीन रात के गिरे पत्तों, डालों और टहनियों से भर गई थी. पेड़ ऐसे उजड़े उजड़े से लग रहे थे जैसे उनकी सारी खूबसूरती ही लुट गई हो. कहीं किसी चिड़िया का भी पता न था. जो बाग़ सुबह को पंछियों के सुहाने चहचहों से संगीतमय हो उठता था वह आज ऐसा वीरान और सुनसान पड़ा था, कि उसे देख कर डर सा लगता था.

मैं लड़के का हाथ एक ओर खींचता हुआ दूसरी ओर मुड़ना ही चाहता था कि एकाएक बाग़ की ओर से जोर-जोर की 'टें-टें-टें' की आवाज आई.

लड़के ने उधर मुड़कर कहा—"पिताजी, कोई तोता रो रहा है."

सचमुच तोते की उस टें-टें में रोने का स्वर इतना साफ़ था कि वह छोटा लड़का भी उसे आसानी से समझ गया था. आदमी के रोने में जो दर्द होता है, उससे भी अधिक उस तोते की टें-टें में दर्द भरा था.

طوطا

(بھائی بھیرو پرساد گپت)

روز کی طرح اُسدن صبح اپنے سات سال کے لڑکے کا ہاتھ پکڑے میں گاؤں کے باہر باغ میں ٹہلنے نکل گیا.

پچھلی رات خوب برکھا ہوئی تھی. پتھر بھی گرا تھا. اس لئے ہوا بہت تیز اور ٹھنڈی تھی. باغ کی زمین رات کے گرے پتوں، ڈالوں اور ٹہنیوں سے بھر گئی تھی. پیڑ ایسے اُجڑے اُجڑے سے لگ رہے تھے، جیسے اُن کی ساری خوبصورتی ہی لٹ گئی ہو. کہیں کسی چڑیا کا بھی پتہ نہ تھا. جو باغ صبح کو پنچھیوں کے سہانے چہچہوں سے سنگیت سے ہو اُٹھتا تھا وہ آج ایسا ویران اور سنسان پڑا تھا، کہ اُسے دیکھ کر ڈر سا لگتا تھا.

میں لڑکے کا ہاتھ ایک اور کھینچتا ہوا دوسری اور مڑنا ہی چاہتا تھا کہ ایکایک باغ کی اور سے زور زور کی 'ٹیں ٹیں ٹیں' کی آواز آئی.

لڑکے نے اُدھر مڑ کر کہا— "پتاجی، کوئی طوطا رو رہا ہے."

سچ مچ طوطے کی اُس ٹیں ٹیں میں رونے کا سور اتنا صاف تھا کہ وہ چھوٹا لڑکا بھی اُسے آسانی سے سمجھ گیا تھا. آدمی کے رونے میں جو درد ہوتا ہے، اُس سے بھی ادھک اُس طوطے کی ٹیں ٹیں میں درد بھرا تھا.

"पिता जी, चलिये देखें, वह कहाँ पड़ा है." लड़के ने यह कह कर मेरा हाथ बाग की ओर खींचा.

टें-टें की आवाज और भी जोर पकड़ती जा रही थी. उस आवाज को लक्ष करके ही हम उस दिशा की ओर बढ़े. एकाएक लड़के ने चिल्ला कर कहा—"पिताजी, वह देखिये! उस पेड़ की जड़ में!"

मैंने देखा, तोता चित पड़ा पंख फड़फड़ा रहा था और टें-टें करके चीख रहा था. उस हालत में उसे देख कर मन दुख और दर्द से भर गया. लड़का उसे पकड़ने दौड़ पड़ा.

चिड़ियों को न जाने क्यों बच्चे बहुत चाहते हैं. मेरा लड़का भी इसी भाव से उसे पकड़ने गया या कुछ और सोचकर, यह मैं उस समय न समझ सका. इसीलिये मैंने उसे रोका भी नहीं.

तोता बुरी तरह घायल था. लड़के को अपनी ओर लपकते देख कर बड़ी ही बेचैनी और बेबसी से उसने उसकी ओर देखा, फिर टें-टें करके चीखते हुए उड़ने के कई असफल जतन किये, पर जरा भी इधर से उधर न हो सका. लड़के ने उसे पकड़ लिया तो वह और भी जोर से चीख उठा, जैसे उसके प्रान ही निकल रहे हों. उसकी वह चीख इतनी दर्द भरी थी कि मैंने अपने कानों पर हाथ रख लिये..

लड़के ने उसके खून से लथपथ डैनों को मेरी ओर करते हुए कहा—"पिताजी, इसके दोनों डैने टूट गये हैं. हम इसे घर ले जा कर दवा करेंगे, वह अच्छा हो जायगा न?"

"پتاجی، چلئے دیکھیں، وہ کہاں پڑا ہے." لڑکے نے یہ کہہ کر میرا ہاتھ باغ کی اور کھینچا۔

ٹیں ٹیں کی آواز اور بھی زور پکڑتی جارہی تھی۔ اس آواز کو لکش کرکے ہی ہم اس دشا کی اور بڑھے۔ ایکا ایک لڑکے نے چلاکر کہا—"پتاجی، وہ دیکھئے! اس پیڑ کی جڑ میں!"

میں نے دیکھا، طوطا چت پڑا پنکھ پھڑ پھڑا رہا تھا اور ٹیں ٹیں کرکے چیخ رہا تھا۔ اس حالت میں اسے دیکھ کر من دکھ اور درد سے بھر گیا۔ لڑکا اسے پکڑنے دوڑ پڑا۔

چڑیوں کو نہ جانے کیوں بچے بہت چاہتے ہیں۔ میرا لڑکا بھی اسی بھاؤ سے اسے پکڑنے گیا یا کچھ اور سوچ کر، یہ میں اس سمے نہ سمجھ سکا۔ اسی لئے میں نے اسے روکا بھی نہیں۔

طوطا بری طرح گھائل تھا۔ لڑکے کو اپنی اور لپکتے دیکھکر بڑی ہی بےچینی اور بےبسی سے اس نے اسکی اور دیکھا، پھر ٹیں ٹیں کرکے چیختے ہوئے اڑنے کے کئی اسپھل جتن کئے، پر ذرا بھی ادھر سے ادھر نہ ہوسکا۔ لڑکے نے اسے پکڑ لیا تو وہ اور بھی زور سے چیخ اٹھا، جیسے اس کے پران ہی نکل رہے ہوں۔ اس کی وہ چیخ اتنی درد بھری تھی کہ میں نے اپنے کانوں پر ہاتھ رکھ لئے۔

لڑکے نے اس کے خون سے لتھ پتھ ڈینوں کو میری اور کرتے ہوئے کہا—"پتا جی، اسکے دونوں ڈینے ٹوٹ گئے ہیں۔ ہم اسے گھر لیجاکر دوا کرینگے، یہ اچھا ہو جائیگا نہ؟"

पन्द्रह दिन पहले वह आप अपना हाथ तोड़ चुका था. दवा से उसका हाथ अच्छा हो गया था. शायद यही बात उस समय उसके दिमाग़ में थी. यों भी उसका यह विचार मुझे अच्छा लगा. मैं इनकार न कर सका.

वह उसके शरीर पर धीरे धीरे हाथ सहलाने लगा तो थोड़ी देर में उसका चीख़ना चिल्लाना भी बन्द हो गया. उसने पास ही के गढ़े से हाथ में पानी लेकर उसकी चोंच में बूँद-बूँद टपकाया और उसके पंखों का ख़ून भी धीरे धीरे धो डाला.

(२)

मैंने दवा मंगा दी. लड़का बड़ी मुस्तैदी से तोते की सेवा और देख भाल करने लगा.

तीन महीनों में धीरे धीरे उसके डैनों के घाव अच्छे हो गये. पर अब भी वह उड़ न सकता था. लड़के ने कहा—"अब अच्छा हो गया. खायगा पियेगा तो पंखों में ताक़त आ जायगी. तब तो वह ज़रूर उड़ सकेगा."

मैंने कहा—'खिलाओ, पिलाओ! शायद तुम्हारा ख़याल ठीक हो."

थोड़े ही दिनों में तोता काफ़ी मोटा हो गया. नये नये पर भी उसके निकल आये. पर वह उड़ न सकता था. उसके एक डैने की हड्डी बिलकुल कमज़ोर हो गई थी.

बिल्ली से उसे सुरक्षित रखने के लिये एक पिंजड़ा बनवा दिया गया. पहले उसे खाँची में ढक कर ही रखते थे, ताकि दवा लगाने, खिलाने पिलाने की सुविधा रहे.

پندرہ دن پہلے وہ آپ اپنا ھاتھ توڑ چکا تھا . دوا سے اسکا ھاتھ اچھا ھو گیا تھا . شاید یہی بات اُس سمے اُس کے دماغ میں تھی : یوں بھی اُس کا یہ وچار مجھے اچھا لگا . میں انکار نہ کرسکا .

وہ اُس کے شریر پر دھیرے دھیرے ھاتھ سہلانے لگا تو تھوڑی دیر میں اُس کا چیخنا چلانا بھی بند ھو گیا . اُس نے پاس ھی کے گڈھے سے ھاتھ میں پانی لے کر اُس کی چونچ میں بوند بوند ٹپکایا اور اُس کے پنکھوں کا خون بھی دھیرے دھیرے دھو ڈالا .

(٢)

میں نے دوا منگادی . لڑکا بڑی مستعدی سے طوطے کی سیوا اور دیکھ بھال کرنے لگا .

تین مہینے میں دھیرے دھیرے اُس کے ڈینوں کے گھاؤ اچھے ھوگئے . پر اب بھی وہ اُڑ نہ سکتا تھا . لڑکے نے کہا—"اب اچھا ھو گیا . کھائیگا پئے گا تو پنکھوں میں طاقت آجائیگی . تب تو یہ ضرور اُڑ سکے گا . '

میں نے کہا—"کھلاؤ پلاؤ ! شاید تمہارا خیال ٹھیک ھو ."

تھوڑے ھی دنوں میں طوطا کافی موٹا ھو گیا . نئے نئے پر بھی اُس کے نکل آئے . پر وہ اُڑ نہ سکتا تھا . اُس کے ایک ڈینے کی ھڈی بالکل کمزور ھو گئی تھی .

بلی سے اُسے سرکشت رکھنے کے لئے ایک پنجرا بنوا دیا گیا . پہلے اُسے کھانچی میں ڈھک کر ھی رکھتے تھے تاکہ دوا لگانے ' کلانے پلانے کی سوودھا رہے .

एक दिन सुबह जब हम टहलने चले, तो लड़के ने कहा—"आज मैं तोते को भी सैर कराने ले चलूँगा."

मेरे मन में एक शंका उठ खड़ी हुई. मैंने कहा—"नहीं."

इसपर उसने पूछा—"क्यों ?"

मैंने कहा—"जब तुम्हारा हाथ टूटा था, तो चारपाई पर पड़े पड़े सहन में लड़कों को खेलते कूदते देख कर तुम्हारे मन में क्या होता था ?"

लड़का मेरी बात शायद समझ न सका. इसलिये ज़िद में आ कर बोला—"नहीं पिताजी, हम तो ज़रूर ले चलेंगे ! यह भी क्या मेरी तरह कोई लड़का है ?"

मैंने फिर उसे मना न किया. भोले भाले पंछी भोले-भाले लड़कों की ही तरह होते हैं, यह बात मैं उसे कैसे समझाता. फिर सोचा, शायद उसी की बात ठीक हो.

बाग़ में एक बेर के पेड़ पर तोतों का एक झुण्ड किलकारियाँ भरता बेरें कुतर रहा था. उनकी किलकारियाँ सुन कर पिंजड़े के तोते ने आँखें उठा गिरा कर ऊपर नीचे देखना शुरू किया. उसकी नज़र बेर के पेड़ पर पड़नी थी कि वह ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाने लगा और फिर चीखने लगा. तोतों ने उसकी आवाज़ सुनी, तो वह भी चीखने लगे.

मैंने कहा—"बेटा, पिंजड़ा खोल दे. यह चीखना मुझसे सहा नहीं जाता."

लड़के को मालूम था कि उसका तोता उड़ नहीं सकता. इसीलिये शायद उसकी बेबसी का खेल देखने के लिये उसने पिंजड़ा खोल

ایک دن صبح جب ہم ٹہلنے چلے' تو لڑکے نے کہا—"آج میں طوطے کو بھی سیر کرانے لے چلونگا."

میرے من میں ایک شنکا اٹھ کھڑی ہوئی. میں نے کہا—"نہیں."

اسپر اُس نے پوچھا—"کیوں؟"

میں نے کہا—"جب تمہارا ہاتھ ٹوٹا تھا' تو چارپائی پر پڑے پڑے صحن میں لڑکوں کو کھیلتے کودتے دیکھ کر تمہارے من میں کیا ہوتا تھا؟"

لڑکا میری بات شاید سمجھ نہ سکا. اس لئے ضد میں آکر بولا—"نہیں پتا جی' ہم تو ضرور لے چلینگے! یہ بھی کیا میری طرح کوئی لڑکا ہے؟"

میں نے پھر اُسے منع نہ کیا. بھولے بھالے پنچھی بھولے بھالے لڑکوں کی ہی طرح ہوتے ہیں' یہ بات میں اُسے کیسے سمجھاتا. پھر سوچا' شاید اُسی کی بات ٹھیک ہو.

باغ میں ایک بیر کے پیڑ پر طوطوں کا ایک جھنڈ کلکاریاں مارتا بیریں کتر رہا تھا. اُن کی کلکاریاں سنکر پنجرے کے طوطے نے آنکھیں اٹھا گرا کر اوپر نیچے دیکھنا شروع کیا. اُس کی نظر بیر کے پیڑ پر پڑنی تھی کہ وہ زور سے اپنے پنکھ پھڑپھڑانے لگا اور پھر چیخنے لگا. طوطوں نے اُسکی آواز سنی' تو وہ بھی چیخنے لگے.

میں نے—"بیٹا' پنجرا کھول دے. یہ چیخنا مجھسے سہا نہیں جاتا.

لڑکے کو معلوم تھا کہ اُس کا طوطا اڑ نہیں سکتا. اِس لئے شاید اُس کی بے بسی کا کھیل دیکھنے کے لئے اُس نے پنجرا کھول

दिया. तोता आँधी की तरह पिंजड़े से बेर के पेड़ की ओर उड़ा. पर दूसरे ही छन तने से टकराकर चीखता हुआ जमीन पर गिर पड़ा. पेड़ के तोते उसकी वह आवाज सुन कर फुर्र से उड़ गये. और वह तोता आसमान की ओर देखता हुआ ऐसे चीख पड़ा, जैसे कड़ी पीड़ा से छुटकारा पाने के लिये आदमी मुक्ति की याचना करता है.

लड़का उसे पकड़ने दौड़ा, तो वह चीखता हुआ ही एक झाड़ी में घुस गया.

लड़का झाड़ी की ओर बढ़ा, तो मैंने उसे रोकते हुए कहा—"छोड़ दो अब उसे. उसकी यह चीख मुझसे नहीं सुनी जाती. अब शायद उसकी यह चीख मरते दम तक बन्द न होगी."

लड़का कुछ समझ रहा था, ऐसा कैसे कहूँ. फिर भी मेरी बात मान कर वह सिर लटकाये लौट आया. उस दिन वह बहुत उदास रहा. बार बार उस तोते के बारे में मुझसे पूछता रहा. मैंने कहा—"मैं यह समझता था बेटा, इसीलिये तुमसे कहा था कि उसे बाहर न ले जाओ. जब तक वह घर में था, अपनी आसमान की दुनिया, अपनी आजादी, अपना उड़ना भूला हुआ था. उस समय शायद उसे अपनी बेबसी का भी ज्ञान नहीं था. पर जैसे ही उसने अपने आजाद भाइयों को देखा, उसे अपनी वह सब बातें याद आ गई. एक बार उसने फिर अपनी उसी जिन्दगी में जाने की कोशिश की. पर डैनों की बेबसी ने वैसा न करने दिया. उसे अब अपनी बेबसी का ज्ञान हो गया है. अब वह उस बेबसी की जिन्दगी से, जिससे छुटकारा पाना उसके बस की बात नहीं, मर जाना ही बेहतर समझता है. अब वह जिन्दा नहीं रखा जा सकता, बेटा !"

दूसरे दिन हम टहलने गये, तो देखा, वह तोता झाड़ी के किनारे मरा पड़ा था.

دیا. طوطا آندھی کی طرح پنجرے سے بیر کے پیڑ کی اور اڑا. پر دوسرے ہی چھن تنے سے ٹکرا کر چیختا ہوا زمین پر گر پڑا. پیڑ کے طوطے اس کی وہ آواز سنکر پھر سے اڑ گئے. اور وہ طوطا آسمان کی اور دیکھتا ہوا ایسے چیخ پڑا' جیسے کوی پیڑا سے چھٹکارا پانے کے لئے آدمی مکتی کی یاچنا کرتا ہے.

لڑکا اسے پکڑنے دوڑا' تو وہ چیختا ہوا ہی ایک جھاڑی میں گھس گیا.

لڑکا جھاڑی کی اور بڑھا' تو میں نے اسے روکتے ہوئے کہا— "چھوڑ دو اب اسے. اسکی یہ چیخ مجھ سے نہیں سنی جاتی. اب شاید اسکی یہ چیخ مرتے دم تک بند نہ ہوگی."

لڑکا کچھ سمجھ رہا تھا' ایسا کیسے کہوں. پھر بھی میری بات مان کر وہ سر لٹکائے لوٹ آیا. اسدن وہ بہت اداس رہا. بار بار اس طوطے کے بارے میں مجھ سے پوچھتا رہا. میں نے کہا—"میں یہ سمجھتا تھا بیٹا' اسلئے تم سے کہا تھا کہ اسے باہر نہ لیجاؤ. جب تک وہ گھر میں تھا' اپنی آسمان کی دنیا' اپنی آزادی' اپنا اڑنا بھولا ہوا تھا. اس سمے شاید اسے اپنی بے بسی کا بھی گیان نہیں تھا. پر جیسے ہی اس نے اپنے آزاد بھائیوں کو دیکھا' اسے اپنی وہ سب باتیں یاد آگئیں. ایکبار اس نے پھر اپنی اسی زندگی میں جانے کی کوشش کی. پر ڈینوں کی بے بسی نے اسے ویسا نہ کرنے دیا. اسے اب اپنی بے بسی کا گیان ہو گیا ہے. اب وہ اس بے بسی کی زندگی سے' جس سے چھٹکارا پانا اس کے بس کی بات نہیں' مرجانا ہی بہتر سمجھتا ہے. اب وہ زندہ نہیں رکھا جاسکتا' بیٹا !"

دوسرے دن ہم ٹہلنے گئے' تو دیکھا' وہ طوطا جھاڑی کے کنارے مرا پڑا تھا.

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

एडीटर—प्रेम भाई

اڈیٹر— پریم بھائی

सुन्दर गीत

(भाई जावेद लतीफ़ी, लाहौर)

आओ गीत निराले गाएं
ऐसे जो हम सब को भाएँ

आज़ादी की चाह हो जिसमें मेल जोल की राह हो जिसमें
टूटे हुए हर मन के लिये एक सुख सेवा की चाह हो जिसमें

आओ गीत कुछ ऐसे गाएँ
ऐसे जो हम सब को भाएँ

जिन को सुन कर सब के मन में सुख और प्रेम की शक्ती भड़के
अपने देश-की ख़ातिर अपनी जान भी देने को मन तड़पे

आओ ऐसे गाने गाएँ
ऐसे जो हम सब को भाएँ

سندر گیت

(بھائی جاوید لطیفی' لاہور)

آؤ گیت نرالے گائیں
ایسے جو ہم سب کو بھائیں

آزادی کی چاہ ہو جس میں میل جول کی راہ ہو جس میں
دکھے ہوئے ہر من کیلئے اک سکھ سیوا کی چاہ ہو جس میں

آؤ گیت کچھ ایسے گائیں
ایسے جو ہم سب کو بھائیں

جن کو سن کر سب کے من میں سکھ اور پریم کی شکتی بھڑکے
اپنے دیش کی خاطر اپنی جان بھی دینے کو من تڑپے

آؤ ایسے گانے گائیں
ایسے جو ہم سب کو بھائیں

रेल कैसे रोकी

(भाई अब्दुल हमीद, बलिया)

एक बार गोपाल अपने गाँव से शहर को जारहा था. गाँव से उसे लारी पर स्टेशन पहुँचना था और वहाँ से रेल पर जाना था. लारी ठीक वक़्त पर स्टेशन पहुँच गई. गाड़ी बिलकुल तैयार थी. टिकट मिलने में देर होगई. गोपाल जब प्लेट फ़ार्म पर पहुँचा तो गाड़ी छूट गई थी. गाड़ी बहुत धीमी चाल से चल रही थी. गोपाल ने चाहा कि चलती गाड़ी में बैठ जाय. पर वहाँ खड़े हुए एक पुलिस के सिपाही ने उसे रोक लिया. गोपाल ने बहुत कहा कि मुझे बड़ी जल्दी है पर सिपाही ने कहा—“नहीं, चलती गाड़ी में बैठना जुर्म है.”

गोपाल बेचारा निराश हो कर खड़ा हो गया. पर इतने ही में क्या देखता है कि एक आदमी सफ़ेद कोट और सफ़ेद पतलून पहने, सर पर काली टोपी लगाए, हाथ में हरी झंडी और मुँह में सीटी दबाए गाड़ी के साथ दौड़ रहा है. जैसे ही वह आदमी गोपाल के पास आया और लपक कर एक डिब्बे में चढ़ना चाहा कि गोपाल ने उसका हाथ पकड़ लिया और अपनी तरफ़ खींचा. वह आदमी उस गाड़ी का गार्ड था. उस ने गोपाल को घूर कर देखा. गोपाल ने कहा—“आप मुझे घूरते क्यों हैं साहब, चलती गाड़ी में बैठना जुर्म है.”

इतने में गाड़ी और आगे बढ़ गई. गार्ड ने सीटी मुँह में दबाए-दबाए कहा—“मैं गार्ड हूँ, मुझे इसी गाड़ी में जाना है.”

ریل کیسے روکی

(بھائی عبدالصمد، بلیا)

ایک بار گوپال اپنے گاؤں سے شہر کو جارہا تھا. گاؤں سے اُسے لاری پر اسٹیشن پہونچنا تھا اور وہاں سے ریل پر جانا تھا. لاری ٹھیک وقت پر اسٹیشن پہنچ گئی. گاڑی بالکل تیار تھی. ٹکٹ ملنے میں دیر ہوگئی. گوپال جب پلیٹ فارم پر پہونچا تو گاڑی چھوٹ گئی تھی. گاڑی بہت دھیمی چال سے چل رہی تھی. گوپال نے چاہا کہ چلتی گاڑی میں بیٹھ جائے. پر وہاں کھڑے ہوئے ایک پولیس کے سپاہی نے اُسے روک لیا. گوپال نے بہت کہا کہ مجھے بڑی جلدی ہے پر سپاہی نے کہا—”نہیں‘ چلتی گاڑی میں بیٹھنا جرم ہے.“

گوپال بیچارہ نراش ہوکر کھڑا ہوگیا. پر اتنے ہی میں کیا دیکھتا ہے کہ ایک آدمی سفید کوٹ اور سفید پتلون پہنے‘ سر پر کالی ٹوپی لگائے‘ ہاتھ میں ہری جھنڈی اور منہ میں سیٹی دبائے گاڑی کے ساتھ دوڑ رہا ہے. جیسے ہی وہ آدمی گوپال کے پاس آیا اور لپک کر ایک ڈبے میں چڑھنا چاہا کہ گوپال نے اُسکا ہاتھ پکڑ لیا اور اپنی طرف کھینچا. وہ آدمی اُس گاڑی کا گارڈ تھا. اُسنے گوپال کو گھور کر دیکھا. گوپال نے کہا—”آپ مجھے گھورتے کیوں ہیں صاحب. چلتی گاڑی میں بیٹھنا جرم ہے.“

اتنے میں گاڑی اور آگے بڑھ گئی. گارڈ نے سیٹی منہ میں دبائے دبائے کہا—”میں گارڈ ہوں. مجھے اسی گاڑی میں جانا ہے.“

गोपाल ज़रा भी डरा नहीं. बोला—"साहब मैं स्कूल का विद्यार्थी हूँ. मुझे भी इसी गाड़ी में जाना है. पर चलती गाड़ी में बैठना जुर्म है."

इतने में वह सिपाही भी आगया. गोपाल उसे देख कर बोला—"देखिये हवालदार साहब, यह भी चलती गाड़ी में बैठने का जुर्म कर रहे थे."

गार्ड ने एक बार उसका हाथ झटका पर गोपाल ने बहुत कस कर उसका हाथ पकड़ रक्खा था. उसने हाथ न छोड़ा.

सिपाही ने गोपाल को डाँट कर कहा—"यह क्या नालायकी है. छोड़ो गार्ड साहब को."

गोपाल ने कहा—"नहीं साहब, यह फिर चलती गाड़ी में बैठ जायेंगे."

अब गाड़ी पलेट फ़ार्म को छोड़ने ही वाली थी. गार्ड साहब ने जब देखा कि अब गाड़ी की चाल तेज़ हुई जारही है तो उन्हों ने झट सीटी बजा कर लाल झंडी हिला दी. गाड़ी एक दम धीमी होगई और फिर रुक गई. गार्ड साहब ने फिर अपने हाथ को झटका दिया और हाथ छुड़ा कर गाड़ी की तरफ़ दौड़े. गोपाल भी उनके पीछे दौड़ा. गोपाल को भागते देख सिपाही भी उसे पकड़ने को लपका. पर गोपाल देखते ही देखते गार्ड साहब से भी आगे होगया और लपक कर एक डिब्बे में घुस गया.

गार्ड साहब ने अपने डिब्बे में पहुँच कर फिर हरी झंडी दिखालई. गाड़ी फिर चल पड़ी. पर इतने ही में वह सिपाही भी हाँपता-काँपता. गोपाल के डिब्बे के पास आया और गोपाल से कहा—"ए लड़के,

گوپال ذرا بھی ڈرا نہیں. بولا ــ "صاحب' میں اسکول کا ودیارتھی ہوں. مجھے بھی اسی گاڑی سے جانا تھا. پر چلتی گاڑی میں بیٹھنا جرم ہے."

اتنے میں وہ سپاہی بھی آگیا. گوپال اسے دیکھ کر بولا ــ "دیکھئے حوالدار صاحب' یہ بھی چلتی گاڑی میں بیٹھنے کا جرم کر رہے تھے."

گارڈ نے ایک بار اسکا ہاتھ جھٹکا. پر گوپال نے بہت کس کر اس کا ہاتھ پکڑ رکھا تھا. اس نے ہاتھ نہ چھوڑا.

سپاہی نے گوپال کو ڈانٹ کر کہا ــ "یہ کیا نالائقی ہے. چھوڑو گارڈ صاحب کو."

گوپال نے کہا ــ "نہیں صاحب' یہ پھر چلتی گاڑی میں بیٹھ جائیں گے."

اب گاڑی پلیٹ فارم کو چھوڑنے ہی والی تھی. گارڈ صاحب نے جب دیکھا کہ اب گاڑی کی چال تیز ہوتی جارہی ہے تو انہوں نے جھٹ سیٹی بجاکر لال جھنڈی ہلا دی. گاڑی ایک دم دھیمی ہوگئی اور پھر رک گئی. گارڈ صاحب نے پھر اپنے ہاتھ کو جھٹکا دیا اور ہاتھ چھڑا کر گاڑی کی طرف دوڑے. گوپال بھی انکے پیچھے دوڑا. گوپال کو بھاگتے دیکھ سپاہی بھی اُسے پکڑنے کو لپکا. پر گوپال دیکھتے ہی دیکھتے گارڈ صاحب سے بھی آگے ہو گیا اور لپک کر ایک ڈبے میں گھس گیا.

گارڈ صاحب نے اپنے ڈبے میں پہنچ کر پھر ہری جھنڈی دکھلائی. گاڑی پھر چل پڑی. پر اتنے ہی میں وہ سپاہی بھی ہانپتا کانپتا گوپال کے ڈبے کے پاس آیا اور گوپال سے کہا ــ "اے لڑکے'

तुम उतरो, तुम्हारा चालान होगा. तुम ने चलती गाड़ी को रुकवाया है."

गोपाल अपनी सीट पर बैठा-बैठा मुस्कराया. फिर अपनी जेब से टिकट निकाल कर सिपाही को दिखला कर बोला—"हवालदार साहब, मैं बे टिकट नहीं चल रहा हूँ. यह देखिये टिकट. मुझे आज स्कूल में पहुँचना बहुत ज़रूरी है इसी लिये मैं ने गाड़ी रुकवाई है. अब आप चलती गाड़ी के साथ न चलिये. यह भी जुर्म होगा."

गोपाल की बात पूरी होते-होते गाड़ी की चाल तेज़ होगई और सिपाही प्लेट फार्म पर ही खड़ा रह गया.

डिब्बे में बैठे दूसरे मुसाफ़िरों को जब गोपाल ने गाड़ी रोकने का क़िस्सा सुनाया तब सब लोग खूब हंसे और गोपाल की सूझ की तारीफ़ करने लगे.

पढ़ो और हँसो

(भाई राजेश सरन)

मां—बेटा, तुम रो क्यों रहे हो ?

लड़का—मास्टर साहब दो हफ़्ते से बीमार थे...

मां—तो क्या वह मर गये ?

लड़का—नहीं, सुना है कि वह अब अच्छे हो गये हैं.

मजिस्ट्रेट—(चोर अपराधी से) तुमसे किसी को कुछ फ़ायदा भी पहुँचा है ?

चोर—मैं तो समझता हूँ कि आप जैसे हाकिम हमारे ही जैसे लोगों के कारन नौकरी पाते हैं.

تم اترو. تمہارا چالان ہوگا. تم نے چلتی گاڑی کو رکوایا ہے."

گوپال اپنی سیٹ پر بیٹھا بیٹھا مسکرایا. پھر اپنی جیب سے ٹکٹ نکالکر سپاہی کو دکھلا کر بولا—"حوالدار صاحب. میں بے ٹکٹ نہیں چل رہا ہوں. یہ دیکھئے ٹکٹ. مجھے آج اسکول میں پہنچنا بہت ضروری ہے اسی لئے میں نے گاڑی رکوائی ہے. اب آپ چلتی گاڑی کے ساتھ نہ چلئے. یہ بھی جرم ہوگا."

گوپال کی بات پوری ہوتے ہوتے گاڑی کی چال تیز ہوگئی اور سپاہی پلیٹ فارم پر ہی کھڑا رہ گیا.

ڈبے میں بیٹھے دوسرے مسافروں کو جب گوپال نے گاڑی روکنے کا قصہ سنایا تب سب لوگ خوب ہنسے اور گوپال کی سوجھ کی تعریف کرنے لگے.

پڑھو اور ہنسو

(بھائی راجیش سرن)

ماں—بیٹا تم رو کیوں رہے ہو ؟

لڑکا—ماسٹر صاحب دو ہفتے سے بیمار تھے......

ماں—تو کیا وہ مر گئے ؟

لڑکا—نہیں، سنا ہے کہ وہ اب اچھے ہو گئے ہیں.

مجسٹریٹ—(چور اپرادھی سے) تم سے کسی کو کچھ فائدہ بھی پہنچا ہے ؟

چور—میں تو سمجھتا ہوں کہ آپ جیسے حاکم ہمارے ہی جیسے لوگوں کے کارن نوکری پاتے ہیں.

हमारी राय

ہماری رائے

अयोध्या के मुसलमान

('हरिजन सेवक' १९ अगस्त' १९५०.)

श्री अक्षय ब्रह्मचारी अयोध्या के एक वैश्नव साधु हैं. वे फैजाबाद जिला कांगरेस कमेटी के मंत्री और उत्तर प्रदेश सूबा कांगरेस कमेटी के मेम्बर हैं. उत्तर प्रदेश के सभी नेता अच्छी तरह जानते हैं. कि वह एक सच्चे कार्य कर्ता हैं. फैजाबाद और अयोध्या एक दूसरे से मिले हुए हैं. सच यह है कि वह एक ही शहर हैं. दोनों एक ही म्युनिसिपेलिटी के अन्दर हैं. सन् १९४९ या उससे कुछ पहले से वहाँ हिन्दू मुस्लिम सवाल खेदजनक रूप में खड़ा हो गया है. उसमें हिन्दुओं की तरफ से मुसलमानों पर बहुत जुल्म हुआ है. इस बात से श्री अक्षय ब्रह्मचारी और फैजाबाद नगर कांगरेस कमेटी के सदर सिद्धेश्वरी प्रसाद और कुछ कार्यकर्ता बहुत दुखी हुए. बहुत कुछ कोशिश करने पर भी जब मामला सुधरने नहीं पाया, तो आखिर में ता० ३०-१-५०. को श्री अक्षय ब्रह्मचारी ने लाचार

ایودھیا کے مسلمان

('ہریجن سیوک' ۱۹ اگست' ۱۹۵۰)

شری اکشے برہمچاری ایودھیا کے ایک ویشنو سادھو ہیں۔ وہ فیض آباد ضلع کانگریس کمیٹی کے سکتری اور اتر پردیش صوبہ کانگریس کمیٹی کے ممبر ہیں۔ اتر پردیش کے سبھی نیتا اچھی طرح جانتے ہیں کہ وہ ایک سچے کاریہ کرتا ہیں۔ فیض آباد اور ایودھیا ایک دوسرے سے ملے ہوئے ہیں۔ سچ یہ ہے کہ وہ ایک ہی شہر ہیں۔ دونوں ایک ہی میونسپلٹی کے اندر ہیں۔ سن ۱۹۴۹ یا اس سے کچھ پہلے سے وہاں ہندو مسلم سوال کھید جنک روپ میں کھڑا ہو گیا ہے۔ اس میں ہندوؤں کی طرف سے مسلمانوں پر بہت ظلم ہوا ہے۔ اس بات سے شری اکشے برہمچاری اور فیض آباد نگر کانگریس کمیٹی کے صدر سدھیشوری پرساد اور کچھ کاریہ کرتا دکھی ہوئے۔ بہت کچھ کوشش کرنے پر بھی جب معاملہ سدھر نے نہیں پایا، تو آخر میں تاریخ ۳۰-۱-۵۰ کو شری اکشے برہمچاری نے لاچار

होकर अनशन (खाना बन्द) कर दिया. यू. पी. के होम मिनिस्टर के यह यक़ीन दिलाने पर कि वह सब ठीक कर देंगे उन्होंने ता० ५-२-५०. को अनशन छोड़ दिया.

श्री अक्षय ब्रह्मचारी की शिकायत है कि बाद में जो जाँच वग़ैरा और अन्याय की दुरुस्ती होनी चाहिये थी वह नहीं की गई, और मामला अबतक जैसा का तैसा उलझा हुआ है; इतना ही नहीं, बल्कि मुसलमानों के लिये आइन्दा के वास्ते ज़्यादा मुशकिल भी कर दी गई है. इसलिये श्री अक्षय ब्रह्मचारी फिर बेचैन हो गए हैं और उन्होंने एलान किया है कि वह तारीख़ बाइस अगस्त से फिर से अनशन शुरू करने वाले हैं.

श्री अक्षय ब्रह्मचारी के कहने के अनुसार झगड़े की ख़ास बातें यह हैं :

[यहाँ पर भाई किशोर लाल मशरूवाला ने फ़ैज़ाबाद की मशहूर बाबरी मसजिद की बाबत वहाँ के मुसलमानों की और श्री अक्षय ब्रह्मचारी की शिकायतों को बयान किया है. हम उस सब को इसलिये छोड़ रहे हैं क्यों कि बाबरी मसजिद का मामला इस समय दीवानी अदालत के सामने पेश है और उस पर किसी तरह की भी टीका अदालत के काम में कठिनाई पैदा कर सकती है. –एडिटर]

वहाँ की एक दूसरी घटना यह है :

किसी मुसलमान की 'स्टार होटल' नाम की एक दुकान थी. एक दिन एक शख़्स ने ज़िला मजिस्ट्रेट को ख़बर दी कि उस होटल में हथियार छिपे हुए हैं. तलाशी ली गई, पर ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली. वहाँ चार आदमी थे. उनमें

ہوکر ان شن (کھانا بند) کر دیا. یو. پی. کے ہوم منسٹر کے یہ یقین دلانے پر کہ وہ سب ٹھیک کر دینگے انہوں نے تاریخ ۵-۲-۵۰ کو ان شن چھوڑ دیا.

شری اکشے برہمچاری کی شکایت ہے کہ بعد میں جو جانچ وغیرہ اور انیائے کی درستی ہونی چاہئے تھی وہ نہیں کی گئی، اور معاملہ ابتک جیسا کا تیسا الجھا ہوا ہے؛ اتنا ہی نہیں، بلکہ مسلمانوں کے لئے آئندہ کے واسطے زیادہ مشکل بھی کر دی گئی ہے. اسلئے شری اکشے برہمچاری پھر بے چین ہوگئے ہیں اور انہوں نے اعلان کیا ہے کہ وہ تاریخ بائیس اگست سے پھر سے ان شن شروع کرنیوالے ہیں.

شری اکشے برہمچاری کے کہنے کے انوسار جھگڑے کی خاص باتیں یہ ہیں :

[یہاں پر بھائی کشور لال مشرو والا نے فیض آباد کی مشہور بابری مسجد کی بابت وہاں کے مسلمانوں کی اور شری اکشے برہمچاری کی شکایتوں کو بیان کیا ہے. ہم اس سبکو اسلئے چھوڑ رہے ہیں کیونکہ بابری مسجد کا معاملہ اس سمے دیوانی عدالت کے سامنے پیش ہے اور اس پر کسی طرح کی بھی ٹیکا عدالت کے کام میں کٹھنائی پیدا کر سکتی ہے. —ایڈیٹر]

وہاں کی ایک دوسری گھٹنا یہ ہے :

کسی مسلمان کی 'اسٹار ہوٹل' نام کی ایک دکان تھی. ایک دن ایک شخص نے ضلع مجسٹریٹ کو خبر دی کہ اس ہوٹل میں ہتھیار چھپے ہوئے ہیں. تلاشی لی گئی، پر ایسی کوئی چیز نہیں ملی. وہاں چار آدمی تھے. ان میں

से एक सुल्तानपुर का था. वह बिस्कुट खरीदने आया था. उसे दफ़ा १०९ में गिरफ्तार किया गया. बाद में वह छूट गया और जिला मजिस्ट्रेट ने होटल के मालिक को दुकान खाली करने का हुक्म दे दिया और उसी समय दुकान अपने सामने खाली करवा ली. बाद में वह दुकान दूसरे को दे दी गई, जिसने वहाँ 'गोमती होटल' के नाम से अपनी दुकान खोली. उसे खोलने की रसम जिला जज के हाथों हुई. दूसरे सरकारी अफ़सर भी मौजूद थे. कहा जाता है कि 'स्टार होटल' का मालिक एक पुराना नैशनलिस्ट मुसलमान है, और पिछले दिनों लीगियों ने उसका बाइकाट भी किया था. यानी, यह बात भी नहीं है कि इस शख्स ने हिन्दुओं के खिलाफ़ पिछले दिनों किसी आन्दोलन में हिस्सा लिया हो, जिसका गुस्सा अब तक रहा हो. उसने कोर्ट में दावा किया और उसमें जीत भी गया. लेकिन अब तक दुकान का क़ब्ज़ा लेने में वह सफल नहीं हुआ.

तीसरी घटना और भी कठोरता की है.

एक मुसलमान औरत मरी. अयोध्या में कई क़ब्रस्तान हैं. उसके रिश्तेदार नजदीक के क़ब्रस्तान में उसका जनाज़ा दफ़नाने का इन्तज़ाम करने लगे. कुछ हिन्दुओं ने आकर उन्हें रोका और खड्डा खोदने से मना किया. रिश्तेदार सिटी मजिस्ट्रेट के पास गये. उन्हें मदद देना मजिस्ट्रेट का फ़र्ज़ था. उसने मदद करने के बजाय उनसे कहा कि उस क़ब्रस्तान के बारे में हिन्दुओं का विरोध है, तो बेहतर है कि तुम दूसरे क़ब्रस्तान में जाओ. तब रिश्तेदार वहाँ गये. वहाँ दूसरे हिन्दू दल ने आकर झगड़ा उठाया. तब सिटी मजिस्ट्रेट ने तीसरे में जाने के लिये

سے ایک سلطان پور کا تھا . وہ بسکٹ خریدنے آیا تھا . اسے دفعہ ١٠٩ میں گرفتار کیا گیا . بعد میں وہ چھوٹ گیا اور ضلع مجسٹریٹ نے ہوٹل کے مالک کو دوکان خالی کرنے کا حکم دیدیا اور اسی سمے دوکان اپنے سامنے خالی کروالی . بعد میں وہ دوکان دوسرے کو دیدی گئی' جس نے وہاں 'گومتی ہوٹل' کے نام سے اپنی دوکان کھولی . اسے کھولنے کی رسم ضلع جج کے ہاتھوں ہوئی . دوسرے سرکاری افسر بھی موجود تھے . کہا جاتا ہے کہ ' اسٹار ہوٹل' کا مالک ایک پرانا نیشنلسٹ مسلمان ہے' اور پچھلے دنوں لیگیوں نے اسکا بائیکاٹ بھی کیا تھا . یعنی' یہ بات بھی نہیں ہے کہ اس شخص نے ہندؤوں کے خلاف پچھلے دنوں کسی آندولن میں حصہ لیا ہو' جس کا غصہ ابتک رہا ہو . اس نے کورٹ میں دعوی کیا اور اسمیں جیت بھی گیا . لیکن ابتک دوکان کا قبضہ لینے میں وہ سپھل نہیں ہوا .

تیسری گھٹنا اور بھی کٹھورتا کی ہے .

ایک مسلمان عورت مری . ایودھیا میں کئی قبرستان ہیں . اسکے رشتےدار نزدیک کے قبرستان میں اس کا جنازہ دفنانے کا انتظام کرنے لگے . کچھ ہندؤوں نے آکر انہیں روکا اور کھڈا کھودنے سے منع کیا . رشتےدار سٹی مجسٹریٹ کے پاس گئے . انہیں مدد دینا مجسٹریٹ کا فرض تھا . اس نے مدد کرنے کے بجائے ان سے کہا کہ اس قبرستان کے بارے میں ہندؤوں کا ورودھ ہے' تو بہتر ہے کہ تم دوسرے قبرستان میں جاؤ . تب رشتےدار وہاں گئے . وہاں دوسرے ہندو دل نے آکر جھگڑا اٹھایا . تب سٹی مجسٹریٹ نے تیسرے میں جانے کے لئے

करमान दिया. तब वह तीसरे में गये. इस तरह एक के बाद एक क़ब्रस्तान में उन्हें जाना पड़ा. तीसरे क़ब्रस्तान में भी विरोध तो रहा. इस दरम्यान २२ घन्टे तक लाश पड़ी रही. आखिर में उसे अयोध्या के बाहर कहीं मिट्टी दी गई. इस तरह की घटनायें चार और लाशों के बारे में भी हो चुकी हैं और वहाँ एक डरावना ज़ोर-दार आन्दोलन चल रहा है कि अयोध्या के भीतर मुसलमानों को लाशें दफ़नाने न दी जायँ.

इन घटनाओं के अलावा पिछले एक बरस में मुसलमानों के साथ और भी छोटे मोटे बुरे बर्ताव हुए हैं. कई अकेले दुकेले राह चलते मुसलमानों को मारा पीटा और क़त्ल भी किया गया है. बक़र-ईद के वक़्त सताया गया है. अभी पिछली ईद को भी एक मुसल-मान की हत्या की गई और डर के मारे अयोध्या के मुसलमानों ने ईद नहीं मनाई. उन पर हमला किया गया है. स्त्रियों और बच्चों तक को सताया गया और बड़ी गिनती में उनके घर भी जलाये गये हैं. घबराये हुए मुसलमानों को मार डालने की धमकियाँ दी गई हैं. कई मुसलमानों ने अपने बाल बच्चों को फ़ैज़ाबाद से बाहर रिश्तेदारों के यहाँ भेज दिया है. श्री अक्षय ब्रह्मचारी जैसे शान्ति क़ायम करने वाले कार्यकर्ताओं पर भी कई बार हमले किये गये हैं और उनके मकान लूटे गये हैं.

हिन्दुओं का कहना है कि अयोध्या में मुसलमानों का कोई क़ब्रस्तान रह नहीं सकता. यहाँ "हिन्दुओं का कहना है" का मतलब यह न समझा जाये कि आम हिन्दू जनता को इस तरह की कारवाइयाँ और झगड़े पसन्द हैं. आम जनता इतनी भोली होती है कि उसे

فرمان دیا. تب وہ تیسرے میں گئے. اس طرح ایک کے بعد ایک قبرستان میں انہیں جانا پڑا. تیسرے قبرستان میں بھی ورودھ تو رہا. اس درمیان ۲۲ گھنٹے تک لاش پڑی رہی. آخر میں اسے ایودھیا کے باہر کہیں مٹی دی گئی. اس طرح کی گھٹنائیں چار اور لاشوں کے بارے میں بھی ہو چکی ہیں اور وہاں ایک ڈراونا زور دار آندولن چل رہا ہے کہ ایودھیا کے بھیتر مسلمانوں کو لاشیں دفنانے نہ دی جائیں.

ان گھٹناؤں کے علاوہ پچھلے ایک برس میں مسلمانوں کے ساتھ اور بھی چھوٹے موٹے برے برتاؤ ہوئے ہیں. کئی اکیلے دکیلے راہ چلتے مسلمانوں کو مارا پیٹا اور قتل بھی کیا گیا ہے. بقرعید کے وقت ستایا گیا ہے. ابھی پچھلی عید کو بھی ایک مسلمان کی ہتیا کی گئی اور ڈر کے مارے ایودھیا کے مسلمانوں نے عید نہیں منائی. ان پر حملہ کیا گیا ہے. استریوں اور بچوں تک کو ستایا گیا اور بڑی گنتی میں ان کے گھر بھی جلائے گئے ہیں. گھبرائے ہوئے مسلمانوں کو مار ڈالنے کی دھمکیاں دی گئی ہیں. کئی مسلمانوں نے اپنے بال بچوں کو فیض آباد سے باہر رشتہ داروں کے یہاں بھیج دیا ہے. شری اکشے برہمچاری جیسے شانتی قائم کرنے والے کاریہ کرتاؤں پر بھی کئی بار حملے کئے گئے ہیں اور ان کے مکان لوٹے گئے ہیں.

ہندوؤں کا کہنا ہے کہ ایودھیا میں مسلمانوں کا کوئی قبرستان رہ نہیں سکتا. یہاں "ہندوؤں کا کہنا ہے" کا مطلب یہ نہ سمجھا جائے کہ عام ہندو جنتا کو اس طرح کی کارروائیاں اور جھگڑے پسند ہیں. عام جنتا اتنی بھولی ہوتی ہے کہ اسے

आज मुसलमानों की हत्या करने के लिये बहकाया जा सकता है और कल उन्हें गले लगाने के लिये उतना ही पिघलाया जा सकता है. यह जो कुछ किया जाता है, वह हिन्दुओं के नाम पर एकता की जगह नफ़रतें फैलाने की कोशिश में लगे हुए थोड़े से अगुवाओं का काम होता है.

मुझे यह भी बताया गया है कि फ़ैज़ाबाद अयोध्या के हिन्दू मुसलमानों में वह बेदिली इस एकाध बरस में ही फैली है. १९४७-४८ में भी जब सब जगह फ़िरक़ेवारी दंगा फ़साद चल रहे थे, तब भी फ़ैज़ाबाद में किसी तरह का तूफ़ान नहीं हुआ. पर अभी हाल में फ़ैज़ाबाद आपसी नफ़रत का केन्द्र सा बन गया है और वहाँ पर इन झगड़ों को जो सफलता मिली है, उसके कारन आगरा, मथुरा, बरेली वग़ैरा ज़िलों तक यही मुसलिम विरोधी हवा बढ़ चली है. कुछ महीने पहले उत्तर प्रदेश के मुसलमान जो बड़ी तादाद में पाकिस्तान जाने लगे थे उसकी जड़ में यही कारन था.

मालूम होता है कि इस अन्याय में उत्तर प्रदेश के कुछ बड़े सरकारी अफ़सरों और कांगरेसी नेताओं का भी हाथ रहा है. सरकार अपने नौकरों को रोकने में और तुरन्त इन अन्यायों को ख़तम करने का फ़रमान निकालने में नाकामयाब रही.

इस हालत में श्री अक्षय ब्रह्मचारी का और अधिक धीरज न रख सकना मैं एक क़ुदरती बात मानता हूं. अगर ऊपर लिखी बातों में कोई ऐसी गहरी बातें सचाई से हटी हुई हों, जिसके कारन सारा चित्र ही बदल जाता हो, या उन्होंने कुछ जल्दबाज़ी की हो और

آج مسلمانوں کی ہتیا کرنے کے لئے بہکایا جاسکتا ہے اور کل انہیں گلے لگانے کے لئے اتنا ہی پگھلایا جاسکتا ہے ۔ یہ جو کچھ کیا جاتا ہے، وہ ہندوؤں کے نام پر ایکتا کی جگہ نفرتیں پھیلانے کی کوشش میں لگے ہوئے تھوڑے سے اگواؤں کا کام ہوتا ہے ۔

مجھے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ فیض آباد ایودھیا کے ہندو مسلمانوں میں یہ بے دلی اس ایک آدھ برس میں ہی پھیلی ہے ۔ ۴۸-۱۹۴۷ میں بھی جب سب جگہ فرقہ واری دنگا فساد چل رہے تھے، تب بھی فیض آباد میں کسی طرح کا طوفان نہیں ہوا ۔ پر ابھی حال میں فیض آباد آپسی نفرت کا کیندر سا بن گیا ہے اور وہاں پر ان جھگڑوں کو جو سپھلتا ملی ہے، اس کے کارن آگرہ، متھرا، بریلی وغیرہ ضلعوں تک یہی مسلم ورودھی ہوا بڑھ چلی ہے ۔ کچھ مہینے پہلے اتر پردیش کے مسلمان جو بڑی تعداد میں پاکستان جانے لگے تھے اسکی جڑ میں یہی کارن تھا ۔

معلوم ہوتا ہے کہ اس انیائے میں اتر پردیش کے کچھ بڑے سرکاری افسروں اور کانگریسی نیتاؤں کا بھی ہاتھ رہا ہے ۔ سرکار اپنے نوکروں کو روکنے میں اور ترنت ان انیایوں کو ختم کرنے کا فرمان نکالنے میں ناکامیاب رہی ۔

اس حالت میں شری اکشے برہمچاری کا اور ادھک دھیرج نہ رکھ سکنا میں ایک قدرتی بات مانتا ہوں ۔ اگر اوپر لکھی باتوں میں کوئی ایسی گہری باتیں سچائی سے ہٹی ہوئی ہوں، جسکے کارن سارا چتر ہی بدل جاتا ہو، یا انہوں نے کچھ جلدبازی کی ہو اور

मुसलमानों को न्याय दिलवाने का कोई दूसरा उपाय निकलता हो, तो वह उन्हें समझा देना चाहिये. नहीं तो, यू. पी. में मुसलमानों को पूरा न्याय और बराबरी मिल सकती है, यह विश्वास सरकार को अपने अमल के जरिये लोगों के दिलों में पैदा कर देना चाहिये.

मैं जानता हूं कि यू. पी. एक बहुत बड़ा सूबा है और उसका शासन बहुत मुश्किल है. यू. पी. के बहुत से नेताओं और पढ़े लिखे लोगों के खयालात भी इस बारे में साफ़ नहीं हैं कि न्याय में और खुशामद (Appeasement) में और बहुगिनत लोगों के जो अधिकार समझे जाते हैं उनमें] कैसे फ़रक़ किया जाये. दूसरे सूबों की निस्बत हिन्दू मुसलमानों की मिली हुई आबादी वहां ज्यादा है और हिन्दू मुसलिम दोनों संस्कृतियों के मशहूर मरकज़ उस प्रदेश में आ गये हैं. अगर आपस में मेल मोहब्बत हो, तो एक सुन्दर मिली जुली कलचर की रचना के लिये वहां सारा सामान मौजूद है पर दिलों में नफ़रत रही तो वह सारे भारत के लिये एक डरावनी यादवी (महा भारत) भी खड़ी कर सकता है. श्री अक्षय ब्रह्मचारी चन्द मित्रों के साथ लगभग अकेले इस अन्याय के सामने जो डट गये हैं, यह उनके लिये सचमुच तारीफ़ की बात है. मैं उम्मीद करता हूं कि अयोध्या के मुसलमानों को इन्साफ़ दिलाने में वह कामयाबी हासिल करेंगे और सरकार इसमें अपनी पूरी शक्ति लगाना अपना फ़र्ज़ समझेगी.

आखिर में मैं भारत और पाकिस्तान के मुसलमानों से एक शब्द कहना चाहता हूं.

مسلمانوں کو نیائے دلوانے کا کوئی دوسرا اُپائے نکلتا ہو' تو وہ اُنہیں سمجھا دینا چاہئے. نہیں تو' یو. پی. میں مسلمانوں کو پورا نیائے اور برابری مل سکتی ہے' یہ وشواس سرکار کو اپنے عمل کے ذریعے لوگوں کے دلوں میں پیدا کر دینا چاہئے.

میں جانتا ہوں کہ یو. پی. ایک بہت بڑا صوبہ ہے اور اسکا شاسن بہت مشکل ہے. یو. پی. کے بہت سے نیتاؤں اور پڑھے لکھے لوگوں کے خیالات بھی اس بارے میں صاف نہیں ہیں کہ نیائے میں اور خوشامد (Appeasement) میں اور بہوگنت لوگوں کے جو ادھیکار سمجھے جاتے ہیں اُن میں کیسے فرق کیا جائے. دوسرے صوبوں کی نسبت ہندو مسلمانوں کی ملی ہوئی آبادی وہاں زیادہ ہے اور ہندو مسلم دونوں سنسکرتیوں کے مشہور مرکز اُس پردیش میں آگئے ہیں. اگر آپس میں میل محبت ہو' تو ایک سندر ملی جلی کلچر کی رچنا کیلئے وہاں سارا سامان موجود ہے. پر دلوں میں نفرت رہی تو وہ سارے بھارت کے لئے ایک ڈراونی یادوی (مہابھارت) بھی کھڑی کر سکتا ہے. شری اکشے برہمچاری چند مترون کے ساتھ لگ بھگ اکیلے اس انیائے کے سامنے جو ڈٹ گئے ہیں' یہ اُن کے لئے سچ مچ تعریف کی بات ہے. میں اُمید کرتا ہوں کہ ایودھیا کے مسلمانوں کو انصاف دلانے میں وہ کامیابی حاصل کرینگے اور سرکار اسمیں اپنی پوری شکتی لگانا اپنا فرض سمجھے گی.

آخر میں میں بھارت اور پاکستان کے مسلمانوں سے ایک شبد کہنا چاہتا ہوں.

ऊपर का बयान पढ़ कर उनका घबरा जाना या गुस्सा करना वाजिब न होगा. इस लेख का ग़लत इस्तेमाल करने वाला कोई भी मुसलमान अपनी जमाअत का नुक़सान ही करेगा. याद रहे कि ऊपर लिखी घटनाओं में कोई भी बिलकुल ताज़ा नहीं है, और नेहरू लियाक़त समझौते से पहले जो बुरी हालत भारत और पाकिस्तान दोनों के बहुत से हिस्सों में थी उसी का यह एक हिस्सा है. जो घटनायें हुई हैं, उनमें ताज्जुब की कोई बात नहीं. यह बयान इतना ही दिखाता है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों ने बुरे काम किये हैं, और किसी को यह हक़ नहीं कि दूसरे को ज़्यादा गुनाहगार बताये. यह हालत अभी पूरी तरह सुधरी नहीं है लेकिन इस बात का ख़याल रखा जाय कि उसे सुधारने के लिये एक हिन्दू साधू और उसके साथी कोशिश कर रहे हैं और इन्साफ़ और प्रेम के हित में मुसलमानों की तरफ़ से डट रहे हैं. जो मुसलमान इसे पढ़ कर बहकेगा या दूसरों को बहकायेगा वह श्री अक्षय ब्रह्मचारी के काम को ज़्यादा मुश्किल कर देगा.

वर्धा, ३१. ७. ५०.   कि० घ० मशरूवाला

ऊपर का लेख हमने 'हरिजन सेवक' से नक़ल किया है. पढ़ने वालों की आसानी के लिये कुछ शब्द बदल दिये गये हैं. इसके लिये हमने अंगरेज़ी 'हरिजन' से भी मिलान कर लिया है और अपनी सकत भर यह ख़याल रखा है कि भाई किशोर लाल मशरूवाला के विचार और भाव ज्यूँ के त्यूँ बने रहें.

हम श्री अक्षय ब्रह्मचारी को अच्छी तरह जानते हैं. उनकी सचाई, इन्साफ़ पसन्दी, उदारता, लगन और त्याग का हमारे दिल

اوپر کا بیان پڑھ کر انکا گھبرا جانا یا غصہ کرنا واجب نہ ہوگا. اس لیکھ کا غلط استعمال کرنیوالا کوئی بھی مسلمان اپنی جماعت کا نقصان ہی کریگا. یاد رہے کہ اوپر لکھی گھٹناؤں میں کوئی بھی بالکل تازہ نہیں ہے، اور نہرو لیاقت سمجھوتے سے پہلے جو بری حالت بھارت اور پاکستان دونوں کے بہت سے حصوں میں تھی، اسی کا یہ ایک حصہ ہے. جو گھٹنائیں ہوئی ہیں، ان میں تعجب کی کوئی بات نہیں. یہ بیان اتنا ہی دکھاتا ہے کہ ہندو اور مسلمان دونوں نے برے کام کئے ہیں، اور کسی کو یہ حق نہیں کہ دوسرے کو زیادہ گنہگار بتائے. یہ حالت ابھی پوری طرح سدھری نہیں ہے لیکن اس بات کا خیال رکھا جائے کہ اسے سدھارنے کے لئے ایک ہندو سادھو اور اسکے ساتھی کوشش کر رہے ہیں اور انصاف اور پریم کے ہت میں مسلمانوں کی طرف سے ڈٹ رہے ہیں. جو مسلمان اسے پڑھ کر بہکیگا یا دوسروں کو بہکائیگا وہ شری اکشے برہمچاری کے کام کو زیادہ مشکل کردیگا.

وردھا ٣١-٧-٥٠   ک. گھ. مشرو والا

اوپر کا لیکھ ہم نے 'ہریجن سیوک' سے نقل کیا ہے. پڑھنے والوں کی آسانی کے لئے کچھ شبد بدل دئے گئے ہیں. اسکے لئے ہم نے انگریزی 'ہریجن' سے بھی ملان کر لیا ہے اور اپنی سکت بھر یہ خیال رکھا ہے کہ بھائی کشور لال مشرو والا کے وچار اور بھاؤ جیوں کے تیوں بنے رہیں.

ہم شری اکشے برہمچاری کو اچھی طرح جانتے ہیں. انکی سچائی، انصاف پسندی، اُدارتا، لگن اور تیاگ کا ہمارے دل

में बहुत बड़ा आदर है. जो घटनाएँ इस लेख में बयान की गई हैं वह हम पहले भी कई जानकार लोगों से सुन चुके हैं. आम हिन्दू जनता का हमें इसमें कोई दोश दिखाई नहीं देता. दोश है उन कांगरेसी और ग़ैर कांगरेसी पढ़े लिखे लोगों और सरकारी अफ़सरों का जो अभी तक यह नहीं समझ पाए कि धर्म और कलचर के नाम पर इस तरह की तंग नज़री और इस तरह के पाप किसी देश का भला नहीं कर सकते और अगर हमने समय रहते अपने दिलों और दिमाग़ों को इनसे पाक न किया तो यह हमारे नाश का सब से बड़ा कारन होगा.

हम अधिक कहना नहीं चाहते. हमारा दिल पूरी तरह श्री अक्षय ब्रह्मचारी और उनके साथियों के साथ है. हमारी भगवान से प्रार्थना है कि वह हमारी सरकार और जनता दोनों को नेक समझ और हिम्मत दें, प्रान्त की सरकार जल्दी से जल्दी फ़ैज़ाबाद की हालत को सुधार कर देश के मुसलमानों के साथ इन्साफ़ करने और आइन्दा के लिये इन्साफ़ का भरोसा दिलाने में कामयाब हो, श्री अक्षय ब्रह्मचारी की जान बच सके और इस प्रान्त का जीवन एक बहुत बड़े कलंक से बच जावे. अगर भगवान को यह मन्ज़ूर नहीं है तब भी हमें विश्वास है कि श्री गनेश शंकर विद्यार्थी, महात्मा गांधी और श्री अक्षय ब्रह्मचारी जैसों के बलिदान व्यर्थ नहीं जा सकते. देश की हिन्दू और मुसलमान जनता एक न एक दिन अपने सच्चे हित को समझेगी और आपसी नफ़रत और ग़लतफ़हमियों के इस भयंकर जाल से निकल कर एकता और प्रेम के साथ देश को सच्ची उन्नति के पथ पर आगे ले जा सकेगी.

ता० ३० अगस्त, ५०. —सुन्दरलाल

میں بہت بڑا آدر ہے . جو گھٹنائیں اس لیکھ میں بیان کی گئی ہیں وہ ہم پہلے بھی کئی جانکار لوگوں سے سن چکے ہیں . عام ہندو جنتا کا ہمیں اسمیں کوئی دوش دکھائی نہیں دیتا . دوش ہے اُن کانگریسی اور غیر کانگریسی پڑھے لکھے لوگوں اور سرکاری افسروں کا جو ابھی تک یہ نہیں سمجھ پائے کہ دھرم اور کلچر کے نام پر اسطرح کی تنگ نظری اور اس طرح کے پاپ کسی دیش کا بھلا نہیں کرسکتے اور اگر ہم نے سمے رہتے اپنے دلوں اور دماغوں کو ان سے پاک نہ کیا تو یہ ہمارے ناش کا سب سے بڑا کارن ہوگا .

ہم ادھک کہنا نہیں چاہتے . ہمارا دل پوری طرح شری اکشے برھمچاری اور اُن کے ساتھیوں کےساتھ ہے . ہماری بھگوان سے پرارتھنا ہے کہ وہ ہماری سرکار اور جنتا دونوں کو نیک سمجھ اور ہمت دیں' پرانت کی سرکار جلدی سے جلدی فیض آباد کی حالت کو سدھار کر دیش کے مسلمانوں کے ساتھ انصاف کرنے اور آئندہ کے لئے انصاف کا بھروسہ دلانے میں کامیاب ہو' شری اکشے برھمچاری کی جان بچ سکے اور اس پرانت کا جیون ایک بہت بڑے کلنک سے بچ جائے . اگر بھگوان کو یہ منظور نہیں ہے تب بھی ہمیں وشواس ہے کہ شری گنیش شنکر ودیارتھی' مہاتما گاندھی اور شری اکشے برھمچاری جیسوں کے بلیدان ویرتھ نہیں جا سکتے . دیش کی ہندو اور مسلمان جنتا ایک نہ ایک دن اپنے سچے ہت کو سمجھیگی اور آپسی نفرت اور غلط فہمیوں کے اس بھینکر جال سے نکل کر ایکتا اور پریم کے ساتھ دیش کو سچی اُنتی کے پتھ پر آگے لیجا سکیگی .

— سندر لال تاریخ ۳۰ اگست ۵۰

सर डिकसन और कशमीर

कशमीर के झगड़े को निबटाने के लिये यू० एन० ओ० की तरफ से सर ओवन डिकसन २८ मई सन् ५० को हिन्दुस्तान आए थे. ढाई महीने उन्होंने कभी दिल्ली, कभी कशमीर, कभी कराची जाकर भारत और पाकिस्तान में सुलह कराने की कोशिश की. पर उनके कराए सुलह न हो सकी. बाईस अगस्त को कराची से सर ओवन डिकसन का जो बयान इस बारे में निकला है उसका निचोड़ थोड़े से में और जहां तक हो सका उन्हीं के शब्दों में हम नीचे दे रहे हैं. वह कहते हैं :—

"हाल में इस बात की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती कि भारत और पाकिस्तान कशमीर के बारे में अपने किसी भी झगड़े को मिल कर तय कर सकें. मेरे और अधिक इस देश में रहने से कोई फ़ायदा नहीं हो सकता.

"मैं जब आया तब कशमीर रियासत दो हिस्सों में बँटी हुई थी. एक तरफ़ पाकिस्तान की फ़ौजें पड़ी हुई थीं दूसरी तरफ़ भारत की. इन दोनों फ़ौजों का अपने अपने हिस्से पर क़बज़ा था. पर सन् १९४८ के अन्त से लड़ाई बन्द थी. दोनों सरकारों के बीच यह तय हो चुका था कि कशमीर के लोगों की खुली राय लेकर यह देख लिया जाय कि वहां के लोग भारत के साथ रहना चाहते हैं या पाकिस्तान के और इसका इन्तज़ाम कर दिया जाय कि सब लोग आज़ादी से राय दे सकें. पर वह इन्तज़ाम क्या और कैसे हो इस पर न उस समय दोनों सरकारों की एक राय बन पाई थी और न कभी बनी.

سر ڈکسن اور کشمیر

کشمیر کے جھگڑے کو نپٹانے کے لئے یو۔ این۔ او۔ کی طرف سے سر اوون ڈکسن ۲۸ مئی سن ۵۰ کو ھندستان آئے تھے۔ ڈھائی مہینے انہوں نے کبھی دلی، کبھی کشمیر، کبھی کراچی جاکر بھارت اور پاکستان میں صلح کرانے کی کوشش کی۔ پر انکے کرائے صلح نہ ہو سکی۔ بائیس اگست کو کراچی سے سر اوون ڈکسن کا جو بیان اس بارے میں نکلا ہے اسکا نچوڑ تھوڑے سے میں اور جہاں تک ہوسکا انہیں کے شبدوں میں ہم نیچے دے رہے ہیں۔ وہ کہتے ہیں :—

''حال میں اس بات کی کوئی امید نہیں کی جاسکتی کہ بھارت اور پاکستان کشمیر کے بارے میں اپنے کسی بھی جھگڑے کو مل کر طے کرسکیں۔ میرے اور ادھک اس دیش میں رہنے سے کوئی فائدہ نہیں ہو سکتا۔

''میں جب آیا تب کشمیر ریاست دو حصوں میں بٹی ہوئی تھی۔ ایک طرف پاکستان کی فوجیں پڑی ہوئی تھیں دوسری طرف بھارت کی۔ ان دونوں فوجوں کا اپنے اپنے حصے پر قبضہ تھا۔ پر سن ۱۹۴۸ کے انت سے لڑائی بند تھی۔ دونوں سرکاروں کے بیچ یہ طے ہو چکا تھا کہ کشمیر کے لوگوں کی کھلی رائے لیکر یہ دیکھ لیا جائے کہ وہاں کے لوگ بھارت کے ساتھ رہنا چاہتے ہیں یا پاکستان کے اور اسکا انتظام کردیا جائے کہ سب لوگ آزادی سے رائے دے سکیں۔ پر وہ انتظام کیا اور کیسے ہو اس پر نہ اُس سمے دونوں سرکاروں کی ایک رائے بن پائی تھی اور نہ کبھی بنی۔

"मैंने सबसे पहले इसी बात पर दोनों में कोई समझौता करा देने की कोशिश की. दोनों ने बहुत सी ऐसी मुश्किलें मेरे सामने खड़ी कर दीं जो किसी तरह के भी समझौते के रास्ते में पहाड़ मालूम होती थीं. मालूम होता था अभी और भी मुश्किलें खड़ी की जायंगी.

"मैं दोनों सरकारों के प्रधान वज़ीरों से मिला. उन दोनों में से किसी के पास समझौते के लिये कोई तजवीज़ थी ही नहीं. तब मैंने अपनी कई तजवीज़ें इन्हें सुझाईं. चार पांच दिन तक खूब बहसें होती रहीं. मैंने कितनी ही नई नई चीज़ें इस बात के लिये सुझाईं कि लोगों की ठीक राय कैसे ली जा सके. पर भारत या पाकिस्तान न अपनी कोई तजवीज़ें रख सके और न किसी तीसरे की कोई तजवीज़ मानने को तयार हुए. भारत के प्रधान वज़ीर ने मेरी कोई बात नहीं मानी.

"मैं सिक्योरिटी कौंसिल की तरफ़ से काम कर रहा था. मैंने सोचा कि अब सारी रियासत में लोगों की राय लेने के बजाय कोई और ऐसा ढंग निकालना चाहिये जिससे यह झगड़ा जल्दी से और हमेशा के लिये तय हो जाय.

"मैंने कई तजवीज़ें कीं जिनमें से एक यह है—रियासत के वह हिस्से जहां यह साफ़ पता है कि लोग पाकिस्तान से मिलना चाहते हैं या भारत से, अलग अलग दोनों में बांट दिये जायं. रियासत का अधिकतर हिस्सा ऐसा ही है. जो थोड़ा सा हिस्सा बच जाय उसमें लोगों की राय ले ली जाय. इससे एक फ़ायदा यह भी होता कि कई जगह दोनों को अपनी अपनी फ़ौजें हटाने की ज़रूरत न पड़ती,

''میں نے سب سے پہلے اسی بات پر دونوں میں کوئی سمجھوتہ کرادینے کی کوشش کی . دونوں نے بہت سی ایسی مشکلیں میرے سامنے کھڑی کردیں جو کسی طرح کے بھی سمجھوتے کے راستے میں پہاڑ معلوم ہوتی تھیں . معلوم ہوتا تھا ابھی اور بھی مشکلیں کھڑی کی جائیں گی .

''میں دونوں سرکاروں کے پردھان وزیروں سے ملا . اُن دونوں میں سے کسی کے پاس سمجھوتے کے لئے کوئی تجویز تھی ہی نہیں . تب میں نے اپنی کئی تجویزیں انہیں سجھائیں . چار پانچ دن تک خوب بحثیں ہوتی رہیں . میں نے کتنی ہی نئی نئی چیزیں اِس بات کے لئے سجھائیں کہ لوگوں کی ٹھیک رائے کیسے لی جا سکے . پر بھارت یا پاکستان نہ اپنی کوئی تجویزیں رکھ سکے اور نہ کسی تیسرے کی کوئی تجویز ماننے کو تیار ہوئے . بھارت کے پردھان وزیر نے میری کوئی بات نہیں مانی .

''میں سکیورٹی کونسل کی طرف سے کام کر رہا تھا . میں نے سوچا کہ اب ساری ریاست میں لوگوں کی رائے لینے کے بجائے کوئی اور ایسا ڈھنگ نکالنا چاہئے جس سے یہ جھگڑا جلدی سے اور ہمیشہ کے لئے طے ہو جائے .

''میں نے کئی تجویزیں کیں جن میں سے ایک یہ ہے — ریاست کے وہ حصے جہاں یہ صاف پتہ ہے کہ لوگ پاکستان سے ملنا چاہتے ہیں یا بھارت سے ' الگ الگ دونوں میں بانٹ دئے جائیں . ریاست کا ادھک تر حصہ ایسا ہی ہے . جو تھوڑا سا حصہ بچ جائے اُسمیں لوگوں کی رائے لے لی جائے . اس سے ایک فائدہ یہ بھی ہوتا کہ کئی جگہ دونوں کو اپنی اپنی فوجیں ہٹانے کی ضرورت نہ پڑتی '

और आबादी का बहुत अधिक तबादला भी इधर से उधर या उधर से इधर न करना पड़ता.

"इस तजवीज़ पर मैंने भारत के कुछ अधिकारियों से बातें कीं. पता लगा कि भारत मेरे इस सुझाव पर विचार करने को तैयार है. यह भी पता चला कि भारत रियासत के उन हिस्सों को जिनमें लोगों की राय ली जाय और जिनमें न ली जाय किन असूलों पर तय करना चाहता है. इतना पता लगा कर मैं कराची गया और चाहा कि इस बात पर दोनों प्रधान वज़ीरों में बातचीत हो जाय.

"पाकिस्तान सरकार राज़ी न हुई. वह इसी बात पर डटी रही कि कुल रियासत भर में सब लोगों की राय ली जाय और उसी पर एक साथ पूरी रियासत का फ़ैसला किया जाय. यही यू० एन० ओ० के कमीशन का सुझाव था जिस पर पहले सब राज़ी हो चुके थे.

"एक रास्ता यह भी हो सकता था कि किसी हिस्से में भी लोगों की राय न ली जाय और सारी रियासत यूँही दोनों में बांट दी जाय. पर इसमें मुशकिल यह आगई कि दोनों में से कोई भी कशमीर की घाटी छोड़ने को तैयार नहीं है.

"मैं साफ़ समझ गया कि अब बात चीत से इन दोनों में कोई समझौता नहीं हो सकता. कम से कम अभी तो यही सूरत है.

"आख़ीर में इस झगड़े को तय करने के लिये मैंने एक और तजवीज़ रखी. उस पर जो बहस हुई तो मुझे कुछ ऐसी बातें भी खोलनी पड़ीं जिनका खोलना अब ज़रूरी था. पाकिस्तान को मैंने यक़ीन दिला दिया कि मेरी नई तजवीज़ पर भारत के साथ बातचीत करने से पाकिस्तान की बुनियादी बात को कोई नुक़सान नहीं.

اور آبادی کا بہت ادھک تبادلہ بھی ادھر سے اُدھر یا اُدھر سے ادھر نہ کرنا پڑتا.

''اس تجویز پر میں نے بھارت کے کچھ ادھیکاریوں سے باتیں کیں. پتہ لگا کہ بھارت میرے اس سجھاؤ پر وچار کرنے کو تیار ہے. یہ بھی پتہ چلا کہ بھارت ریاست کے اُن حصوں کو جن میں لوگوں کی رائے لی جائے اور جن میں نہ لی جائے کن اُصولوں پر طے کرنا چاھتا ہے. اتنا پتہ لگا کر میں کراچی گیا اور چاھا کہ اس بات پر دونوں پردھان وزیروں میں بات چیت ہوجائے.

''پاکستان سرکار راضی نہ ہوئی. وہ اسی بات پر ڈٹی رہی کہ کل ریاست بھر میں سب لوگوں کی رائے لی جائے اور اُسی پر ایک ساتھ پوری ریاست کا فیصلہ کیا جائے. یہی یو. این. او. کے کمیشن کا سجھاؤ تھا جس پر پہلے سب راضی ہوچکے تھے.

''ایک راستہ یہ بھی ہو سکتا تھا کہ کسی حصے میں بھی لوگوں کی رائے نہ لیجائے اورساری ریاست یونہی دونوں میں بانٹ دی جائے. پر اسمیں مشکل یہ آگئی کہ دونوں میں سے کوئی بھی کشمیر کی گھاٹی چھوڑنے کو تیار نہیں ہے.

''میں صاف سمجھ گیا کہ اب بات چیت سے ان دونوں میں کوئی سمجھوتہ نہیں ہو سکتا. کم سے کم ابھی تو یہی صورت ہے.

''آخر میں اس جھگڑے کو طے کرنے کے لئے میں نے ایک اور تجویز رکھی. اس پر جو بحث ہوئی تو مجھے کچھ ایسی باتیں بھی کھولنی پڑیں جنکا کھولنا اب ضروری تھا. پاکستان کو میں نے یقین دلا دیا کہ میری نئی تجویز پر بھارت کے ساتھ بات چیت کرنے سے پاکستان کی بنیادی بات کو کوئی نقصان نہیں

पहुँचेगा. पर इस बारे में मेरी और भारत की राय में इतना ज्यादा फरक था कि मुझे इस कोशिश को भी छोड़ देना पड़ा.

"अब मेरे लिये कुछ काम नहीं रह गया. दोनों प्रधान वज़ीर भी मुझे यह नहीं बता सके कि अब मैं क्या करूँ. अब मैं जाकर सिक्योरिटी कौंसिल को अपनी रिपोर्ट दे दूंगा.

"अगर यह दोनों सरकारें इस झगड़े को तय करने के लिये खुद अपनी अपनी कुछ भी तजवीजें रख सकतीं तो बहुत काम बनता पर वह अपनी कोई तजवीज भी पेश नहीं कर सकीं. समझौते की तजवीजें रखने का काम शुरू से आखिर तक मुझे ही करना पड़ा. फिर भी मैं यह नहीं मानता कि आपसी बातचीत से यह दोनों सरकारें इस मामले का फ़ैसला कर ही नहीं सकेंगी."

मिस्टर डिकसन के इस बयान के बाद यू० एन० ओ० के सदर दफ़तर से खबर आई कि अपनी कोशिशों के दौरान में डिकसन साहब ने एक बात यह भी सुझाई थी कि अगर कशमीर में लोगों की राय ली जावे तो यह ज़रूरी होगा कि राय लिये जाने के छै महीने पहले से कशमीर के अन्दर से शेख़ अब्दुल्ला की गवरमेंट को बिलकुल अलग कर दिया जावे और रियासत की पूरी हुकूमत यू० एन० ओ० के फ़ौजी अफ़सर एडमिरल निमिट्ज़ के हाथों में दे दी जावे, और एडमिरल निमिट्ज़ ही लोगों की राय लेने वाले अफ़सर भी हों

कहा जाता है कि भारत ने इस तरह की कोई बात मानने से बिलकुल इनकार कर दिया.

मिस्टर लियाक़त अली ख़ां ने इसके बाद अपने एक बयान में

پہنچیگا. پر اس بارے میں میری اور بھارت کی رائے میں اتنا زیادہ فرق تھا کہ مجھے اس کوشش کو بھی چھوڑ دینا پڑا.

"اب میرے لئے کچھ کام نہیں رہ گیا. دونوں پردھان وزیر بھی مجھے یہ نہیں بتا سکے کہ اب میں کیا کروں. اب میں جاکر سکیورٹی کونسل کو اپنی رپورٹ دے دونگا.

"اگر یہ دونوں سرکاریں اس جھگڑے کو طے کرنے کے لئے خود اپنی اپنی کچھ بھی تجویزیں رکھ سکتیں تو بہت کام بنتا پر وہ اپنی کوئی تجویز بھی پیش نہیں کر سکیں. سمجھوتے کی تجویزیں رکھنے کا کام شروع سے آخر تک مجھے ہی کرنا پڑا. پھر بھی میں یہ نہیں مانتا کہ آپسی بات چیت سے یہ دونوں سرکاریں اس معاملے کا فیصلہ کر ہی نہیں سکینگی."

مسٹر ڈکسن کے اس بیان کے بعد یو. این. او. کے صدر دفتر سے خبر آئی کہ اپنی کوششوں کے دوران میں ڈکسن صاحب نے ایک بات یہ بھی سجھائی تھی کہ اگر کشمیر میں لوگوں کی رائے لی جاوے تو یہ ضروری ہوگا کہ رائے لئے جانے کے چھ مہینے پہلے سے کشمیر کے اندر سے شیخ عبداللہ کی گورمنٹ کو بالکل الگ کردیا جاوے اور ریاست کی پوری حکومت یو. این. او. کے فوجی افسر ایڈمرل نمٹز کے ہاتھوں میں دے دی جاوے' اور ایڈمرل نمٹز ہی لوگوں کی رائے لینے والے افسر بھی ہوں.

کہا جاتا ہے کہ بھارت نے اس طرح کی کوئی بات ماننے سے بالکل انکار کردیا.

مسٹر لیاقت علی خاں نے اسکے بعد اپنے ایک بیان میں

कहा है कि—"अब यू० एन० ओ० की सिक्योरिटी कौंसिल के ऊपर भारी जिम्मेवारी आ पड़ी है. सिक्योरिटी कौंसिल को वाक़यात का सामना करना पड़ेगा, और इस बात का जिम्मा लेना होगा कि अन्तर क़ौमी समझौतों का मान रखा जायगा और उन पर अमल किया जायगा."

उन्होंने यह भी कहा है कि—'उस हकूमत के रहते हुए जिसकी पीठ पर भारत है जो भी राय लेने का काम होगा वह पूरा खिलवाड़ होगा."

मिस्टर लियाक़त अली ख़ां से पूछा गया—"क्या आप चाहते हैं सिक्योरिटी कौंसिल कशमीर में उसी ढंग से काम करे जिस ढंग से उसने कोरिया में काम किया है. ?"

मिस्टर लियाक़त अली ख़ां ने जवाब दिया—"मैं चाहता हूँ सिक्योरिटी कौंसिल ऐसे ढंग से काम करे जिसका असर हो."

सर ओवन डिकसन और मिस्टर लियाक़त अली ख़ां के बयानों के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू का भी एक बयान अख़बारों में निकल चुका है जिसकी कुछ ख़ास बातें यह हैं :—

"सर ओवन डिकसन ने जो तजवीज़ हमारे सामने रखी कि कशमीर के लोगों की राय लेने से छै महीने पहले शेख़ अब्दुल्ला की सरकार को वहां से हटा दिया जाय और वहां की हकूमत यू० एन० ओ० के हाथ में दे दी जाय यह एक बिलकुल नई तजवीज़ थी. पिछले ढाई बरस में कभी किसी ने भी इस तरह की तजवीज़ पेश नहीं की थी. शुरू से ही यह तय हो चुका था कि कशमीर की सरकार यानी शेख़ अब्दुल्ला की सरकार को रियासत की बाक़ायदा

کہا ہے کہ—"اب یو . این . او . کی سکیورٹی کونسل کے اوپر بھاری ذمہ واری آپڑی ہے . سکیورٹی کونسل کو واقعات کا سامنا کرنا پڑیگا' اور اس بات کا ذمہ لینا ہوگا کہ انتر قومی سمجھوتوں کا مان رکھا جائیگا اور اُن پر عمل کیا جائیگا ."

انھوں نے یہ بھی کہا ہے کہ—"اُس حکومت کے رہتے ہوئے جس کی پیٹھ پر بھارت ہے جو بھی رائے لینے کا کام ہوگا وہ پورا کھلواڑ ہوگا ."

مسٹر لیاقت علی خاں سے پوچھا گیا—"کیا آپ چاہتے ہیں سکیورٹی کونسل کشمیر میں اُسی ڈھنگ سے کام کرے جس ڈھنگ سے اُس نے کوریا میں کام کیا ہے ؟"

مسٹر لیاقت علی خان نے جواب دیا—"میں چاہتا ہوں سکیورٹی کونسل ایسے ڈھنگ سے کام کرے جسکا اثر ہو ."

سر اوون ڈکسن اور مسٹر لیاقت علی خاں کے بیانوں کے بعد پنڈت جواہر لال نہرو کا بھی ایک بیان اخباروں میں نکل چکا ہے جس کی کچھ خاص باتیں یہ ہیں :—

"سر اوون ڈکسن نے جو تجویز ہمارے سامنے رکھی کہ کشمیر کے لوگوں کی رائے لینے سے چھ مہینے پہلے شیخ عبداللہ کی سرکار کو وہاں سے ہٹا دیا جائے اور وہاں کی حکومت یو . این . او . کے ہاتھ میں دیدی جائے یہ ایک بالکل نئی تجویز تھی . پچھلے ڈھائی برس میں کبھی کسی نے بھی اس طرح کی تجویز پیش نہیں کی تھی . شروع سے ہی یہ طے ہو چکا تھا کہ کشمیر کی سرکار یعنی شیخ عبداللہ کی سرکار کو ریاست کی باقاعدہ

सरकार माना जायगा. इसमें वह हिस्सा भी शामिल था जो अब पाकिस्तान की फ़ौजों के क़ब्ज़े में है. मई सन् १९४८ में यू० एन० ओ० का जो कमीशन आया था उसने इन सब बातों को मान लिया था. और यह भी तय था कि कशमीर के लोगों की राय लेने के लिये यू० एन० ओ० जिस अफ़सर को भेजे उसे शेख़ अब्दुल्ला की सरकार राय लेने वाला अफ़सर मुक़र्रर करेगी और उसी सरकार को वह अपनी रिपोर्ट देगा और वही रिपोर्ट वह यू० एन० ओ० को भी देगा. अब कहा जाता है कि जो सरकार उस अफ़सर को मुक़र्रर करने वाली थी और जिसे वह अफ़सर रिपोर्ट देने वाला था उस सरकार को ही हटा कर वह अफ़सर उसकी जगह बैठ जायगा. यह एक उलटी बात है. यू० एन० ओ० कमीशन जिन जिन बातों पर राज़ी होगया था वह सब अब उलट दी गई. कमीशन ने यह फ़ैसला किया था कि पाकिस्तान की फ़ौजें, पाकिस्तान के आदमी और क़बाइली फ़ौजें सब कशमीरसे हटा ली जायंगी. यहां तक कि कमीशन को उस समय यह सूचना दी गई कि पाकिस्तान की फ़ौजें जा रही हैं. इसके बाद कमीशन ने कहा कि भारत अब कशमीर में केवल उतनी ही फ़ौजें रखे जितनी कशमीर की हिफ़ाज़त के लिये ज़रूरी हों. यानी यह बात मान ली गई थी कि कशमीर की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी हम पर है. कशमीर की मौजूदा सरकार को वहां से निकालने की तजवीज़ अब सिर्फ़ पाकिस्तान को ख़ुश करने के लिये की जा रही है. किसी भी चुनाव को ठीक ठीक कराने के लिये सरकारें नहीं बदली जातीं.

"बात चीत में हमने बार बार यह कहा है कि कशमीर के लोगों की राय लेने में यू० एन० ओ० जिस तरह चाहे निगरानी करे. अपने

سرکار مانا جائیگا . اسمیں وہ حصہ بھی شامل تھا جو اب پاکستان کی فوجوں کے قبضے میں ہے . مئی سن ۱۹۴۸ میں یو . این . او . کا جو کمیشن آیا تھا اُس نے ان سب باتوں کو مان لیا تھا . اور یہ بھی طے تھا کہ کشمیر کے لوگوں کی رائے لینے کے لئے یو . این . او . جس افسر کو بھیجے اُسے شیخ عبداللہ کی سرکار رائے لینے والا افسر مقرر کریگی اور اُسی سرکار کو وہ اپنی رپورٹ دیگا اور وہی رپورٹ وہ یو . این . او . کو بھی دیگا . اب کہا جاتا ہے کہ جو سرکار اُس افسر کو مقرر کرنے والی تھی اور جسے وہ افسر رپورٹ دینے والا تھا اُس سرکار کو ہی ہٹاکر وہ افسر اُسکی جگہ بیٹھ جائیگا . یہ ایک اُلٹی بات ہے . یو . این . او . کمیشن جن جن باتوں پر راضی ہو گیا تھا وہ سب اب اُلٹ دی گئیں . کمیشن نے یہ فیصلہ کیا تھا کہ پاکستان کی فوجیں' پاکستان کے آدمی اور قبائلی فوجیں سب کشمیر سے ہٹا لی جائینگی . یہانتک کہ کمیشن کو اُس سمے یہ سوچنا دی گئی کہ پاکستان کی فوجیں جا رہی ہیں . اسکے بعد کمیشن نے کہا کہ بھارت اب کشمیر میں کیول اُتنی ہی فوجیں رکھے جتنی کشمیر کی حفاظت کے لئے ضروری ہیں . یعنی یہ بات مان لی گئی تھی کہ کشمیر کی حفاظت کی ذمہ داری ہم پر ہے . کشمیر کی موجودہ سرکار کو وہاں سے نکالنے کی تجویز اب صرف پاکستان کو خوش کرنے کے لئے کی جا رہی ہے . کسی بھی چناؤ کو ٹھیک ٹھیک کرانے کے لئے سرکاریں نہیں بدلی جاتیں .

"بات چیت میں ہم نے بار بار یہ کہا ہے کہ کشمیر کے لوگوں کی رائے لینے میں یو . این . او . جسطرح چاہے نگرانی کرے . اپنے

सौ आदमी या हजार आदमी लाकर हर कोने में, हर चौरस्ते पर और जहां जहां राय ली जा रही हो वहां हर जगह बैठा दे. पर कशमीर की सरकार को हटाने की यह नई बात भारत किसी भी तरह मंजूर नहीं कर सकता.

"हम यू० एन० ओ० के पास केवल इसलिये गए थे कि यू० एन० ओ० पाकिस्तान से कहे कि पाकिस्तान कशमीर पर धावा करने वाले क़बाइली लोगों की मदद न करे. इसी बात पर यू० एन० ओ० का कमीशन आया था.

"हम इसके लिये भी बिलकुल तैयार हैं कि राय लिये जाने से पहले भारत और पाकिस्तान दोनों कशमीर से बिलकुल निकल आवें, ताकि इस बहाने फ़िरक़ेवाराना झगड़े खड़े न किये जा सकें, बाहर का एक भी मर्द या औरत उस समय वहां न रहे.

"ऐसी कोई एक बात भी नहीं है जिसपर पिछले तीन बरस के अन्दर कभी भी भारत राज़ी हो गया हो और जिस पर इस समय तक हम पूरी तरह क़ायम न हों."

पंडित जवाहर लाल ने यह भी कहा है कि कशमीर के केवल कुछ हिस्से में लोगों की राय लेने की तजवीज़ पर बात चीत करने के लिये भारत केवल इसलिये तैयार हो गया था कि वह चाहता था कि किसी तरह भी किसी तरफ़ से सुलह का कोई रास्ता निकले. लेकिन इस तरह की कोई तजवीज़ भारत ने नहीं मानी थी.

मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ और पंडित जवाहर लाल नेहरू दोनों ने समझौता न हो सकने की सौ फ़ीसदी जिम्मेदारी एक दूसरे के कंधों पर डाली है.

سو آدمی یا ہزار آدمی لاکر ہر کونے میں، ہر چوراستے پر اور جہاں جہاں رائے لی جارہی ہو وہاں ہر جگہ بٹھا دے. پر کشمیر کی سرکار کو ہٹانے کی یہ نئی بات بھارت کسی بھی طرح منظور نہیں کر سکتا.

"ہم یو. این. او. کے پاس کیول اسلئے گئے تھے کہ یو. این. او. پاکستان سے کہے کہ پاکستان کشمیر پر دھاوا کرنے والے قبائلی لوگوں کی مدد نہ کرے. اسی بات پر یو. این. او. کا کمیشن آیا تھا.

"ہم اسکے لئے بھی بالکل تیار ہیں کہ رائے لئے جانے سے پہلے بھارت اور پاکستان دونوں کشمیر سے بالکل نکل آویں تاکہ اس بہانے فرقہ وارانہ جھگڑے کھڑے نہ کئے جاسکیں. باہر کا ایک بھی مرد یا عورت اُس سمے وہاں نہ رہے.

"ایسی کوئی ایک بات بھی نہیں ہے جس پر پچھلے تین برس کے اندر کبھی بھی بھارت راضی ہو گیا ہو اور جس پر اس سمے تک ہم پوری طرح قائم نہ ہوں."

پنڈت جواہر لال نے یہ بھی کہا ہے کہ کشمیر کے کیول کچھ حصے میں لوگوں کی رائے لینے کی تجویز پر بات چیت کرنے کے لئے بھارت کیول اسلئے تیار ہوگیا تھا کہ وہ چاہتا تھا کہ کسی طرح بھی کسی طرف سے صلح کا کوئی راستہ نکلے. لیکن اس طرح کی کوئی تجویز بھارت نے نہیں مانی تھی.

مسٹر لیاقت علی خاں اور پنڈت جواہر لال نہرو دونوں نے سمجھوتہ نہ ہو سکنے کی سو فیصدی ذمہ داری ایک دوسرے کے کندھوں پر ڈالی ہے.

एक बात दोनों ने कुछ तसल्ली देने वाली कही है. दोनों ने कहा है कि कशमीर के मामले में समझौता न हो सकने की वजह से वह, और सब मामलों में दोनों सरकारों के बीच के सब समझौतों पर पूरी तरह क़ायम रहेंगे और उनमें फरक न आने देंगे. दोनों ने यह भी कहा है कि वह कशमीर के मामले का फ़ैसला लड़कर नहीं करना चाहते, जिस तरह भी हो सुलह से ही करना चाहेंगे.

हमें कहते हुए दुख होता है पर हम कहने पर मजबूर हैं कि सर ओवन डिकसन के बयान और उनकी कोशिशों में हमें पग पग पर ठीक वही गंध आती है जिसके हम डेढ़ सौ बरस तक अंगरेज़ राज कातियों के बयानों और उनकी करतूतों में आदि रहे हैं. आजकल के यू० एन० ओ० और इसके पहले की लीग आफ नेशन्स दोनों के बनने को हम इस लिये शुभ समझते हैं क्यों कि यह दोनों इस बात की सूचना दे रही हैं कि दुनिया की क़ौमें धीरे धीरे अपने सब आपसी झगड़ों को जंग से नहीं, शान्ति और समझौते से तय करने की तरफ़ क़दम बढ़ा रही हैं. पर पिछली लीग आफ नेशन्स की ही तरह आज का यू० एन० ओ० भी अभी उस ऊँचे आदर्श से कोसों दूर है. जो यू० एन० ओ० अभी तक चालीस करोड़ चीनी जनता की राय और उनके हितों को ठुकराते हुए देशद्रोही च्यांग काई शेक की पीठ ठोक रहा है, इस बहाने फारमूसा पर क़ब्ज़ा किये बैठा है और चीनी जनराज के सच्चे नुमाइन्दे का अपने साथ बैठना भी गवारा नहीं कर सकता, वह यू० एन० ओ० ज़ाहिर है, अभी तक केवल पच्छिमी साम्राजवादियों के हाथ की कठपुतली

ایک بات دونوں نے کچھ تسلی دینے والی کہی ہے. دونوں نے کہا ہے کہ کشمیر کے معاملے میں سمجھوتہ نہ ہو سکنے کی وجہ سے وہ اور سب معاملوں میں دونوں سرکاروں کے بیچ کے سب سمجھوتوں پر پوری طرح قائم رہینگے اور اُن میں فرق نہ آنے دینگے. دونوں نے یہ بھی کہا ہے کہ وہ کشمیر کے معاملے کا فیصلہ لڑکر نہیں کرنا چاہتے' جس طرح بھی ہو صلح سے ہی کرنا چاہینگے.

ہمیں کہتے ہوئے دکھ ہوتا ہے پر ہم کہنے پر مجبور ہیں کہ سر اوون ڈکسن کے بیان اور اُن کی کوششوں میں ہمیں پگ پگ پر ٹھیک وہی گندھ آتی ہے جس کے ہم ڈیڑھ سو برس تک انگریز راج کا جیوں کے بیانوں اور اُن کی کرتوتوں میں عادی رہے ہیں. آجکل کے یو. این. او. اور اس کے پہلے کی لیگ آف نیشنلس دونوں کے بننے کو ہم اسلئے شبھ سمجھتے ہیں کیونکہ یہ دونوں اِس بات کی سوچنا دے رہی ہیں کہ دنیا کی قومیں دھیرے دھیرے اپنے سب آپسی جھگڑوں کو جنگ سے نہیں' شانتی اور سمجھوتے سے طے کرنے کی طرف قدم بڑھا رہی ہیں. پر پچھلی لیگ آف نیشنلس کی ہی طرح آج کا یو. این. او. بھی ابھی اُس اونچے آدرش سے کوسوں دور ہے. جو یو. این. او. ابھی تک چالیس کروڑ چینی جنتا کی رائے اور اُنکے ہتوں کو ٹھکراتے ہوئے دیش دروہی چیانگ کائی شیک کی پیٹھ ٹھونک رہا ہے' اِس بہانے فارموسا پر قبضہ کئے بیٹھا ہے اور چینی جن راج کے سچے نمائندے کا اپنے ساتھ بیٹھنا بھی گوارا نہیں کرسکتا' وہ یو. این. او. ظاہر ہے' ابھی تک کیول پچھمی سامراجوادیوں کے ہاتھ کی کٹھ

नहीं हो सकता. हमें दुख और लज्जा है कि हमारा देश उसी यू० एन० ओ० के सामने आपस के झगड़े में सलाह और मदद के लिये गया.

फ़ौजी निगाह से कशमीर एक मारके की जगह है. चीन, रूस, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान और भारत पांच पांच हकूमतों की सरहदें वहाँ मिलती हैं. इसीलिये गिलगिट की घाटी पर कई कई हकूमतों की निगाहें हैं. यही सीधा और साफ़ कारन है कि यू० एन० ओ० और वह ताक़तें जिन के हाथों की यू० एन० ओ० कठपुतली है कशमीर पर जिस तरह हो अपना फ़ौजी क़बज़ा रखना चाहती हैं. डिकसन साहब के बयान और उनकी कोशिशों में यही चीज साफ़ झलक रही है. कशमीर और कोरिया की तुलना करते हुए जो सवाल मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ से किया गया और उसका जो कुछ उन्होंने जवाब दिया वह भारत और पाकिस्तान दोनों को चौकन्ना कर देने के लिये काफ़ी है. नहीं मालूम आने वाले बरसों में इस देश को और दुनिया को अभी क्या क्या देखना है.

इस सबका इलाज एक और केवल एक ही हो सकता है. वह यह है कि भारत और पाकिस्तान जिस तरह भी हो कशमीर के अपने झगड़े को बिना लड़े आपस में तय कर लें और दुनिया की किसी तीसरी हकूमत को बीच में पड़ने का मौक़ा न दें. इसी में इन दोनों की और कशमीर की सलामती है.

१. ९. ५०. —सुन्दरलाल

نہیں ہوسکتا. ہمیں دکھ اور لجا ہے کہ ہمارا دیش اُسی یو. این. او. کے سامنے آپس کے جھگڑے میں صلاح اور مدد کے لئے گیا.

فوجی نگاہ سے کشمیر ایک معرکے کی جگہ ہے. چین، روس، افغانستان، پاکستان اور بھارت پانچ پانچ حکومتوں کی سرحدیں وہاں ملتی ہیں. اسی لئے گلگت کی گھاٹی پر کئی کئی حکومتوں کی نگاہیں ہیں. یہی سیدھا اور صاف کارن ہے کہ یو. این. او. اور وہ طاقتیں جنکے ہاتھوں کی یو. این. او. کٹھ پتلی ہے کشمیر پر جسطرح ہو اپنا فوجی قبضہ رکھنا چاہتی ہیں. ڈکسن صاحب کے بیان اور اُن کی کوششوں میں یہی چیز صاف جھلک رہی ہے. کشمیر اور کوریا کی تلنا کرتے ہوئے جو سوال مسٹر لیاقت علی خاں سے کیا گیا اور اُسکا جو کچھ اُنہوں نے جواب دیا وہ بھارت اور پاکستان دونوں کو چوکنا کر دینے کے لئے کافی ہے. نہیں معلوم آنے والے برسوں میں اِس دیش کو اور دنیا کو ابھی کیا کیا دیکھنا ہے.

اِس سب کا علاج ایک اور کیول ایک ہی ہو سکتا ہے. وہ یہ ہے کہ بھارت اور پاکستان جسطرح بھی ہو کشمیر کے اپنے جھگڑے کو بنا لڑے آپس میں طے کرلیں اور دنیا کی کسی تیسری حکومت کو بیچ میں پڑنے کا موقع نہ دیں. اِسی میں اِن دونوں کی اور کشمیر کی سلامتی ہے.

۱-۹-۵۰ — سندر لال

हिरोशिमा में ऐटम बम के नतीजे

६ अगस्त सन ४५ को सुबह सवा आठ बजे ऐटम बम के धमाके से शहर हिरोशिमा हिल गया. उस समय वहाँ तीन लाख बारह हजार आदमी रह रहे थे. एक सिकन्ड के अन्दर इन में से १ लाख ७६ हजार मर गये. एक लाख छत्तीस हजार बचे. ९० फ़ीसदी इमारतें ख़तम हो गईं, ७६ हजार मकानों में से सिर्फ़ आठ हजार चार सौ खड़े दिखाई दिये. ओटांडा और उसकी सहायक नदियों के बयालीस पुलों में से आधे से ज़्यादा नष्ट हो गये.

ऐटम बम के भयानक नतीजों को जानने के लिये अब किसी के साइन्सदाँ होने की ज़रूरत नहीं है. उस बमबारी की मुसीबतों को वह लोग अच्छी तरह बयान कर सकते हैं जो उस से दो चार हुए हैं.

हम यहाँ मिसेज़ योका ओटा के शब्द नीचे देते हैं. आप बमबारी के समय हिरोशिमा में मौजूद थीं:—

"............मैं ने हज़ारों मर्द, औरत और बच्चों को हिरोशिमा की दोज़ख़ से निकल कर सड़क पर भागते देखा. सबके सब भयानक जख़्मों से छलनी छलनी थे. आँखों की बरौनियां जल गई थीं. मुंह और हाथ की खाल भुन गई थी और लोथड़े नीचे लटक रहे थे. बहुत से आसमान की तरफ़ हाथ ऊँचा किये थे—दर्द को कम करने के लिये. बहुत से चलते चलते क़ै करते जा रहे थे. ज़्यादा तर मादरज़ाद नंगे थे और बाक़ी चीथड़े लटकाए. मर्दों के कपड़े गोश्त से चिपक गये थे. औरतों की खालों पर कपड़ों के डिज़ाइन का ठप्पा लग गया था.

............उस डूबे आदमी के समान जो बहुत देर तक

ھیروشیما میں ایٹم بم کے نتیجے

۶ اگست سن ۴۵ کو صبح سوا آٹھ بجے ایٹم بم کے دھماکے سے شہر ھیروشیما ہل گیا. اُس سمے وہاں تین لاکھ بارہ ہزار آدمی رہ رہے تھے. ایک سکنڈ کے اندر اُن میں سے ۱ لاکھ ۷۶ ہزار مرگئے. ایک لاکھ چھتیس ہزار بچے. ۹۰ فیصدی عمارتیں ختم ہو گئیں، ۷۶ ہزار مکانوں میں سے صرف آٹھ ہزار چار سو کھڑے دکھائی دئے. اوتانڈی اور اُسکی سہایک ندیوں کے بیالیس پلوں میں سے آدھے سے زیادہ نشٹ ہو گئے.

ایٹم بم کے بھیانک نتیجوں کو جاننے کے لئے اب کسی کے سائنسداں ہونے کی ضرورت نہیں ہے. اُس بمباری کی مصیبتوں کو وہ لوگ اچھی طرح بیان کرسکتے ہیں جو اُس سے دو چار ہوئے ہیں.

ہم یہاں مسز یوکا اوٹا کے شبد نیچے دیتے ہیں. آپ بمباری کے سمے ھیروشیما میں موجود تھیں:—

"............میں نے ہزاروں مرد، عورت اور بچوں کو ھیروشیما کی دوزخ سے نکل کر سڑک پر بھاگتے دیکھا. سب کے سب بھیانک زخموں سے چھلنی چھلنی تھے. آنکھوں کی برونیاں جل گئی تھیں. منہ اور ہاتھ کی کھال بھن گئی تھی اور لوتھڑے نیچے لٹک رہے تھے. بہت سے آسمان کی طرف ہاتھ اُونچا کئے تھے—درد کو کم کرنے کے لئے. بہت سے چلتے چلتے قے کرتے جارہے تھے. زیادہ تر مادرزاد ننگے تھے اور باقی چیتھڑے لٹکائے. مردوں کے کپڑے گوشت سے چپک گئے تھے. عورتوں کی کھالوں پر کپڑوں کے ڈزائن کا ٹھپہ لگ گیا تھا.

............اُس ڈوبے آدمی کے سمان جو بہت دیر تک

पानी में पड़ा रहा हो इन बदक़िस्मतों का सारा बदन सूज गया था. पलकें इतनी फूल गई थीं कि आंखें दिखाई न देती थीं. चारों तरफ़ की खाल लाल टून हो गई थी. हाथों से गोश्त इस तरह लटक रहा था जैसे भूरे रंग के चीथड़ों की धज्जियां. सर पर बीचों बीच बालों का एक छोटा सा पूँजा प्याले के कुन्डे के घेरे के बराबर रह गया था. बाक़ी सर ऐसा था मानो मूँड दिया गया हो. इन इन्सानों को देख कर रोंगटे खड़े होते थे. भयानक ज़ख़्मों से छलनी वह दुखी मनुष्य समुन्दर के किनारे गर्म रेत पर ठन्डे होने आए थे. वह सब के सब अन्धे थे.......

एक औरत ज़मीन पर पड़ी थी. उसका कपार फटा हुआ था. उसके सर का सारा भेजा तरबूज़ की तरह लाल था. इस भयानक ज़ख़्म के बावजूद यह औरत ज़िन्दा थी और पीछे एक लम्बी ख़ूनी लकीर छोड़ती और घसिटती जाती थी.

...........रास्ता साफ़ करने की ग़रज़ से सड़क पर पड़ी एक लाश को पटरी पर सरकाने के लिये मैंने उसका घुटना पकड़ा तो खाल मेरे हाथ से चिपक गई. लाल गोश्त को उघारते हुए खाल घुटने के नीचे लटक पड़ी.

.........बिलकुल नंगी लड़कियां और औरतें जिनके सर पर एक भी बाल न था सड़क पर बेजान पुतलों की तरह चल रही थीं. उनके साथ एक बूढ़ी औरत जिसके दोनों हाथ उतर गये थे घिसट रही थी. मास सीख़ कबाब की तरह भुन कर हड्डियों से अलग हो गया था. ख़ून ख़ूब बह रहा था और उसी के साथ चरबी की तरह पीले रंग की कोई चीज़ मिली हुई थी.

پانی میں پڑا رہا ہو ان بدقسمتوں کا سارا بدن سوج گیا تھا. پلکیں اتنی پھول گئی تھیں کہ آنکھیں دکھائی نہ دیتی تھیں. چاروں طرف کی کھال لال ٹون ہو گئی تھی. ہاتھوں سے گوشت اس طرح لٹک رہا تھا جیسے بھورے رنگ کے چیتھڑوں کی دھجیاں. سر پر بیچوں بیچ بالوں کا ایک چھوٹا سا پونجا پیالے کے کنڈے کے گھیرے کے برابر رہ گیا تھا. باقی سر ایسا تھا مانو مونڈ دیا گیا ہو. ان انسانوں کو دیکھکر رونگٹے کھڑے ہوتے تھے. بھیانک زخموں سے چھلنی یہ دکھی منش سمندر کے کنارے گرم ریت پر ٹھنڈے ہونے آئے تھے. وہ سب کے سب اندھے تھے.......

ایک عورت زمین پر پڑی تھی. اسکا کپار پھٹا ہوا تھا. اس کے سر کا سارا بھیجا تربوز کی طرح لال تھا. اس بھیانک زخم کے باوجود یہ عورت زندہ تھی اور پیچھے ایک لمبی خونی لکیر چھوڑتی اور گھسٹتی جاتی تھی.

...........راستہ صاف کرنے کی غرض سے سڑک پر پڑی ایک لاش کو پٹری پر سرکانے کے لئے میں نے اسکا گھٹنہ پکڑا تو کھال میرے ہاتھ سے چپک گئی. لال گوشت کو اگھارتے ہوئے کھال گھٹنے کے نیچے لٹک پڑی.

..........بالکل ننگی لڑکیاں اور عورتیں جنکے سر پر ایک بھی بال نہ تھا سڑک پر بیجان پتلوں کی طرح چل رہی تھیں. انکے ساتھ ایک بوڑھی عورت جسکے دونوں ہاتھ اتر گئے تھے گھسٹ رہی تھی. ماس سیخ کباب کی طرح بھن کر ہڈیوں سے الگ ہو گیا تھا. خون خوب بہہ رہا تھا اور اسی کے ساتھ چربی کی طرح پیلے رنگ کی کوئی چیز ملی ہوئی تھی.

.............इस ऐटमी मुसीबत के दो हफ़्ते बाद एक लड़की के जो बच गई थी बाँह पर सफ़ेद दाग़ दिखाई पड़े. एक हफ़्ते बाद वह भी मर गई."

('क्रास रोड्स')

यही वह ऐटम बम है जिसे कोरिया पर गिराने की चर्चिल ने अमरीका को सलाह दी है.

ऐटम बम के ख़िलाफ़ अपील

विश्व शान्ति कांग्रेस की स्थाई कमेटी ने नीचे लिखी अपील जारी की है.

आल इंडिया पीस कमेटी ने भारत की तमाम जनता से अपील की है कि लोग लाखों की तादाद में इस पर अपने अपने दस्तख़त करके और पते लिख के नीचे लिखे पते पर भेज दें.

पताः—सैक्रेटरी आल इंडिया पीस कमेटी,
48, Benham Hall Lane,
४८, बैनहम हाल लेन,
गिरगाम, बम्बई.

"हमारी माँग है कि ऐटम हथियार पर जो जनता को डराने और मिटाने का हथियार है बिना शर्त रोक लगाई जाये

"हमारी माँग है कि इस फ़ैसले को लागू करने के लिये एक अन्तर क़ौमी कड़ा कन्ट्रोल क़ायम किया जाये

"हम मानते हैं कि जो सरकार किसी भी दूसरे देश के ख़िलाफ़ ऐटम हथियार का पहले इस्तेमाल करेगी वह मानव जाति के ख़िलाफ़ जुर्म करेगी और उसे युद्ध अपराधी माना जायगा."

—एडीटर

............اس ایٹمی مصیبت کے دو ہفتے بعد ایک لڑکی کے جو بچ گئی تھی بانہہ پر سفید داغ دکھائی پڑے. ایک ہفتے بعد وہ بھی مرگئی."

(کراس روڈس)

یہی وہ ایٹم بم ہے جسے کوریا پر گرانے کی چرچل نے امریکہ کو صلاح دی ہے.

ایٹم بم کے خلاف اپیل

وشو شانتی کانگریس کی ستھائی کمیٹی نے نیچے لکھی اپیل جاری کی ہے.

آل انڈیا پیس کمیٹی نے بھارت کی تمام جنتا سے اپیل کی ہے کہ لوگ لاکھوں کی تعداد میں اس پر اپنے اپنے دستخط کرکے اور پتے لکھ کے نیچے لکھے پتے پر بھیج دیں.

پتہ:—سکریٹری آل انڈیا پیس کمیٹی،
48, Benham Hall Lane,
۴۸' بینہم ہال لین'
گرگام' بمبئی.

"ہماری مانگ ہے کہ ایٹم ہتھیار پر جو جنتا کو ڈرانے اور مٹانے کا ہتھیار ہے بنا شرط روک لگائی جائے

"ہماری مانگ ہے کہ اس فیصلے کو لاگو کرنے کے لئے ایک انٹر قومی کڑا کنٹرول قائم کیا جائے

"ہم مانتے ہیں کہ جو سرکار کسی بھی دوسرے دیش کے خلاف ایٹم ہتھیار کا پہلے استعمال کریگی وہ مانو جاتی کے خلاف جرم کریگی اور اسے یدھ اپرادھی مانا جائیگا."

—ایڈیٹر

नया हिन्द

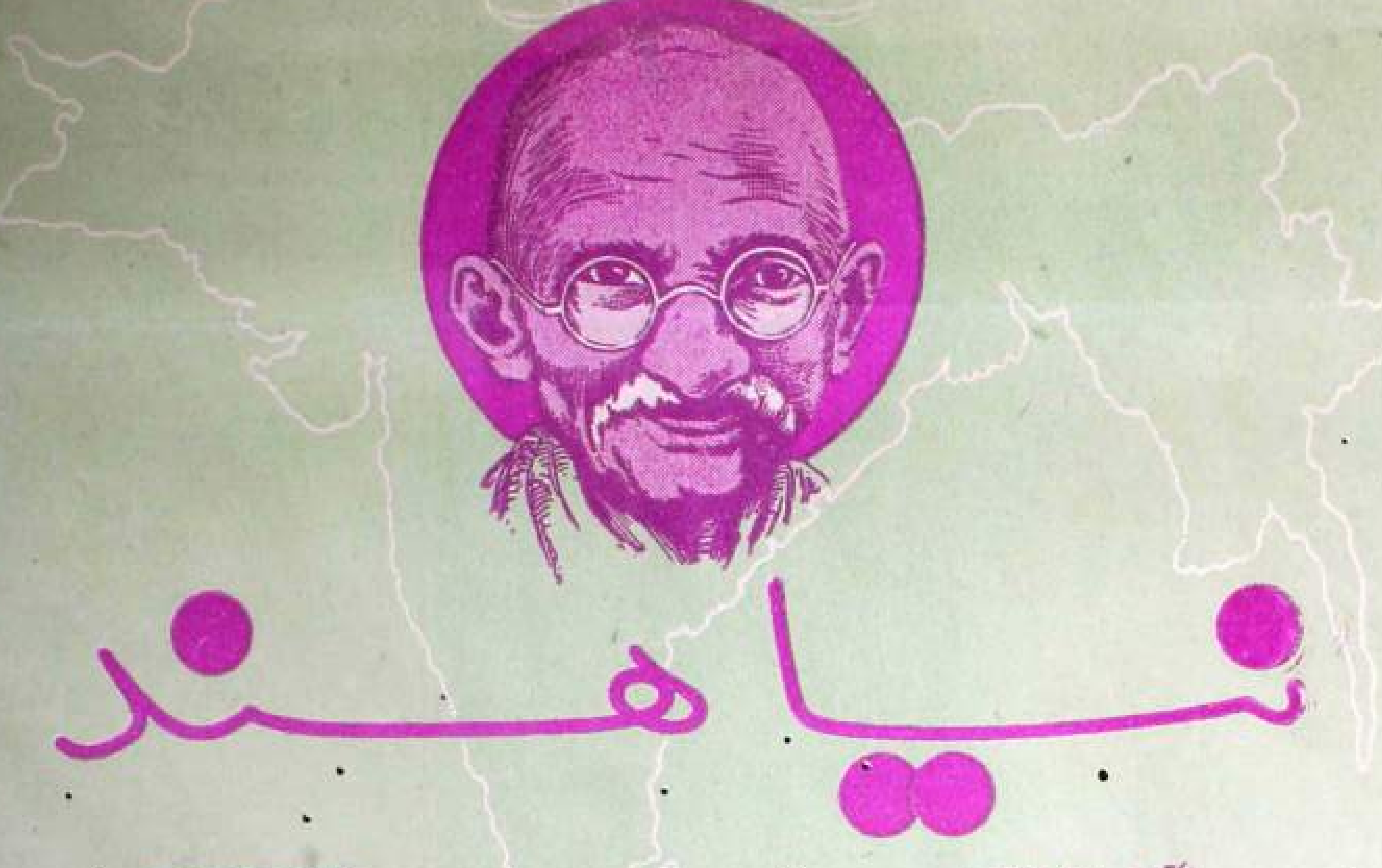

نیا ہند

अक्तूबर सन् १९५०
दस आना

اکتوبر سنہ ۱۹۵۰ع
دس آنہ

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हुसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अक्तूबर १९५०

क्या किस से — सफ़ा

१—महात्मा गांधी (कविता)—भाई शफ़ीउद्दीन 'नय्यर' ... २९३
२—मुझको अन्धेरे से रोशनी की तरफ़ ले चल—भाई अब्दुल हलीम अन्सारी २९५
३—दो रास्ते—भाई सरस्वती कुमार ३०१
४—बापू के अनेक रूप—भाई सैयद महमूद अहमद 'हुनर' ३०९
५—ऐगनेस इस्मेडले—डाक्टर महादेव साहा ... ३१६
६—ऐटम मन्थन (मथना)—भाई जगदीश एम० एस सी० ३२२
७—लेवी यानी ग़ल्ला वसूली—भाई सैयद ख़्वाजा वकील ३३४
८—चली मशीन चली (कविता)—भाई अहमद नदीम क़ासिमी ३४२
९—अमल की ज़रूरत—भाई गंगा सागर गुप्त ... ३४४
१०—एक ग़लतफ़हमी का जवाब—डाक्टर ऐजाज़ हुसेन ... ३५६
११—पंडित चाचा (कहानी)—बहन अशरफ़ जहाँ ख़ातून ३६३
१२—हमारी राय—पाकिस्तान से एक ख़त—सुन्दरलाल, मानसिक तन्दुरस्ती—कि० घ० मशरूवाला, यू. एन. ओ. कैसी कसौटी—भगवानदीन, श्री अक्षय ब्रह्मचारी का उपवास—कि. घ. मशरूवाला... ... ३७३

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल

एक परचा दस आने . मैनेजर

२४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद . 'नया हिन्द'

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچہ

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

اکتوبر ۱۹۵۰

کیا کس سے — صفحہ

۱—مہاتما گاندھی (کویتا)—بھائی شفیع الدین 'نیر' ۲۹۳
۲—مجھکو اندھیرے سے روشنی کی طرف لے چل—بھائی عبدالحلیم انصاری ۲۹۵
۳ - دو راستے—بھائی سرسوتی کمار ۳۰۱
۴—باپو کے ایک روپ—بھائی سید محمود احمد 'ہنر' ۳۰۹
۵ - ایگنس ایسمیڈلے—ڈاکٹر مہادیو ساہا ... ۳۱۶
۶—ایٹم منتھن (متھنا)—بھائی جگدیش ایم . ایس سی ۳۲۲
۷—لیوی یعنی غلہ وصولی—بھائی سید خواجہ وکیل ۳۳۴
۸—چلی مشین چلی—(کویتا)—بھائی احمد ندیم قاسمی ۳۴۲
۹—عمل کی ضرورت—بھائی گنگا ساگر گپت ... ۳۴۴
۱۰ ایک غلط فہمی کا جواب—ڈاکٹر اعجاز حسین ... ۳۵۶
۱۱—پنڈت چاچا (کہانی)—بہن اشرف جہاں خاتون ۳۶۳
۱۲—ہماری رائے—پاکستان سے ایک خط—سندر لال، مانسک تندرستی—ک . گھ . مشرو والا، یو . این . او . کی کسوٹی—بھگوان دین، شری اکشے برہمچاری کا اپواس—ک . گھ . مشرو والا ... ۳۷۳

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال

ایک پرچہ دس آنے . مینیجر

۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد . 'نیا ہند'

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द ९ — अक्तूबर सन् '५० — नम्बर ४

جلد ۹ — اکتوبر سن ۵۰ — نمبر ۴

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
' نیا ہند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی ۔

महात्मा गांधी

(भाई शफ़ी उद्दीन नय्यर)

इस देश को जगाया गांधी महात्मा ने
आगे इसे बढ़ाया गांधी महात्मा ने

जिस रास्ते पे चल कर आज़ाद हो गये हम
वह रास्ता दिखाया गांधी महात्मा ने

आपस के प्रेम ही में भारत की उन्नती है
यह गुर हमें बताया गांधी महात्मा ने

مہاتما گاندھی

(بھائی شفیع الدین نیر)

اس دیش کو جگایا گاندھی مہاتما نے
آگے اسے بڑھایا گاندھی مہاتما نے

جس راستے پہ چلکر آزاد ہو گئے ہم
وہ راستہ دکھایا گاندھی مہاتما نے

آپس کے پریم ہی میں بھارت کی اُنتی ہے
یہ گر ہمیں بتایا گاندھی مہاتما نے

इस हिन्द के चमन को अपने लहू से सींचा
क्या काम कर दिखाया गांधी महात्मा ने
इन्साफ़ और हक़ का उल्फ़त का दोस्ती का
हमको सबक़ पढ़ाया गांधी महात्मा ने
हिन्दू हों या मुसलमाँ, सिख हों कि पारसी हों
सब को गले लगाया गांधी महात्मा ने
भारत में चल रही थी ज़ुल्मो सितम की आँधी
ज़ुल्मो सितम मिटाया गांधी महात्मा ने
जब तक रहे वह ज़िन्दा जो बात मुँह से निकली
उस बात को निभाया गांधी महात्मा ने
तौफ़ीक़ हो तो नय्यर तुम भी वह कर दिखाओ
जो काम कर दिखाया गांधी महात्मा ने

"रहबर" से

اس ہند کے چمن کو اپنے لہو سے سینچا
کیا کام کر دکھایا گاندھی مہاتما نے
انصاف اور حق کا الفت کا دوستی کا
ہم کو سبق پڑھایا گاندھی مہاتما نے
ہندو ہوں یا مسلماں، سکھ ہوں کہ پارسی ہوں
سب کو گلے لگایا گاندھی مہاتما نے
بھارت میں چل رہی تھی ظلم و ستم کی آندھی
ظلم و ستم مٹایا گاندھی مہاتما نے
جب تک رہے وہ زندہ جو بات منھ سے نکلی
اس بات کو نبھایا گاندھی مہاتما نے
توفیق ہو تو نیر تم بھی وہ کر دکھاؤ
جو کام کر دکھایا گاندھی مہاتما نے

"رہبر" سے

मुझको अन्धेरे से रोशनी की तरफ़ ले चल

'ऋग वेद'

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

मन बोल रहा है, रूह जाग रही है

मन से रह रह कर आवाज उठती है और चुपके चुपके कुछ ऐसा कहती है :

" तमसो मा ज्योतिर्गमय "

यह आवाज दिल की आवाज है या रूह की

यह सदा मन की सदा है या आत्मा की

यह किस की पुकार है ?

और किसको पुकारा जा रहा है ?

यह किसकी आवाज है ?

और किस को सुनाई जारही है ?

यह किसकी प्रार्थना है और किससे इलतजा ?

इसे समझने के लिये हमको प्रकृति से प्रकाश लेने और प्रेम से दिल को भरपूर रखने की जरूरत है. इसी प्रेम और प्रकाश में इन बातों को समझने का भेद मिलेगा और इन भेदों को हल करने की योग्यता हासिल होगी—अगर उस रोशनी तक हमारी रसाई हो गई या हमारे अन्दर वह समा गई. अगर उस प्रेम में हम सचाई के साथ डूब गये, या उस प्रेम ने हम में रंग भर दिये तो उसी रंग में

مجھکو اندھیرے سے روشنی کی طرف لے چل

'رگ وید'

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

من بول رہا ہے ، روح جاگ رہی ہے

من سے رہ رہ کر آواز اٹھتی ہے اور چپکے چپکے کچھ ایسا کہتی ہے :

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

یہ آواز دل کی آواز ہے یا روح کی

یہ صدا من کی صدا ہے یا آتما کی

یہ کس کی پکار ہے ؟

اور کس کو پکارا جا رہا ہے ؟

یہ کس کی آواز ہے ؟

اور کس کو سنائی جا رہی ہے ؟

یہ کس کی پرارتھنا ہے اور کس سے التجا ؟

اسے سمجھنے کے لئے ہم کو پرکرتی سے پرکاش لینے اور پریم سے دل کو بھرپور رکھنے کی ضرورت ہے اسی پریم اور پرکاش میں ان باتوں کو سمجھنے کا بھید ملیگا اور ان بھیدوں کو حل کرنے کی یوگیتا حاصل ہوگی—اگر اس روشنی تک ہماری رسائی ہوگئی یا ہمارے اندر وہ سماگئی . اگر اس پریم میں ہم سچائی کے ساتھ ڈوب گئے یا اس پریم نے ہم میں رنگ بھر دیئے تو اسی رنگ میں

घुल कर और ज्ञान के समुन्दर में तैर कर हम उस शक्ति का खोज निकाल सकते हैं और उस ना मालूम हद की रोशनी को भी मालूम कर सकते हैं जिसकी तलाश में और जिसकी खोज में हम हैं.

जिस के लिये हमारी अवाज उठ रही है
हमारा दिल मचल रहा है
हमारी रूह तड़प रही है
हमारा शौक़ उभर रहा है
हमारा क़दम बढ़ रहा है.

दुनिया तारीक है यानी अन्धेरी है. माहौल तारीक है.

दिल तारीक है. दिमाग़ तारीक.

इन्सान अन्धेरे ही अन्धेरे में है यानी वह जिन्दगी के तारीक कटहरे में है.

प्रकृति के फ़ैज़ की बारिशें अगर इन्सान पर लगातार न होती रहें यानी प्रकृति के वरदान इन्सान पर दिन रात न बरसते रहें.

और सृष्टि पर प्रभाकर के प्रकाश का छिड़काव रोज़ न होता रहे तो बेशक इन्सान इस अन्धेरी दुनिया और तारीक भूगोल में बे-मार्ग और बे निशान रह कर, बे ज्ञान और बे प्रकाश रह कर जल्द ख़तम हो जाये. या आप ही आप वहशत खा कर किसी गहरे और तारीक गढ़े में जा गिरे या जिन्दगी की शाहराह से हट कर तबाही और गुमराही की मन्ज़िल जा पकड़े.

گھل کر اور گیان کے سمندر میں تیر کر ہم اُس شکتی کا کھوج نکال سکتے ھیں اور اُس نا معلوم حد کی روشنی کو بھی معلوم کرسکتے ھیں جس کی تلاش میں اور جس کی کھوج میں ہم ھیں.

جس کے لئے ھماری آواز اُٹھ رھی ھے
ھمارا دل مچل رھا ھے
ھماری روح تڑپ رھی ھے
ھمارا شوق اُبھر رھا ھے
ھمارا قدم بڑھ رھا ھے.

دنیا تاریک ھے یعنی اندھیری ھے. ماحول تاریک ھے.

دل تاریک ھے. دماغ تاریک.

اِنسان اندھیرے ھی اندھیرے میں ھے یعنی وہ زندگی کے تاریک کٹھرے میں ھے.

پرکرتی کے فیض کی بارشیں اگر انسان پر لگاتار نہوتی رھیں یعنی پرکرتی کے وردان انسان پر دن رات نہ برستے رھیں.

اور سرشٹی پر پربھاکر کے پرکاش کا چھڑکاؤ روز نہوتا رھے تو بےشک اِنسان اِس اندھیری دنیا اور تاریک بھوگول میں بے مارگ اور بے نشان رہ کر، بے گیان اور بے پرکاش رہ کر جلد ختم ھو جائے. یا آپ ھی آپ وحشت کھاکر کسی گہرے اور تاریک گڑھے میں جا گرے یا زندگی کی شاہراہ سے ھٹ کر تباھی اور گم راھی کی منزل جا پکڑے.

अक़ल और ज्ञान उसके पास से छिन जाये यानी सूझ बूझ से वह महरूम रह कर नासमझ हो जाये. और पैदायश के मक़सद और ख़ुद अपने महत्व से बे ख़बर हो रहे.

सच यह है अगर सचाई के साथ उसी "एक" से लौ लगाई जाये तो फिर प्रभू की दया से फ़िज़ा से रोशनी के फ़व्वारे फूट निकलते हैं. जिन से मन के लच्छन भी धुलते हैं और दिमाग़ के पर्दे भी उजलते हैं.

सूरज की रोशन किरनें इन्सान की रहबरी करती और संसार में उजाला फैलाती हैं.

सूरज अपनी रोशनी के बे अंत ख़ज़ाने यानी अपने "पावर हाउस" से सृष्टि को माला माल करता है और उजाला ही उजाला फैलाता है. लेकिन जब उसे ग़ुस्सा आ जाता है तो वह ग़ुस्से का सुर्ख़ चेहरा उसकी तरफ़ से फेर लेता यानी मुँह मोड़ लेता है. उस के मुँह मोड़ते ही संसार में अन्धेरा ही अन्धेरा छा जाता है—और वह उसी ग़ुस्से में डूब कर दूसरी तरफ़ निकल जाता है.

ऐसा भी होता है जब वह सारा दिन अपनी रोशनी फैलाये अपना सन्देश जारी रखता है. और कोई उस पर ध्यान नहीं देता और न उस से लाभ उठाता है तो फिर वह उस ग़ाफ़िल और मुरदा क़ौम के ऊपर सियाह चादर डाल कर मातम करता हुआ रुख़सत हो जाता है.

सूरज की रोशनी क़ुदरत के छिपे ख़ज़ाने बताती है—माद्दी और रूहानी तरक़्क़ियों के सामान अता करती है.

عقل اور گیان اُس کے پاس سے چھن جائے یعنی سوجھ بوجھ سے وہ محروم رہ کر نا سمجھ ہوجائے۔ اور پیدائش کے مقصد اور خود اپنے مہتو سے بے خبر ہو رہے۔

سچ یہ ہے اگر سچائی کے ساتھ اُسی "ایک" سے لو لگائی جائے تو پھر پربھو کی دیا سے فضا سے روشنی کے فوارے پھوٹ نکلتے ہیں۔ جن سے من کے لچھن بھی دھلتے ہیں اور دماغ کے پردے بھی اُجلتے ہیں۔

سورج کی روشن کرنیں انسان کی رہبری کرتی اور سنسار میں اُجالا پھیلاتی ہیں۔

سورج اپنی روشنی کے بے انت خزانے یعنی اپنے "پاور ھاؤس" سے سرشٹی کو مالا مال کرتا ہے اور اُجالا ہی اُجالا پھیلاتا ہے۔ لیکن جب اُسے غصہ آجاتا ہے تو وہ غصے کا سرخ چہرا اُس کی طرف سے پھیر لیتا یعنی منھ موڑ لیتا ہے۔ اُس کے منھ موڑتے ہی سنسار میں اندھیرا ہی اندھیرا چھا جاتا ہے—اور وہ اُسی غصے میں ڈوب کر دوسری طرف نکل جاتا ہے۔

ایسا بھی ہوتا ہے جب وہ سارا دن اپنی روشنی پھیلائے اپنا سندیش جاری رکھتا ہے۔ اور کوئی اُس پر دھیان نہیں دیتا اور نہ اُس سے لابھ اُٹھاتا ہے تو پھر وہ اُس غافل اور مردہ قوم کے اوپر سیاہ چادر ڈال کر ماتم کرتا ہوا رخصت ہوجاتا ہے۔

سورج کی روشنی قدرت کے چھپے خزانے بتاتی ہے—مادی اور روحانی ترقیوں کے سامان عطا کرتی ہے۔

दिनकर की किरनें इशारे हैं अक़्ल वालों के लिये.

किरनों की रोशनियाँ, पाकीज़गियाँ हैं रूह वालों के लिये.

सूरज! क़ुदरत का सब से बड़ा हथियार है, और रोशनी का सब से बुलन्द तैयारा!

और प्रकृति अलग,

रोशनी और नज़र देती है. ज्ञान और ख़बर देती है.

यही सलीक़े सिखा कर ख़ुदा से परिचय कराती है, यही तहज़ीब और सचाई की राह से ख़ुदा के क़रीब ले जाती है.

प्रकृति क्या है?

प्रकाश!

प्रकाश क्या है?

इलहाम!

इलहाम क्या है?

पैग़ाम!

पैग़ाम ही रोशनी है और पैग़ाम ही हिदायत

पैग़ाम ही नसीहत है और पैग़ाम ही तरबियत

सूरज का निकलना! जीवन का पैग़ाम देता है और नीम मुर्दा जान में जान डालता है. उसकी किरनें सोतों को बेदार करती हैं. बेदार करके उसके पैग़ाम की तकरार करती हैं.

रोशनी की किरनें अपनी रोशनी और ताक़त के बल पर दिलों के अन्दर दाख़िल हो कर और दिमाग़ों के भीतर घुसकर कोना कोना रोशन कर देती हैं—गोया वह एक ही वक़्त में दिलों को भी

دنکر کی کرنیں اشارے ھیں عقل والوں کے لئے

کرنوں کی روشنیاں، پاکیزگیاں ھیں روح والوں کے لئے

سورج! قدرت کا سب سے بڑا ہتھیار ہے، اور روشنی کا سب سے بلند طیارہ!

اور پرکرتی الگ،

روشنی اور نظر دیتی ہے۔ گیان اور خبر دیتی ہے۔

یہی سلیقے سکھا کر خدا سے پریچے کراتی ہے، یہی تہذیب اور سچائی کی راہ سے خدا کے قریب لے جاتی ہے۔

پرکرتی کیا ہے؟

پرکاش!

پرکاش کیا ہے؟

الہام!

الہام کیا ہے؟

پیغام!

پیغام ہی روشنی ہے اور پیغام ہی ہدایت

پیغام ہی نصیحت ہے پیغام ہی تربیت

سورج کا نکلنا! جیون کا پیغام دیتا ہے اور نیم مردہ جان میں جان ڈالتا ہے۔ اس کی کرنیں سوتوں کو بیدار کرتی ہیں۔ بیدار کرکے اس کے پیغام کی تکرار کرتی ہیں۔

روشنی کی کرنیں اپنی روشنی اور طاقت کے بل پر، دلوں کے اندر داخل ہوکر اور دماغوں کے بھیتر گھس کر کونا کونا روشن کر دیتی ہیں—گویا وہ ایک ہی وقت میں دلوں کو بھی

रोशन करती हैं और दिमाग़ों को भी जगमगा देती हैं. वह तमाम तारीकियों पर फैल कर और तमाम अंधेरियों पर छा कर सीधे सच्चे मार्गों के पते लगाती और निशान बताती हैं—अगर गहरी और सच्ची नज़र से देखा जाये तो उनकी यह सेवा बड़ी सेवा है. सृष्टि के लिये भी और सृष्टि की तरक़्क़ी के लिये भी.

"मुझको अन्धेरे से रोशनी की तरफ़ ले चल"

यह एक अन्दरूनी आवाज़ है—मगर वह क्या चीज़ है जिस को उस आवाज़ के ज़रिये तलाश है.

आख़िर वह है क्या ? जिस की इतनी सोच और जिसकी इतनी खोज है. और वह है कौन ? जो कहीं छिपा हुआ है या कि वह किसी परदे में है.

मगर मालूम ऐसा पड़ता है जैसे वह हमारे हृदय में है.

क्या उसी से रोशनी की तलब और ख़्वाहिश है ?

हाँ हाँ वही है रोशनी का केन्द्र !

वही है प्रकाश का भंडार !

वही है रोशनी और शक्ति वाला, और वही है बड़ी क़ुदरत वाला !

जिस को कोई कहता है ख़ुदा तो को कोई कहता है भगवान.

उसी का नाम है "सर्वशक्तिमान !"

उसी से रोशनी की चाहत है और उसी से पुकारने वाले की आवाज़ का समन्वय है.

अन्धेरे से रोशनी की तरफ़ जाने के लिये मन की पाकी और रूह की पाकीज़गी की ज़रूरत है. दिल की सफ़ाई और रूह की जागृति

روشن کرتی ہیں اور دماغوں کو بھی جگمگا دیتی ہیں. وہ تمام تاریکیوں پر پھیل کر اور تمام اندھیروں پر چھا کر سیدھے سچے مارگوں کے پتے لگاتی اور نشان بتاتی ہیں—اگر گہری اور سچی نظر سے دیکھا جائے تو اُن کی یہ سیوا بڑی سیوا ہے. سرشٹی کے لئے بھی اور سرشٹی کی ترقی کے لئے بھی.

"مجھکو اندھیرے سے روشنی کی طرف لے چل"

یہ ایک اندرونی آواز ہے—مگر وہ کیا چیز ہے جس کی اِس آواز کے ذریعے تلاش ہے.

آخر وہ ہے کیا؟ جس کی اِتنی سوچ اور جسکی اِتنی کھوج ہے. اور وہ ہے کون؟ جو کہیں چھپا ہوا ہے یا کہ وہ کسی پردے میں ہے.

مگر معلوم ایسا پڑتا ہے جیسے وہ ہمارے ہردے میں ہے

کیا اُسی سے روشنی کی طلب اور خواہش ہے؟

ہاں ہاں وہی ہے روشنی کا کیندر!

وہی ہے پرکاش کا بھنڈار!

وہی ہے روشنی اور شکتی والا' اور وہی ہے بڑی قدرت والا!

جس کو کوئی کہتا ہے خدا تو کوئی کہتا ہے بھگوان

اُسی کا نام ہے "سرو شکتیمان!"

اُسی سے روشنی کی چاہت ہے. اور اُسی سے پکارنے والے کی آواز کا سمبندھ ہے.

اندھیرے سے روشنی کی طرف جانے کے لئے من کی پاکی اور روح کی پاکیزگی کی ضرورت ہے. دل کی صفائی اور روح کی جاگرتی

की ज़रूरत है, जीवन आदर्श, जीवन सुधार और आत्म विकास की ज़रूरत है.

इन तमाम चीज़ों के सुधार और विकास के बाद उस पाक रोशनी और उस महान शक्ति तक पहुँचने की तड़प है जिस शक्ति का असली नाम है हक़ीक़ी रोशनी "नूर सरासर नूर" यानी "प्रकाश ही प्रकाश"

उसी रोशनी के घेरे तक जाने के लिये दिल की पुकार है

उसी प्रकाश के मरकज़ तक पहुंचने के लिये आत्मा बे क़रार है

जब और जिस समय हम उस रोशनी तक पहुँच जायेंगे उसी समय हम अन्धेरे से निकल कर रोशन हो जायेंगे और रोशन होकर उस रोशनी में घुल मिल जायेंगे.

हिन्दू मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दर लाल के

चार लेक्चर जो उन्होंने सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

[नोट—बेचने वालों या कम से कम दस कापी खरीदने वालों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.]

मैनेजर "नया हिन्द", १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

کی ضرورت ہے . جیون آدرش ' جیون سدھار اور آتم وکاس کی ضرورت ہے .

ان تمام چیزوں کے سدھار اور وکاس کے بعد اس پاک روشنی اور اس مہان شکتی تک پہونچنے کی تڑپ ہے جس شکتی کا اصلی نام ہے حقیقی روشنی "نور سراسر نور" یعنی "پرکاش ہی پرکاش"

اسی روشنی کے گھیرے تک جانے کے لئے دل کی پکار ہے

اسی پرکاش کے مرکز تک پہونچنے کے لئے آتما بے قرار ہے

جب اور جس سمے ہم اس روشنی تک پہونچ جائیں گے اسی سمے ہم اندھیرے سے نکل کر روشن ہوجائیں گے اور روشن ہوکر اس روشنی میں گھل مل جائیں گے .

ھندو مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے

چار لکچر جو انھوں نے سنٹرل کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے .

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے .

کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے .

[نوٹ — بیچنے والوں یا کم سے کم دس کاپی خریدنے والوں کو ٣٣ فیصدی کمیشن دیا جائیگا .]

مینیجر ' نیا ھند ' ١٣٥ ' مٹھی گنج ' الہ آباد .

दो रास्ते

(भाई सरस्वती कुमार)

नासिक कांगरेस में जो कुछ हुआ और जिस तरह कांगरेस के सभी भीतरी विरोधी दलों को किसी तरह एकता की डोरी में बांधने की कोशिश की गई, जब हम उस पर ध्यान देते हैं तो हमारी आंखों के सामने अपने दीन दुखी देश और उसके सूबों की तसवीर आ जाती है. इस इजलास में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन की सदारत में ९ प्रस्ताव पास हुए. विदेशी नीति, हिन्द पाकिस्तान समझौता और शरनार्थियों के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास हुए जो बहुत अहम थे. पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बड़ी हिम्मत और कामयाबी के साथ उन लोगों से लोहा लिया जो टंडन जी की जीत में हिन्दू जेहनियत की जीत मानते थे और जो यह समझ बैठे थे कि अब पाकिस्तान से निपट लेने का, हिन्दुस्तान के मुसलमानों से बदला ले लेने का और शरनार्थियों को उभार कर हिन्द सरकार की ग़ैर मज़हबी नीति को उलट-पुलट देने का मौक़ा हाथ आ गया है. मगर ऐसे लोगों को गहरा धक्का लगा और उन्हें पता चला कि अभी कांगरेस का छींका टूटा नहीं है. मुझे एक टंडन भक्त जनसेवी ने रास्ते में रोककर कहा—"बाबू जी ने तो अपनी और सारे देश की (देशसे उनका मतलब हिन्दू भारत से था) नाक कटवादी." उनका इशारा टंडन जी

دو راستے

(بھائی سرسوتی کمار)

ناسک کانگریس میں جو کچھ ہوا اور جسطرح کانگریس کے سبھی بھیتری وِرودھی دلوں کو کسی طرح ایکتا کی ڈوری میں باندھنے کی کوشش کی گئی' جب ہم اُس پر دھیان دیتے ہیں تو ہماری آنکھوں کے سامنے اپنے دین دکھی دیش اور اُس کے صوبوں کی تصویر آجاتی ہے۔ اس اجلاس میں راج رشی پرشوتم داس ٹنڈن کی صدارت میں ۹ پرستاؤ پاس ہوئے۔ ودیشی نیتی' ہند پاکستان سمجھوتہ اور شرنارتھیوں کے سمبندھ میں پرستاؤ پاس ہوئے جو بہت اہم تھے۔ پنڈت جواہر لال نہرو نے بڑی ہمت اور کامیابی کے ساتھ اُن لوگوں سے لوہا لیا جو ٹنڈن جی کی جیت میں ہندو ذہنیت کی جیت مانتے تھے اور جو یہ سمجھ بیٹھے تھے کہ اب پاکستان سے نپٹ لینے کا' ہندستان کے مسلمانوں سے بدلہ لے لینے کا اور شرنارتھیوں کو اُبھار کر ہند سرکار کی غیر مذہبی نیتی کو اُلٹ پلٹ دینے کا موقع ہاتھ آگیا ہے۔ مگر ایسے لوگوں کو گہرا دھکا لگا اور اُنھیں پتہ چلا کہ ابھی کانگریس کا چھینکا ٹوٹا نہیں ہے۔ مجھے ایک ٹنڈن بھکت جن سیوی نے راستے میں روک کر کہا—"بابو جی نے تو اپنی اور سارے دیش کی (دیش سے اُنکا مطلب ہندو بھارت سے تھا) ناک کٹوادی۔" اُنکا اشارہ ٹنڈن جی

के उस भाषन की ओर था जो उन्होंने सद्र की हैसियत से नासिक में दिया था.

टंडन जी का भाषन मैंने कई बार ग़ौर से पढ़ा है. इसलिये उस राजर्षि भक्त सभाई खयालात वाले भाई की झुँझलाहट और गुस्से को मैं आसानी के साथ समझ सकता हूँ. हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वालों को टंडन जी के भाषन से गहरी निराशा हुई. साथ ही उन कांग्रेसियों को भी धक्का लगा है जो भीतर से फ़िरक़ापरस्त, मुस्लिम विरोधी और नेहरू सरकार की ग़ैर मज़हबी नीति के दुश्मन थे मगर जो खद्दर के कपड़ों और गांधी टोपी के भीतर अपनी इस ज़ेहनियत को छिपाने की कोशिश करते आये हैं. टंडन जी ने भारत की विदेशी नीति पर ख़ास तौर से ग़ैर-जानिबदारी और कोरिया सम्बन्धी नीति पर जो कुछ कहा उससे मुझे इख़्तलाफ़ है. टंडन जी ने भारत में रहने वाली कमगिनत जातियों के बारे में जो कुछ कहा, मिलीजुली कलचर वग़ैरा की जो बातें कहीं उसमें बहुत कुछ रद्दो बदल और तरमीम की गुंजायश है. शरनार्थियों के सम्बन्ध में टंडन जी का जो रुख़ है उसके बारे में भी मुझे बहुत कुछ कहना है. मगर, इन सब बातों के होते हुए भी, टंडन जी के भाषन से फ़िरक़ापरस्त लोगों को जितनी निराशा हुई है उसी हिसाब से देशभक्त लोगों की हिम्मत भी बढ़ी है. नासिक में जो लोग टंडन नेहरू अलगाव का सपना देख रहे थे उनका सपना पूरा न हो पाया. जो लोग नेहरू जी की नीति की हार की कल्पना कर रहे थे उनको भी मुंह की खानी पड़ी. इस तरह यह इजलास कई मानों में कामयाब और कई मानों में नाकामयाब रहा.

کے اُس بھاشن کی اور تھا جو اُنھوں نے صدر کی حیثیت سے ناسک میں دیا تھا.

ٹنڈن جی کا بھاشن میں نے کئی بار غور سے پڑھا ہے. اِسلئے اُس راج رشی بھکت سبھائی خیالات والے بھائی کی جھنجھلاہٹ اور غصے کو میں آسانی کے ساتھ سمجھ سکتا ہوں. ھندو مہاسبھا اور راشٹری سویم سیوک سنگھ والوں کو ٹنڈن جی کے بھاشن سے گہری نراشا ہوئی. ساتھ ہی اُن کانگریسیوں کو بھی دھکا لگا ہے جو بھیتر سے فرقہ پرست، مسلم وِرودھی اور نہرو سرکار کی غیر مذھبی نیتی کے دشمن تھے مگر جو کھدر کے کپڑوں اور گاندھی ٹوپی کے بھیتر اپنی اس ذہنیت کو چھپانے کی کوشش کرتے آئے ھیں. ٹنڈن جی نے بھارت کی ودیشی نیتی پر خاص طور سے غیر جانب داری اور کوریا سمبندھی نیتی پر جو کچھ کہا اُس سے مجھے اختلاف ھے. ٹنڈن جی نے بھارت میں رھنے والی کم گنت جاتیوں کے بارے میں جو کچھ کہا، ملی جلی کلچر وغیرہ کی جو باتیں کہیں اُسمیں بہت کچھ ردوبدل اور ترمیم کی گنجائش ھے. شرنارتھیوں کے سمبندھ میں ٹنڈن جی کا جو رخ ھے اُسکے بارے میں بھی مجھے بہت کچھ کہنا ھے. مگر، ان سب باتوں کے ہوتے ہوئے بھی، ٹنڈن جی کے بھاشن سے فرقہ پرست لوگوں کو جتنی نراشا ہوئی ھے اُسی حساب سے دیش بھکت لوگوں کی ھمت بھی بڑھی ھے. ناسک میں جو لوگ ٹنڈن نہرو الگاؤ کا سپنا دیکھ رھے تھے اُنکا سپنا پورا نہ ہو پایا. جو لوگ نہرو جی کی نیتی کی ھار کی کلپنا کر رھے تھے اُنکو بھی منہ کی کھانی پڑی. اسطرح یہ اجلاس کئی معنوں میں کامیاب اور کئی معنوں میں نا کامیاب رھا.

अब यह इजलास खतम हो गया है. अब सभी लोग ठंडे दिल से सोच सकते हैं कि नासिक में क्या क्या हुआ और क्या क्या नहीं हुआ, क्या क्या सही हुआ और क्या क्या ग़लत हुआ. भाषा, संस्कृति, विदेशी नीति, घरेलू पालिसी, जातियों के आपसी सम्बन्ध, कांगरेस वालों का पतन वग़ैरा, बहुत से सवालों पर ग़ौर किया गया. और सभी लोगों ने यह मंज़ूर किया कि कांगरेस वालों में लालच घुस आया है, वह सेवा की जगह धन और नाम कमाने की बातें सोचने लगे हैं और जनता से उनका सम्बन्ध टूट गया है. इसलिये कांगरेस वालों से यह माँग की गई कि वह अपने को सुधारें.

यह सब तो हुआ, मगर किसी ने देश की उन समस्याओं पर ग़ौर नहीं किया जो आज सबसे अधिक कठिन बन गई हैं. मेरा मतलब देश की जनता की माली हालत से है. तीन बरस हुकूमत कर लेने के बावजूद कांगरेस की सरकारें किसानों, मज़दूरों और बीच के श्रेनी वाले लोगों के लिये कुछ नहीं कर पाई हैं. वोट लेने और जनता में वाह वाही लूटने के लिये कांगरेस के नेता बहुत से वायदे करते रहे हैं. वह वायदे पूरे नहीं हो सके हैं. इसलिये जनता कांगरेस वालों से नाराज़ है. वह उनकी बातों पर विश्वास नहीं करती. खद्दर के जामे में डोलने फिरने वाले कांगरेसी अब अच्छी निगाह से नहीं देखे जाते. चोर बाज़ारी, पच्छपात, फूट, बेईमानी, मक्कारी, जाल साज़ी, अफ़सर शाही की दलाली, ख़ुफ़ियागीरी वग़ैरा का दोषी समझ कर जनता उनसे बचने लगी है, डरने लगी है और घृना करने लगी है. ऐसे ही बहुत से लोग नासिक में भी इकट्ठे हुए और उन्होंने ही टंडन जी और नेहरू जी के भाषन सुने. सोचने की बात है कि क्या सचमुच उन नेताओं की शिक्षाओं का ज़रा भी असर इन लोगों पर पड़ा

اب یہ اجلاس ختم ہو گیا ہے . اب سبھی لوگ ٹھنڈے دل سے سوچ سکتے ہیں کہ ناسک میں کیا کیا ہوا اور کیا کیا نہیں ہوا، کیا کیا صحیح ہوا اور کیا کیا غلط ہوا. بھاشا، سنسکرتی، ودیشی نیتی، گھریلو پالیسی، جاتیوں کے آپسی سمبندھ، کانگریس والوں کا پتن وغیرہ، بہت سے سوالوں پر غور کیا گیا . اور سبھی لوگوں نے یہ منظور کیا کہ کانگریس والوں میں لالچ گھس آیا ہے، وہ سیوا کی جگہ دھن اور نام کمانے کی باتیں سوچنے لگے ہیں اور جنتا سے انکا سمبندھ ٹوٹ گیا ہے . اسلئے کانگریس والوں سے یہ مانگ کی گئی کہ وہ اپنے کو سدھاریں .

یہ سب تو ہوا، مگر کسی نے دیش کی اُن سمسیاؤں پر غور نہیں کیا جو آج سب سے ادھک کٹھن بن گئی ہیں . میرا مطلب دیش کی جنتا کی مالی حالت سے ہے . تین برس حکومت کرلینے کے باوجود کانگریس کی سرکاریں کسانوں، مزدوروں اور بیچ کی شرینی والے لوگوں کے لئے کچھ نہیں کر پائی ہیں . ووٹ لینے اور جنتا میں واہ واہی لوٹنے کے لئے کانگریس کے نیتا بہت سے وعدے کرتے رہے ہیں . وہ وعدے پورے نہیں ہو سکے ہیں . اسلئے جنتا کانگریس والوں سے ناراض ہے . وہ اُنکی باتوں پر وشواس نہیں کرتی . کھدر کے جامے میں ڈولتے پھرنے والے کانگریسی اب اچھی نگاہ سے نہیں دیکھے جاتے . چور بازاری، پکھش پات، جھوٹ، بےایمانی، مکاری، جعلسازی، افسر شاہی کی دلالی، خفیہ گیری وغیرہ کا دوشی سمجھ کر جنتا ان سے بچنے لگی ہے، ڈرنے لگی ہے اور گھرنا کرنے لگی ہے . ایسے ہی بہت سے لوگ ناسک میں بھی اکٹھے ہوئے اور اُنہوں نے ہی ٹنڈن جی اور نہرو جی کے بھاشن سنے . سوچنے کی بات ہے کہ کیا سچ مچ اُن نیتاؤں کی شکشاؤں کا ذرا بھی اثر ان لوگوں پر پڑا

होगा ! न इन लोगों का दिल बदलेगा, न दिमाग़. इनके दिलों पर स्वार्थ का काला मोटा परदा पड़ गया है. इनके दिमाग़ अपने मतलब की बातों से भरे हुए हैं. इसलिये देश की सबसे बड़ी समस्या खुद यह कांगरेसी लोग बन गये हैं. टंडन जी और नेहरू जी का ध्यान इधर गया और उन्होंने कांगरेस वालों को नसीहत की, यह बात सही है. मगर निवेदन यह है कि असल में मरज यहाँ नहीं है. नासूर गहरा है और भीतर की ओर मुँह किये हुए है.

पंडित जवाहर लाल नेहरू की सरकार ने जिस समय यह तय किया कि वह भारत के पूँजीपतियों से मिलकर ही शासन का काम काज चलायेगी और कम से कम अगले दस साल तक वह पैदावार के साधनों को क़ौमी मिलकियत न बनायेगी, उसी समय क़ौमी ज़िन्दगी के पतन का वह सिलसिला आरम्भ हो गया जिसके लिये अब हमारे नेता रोते चिल्लाते हैं. नेहरू जी ने सन् १९४५ ई० में जेल से छूटते ही चोरबाज़ारी करने वालों के ख़िलाफ़ जो बयान शाया किया था अगर उनकी सरकार उस बयान के आधार पर ही अपनी पालिसी बनाती तो देश के पूँजीपतियों को विदेशी पूँजीपतियों से मिलकर ग़रीब, बेबस जनता को लूट खाने का मौक़ा न मिलता. उस समय हमारी हुकूमतों, हुक्मरानों और क़ौमी ख़िदमतगारों की सूरत शकल ही कुछ और होती, उनके कारनामे ही कुछ और होते और उन कारनामों का नतीजा भी कुछ और ही होता. मैं कांगरेस वालों और देशवासियों के पतन के लिये सीधे नेहरू सरकार और कांगरेस नेताशाही को ज़िम्मेदार ठहराता हूँ. अगर वह चाहते हैं कि पतन का यह सिलसिला ख़तम हो तो

ہوگا ! نہ ان لوگوں کا دل بدلیگا' نہ دماغ . ان کے دلوں پر سوارتھ کا کالا موٹا پردا پڑگیا ہے . انکے دماغ اپنے مطلب کی باتوں سے بھرے ہوئے ہیں . اسلئے دیش کی سب سے بڑی سمسیا خود یہ کانگریسی لوگ بن گئے ہیں . ٹنڈن جی اور نہرو جی کا دھیان ادھر گیا اور انہوں نے کانگریس والوں کو نصیحت کی' یہ بات صحیح ہے . مگر نویدن یہ ہے کہ اصل میں مرض یہاں نہیں ہے . ناسور گہرا ہے اور بھیتر کی اور منھ کئے ہوئے ہے .

پنڈت جواہر لال نہرو کی سرکار نے جس سمے یہ طے کیا کہ وہ بھارت کے پونجی پتیوں سے ملکر ہی شاسن کا کام کاج چلائیگی اور کم سے کم اگلے دس سال تک وہ پیداوار کے سادھنوں کو قومی ملکیت نہ بنائیگی' اسی سمے قومی زندگی کے پتن کا وہ سلسلہ آرمبھ ہوگیا جس کے لئے اب ہمارے نیتا روتے چلاتے ہیں . نہرو جی نے سن ۱۹۴۵ع میں جیل سے چھوٹتے ہی چوربازاری کرنے والوں کے خلاف جو بیان شائع کیا تھا اگر ان کی سرکار اس بیان کے آدھار پر ہی اپنی پالیسی بناتی تو دیش کے پونجی پتیوں کو ودیشی پونجی پتیوں سے ملکر غریب' بے بس جنتا کو لوٹ کھانے کا موقع نہ ملتا . اس سمے ہماری حکومتوں' حکمرانو اور قومی خدمتگاروں کی صورت شکل ہی کچھ اور ہوتی' ان کے کارنامے ہی کچھ اور ہوتے اور ان کارناموں کا نتیجہ بھی کچھ اور ہی ہوتا . میں کانگریس والوں اور دیش واسیوں کے پتن کے لئے سیدھے نہرو سرکار اور کانگریس نیتا شاہی کو ذمہ دار ٹھہراتا ہوں . اگر وہ چاہتے ہیں کہ پتن کا یہ سلسلہ ختم ہو تو

उनके सामने कुल दो ही रास्ते हैं—एक है समाजवादी रास्ता (जिस पर वह चल नहीं सकते) और दूसरा है गांधीवादी रास्ता (जिस पर वह चाहें तो किसी हद तक चल सकते हैं.).

इस समय जब कि देश गांधी जी का जन्म दिन मना रहा है और उनके सम्बन्ध में लम्बी चौड़ी तक़रीरें की जा रही हैं, मैं अपने कांगरेसी साथियों का ध्यान गांधी जी के कुछ उन सिद्धान्तों की ओर दिलाना चाहता हूँ जिनपर अमल कर के वह इस समय अपना और देश का भला कर सकते हैं. गांधी जी सेवा, भाई चारा, मुहब्बत वग़ैरा की बातें किया करते थे. मगर सेवक से शासक बन जाने के कारन कांगरेसी साथी अपने इस उसूल को भूल गये हैं. अगर वह फिर से जनता के सेवक बनने की कोशिश करने लगें तो बड़ी बात हो जाय. गांधी जी हिन्दुओं और मुसलमानों को भारत माता की दो आंखें कहा करते थे. अगर हमारे साथी यह समझ लें कि एक आंख के फूट जाने से हमारी माता कितनी कुरूप और असुन्दर हो जायगी तो वह उसे फोड़ने की कोशिश करना बन्द करदें. महात्मा गांधी अछूतपन को भारत माता के माथे का सबसे काला कलंक का टीका मानते थे. उन्हें अल्लाह का प्यारा—हरिजन—कहा करते थे. अगर हिन्दू समाज से इन हरिजनों को उनके सारे अधिकार फ़ौरन दिलवा दिये जांय और माली हालत दुरुस्त करके समाज में उनको वही दरजा दे दिया जाय जो कि उनका है और होना चाहिये तो कलंक का यह टीका भी धुल जाय और भारत माता का विशाल भाल निष्कलंक हो कर फिर चमकने लगे. मगर इसके लिये सारे हिन्दू समाज को जड़ से भकझोर देना पड़ेगा. मनुस्मृति से लेकर आजतक चली आने वाली

اُن کے سامنے کل دو ہی راستے ہیں—ایک ہے سماج وادی راستہ (جس پر وہ چل نہیں سکتے) اور دوسرا ہے گاندھی وادی راستہ (جس پر وہ چاہیں تو کسی حد تک چل سکتے ہیں .).

اس سمے جبکہ دیش گاندھی جی کا جنم دن منا رہا ہے اور اُنکے سمبندھ میں لمبی چوڑی تقریریں کی جارہی ہیں' میں اپنے کانگریسی ساتھیوں کا دھیان گاندھی جی کے کچھ اُن سدھانتوں کی اور دلانا چاہتا ہوں جن پر عمل کرکے وہ اِس سمے اپنا اور دیش کا بھلا کر سکتے ہیں . گاندھی جی سیوا' بھائی چارہ' محبت وغیرہ کی باتیں کیا کرتے تھے . مگر سیوک سے شاسک بن جانے کے کارن کانگریسی ساتھی اپنے اِس اصول کو بھول گئے ہیں . اگر وہ پھر سے جنتا کے سیوک بننے کی کوشش کرنے لگیں تو بڑی بات ہوجائے. گاندھی جی ہندؤوں اور مسلمانوں کو بھارت ماتا کی دو آنکھیں کہا کرتے تھے. اگر ہمارے ساتھی یہ سمجھ لیں کہ ایک آنکھ کے پھوٹ جانے سے ہماری ماتا کتنی کروپ اور اسندر ہوجائیگی تو وہ اُسے پھوڑنے کی کوشش کرنا بند کردیں . مہاتما گاندھی اچھوت پن کو بھارت ماتا کے ماتھے کا سب سے کالا کلنک کا ٹیکا مانتے تھے . اُنھیں اللہ کا پیارا—ہریجن—کہا کرتے تھے . اگر ہندو سماج سے ان ہریجنوں کو انکے سارے ادھیکار فوراً دلوادئے جائیں اور مالی حالت درست کرکے سماج میں اُنکو وہی درجہ دیدیا جائے جو کہ اُنکا ہے اور ہونا چاہئے تو کلنک کا یہ ٹیکا بھی دھل جائے اور بھارت ماتا کا وشال بھال نشکلنک ہوکر پھر چمکنے لگے. مگر اِسکے لئے سارے ہندو سماج کو جڑ سے جھکجھور دینا پڑیگا . منو سمرتی سے لیکر آج تک چلی آنے والی

रूढ़ियों को तोड़ फेंकना पड़ेगा. यानी सारे समाज को अपना 'कांया पलट' करना पड़ेगा; जिसका सीधा अर्थ है सरकार और समाज द्वारा बहुत बड़ा क्रान्तिकारी क़दम का उठाना. इस क़दम में समाज की प्रगतिशीलता, सरकार की दूरन्देशी और कारकर्ताओं की सेवा भावना का पूरा पूरा इम्तहान हो जायगा. ६ या ७ करोड़ आदमियों को धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकार दिलवा देना एक इतनी बड़ी सामाजिक प्रतिक्रिया होगी जिसके नतीजे में तंगनज़री और ग़ैरियत की भावनाएँ काफ़ूर होजायेंगी और हमारे देश में सचमुच ग़ैर मज़हबी हुकूमत की मज़बूत नींव पड़ जायेगी.

गांधी जी किसानों को देश का पालनहार कहा करते थे. ज़मीन पर किसानों के अलावा किसी भी मुफ़्तख़ोर का अधिकार नहीं हो सकता. जो निज़ाम और जो सरकार मुफ़्तख़ोरों को सहारा देती है वह ख़ुद उन मुफ़्तख़ोरों के मुँह का निवाला बन जाती है. जो सरकार जनता की सरकार बनना चाहती है उसे किसानों के हितों का पहरेदार बनना ही होगा. आजकी हालत में किसान को उसकी ज़मीन, जिसे एक अरसे से उससे छीन लिया गया था, वापस न दे देना या उसमें तरह तरह की बन्दिशें लगाना ख़तरे से ख़ाली नहीं है. क्योंकि हमेशा चुप रहने वाला और सब कुछ बर्दाश्त करने वाला किसान जब विद्रोह करता है तो उस की लपटें चारों और स्यानों को चाट जाती हैं. अगर हमारे देशभक्तों को किसानों की सच्ची सेवा करनी है तो उन्हें हिम्मत बटोर कर किसानों को उनके सारे अधिकार दे देने चाहियें. ऐसा न होने पर सारे देश में विद्रोह उठ खड़ा होगा जैसा कि अब भी दक्खिन के कुछ

روڑھیوں کو توڑ پھینکنا پڑیگا . یعنی سارے سماج کو اپنا 'کایا پلٹ' کرنا پڑیگا ؛ جسکا سیدھا ارتھ ہے سرکار اور سماج دوارا بہت بڑا کرانتکاری قدم کا اٹھانا۔ اِس قدم میں سماج کی پرگتی شیلتا ' سرکار کی دوراندیشی اور کارکرتاؤں کی سیوا بھاؤنا کا پورا پورا امتحان ہو جائیگا . ٦ یا ٧ کروڑ آدمیوں کو دھارمک ' ساماجک ' آرتھک اور سانسکرتک ادھیکار دلوا دینا ایک اتنی بڑی ساماجک پرتی کریا ہوگی جسکے نتیجے میں تنگ نظری اور غیریت کی بھاؤنائیں کافور ہوجائینگی اور ہمارے دیش میں سچ مچ غیر مذھبی حکومت کی مظبوط نیو پڑ جائیگی .

گاندھی جی کسانوں کو دیش کا پالن ہار کہا کرتے تھے . زمین پر کسانوں کے علاوہ کسی بھی مفت خور کا ادھیکار نہیں ہو سکتا . جو نظام اور جو سرکار مفت‌خوروں کو سہارا دیتی ہے وہ خود اُن مفت خوروں کے منہ کا نوالا بنجاتی ہے . جو سرکار جنتا کی سرکار بننا چاہتی ہے اُسے کسانوں کے ہتوں کا پہرےدار بننا ہی ہوگا . آج کی حالت میں کسان کو اُسکی زمین ' جسے ایک عرصے سے اُس سے چھین لیا گیا تھا ' واپس نہ دے دینا یا اُس میں طرح طرح کی بندشیں لگانا خطرے سے خالی نہیں ہے . کیونکہ ہمیشہ چپ رہنے والا اور سب کچھ برداشت کرنے والا کسان جب ودروہ کرتا ہے تو اُسکی لپٹیں ذاروں اور چھانگوں کو چاٹ جاتی ہیں . اگر ہمارے دیش بھکتوں کو کسانوں کی سچی سیوا کرنی ہے تو اُنھیں ھمت بٹور کر کسانوں کو اُن کے سارے ادھیکار دے دینے چاہئیں . ایسا نہ ہونے پر سارے دیش میں ودروہ اُٹھ کھڑا ہوگا جیسا کہ اب بھی دکھن کے کچھ

हिस्सों में है. सरकारें और संस्थाएँ आती जाती रहती हैं मगर जनता अमर है और उसके अधिकार भी अमर हैं. बापू की भाषा में देश के इन पालनहारों को उनकी थाती वापस कर देनी चाहिये. बापू ग़रीबों और मजदूरों को 'दरिद्र नारायन' कहा करते थे. आज जो दरिद्र, नंगा, भूका और ग़रीब दिखाई देता है वही नर का बनाने वाला, पालने वाला, सिरजनहार है. इसमें क्या शक है? सिरजनहार को ही भूका मार देने की कोशिश करना वह सामाजिक पाप है जिसका नतीजा भयानक क्रान्ति और ख़ून के दरिया बह जाने के अलावा और कुछ नहीं है. जो आज ग़रीब है, भूका है, मेहनत करने पर भी नंगा और दरिद्र रहने पर मजबूर है वह कल क्या कर सकता है इसकी कल्पना की जा सकती है. नारायन नरसिंह बन कर हिरन्य कश्यप का पेट फाड़ सकते हैं. यह कथा सभी जानते हैं. नारायन पालन हार ही नहीं समय आने पर नाश भी करता है. सोवियत रूस और जनवादी चीन इसकी ज़िन्दा मिसाल हैं. मजदूर की ताक़त का ग़लत अन्दाजा करना, उस को कमजोर, बेबस और मजबूर समझना खतरे से ख़ाली नहीं है. जिन्हों ने उसे कमजोर समझा और उसे दबाना चाहा, पसपा करना चाहा, मिटाना चाहा वह ख़ुद मिट गये और उनकी क़ब्र पर दिया जलाने वाला भी नहीं बचा. हमारे देश वालों को भी इतिहास की घटनाओं से सबक़ सीखना चाहिये और समय रहते गांधी जी के बताये रास्तों को अपना कर दरिद्र नारायन को उसका अधिकार दे देना चाहिये. वरना, वह घड़ी जलदी आयेगी जिसकी कल्पना से ही डर कर हमारे शासक, पूँजीपति और समाज के ठेकेदार भयानक हिंसा, क्रूर दमन और निर्मम हत्या

حصوں میں ہے . سرکاریں اور سنستھائیں آتی جاتی رہتی ہیں مگر جنتا امر ہے اور اس کے ادھیکار بھی امر ہیں . باپو کی بھاشا میں دیش کے ان پالن ہاروں کو انکی تھاتی واپس کر دینی چاہئے . باپو غریبوں اور مزدوروں کو 'دردر نارائن' کہا کرتے تھے . آج جو دردر، ننگا، بھوکا اور غریب دکھائی دیتا ہے وہی نرکا بنانے والا، پالنے والا، سرجن ہار ہے، اس میں کیا شک ہے؟ سرجن ہار کو ہی بھوکا مار دینے کی کوشش کرنا وہ سماجک پاپ ہے جسکا نتیجہ بھیانک کرانتی اور خون کے دریا بہہ جانے کے علاوہ اور کچھ نہیں ہے . جو آج غریب ہے، بھوکا ہے، محنت کرنے پر بھی ننگا اور دردر رہنے پر مجبور ہے وہ کل کیا کر سکتا ہے اسکی کلپنا کیجا سکتی ہے . نارائن نرسنگھ بن کر ہرنے کشیپ کا پیٹ پھاڑ سکتے ہیں . یہ کتھا سبھی جانتے ہیں . نارائن پالن ہار ہی نہیں، سمے آنے پر ناش بھی کرتا ہے . سوویت روس اور جن وادی چین اس کی زندہ مثال ہیں . مزدور کی طاقت کا غلط اندازہ کرنا، اس کو کمزور، بےبس اور مجبور سمجھنا خطرے سے خالی نہیں ہے . جنہوں نے اسے کمزور سمجھا اور اسے دبانا چاہا، پسپا کرنا چاہا، مٹانا چاہا وہ خود مٹ گئے اور ان کی قبر پر دیا جلانے والا بھی نہیں بچا . ہمارے دیش والوں کو بھی اتہاس کی گھٹناؤں سے سبق سیکھنا چاہئے اور سمے رہتے گاندھی جی کے بتائے راستوں کو اپنا کر دردر نارائن کو اسکا ادھیکار دے دینا چاہئے . ورنہ، وہ گھڑی جلدی آئیگی جسکی کلپنا سے ہی ڈر کر ہمارے شاسک، پونجی پتی اور سماج کے ٹھیکیدار بھیانک ہنسا، کرور دمن اور نرمم ہتیا

का सहारा लेते हैं. यह अंधी नीति खुद उनकी क़ब्रें खोद रही है, यह कोई भी साफ़ साफ़ देख सकता है.

नासिक कांगरेस में इन गम्भीर मसलों पर ग़ौर नहीं किया गया. देश व्यापी असंतोष, परेशानी और बदहाली की ओर से अपनी आँखें मूंद कर हमारे नेताओं ने बता दिया कि वह हमारी सामाजिक ज़िन्दगी की सचाइयों से कितने दूर जाचुके हैं. महात्मा गांधी का बार बार नाम लेने पर भी वह उनके उसूलों पर चलने का कोई भी निश्चय नहीं कर सके. हमारे मंत्री कांगरेस के इजलास में अपने बाडीगार्डों, खुफ़िया वालों और सेना के बग़ैर शामिल न होसके. जनता से वह इतना डरने लगे हैं कि वह अपनी हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम किये बिना जनता के बीच में जा नहीं सकते. जिस जनता का सेवक होने का वह दम भरते हैं उस के बीच जाने से वह इतने घबराते क्यों हैं? ज़ाहिर है कि उन पर से जनता का विश्वास धीरे धीरे उठता जा रहा है. वह जनता से इस लिये डरते हैं कि जनता से जो वायदे उन्होंने किये थे सभी झूटे साबित हो चुके हैं. ऐसी सरकार का भविष्य क्या होगा जिस पर से जनता का विश्वास दिनों दिन उठता जा रहा हो ?

टंडन जी के पूरे भाषन में गांधी जी का नाम कुल एक या दो बार आया है, वह भी घरेलू उद्योग धंधों के सम्बंध में. यह भी किसी सामाजिक सचाई का नतीजा है. मगर इस तरह गांधी जी को भूलना ख़तरे से ख़ाली नहीं. जनता या तो गांधी जी के रास्ते पर चलेगी या लेनन के. बीच का रास्ता वह चुन नहीं सकती. गांधी जी के जन्म दिन के इस मौक़े पर अगर हमारे देश सेवक साथी और शासक इसे अच्छी तरह समझ लें तो उनका भी भला हो और देश का भी.

کا سہارا لیتے ہیں ۔ یہ اندھی نیتی خود اُن کی قبریں کھود رہی ہے، یہ کوئی بھی صاف صاف دیکھ سکتا ہے ۔

ناسک کانگریس میں ان گمبھیر مسئلوں پر غور نہیں کیا گیا ۔ دیش ویاپی اسنتوش، پریشانی اور بدحالی کی اور سے اپنی آنکھیں موند کر ہمارے نیتاؤں نے بتا دیا کہ وہ ہماری سماجک زندگی کی سچائیوں سے کتنے دور جاچکے ہیں ۔ مہاتما گاندھی کا بار بار نام لینے پر بھی وہ انکے اصولوں پر چلنے کا کوئی بھی نشچے نہیں کر سکے ۔ ہمارے منتری کانگریس کے اجلاس میں اپنے باڈی گارڈوں، خفیہ والوں اور سینا کے بغیر شامل نہ ہو سکے ۔ جنتا سے وہ اتنا ڈرنے لگے ہیں کہ وہ اپنی حفاظت کا انتظام کئے بنا جنتا کے بیچ میں جا نہیں سکتے ۔ جس جنتا کا سیوک ہونے کا وہ دم بھرتے ہیں اُس کے بیچ جانے سے وہ اتنے گھبراتے کیوں ہیں ؟ ظاہر ہے کہ اُن پر سے جنتا کا وشواس دھیرے دھیرے اُٹھتا جا رہا ہے ۔ وہ جنتا سے اسلئے ڈرتے ہیں کہ جنتا سے جو وعدے اُنھوں نے کئے تھے سبھی جھوٹے ثابت ہو چکے ہیں ۔ ایسی سرکار کا بھوشیہ کیا ہوگا جس پر سے جنتا کا وشواس دنوں دن اُٹھتا جارہا ہو ؟

ٹنڈن جی کے پورے بھاشن میں گاندھی جی کا نام کل ایک یا دو بار آیا ہے، وہ بھی گھریلو اُدیوگ دھندوں کے سمبندھ میں ۔ یہ بھی کسی سماجک سچائی کا نتیجہ ہے ۔ مگر اسطرح گاندھی جی کو بھولنا خطرے سے خالی نہیں ۔ جنتا یا تو گاندھی جی کے راستے پر چلے گی یا لینن کے ۔ بیچ کا راستہ وہ چن نہیں سکتی ۔ گاندھی جی کے جنم دن کے اس موقع پر اگر ہمارے دیش سیوک ساتھی اور شاسک اسے اچھی طرح سمجھ لیں تو اُن کا بھی بھلا ہو اور دیش کا بھی ۔

बापू के अनेक रूप

(भाई सैयद महमूद अहमद 'हुनर')

अमरीका के मशहूर पत्रकार मिस्टर लुई फ़िशर को महात्मा गांधी के साथ एक हफ्ता रहने का सौभाग्य मिला और उन्होंने गांधी जी पर एक किताब लिख डाली. मैं सोचता हूँ कि वह अगर एक दिन भी रहते और उन्हें सुबह चार बजे से रात के नौ दस बजे तक गांधी जी को देखने का मौक़ा मिलता तो भी वह एक किताब लिख सकते थे. इसलिये नहीं कि मिस्टर लुई फ़िशर एक मशहूर अखबार नवीस और लेखक हैं और जिस तरह उनका दिमाग़ एक छोटी सी घटना को अपनी कल्पना की मदद से बहुत बड़ी बना सकता है, उसी तरह उनके क़लम में भी इतना ज़ोर है कि वह छोटी सी बात को बड़ी बात बनाकर लिख सकते हैं, बल्कि इसलिये कि गांधी जी का व्यक्तित्व, उनकी शख्सियत इतनी महान थी, उनके काम करने की ताक़त इतनी ज्यादा थी और उनके काम करने का तरीक़ा इतना बाक़ायदा था कि एक ही दिन में उनके चरित्र (किरदार) की सारी खूबियाँ देखी जा सकती थीं.

गांधी जी एक व्यक्ति थे, लेकिन उनकी शख्सियत एक संस्था थी. उन्हें अपनी निजी ज़रूरतों, अपने निजी कामों का खयाल तो हर वक़्त रहता ही था, लेकिन वह किसी वक़्त भी यह नहीं भूलते थे कि उनके देश को इस वक़्त किस बात की ज़रूरत है

باپو کے انیک روپ

(بھائي سید محمود احمد 'هنر')

امریکه کے مشهور پتر کار مسٹر لوئي فشر کو مهاتما گاندھی کے ساتھ ایک هفته رهنے کا سوبھاگیه ملا اور انهوں نے گاندھی جي پر ایک کتاب لکھ ڈالی. میں سوچتا هوں که وہ اگر ایک دن بھی رهتے اور انهیں صبح چار بجے سے رات کے نو دس بجے تک گاندھی جي کو دیکھنے کا موقع ملتا تو بھی وہ ایک کتاب لکھ سکتے تھے. اس لئے نهیں که مسٹر لوئی فشر ایک مشهور اخبار نویس اور لیکھک هیں اور جسطرح اُن کا دماغ ایک چھوٹی سي گھٹنا کو اپني کلپنا کی مدد سے بهت بڑی بنا سکتا هے، اُسی طرح انکے قلم میں بھی اتنا زور هے که وہ چھوٹي سی بات کو بڑی بات بناکر لکھ سکتے هیں، بلکه اس لئے که گاندھی جی کا ویکتتو، اُن کي شخصیت اتنی مهان تھی، انکے کام کرنے کی طاقت اِتنی زیادہ تھی اور اُنکے کام کرنے کا طریقه اتنا باقاعدہ تھا که ایک هی دن میں انکے چرتر (کردار) کی ساري خوبیاں دیکھی جا سکتی تھیں.

گاندھی جی ایک ویکتی تھے لیکن اُن کی شخصیت ایک سنستھا تھی. انهیں اپنی نجی ضرورتوں، اپنے نجی کاموں کا خیال تو هر وقت رهتا هی تھا، لیکن وہ کسی وقت بھی یه نهیں بھولتے تھے که اُن کے دیش کو اس وقت کس بات کي ضرورت هے

और दुनिया में क्या हो रहा है. अपने मुल्क की इसी ज़रूरत का ख़याल गांधी जी को दक्खिन अफ़रीक़ा से हिन्दुस्तान ले आया और यहाँ आकर भी उन्होंने दक्खिन अफ़रीक़ा को किसी भी समय अपने मन से दूर नहीं किया.

एक मामूली सी सूरत शक्ल, कमज़ोर से जिस्म और देखने में बिलकुल मामूली इंसान ने अपनी लगन और बेग़रज़ सेवा के बल पर दुनिया में कितना मान, कितनी इज़्ज़त, कितना नाम हासिल किया, यह सचमुच रहती दुनिया तक लोगों को एक चमत्कार (मोजज़ा) ही मालूम होगा. हम ख़ुशक़िस्मत हैं कि हमने अपने ज़माने के सब से बड़े आदमी को देखा है, लेकिन अफ़सोस कि हमें अपने ही देश के एक ऐसे पागल इंसान को भी देखना पड़ा जिसने भारत माता की ग़ुलामी की बेड़ियाँ काटने वाले, मानवता के सब से बड़े हितकारी और इंसानियत के सब से बड़े हमदर्द के सीने को गोलियों का निशाना बनाकर मानवता के उस चिराग़ को हमेशा के लिये बुझा दिया जिसकी रोशनी से न सिर्फ़ हिन्दुस्तान, सारा ऐशिया बल्कि सारा संसार रोशन था. गांधी जी के मरने पर आचार्य कृपलानी ने कहा था कि हत्यारे ने गांधी जी के शरीर पर ही गोली नहीं चलाई बल्कि उसने यह गोलियाँ हिन्दुस्तान की रूह पर चलाई हैं. यह सच है कि हिन्द को इस वक़्त गांधी जी की ख़ास ज़रूरत थी और गांधी जी की मौत से हिन्दुस्तान ने अपने को ज़्यादा यतीम समझा वरना शायद आचार्य जी कहते कि हत्यारे ने दुनिया की आत्मा पर गोली चलाई है और यह शब्द बिलकुल सही भी होते.

اور دنیا میں کیا ہو رہا ہے. اپنے ملک کی اسی ضرورت کا خیال گاندھی جی کو دکھن افریقہ سے ھندستان لے آیا اور یہاں آکر بھی انہوں نے دکھن افریقہ کو کسی بھی سمے اپنے من سے دور نہیں کیا.

ایک معمولی سی صورت شکل، کمزور سے جسم اور دیکھنے میں بالکل معمولی انسان نے اپنی لگن اور بےغرض سیوا کے بل پر دنیا میں کتنا مان، کتنی عزت، کتنا نام حاصل کیا، یہ سچ مچ رہتی دنیا تک لوگوں کو ایک چمتکار (معجزہ) ہی معلوم ہوگا. ہم خوش قسمت ہیں کہ ہم نے اپنے زمانے کے سب سے بڑے آدمی کو دیکھا ہے، لیکن افسوس کہ ہمیں اپنے ہی دیش کے ایک ایسے پاگل انسان کو بھی دیکھنا پڑا جسنے بھارت ماتا کی غلامی کی بیڑیاں کاٹنے والے، مانوتا کے سب سے بڑے ہتکاری اور انسانیت کے سب سے بڑے ہمدرد کے سینے کو گولیوں کا نشانہ بناکر مانوتا کے اس چراغ کو ہمیشہ کے لئے بجھا دیا جس کی روشنی سے نہ صرف ھندستان، سارا ایشیا بلکہ سارا سنسار روشن تھا. گاندھی جی کے مرنے پر آچاریہ کرپلانی نے کہا تھا کہ ہتیارے نے گاندھی جی کے شریر پر ہی گولی نہیں چلائی بلکہ اس نے یہ گولیاں ھندستان کی روح پر چلائی ہیں. یہ سچ ہے کہ ہند کو اس وقت گاندھی جی کی خاص ضرورت تھی اور گاندھی جی کی موت سے ھندستان نے اپنے کو زیادہ یتیم سمجھا ورنہ شاید آچاریہ جی کہتے کہ ہتیارے نے دنیا کی آتما پر گولی چلائی ہے اور یہ شبد بالکل صحیح بھی ہوتے.

एक नेता के नाते गांधी जी पर जितनी ज़िम्मेदारियाँ थीं और उन्हें जितना काम करना पड़ता था, कहा नहीं जा सकता कि अगर वह हिन्द के शासक—क़ानूनी हुक्मराँ—होते तो भी उन्हें उतना ही काम करना पड़ता या नहीं. क्योंकि अगर वह हिन्द सरकार के सबसे ऊँचे हाकिम होते तो हम आसानी से सोच सकते हैं कि उनके मातहत काम करने वालों का कितना बड़ा अमला होता. हर महकमे के अलग अलग सेक्रेटरी होते और सेक्रेटरियों के सेक्रेटरी अलग. ज़बान हिलाने की देर होती और ऊपर से नीचे तक हुक्म की तामील हो जाती. लेकिन गांधी जी सरकार के लिये बिलकुल ग़ैर सरकारी आदमी थे और कांगरेस के लिये ग़ैर कांगरेसी. फिर भी कांगरेस हो या कांगरेसी सरकार, सूबा हो या रियासत, हर जगह का मामला गांधी जी के पास पहुँच जाता और हमने देखा है कि किस तरह गांधी जी की उंगलियाँ लगते ही हर वह कठिन से कठिन गुत्थी सुलझ गई जिसको सुलझाने के लिये मज़बूत से मज़बूत पंजे हार गये थे.

गांधी जी ने बरतानी साम्राज की ग़ुलामी से हिन्द को आज़ाद करने का जो अहद किया था वह उनकी ज़िन्दगी में ही पूरा हो गया और अगर मुल्क उनके कहने पर चलता तो इसमें शक नहीं कि गांधी जी हिन्द में वह राम राज भी क़ायम कर देते जिसका वह सपना देखा करते थे. लेकिन क़ुदरत को यही मन्ज़ूर था कि देश फ़िरक़ा बन्दी की भीषन ज्वाला में भस्म होने से बच जाये और गांधी जी ने अपने ख़ून के छींटों से उसे बचा लिया.

जब तक मुल्क को गांधी जी की ज़िन्दगी की ज़रूरत थी, वह

ایک نیتا کے ناتے گاندھی جی پر جتنی ذمہ داریاں تھیں اور انہیں جتنا کام کرنا پڑتا تھا' کہا نہیں جا سکتا کہ اگر وہ ہند کے شاسک—قانونی حکمراں—ہوتے تو بھی انہیں اتنا ہی کام کرنا پڑتا یا نہیں. کیونکہ اگر وہ ہند سرکار کے سب سے اونچے حاکم ہوتے تو ہم آسانی سے سوچ سکتے ہیں کہ انکے ماتحت کام کرنے والوں کا کتنا بڑا عملہ ہوتا. ہر محکمے کے الگ الگ سکریٹری ہوتے' اور سکریٹریوں کے سکریٹری الگ. زبان ہلانے کی دیر ہوتی اور اوپر سے نیچے تک حکم کی تعمیل ہوجاتی. لیکن گاندھی جی سرکار کے لئے بالکل غیر سرکاری آدمی تھے اور کانگریس کے لئے غیر کانگریسی. پھر بھی کانگریس ہو یا کانگریسی سرکار' صوبہ ہو یا ریاست' ہر جگہ کا معاملہ گاندھی جی کے پاس پہنچ جاتا اور ہم نے دیکھا ہے کہ کس طرح گاندھی جی کی انگلیاں لگتے ہی ہر وہ کٹھن سے کٹھن گتھی سلجھ گئی جسکو سلجھانے کے لئے مضبوط سے مضبوط پنجے ہار گئے تھے.

گاندھی جی نے برطانی سامراج کی غلامی سے ہند کو آزاد کرنے کا جو عہد کیا تھا وہ انکی زندگی میں ہی پورا ہوگیا اور اگر ملک انکے کہنے پر چلتا تو اس میں شک نہیں کہ گاندھی جی ہند میں وہ رام راج بھی قائم کر دیتے جسکا وہ سپنا دیکھا کرتے تھے. لیکن قدرت کو یہی منظور تھا کہ دیش فرقہ بندی کی بھیشن جوالا میں بھسم ہونے سے بچ جائے اور گاندھی جی نے اپنے خون کے چھینٹوں سے اسے بچا لیا.

جب تک ملک کو گاندھی جی کی زندگی کی ضرورت تھی' وہ

ज़िन्दा रहे और जब गांधी जी ने यह देखा कि मुल्क उनके प्रानों का बलिदान चाहता है, उन्होंने मुल्क के फ़ायदे के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी. वह देश के लिये जिये और देश ही के लिये मौत का भी स्वागत किया.

मुझे गांधी जी की नोआखाली की अमर यात्रा के वक़्त उनकी सेवा में रहने का सौभाग्य मिला है. मैंने गांधी जी को नोआखाली में उन मुसलमानों के बीच भी देखा है जो मुस्लिम लीग के बहकावे में आकर उनको मुसलमानों का दुशमन समझते थे और फिर उनको बिहार के हिन्दुओं के दरम्यान भी देखा जो उन्हें देवता समझते थे. नोआखाली का बदला लेने के जोश में बिहार के हिन्दुओं ने जो पागल पन दिखलाया उसके कारन नोआखाली में गांधी जी के काम में बहुत रुकावट पड़ गई थी, वरना इसमें ज़रा भी शक नहीं कि जिस तरह गांधी जी ने कलकत्ते के फ़िरक़ावाराना दंगों को शान्त करके एक 'चमत्कार' दिखाया था, उसी तरह नोआखाली में भी वह बहुत जल्द कामयाब हो गये होते.

मैं यहाँ नोआखाली और बिहार के दंगों की तफ़सील नहीं लिखना चाहता बल्कि मैं तो यह दिखलाना चाहता हूँ कि एक ख़ास मक़सद से एक ख़ास जगह जाकर और एक ख़ास काम करते हुए भी किस तरह गांधी जी की रोज़ाना ज़िन्दगी में कोई फ़रक़ न आता था और किस तरह वह अपने रोज़मर्रा के सारे काम काज करते रहते थे. मैंने ऊपर कहा है कि गांधी जी के साथ एक दिन रहकर भी उनके किरदार की सारी ख़ूबियाँ और उनके चरित्र के अलग अलग रूप देखे जा सकते थे. यों तो नोआखाली

زندہ رہے اور جب گاندھی جی نے یہ دیکھا کہ ملک انکے پرانوں کا بلیدان چاہتا ہے' اُنہوں نے ملک کے فائدے کے لئے اپنی جان قربان کردی . وہ دیش کے لئے جئے اور دیش ہی کے لئے موت کا بھی سواگت کیا .

مجھے گاندھی جی کی نواکھالی کی امر یاترا کے وقت انکی سیوا میں رہنے کا سوبھاگیہ ملا ہے . میں نے گاندھی جی کو نواکھالی میں اُن مسلمانوں کے بیچ بھی دیکھا ہے جو مسلم لیگ کے بہکاوے میں آکر اُن کو مسلمانوں کا دشمن سمجھتے تھے اور پھر اُن کو بہار کے ہندوؤں کے درمیان بھی دیکھا جو اُنھیں دیوتا سمجھتے تھے . نواکھالی کا بدلہ لینے کے جوش میں بہار کے ہندوؤں نے جو پاگل پن دکھلایا اُس کے کارن نواکھالی میں گاندھی جی کے کام میں بہت رکاوٹ پڑگئی تھی ' ورنہ اِس میں ذرا بھی شک نہیں کہ جس طرح گاندھی جی نے کلکتے کے فرقہ وارانہ دنگوں کو شانت کرکے ایک 'چمتکار' دکھایا تھا' اُسی طرح نواکھالی میں بھی وہ بہت جلد کامیاب ہوگئے ہوتے .

میں یہاں نواکھالی اور بہار کے دنگوں کی تفصیل نہیں لکھنا چاہتا بلکہ میں تو یہ دکھلانا چاہتا ہوں کہ ایک خاص مقصد سے ایک خاص جگہ جاکر اور ایک خاص کام کرتے ہوئے بھی کس طرح گاندھی جی کی روزانہ زندگی میں کوئی فرق نہ آتا تھا اور کس طرح وہ اپنے روزمرہ کے سارے کام کاج کرتے رہتے تھے . میں نے اوپر کہا ہے کہ گاندھی جی کے ساتھ ایک دن رہ کر بھی انکے کردار کی ساری خوبیاں اور انکے چرتر کے الگ الگ روپ دیکھے جا سکتے تھے . یوں تو نواکھالی

और बिहार में और फिर देहली में भी गांधी जी का खास काम मुसीबत में पड़े हुए लोगों की फरियाद सुनना, उन्हें ढारस देना, उनकी फरियाद सरकार तक पहुँचाना और बहुगिनत लोगों को जुल्म से बाज़ रहने और कम गिनत लोगों की तरफ उनके जो फर्ज़ हैं उन्हें याद दिलाना था. लेकिन सुबह चार बजे से उठकर रात को सोते वक़्त तक गांधी जी अपने सब काम उसी पाबन्दी के साथ करते थे जैसे आश्रम में या नई देहली की भंगी बस्ती में किया करते थे जो आखिरी वक़्त में एक तरह का आश्रम ही सा बन गई थी.

इन सत्तरह अठारह घन्टों में गांधी जी विद्यार्थी भी बनते थे और मास्टर भी. वह एक अखबार नवीस की शक्ल में भी दिखाई देते थे और एक डाक्टर के रूप में भी. दूसरों की फरियाद सुनते वक़्त वह एक हमदर्द हाकिम से दिखलाई देते थे और सरकारी अफसरों के सामने दूसरों की फरियाद सुनाते वक़्त वह खुद भी फरियादी मालूम होते थे. जब वह बूढ़े मर्द औरतों के आंसू पोंछते होते तो उनके दोस्त नज़र आते और जब उनको आंसू बहाने पर मजबूर करने वालों से बातें करते तो उपदेशक (नासेह) मालूम होते थे. जब गांधी जी चिट्ठियाँ लिखवाते होते तो एक अफसर मालूम होते लेकिन जब दूसरों के लिखे हुए में गलतियों का सुधार करते तो एक ऐसे आलोचक या नक़्क़ाद नज़र आते जिसकी नज़र से ज़रा सी भी गलती नहीं छूट सकती. जब वह बच्चों से हँसते बोलते तो यह नहीं मालूम होता था कि उन्हें कोई चिन्ता भी है और जब वह जले हुए मकान, उजड़े हुए गांव, लाशों से पटे हुए कुएँ और बेघर बेदर स्त्री पुरुषों को देखते तो उनके चेहरे की गम्भीरता देखकर यह सोचना भी

اور بہار میں اور پھر دھلی میں بھی گاندھی جی کا خاص کام مصیبت میں پڑے ہوئے لوگوں کی فریاد سننا، انھیں ڈھارس دینا، انکی فریاد سرکار تک پہنچانا اور بہوگنت لوگوں کو ظلم سے باز رہنے اور کم گنت لوگوں کی طرف انکے جو فرض ہیں انھیں یاد دلانا تھا. لیکن صبح چار بجے سے اٹھکر رات کو سوتے وقت تک گاندھی جی اپنے سب کام اسی پابندی کے ساتھ کرتے تھے جیسے آشرم میں یا نئی دھلی کی بھنگی بستی میں کیا کرتے تھے جو آخری وقت میں ایک طرح کا آشرم ھی سا بن گئی تھی.

ان سترہ اٹھارہ گھنٹوں میں گاندھی جی ودیارتھی بھی بنتے تھے اور ماسٹر بھی. وہ ایک اخبار نویس کی شکل میں بھی دکھائی دیتے تھے اور ایک ڈاکٹر کے روپ میں بھی. دوسروں کی فریاد سنتے وقت وہ ایک ھمدرد حاکم سے دکھلائی دیتے تھے اور سرکاری افسروں کے سامنے دوسروں کی فریاد سناتے وقت وہ خود بھی فریادی معلوم ہوتے تھے. جب وہ بوڑھے مرد عورتوں کے آنسو پونچھتے ہوتے تو انکے دوست نظر آتے اور جب ان کو آنسو بہانے پر مجبور کرنے والوں سے باتیں کرتے تو اُپدیشک (ناصح) معلوم ہوتے تھے. جب گاندھی جی چٹھیاں لکھواتے ہوتے تو ایک افسر معلوم ہوتے لیکن جب دوسروں کے لکھے ہوئے میں غلطیوں کا سدھار کرتے تو ایک ایسے آلوچک یا نقاد نظر آتے جسکی نظر سے ذراسی بھی غلطی نہیں چھوٹ سکتی. جب وہ بچوں سے ھنستے بولتے تو یہ نہیں معلوم ہوتا تھا کہ انھیں کوئی چنتا بھی ہے اور جب وہ جلے ہوئے مکان، اجڑے ہوئے گاؤں، لاشوں سے پٹے ہوئے کنوئیں اور بےگھر بےدر استری پرشوں کو دیکھتے تو انکے چہرے کی گمبھیرتا دیکھکر یہ سوچنا بھی

मुश्किल हो जाता था कि इस चिन्ता में डूबे चेहरे पर कभी मुस्कराहट भी आसकती है. सुबह शाम टहलते वक़्त उन्हें देखकर या उनके साथ चलते हुए जवानों को उनकी चाल में नौजवानों से भी ज़्यादा चुस्ती नज़र आती थी और जब प्रार्थना के समय वह आँख बन्द करके शान्त भाव से बैठे होते तो ऐसा मालूम होता था जैसे कोई तपस्वी बैठा न जाने कब से तपस्या कर रहा है और न जाने कब तक ऐसे ही बैठा रहेगा. वह अक्सर रुपये पैसे का हिसाब किताब देखते और अगर उसमें कोई ग़लती होती और वह एक होशियार मुनीम की तरह उस ग़लती को बताते थे तब मालूम होता था कि वह हिसाब विद्या के कितने माहिर हैं. ठीक वक़्त पर नहाना, खाना, अपने क़ुदरती इलाज के मुताबिक़ पेट और आँखों पर गीली मिट्टी रखवाना, सूत कातना यह उनके रोज़ के काम थे.

यह थे गांधी जी के कुछ रूप. लेकिन उनके साथ रहने वाले गांधी जी को इन सब रूपों में देखकर भी उनको सिर्फ़ एक रूप में देखते थे और वह रूप था 'बापू' का, 'पिता' का रूप. और यह रूप इतना व्यापक था, इतना हमागीर था और गांधी जी पर इतना सजता था कि उनके साथ रहने वालों को वह हर रूप में 'बापू' ही दिखाई देते थे. निर्मल दा (प्रोफ़ेसर निर्मल कुमार बोस) जब उन्हें बंगला पढ़ाते थे तो गुरू होते हुए भी वह अपने चेले को बापू ही समझते थे और मनु बहन जब गीता का पाठ लेती थीं तो वह भी अपने पिता के चाचा—दादा को बापू ही समझती थीं. गांधी जी जब किसी की भूल पर उसे डाँटते थे तो उनकी डांट भी एक बाप की डांट होती थी और जब वह किसी बात पर ख़ुश होते थे तो उनकी आंखों

مشکل ہو جاتا تھا کہ اِس چنتا میں ڈوبے چہرے پر کبھی مسکراہٹ بھی آسکتی ہے. صبح شام ٹہلتے وقت اُنھیں دیکھ کر یا اُن کے ساتھ چلتے ہوئے جوانوں کو اُن کی چال میں نوجوانوں سے بھی زیادہ چستی نظر آتی تھی اور جب پرارتھنا کے سمے وہ آنکھ بند کرکے شانت بھاؤ سے بیٹھے ہوتے تو ایسا معلوم ہوتا تھا جیسے کوئی تپسوی بیٹھا نہ جانے کب سے تپسیا کر رہا ہے اور نہ جانے کب تک ایسے ہی بیٹھا رہے گا. وہ اکثر روپئے پیسے کا حساب کتاب دیکھتے اور اگر اس میں کوئی غلطی ہوتی اور وہ ایک ہوشیار منیم کی طرح اُس غلطی کو بتاتے تھے تب معلوم ہوتا تھا کہ وہ حساب ودیا کے کتنے ماہر ہیں. ٹھیک وقت پر نہانا، کھانا، اپنے قدرتی علاج کے مطابق پیٹ اور آنکھوں پر گیلی مٹی رکھوانا، سوت کا تنا یہ انکے روز کے کام تھے.

یہ تھے گاندھی جی کے کچھ روپ. لیکن اُنکے ساتھ رہنے والے گاندھی جی کو ان سب روپوں میں دیکھ کر بھی ان کو صرف ایک روپ میں دیکھتے تھے اور وہ روپ تھا 'باپو' کا 'پتا' کا روپ. اور یہ روپ اِتنا ویاپک تھا، اتنا ہمہ گیر تھا اور گاندھی جی پر اتنا سجتا تھا کہ اُن کے ساتھ رہنے والوں کو وہ ہر روپ میں 'باپو' ہی دکھائی دیتے تھے. نرمل دا (پروفیسر نرمل کمار بوس) جب انھیں بنگلہ پڑھاتے تھے تو گرو ہوتے ہوئے بھی وہ اپنے چیلے کو باپو ہی سمجھتے تھے اور منو بہن جب گیتا کا پاٹھ لیتی تھیں تو وہ بھی اپنے پتا کے چاچا—دادا کو باپو ہی سمجھتی تھیں. گاندھی جی جب کسی کی بھول پر اسے ڈانٹتے تھے تو انکی ڈانٹ بھی ایک باپ کی ڈانٹ ہوتی تھی اور جب وہ کسی بات پر خوش ہوتے تھے تو انکی آنکھوں

से वही प्यार और मुहब्बत झलकती थी जो एक बाप की आँखों में होती है.

गांधी जी से जब तक मिलने और बात करने का मौका न मिला था, मैं भी उनके करोड़ों भक्तों की तरह अपने मन में उनकी एक तस्वीर बनाये हुए था. यह ज़रूर है कि मेरी कल्पना (तख़ैयुल) में गांधी जी सिर्फ़ 'महात्मा' ही नहीं थे. 'हरिजन सेवक' में काम करते वक़्त मैंने गांधी जी के अपने हाथ से लिखे हुए कितने ही मज़मून और मज़मूनों में उनके संशोधन (तरमीम) देखे थे और गांधी जी के पत्रकार रूप से किसी हद तक वाक़िफ़ हो चुका था पर गांधी जी के 'बापू रूप' से तब भी मैं अपरिचित था. पर गांधी जी की सेवा में पहुँचते ही और उनसे पहली मुलाक़ात होते ही मैं महसूस करने लगा जैसे मैं बरसों से उनके साथ हूँ और गांधी जी मेरे भी वैसे ही 'बापू' हैं जैसे दूसरे उनके साथ रहने वालों के और बापू मेरे लिये किसी तरह भी मेरे अपने मां बाप से कम नहीं हैं.

"मेरी मौत या तो फांसी पर चढ़ने से होगी या गोली लगने से. और वही सचमुच एक बहादुर की मौत होगी, बिस्तर पर पड़े पड़े उपवास करने से होने वाली मौत नहीं."

—महात्मा गांधी

سے وہی پیار اور محبت جھلکتی تھی جو ایک باپ کی آنکھوں میں ہوتی ہے .

گاندھی جی سے جب تک ملنے اور بات کرنے کا موقع نہ ملا تھا ، میں بھی اُن کے کروڑوں بھکتوں کی طرح اپنے من میں اُن کی ایک تصویر بنائے ہوئے تھا . یہ ضرور ہے کہ میری کلپنا (تخیل) میں گاندھی جی صرف 'مہاتما' ہی نہیں تھے . 'ہریجن سیوک' میں کام کرتے وقت میں نے گاندھی جی کے اپنے ہاتھ سے لکھے ہوئے کتنے ہی مضمون اور مضمونوں میں اُنکے سنشودھن (ترمیم) دیکھے تھے اور گاندھی جی کے پترکار روپ سے کسی حد تک واقف ہو چکا تھا پر گاندھی جی کے 'باپو روپ' سے تب بھی میں اپریچت تھا . لیکن گاندھی جی کی سیوا میں پہنچتے ہی اور اُن سے پہلی ملاقات ہوتے ہی میں محسوس کرنے لگا جیسے میں برسوں سے اُن کے ساتھ ہوں اور گاندھی جی میرے بھی ویسے ہی 'باپو' ہیں جیسے دوسرے اُن کے ساتھ رہنے والوں کے اور باپو میرے لئے کسی طرح بھی میرے اپنے ماں باپ سے کم نہیں ہیں .

"میری موت یا تو پھانسی پر چڑھنے سے ہوگی یا گولی لگنے سے . اور وہی سچ مچ ایک بہادر کی موت ہوگی ، بستر پر پڑے پڑے اُپواس کرنے سے ہونے والی موت نہیں ."

—مہاتما گاندھی

ऐगनेस इंस्मेडले

हिन्द और चीन की एक अमरीकी दोस्त

(डाक्टर महादेव साहा, पी.एच० डी०, बुडापेस्ट.)

हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में थोड़े बहुत विदेशी लोग शुरू से हिस्सा लेते रहे हैं, कोई विधानी ढंग से और कोई इनक़लाबी ढंग से. लगन, क़ुरबानी, ईमानदारी और बहादुरी सभी निगाहों से इस्मेडले का नाम इस तरह के विदेशियों की पहली पांत में आता है. पिछले तीस बरस में इस्मेडले ने तन, मन, धन से हिंद और चीन दोनों की जनता के लिये जो कुछ किया है वह आज़ादी के लिये लड़ने वालों को सदा बढ़ावा देता रहेगा.

इस्मेडले एक खान में काम करने वाले अमरीकी मज़दूर की बेटी थी. उसका जन्म आज से ५७ साल पहले हुआ था. पिता के और भी कई बच्चे थे. पिता हमेशा क़र्ज़ के बोझ से दबा रहता था. इस्मेडले की पढ़ाई बहुत मामूली हुई थी. वह घर के कामकाज में पूरी तरह हाथ बँटाती थी और मेहनत मज़दूरी करके भी घर वालों की मदद करती रही. उसके बचपन में ही अमरीका में इनक़लाबी मज़दूर आन्दोलन का जन्म हुआ. इस्मेडले उसके असर से न बच सकी. बचपन से ही वह अमरीका में वहां के हबशियों और प्रवासी हिन्दुस्तानियों को देखती आ रही थी.

अमरीका में जब प्रवासी हिन्दुस्तानियों ने ग़दर पार्टी बनाई

ایگنس ایسمیڈلے

ہند اور چین کی ایک امریکی دوست

(ڈاکٹر مہادیو ساہا' پی ایچ . ڈی.' بوڈاپیسٹ .)

ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں تھوڑے بہت ودیشی لوگ شروع سے حصہ لیتے رہے ہیں' کوئی ودھانی ڈھنگ سے اور کوئی انقلابی ڈھنگ سے . لگن' قربانی' ایمانداری اور بہادری سبھی نگاہوں سے ایسمیڈلے کا نام اسطرح کے ودیشیوں کی پہلی پانت میں آتا ہے . پچھلے تیس برس میں ایسمیڈلے نے تن' من' دھن سے ہند اور چین دونوں کی جنتا کے لئے جو کچھ کیا ہے وہ آزادی کے لئے لڑنے والوں کو سدا بڑھاوا دیتا رہیگا .

ایسمیڈلے ایک کھان میں کام کرنے والے امریکی مزدور کی بیٹی تھی . اسکا جنم آج سے ۵۷ سال پہلے ہوا تھا . پتا کے اور بھی کئی بچے تھے . پتا ہمیشہ قرض کے بوجھ سے دبا رہتا تھا . ایسمیڈلے کی پڑھائی بہت معمولی ہوئی تھی . وہ گھر کے کام کاج میں پوری طرح ہاتھ بٹاتی تھی اور محنت مزدوری کرکے بھی گھر والوں کی مدد کرتی رہی . اس کے بچپن میں ہی امریکہ میں انقلابی مزدور آندولن کا جنم ہوا . ایسمیڈلے اسکے اثر سے نہ بچ سکی . بچپن سے ہی وہ امریکہ میں وہاں کے حبشیوں اور پرواسی ہندستانیوں کو دیکھتی آرہی تھی .

امریکہ میں جب پرواسی ہندستانیوں نے غدر پارٹی بنائی

और पहली बड़ी जंग के बाद उनमें से बहुत सों पर अंगरेज सरकार के इशारे पर अमरीकी साम्राजवादियों ने सैन फ़रान्सिस्को कांसपिरेसी केस नाम से मुक़द्दमा चलाया तो इस्मेडले ने उनकी पैरवी के लिये लाखों रुपये चंदा जमा किया और बहुत सों को छुड़ा लिया. इस्मेडले के इन कामों से अमरीकी सरकार तिलमिला उठी. अंगरेज सरकार ने आग में तेल डाला. इस्मेडले पकड़ी गई और साल भर से ऊपर उसे हिन्दुस्तान के लिये जेल काटनी पड़ी.

सन् १९२० में इस्मेडले ने अमरीका में 'फरेंड्स आफ दी फ्रीडम आफ इंडिया' यानी 'हिन्दुस्तान की आज़ादी के दोस्त' नाम की एक संस्था क़ायम की और उसका आन्दोलन चलाया. उसने सैकड़ों अमरीकी लड़कियों को जमा किया. उन्हें साड़ियाँ पहना पहना कर उनके आगे पीछे "हिन्दुस्तान में अंगरेजों के जुल्म" "हिन्दुस्तान की आज़ादी की मांग" जैसे बड़े बड़े पोस्टर लगाये और उनका जलूस निकाला. इस आन्दोलन से अमरीका में हिन्दुस्तान के सवालों की तरफ़ लोगों का ध्यान खिंचा और वहां हिन्दुस्तान की आज़ादी के कितने ही तरफ़दार पैदा होगये.

इसके बाद इस्मेडले को हम बरलिन (जरमनी) में देखते हैं. हम ऊपर कह चुके हैं कि उसकी बाक़ायदा पढ़ाई अधिक नहीं हुई थी. वह बरलिन यूनिवरसिटी में आगे पढ़ना चाहती थी पर यह अरमान पूरा न हो सका. इसके बाद स्वामी विवेकानन्द के छोटे भाई डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त ने उसे काफ़ी मदद पहुंचाई और उसकी ऊंची तालीम का कुछ प्रबंध किया. उन्होंने ही सरोजिनी नायडू के बड़े भाई मशहूर क्रांतिकारी स्वर्गबासी वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय से

اور پہلی بڑی جنگ کے بعد اُن میں سے بہت سوں پر انگریز سرکار کے اشارے پر امریکی سامراجوادیوں نے سین فرانسسکو کانسپریسی کیس نام سے مقدمہ چلایا تو ایسمیڈلے نے انکی پیروی کیلئے لاکھوں روپیہ چندہ جمع کیا اور بہت سوں کو چھڑا لیا. ایسمیڈلے کے ان کاموں سے امریکی سرکار تلملا اُٹھی. انگریز سرکار نے آگ میں تیل ڈالا. ایسمیڈلے پکڑی گئی اور سال بھر سے اوپر اُسے ھندستان کے لئے جیل کاٹنی پڑی.

سن ۱۹۲۰ میں ایسمیڈلے نے امریکہ میں 'فرینڈس آف دی فریڈم آف انڈیا' یعنی 'ھندستان کی آزادی کے دوست' نام کی ایک سنستھا قایم کی اور اسکا آندولن چلایا. اس نے سیکڑوں امریکی لڑکیوں کو جمع کیا. انہیں ساڑیاں پہنا پہنا کر اُن کے آگے پیچھے "ھندستان میں انگریزوں کے ظلم" "ھندستان کی آزادی کی مانگ" جیسے بڑے بڑے پوسٹر لگائے اور اُنکا جلوس نکالا. اس آندولن سے امریکہ میں ھندستان کے سوالوں کی طرف لوگوں کا دھیان کھنچا اور وہاں ھندستان کی آزادی کے کتنے ھی طرفدار پیدا ھو گئے.

اِس کے بعد ایسمیڈلے کو ھم برلن (جرمنی) میں دیکھتے ھیں. ھم اوپر کہہ چکے ھیں کہ اس کی باقاعدہ پڑھائی ادھک نہیں ھوئی تھی. وہ برلن یونیورسٹی میں آگے پڑھنا چاھتی تھی پر یہ ارمان پورا نہ ھوسکا. اس کے بعد سوامی ویویکا نند کے چھوٹے بھائی ڈاکٹر بھوپیندرناتھ دت نے اسے کافی مدد پہونچائی اور اس کی اونچی تعلیم کا کچھ پربندھ کیا. انہوں نے ھی سروجنی نائیڈو کے بڑے بھائی مشہور کرانتکاری سورگ واسی ویریندر ناتھ چٹو پادھیائے سے

इस्मेडले की जान पहचान कराई. बाद में चट्टोपाध्याय से इस्मेडले की शादी हुई. इसके बाद इस्मेडले ने योरप के बहुत से देशों का सफ़र किया और उन देशों के कितने ही सवालों पर दरजनों सुन्दर और गहरे लेख लिखे. इस तरह वह क्रांतिकारी लेखक और पत्रकार के रूप में दुनिया के सामने आने लगी. हिन्दुस्तान की आजादी के समर्थन में उसकी लेखनी सदा काम करती रही.

१९२८ में उसकी पहली पुस्तक 'धरती की कन्या' (डाटर आफ़ दी अर्थ) निकली. यह उसकी अपनी 'आप बीती' थी. इसकी कई कापियां उसने मेरठ कान्सपिरेसी केस के अभियुक्तों को भेजी थीं.

इसके बाद एक जरमन अखबार की नुमाइंदा बनकर वह लेनिन ग्राद, मास्को और साइबेरिया के रास्ते चीन पहुँची. इसके बाद का उसका जीवन चीन की जनता और चीनी लाल सेना के साथ बीता. वह चीनी लाल सेना के साथ रहती और एक मामूली सिपाही का सा जीवन बिताती थी. उसके घोड़े पर लिखाई पढ़ाई और पत्रकारी के सामान के अलावा फ़र्स्ट एड का सामान भी बँधा रहता था. वह घायल और थके मांदे सिपाहियों को अपने घोड़े पर बैठा लेती थी. उनकी मरहम पट्टी करती थी. कभी कभी तो उसने अपने जूते और जाड़ों के कपड़े तक सिपाहियों को देकर उनकी मदद की. अपने अखबार को लेख भेजने के अलावा उसने 'चाइनाज रेड आरमी मार्चेज' (चीनकी लाल सेना बढ़ रही है), 'चाइना फाइट्स बैक' (चीन लड़ाई का जवाब दे रहा है) जैसी पुस्तकों में उस जमाने का जो इतिहास दिया उसमें उसने कम्युनिस्टों की बाबत कितनी ही

ایسمیڈلے کی جان پہچان کرائی . بعد میں چٹو پادھیائے سے ایسمیڈلے کی شادی ہوئی . اس کے بعد ایسمیڈلے نے یورپ کے بہت سے دیشوں کا سفر کیا اور ان دیشوں کے کتنے ہی سوالوں پر درجنوں سندر اور گہرے لیکھ لکھے . اسطرح وہ کرانتکاری لیکھک اور پترکار کے روپ میں دنیا کے سامنے آنے لگی. ھندستان کی آزادی کے سمرتھن میں اس کی لیکھنی سدا کام کرتی رہی .

۱۹۲۸ میں اس کی پہلی پستک 'دھرتی کی کنیا' (ڈاٹر آف دی ارتھ) نکلی . یہ اُس کی اپنی 'آپ بیتی' تھی . اس کی کئی کاپیاں اس نے میرٹھ کانسپریسی کیس کے ابھیوکتوں کو بھیجی تھیں .

اس کے بعد ایک جرمن اخبار کی نمائندہ بن کر وہ لینن گراد' ماسکو اور سائبیریا کے راستے چین پہونچی . اس کے بعد کا اسکا جیون چین کی جنتا اور چینی لال سینا کے ساتھ بیتا . وہ چینی لال سینا کے ساتھ رہتی اور ایک معمولی سپاھی کا سا جیون بتاتی تھی . اس کے گھوڑے پر لکھائی پڑھائی اور پترکاری کے سامان کے علاوہ فرسٹ ایڈ کا سامان بھی بندھا رہتا تھا . وہ گھائل اور تھکے ماندے سپاھیوں کو اپنے گھوڑے پر بیٹھا لیتی تھی . ان کی مرہم پٹی کرتی تھی . کبھی کبھی تو اس نے اپنے جوتے اور جاڑوں کے کپڑے تک سپاھیوں کو دے کر ان کی مدد کی . اپنے اخبار کو لیکھ بھیجنے کے علاوہ اُس نے 'چائناز ریڈ آرمی مارچز' (چین کی لال سینا بڑھ رہی ھے)، 'چائنا فائٹس بیک' (چین لڑائی کا جواب دے رہا ھے) جیسی پستکوں میں اُس زمانے کا جو اِتہاس دیا اسمیں اس نے کمیونسٹوں کی بابت کتنی ہی

बे बुनियाद और झूठी बातों का मुँह तोड़ जवाब दिया. इन किताबों की सारी आमदनी चीनी लाल सेना की मदद में जाती थी. बीच बीच में थोड़े दिनों के लिये वह अमरीका भी गई. पर अधिक दिनों के लिये चीनी लाल सेना से दूर रहना अब उसके लिये दूभर था. वह हिर फिर कर चीन लौट आती थी..

दूसरी बड़ी जंग के दिनों में वह बरसों चीन में रही और लड़ाई के बीच ही उसकी आखिरी किताब 'बैटिल हिम आफ़ चाइना' (चीन का जंगी गीत) छपी. अब उसकी उमर पचास से ऊपर हो चुकी थी. इतने बरसों के कठोर फौजी जीवन से उसकी तन्दुरुस्ती बहुत गिर गई थी. अब वह कुछ दिनों अमरीका में रह कर अपनी तन्दुरुस्ती सुधारना और कुछ पुस्तकें लिखना चाहती थी. लेकिन दूसरी बड़ी जंग के बाद चीन की आज़ादी की लड़ाई में एक नई लहर आते देख वह चीन लौटने के लिये बेचैन हो उठी. पर अभी तक उसकी तन्दुरुस्ती नहीं सुधरी थी. इधर अमरीकी सरकार ने भी उस पर तरह तरह के जुल्म शुरू कर दिये. बहुत कोशिशें करने पर भी उसे चीन लौटने की इजाज़त नहीं मिली. इसी बीच उसके ड्यूडनल अलसर नाम का एक भयंकर फोड़ा निकला. सरकार के जुल्म के कारन अमरीका में रह कर इलाज कराना मुमकिन न देख वह इंगलिस्तान चली आई. उसे एक बरस के लिये ब्रिटिश साम्राज के अन्दर घूमने का पासपोर्ट मिला था.

वह अब आक्सफोर्ड के एक नरसिंग होम में अपना इलाज कराने के साथ साथ चीनी लाल सेना के महान सेनापति जूते की जीवनी लिख रही थी. मई सन् १९५० में अपनी जन्मभूमि अमरीका

بے بنیاد اور جھوٹی باتوں کا منہ توڑ جواب دیا ۔ ان کتابوں کی ساری آمدنی چینی لال سینا کی مدد میں جاتی تھی ۔ بیچ بیچ میں تھوڑے دنوں کے لئے وہ امریکہ بھی گئی ۔ پر ادھک دنوں کے لئے چینی لال سینا سے دور رہنا اب اس کے لئے دوبھر تھا ۔ وہ ہر پھر کر چین لوٹ آتی تھی ۔

دوسری بڑی جنگ کے دنوں میں وہ برسوں چین میں رہی اور لڑائی کے بیچ ہی اس کی آخری کتاب ' بیٹل ہم آف چائنا ' (چین کا جنگی گیت) چھپی ۔ اب اسکی عمر پچاس سے اوپر ہوچکی تھی ۔ اتنے برسوں کے کٹھور فوجی جیون سے اس کی تندرستی بہت گر گئی تھی ۔ اب وہ کچھ دنوں امریکہ میں رہ کر اپنی تندرستی سدھارنا اور کچھ پستکیں لکھنا چاہتی تھی ۔ لیکن دوسری بڑی جنگ کے بعد چین کی آزادی کی لڑائی میں ایک نئی لہر آتے دیکھ وہ چین لوٹنے کے لئے بے چین ہو اٹھی ۔ پر ابھی تک اس کی تندرستی نہیں سدھری تھی ۔ ادھر امریکی سرکار نے بھی اس پر طرح طرح کے ظلم شروع کردیئے ۔ بہت کوششیں کرنے پر بھی اسے چین لوٹنے کی اجازت نہیں ملی ۔ اسی بیچ اس کے ڈیوڈنل السر نام کا ایک بھینکر پھوڑا نکلا ۔ سرکار کے ظلم کے کارن امریکہ میں رہ کر علاج کرانا ممکن نہ دیکھ وہ انگلستان چلی آئی ۔ اسے ایک برس کے لئے برٹش سامراج کے اندر گھومنے کا پاسپورٹ ملا تھا ۔

وہ اب آکسفورڈ کے ایک نرسنگ ہوم میں اپنا علاج کرانے کے ساتھ ساتھ چینی لال سینا کے مہان سینا پتی جو تے کی جیونی لکھ رہی تھی ۔ مئی سن ۱۹۵۰ میں اپنی جنم بھومی امریکہ

और कर्म भूमि चीन दोनों से दूर उसकी मृत्यु होगई. मरने से पहले वह कह गई कि मेरी जो कुछ भी निजी चीजें हैं वह जून्दे के पास चीन भेज दीं जांय.

उसकी मौत पर सारी चीनी क़ौम ने सोग मनाया और अखबारों में बड़े बड़े लेख निकले. पेकिंग से निकलने वाले अखबार 'पीपुल्स चाइना' ने लिखा कि :—

"जनरल मैकआर्थर और उसके साथियों ने जिस बेदरदी के साथ ऐगनेस इस्मेडले का हर जगह पीछा किया यहां तक कि उसे सता सता कर मार डाला, वह बेदरदी एक ऐसा अच्छा पैमाना है जिससे हम इस बात का अंदाज़ा लगा सकते हैं कि अमरीकी साम्राजवाद के खिलाफ चीन की कोशिशों में ऐगनेस इस्मेडले ने कितना ज़बरदस्त हिस्सा लिया था."

चाइनीज़ पीपुल्स रिलीफ़ ऐसोसियेशन ने, जिसकी सदर मैडम सनयात सेन हैं, अपनी श्रद्धा दिखाते हुए कहा :—

"चीनी जनता के साथ ऐगनेस इस्मेडले का सच्चा प्रेम हमेशा हमेशा तक चीन निवासियों के दिलों में घर किये रहेगा. अमरीकी साम्राजवाद ने सता सता कर उसे मार डाला इसलिये उस साम्राजवाद के खिलाफ हम अपने बेअंत क्रोध को जाहिर किये बग़ैर नहीं रह सकते."

कुल चीन जन तंत्र महिला संघ और कुल चीन लेखक और कलाकार संघ ने भी इसी तरह के भाव जाहिर किये हैं.

यहां यह लिख देना भी जरूरी है कि ब्रिटिश कामन वैल्थ बनने

اور کرم بھومی چین دونوں سے دور اُس کی مرتیو ہوگئی۔ مرنے سے پہلے وہ کہہ گئی کہ میری جو کچھ بھی نجی چیزیں ہیں وہ جو ندے کے پاس چین بھیج دی جائیں۔

اُس کی موت پر ساری چینی قوم نے سوگ منایا اور اخباروں میں بڑے بڑے لیکھ نکلے۔ پیکنگ سے نکلنے والے اخبار 'پیپلس چائنا' نے لکھا کہ :—

" جنرل میک آرتھر اور اُس کے ساتھیوں نے جس بے دردی کے ساتھ ایگنس ایسمیڈلے کا ہر جگہ پیچھا کیا یہاں تک کہ اُسے ستا ستا کر مار ڈالا ' وہ بے دردی ایک ایسا اچھا پیمانہ ہے جس سے ہم اِس بات کا اندازہ لگا سکتے ہیں کہ امریکی سامراجواد کے خلاف چین کی کوششوں میں ایگنس ایسمیڈلے نے کتنا زبردست حصہ لیا تھا۔"

چائنیز پیپلس ریلیف ایسوسی ایشن نے' جس کی صدر میڈم سن یات سین ہیں ' اپنی شردھا دکھاتے ہوئے کہا :—

" چینی جنتا کے ساتھ ایگنس ایسمیڈلے کا سچا پریم ہمیشہ ہمیشہ تک چین نواسیوں کے دلوں میں گھر کئے رہیگا۔ امریکی سامراجواد نے ستا ستا کر اُسے مار ڈالا اس لئے اُس سامراجواد کے خلاف ہم اپنے بے انت کرودھ کو ظاہر کئے بغیر نہیں رہ سکتے۔"

کل چین جن تنتر مہلا سنگھ اور کل چین لیکھک اور کلاکار سنگھ نے بھی اِسی طرح کے بھاو ظاہر کئے ہیں۔

یہاں یہ لکھ دینا بھی ضروری ہے کہ برٹش کامن ویلتھ بننے

से पहले बीस बरस तक इस्मेडले हिन्दुस्तान आने की कोशिश करती रही लेकिन उसे कामयाबी नहीं मिली. कामन वैल्थ बनने के बाद जब कुछ हिन्दुस्तानी मित्रों ने हिन्दुस्तान जाने का सुझाव उसके सामने रखा तो उसने यह कह कर इनकार कर दिया कि अभी हिन्दुस्तान में मेरे सपने का राज क़ायम नहीं हुआ है. इसी तरह के भाव मरने से पहले प्रोफ़ेसर लास्की ने भी ज़ाहिर किये थे. लास्की ने कहा था कि ‘मैं टाटा और बिरला राज के लिये हिन्दुस्तान की आज़ादी के आन्दोलन का तरफ़दार नहीं रहा.’

चीन की महान जनता के साथ साथ हम भी कहते हैं कि हम हिन्दुस्तानी जनता की आज़ादी के लिये लड़ने और मुसीबतें झेलने वाली अमरीकी साम्राजवाद की शिकार इस बहादुर और नेक बहन की सेवाओं को कभी नहीं भूलेंगे.

क़स्बा कोंच ज़िला जालौन में जिस तरह बक़रईद मनाई गई है वह सारे भारत के लिये एक मिसाल बन सकती है. ईदगाह में बहुत बड़ी तादाद में सरकारी अफ़सर, क़सबे के इज़्ज़तदार हिन्दू और कांग्रेस के ओहदेदार इकट्ठे हुए और उन्हों ने फ़र्श वग़ैरा के इन्तज़ाम में हिस्सा लिया. जब नमाज़ होने लगी तो वह ख़ामोशी से एक तरफ़ बैठ गये. नमाज़ के बाद वह मुसलमानों से ईद मिले और पान, सिगरेट, इत्र से उनकी ख़ातिर की.

दर असल यह है त्योहार जिसमें त्योहार का मज़ा है. काश! इसी तरह ईद, बक़रईद, होली, दीवाली सब मनाई जाने लगें.

سے پہلے بیس برس تک ایسمیڈلے ہندستان آنے کی کوشش کرتی رہی لیکن اُسے کامیابی نہیں ملی ۔ کامن ویلتھ بننے کے بعد جب کچھ ہندستانی متروں نے ہندستان جانے کا سجھاو اُس کے سامنے رکھا تو اُس نے یہ کہہ کر انکار کردیا کہ ابھی ہندستان میں میرے سپنے کا راج قائم نہیں ہوا ہے ۔ اسی طرح کے بھاو مرنے سے پہلے پروفیسر لاسکی نے بھی ظاہر کئے تھے ۔ لاسکی نے کہا تھا کہ ’ میں ٹاٹا اور برلا راج کے لئے ہندستان کی آزادی کے آندولن کا طرفدار نہیں رہا ۔‘

چین کی مہان جنتا کے ساتھ ساتھ ہم بھی کہتے ہیں کہ ہم ہندستانی جنتا کی آزادی کے لئے لڑنے اور مصیبتیں جھیلنے والی امریکی سامراج واد کی شکار اس بہادر اور نیک بہن کی سیواؤں کو کبھی نہیں بھولینگے ۔

قصبہ کونچ ضلع جالون میں جسطرح بقرعید منائی گئی ہے وہ سارے بھارت کے لئے ایک مثال بن سکتی ہے ۔ عید گاہ میں بہت بڑی تعداد میں سرکاری افسر، قصبے کے عزت دار ہندو اور کانگریس کے عہدے دار اکٹھے ہوئے اور انہوں نے فرش وغیرہ کے انتظام میں حصہ لیا ۔ جب نماز ہونے لگی تو وہ خاموشی سے ایک طرف بیٹھ گئے ۔ نماز کے بعد وہ مسلمانوں سے عید ملے اور پان، سگریٹ، عطر سے انکی خاطر کی ۔

دراصل یہ ہے تیوہار جس میں تیوہار کا مزہ ہے ۔ کاش ! اسی طرح عید، بقرعید، ہولی، دیوالی سب منائی جانےلگیں ۔

एटम-मन्थन (मथना)

(भाई जगदीश एम. एस सी.)

[सितम्बर के 'नया हिन्द' में एटम पर जो लेख छपा था वह लेख उसकी दूसरी कड़ी है. इस लेख में विद्वान लेखक ने बहुत आसान और दिलचस्प ढंग से यह समझाया है कि एटम बम कैसे तैयार हुआ और दुनिया के लिये यह खतरनाक चीज बनाने में कितने खतरों का सामना किया गया. —एडीटर]

एटम बम बनाने में अब भी दो बड़ी अड़चनें थीं. पहली तो यह कि यूरेनियम (Uranium) तत्व भी दो तरह का होता है. एक ज़रा भारी U238 और दूसरा कुछ हलका U235. इन दोनों के एटमों के बाहरी इलेक्ट्रोन (Electron) झुन्ड में कोई फरक नहीं होता. इसलिये रसायनिक गुन दोनों के बिलकुल एक से होते हैं और किसी भी रसायनिक क्रिया से आप इन के एटमों को अलग अलग नहीं कर सकते. पर दोनों के एटम बीज में वज़न का फरक होता है. U238 के एटम बीज में U235 से एक ईंट ज्यादा होती है. इस लिये U238 U235 से कुछ भारी होता है. एटम बीज के अंदरूनी ताने बाने में भी इस एक ईंट की वजह से फरक होता है. इसीलिये U238 के एटम बीज पर न्यूट्रोन (Neutron) की चोट पड़ने से एटम बीज टूटता नहीं. वह तो न्यूट्रोन को अपने में रोक लेता है.

ایٹم منتھن (متھنا)

(بھائی جگدیش ایم . ایس سی .)

[ستمبر کے 'نیا ہند' میں ایٹم پر جو لیکھ چھپا تھا یہ لیکھ اُس کی دوسری کڑی ہے . اِس لیکھ میں ودوان لیکھک نے بہت آسان اور دلچسپ ڈھنگ سے یہ سمجھایا ہے کہ ایٹم بم کیسے تیار ہوا اور دنیا کے لئے یہ خطرناک چیز بنانے میں کتنے خطروں کا سامنا کیا گیا . —ایڈیٹر]

ایٹم بم بنانے میں اب بھی دو بڑی اڑچنیں تھیں . پہلی تو یہ کہ یورینیم (Uranium) تتو بھی دو طرح کا ہوتا ہے . ایک ذرا بھاری U238 اور دوسرا کچھ ہلکا U235. اِن دونوں کے ایٹموں کے باہری الیکٹرون (Electron) جھنڈ میں کوئی فرق نہیں ہوتا . اِس لئے رساینک گن دونوں کے بالکل ایک سے ہوتے ہیں اور کسی بھی رساینک کریا سے آپ اِن کے ایٹموں کو الگ الگ نہیں کر سکتے . پر دونوں کے ایٹم بیج میں وزن کا فرق ہوتا ہے . U238 کے ایٹم بیج میں U235 سے ایک اینٹ زیادہ ہوتی ہے . اِس لئے U238 U235 سے کچھ بھاری ہوتا ہے . ایٹم بیج کے اندرونی تانے بانے میں بھی اِس ایک اینٹ کی وجہ سے فرق ہوتا ہے . اِسی لئے U238 کے ایٹم بیج پر نیوٹرون (Neutron) کی چوٹ پڑنے سے ایٹم بیج ٹوٹتا نہیں . وہ تو نیوٹرون کو اپنے میں روک لیتا ہے .

इस न्यूट्रोन की ईंट के U238 के ऐटम बीज में जुड़ जाने से एक नए तत्व का जन्म होता है. इस को प्लूटोनियम (Plutonium) U239 कहते हैं. इस के ऐटम बीज के अंदर का ताना बाना भी U238 की तरह कमज़ोर होता है और उसी की तरह न्यूट्रोन की चोट से फट जाता है. ज़्यादा भारी होने से फटने पर U235 से ज़्यादा ताक़त प्लूटोनियम के ऐटम बीज में से फूट पड़ती है.

कच्चे यूरेनियम में 98% U238 और 2% U235 होता है. ऐटम बम के बनाने के लिये यह ज़रूरी होगया कि इन दोनों को अलग अलग किया जा सके. साथ ही U238 से प्लूटोनियम U239 बन सके तो और भी अच्छा क्योंकि 98% यूरेनियम धातु जो बेकार जाती वह काम आ जायेगी और प्लूटोनियम का बम ताक़तवर भी ज़्यादा हो सकता है. उधर ख़ालिस U235 का बम तो फ़ौरन बन सकेगा. इस तरह दोनों तरह का यूरेनियम ऐटम बम बनाने के काम में लाया गया.

यूरेनियम की दोनों क़िस्मों U238 और U235 को अलग अलग करने के लिये जो तरीक़े काम में लाये गये वह दोनों के वज़न के फ़रक़ पर लागू थे. अगर आप दो पत्थर के टुकड़े जो वज़न में अलग अलग हों एक ही ताक़त से फेंकें तो भारी वाला पत्थर पहले गिर जायेगा और हलका वाला ज़रा दूर जा कर. एक मशीन तो इसी उसूल पर बनाई गई जिस से U235 को U238 से अलहदा करने में अमरीका को सफलता हुई. दूसरा तरीक़ा इस उसूल पर निकाला गया कि मोटा आदमी एक दुबले आदमी के मुक़ाबले में कम

اس نیوٹرون کی اینٹ کے U238 کے ایٹم بیج میں جڑ جانے سے ایک نئے تتو کا جنم ہوتا ہے. اس کو پلوٹونیم (Plutonium) U239 کہتے ہیں. اس کے ایٹم بیج کے اندر کا تانا بانا بھی U238 کی طرح کمزور ہوتا ہے اور اُسی کی طرح نیوٹرون کی چوٹ سے پھٹ جاتا ہے. زیادہ بھاری ہونے سے پھٹنے پر U235 سے زیادہ طاقت پلوٹونیم کے ایٹم بیج میں سے پھوٹ پڑتی ہے.

کچے یورینیم میں 98% U238 اور 2% U235 ہوتا ہے. ایٹم بم کے بنانے کے لئے یہ ضروری ہوگیا کہ ان دونوں کو الگ الگ کیا جاسکے. ساتھ ہی U238 سے پلوٹونیم U239 بن سکے تو اور بھی اچھا کیونکہ 98% یورینیم دھاتو جو بیکار جاتی وہ کام آجائیگی اور پلوٹونیم کا بم طاقتور بھی زیادہ ہو سکتا ہے. اُدھر خالص U235 کا بم تو فوراً بن سکیگا. اِسطرح دونوں طرح کا یورینیم ایٹم بم بنانے کے کام میں لایا گیا.

یورینیم کی دونوں قسموں U238 اور U235 کو الگ الگ کرنے کیلئے جو طریقے کام میں لائے گئے وہ دونوں کے وزن کے فرق پر لاگو تھے. اگر آپ دو پتھر کے ٹکڑے جو وزن میں الگ الگ ہوں ایک ہی طاقت سے پھینکیں تو بھاری والا پتھر پہلے گرجائیگا اور ہلکا والا ذرا دور جاکر. ایک مشین تو اِسی اصول پر بنائی گئی جس سے U235 کو U238 سے علیحدہ کرنے میں امریکہ کو سپھلتا ہوئی. دوسرا طریقہ اِس اُصول پر نکالا گیا کہ موٹا آدمی ایک دبلے آدمی کے مقابلے میں کم

फुरतीला होता है. इसी तरह U238 का ऐटम U235 के ऐटम के मुक़ाबले में ज़रा कम फुरतीला होता है. डिफ्यूज़न (Diffusion) यानी बिखराव के इस उसूल पर हज़ारों परदे वाली एक मशीन बनाई गई जिस में से धीरे धीरे कम फुरतीला U238 पीछे रह जाता था और U235 परदों को जलदी पार करता हुआ दूसरी तरफ़ निकल जाता था. इस तरह U235 को U238 से अलहदा करने में सफलता पहले अमरीका को ही हुई.

अब रहा U235 का ऐटम बम में इस्तेमाल का तरीक़ा. ऐटम बम बनाने में यह दूसरी अड़चन थी. गनित (Mathematics) का इस साइन्स से गहरा संबंध है. बहुत कुछ तो गनित से ही मालूम कर लिया गया कि इस प्रयोग का क्या नतीजा होगा. जो न्यूट्रोन U235 के ऐटम बीज के टूटने पर निकलते हैं वह बहुत तेज़ चाल से बाहर आते हैं और अगर उनको चाल को धीमा न किया जाय तो वह न्यूट्रोन U235 से बाहर निकल कर बेकार जाते हैं और सिर्फ़ दो चार ऐटम ही टूट कर रह जाते हैं. बम तो तभी बन सकता है जब यह न्यूट्रोन U235 के बाक़ी ऐटमों के तोड़ने का सिलसिला जारी रखें और न्यूट्रोन की गिनती बढ़ती चली जाय जैसे एक से दो और दो से चार.

न्यूट्रोन की चाल को धीमा करने के लिये दो चीज़ें इस्तेमाल में लाई गईं. अमरीका ने ग्रेफाइट (Graphite) इस्तेमाल किया. यह कोयले (Carbon) का एक रूप है. न्यूट्रोन इस के ऐटम से टकरा कर वापस चले जाते हैं और उनकी चाल धीमी पड़ जाती है.

پھرتیلا ہوتا ہے. اِسیطرح U238 کا ایٹم U235 کے ایٹم کے مقابلے میں ذرا کم پھرتیلا ہوتا ہے. ڈفیوزن (Diffusion) یعنی بکھراؤ کے اس اُصول پر ہزاروں پردے والی ایک مشین بنائی گئی جس میں سے دھیرے دھیرے کم پھرتیلا U238 پیچھے رہ جاتا تھا اور U235 پردوں کو جلدی پار کرتا ہوا دوسری طرف نکل جاتا تھا. اسطرح U235 کو U238 سے علیحدہ کرنے میں سپھلتا پہلے امریکہ کو ہی ہوئی.

اب رہا U235 کا ایٹم بم میں استعمال کا طریقہ. ایٹم بم بنانے میں یہ دوسری اڑچن تھی. گنت (Mathematics) کا اِس سائنس سے گہرا سمبندھ ہے. بہت کچھ تو گنت سے ہی معلوم کر لیا گیا کہ اس پریوگ کا کیا نتیجہ ہوگا. جو نیوٹرون U235 کے ایٹم بیج کے ٹوٹنے پر نکلتے ہیں وہ بہت تیز چال سے باہر آتے ہیں اور اگر اُن کی چال کو دھیما نہ کیا جائے تو وہ نیوٹرون U235 سے باہر نکل کر بیکار جاتے ہیں اور صرف دو چار ایٹم ہی ٹوٹ کر رہ جاتے ہیں. بم تو تبھی بن سکتا ہے جب یہ نیوٹرون U235 کے باقی ایٹموں کے توڑنے کا سلسلہ جاری رکھیں اور نیوٹرون کی گنتی بڑھتی چلی جائے جیسے ایک سے دو اور دو سے چار.

نیوٹرون کی چال کو دھیما کرنے کے لئے دو چیزیں استعمال میں لائی گئیں. امریکہ نے گریفائٹ (Graphite) استعمال کیا. یہ کوئلے (Carbon) کا ایک روپ ہے. نیوٹرون اس کے ایٹم سے ٹکرا کر واپس چلے جاتے ہیں اور اُن کی چال دھیمی پڑجاتی ہے.

दूसरी तरफ़ जरमनों ने भारी पानी (Heavy Water) का प्रयोग किया. इस पर न्यूट्रोन की चोट से और न्यूट्रोन भी बनते हैं जो U235 के फटने में मदद करते हैं.

यूरेनियम की तरह हाइड्रोजन (Hydrogen) की भी दो क़िस्में हैं. एक तो मामूली यानी हलका हाइड्रोजन H_1 और दूसरा भारी हाइड्रोजन H_2. इन दोनों का फ़रक़ सिर्फ़ अंदरूनी ऐटम बीज के वज़न में होता है. दोनों के ऐटम बीज के चारों तरफ़ एक इलेक्ट्रोन घूमता रहता है और इस लिये सब रसायनिक क्रिया हलके और भारी हाइड्रोजन दोनों की एक सी होती है. ज़रा सा भी फ़रक़ नहीं होता क्योंकि रसायनिक क्रिया में बाहर चक्कर काटता हुआ इलेक्ट्रोन ही हिस्सा लेता है. ऐटम बीज इसमें कोई हिस्सा नहीं लेता. हलके और भारी हाइड्रोजन के ऐटम बीज में सिर्फ़ एक ईंट का फ़रक़ होता है. हलके हाइड्रोजन में तो हम बता ही चुके हैं कि एक प्रोटोन (Proton) के चारों तरफ़ एक इलेक्ट्रोन घूमता रहता है. भारी H_2 हाइड्रोजन के ऐटम बीज के एक प्रोटोन में एक न्यूट्रोन जुड़ा रहता है. न्यूट्रोन पर बिजली तो होती नहीं इस लिये भारी हाइड्रोजन के ऐटम बीज पर उतनी ही गरम (Positive) बिजली रहती है जितनी हलके हाइड्रोजन H_1 के प्रोटोन में. इसलिये H_1 की तरह इसको भी एक बाहरी इलेक्ट्रोन की ज़रूरत पड़ती है. अब जब इस भारी हाइड्रोजन H_2 के ऐटम बीज से न्यूट्रान टकराता है तो अन्दर का न्यूट्रोन टूट कर अलग निकल जाता है और ऐटम बीज में H_1 की तरह एक प्रोटोन ही रह जाता है. क्योंकि जैसा बताया गया है

دوسری طرف جرمنوں نے بھاری پانی (Heavy Water) کا پریوگ کیا . اس پر نیوٹرون کی چوٹ سے اور نیوٹرون بھی بنتے ھیں جو U235 کے پھٹنے میں مدد کرتے ھیں .

یوریلیم کی طرح ھائیڈروجن (Hydrogen) کی بھی دو قسمیں ھیں . ایک تو معمولی یعنی ھلکا ھائیڈروجن H_1 اور دوسرا بھاری ھائیڈروجن H_2 . ان دونوں کا فرق صرف اندرونی ایٹم بیج کے وزن میں ھوتا ھے . دونوں کے ایٹم بیج کے چاروں طرف ایک الیکٹرون گھومتا رھتا ھے اور اس لئے سب رسایئنک کریا ھلکے اور بھاری ھائیڈروجن دونوں کی ایک سی ھوتی ھے . ذرا سا بھی فرق نہیں ھوتا کیونکہ رسایئنک کریا میں باھر چکر کاٹتا ھوا الیکٹرون ھی حصہ لیتا ھے . ایٹم بیج اس میں کوئی حصہ نہیں لیتا . ھلکے اور بھاری ھائیڈروجن کے ایٹم بیج میں صرف ایک ایلمنٹ کا فرق ھوتا ھے . ھلکے ھائیڈروجن میں تو ھم بتا ھی چکے ھیں کہ ایک پروٹون (Proton) کے چاروں طرف ایک الیکٹرون گھومتا رھتا ھے . بھاری H_2 ھائیڈروجن کے ایٹم بیج کے ایک پروٹون میں ایک نیوٹرون جڑا رھتا ھے . نیوٹرون پر بجلی تو ھوتی نہیں اس لئے بھاری ھائیڈروجن کے ایٹم بیج پر اتنی ھی گرم (Positive) بجلی رھتی ھے جتنی ھلکے ھائیڈروجن H_1 کے پروٹون میں . اس لئے H_1 کی طرح اس کو بھی ایک باھری الیکٹرون کی ضرورت ہوتی ھے . اب جب اس بھاری ھائیڈروجن H_2 کے ایٹم بیج سے نیوٹرون ٹکراتا ھے تو اندر کا نیوٹرون ٹوٹ کر الگ نکل جاتا ھے اور ایٹم بیج میں H_1 کی طرح ایک پروٹون ھی رہ جاتا ھے . کیونکہ جیسا بتایا گیا ھے

५

भारी H_2 हाइड्रोजन के ऐटम बीज में एक प्रोटोन और एक न्यूट्रोन जुड़े रहते हैं. न्यूट्रोन के निकलने के बाद प्रोटोन ही रह जाता है.

हाइड्रोजन सब से ज्यादा पानी में मिलती है, जो दो गैस हाइड्रोजन और आक्सीजन (Oxygen) के मिलने से बना है. हलके हाइड्रोजन से जो पानी बनता है उस के छोटे टुकड़े (Molecule) का वजन 18 माना जाय तो भारी पानी के छोटे टुकड़े का वज़न 22 होगा. दोनों पानी में और कोई फ़रक़ नहीं होता. मामूली पानी के एक लाख हिस्से में सिर्फ़ एक हिस्सा भारी पानी का होता है. अगर बिजली पानी में दौड़ा दी जाय तो पानी का आक्सीजन और हाइड्रोजन अलग अलग होकर गैस बन कर उड़ना शुरू हो जायगा पर बरतन में नीचे जो पानी रह जायेगा उस में भारी पानी होगा. इसी में भारी हाइड्रोजन H_2 रहती है. 28 मन पानी को बिजली से तोड़ने पर भारी पानी की एक बूंद मिलती है. इस तरह एक सेर भारी पानी बनाने में कई हज़ार रुपए की बिजली खर्च होती है. यह वहीं आसानी से बन सकता है जहां पन बिजली (Hydroelectric Power) मिल सके. इसलिये जरमनी के लोग भारी पानी नारवे में बना रहे थे. इस भारी पानी और भारी हाइड्रोजन को याद रखिये. हाइड्रोजन बम बनाने में यही काम में लाया जा रहा है.

1940 से इंगलिस्तान और फरांस की यही कोशिश रही कि जरमनी किसी तरह बहुत सा भारी पानी जमा न करने पावे. जासूस इस बात को, मालूम करने में बराबर लगे रहते थे कि जरमनी ऐटम बम बनाने में कहां तक कामयाबी हासिल कर चुका है. लड़ाई के जल्दी

بھاری H_2 ہائیڈروجن کے ایٹم بیج میں ایک پروٹون اور ایک نیوٹرون جڑے رہتے ہیں. نیوٹرون کے نکلنے کے بعد پروٹون ہی رہ جاتا ہے.

ہائیڈروجن سب سے زیادہ پانی میں ملتی ہے، جو دو گیس ہائیڈروجن اور آکسیجن (Oxygen) کے ملنے سے بنا ہے. ہلکے ہائیڈروجن سے جو پانی بنتا ہے اُس کے چھوٹے ٹکڑے (Molecule) کا وزن 18 مانا جائے تو بھاری پانی کے چھوٹے ٹکڑے کا وزن 22 ہوگا. دونوں پانی میں اور کوئی فرق نہیں ہوتا. معمولی پانی کے ایک لاکھ حصے میں صرف ایک حصہ بھاری پانی کا ہوتا ہے. اگر بجلی پانی میں دوڑا دی جائے تو پانی کا آکسیجن اور ہائیڈروجن الگ الگ ہو کر گیس بن کر اُڑنا شروع ہوجائیگا پر برتن میں نیچے جو پانی رہ جائیگا اُس میں بھاری پانی ہوگا. اسی میں بھاری ہائیڈروجن H_2 رہتی ہے. 28 من پانی کو بجلی سے توڑنے پر بھاری پانی کی ایک بوند ملتی ہے. اس طرح ایک سیر بھاری پانی بنانے میں کئی ہزار روپے کی بجلی خرچ ہوتی ہے. یہ وہیں آسانی سے بن سکتا ہے جہاں پن بجلی (Hydro electric Power) مل سکے. اس لئے جرمنی کے لوگ بھاری پانی ناروے میں بنا رہے تھے. اس بھاری پانی اور بھاری ہائیڈروجن کو یاد رکھئے. ہائیڈروجن بم بنانے میں یہی کام میں لایا جارہا ہے.

1940 سے انگلستان اور فرانس کی یہی کوشش رہی کہ جرمنی کسی طرح بہت سا بھاری پانی جمع نہ کرنے پاوے. جاسوس اس بات کو معلوم کرنے میں برابر لگے رہتے تھے کہ جرمنی ایٹم بم بنانے میں کہاں تک کامیابی حاصل کرچکا ہے. لڑائی کے جلدی

ख़तम करने की कोशिश इस लिये भी की जा रही थी कि जरमनी को ऐटम बम बनाने के लिये ज़्यादा समय न मिल सके.

जब पेरिस (Paris) जरमनों के हाथ आया तो वहां की विद्यापीठ के एक बड़े नामी प्रोफ़ेसर ने एक गैलन भारी पानी जरमनों के हाथ से बचा कर इंगलिस्तान को भिजवा दिया और ऐटम बम के प्रयोग के लिये यह भारी पानी अमरीका भेज दिया गया. इसे जरमनों के हाथ नहीं लगने दिया गया. नारवे जब जरमनी के क़ब्ज़े में आया तो जासूसों से भारी पानी बनाने वाले बिजली घर का पता मालूम कर के हवाई जहाज़ों से बम गिरा कर उसे ख़तम कर दिया गया. उस जंगल पर, जिसके अन्दर जरमनी के साइंस वाले छिप कर ऐटमी खोज कर रहे थे, जासूसों से पता लगा कर 2000 अमरीकी हवाई जहाज़ों ने दिन में हमला कर के उसे बरबाद कर दिया. साइन्स वाले भी मारे गये. इन चुने हुए साइंस वालों के मरने से हिटलर के ऐटम बम बनाने का प्रोग्राम सपना हो कर रह गया. अमरीका के ऐटमी खोज में इतालिया और जरमनी के भागे हुए नामी साइन्स वाले और इंगलिस्तान और अमरीका के बड़े बड़े गनित के महारथी भाग ले रहे थे. मालूम पड़ता था जैसे जनमेजय का सर्प यज्ञ शुरू किया जा रहा हो.

यह बड़े बड़े साइन्स वाले अच्छी तरह समझते थे कि इतनी बड़ी ताक़त किसी एक मुल्क को दे कर वह दुनिया के लिये ख़तरा मोल ले रहे हैं. आपस में सलाह मशवरा कर के बहुत दिनों तक इस बात पर बात चीत चलती रही कि क्या इस खोज को आगे बढ़ाया जाय.

ختم کرنے کی کوشش اس لئے بھی کی جارہی تھی کہ جرمنی کو ایٹم بم بنانے کے لئے زیادہ سمے نہ مل سکے ۔

جب پیرس (Paris) جرمنوں کے ہاتھ آیا تو وہاں کی ودیا پیٹھ کے ایک بڑے نامی پروفیسر نے ایک گیلن بھاری پانی جرمنوں کے ہاتھ سے بچا کر انگلستان کو بھجوا دیا اور ایٹم بم کے پریوگ کے لئے یہ بھاری پانی امریکہ بھیج دیا گیا ۔ اسے جرمنوں کے ہاتھ نہیں لگنے دیا گیا ۔ ناروے جب جرمنی کے قبضے میں آیا تو جاسوسوں سے بھاری پانی بنانے والے بجلی گھر کا پتہ معلوم کرکے ہوائی جہازوں سے بم گرا کر اسے ختم کر دیا گیا ۔ اس جنگل پر، جس کے اندر جرمنی کے سائنس والے چھپ کر ایٹمی کھوج کر رہے تھے، جاسوسوں سے پتہ لگا کر 2000 امریکی ہوائی جہازوں نے دن میں حملہ کرکے اسے برباد کر دیا ۔ سائنس والے بھی مارے گئے ۔ ان چنے ہوئے سائنس والوں کے مرنے سے ہٹلر کے ایٹم بم بنانے کا پروگرام سپنا ہو کر رہ گیا ۔ امریکہ کے ایٹمی کھوج میں اطالیہ اور جرمنی کے بھاگے ہوئے نامی سائنس والے اور انگلستان اور امریکہ کے بڑے بڑے گنت کے مہارتھی بھاگ لے رہے تھے ۔ معلوم ہوتا تھا جیسے جنمے جے کا سرپ یگیہ شروع کیا جا رہا ہو ۔

یہ بڑے بڑے سائنس والے اچھی طرح سمجھتے تھے کہ اتنی بڑی طاقت کسی ایک ملک کو دے کر وہ دنیا کے لئے خطرہ مول لے رہے ہیں ۔ آپس میں صلاح مشورہ کرکے بہت دنوں تک اس بات پر بات چیت چلتی رہی کہ کیا اس کھوج کو آگے بڑھایا جائے ۔

क़ौमी तक़ाज़ों से मजबूर हो कर उन को इस काम को आगे चलाना ही पड़ा.

U235 का ऐटम बम बनाने की खोज परिज़ोना (Arizona) के सुनसान रेगिस्तान में शुरू हुई. गनित से मालूम हुआ कि बाहर से अचानक आए हुए न्यूट्रोन से टक्कर खाकर दस सेर U235 एक साथ जमा होकर अपने आप ही फट-जायगा. ऐसे न्यूट्रोन तो आकाश से ज़मीन पर अकसर आते रहते हैं. इस लिये पांच पांच सेर के दो U235 के टुकड़े मशीन के ज़रिये ऐसे बनाये गये कि टकराने पर चूल से चूल मिल जाय. इन दो टुकड़ों को एक लोहे की लम्बी नली में आमने सामने दोनों सिरों पर फ़िट कर दिया गया. फिर ऐसा इन्तज़ाम किया गया कि दोनों टुकड़े बारूद के जलने से एक दूसरे की तरफ़ नली के अन्दर झपट कर टकरा जांय और इस टक्कर से जो गरमी पैदा होगी उस से वह जुड़ जांय.

चारों तरफ़ ग्रेफ़ाइट की दीवार बन बनाकर न्यूट्रोन को बाहर निकलने से रोक दिया गया और ऐटम बम तैयार होगया. दस सेर U235 के चारों तरफ़ बारूद, ग्रेफ़ाइट और लोहे की नली वग़ैरा लगाने से इस बम का पूरा आकार बहुत बड़ा हो गया यहां तक कि एक बमबार (Bomber) हवाई जहाज़ एक ऐटम बम ही ले जा सकता था.

ऐटम बम की पहली आज़माइश बहुत डरते डरते शुरू की गई. लोहे की एक लम्बी लाट पर यह बम रखा गया, यह मालूम था कि इस के फटने पर पांच मील के अंदर जान का ख़तरा होगा. इसलिये साइन्स वाले दस मील दूर काला चश्मा लगा कर रात को बैठे. बम में एक ऐसा यंत्र भी लगाया गया जिस में रेडियो के

قومی تقاضوں سے مجبور ہو کر اُن کو اس کام کو آگے چلانا ہی پڑا۔

U235 کا ایٹم بم بنانے کی کھوج ایریزونا (Arizona) کے سنسان ریگستان میں شروع ہوئی۔ گنت سے معلوم ہوا کہ باہر سے اچانک آئے ہوئے نیوٹرون سے ٹکر کھاکر دس سیر U235 ایک ساتھ جمع ہوکر اپنے آپ ہی پھٹ جائیگا۔ ایسے نیوٹرون تو آکاش سے زمین پر اکثر آتے رہتے ہیں۔ اسلئے پانچ پانچ سیر کے دو U235 کے ٹکڑے مشین کے ذریعے ایسے بنائے گئے کہ ٹکرانے پر چول سے چول مل جائے۔ اِن دو ٹکڑوں کو ایک لوہے کی لمبی نلی میں آمنے سامنے دونوں سروں پر فٹ کر دیا گیا۔ پھر ایسا انتظام کیا گیا کہ دونوں ٹکڑے بارود کے جلنے سے ایک دوسرے کی طرف نلی کے اندر جھپٹ کر ٹکرا جائیں اور اس ٹکر سے جو گرمی پیدا ہوگی اُس سے وہ جڑ جائیں۔

چاروںطرف گریفائٹ کی دیوار بناکر نیوٹرون کو باہر نکلنے سے روک دیا گیا اور ایٹم بم تیار ہو گیا۔ دس سیر U235 کے چاروں طرف بارود، گریفائٹ اور لوہے کی نلی وغیرہ لگانے سے اس بم کا پورا آکار بہت بڑا ہوگیا یہاں تک کہ ایک بمبار (Bomber) ہوائی جہاز ایک ایٹم بم ہی لے جاسکتا تھا۔

ایٹم بم کی پہلی آزمائش بہت ڈرتے ڈرتے شروع کی گئی۔ لوہے کی ایک لمبی لاٹ پر یہ بم رکھا گیا۔ یہ معلوم تھا کہ اس کے پھٹنے پر پانچ میل کے اندر جان کا خطرہ ہوگا۔ اسلئے سائنس والے دس میل دور کالا چشمہ لگاکر رات کو بیٹھے۔ بم میں ایک ایسا ینتر بھی لگایا گیا جسمیں ریڈیو کے

ज़रिये फ़लीता दस मील दूर से लगा दिया जाये. ठीक समय पर रेडियो की लहर फेंकी. गई और एक चका चौंध कर देने वाली रोशनी की दमक सारे आसमान में फैल गई. मालूम पड़ता था कि बारह सूरज एक साथ ज़मीन पर उतर आये हैं. दस मील दूर काला चशमा पहिने हुए आदमियों की आंखें भी इस रोशनी से झपक गईं. 200 मील दूर एक अंधी लड़की ने अपनी मां से पूछा—"अम्मां, क्या सूरज निकल आया ?" कान के परदे फाड़ने वाली आवाज़ के साथ धूल और आग का एक बादल आसमान में उठा. लोगों ने अचरज से देखा कि लोहे की लाट भाप बन कर उड़ गई थी. एक मील चौड़ा एक गहरा गढ़ा बन गया था. उस का रेता उस तेज़ गरमी की ताब न लाकर पिघल कर हरा शीशा बन गया था. कई महीने तक ऐटमी किरनें उस गढ़े में से निकलती रहीं और साइन्स वाले सिर्फ़ टैंक (Tank) के अंदर बैठ कर ही वहाँ की जांच कर सकते थे. यह पहला ऐटम बम था. हिसाब लगाने पर मालूम हुआ कि एक ऐटम बम में पांच लाख छप्पन हज़ार मन बारूद के फटने से जो ताक़त पैदा होती है उस के बराबर ताक़त है. एक ऐटम बम बनाने में चालीस लाख रुपए की लागत आई.

यह वही बम था जो जापान के शहर हिरोशिमा (Hiroshima) पर गिरा था और दो लाख आदमियों की जान इस से गई थी. रोशनी की तेज़ी से पत्थरों पर तसवीरों की छाप पड़ गई थी. एक मकान भी साबित न बचा था. ऐटमी किरनों से वहाँ के रहने वालों के जो घाव हुए वह पांच साल बाद भी अच्छे नहीं हुए. बहुत से आदमियों के बाल झड़ गये. बहुत का ख़ून ख़राब हो गया

ذریعے فلیتہ دس میل دور سے لگا دیا جائے . ٹھیک سمے پر ریڈیو کی لہر پھینکی گئی اور ایک چکاچوندھ کر دینے والی روشنی کی چمک سارے آسمان میں پھیل گئی . معلوم ہوتا تھا کہ بارہ سورج ایک ساتھ زمین پر اُتر آئے ہوں . دس میل دور کالا چشمہ پہنے ہوئے آدمیوں کی آنکھیں بھی اس روشنی سے جھپک گئیں . 200 میل دور ایک اندھی لڑکی نے اپنی ماں سے پوچھا — ''اماں ' کیا سورج نکل آیا ؟'' کان کے پردے پھاڑنے والی آواز کے ساتھ دھول اور آگ کا ایک بادل آسمان میں اُٹھا . لوگوں نے اچرج سے دیکھا کہ لوہے کی لاٹ بھاپ بنکر اُڑ گئی تھی . ایک میل چوڑا ایک گہرا گڑھا بن گیا تھا . اُس کا ریتا اس تیز گرمی کی تاب نہ لاکر پگھل کر ہرا شیشہ بن گیا تھا . کئی مہینے تک ایٹمی کرنیں اُس گڑھے میں سے نکلتی رہیں اور سائنس والے صرف ٹینک (Tank) کے اندر بیٹھ کر ہی وہاں کی جانچ کر سکتے تھے . یہ پہلا ایٹم بم تھا . حساب لگانے پر معلوم ہوا کہ ایک ایٹم بم میں پانچ لاکھ چھپن ہزار من بارود کے پھٹنے سے جو طاقت پیدا ہوتی ہے اُسکے برابر طاقت ہے . ایک ایٹم بم بنانے میں چالیس لاکھ روپے کی لاگت آئی .

یہ وہی بم تھا جو جاپان کے شہر ہیروشیما (Hiroshima) پر گرا تھا اور دو لاکھ آدمیوں کی جان اس سے گئی تھی . روشنی کی تیزی سے پتھروں پر تصویروں کی چھاپ پڑگئی تھی . ایک مکان بھی ثابت نہ بچا تھا . ایٹمی کرنوں سے وہاں کے رہنے والوں کے جو گھاؤ ہوئے وہ پانچ سال بعد بھی اچھے نہیں ہوئے ۔ بہت سے آدمیوں کے بال جھڑ گئے . بہت کا خون خراب ہوگیا

और वह मर गये, पैदा होने वाले बच्चों पर क्या असर हुआ इसकी अभी तक जांच पड़ताल जारी है.

U235 के ऐटम बम का हाल तो ऊपर दिया जा चुका. इस खोज के साथ ही U238 से प्लूटोनियम बनाने का प्रयोग अलग जारी था. कच्चा यूरेनियम इस काम में लाया गया. इस में 98% U238 और 2% U235 होता है. इस यूरेनियम में जब न्यूट्रोन घुसता है तो पहले U235 से टकरा कर दो न्यूट्रोन पैदा होते हैं. यह पास के U238 के ऐटम में घुस कर रुक जाते हैं और प्लूटोनियम का ऐटम बन जाता है. इस कड़ी को जारी रखने के लिये ग्रेफाइट की दीवार यूरेनियम के चारों तरफ लगानी पड़ी. मक्खी के छत्ते के आकार का ग्रेफाइट का एक बड़ा घरौंदा बनाया गया और उस में साफ की हुई यूरेनियम की पोली नलियां रख दी गईं. गनित से यह पहले ही मालूम कर लिया गया था कि घरौंदे के खाने गिनती में कितने और किस शकल और नाप के होने चाहिये. न्यूट्रोन बनने की कड़ी की चाल को काबू में रखने के लिये कैडमियम (Cadmium) की ठोस पेंसिलें यूरेनियम की नलियों में रख दी गईं. इस तत्व का स्वभाव है कि यह न्यूट्रोन को सोख लेता है. इन पेंसिलों को आगे और बाहर करने से यह कड़ी तेज या धीमी की जा सकती थी.

इस घरौंदे का नाम ऐटमी ढेरी (Atomic pile) रखा गया. बहुत डरते डरते शिकागो विद्यापीठ (Chicago University) के मैदान में साइन्स वालों ने इस प्रयोग को शुरू किया और उन की खुशी का ठिकाना न रहा जब यह ढेरी काम देने लगी. जो गरमी

اور وہ مر گئے . پیدا ہونے والے بچوں پر کیا اثر ہوا اس کی ابھی تک جانچ پڑتال جاری ہے .

U235 کے ایٹم بم کا حال تو اوپر دیا جا چکا . اس کھوج کے ساتھ ہی U238 سے پلوٹونیم بنانے کا پریوگ الگ جاری تھا . کچا یورینیم اس کام میں لایا گیا . اسمیں 98% U238 اور 2% U235 ہوتا ہے . اس یورینیم میں جب نیوٹرون گھستا ہے تو پہلے U235 سے ٹکرا کر دو نیوٹرون پیدا ہوتے ہیں . یہ پاس کے U238 کے ایٹم میں گھس کر رک جاتے ہیں اور پلوٹونیم کا ایٹم بن جاتا ہے . اس کڑی کو جاری رکھنے کے لئے گریفائٹ کی دیوار یورینیم کے چاروں طرف لگانی پڑی. مکھی کے چھتے کے آکار کا گریفائٹ کا ایک بڑا گھروندا بنایا گیا اور اسمیں صاف کی ہوئی یورینیم کی پولی نلیاں رکھدی گئیں . گنت سے یہ پہلے ہی معلوم کرلیا گیا تھا کہ گھروندے کے خانے گنتی میں کتنے اور کس شکل اور ناپ کے ہونے چاہئے . نیوٹرون بننے کی کڑی کی چال کو قابو میں رکھنے کے لئے کیڈمیم (Cadmium) کی ٹھوس پنسلیں یورینیم کی نلیوں میں رکھدی گئیں. اس تتو کا سوبھاؤ ہے کہ یہ نیوٹرون کو سوکھ لیتا ہے . ان پنسلوں کو آگے اور باہر کرنے سے یہ کڑی تیز یا دھیمی کیجا سکتی تھی .

اس گھروندے کا نام ایٹمی ڈھیری (Atomic Pile) رکھا گیا . بہت ڈرتے ڈرتے شکاگو ودیا پیٹھ (Chicago University) کے میدان میں سائنس والوں نے اس پریوگ کو شروع کیا اور انکی خوشی کا ٹھکانہ نہ رہا جب یہ ڈھیری کام دینے لگی . جو گرمی

पैदा होती थी उस को पानी से ठंडा कर दिया जाता था वरना सब धातु पिघल कर बह जाती. यह भी देखा गया कि इस तरह पकाने पर यूरेनियम की नलियों में प्लूटोनियम की मात्रा ज़्यादा हो गई. यह रसायनिक क्रिया (Chemical means) से निकाल ली जाती थी पर साथ ही ऐसी ऐसी ख़तरनाक गैसें भी बनने लगीं जिन से ऐटमी किरनें (Atomic rays) निकलती थीं. यह बहुत ही ख़तरनाक थीं. इनसे बचने की तरकीबें भी सोची जाने लगीं.

दूसरे रेगिस्तान में बहुत बड़े पैमाने पर यह ऐटम ढेरी बनाई गई. जो प्लूटोनियम बना उस से वह ताक़तवर बम बनाया गया जिस ने नागासाकी (Nagasaki) के लोहे के कारख़ानों के जमघट का सफ़ाया कर दिया. यह U235 वाले बम से, जो हिरोशिमा पर गिरा था, ज़्यादा ताक़तवर था.

ऐटम बम की खोज में अमरीका ने 800 करोड़ रुपए ख़र्च किये. जितने इन्जीनियर, रसायन शास्त्री (Chemists), भौतिक शास्त्री (Physicists) और गनित शास्त्री (Mathematicians) मिल सके उन सब को उनका काम छुड़वा कर इस प्रयोग में लगा दिया गया. जिस सामान की ज़रूरत हुई वह हासिल किया गया. रेगिस्तान में तीन शहर इस काम को गुप्त रूप से करने वालों के लिये बना दिये गये. अमरीका के सब पन बिजली घरों की ताक़त भी इसी में लगा दी गई. ऐटमी ढेरी में कितनी गरमी और ताक़त पैदा होती होगी इस का अंदाज़ा आप इस बात से लगा लीजिये कि बड़ी ऐटमी ढेरी को ठंडा रखने के लिये कोलोरेडो (Colorado) दरिया का पानी काम में लाया जाता था. यह गरम पानी इतनी मात्रा

پیدا ہوتی تھی اُس کو پانی سے ٹھنڈا کر دیا جاتا تھا ورنہ سب دھاتو پگھل کر بہ جاتی۔ یہ بھی دیکھا گیا کہ اِسطرح پکانے پر یورینیم کی نلیوں میں پلوٹونیم کی ماترا زیادہ ہوگئی۔ یہ رسایئنک کریا (Chemical means) سے نکال لی جاتی تھی پر ساتھ ہی ایسی ایسی خطرناک گیسیں بھی بننے لگیں جن سے ایٹمی کرنیں (Atomic rays) نکلتی تھیں۔ یہ بہت ہی خطرناک تھیں ان سے بچنے کی ترکیبیں بھی سوچی جانے لگیں۔

دوسرے ریگستان میں بہت بڑے پیمانے پر یہ ایٹم ڈھیری بنائی گئی۔ جو پلوٹونیم بنا اُس سے وہ طاقتور بم بنایا گیا جس نے ناگاساکی (Nagasaki) کے لوہے کے کارخانوں کے جمگھٹ کا صفایا کر دیا۔ یہ U235 والے بم سے، جو ہیروشما پر گرا تھا، زیادہ طاقتور تھا۔

ایٹم بم کی کھوج میں امریکہ نے 800 کروڑ روپئے خرچ کئے۔ جتنے انجینیر، رساین شاستری (Chemists)، بھوتک شاستری (Physicists) اور گنت شاستری (Mathematicians) مل سکے اُن سب کو اُنکا کام چھڑوا کر اس پریوگ میں لگا دیا گیا۔ جس سامان کی ضرورت ہوئی وہ حاصل کیا گیا۔ ریگستان میں تین شہر اس کام کو گپت روپ سے کرنے والوں کے لئے بنا دیئے گئے۔ امریکہ کے سب پن بجلی گھروں کی طاقت بھی اسی میں لگادی گئی۔ ایٹمی ڈھیری میں کتنی گرمی اور طاقت پیدا ہوتی ہوگی اسکا اندازہ آپ اِس بات سے لگا لیجئے کہ بڑی ایٹمی ڈھیری کو ٹھنڈا رکھنے کے لئے کولوریڈو (Colorado) دریا کا پانی کام میں لایا جاتا تھا۔ یہ گرم پانی اتنی ماترا

में दरिया में वापस गिरता था कि उस दरिया का सारा पानी गरम रहने लगा. उस में से जो ऐटमी ज़हर पानी में मिले तो पानी किसी और काम के लिये बेकार हो गया.

इस खोज को गुप चुप रखने के लिये अमरीका ने करोड़ों रुपया खर्च किया. ऐटमी काम करने वाले और उनके घर वाले न तो कहीं जा सकते थे न किसी बाहर वाले से मिल सकते थे. खुफ़िया पुलिस हज़ारों की तादाद में कारखानों के चारों तरफ़ पहरा देती थी. कागज़ का एक रद्दी टुकड़ा भी कोई अपने साथ नहीं ले जा सकता था. आपस में कोई बातचीत ऐसी नहीं हो सकती थी जो इस काम पर रोशनी डाले.

इतना सब कुछ करने पर भी रूस के जासूस ऐटम बम की कुछ खास तरकीबें मालूम कर के उड़ा ले गये. उन में से एक ऐसा आदमी था जो एक निगाह में ही किसी कागज़ पर लिखी हुई चीज़ याद कर लेता था और बाहर वही चीज़ लिख कर भेज देता था. जो जो जासूसी चालें आज भी चली जा रही हैं अगर वह लिखी जांय तो मनोरंजक से मनोरंजक कहानी, जो अब तक लिखी गई है, फीकी मालूम पड़ेगी.

इस खोज में कितना खतरा है इसका तो शायद आप को अंदाज़ा भी नहीं हो सकता. ऐटम बम गिराने से लोगों पर जो असर होता है वह सब उन पर भी हो सकता है जो ऐटमी खोज में लगे हुए हैं. ऐटमी ढेर के आस पास हवा और पानी में न्यूट्रोन उड़ते रहते हैं. पास जाना जान से हाथ धोना है. सारा काम कलों से किया जाता है. काम करने वाले सीमेन्ट के एक ऐसे बंद कमरे में रहते हैं जहाँ

میں دریا میں واپس گرتا تھا کہ اس دریا کا سارا پانی گرم رہنے لگا. اُس میں سے جو ایٹمی زھر پانی میں ملے تو پانی کسی اور کام کے لئے بیکار ھوگیا.

اس کھوج کو گپ چپ رکھنے کے لئے امریکہ نے کروڑوں روپیہ خرچ کیا. ایٹمی کام کرنے والے اور اُن کے گھر والے نہ تو کہیں جا سکتے تھے نہ کسی باھر والے سے مل سکتے تھے. خفیہ پولیس ھزاروں کی تعداد میں کارخانوں کے چاروں طرف پہرا دیتی تھی. کاغذ کا ایک ردی ٹکڑا بھی کوئی اپنے ساتھ نہیں لے جا سکتا تھا. آپس میں کوئی بات چیت ایسی نہیں ھوسکتی تھی جو اِس کام پر روشنی ڈالے.

اِتنا سب کچھ کرنے پر بھی روس کے جاسوس ایٹم بم کی کچھ خاص ترکیبیں معلوم کر کے اُڑا لے گئے. اُن میں سے ایک ایسا آدمی تھا جو ایک نگاہ میں ھی کسی کاغذ پر لکھی ھوئی چیز یاد کر لیتا تھا اور باھر وھی چیز لکھ کر بھیج دیتا تھا. جو جو جاسوسی چالیں آج بھی چلی جا رھی ھیں اگر وہ لکھی جائیں تو منورنجک سے منورنجک کہانی ' جو اب تک لکھی گئی ھے ' پھیکی معلوم پڑیگی.

اِس کھوج میں کتنا خطرہ ھے اِس کا تو شاید آپ کو اندازہ بھی نہیں ھوسکتا. ایٹم بم گرانے سے لوگوں پر جو اثر ھوتا ھے وہ سب اُن پر بھی ھوسکتا ھے جو ایٹمی کھوج میں لگے ھوئے ھیں. ایٹمی ڈھیر کے آس پاس ھوا اور پانی میں نیوٹرون اُڑتے رھتے ھیں. پاس جانا جان سے ھاتھ دھونا ھے. سارا کام کلوں سے کیا جاتا ھے. کام کرنے والے سیمنٹ کے ایک ایسے بند کمرے میں رھتے ھیں جہاں

चारों तरफ़ यंत्र ही यंत्र लगे रहते हैं. यह यंत्र न्यूट्रोन के आने के ख़तरे की सूचना दे देते हैं. इन को जीगर काउंटर (Geiger-Couneter) कहते हैं. सांस लेने के लिये जो हवा कमरे में जाती है वह भी मशीनों के ज़रिये साफ़ की जाती है. इस पर भी काम करने वालों को ऐसी बीमारियाँ हो जाती हैं जिन का कोई इलाज नहीं. एक साइन्स वाले का हाथ किसी ग़लती से एक ऐसी मशीन के सामने एक पल के लिये आ गया जिस में से न्यूट्रोन की धार बड़ी ज़ोर से निकल रही थी. देखते ही देखते हाथ सूख गया और राख हो गया. साथ ही पांच मिनट के अंदर सारा शरीर राख की ढेरी बन कर रह गया. न आग निकली न धूआं.

यहां उन मशीनों और यंत्रों का ज़िकर नहीं किया गया जो इस खोज के वास्ते बनाये गये. उन का ज़िकर फिर कभी किया जायगा.

मैं जानता हूँ, एक दिन आयेगा जब सब लोग एक दूसरे से हिल मिल कर रहेंगे; जैसे आसमान में तारे रहते हैं, जब एक को दूसरे की बातें संगीत की तरह मीठी लगेंगी; जब सभी आदमी आज़ाद होंगे और अपनी अपनी आज़ादी में महान होंगे.

—गोर्की.

چاروں طرف یَنتر ہی یَنتر لگے رہتے ہیں. یہ یَنتر نیوٹرون کے آنے کے خطرے کی سوچنا دے دیتے ہیں. ان کو جیجر کونٹر (Geiger-Counter) کہتے ہیں. سانس لینے کے لئے جو ہوا کمرے میں جاتی ہے وہ بھی مشینوں کے ذریعے صاف کی جاتی ہے. اس پر بھی کام کرنے والوں کو ایسی بیماریاں ہوجاتی ہیں جنکا کوئی علاج نہیں. ایک سائنس والے کا ہاتھ کسی غلطی سے ایک ایسی مشین کے سامنے ایک پل کے لئے آگیا جس میں سے نیوٹرون کی دھار بڑی زور سے نکل رہی تھی. دیکھتے ہی دیکھتے ہاتھ سوکھ گیا اور راکھ ہوگیا. ساتھ ہی پانچ منٹ کے اندر سارا شریر راکھ کی ڈھیری بنکر رہ گیا. نہ آگ نکلی نہ دھواں.

یہاں اُن مشینوں اور یَنتروں کا ذکر نہیں کیا گیا جو اس کھوج کے واسطے بنائے گئے. اُن کا ذکر پھر کبھی کیا جائیگا.

میں جانتا ہوں، ایکدن آئیگا جب سب لوگ ایک دوسرے سے ہل مل کر رہینگے؛ جیسے آسمان میں تارے رہتے ہیں، جب ایک کو دوسرے کی باتیں سنگیت کی طرح میٹھی لگینگی؛ جب سبھی آدمی آزاد ہونگے اور اپنی اپنی آزادی میں مہان ہونگے.

—گورکی

٤

लेवी यानी ग़ल्ला वसूली

(भाई सैयद ख़्वाजा वकील, हैदराबाद दक्खिन)

आज कल की 'ग़ल्लावसूली' पर बहस करने से पहले हमें हिन्दुस्तान की पुरानी तारीख़ पर एक निगाह डालना ज़रूरी है. हिन्दुस्तान में आर्यों की भी कई सदियों की तारीख़ नहीं मिलती. तारीख़ लिखने की शुरुआत इस मुल्क में शायद महाभारत से होती है. कन्नड़ ज़बान की तारीख़ से पता चलता है कि ईसा से चौदह सौ साल पहले महाभारत की लड़ाई हुई थी. दूसरी तारीख़ों का कहना है कि महाभारत का युद्ध ईसा से एक हज़ार साल पहले लड़ा गया. कुछ भी हो, आर्य लोग जब हिन्दुस्तान आये उस वक़्त उनका सब धन दौलत केवल मवेशी और ग़ल्ला था. कोई राजा नहीं होता था. हर ख़ानदान का बड़ा बूढ़ा सब कुछ होता था. बहुत दिनों के बाद पंचायत से राजा का चुनाव होने लगा. लेकिन अगर हम ईसा से छै सौ साल पहले के हिन्दुस्तान को देखते हैं तो जगह जगह रजवाड़े नज़र आते हैं. शायद उसी ज़माने से राजा और प्रजा का सम्बन्ध शुरू हुआ. मौर्य ख़ानदान से पहले के माली संगठन के सम्बन्ध में तारीख़ चुप है. जो घटनाएँ मिलती हैं वह केवल मौर्य ख़नदान की मिलती हैं.

इस तरह हमारे लेख का आरम्भ ईसा से ३२१ साल पहले राजा चन्द्रगुप्त से होता है. इस राजा के ज़माने से राजा प्रजा का सम्बन्ध

لیوی یعنی غلہ وصولی

(بھائی سید خواجہ وکیل، حیدرآباد دکھن)

آجکل کی 'غلہ وصولی' پر بحث کرنے سے پہلے ہمیں ہندستان کی پرانی تاریخ پر ایک نگاہ ڈالنا ضروری ہے. ہندستان میں آریوں کی بھی کئی صدیوں کی تاریخ نہیں ملتی. تاریخ لکھنے کی شروعات اس ملک میں شاید مہابھارت سے ہوتی ہے. کنڑ زبان کی تاریخ سے پتہ چلتا ہے کہ عیسیٰ سے چودہ سو سال پہلے مہابھارت کی لڑائی ہوئی تھی. دوسری تاریخوں کا کہنا ہے کہ مہابھارت کا یدھ عیسیٰ سے ایک ہزار سال پہلے لڑا گیا. کچھ بھی ہو، آریہ لوگ جب ہندستان آئے اس وقت ان کا سب دھن دولت کیول مویشی اور غلہ تھا. کوئی راجہ نہیں ہوتا تھا. ہر خاندان کا بڑا بوڑھا سب کچھ ہوتا تھا. بہت دنوں کے بعد پنچایت سے راجہ کا چناؤ ہونے لگا. لیکن اگر ہم عیسیٰ سے چھ سو سال پہلے کے ہندستان کو دیکھتے ہیں تو جگہ جگہ رجواڑے نظر آتے ہیں. شاید اسی زمانے سے راجہ اور پرجا کا سمبندھ شروع ہوا. موریہ خاندان سے پہلے کے مالی سنگٹھن کے سمبندھ میں تاریخ چپ ہے. جو گھٹنائیں ملتی ہیں وہ کیول موریہ خاندان کی ملتی ہیں.

اس طرح ہمارے لیکھ کا آرمبھ عیسیٰ سے ۳۲۱ سال پہلے راجہ چندرگپت سے ہوتا ہے. اس راجہ کے زمانے سے راجہ پرجا کا سمبندھ

और मालगुज़ारी की वसूली का प्रमान मिलता है. यूनानी राजदूत मैगस्थनीज़ ने लिखा है:

"इस देश में तमाम ज़मीन राजा की है. किसान सारी पैदावार का चौथा हिस्सा बादशाह को देता है. सिंचाई की क़ीमत भी मुक़र्रर है. तरी की ज़मीन पर पैदावार के महसूल के अलावा भी महसूल वसूल किया जाता है. इनके अलावा और किसी तरह का महसूल नहीं है. किसान लड़ाई के ज़माने में भी निहायत शान्ति से खेती करता है. किसानों की हालत बहुत अच्छी है."

मैगस्थनीज़ ने यह भी लिखा है कि—"राजा चन्द्र गुप्त के समय में देश का इन्तज़ाम चलाने के लिये छै समितियाँ बनी हुई थीं. उनमें से एक का काम जिन्स का भाव मुक़र्रर करना था."

इस ख़ानदान की हुकूमत मगध देस में ईसा से ७२ साल पहले तक रही है. हमको यह समझना चाहिये कि इस ख़ानदान के आख़िरी राजा तक लगान की यही हालत रही होगी. उस ज़माने में दक्खिनी हिन्द में कुछ रियासतें थीं लेकिन उन पर कोई रोशनी नहीं पड़ती.

हिन्दू राजाओं के ज़माने में गांव ही रोज़गार के मरकज़ थे. ज़मीन बांटी नहीं जाती थी. सारे कुन्बे की मिल्कियत एक ही में होती थी. सरकारी मालगुज़ारी वसूल करके देना गाँव वालों के ज़िम्मे था.

दक्खिन में सबसे मशहूर और बड़ी हुकूमत विजयानगर की हुई है. उसमें मालगुज़ारी की वसूली का यह तरीक़ा था कि पैदावार

اور مالگزاری کی وصولی کا پرمان ملتا ھے. یونانی راج دوت میگستھنیز نے لکھا ھے:

"اس دیش میں تمام زمین راجہ کی ھے. کسان ساری پیداوار کا چوتھا حصہ بادشاہ کو دیتا ھے. سینچائی کی قیمت بھی مقرر ھے. تری کی زمین پر پیداوار کے محصول کے علاوہ بھی محصول وصول کیا جاتا ھے. ان کے علاوہ اور کسی طرح کا محصول نہیں ھے. کسان لڑائی کے زمانے میں بھی نہایت شانتی سے کھیتی کرتا ھے. کسانوں کی حالت بہت اچھی ھے."

میگستھنیز نے یہ بھی لکھا ھے کہ—"راجہ چندرگپت کے سمے میں دیش کا انتظام چلانے کے لئے چھ سمیتیاں بنی ہوئی تھیں. ان میں سے ایک کا کام جنس کا بھاؤ مقرر کرنا تھا."

اس خاندان کی حکومت مگدھ دیس میں عیسیٰ سے ۷۲ سال پہلے تک رھی ھے. ھم کو یہ سمجھنا چاھئے کہ اس خاندان کے آخری راجہ تک لگان کی یہی حالت رھی ھوگی. اس زمانے میں دکھنی ھند میں کچھ ریاستیں تھیں لیکن ان پر کوئی روشنی نہیں پڑتی.

ھندو راجاؤں کے زمانے میں گاؤں ھی روزگار کے مرکز تھے. زمین بانٹی نہیں جاتی تھی. سارے کنبے کی ملکیت ایک ھی میں ھوتی تھی. سرکاری مالگزاری وصول کرکے دینا گاؤں والوں کے ذمہ تھا.

دکھن میں سب سے مشہور اور بڑی حکومت وجیا نگر کی ھوئی ھے. اس میں مالگزاری کی وصولی کا یہ طریقہ تھا کہ پیداوار

के तीस हिस्से किये जाते थे. जिनमें से किसान को पन्द्रह हिस्से, जमींदार को साढ़े सात हिस्से, सरकार को पाँच हिस्से, ब्राह्मनों को डेढ़ हिस्सा और देवस्थान को एक हिस्सा दिया जाता था. सरकारी महसूल 'पायेगा' वसूल करते थे. उनको जागीरें मिली थीं और वह राजा की मदद के लिये फ़ौज भी रखते थे.

उत्तर में या दक्खिन में हिन्दू राजाओं के ज़माने में ज़मीन की नाप या 'धाराबन्दी' का और मालगुज़ारी की नक़द रक़म मुक़र्रर किये जाने का कहीं पता नहीं चलता. लेकिन सरकार को पैदावार के हिस्से मिलते रहे हैं. मरहटा और पेशवाई हकूमत में ज़मीन की नाप का पता चलता है. लेकिन मालगुज़ारी की नक़द रक़म वसूलने का कहीं बयान नहीं है. दोनों हकूमतों में ज़मीन के नापे जाने का ख़याल इसलिये होता है क्योंकि रियासत हैदराबाद में बन्दोबस्त के जो क़ायदे लागू हैं उनमें अकसर शब्द मरहठी हैं. जैसे धाराबन्दी, पटवारी, परतबन्दी, जमींदार वग़ैरा.

जो भी हो हिन्दू राजाओं के ज़माने में मालगुज़ारी नक़द रुपये की सूरत में वसूल होना नहीं पाया जाता.

आठवीं सदी ईसवी में मुहम्मद क़ासिम हिन्दुस्तान आया. ज़मीन का महसूल हिन्दू राजाओं से वसूल करा के उसने तीन फ़ी-सदी ब्राह्मनों को दिया. यह तरीक़ा पहले से जारी था लेकिन सिन्ध की फ़तह के बाद बन्द हो गया था. जब मुहम्मद क़ासिम ने अपने फ़तह किये हुए इलाक़ों का नये सिरे से माली प्रबन्ध किया तो ब्राह्मनों का हक़ फिर से जारी हुआ.

کے تیس حصے کئے جاتے تھے۔ جن میں سے کسان کو پندرہ حصے، زمیندار کو ساڑھے سات حصے، سرکار کو پانچ حصے، براہمنوں کو ڈیڑھ حصہ اور دیوستھان کو ایک حصہ دیا جاتا تھا۔ سرکاری محصول 'پائے گا' وصول کرتے تھے۔ اُن کو جاگیریں ملی تھیں اور وہ راجہ کی مدد کے لئے فوج بھی رکھتے تھے۔

اتر میں یا دکھن میں ہندو راجاؤں کے زمانے میں زمین کی ناپ یا 'دھارا بندی' کا اور مالگزاری کی نقد رقم مقرر کئے جانے کا کہیں پتہ نہیں چلتا۔ لیکن سرکار کو پیداوار کے حصے ملتے رہے ہیں۔ مرہٹہ اور پیشوائی حکومت میں زمین کی ناپ کا پتہ چلتا ہے لیکن مالگزاری کی نقد رقم وصولنے کا کہیں بیان نہیں ہے۔ دونوں حکومتوں میں زمین کے ناپے جانے کا خیال اس لئے ہوتا ہے کیونکہ ریاست حیدرآباد میں بندوبست کے جو قاعدے لاگو ہیں اُن میں اکثر شبد مرہٹی ہیں۔ جیسے دھارا بندی، پٹواری، پرت بندی، زمیندار وغیرہ۔

جو بھی ہو ہندو راجاؤں کے زمانے میں مالگزاری نقد روپے کی صورت میں وصول ہونا نہیں پایا جاتا۔

آٹھویں صدی عیسوی میں محمد قاسم ہندستان آیا۔ زمین کا محصول ہندو راجاؤں سے وصول کراکے اُس نے تین فیصدی براہمنوں کو دیا۔ یہ طریقہ پہلے سے جاری تھا لیکن سندھ کی فتح کے بعد بند ہوگیا تھا۔ جب محمد قاسم نے اپنے فتح کئے ہوئے علاقوں کا نئے سرے سے مالی پربندھ کیا تو براہمنوں کا حق پھر سے جاری ہوا۔

अलाउद्दीन खिलजी (१२९५-१३१६ ई० के ज़माने में हिन्दुस्तान में जमीन की नाप हुई और मालगुज़ारी मुक़र्रर कर दी गई. इसके अलावा इंसानी जीवन के लिये ज़रूरी चीज़ों की क़ीमत भी मुक़र्रर की गई और ऐसे कड़े क़ानून बनाये गये कि बनियों और सौदागरों की मजाल नहीं थी कि तै की हुई सरकारी क़ीमत से एक दमड़ी भी ज्यादा दाम लें. हर जगह ग़ल्ला जमा किया जाता था. महँगाई और लड़ाई के ज़माने में रिआया और फ़ौज को पहले के भाव से ग़ल्ला दिया जाता था. अलाउद्दीन एक अनपढ़ बादशाह था. लेकिन उसने घूस ख़ोरी और शराब बिलकुल बन्द कर दी थी.

इबराहीम ख़ाँ लोदी के ज़माने में ग़ल्ला इतना सस्ता हुआ कि ज़मींदार मालगुज़ारी नक़दी की सूरत में नहीं दे सकते थे और सरकार को ग़ल्ला देने में ख़ुश थे.

शेरशाह के ज़माने में मालगुज़ारी के क़ायदे बनाये गये. नये सिरे से ज़मीन की नाप हुई.

अकबर का वज़ीर राजा टोडर मल मालगुज़ारी के मामले का माहिर था. अकबर का मालगुज़ारी का क़ानून "टोडरमल का दस्तूर" कहलाता है. ज़मीन की एक समान नाप करने के बाद हर खेत की हैसियत और सिंचाई के साधन वग़ैरा की जांच होती थी और औसत पैदावार फ़ी बीघा तै कर के मालगुज़ारी मुक़र्रर की जाती थी. यह मालगुज़ारी पैदावार का आठवाँ, सातवाँ, चौथा और कहीं कहीं अधिक से अधिक तीसरा हिस्सा ली जाती थी. किसानों को पूरा अधिकार था कि मालगुज़ारी के रूप में ग़ल्ला दें या बाज़ार भाव

علاؤالدین خلجی (۱۲۹۵-۱۳۱۶ء) کے زمانے میں ہندستان میں زمین کی ناپ ہوئی اور مالگزاری مقرر کر دی گئی. اس کے علاوہ انسانی جیون کے لئے ضروری چیزوں کی قیمت بھی مقرر کی گئی اور ایسے کڑے قانون بنائے گئے کہ بنئیوں اور سوداگروں کی مجال نہیں تھی کہ طے کی ہوئی سرکاری قیمت سے ایک دمڑی بھی زیادہ دام لیں. ہر جگہ غلہ جمع کیا جاتا تھا. مہنگائی اور لڑائی کے زمانے میں رعایا اور فوج کو پہلے کے بھاؤ سے غلہ دیا جاتا تھا. علاؤالدین ایک ان پڑھ بادشاہ تھا. لیکن اس نے گھوس خوری اور شراب بالکل بند کردی تھی.

ابراہیم خاں لودی کے زمانے میں غلہ اتنا سستا ہوا کہ زمیندار مالگزاری نقدی کی صورت میں نہیں دے سکتے تھے اور سرکار کو غلہ دینے میں خوش تھے.

شیر شاہ کے زمانے میں مالگزاری کے قاعدے بنائے گئے. نئے سرے سے زمین کی ناپ ہوئی.

اکبر کا وزیر راجہ ٹوڈرمل مالگزاری کے معاملے کا ماہر تھا. اکبر کا مالگزاری کا قانون "ٹوڈرمل کا دستور" کہلاتا ہے. زمین کی ایک سمان ناپ کرنے کے بعد ہر کھیت کی حیثیت اور سینچائی کے سادھن وغیرہ کی جانچ ہوتی تھی اور اوسط پیداوار فی بیگھہ طے کرکے مالگزاری مقرر کی جاتی تھی. یہ مالگزاری پیداوار کا آٹھواں، ساتواں، چوتھا اور کہیں کہیں ادھک سے ادھک تیسرا حصہ لی جاتی تھی. کسانوں کو پورا ادھیکار تھا کہ مالگزاری کے روپ میں غلہ دیں یا بازار بھاؤ

से नक़द रक़म अदा करें. वसूली करने वालों को सख़्त हुक्म था कि यह बात बिलकुल रिआया की इच्छा पर छोड़ दें चाहे वह लगान ग़ल्ले की सूरत में, अदा करे या नक़द रक़म की सूरत में. हर चीज़ का सरकारी भाव मुक़र्रर होता था. अकबर के ज़माने में अनाज बहुत सस्ता था. सस्ती के होते हुए भी अकबर के ज़माने में हिन्दुस्तान की सालाना मालगुज़ारी इक्कीस करोड़ शाही रुपये जो थी अंगरेज़ी रुपये के साढ़े सैंतीस करोड़ के बराबर है.

आज सारे हिन्दुस्तान की ख़ालिस मालगुज़ारी इतनी नहीं है. काबुल और कन्धार सूबों की मालगुज़ारी २१ करोड़ में शामिल नहीं थी.

औरंगज़ेब ने अकबरी क़ानून में कुछ फेर बदल की जिसका नतीजा यह हुआ कि ख़ालिस मालगुज़ारी ६० करोड़ रुपये सालाना हो गई. अफ़सरों और वज़ीरों को जो नज़राने दिये जाते थे उनको घूसख़ोरी का एक ढंग समझ कर उसने बन्द कर दिया. इस से रिशवत ख़ोरी बिलकुल बन्द हो गई. औरंगज़ेब के ज़माने में सादा जीवन बसर करने वाले ओहदेदार और अमीर ईमानदार समझे जाते थे. बाद में कुछ मौलवियों की ज़िद पर आलमगीर ने जिन्स का भाव मुक़र्रर करना बन्द कर दिया था.

चौदहवीं, पन्द्रहवीं सदी ईसवी में दक्खिन में आम तौर से सिर्फ़ पैदावार का दसवाँ हिस्सा बतौर मालगुज़ारी वसूल किया जाता था. हम कह सकते हैं कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी के हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा जमाने तक ऐसा ही तरीक़ा मालगुज़ारी का जारी रहा होगा.

उत्तर हिन्द में कम्पनी के क़ब्ज़े से कुछ पहले मालगुज़ारी की

سے نقد رقم ادا کریں . وصولی کرنے والوں کو سخت حکم تھا کہ یہ بات بالکل رعایا کی اچھا پر چھوڑ دیں چاہے وہ لگان غلے کی صورت میں ادا کرے یا نقد رقم کی صورت میں . ہر چیز کا سرکاری بھاؤ مقرر ہوتا تھا . اکبر کے زمانے میں اناج بہت سستا تھا . سستی کے ہوتے ہوئے بھی اکبر کے زمانے میں ہندستان کی سالانہ مالگزاری اکیس کروڑ شاہی روپیہ تھی جو انگریزی روپے کے ساڑھے سینتیس کروڑ کے برابر ہے .

آج سارے ہندستان کی خالص مالگزاری اتنی نہیں ہے . کابل اور قندھار صوبوں کی مالگزاری ۲۱ کروڑ میں شامل نہیں تھی .

اورنگزیب نے اکبری قانون میں کچھ پھیر بدل کی جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ خالص مالگزاری ۶۰ کروڑ روپیہ سالانہ ہوگئی . افسروں اور وزیروں کو جو نذرانے دیئے جاتے تھے اُن کو گھوس خوری کا ایک ڈھنگ سمجھکر اُس نے بند کر دیا . اِس سے رشوت خوری بالکل بند ہوگئی . اورنگ زیب کے زمانے میں سادہ جیون بسر کرنے والے عہدے دار اور امیر ایماندار سمجھے جاتے تھے . بعد میں کچھ مولویوں کی ضد پر عالمگیر نے جنس کا بھاؤ مقرر کرنا بند کر دیا تھا .

چودھویں ، پندرھویں صدی عیسوی میں دکھن میں عام طور سے صرف پیداوار کا دسواں حصہ بطور مالگزاری وصول کیا جاتا تھا . ہم کہہ سکتے ہیں کہ ایسٹ انڈیا کمپنی کے ہندستان پر قبضہ جمانے تک ایسا ہی طریقہ مالگزاری کا جاری رہا ہوگا .

اُتر ہند میں کمپنی کے قبضے سے کچھ پہلے مالگزاری کی

वसूली का इजारा दिया जाने लगा था. इसका नतीजा यह हुआ कि गत्तेदार (ठेकेदार) रिआया से ज्यादा रक़म वसूल करने लगे. यह गत्ता दस साल के लिये हर गाँव का अलग अलग दिया जाता था. बाद में कम्पनी सरकार ने इस ढंग को इसलिये पसन्द नहीं किया क्योंकि इस से ज़मींदारों को मौरूसी हक़ पैदा होने लगे थे.

लार्ड कार्नवालिस के ज़माने में दोबरसी 'गत्ता' दिया जाने लगा. उससे कम्पनी को और भी नुक़सान हुआ. उसी गवरनर जनरल ने सन् १७९३ ई० में बंगाल का हमेशा का बन्दोबस्त किया. धारा यानी सरकारी हिस्सा बहुत ज्यादा मुक़र्रर हुआ. मगर ज़मींदारों ने ज़मीन को तरक़्क़ी देकर रिआया से और भी ज्यादा लगान वसूल करना शुरू कर दिया और उनको जागीरदारी हक़ पैदा हो गये. इस तरह १७९३ ई० से हिन्दुस्तान में ग़ल्ले की सूरत में मालगुज़ारी वसूल करने का रिवाज ख़तम हो गया और मालगुज़ारी की रक़म ज़मीन की हैसियत के लिहाज़ से नक़द मुक़र्रर हुई. तरी, ख़ुश्की की एकड़ वारी धाराबन्दी मुक़र्रर कर के किसान से सिर्फ़ नक़द रक़म वसूल की जाने लगी.

जब आसफ़जाह अव्वल दक्खिन के सूबेदार हुए तो तमाम हिन्दुस्तान में मुग़लों के क़ब्ज़े में २२ सूबे थे. जिनमें से हैदराबाद, बीदर, औरंगाबाद, बीजापुर, बुरहानपुर, फ़तहपुर (ख़ानदेस) और तारागढ़ सात सूबे आसफ़िया सलतनत के क़ब्ज़े में थे. इस सलतनत में भी नवाब नासिरुद्दौला के वक़्तों तक मालगुज़ारी पैदावार के हिस्से के रूप में मुक़र्रर थी. राजा चन्दूलाल के बड़े वज़ीर होने के

وصولی کا اجارہ دیا جانے لگا تھا ۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ گتےدار (ٹھیکے دار) رعایا سے زیادہ رقم وصول کرنے لگے ۔ یہ گتہ دس سال کے لئے ہر گاؤں کا الگ الگ دیا جاتا تھا ۔ بعد میں کمپنی سرکار نے اس ڈھنگ کو اس لئے پسند نہیں کیا کیونکہ اس سے زمینداروں کو موروثی حق پیدا ہونے لگے تھے ۔

لارڈ کارنوالس کے زمانے میں دو برسی 'گتہ' دیا جانے لگا ۔ اس سے کمپنی کو اور بھی نقصان ہوا ۔ اسی گورنر جنرل نے سن ۱۷۹۳ع میں بنگال کا ہمیشہ کا بندوبست کیا ۔ دھارا یعنی سرکاری حصہ بہت زیادہ مقرر ہوا ۔ مگر زمینداروں نے زمین کو ترقی دے کر رعایا سے اور بھی زیادہ لگان وصول کرنا شروع کر دیا اور اُن کو جاگیرداری حق پیدا ہوگئے ۔ اس طرح ۱۷۹۳ع سے ہندستان میں غلے کی صورت میں مالگزاری وصول کرنے کا رواج ختم ہوگیا اور مالگزاری کی رقم زمین کی حیثیت کے لحاظ سے نقد مقرر ہوئی ۔ تری ، خشکی کی ایکڑواری دھارابندی مقرر کر کے کسان سے صرف نقد رقم وصول کی جانے لگی ۔

جب آصفجاہ اول دکھن کے صوبیدار ہوئے تو تمام ہندستان میں مغلوں کے قبضے میں ۲۲ صوبے تھے ۔ جن میں سے حیدرآباد ، بیدر ، اورنگ آباد ، بیجاپور ، برہانپور ، فتح پور (خاندیس) اور تاراگڈھ سات صوبے آصفیہ سلطنت کے قبضے میں تھے ۔ اس سلطنت میں بھی نواب ناصرالدولہ کے وقتوں تک مالگزاری پیداوار کے حصے کے روپ میں مقرر تھی ۔ راجہ چندو لال کے بڑے وزیر ہونے کے

समय कम्पनी सरकार के मालगुज़ारी क़ानून के अनुसार मालगुज़ारी का इजारा दिया जाने लगा जो एक एक ताल्लुक़ा (सूबा) का अलग अलग दिया जाता था और गत्तेदार ताल्लुक़ेदार कहलाते थे. राजा चन्दूलाल के बाद नवाब सालारजंग अव्वल बड़े वज़ीर बने और उन्होंने नये ढंग से ज़िला बन्दी और मालगुज़ारी क़ानून का सुधार किया. इजारेदारी को बन्द कर दिया और एकड़वारी तरी और ख़ुश्की की अलग अलग मालगुज़ारी मुक़र्रर करके पटेल, पटवारी के ज़रिये वसूल किये जाने का इन्तज़ाम किया. यहाँ भी नई ज़िला बन्दी से पहले ग़ल्ला हमेशा सस्ता रहा है. अबदुल्ला क़ुतुबशाह के ज़माने की एक घटना है कि क़हत होते हुए भी चावल एक हुन यानी चार रुपये आठ आने का तीन मन बिकता था और अकाल से पहले एक हुन का बारह मन मिलता था.

हमें यक़ीन है कि मालगुज़ारी की वसूली का पुराना तरीक़ा ही बिला जोखम है, इससे काफ़ी ग़ल्ला सरकार को वसूल हो सकता है. इस तरह किसान से ख़रीदने की ज़रूरत भी नहीं होगी और कन्ट्रोल या वसूली की दिक़्क़त भी न होगी. लैवी और कन्ट्रोल से जनता को कोई आराम नहीं मिलता है और न महँगाई दूर होती है. हम मान लेते हैं कि सरकार ने कन्ट्रोल और लैवी का तरीक़ा जनता के फ़ायदे के लिये जारी किया है. लेकिन इसको क्या किया जाये कि ज़माने की हालत हकूमत का साथ नहीं दे रही है, वजह इसकी यह है कि लैवी देने वालों को अमले की बेईमानी से ग़ल्ले की पूरी क़ीमत नहीं मिलती और न ज़रूरत के वक़्त मिलती है. इससे रिआया सरकार से सौदा करने से डरती है. दूसरी बात

سے کمپنی سرکار کے مالگزاری قانون کے انوسار مالگزاري کا اجارہ دیا جانے لگا جو ایک ایک تعلقہ (صوبہ) کا الگ الگ دیا جاتا تھا اور گتےدار تعلقہدار کہلاتے تھے. راجہ چندو لال کے بعد نواب سالار جنگ اول بڑے وزیر بنے اور اُنہوں نے نئے ڈھنگ سے ضلع بندی اور مالگزاری قانون کا سدھار کیا. اجارہ داري کو بند کر دیا اور ایکڑ واری تری اور خشکي کي الگ الگ مالگزاري مقرر کر کے پٹیل ، پٹواری کے ذریعے وصول کئے جانے کا انتظام کیا. یہاں بھی نئي ضلع بندی سے پہلے غلہ ہمیشہ سستا رہا ہے. عبداللہ قطب شاہ کے زمانے کی ایک گھٹنا ہے کہ قحط ہوتے ہوئے بھي چاول ایک ھن یعني چار روپیہ آٹھ آنے کا ۳ من بکتا تھا اور اکال سے پہلے ایک ھن کا بارہ من ملتا تھا.

ہمیں یقین ہے کہ مالگزاري کی وصولی کا پرانا طریقہ ہی بلا جوکھم ہے. اِس سے کافی غلہ سرکار کو وصول ہوسکتا ہے. اِس طرح کسان سے خریدنے کی ضرورت بھی نہیں ہوگي اور کنٹرول یا وصولی کي دقت بھی نہ ہوگی. لیوی اور کنٹرول سے جنتا کو کوئی آرام نہیں ملتا ہے اور نہ مہنگائی دور ہوتی ہے. ہم مان لیتے ہیں کہ سرکار نے کنٹرول اور لیوي کا طریقہ جنتا کے فائدے کے لئے جاري کیا ہے. لیکن اِس کو کیا کیا جائے کہ زمانے کی حالت حکومت کا ساتھ نہیں دے رہي ہے ، وجہ اِس کي یہ ہے کہ لیوي دینے والوں کو عملے کي بے ایماني سے غلے کی پوری قیمت نہیں ملتی اور نہ ضرورت کے وقت ملتی ہے. اِس سے رعایا سرکار سے سودا کرنے سے ڈرتی ہے. دوسري بات

यह भी है कि इस लेवी को रिआया एक जब्र की चीज़ समझती है. इसीलिये ज़रूरत के मुताबिक़ ग़ल्ला वसूल नहीं होता.

मेरा ख़्याल है कि कन्ट्रोल, लेवी वग़ैरा की इस्कीमों से कहीं बेहतर यह होगा कि मालगुज़ारी ग़ल्ले की सूरत में ली जाने लगे. इस से नतीजा यह निकलेगा कि खुद ज़मींदार, किसान और थोक वाले अपना अपना माल बाज़ार में बिला डर लायेंगे और ग़ल्ला सस्ता हो जायगा.

सरकार जितना ग़ल्ला बाहर से ख़रीदती है और लेवी में वसूल करती है, मेरा ख़्याल है उससे कई गुना ग़ल्ला ज़्यादा वसूल हो जायगा. चोर बाज़ारी ख़तम हो जायगी. और सरकार जनता के लिये सौदागरों और ज़मींदारों की मोहताज न रहेगी.

---

३० जनवरी १९४८

आज वह शमा बुझ गई जिस से,
रोशनी दिल की कायनात में थी.
मौत ने उस को हम से छीन लिया,
ज़िन्दगी जिस की बात बात में थी.

—'वामिक़' जौनपुरी

یہ بھی ہے کہ اِس لیوی کو رعایا ایک جبر کی چیز سمجھتی ہے. اسی لئے ضرورت کے مطابق غلہ وصول نہیں ہوتا.

میرا خیال ہے کہ کنٹرول، لیوی وغیرہ کی اسکیموں سے کہیں بہتر یہ ہوگا کہ مالگزاری غلے کی صورت میں لی جانے لگے. اِس سے نتیجہ یہ نکلے گا کہ خود زمیندار، کسان اور تھوک والے اپنا اپنا مال بازار میں بے ڈر لائینگے اور غلہ سستا ہو جائے گا.

سرکار جتنا غلہ باہر سے خریدتی ہے اور لیوی میں وصول کرتی ہے، میرا خیال ہے اُس سے کئی گنا غلہ زیادہ وصول ہوجائیگا. چور بازاری ختم ہوجائے گی اور سرکار جنتا کے لئے سوداگروں اور زمینداروں کی محتاج نہ رہے گی.

---

۳۰ جنوری ۱۹۴۸

آج وہ شمع بجھ گئی جس سے،
روشنی دل کی کائنات میں تھی.
موت نے اُس کو ہم سے چھین لیا،
زندگی جس کی بات بات میں تھی.

—'وامق' جونپوری

चली मशीन चली

(भाई अहमद नदीम क़ासिमी)

एक बटन कुछ कहकर तड़पा, सारा ढांचा जागा,
चक्कर की रफ़्तार चुराकर पुरज़ा पुरज़ा भागा.
रेशे रेशे रस दौड़ाकर चटकी एक कली.
चली मशीन चली !

लोहा जब लोहे को काटे ठना ठना ठन बोले,
उचक उचक कर चोटें मारे शोलों के पर तोले.
मिल के चारों खूंट बिखेरे तानें भली भली.
चली मशीन चली !

हम तपते फ़ौलाद के टुकड़े एक रौ में दौड़ायें,
जैसे एक क़तार में सज कर दिये दमकते जायें.
जैसे चांद बहे झरने में बन कर डली डली.
चली मशीन चली !

धात के एक तोदे को हमने गाला और उछाला,
अपनी जवानी देकर हमने इस का रंग उजाला.
एक किया जब खून पसीना तब यह कील ढली.
चली मशीन चली !.

چلی مشین چلی

(بھائی احمد ندیم قاسمی)

ایک بٹن کچھ کہکر تڑپا' سارا ڈھانچا جاگا'
چکر کی رفتار چرا کر پرزہ پرزہ بھاگا .
ریشے ریشے رس دوڑا کر چٹکی ایک کلی .
چلی مشین چلی !

لوہا جب لوہے کو کاٹے ٹھنا ٹھنا ٹھن بولے'
اُچک اُچک کر چوٹیں مارے شعلوں کے پر تولے.
مل کے چاروں کھونٹ بکھیرے تانیں بھلی بھلی.
چلی مشین چلی !

ہم تپتے فولاد کے ٹکڑے اک رو میں دوڑائیں'
جیسے ایک قطار میں سج کر دئے دمکتے جائیں.
جیسے چاند بہے جھرنے میں بن کر ڈلی ڈلی.
چلی مشین چلی !

دھات کے اِک تودے کو ہمنے گالا اور اُچھالا'
اپنی جوانی دیکر ہمنے اِس کا رنگ اُجالا .
ایک کیا جب خون پسینہ تب یہ کیل ڈھلی.
چلی مشین چلی !

फ़ील ढली तो सोना बन कर मिल मालिक तक पहुँची,
अपनी उजरत बढ़ते बढ़ते आखिर 'दिक़' तक पहुँची.
जल को जगाने वाली मछली तेल में आन तली.
चली मशीन चली !

हम मज़दूर, किसान, क़ुली, शायर, मुंशी, हरकारे,
जग की रौनक़ हमसे, हम ही जग में फिरें बेचारे.
बिकती है सौ रूप बना कर मेहनत गली गली.
चली मशीन चली !

एक धुरे से उड़ा शरारा, एक चक्कर में घूमा,
इस चक्कर ने धन दौलत के अंबारों को चूमा.
अंगारों से फूल झड़े, कुछ ऐसी आग जली.
चली मशीन चली !

माज़ी की 'तारीख़' का सारा धोका आँखें झपके,
दुनिया भरके मेहनत कश एक लशकर बनकर लपके.
कोई पुकारे "हैया हैया" कोई "अली अली."
चली मशीन चली !

एक बटन कुछ कहकर तड़पा, सारा ढांचा जागा,
चक्कर की रफ़्तार चुराकर पुरज़ा पुरज़ा भागा.
रेशे रेशे रस दौड़ाकर चटकी एक कली.
चली मशीन चली !

کول ڈھلی تو سونا بنکر مل مالک تک پہنچی،
اپنی اُجرت بڑھتے بڑھتے آخر 'دق' تک پہنچی.
جل کو جگانے والی مچھلی تیل میں آن تلی.
چلی مشین چلی !

ہم مزدور، کسان، قلی، شاعر، منشی، ہرکارے،
جگ کی رونق ہمسے، ہم ہی جگ میں پھریں بیچارے.
بکتی ہے سو روپ بناکر محنت گلی گلی.
چلی مشین چلی !

ایک دھرے سے اُڑا شرارا، اک چکر میں گھوما،
اِس چکر نے دھن دولت کے انباروں کو چوما.
انگاروں سے پھول جھڑے، کچھ ایسی آگ جلی.
چلی مشین چلی !

ماضی کی 'تاریخ' کا سارا دھوکا آنکھیں جھپکے،
دنیا بھر کے محنت کش اِک لشکر بنکر لپکے.
کوئی پکارے "ھیا ھیا" کوئی "علی علی".
چلی مشین چلی !

ایک بٹن کچھ کہکر تڑپا، سارا ڈھانچا جاگا،
چکر کی رفتار چرا کر پرزہ پرزہ بھاگا.
ریشے ریشے رس دوڑا کر چٹکی ایک کلی.
چلی مشین چلی !

अमल की ज़रूरत

(भाई गंगा सागर गुप्त)

नासिक में पिछले महीने कांगरेस का जो सालाना जलसा हुआ वह कई मानों में बहुत ही अहम था. कांगरेस के नये सद्र के चुनाव से पहले और चुनाव में जो गरमागरमी दिखाई पड़ी थी वह नासिक के कांगरेस अधिवेशन में भी बनी रही. इस गरमा-गरमी का एक खास कारन वह ग़लत फ़हमी थी जो कांगरेस के नये सद्र बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन और भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के अलग अलग विचारों को लेकर फैल गई थी. हालांकि चुनाव से पंडित नेहरू ने कोई सीधा सम्बन्ध न रखा था फिर भी अख़बारों में बार बार नेहरू जी का नाम आने लगा था और फ़िरक़ापरस्त अख़बार कहने लगे थे कि टंडन जी की जीत पंडित नेहरू की नीति की हार होगी. ऐसा कहने वाले यह बातें बेसबब नहीं कह रहे थे. उन्हें अपनी बातों में वज़न दिखाई देता था और अपनी दलीलों में ज़ोर नज़र आता था. देहली की रिफ़्यूजी कानफ़रेन्स में टंडन जी ने जो भाषन दिया था और भाषा व संस्कृति के बारे में टंडन जी अक्सर जो बातें कहते रहे थे उन्हें लेकर महासभाई अख़बारों ने यह समझ लिया था कि टंडन जी पंडित नेहरू के मुक़ाबले में श्यामाप्रसाद मुखर्जी के अधिक निकट हैं और अहिंसा के बारे में गांधी जी से मतभेद और रायफ़ल क्लब वग़ैरा की बातें लेकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वालों ने यह समझ रखा था कि

عمل کی ضرورت

(بھائی گنگا ساگر گپت)

ناسک میں پچھلے مہینے کانگریس کا جو سالانہ جلسہ ہوا وہ کئی معنوں میں بہت ہی اہم تھا . کانگریس کے نئے صدر کے چناؤ سے پہلے اور چناؤ میں جو گرما گرمی دکھائی پڑی تھی وہ ناسک کے کانگریس ادھیویشن میں بھی بنی رہی. اِس گرما گرمی کا ایک خاص کارن وہ غلط فہمی تھی جو کانگریس کے نئے صدر بابو پرشوتم داس ٹنڈن اور بھارت کے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو کے الگ الگ وچاروں کو لے کر پھیل گئی تھی . حالانکہ چناؤ سے پنڈت نہرو نے کوئی سیدھا سمبندھ نہ رکھا تھا پھر بھی اخباروں میں بار بار نہرو جی کا نام آنے لگا تھا اور فرقہ پرست اخبار کہنے لگے تھے کہ ٹنڈن جی کی جیت پنڈت نہرو کی نیتی کی ہار ہوگی . ایسا کہنے والے یہ بات بے سبب نہیں کہہ رہے تھے . انہیں اپنی باتوں میں وزن دکھائی دیتا تھا اور اپنی دلیلوں میں زور نظر آتا تھا . دہلی کی ریفیوجی کانفرنس میں ٹنڈن جی نے جو بھاشن دیا تھا اور بھاشا و سنسکرتی کے بارے میں ٹنڈن جی اکثر جو باتیں کہتے رہے تھے اُنہیں لے کر مہاسبھائی اخباروں نے یہ سمجھ لیا تھا کہ ٹنڈن جی پنڈت نہرو کے مقابلے میں شیاما پرساد مکرجی کے ادھک نکٹ ہیں اور اہنسا کے بارے میں گاندھی جی سے مت بھید اور رائفل کلب وغیرہ کی باتیں لیکر راشٹری سویم سیوک سنگھ والوں نے یہ سمجھ رکھا تھا کہ

टंडन जी को उनका फ़िरक़ावाराना संगठन कांगरेस सेवादल से अधिक प्यारा है. लेकिन नासिक में कांगरेस के सद्र की हैसियत से टंडन जी ने जो भाषन दिया उससे जहाँ उन फ़िरक़ापरस्तों की सारी आशाओं पर पानी फिर गया वहीं उन कांगरेस वालों ने संतोष की सांस ली जो नेहरू जी की साम्प्रदायिकता दुशमन नीति के समर्थक हैं, जो सभ्यता और संस्कृति (तहज़ीब और तमद्दुन) के सम्बंध में उनके उदार विचारों को सही समझते हैं और जो भारत के धर्म निर्पेक्ष यानी ग़ैर मज़हबी राज में विश्वास रखते हैं.

चुनाव के बाद ही टंडन जी कह चुके थे कि वह कांगरेस की परम्परा को बनाये रखेंगे फिर भी चुनाव में टंडन जी के कामयाब होने पर जब नेहरू जी ने देखा कि टंडन जी के कांगरेसी साथियों से अधिक ख़ुशी महासभा और संघ के कैम्पों में मनाई जा रही है तो उन्होंने इसे देश के लिये एक ख़तरनाक लच्छन समझ कर अख़बारों को एक बयान दिया जिसमें उन्हों ने नासिक कांगरेस में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों से यह मांग की कि वह नासिक में साफ़ साफ़ एलान कर दें कि कांगरेस की पालिसी आगे क्या होगी और कांगरेस किस रास्ते को अपनायेगी.

नेहरू जी ने अपने बयान में हिन्द सरकार की विदेशी और आर्थिक नीति के बारे में भी कांगरेस प्रतिनिधियों से मांग की कि वह उनकी नीति की तसदीक़ करें. लेकिन नेहरू जी जानते थे कि उनकी विदेशी या आर्थिक नीति से देश को कोई ख़ास मतभेद नहीं है इस लिये उन्होंने उस सवाल को ख़ास तौर पर सामने रक्खा

ٹنڈن جی کو اُن کا فرقہ‌وارانہ سنگٹھن کانگریس سیوا دل سے ادھک پیارا ہے ۔ لیکن ناسک میں کانگریس کے صدر کی حیثیت سے ٹنڈن جی نے جو بھاشن دیا اُس سے جہاں فرقہ پرستوں کی ساری آشاؤں پر پانی پھر گیا وہیں اُن کانگریس والوں نے سنتوش کی سانس لی جو نہرو جی کی سامپردایکتا دشمن نیتی کے سمرتھک ہیں، جو سبھیتا اور سنسکرتی (تہذیب اور تمدن) کے سمبندھ میں اُنکے اُدار وچاروں کو صحیح سمجھتے ہیں اور جو بھارت کے دھرم نرپیکش یعنی غیر مذہبی راج میں وشواس رکھتے ہیں ۔

چناؤ کے بعد ہی ٹنڈن جی کہہ چکے تھے کہ وہ کانگریس کی پرمپرا کو بنائے رکھیں گے. پھر بھی چناؤ میں ٹنڈن جی کے کامیاب ہونے پر جب نہرو جی نے دیکھا کہ ٹنڈن جی کے کانگریسی ساتھیوں سے ادھک خوشی مہاسبھا اور سنگھ کے کیمپوں میں منائی جارہی ہے تو اُنہوں نے اِسے دیش کے لئے ایک خطرناک لچھن سمجھکر اخباروں کو ایک بیان دیا جس میں اُنہوں نے ناسک کانگریس میں شامل ہونے والے پرتی‌ندھیوں سے یہ مانگ کی کہ وہ ناسک میں صاف صاف اعلان کردیں کہ کانگریس کی پالیسی آگے کیا ہوگی اور کانگریس کس راستے کو اپنائیگی ۔

نہرو جی نے اپنے بیان میں ہند سرکار کی ودیشی اور آرتھک نیتی کے بارے میں بھی کانگریس پرتیندھیوں سے مانگ کی کہ وہ اُنکی نیتی کی تصدیق کریں ۔ لیکن نہروجی جانتے تھے کہ اُنکی ودیشی یا آرتھک نیتی سے دیش کو کوئی خاص مت بھید نہیں ہے اسلئے اُنہوں نے اُس سوال کو خاص طور پر سامنے رکھا

जो आज देश के लिये सब से बड़ा ख़तरा बन गया है और जिससे देश को बचाना बहुत ज़रूरी है. यह सवाल है मुल्क में बढ़ती हुई फ़िरक़ापरस्ती का. उन्होंने साफ़ साफ़ कहा :—

"कांगरेस हर मोरचे पर फ़िरक़ापरस्ती से लड़ी थी लेकिन जब से देश का बँटवारा हुआ है तब से साम्प्रदायिकता और पुराने पन की तरफ़ जाने की बातों को बढ़ावा मिलता रहा है. यह चीज़ धीरे धीरे कांगरेस में भी घुस गई है और कभी कभी इसका असर सरकार की पालिसी पर भी पड़ा है. हो सकता है कि भारत में साम्प्रदायिकता का इस तरह फैलना पाकिस्तान की बढ़ती हुई फ़िरक़ापरस्ती का असर हो पर यह कोई सही दलील नहीं है. पाकिस्तान चाहे कुछ भी करे, हमारा धर्म यह है कि भारत के अलग अलग धर्मों और फ़िरक़ों में बड़ी सख़्ती के साथ निष्पक्षता बरतें और उन्हें तरक़्क़ी करने का बराबर का मौक़ा दें. आज के उलझाव और झूठे सिद्धान्तों के ख़तरे के कारन यह बहुत ज़रूरी हो गया है कि कांगरेस इस मामले में अपनी पालिसी बहुत साफ़ और खुले शब्दों में तय कर दे.

अपरैल में भारत और पाकिस्तान में जो समझौता हुआ है उसमें एक ऐसी नीति काम कर रही है जिस पर, मैं जिस मैदान में भी काम करूँ, पूरी ताक़त से अमल करूँगा. बदक़िस्मती से पाकिस्तान में और हम में बहुत से मतभेद हैं, जो बँटवारे ने हमें दिये हैं. मुझे आशा है कि हम उन्हें हल कर लेंगे. लेकिन इन मत भेदों पर सिर्फ़ राजकाजी निगाह से विचार होना चाहिये और साम्प्रदायिकता को इस में कोई दख़ल न होना चाहिये.

हम बार बार एलान कर चुके हैं कि हमारा राज ग़ैर मज़हबी है. आज के ज़माने में जो राज ज़रा सा भी तरक़्क़ी पसन्द होगा वह लाज़िमी तौर पर ग़ैर मज़हबी होगा. भारत

جو آج دیش کے لئے سب سے بڑا خطرہ بن گیا ہے اور جس سے دیش کو بچانا بہت ضروری ہے . یہ سوال ہے ملک میں بڑھتی ہوئی فرقہ پرستی کا . انہوں نے صاف صاف کہا :—

''کانگریس ہر مورچے پر فرقہ پرستی سے لڑی تھی لیکن جب سے دیش کا بٹوارہ ہوا ہے تب سے سامپردایکتا اور پرانے پن کی طرف جانے کی باتوں کو بڑھاوا ملتا رہا ہے . یہ چیز دھیرے دھیرے کانگریس میں بھی گھس گئی ہے اور کبھی کبھی اسکا اثر سرکار کی پالیسی پر بھی پڑا ہے . ہو سکتا ہے کہ بھارت میں سامپردایکتا کا اس طرح پھیلنا پاکستان کی بڑھتی ہوئی فرقہ پرستی کا اثر ہو پر یہ کوئی صحیح دلیل نہیں ہے . پاکستان چاہے کچھ بھی کرے ، ہمارا دھرم یہ ہے کہ بھارت کے الگ الگ دھرموں اور فرقوں میں بڑی سختی کے ساتھ نشپکشتا برتیں اور انہیں ترقی کرنے کا برابر کا موقع دیں . آج کے الجھاؤ اور جھوٹے سدھانتوں کے خطرے کے کارن یہ بہت ضروری ہو گیا ہے کہ کانگریس اس معاملے میں اپنی پالیسی بہت صاف اور کھلے شبدوں میں طے کردے .

اپریل میں بھارت اور پاکستان میں جو سمجھوتہ ہوا ہے اس میں ایک ایسی نیتی کام کر رہی ہے جس پر ، میں جس میدان میں بھی کام کروں ، پوری طاقت سے عمل کروں گا . بدقسمتی سے پاکستان میں اور ہم میں بہت سے مت بھید ہیں ، جو بٹوارے نے ہمیں دیئے ہیں . مجھے آشا ہے کہ ہم انہیں حل کر لینگے . لیکن ان مت بھیدوں پر صرف راج کاجی نگاہ سے وچار ہونا چاہئیے اور سامپردایکتا کو اس میں کوئی دخل نہ ہونا چاہئیے .

ہم بار بار اعلان کرچکے ہیں کہ ہمارا راج غیر مذہبی ہے . آج کے زمانے میں جو راج ذرا بھی ترقی پسند ہوگا وہ لازمی طور پر غیر مذہبی ہوگا . بھارت

जैसे देश का राज, जिसमें पीढ़ियों से बहुत से धर्मों के मानने वाले रहे हैं, जब तक धर्म निर्पेक्ष न हो, आज के ज़माने में सन्तोष जनक ढंग से काम कर ही नहीं सकता. हमारे सारे काम इसी नीति के अनुसार होने चाहियें और सरकार को चाहिये कि जहाँ तक हो सके इसको बढ़ावा दे. पाकिस्तान से मतभेद होने के कारन हम अकसर इस बात को भूल गये हैं और पाकिस्तान के फ़िरक़ावाराना नारे और काम का हम पर असर पड़ता रहा है. यह रास्ता हमको ख़तरे की तरफ़ ले जाता है. हमें अपने यहाँ के कमगिनत लोगों के साथ बिलकुल ऐसा ही बरताव करना चाहिये जैसा कि हम बहुगिनत लोगों के साथ करते हैं. केवल अच्छा बरताव करना ही काफ़ी नहीं है. हमें उन्हें महसूस कराना है कि उनके साथ अच्छा बरताव होता है. हमारा यह चाहना बिलकुल सही है कि पाकिस्तान भी ऐसा ही करे और हमारी यह शिकायत ठीक है कि पाकिस्तान ने ऐसा नहीं किया. लेकिन पाकिस्तान जो भी करे, हमारा फ़र्ज़ है कि हम हर फ़िरक़े के साथ एक सा बरताव करें. हमें कमगिनत लोगों के डर और सन्देहों को साफ़ कर देना चाहिये और याद रखना चाहिये कि इस की ज़िम्मेदारी हमेशा कमगिनतों से अधिक बहुगिनतों पर होती है."

नेहरू जी के इस बयान ने कांगरेस के उन लोगों को सोचने के लिये मजबूर कर दिया जो कांगरेस में रह कर कांगरेस के पवित्र आदर्शों से दूर होते जा रहे थे, जिन्होंने फ़िरक़ापरस्ती का नाश करने के लिये देशपिता महात्मा गांधी के बलिदान पर शोक तो मनाया था पर अब गांधी जी के सिद्धान्तों को भूल कर उसी फ़िरक़ा-परस्ती के गढ़े में गिरते जा रहे थे. नेहरू जी की चेतावनी ने उन्हें

جیسے دیش کا راج، جس میں پیڑھیوں سے بہت سے دھرموں کے ماننے والے رہے ہیں، جب تک دھرم نرپکش نہ ہو، آج کے زمانے میں سنتوش جنک ڈھنگ سے کام کر ہی نہیں سکتا. ہمارے سارے کام اسی نیتی کے انوسار ہونے چاہئیں اور سرکار کو چاہئے کہ جہاں تک ہوسکے اس کو بڑھاوا دے. پاکستان سے مت بھید ہونے کے کارن ہم اکثر اس بات کو بھول گئے ہیں اور پاکستان کے فرقہ وارانہ نعرے اور کام کا ہم پر اثر پڑتا رہا ہے. یہ راستہ ہم کو خطرے کی طرف لے جاتا ہے. ہمیں اپنے یہاں کے کم گنت لوگوں کے ساتھ بالکل ایسا ہی برتاؤ کرنا چاہئے جیسا کہ ہم بہو گنت لوگوں کے ساتھ کرتے ہیں. کیول اچھا برتاؤ کرنا ہی کافی نہیں ہے. ہمیں انہیں محسوس کرانا ہے کہ انکے ساتھ اچھا برتاؤ ہوتا ہے. ہمارا یہ چاہنا بالکل صحیح ہے کہ پاکستان بھی ایسا ہی کرے اور ہماری یہ شکایت ٹھیک ہے کہ پاکستان نے ایسا نہیں کیا. لیکن پاکستان جو بھی کرے، ہمارا فرض ہے کہ ہم ہر فرقے کے ساتھ ایک سا برتاؤ کریں. ہمیں کم گنت لوگوں کے ڈر اور سندیہوں کو صاف کردینا چاہئے اور یاد رکھنا چاہئے کہ اس کی ذمہ داری ہمیشہ کم گنتوں سے ادھک بہو گنتوں پر ہوتی ہے."

نہرو جی کے اس بیان نے کانگریس کے اُن لوگوں کو سوچنے کے لئے مجبور کر دیا جو کانگریس میں رہکر کانگریس کے پوتر آدرشوں سے دور ہوتے جا رہے تھے، جنھوں نے فرقہ پرستی کا ناش کرنے کے لئے دیش پتا مہاتما گاندھی کے بلیدان پر شوک تو منایا تھا پر اب گاندھی جی کے سدھانتوں کو بھول کر اسی فرقہ پرستی کے گڑھے میں گرتے جارہے تھے. نہرو جی کی چیتاونی نے انہیں

एक दम चौंका दिया. उन्हें नेहरू जी की बानी में वही आवाज़ सुनाई दी जो ३० जनवरी १९४८ को बिरला भवन में खामोश हो गई थी.

महात्मा गांधी भी तो यही कहते थे. उन्हों ने भी तो हमेशा यही कहा था कि बुराई का जवाब बुराई से नहीं देना चाहिये. पाकिस्तान बनने के बाद वह भी तो बराबर यही कहते रहे थे कि पाकिस्तान की बुराई की नक़ल करना हिन्द को फ़ायदा नहीं पहुंचा सकता. गांधी जी की ज़िन्दगी में उनकी बात नहीं सुनी गई. लेकिन आज वह नहीं हैं तो क़दम क़दम पर उनकी याद आती है. आज फिर देश की वही हालत हो रही है जो गांधी जी के समय थी. मार काट और दंगों का वह ज़ोर तो नहीं जो बटवारे के बाद था लेकिन साम्प्रदायिक और प्रतिक्रियावादी (रजअत पसन्द) शक्तियाँ फिर खुल कर मैदान में आ गई हैं. महासभा के लीडर फिर जगह जगह ज़हरीली बातें करने लगे हैं. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सरगरमियाँ फिर शुरू हो गई हैं. पुरबी बंगाल के दंगों को लेकर भारत की साम्प्रदायिक शक्तियों ने भारत भर में मारकाट का सिलसिला फिर से शुरू कराने की क्या क्या कोशिशें नहीं कीं और इस में तो कोई शक ही नहीं कि पच्छिमी बंगाल में बहुत कुछ और उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में उन्हें किसी हद तक सफलता भी मिल गई.

जब देश में हैवानियत का फिर दौर दौरा हो रहा था उस वक़्त हर शान्ति प्रेमी को महात्मा गांधी की याद आने लगी थी. भारत और पाकिस्तान का भविष्य फिर अंधकारमय दिखाई देने लगा था, कांग्रेस के अन्दर भी बहुत से लोग पाकिस्तान से जंग की बातें करने

ایکدم چونکا دیا. اُنھیں نہرو جی کی وانی میں وهی آواز سنائی دی جو ۳۰ جنوری ۱۹۴۸ کو برلا بھون میں خاموش ھوگئی تھی.

مہاتما گاندھی بھی تو یہی کہتے تھے. اُنھوں بھی تو ھمیشہ یہی کہا تھا کہ برائی کا جواب برائی سے نہیں دینا چاھئے. پاکستان بننے کے بعد وہ بھی تو برابر یہی کہتے رھے تھے کہ پاکستان کی برائی کی نقل کرنا هندکو فائدہ نہیں پہنچا سکتا. گاندھی جی کی زندگی میں اُنکی بات نہیں سنی گئی. لیکن آج وہ نہیں ھیں تو قدم قدم پر اُنکی یاد آتی ھے. آج پھر دیش کی وهی حالت ھو رھی ھے جو گاندھی جی کے سمے تھی. مار کاٹ اور دنگوں کا وہ زور تو نہیں جو بٹوارے کے بعد تھا لیکن سامپردایک اور پرتی کریا وادی (رجعت پسند) شکتیاں پھر کھلکر میدان میں آگئی ھیں. مہاسبھا کے لیڈر پھر جگہ جگہ زھریلی باتیں کرنے لگے ھیں. راشٹری سویم سیوک سنگھ کی سرگرمیاں پھر شروع ھوگئی ھیں. پوربی بنگال کے دنگوں کو لےکر بھارت کی سامپردایک شکتیوں نے بھارت بھر میں مار کاٹ کا سلسلہ پھر سے شروع کرانے کی کیا کیا کوششیں نہیں کیں اور اس میں تو کوئی شک ھی نہیں کہ پچھمی بنگال میں بہت کچھ اور اُتر پردیش و مدھیہ پردیش میں انھیں کسی حد تک سپھلتا بھی مل گئی.

جب دیش میں حیوانیت کا پھر دور دورہ ھو رھا تھا اُس وقت ھر شانتی پریمی کو مہاتما گاندھی کی یاد آنے لگی تھی. بھارت اور پاکستان کا بھوشیہ پھر اندھکار سے دکھائی دینے لگا تھا، کانگریس کے اندر بھی بہت سے لوگ پاکستان سے جنگ کی باتیں کرنے

लगे थे पर उस समय भी अगर कोई व्यक्ति शान्ति के उपाय सोच रहा था और भारत और पाकिस्तान में फैली बुराइयों को खतम करने के लिये शुद्ध गांधीवादी दृष्टिकोन से विचार कर रहा था तो वह हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू थे जिन्होंने दिल्ली में बैठ कर पाकिस्तान के वज़ीर आज़म मिस्टर लियाक़त अली खाँ से ठंड दिल से बातें की और एक समझौते के ज़रिये दोनों देशों में भड़कती हुई साम्प्रदायिक दंगों की आग को ठंडा कर दिया. इस समझौते का ही यह नतीजा था कि पूरबी और पच्छिमी दोनों बंगालों में एक दम शान्ति छा गई और न केवल अपना घर बार छोड़ कर भागने वाले अपने घरों में रुक गये बल्कि बहुत से लोग जो डर के मारे अपने घर छोड़ कर दूसरे देशों में चले गये थे फिर अपने घर वापस लौटने लगे.

आज भी पंडित जवाहर लाल नेहरू से भारत के साम्प्रदायिक लोग खुश नहीं हैं. मुसलमानों की बेजा तरफ़दारी का इलज़ाम लगा कर भोली हिन्दू जनता को उनके खिलाफ़ बहकाने की कोशिशें जारी हैं. पर नेहरू जी के इन विरोधियों को जनता पहचानती है. यही लोग थे जिन्हों ने राष्ट्र पिता को भी मुसलमानों का दोस्त और हिन्दुओं का दुश्मन कह कर ऐसा वातावरन पैदा कर दिया था कि एक हिन्दू नौजवान ने ही राष्ट्र पिता की जान ले ली. बँटवारे के बाद भी कांग्रेस के बहुत से लोग अपने दिमाग़ का समतोल खो बैठे थे पर बाद में उन्होंने महसूस किया कि ऐसा सोच कर वह भूल कर रहे थे. हिन्दू सभा और संघ के सुर में सुर मिलाकर उन्होंने उन साम्प्रदायिक संगठनों को तो कुछ बलशाली बना दिया पर इससे उनकी

لگے تھے پر اُس سمے بھی اگر کوئی ویکتی شانتی کے اُپائے سوچ رہا تھا اور بھارت اور پاکستان میں پھیلی برائیوں کو ختم کرنے کے لئے شدھ گاندھی وادی درشٹی کون سے وچار کر رہا تھا تو وہ ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو تھے جنھوں نے دلی میں بیٹھکر پاکستان کے وزیر اعظم مسٹر لیاقت علی خاں سے ٹھنڈے دل سے باتیں کیں اور ایک سمجھوتے کے ذریعے دونوں دیشوں میں بھڑکتی ہوئی سامپردایک دنگوں کی آگ کو ٹھنڈا کر دیا۔ اس سمجھوتے کا ہی یہ نتیجہ تھا کہ پوربی اور پچھمی دونوں بنگالوں میں ایک دم شانتی چھا گئی اور نہ کیول اپنا گھر بار چھوڑ کر بھاگنے والے اپنے گھروں میں رک گئے بلکہ بہت سے لوگ جو ڈر کے مارے اپنے گھر چھوڑ کر دوسرے دیشوں میں چلے گئے تھے پھر اپنے گھر واپس لوٹنے لگے۔

آج بھی پنڈت جواہر لال نہرو سے بھارت کے سامپردایک لوگ خوش نہیں ہیں۔ مسلمانوں کی بیجا طرفداری کا الزام لگا کر بھولی ہندو جنتا کو اُن کے خلاف بہکانے کی کوششیں جاری ہیں پر نہرو جی کے اِن ورودھیوں کو جنتا پہچانتی ہے۔ یہی لوگ تھے جنھوں نے راشٹرپتا کو بھی مسلمانوں کا دوست اور ہندوؤں کا دشمن کہکر ایسا واتاورن پیدا کر دیا تھا کہ ایک ہندو نوجوان نے ہی راشٹر پتا کی جان لے لی۔ بٹوارے کے بعد بھی کانگریس کے بہت سے لوگ اپنے دماغ کا سنتولن کھو بیٹھے تھے پر بعد میں اُنھوں نے محسوس کیا کہ ایسا سوچ کر وہ بھول کر رہے تھے۔ ہندو سبھا اور سنگھ کے سور میں سور ملا کر اُنھوں نے اُن سامپردایک سنگٹھنوں کو تو کچھ بل شالی بنا دیا پر اِس سے اُن کی

अपनी क़ौमी जमाअत में कमज़ोरी आ गई. बापू के बलिदान ने कितने ही क़दमों को ग़लत रास्ते से लौटा दिया था और आज जब ठीक वैसी ही मनोदशा अधिकतर कांग्रेसी जनों की हो रही थी तब पंडित जवाहर लाल नेहरू की चेतावनी ने उन्हें चौंकाया.

नासिक कांग्रेस की कारवाई इस बात का सबूत है कि देश अभी तक पंडित नेहरू की रहनुमाई में विश्वास रखता है और कांग्रेस वाले अभी इतने नीचे नहीं गिरे हैं कि अपने नेता की पुकार उन तक न पहुँच सके.

कांग्रेस में केवल नेहरू सरकार की विदेशी और आर्थिक नीति को ही मंज़ूर नहीं किया गया बल्कि हिन्द पाकिस्तान समझौते का भी समर्थन किया गया और साम्प्रदायिकता के ख़िलाफ़ नेहरू जी का प्रस्ताव भी मंज़ूर किया गया और कांग्रेस ने फिर एक बार यह साबित कर दिया कि वही सही मानों में भारत की जनता के हितों की रखवाली कर सकती है.

लेकिन अब एक सवाल यह पैदा होता है कि कांग्रेस ने फ़िरक़ा-परस्ती के ख़िलाफ़ नासिक में जो एलान जंग किया है उसमें नेहरू जी के साथ हिस्सा लेने के लिये कितने कांग्रेसी तैयार हैं. अगर सेना तैयार न हो तो अकेला सेनापति कुछ नहीं कर सकता. जिस ज़ोर शोर से फ़िरक़ापरस्तों ने नेहरू जी की साम्प्रदायिकता दुश्मन नीति का विरोध किया था उसी ज़ोर शोर से फ़िरक़ापरस्ती के ख़िलाफ़ प्रस्ताव पास करके कांग्रेस वालों ने मानो उनका चैलेंज क़बूल कर लिया है. लेकिन जिस तरह चोरबाज़ारी, घूस ख़ोरी और दलबन्दी

اپنی قومی جماعت میں کمزوری آگئی . باپو کے بلیدان نے کتنے ہی قدموں کو غلط راستے سے لوٹا دیا تھا اور آج جب ٹھیک ویسی ہی منودشا ادھک تر کانگریس جنوں کی ہو رہی تھی تب پنڈت جواہر لال نہرو کی چیتاؤنی نے انہیں چونکایا .

ناسک کانگریس کی کاروائی اس بات کا ثبوت ہے کہ دیش ابھی تک پنڈت نہرو کی رہنمائی میں وشواس رکھتا ہے اور کانگریس والے ابھی اتنے نیچے نہیں گرے ہیں کہ اپنے نیتا کی پکار اُن تک نہ پہنچ سکے .

کانگریس میں کیول نہرو سرکار کی ودیشی اور آرتھک نیتی کو ہی منظور نہیں کیا گیا بلکہ ہند پاکستان سمجھوتے کا بھی سمرتھن کیا گیا اور سامپرداییکتا کے خلاف نہرو جی کا پرستاو بھی منظور کیا گیا اور کانگریس نے پھر ایک بار یہ ثابت کر دیا کہ وہی صحیح معنوں میں بھارت کی جنتا کے ہتوں کی رکھوالی کر سکتی ہے .

لیکن اب ایک سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ کانگریس نے فرقہ پرستی کے خلاف ناسک میں جو اعلان جنگ کیا ہے اس میں نہرو جی کے ساتھ حصہ لینے کے لئے کتنے کانگریسی تیار ہیں . اگر سینا تیار نہ ہو تو اکیلا سیناپتی کچھ نہیں کر سکتا . جس زور شور سے فرقہ پرستوں نے نہرو جی کی سامپرداییکتا دشمن نیتی کا ورودھ کیا تھا اُسی زور شور سے فرقہ پرستی کے خلاف پرستاو پاس کر کے کانگریس والوں نے مانو اُن کا چیلنج قبول کر لیا ہے . لیکن جس طرح چور بازاری ، گھوس خوری اور دلبندی

के खिलाफ हर छोटा बड़ा कांगरेसी नेता बातें करके भी कांगरेस वालों के अन्दर से इन बुराइयों को दूर नहीं कर पाता उसी तरह कहीं कांगरेस के इस फ़ैसल के बाद भी नतीजा कुछ न निकले.

अगर ऐसा हुआ तो यह देश के लिये, कांगरेस के लिये और खुद कांगरेस वालों के लिये बड़ी खतरनाक बात होगी. अब ज़रूरत है कि हर कांगरेसी खूब सोच समझकर अपना रास्ता चुन ले. अगर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का बलिदान, पंडित जवाहर लाल नेहरू की दर्दभरी अपील और कांगरेस का फ़ैसला सही नहीं मालूम होता, अगर दरदर मारे मारे फिरने वाले दुखी पंजाबी, सिन्धी और बंगाली शरनार्थियों की दशा पर उसे तरस नहीं आता, अगर पिछले साम्प्रदायिक दंगों में उसे देश का कोई नुक़सान नहीं दिखाई देता और अगर वह ग़ैरमज़हबी जनराज के मुक़ाबले में किसी एक धर्म के लोगों का फ़ासिस्ट राज पसन्द करता है, अगर वह भारत के मुसलमानों को सताकर पाकिस्तान के हिन्दुओं को परेशान करने में राष्ट्र की कोई भलाई देखता है और पंडित नेहरू, सरदार पटेल और राजेन्द्र बाबू की जगह खरे, सावरकर और गोलवालकर को भारत का शासक देखना चाहता है तो उसे ईमानदारी से कांगरेस को छोड़ कर महासभा और संघ से नाता जोड़ लेना चाहिये. लेकिन अगर वह ऐसा नहीं समझता और उसे कांगरेस से प्रेम है, कांगरेस की परम्परा और कांगरेस के पवित्र आदर्शों में श्रद्धा है और कांगरेस के नेताओं पर विश्वास है तो उसे चाहिये कि वह एक छन की देर किये बिना साम्प्रदायिकता से मोरचा लेने के लिये रन में कूद पड़े.

کے خلاف ہر چھوٹا بڑا کانگریسی نیتا باتیں کر کے بھی کانگریس والوں کے اندر سے ان برائیوں کو دور نہیں کر پاتا اسی طرح کہیں کانگریس کے اس فیصلے کے بعد بھی نتیجہ کچھ نہ نکلے۔

اگر ایسا ہوا تو یہ دیش کے لئے، کانگریس کے لئے اور خود کانگریس والوں کے لئے بڑی خطرناک بات ہوگی۔ اب ضرورت ہے کہ ہر کانگریسی خوب سوچ سمجھکر اپنا راستہ چن لے۔ اگر راشٹر پتا مہاتما گاندھی کا بلیدان، پنڈت جواہر لال نہرو کی درد بھری اپیل اور کانگریس کا فیصلہ صحیح نہیں معلوم ہوتا، اگر در در مارے مارے پھرنے والے دکھی پنجابی، سندھی اور بنگالی شرنارتھیوں کی دشا پر اُسے ترس نہیں آتا، اگر پچھلے سامپردایک دنگوں میں اُسے دیش کا کوئی نقصان نہیں دکھائی دیتا اور اگر وہ غیر مذہبی جن راج کے مقابلے میں کسی ایک دھرم کے لوگوں کا فاسسٹ راج پسند کرتا ہے، اگر وہ بھارت کے مسلمانوں کو ستا کر پاکستان کے ہندؤوں کو پریشان کرنے میں راشٹر کی کوئی بھلائی دیکھتا ہے اور پنڈت نہرو، سردار پٹیل اور راجندر بابو کی جگہ کھرے، ساورکر اور گولوالکر کو بھارت کا شاسک دیکھنا چاہتا ہے تو اُسے ایمانداری سے کانگریس کو چھوڑ کر مہاسبھا اور سنگھ سے ناتا جوڑ لینا چاہئے۔ لیکن اگر وہ ایسا نہیں سمجھتا اور اُسے کانگریس سے پریم ہے، کانگریس کی پرمپرا اور کانگریس کے پوتر آدرشوں میں شردھا ہے اور کانگریس کے نیتاؤں پر وشواس ہے تو اُسے چاہئے کہ وہ ایک چھن کی دیر کئے بنا سامپردایکتا سے مورچہ لینے کے لئے رن میں کود پڑے۔

आज जनता को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है. जनता अपनी हर दिक़्क़त और हर कठिनाई के लिये सरकार को ज़िम्मेदार समझकर उससे नाराज़ है. जनता के इस असन्तोष और बेचैनी से लाभ उठाकर कांगरेस की विरोधी पारटियाँ जनता को कांगरेस और कांगरेस सरकार के ख़िलाफ़ उभारती हैं और अपना मतलब सीधा करना चाहती हैं. कांगरेस जनों को चाहिये कि वह जनता में घुसकर उसकी शिकायतें सुनें और उन्हें दूर करने की कोशिश करें. कांगरेस वालों को कई मोरचों पर लड़ना है. उनके मुक़ाबले में सोशलिस्ट भी आयेंगे और कम्युनिस्ट भी.

इनमें से हर एक अपने को जनता का दोस्त कहता है. आज कांगरेस की अपनी सरकार होने के कारन उन्हें सरकार की आलोचना करने में आसानी होती है. वैसी ही आसानी जैसी अंगरेज़ों के समय कांगरेस वालों को हुआ करती थी. लेकिन थोड़ी सी कोशिश करने पर कांगरेस वाले जनता को विश्वास दिला सकते हैं कि वह जनता के सब से बड़े दोस्त हैं. चोर बाज़ारी करने वालों, घूसख़ोरों और बेईमान सरकारी अफ़सरों का नाम तक मिटा देने का संकल्प करके कांगरेस जन जनता की बहुत सी कठिनाइयाँ दूर कर सकते हैं. लेकिन इसके लिये कांगरेस वालों को जनता के पास जाना होगा और कांगरेस सरकारें क़ायम होने के बाद से जनता से उनका सम्बंध जो टूट गया है उसे फिर से जोड़ना होगा. पुलिस के मामूली दारोग़ा तक से छोटे और बड़े कांगरेसी जिस तरह अभी लोगों की नाजायज़ सिफ़ारिशें करते हैं और जिसके कारन पुलिस की निगाह में कांगरेस वालों की कोई इज़्ज़त नहीं रही है, अगर हर कांगरेसी यह तय

آج جلتا کو بہت سی کٹھنائیوں کا سامنا کرنا پڑ رہا ھے . جلتا اپنی ھر دقت اور ھر کٹھنائی کے لئے سرکار کو ذمہ دار سمجھ کر اُس سے ناراض ھے . جلتا کے اس اسنتوش اور بے چینی سے لابھ اُٹھاکر کانگریس کی ورودھی پارٹیاں جلتا کو کانگریس اور کانگریس سرکار کے خلاف اُبھارتی ھیں اور اپنا مطلب سیدھا کرنا چاھتی ھیں . کانگریس جنوں کو چاھئے کہ وہ جلتا میں گھس کر اُسکی شکایتیں سنیں اور اُنھیں دور کرنے کی کوشش کریں . کانگریس والوں کو کئی مورچوں پر لڑنا ھے . اُنکے مقابلے میں سوشلسٹ بھی آئینگے اور کمیونسٹ بھی .

اِن میں سے ھر ایک اپنے کو جلتا کا دوست کہتا ھے . آج کانگریس کی اپنی سرکار ھونے کے کارن اُنھیں سرکار کی آلوچنا کرنے میں آسانی ھوتی ھے . ویسی ھی آسانی جیسی انگریزوں کے سمے کانگریس والوں کو ھوا کرتی تھی . لیکن تھوڑی سی کوشش کرنے پر کانگریس والے جلتا کو وشواس دلا سکتے ھیں کہ وہ جلتا کے سب سے بڑے دوست ھیں . چور بازاری کرنے والوں' گھوس خوروں اور بے ایمان سرکاری افسروں کا نام تک مٹا دینے کا سنکلپ کرکے کانگریس جن جلتا کی بہت سی کٹھنائیاں دور کر سکتے ھیں . لیکن اسکے لئے کانگریس والوں کو جلتا کے پاس جانا ھوگا اور کانگریس سرکاریں قایم ھونے کے بعد سے جلتا سے اُنکا سمبندھ جو ٹوٹ گیا ھے اُسے پھر سے جوڑنا ھوگا. پولیس کے معمولی داروغہ تک سے چھوٹے اور بڑے کانگریسی جسطرح ابھی لوگوں کی ناجائز سفارشیں کرتے ھیں اور جسکے کارن پولیس کی نگاہ میں کانگریس والوں کی کوئی عزت نہیں رھی ھے' اگر ھر کانگریسی یہ طے

करले कि वह पुलिस के काम में कोई दखल न देगा और उनसे कोई नाजायज़ काम न लेगा तो यही नहीं कि पुलिस की निगाह में उसकी इज़्ज़त बढ़ जायगी बल्कि कांग्रेस वालों पर एहसान करने के बदले में वह घूस खोरी वग़ैरा के रूप में जो नाजायज़ काम करते हैं वह भी बन्द हो जायंगे जिनका सीधा असर जनता पर पड़ता है.

लेकिन जिस मोरचे पर आज हर कांग्रेसी को सब से ज़्यादा हिम्मत और बहादुरी के साथ लड़ना है वह है साम्प्रदायिकता और ख़ास तौर से हिन्दू साम्प्रदायिकता का मोरचा. मुस्लिम फ़िरक़ा परस्ती आज मिट चुकी है. आज कोई मुसलमान मुस्लिम लीग की पिछली नीति को सही समझकर उसे अपनाने का साहस नहीं कर सकता. लेकिन मुस्लिम साम्प्रदायिकता की मौत के साथ ही हिन्दू साम्प्रदायिकता जिस भयानक रूप में उभरी है उसे मैं हिन्दुओं के लिये ही एक बहुत बड़ा ख़तरा समझता हूँ. मुस्लिम फ़िरक़ा परस्तों ने मौलाना हुसैन अहमद मदनी और मौलाना आज़ाद पर कीचड़ ही फेंकी थी लेकिन हिन्दू साम्प्रदायिकता ने राष्ट्र पिता की जान ही ले ली. बापू के बलिदान के बाद देश में महासभा और राष्ट्री स्वयं सेवक संघ के ख़िलाफ़ जो ग़ुस्सा और नफ़रत फैली थी, उस से डर कर यह साम्प्रदायिक संगठन अपने बिलों में जा घुसे थे. लेकिन धीरे धीरे जनता का ग़ुस्सा जब कम हुआ तो इन्हों ने फिर अपना सर उठाना शुरू कर दिया. कांग्रेस वाले चाहते तो बापू के बलिदान के बाद जनता में इन फ़िरक़ापरस्तों के ख़िलाफ़ उभरे हुए ग़ुस्से का फ़ायदा उठा कर फ़िरक़ापरस्ती का नाश कर सकते थे. आज भी अगर कांग्रेस वाले हिन्दू जनता को यह समझादें कि संघ और महासभा वाले वही लोग हैं जो हमेशा

کرلے کہ وہ پولیس کے کام میں کوئی دخل نہ دے گا اور اُن سے کوئی ناجائز کام نہ لے گا تو یہی نہیں کہ پولیس کی نگاہ میں اُسکی عزت بڑھ جائیگی بلکہ کانگریس والوں پر احسان کرنے کے بدلے میں وہ گھوس خوری وغیرہ کے روپ میں جو ناجائز کام کرتے ہیں وہ بھی بند ہو جائینگے جنکا سیدھا اثر جنتا پر پڑتا ہے۔

لیکن جس مورچے پر آج ہر کانگریسی کو سب سے زیادہ ہمت اور بہادری کے ساتھ لڑنا ہے وہ ہے سامپردایکتا اور خاص طور سے ھندو سامپردایکتا کا مورچہ۔ مسلم فرقہ پرستی آج مٹ چکی ہے۔ آج کوئی مسلمان مسلم لیگ کی پچھلی نیتی کو صحیح سمجھ کر اُسے اپنانے کا ساھس نہیں کر سکتا۔ لیکن مسلم سامپردایکتا کی موت کے ساتھ ہی ھندو سامپردایکتا جس بھیانک روپ میں اُبھری ہے اُسے میں ھندوؤں کے لئے ہی ایک بہت بڑا خطرہ سمجھتا ہوں۔ مسلم فرقہ پرستوں نے مولانا حسین احمد مدنی اور مولانا آزاد پر کیچڑ ہی پھینکی تھی لیکن ھندو سامپردایکتا نے راشٹر پتا کی جان ہی لے لی۔ باپو کے بلیدان کے بعد دیش میں مہاسبھا اور راشٹری سویم سیوک سنگھ کے خلاف جو غصہ اور نفرت پھیلی تھی اُس سے ڈرکر یہ سامپردایک سنگٹھن اپنے بلوں میں جا گھسے تھے۔ لیکن دھیرے دھیرے جنتا کا غصہ جب کم ہوا تو اُنھوں نے پھر اپنا سر اُٹھانا شروع کر دیا۔ کانگریس والے چاہتے تو باپو کے بلیدان کے بعد جنتا میں ان فرقہ پرستوں کے خلاف اُبھرے ہوئے غصے کا فائدہ اُٹھا کر فرقہ پرستی کا ناش کر سکتے تھے۔ آج بھی اگر کانگریس والے ھندو جنتا کو یہ سمجھا دیں کہ سنگھ اور مہاسبھا والے وہی لوگ ہیں جو ہمیشہ

आज़ादी की लड़ाई से भागते ही नहीं रहे बल्कि हमारे दुश्मनों की मदद करते रहे, यही लोग हैं जो ३० जनवरी सन ४८ को, जब सारा देश अपने राष्ट्र पिता के सोग में रो रहा था तो मिठाई बाँट कर ख़ुशी मना रहे थे और यही वह लोग हैं जो पहले पाकिस्तान पर चढ़ाई करने और उसे जीत लेने की बातें करके पाकिस्तान के मुसलमानों को हिन्दुओं के ख़िलाफ़ भड़काते हैं और जब पाकिस्तान के इन्हीं के भाई—मुस्लिम फ़िरक़ापरस्त—वहाँ के हिन्दुओं को सता कर अपना घर बार छोड़ने पर मजबूर करते हैं तो यह शरनार्थियों के लिये चन्दा जमा करने के बहाने लोगों में नफ़रत का प्रचार करते हैं और उनके नाम पर कानफ़ेरन्सें करके सरकार को कोसते हैं.

मुझे बिश्वास है कि अगर जनता के सामने इनके चेहरे की नक़ाब उतारकर उसे इनकी असली सूरत दिखादी जाय तो जनता इनसे होशियार हो जायगी. फिर वह इनके बहकावे में नहीं आयगी. इन फ़िरक़ापरस्तों के पास जनता की भलाई, उसकी तरक़्क़ी और उसकी ख़ुशहाली का कोई रचनात्मक प्रोग्राम नहीं है. इस लिये यह लोग हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू राज के नारे लगाते हैं. अगले चुनाव में हिन्दुओं के वोट हासिल करने के लिये इन्हें सब से आसान ढंग यही दिखाई देता है कि यह मुस्लिम लीग की नक़ल करें. लेकिन मुस्लिम लीग की नक़ल करने से पहले उसके अंजाम को भी देख लेना चाहिये. मुस्लिम लीग ने नफ़रत का जो प्रचार शुरू किया था उसके नतीजे में हिन्दू और सिक्खों को ही नहीं, मुसलमानों को भी नुक़सान पहुंचा है. भारत के शरनार्थियों की तरह पाकिस्तान में भी भारत से गये हुए शरनार्थियों की समस्या गम्भीर रूप में खड़ी है

آزادی کی لڑائی سے بھاگتے ہی نہیں رہے بلکہ ہمارے دشمنوں کی مدد کرتے رہے' یہی لوگ ہیں جو ۳۰ جنوری سن ۴۸ کو' جب سارا دیش اپنے راشٹر پتا کے سوگ میں رو رہا تھا تو مٹھائی بانٹ کر خوشی منا رہے تھے اور یہی وہ لوگ ہیں جو پہلے پاکستان پر چڑھائی کرنے اور اسے جیت لینے کی باتیں کرکے پاکستان کے مسلمانوں کو ہندوؤں کے خلاف بھڑکاتے ہیں اور جب پاکستان کے انہیں کے بھائی — مسلم فرقہ پرست — وہاں کے ہندوؤں کو ستا کر اپنا گھر بار چھوڑنے پر مجبور کرتے ہیں تو یہ شرنارتھیوں کے لئے چندہ جمع کرنے کے بہانے لوگوں میں نفرت کا پرچار کرتے ہیں اور انکے نام پر کانفرنسیں کرکے سرکار کو کوستے ہیں۔

مجھے وشواس ہے کہ اگر جنتا کے سامنے ان کے چہرے کی نقاب اتار کر اسے ان کی اصلی صورت دکھا دی جائے تو جنتا ان سے ہوشیار ہوجائیگی۔ پھر وہ ان کے بہکاوے میں نہیں آئے گی۔ ان فرقہ پرستوں کے پاس جنتا کی بھلائی' اس کی ترقی اور اس کی خوشحالی کا کوئی رچنا تمک پروگرام نہیں ہے۔ اس لئے یہ لوگ ہندو دھرم' ہندو سنسکرتی اور ہندو راج کے نعرے لگاتے ہیں۔ اگلے چناؤ میں ہندوؤں کے ووٹ حاصل کرنے کے لئے انہیں سب سے آسان ڈھنگ یہی دکھائی دیتا ہے کہ یہ مسلم لیگ کی نقل کریں۔ لیکن مسلم لیگ کی نقل کرنے سے پہلے اس کے انجام کو بھی دیکھ لینا چاہئے۔ مسلم لیگ نے نفرت کا جو پرچار شروع کیا تھا اس کے نتیجے میں ہندو اور سکھوں کو ہی نہیں' مسلمانوں کو بھی نقصان پہنچا ہے۔ بھارت کے شرنارتھیوں کی طرح پاکستان میں بھی بھارت سے گئے ہوئے شرنارتھیوں کی سمسیا گمبھیر روپ میں کھڑی ہے

और उनकी भी जनता की भलाई की बहुत सी योजनायें रुकी पड़ी हैं. मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिकता ने जिस तरह मुसलमानों को लाभ नहीं पहुँचाया उसी तरह हिन्दू साम्प्रदायिकता हिन्दुओं को कोई लाभ न पहुँचायेगी, यह तय है. मुस्लिम साम्प्रदायिकता ने देश के टुकड़े कराये लेकिन हिन्दू साम्प्रदायिकता देश का नाश करके छोड़ेगी. इसीलिये मैं कांग्रेस वालों से फिर कहूँगा कि उन्हें पंडित नेहरू की साम्प्रदायिकता दुश्मन नीति को सफल बनाने के लिये एक दिन की भी देर न करनी चाहिये. बातें बहुत हो चुकीं. अब अमल की ज़रूरत है और अगर अब भी कांग्रेस वालों ने अमल की तरफ़ से मुँह चुराया और सच्चाई की ओर से आँखें बन्द कीं तो देश को बरबाद होने से नहीं बचाया जा सकता.

"मुझे तब तक शान्ति और आराम नहीं मिलेगा जब तक एक एक मुसलमान, हिन्दू और सिक्ख हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में फिर से अपने घर में नहीं बस जायगा. अगर कोई मुसलमान दिल्ली या हिन्दुस्तान में नहीं रह सका और कोई सिक्ख पाकिस्तान में नहीं रह सका तो हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी जामा मसजिद या ननकाना साहब और पंजा साहब का क्या होगा? क्या इन पवित्र स्थानों में दूसरे काम होने लगेंगे? ऐसा कभी नहीं हो सकता."

१८-९-४७. —महात्मा गांधी

اور اُس کی بھی جنتا کی بھلائی کی بہت سی یوجنائیں رکی پڑی ہیں. مسلم لیگ کی سامپردایکتا نے جس طرح مسلمانوں کو لابھ نہیں پہنچایا اسی طرح ہندو سامپردایکتا ہندوؤں کو کوئی لابھ نہ پہنچائے گی۔ یہ طے ہے. مسلم سامپردایکتا نے دیش کے ٹکڑے کرائے لیکن ہندو سامپردایکتا دیش کا ناش کر کے چھوڑے گی. اسی لئے میں کانگریس والوں سے پھر کہوں گا کہ انہیں پنڈت نہرو کی سامپردایکتا دشمن نیتی کو سپھل بنانے کے لئے ایک چھن کی بھی دیر نہ کرنی چاہئے. باتیں بہت ہوچکیں. اب عمل کی ضرورت ہے اور اگر اب بھی کانگریس والوں نے عمل کی طرف سے منہ چرایا اور سچائی کی اور سے آنکھیں بند کیں تو دیش کو برباد ہونے سے نہیں بچایا جاسکتا.

"مجھے تب تک شانتی اور آرام نہیں ملے گا جب تک ایک ایک مسلمان، ہندو اور سکھ ہندستان اور پاکستان میں پھر سے اپنے گھر میں نہیں بس جائیگا. اگر کوئی مسلمان دلی یا ہندستان میں نہیں رہ سکا اور کوئی سکھ پاکستان میں نہیں رہ سکا تو ہندستان کی سب سے بڑی جامع مسجد یا ننکانا صاحب اور پنجا صاحب کا کیا ہوگا؟ کیا ان پوتر استھانوں میں دوسرے کام ہونے لگینگے؟ ایسا کبھی نہیں ہو سکتا."

۱۸-۹-۴۷ —مہاتما گاندھی

एक ग़लतफ़हमी का जवाब

(डाक्टर एजाज़ हुसेन, इलाहाबाद यूनिवरसिटी)

'नया हिन्द' के जून के नम्बर में मैंने उर्दू लिपि के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था जिसका मंशा यह था कि अच्छा है कि उर्दू लिपि नागरी लिपि में बदल जाये. इस लेख पर नुक्ता चीनी करते हुए भाई सरस्वती सरन ने जुलाई के नम्बर में एक मज़मून लिखा जिसकी सुरख़ी है "ज़बरदस्ती न कीजिये". आज मुझे फिर इसी सिलसिले में कुछ बातें करके आपका वक़्त ख़राब करना है. सब से पहले तो यह कहना चाहता हूं कि भाई सरस्वती सरन के जज़्बात को मैं पूरी क़द्र करता हूं. उन को उर्दू लिपि से जो प्रेम है उसमें सच्चाई भी है और जान भी. लेकिन यह भी अर्ज़ करना है कि मुझे भी उर्दू लिपि से उतना ही प्रेम है जितना शायद किसी दूसरे को हो. मगर लिपि से ज़्यादा मुझे उर्दू ज़बान से प्रेम है. उसकी तरक़्क़ी के लिये मैं लिपि को छोड़ सकता हूं, अपने जज़्बात का ख़ून कर सकता हूं बल्कि अपने ख़ून से उर्दू को सींच सकता हूं, लेकिन यह नहीं सोच सकता कि ज़बानों की दौड़ में अगर लिपि उसके पैर की ज़न्जीर बनकर रास्ता रोक रही हो तो यह ज़न्जीर इसी सूरत में बाक़ी रहे इसलिये कि वह सोने की है या इसलिये कि उसका साथ ज़बान का बड़ा पुराना है. अमली दुनिया में हर जज़्बा अपनी जगह पर नहीं रहता उस को बदलना पड़ता है और कभी कभी छोड़ना भी पड़ता है. भाई

ایک غلط فہمی کا جواب

(ڈاکٹر اعجاز حسین، الہ آباد یونیورسٹی)

'نیا ہند' کے جون کے نمبر میں میں نے اُردو لپی کے سمبندھ میں ایک لیکھ لکھا تھا جس کا منشا یہ تھا کہ اچھا ہے کہ اُردو لپی ناگری لپی میں بدل جائے۔ اس لیکھ پر نکتہ چینی کرتے ہوئے بھائی سرسوتی سرن نے جولائی کے نمبر میں ایک مضمون لکھا جس کی سرخی ہے "زبردستی نہ کیجئے" آج مجھے پھر اسی سلسلے میں کچھ باتیں کر کے آپ کا وقت خراب کرنا ہے۔ سب سے پہلے تو یہ کہنا چاہتا ہوں کہ بھائی سرسوتی سرن کے جذبات کی میں پوری قدر کرتا ہوں۔ ان کو اُردو لپی سے جو پریم ہے اس میں سچائی بھی ہے اور جان بھی لیکن یہ بھی عرض کرنا ہے کہ مجھے بھی اُردو لپی سے اُتنا ہی پریم ہے جتنا شاید کسی دوسرے کو ہو۔ مگر لپی سے زیادہ مجھے اُردو زبان سے پریم ہے۔ اس کی ترقی کے لئے میں لپی کو چھوڑ سکتا ہوں، اپنے جذبات کا خون کر سکتا ہوں بلکہ اپنے خون سے اُردو کو سینچ سکتا ہوں، لیکن یہ نہیں سوچ سکتا کہ زبانوں کی دوڑ میں اگر لپی اسکے پیر کی زنجیر بن کر راستہ روک رہی ہو تو یہ زنجیر اسی صورت میں باقی رہے اس لئے کہ وہ سونے کی ہے یا اس لئے کہ اس کا ساتھ زبان کا بڑا پرانا ہے۔ عملی دنیا میں ہر جذبہ اپنی جگہ پر نہیں رہتا اس کو بدلنا پڑتا ہے اور کبھی کبھی چھوڑنا بھی پڑتا ہے۔ بھائی

सरस्वती सरन इस ख़याल को ज़बरदस्ती समझते हैं और इस ज़बरदस्ती को वह इतनी बुरी और तंग नज़र से देखने लगते हैं कि लेख को धीरज के साथ पढ़ना उनके लिये मुश्किल हो जाता है. मेरी हर दलील को उलटी और हर बात को समय से पहले समझते हैं. काश, वह ज़रा ध्यान और धीरज के साथ मेरा लेख पढ़ते और यह समझते कि मज़मून सिरे से एक है. अलग अलग हिस्सों में उसको अलग अलग ऐनकों से देखना मुनासिब नहीं.

सब से पहली बात, जो उन्होंने मेरे मज़मून का टुकड़ा पेश करते हुए दी है, यह है कि मैंने लिखा था—"फ़ारसी लिपि छोड़ देनी चाहिये क्योंकि उर्दू वालों से हिन्दी वालों के बैर की सब से बड़ी वजह उसका वह रूप है जिसमें वह लिखी जाती है." भाई सरस्वती सरन को इस ख़याल से इनकार है और सख़्त इनकार कि हिन्दी वालों को इस वजह से उर्दू से दुश्मनी है. वह यह दलील पेश करते हैं कि 'रानी केतकी की कहानी' सैयद इंशा की लिखी हुई फ़ारसी लिपि में मौजूद है. मगर कोई हिन्दी प्रेमी उस से इसलिये नफ़रत नहीं करता कि वह फ़ारसी लिपि में क्यों है. 'रानी केतकी की कहानी' तो हिन्दुस्तानी ज़बान में है. उसमें फ़ारसी अरबी के लफ़्ज़ आते ही नहीं. मगर मैं कहता हूं कि उन किताबों और लेखकों से भी हिन्दी प्रेमियों को नफ़रत नहीं है जिनकी ज़बान में फ़ारसी और अरबी के शब्द काफ़ी से ज़्यादा आते रहते हैं. ग़ालिब के मशहूर दीवान से हिन्दी वालों को कब नफ़रत है. यहाँ सवाल किसी एक ख़ास शख़्स या किसी ख़ास किताब का न था बल्कि पूरी 'उर्दू ज़बान' का सवाल है. कठिनाई यह है कि भाई सरस्वती सरन हर चीज़ को अलग अलग सोचते हैं. सोचना यह चाहिये था कि हिन्दी प्रेमियों को उर्दू से नफ़रत है या नहीं? उन्होंने यह सोचा कि उस किताब या शख़्स से चूँकि नफ़रत नहीं है इसलिये नतीजा यह निकला कि उर्दू से हिन्दी प्रेमियों को

سرسوتی سرن اس خیال کو زبردستی سمجھتے ہیں اور اس زبردستی کو وہ اتنی بری اور تنگ نظر سے دیکھنے لگتے ہیں کہ لیکھ کو دھیرج کے ساتھ پڑھنا ان کے لئے مشکل ہو جاتا ہے. میری ہر دلیل کو الٹی اور ہر بات کو سمے سے پہلے سمجھتے ہیں. کاش، وہ ذرا دھیان اور دھیرج کے ساتھ میرا لیکھ پڑھتے اور یہ سمجھتے کہ مضمون سرے سے ایک ہے. الگ الگ حصوں میں اس کو الگ الگ عینکوں سے دیکھنا مناسب نہیں.

سب سے پہلی بات، جو انہوں نے میرے مضمون کا ٹکڑا پیش کرتے ہوئے دی ہے، یہ ہے کہ میں نے لکھا تھا—" فارسی لپی چھوڑ دینی چاہئے کیونکہ اردو والوں سے ہندی والوں کے بیر کی سب سے بڑی وجہ اس کا وہ روپ ہے جس میں وہ لکھی جاتی ہے." بھائی سرسوتی سرن کو اس خیال سے انکار ہے اور سخت انکار کہ ہندی والوں کو اس وجہ سے اردو سے دشمنی ہے. وہ یہ دلیل پیش کرتے ہیں کہ 'رانی کیتکی کی کہانی' سید انشا کی لکھی ہوئی فارسی لپی میں موجود ہے. مگر کوئی ہندی پریمی اس سے اس لئے نفرت نہیں کرتا کہ وہ فارسی لپی میں کیوں ہے. 'رانی کیتکی کی کہانی' تو ہندستانی زبان میں ہے. اس میں فارسی عربی کے لفظ آتے ہی نہیں. مگر میں کہتا ہوں کہ ان کتابوں اور لیکھکوں سے بھی ہندی پریمیوں کو نفرت نہیں ہے جن کی زبان میں فارسی اور عربی کے شبد کافی سے زیادہ آتے رہتے ہیں. غالب کے مشہور دیوان سے ہندی والوں کو کب نفرت ہے. یہاں سوال کسی ایک خاص شخص یا کسی خاص کتاب کا نہ تھا بلکہ پوری 'اردو زبان' کا سوال ہے. کٹھنائی یہ ہے کہ بھائی سرسوتی سرن ہر چیز کو الگ الگ سوچتے ہیں. سوچنا یہ چاہئے تھا کہ ہندی پریمیوں کو اردو سے نفرت ہے یا نہیں؟ انہوں نے یہ سوچا کہ اس کتاب یا شخص سے چونکہ نفرت نہیں ہے اس لئے نتیجہ یہ نکلا کہ اردو سے ہندی پریمیوں کو

٤

नफ़रत नहीं है. इस दलील को हम समझ नहीं सके इसलिये इस नुक़तए निगाह् (दृष्टि कोन) से कुछ लिखना मुनासिब नहीं. सिर्फ़ यह कहना है कि उर्दू लिपि की मुख़ालफ़त् जो हवा में चारों तरफ़ बिखरी हुई है इसको देख लेना कोई मुश्किल काम नहीं है.

अब सवाल यह रह जाता है कि रोमन लिपि तमाम योरप ने क्यों अपनाई थी हालाँकि वह चालू सिर्फ़ रोमन से हुई थी. इसका जवाब देने से पहले मुझे यह अच्छी तरह साफ़ कर देना है कि मैं इल्म और ज़बान, विद्या और भाषा के मामले में देसी बिदेसी का कभी क़ायल नहीं रहा बल्कि इसको बुरा समझता रहा हूँ. भाई सरस्वती सरन को शायद मेरी तरफ़ से यह बदगुमानी है कि मैं उर्दू को नागरी लिपि में इसलिये लाने की तहरीक में हिस्सा ले रहा हूँ कि उर्दू हिन्दुस्तान की चीज़ है और फ़ारसी लिपि बिदेसी है इसलिये इसे छोड़ देना मुनासिब है. उनका अगर यह ख़याल है तो उन्हें सख़्त ग़लतफ़हमी है. मैंने ख़ुद अपने परचे "कारवाँ" में एक बार नहीं कई बार एडीटोरियल में लिखा है कि साहित्य में देसी बिदेसी का ख़याल करना ज़बान की तरक़्क़ी में रोड़े अटकाना है. यह ख़याल उन्हीं तंग नज़र लोगों के दिमाग़ में आता है जो ज़बान के विकास से पूरी तरह वाक़िफ़ नहीं हैं. मेरे सामने आज की दुनिया की सब से बड़ी ज़बान 'अंगरेज़ी' है जिसमें आधे के क़रीब ग़ैर अंगरेज़ी शब्द शामिल हैं मगर फिर भी वह बराबर फूलती फलती चली जाती है.

योरप, अमरीका और आस्ट्रेलिया की मिसालें भाई सरस्वती सरन ने दी हैं कि उन्होंने अपनी अपनी लिपि रोमन रखी है. हालाँकि उन देशों के लिये वह बिदेसी थी. सोचना यह है कि क्या योरप में रोमन लिपि से पहले किसी एक लिपि का चलन ऐसा था जो आम और सब जगह चलता रहा हो या क्या उन देशों की अपनी अपनी लिपि भी थी? लिपि के इतिहास पर एक सरसरी नज़र डालिये तो मालूम होगा कि

نفرت نہیں ہے . اس دلیل کو ہم سمجھ نہیں سکے اس لئے اس نقطۂ نگاہ (درشٹی کون) سے کچھ لکھنا مناسب نہیں . صرف یہ کہنا ہے کہ اُردو لپی کی مخالفت جو ہوا میں چاروں طرف بکھری ہوئی ہے اس کو دیکھ لینا کوئی مشکل کام نہیں ہے .

اب سوال یہ رہ جاتا ہے کہ رومن لپی تمام یورپ نے کیوں اپنائی تھی حالانکہ وہ چالو صرف رومن سے ہوئی تھی . اس کا جواب دینے سے پہلے مجھے یہ اچھی طرح صاف کر دینا ہے کہ میں علم اور زبان ' ودیا اور بھاشا کے معاملے میں دیسی بدیسی کا کبھی قائل نہیں رہا بلکہ اس کو برا سمجھتا رہا ہوں . بھائی سرسوتی سرن کو شاید میری طرف سے یہ بدگمانی ہے کہ میں اُردو کو ناگری لپی میں اس لئے لانے کی تحریک میں حصہ لے رہا ہوں کہ اُردو ہندستان کی چیز ہے اور فارسی لپی بدیسی ہے اس لئے اسے چھوڑ دینا مناسب ہے . اُن کا اگر یہ خیال ہے تو یہ اُنہیں سخت غلط فہمی ہے . میں نے خود اپنے پرچے " کاروان " میں ایک بار نہیں کئی بار ایڈیٹوریل میں لکھا ہے کہ ساہتیہ میں دیسی بدیسی کا خیال کرنا زبان کی ترقی میں روڑے اٹکانا ہے . یہ خیال اُنہیں تنگ نظر لوگوں کے دماغ میں آتا ہے جو زبان کے وکاس سے پوری طرح واقف نہیں ہیں . میرے سامنے آج کی دنیا کی سب سے بڑی زبان ' انگریزی ' ہے جس میں آدھے کے قریب غیر انگریزی شبد شامل ہیں مگر پھر بھی وہ برابر پھولتی پھلتی چلی جاتی ہے .

یورپ ' امریکہ اور آسٹریلیا کی مثالیں بھائی سرسوتی سرن نے دی ہیں کہ انہوں نے اپنی اپنی لپی رومن رکھی ہے . حالانکہ اُن دیشوں کے لئے وہ بدیسی تھی . سوچنا یہ ہے کہ کیا یورپ میں رومن لپی سے پہلے کسی ایک لپی کا چلن ایسا تھا جو عام اور سب جگہ چلتا رہا ہو یا کیا اُن دیشوں کی اپنی اپنی لپی بھی تھی ؟ لپی کے اتہاس پر ایک سرسری نظر ڈالئے تو معلوم ہوگا کہ

योरप में रोमन लिपि के पहले यूनानी लिपि एक महदूद दायरे में थी. बाद में रोमन लिपि की आसानियों और रिवाज ने यूनानी लिपि का असर भी क़रीब क़रीब बे असर कर दिया था. इसके अलावा इंगलिस्तान या जरमनी वग़ैरा की कभी कोई बेक़ायदा या बाक़ायदा लिपि ऐसी न थी जिसको यह मुल्क अपना कह सकें. इसलिये भी उनको रोमन लिपि को अपनाना पड़ा. लेकिन क्या यह कहा जा सकता है कि जब उर्दू ज़बान पैदा हुई तो हिन्दुस्तान का कोई अपना रस्मुल-ख़त (लिपि) न था या फ़ारसी लिपि के मुक़ाबले में कमज़ोर था. अगर था और फ़ारसी लिपि से कमज़ोर भी न था तो फिर इस लिपि को बिला वजह क्यों छोड़ा गया. सिवा इसके और क्या बात हो सकती है कि फ़ारसी लिपि का रिवाज सरकारी ज़बान की वजह से ज़्यादा और आम था. इसलिये यही लिपि नई ज़बान को मुनासिब मालूम हुई. इसमें सूझ बूझ को ज़्यादा दख़ल न था. फ़ैशन या रिवाज पर अमल हुआ. लेकिन अब अगर इस लिपि में नागरी की निस्बत ज़्यादा कठिनाइयाँ हों तो क्यों न इसको नागरी लिपि से बदल लिया जाये. भाई सरस्वती सरन ने ख़ुद सवाल किया है कि तुर्की ज़बान में रोमन लिपि क्यों रिवाज पा गई? हालांकि उन्होंने हमारे विरोध में इस दलील को पेश करना चाहा है लेकिन असल में यह एतराज़ हमारी मुआफ़िक़त में आ जाता है. तुर्की की लिपि अरबी या अरबी से बहुत ज़्यादा मिलती जुलती थी लेकिन लिपि की ख़राबी देखकर मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने बड़ी हिम्मत और दूरन्देशी से उसको रोमन लिपि में तबदील कर दिया जो आज तक निहायत कामयाबी के साथ चल रही है. इस मिसाल से लाभ उठाकर उर्दू वाले क्यों न अपनी लिपि तबदील कर दें. क्या तुर्की ज़बान अंगरेज़ी हो गई या तुर्क अंगरेज़ कहलाने लगे?

भाई सरस्वती सरन फ़ारसी लिपि की मोहब्बत में उन कठिनाइयों के भी क़ायल नहीं जो लिखने और छापने में होती हैं. इन

یورپ میں رومن لپی کے پہلے یونانی لپی ایک محدود دائرے میں تھی۔ بعد میں رومن لپی کی آسانیوں اور رواج نے یونانی لپی کا اثر بھی قریب قریب بے اثر کر دیا تھا۔ اس کے علاوہ انگلستان یا جرمنی وغیرہ کی کبھی کوئی بے قاعدہ یا باقاعدہ لپی ایسی نہ تھی جس کو یہ ملک اپنا کہہ سکیں۔ اس لئے بھی ان کو رومن لپی کو اپنانا پڑا۔ لیکن کیا یہ کہا جاسکتا ہے کہ جب اُردو زبان پیدا ہوئی تو ہندستان کا کوئی اپنا رسم الخط (لپی) نہ تھا یا فارسی لپی کے مقابلے میں کمزور تھا۔ اگر تھا اور فارسی لپی سے کمزور بھی نہ تھا تو پھر اس لپی کو بلا وجہ کیوں چھوڑا گیا۔ سوا اس کے اور کیا بات ہو سکتی ہے کہ فارسی لپی کا رواج سرکاری زبان کی وجہ سے زیادہ اور عام تھا۔ اس لئے یہی لپی نئی زبان کو مناسب معلوم ہوئی۔ اس میں سوجھ بوجھ کو زیادہ دخل نہ تھا۔ فیشن یا رواج پر عمل ہوا۔ لیکن اب اگر اس لپی میں ناگری کی نسبت زیادہ کٹھنائیاں ہوں تو کیوں نہ اس کو ناگری لپی سے بدل لیا جائے۔ بھائی سرسوتی سرن نے خود سوال کیا ہے کہ ترکی زبان میں رومن لپی کیوں رواج پا گئی؟ حالانکہ انہوں نے ہمارے وِرودھ میں اس دلیل کو پیش کرنا چاہا ہے لیکن اصل میں یہ اعتراض ہماری موافقت میں آجاتا ہے۔ ترکی کی لپی عربی یا عربی سے بہت زیادہ ملتی جلتی تھی لیکن لپی کی خرابی دیکھ کر مصطفیٰ کمال پاشا نے بڑی ہمت اور دوراندیشی سے اس کو رومن لپی میں تبدیل کر دیا جو آج تک نہایت کامیابی کے ساتھ چل رہی ہے۔ اس مثال سے لابھ اٹھا کر اُردو والے کیوں نہ اپنی لپی تبدیل کر دیں۔ کیا ترکی زبان انگریزی ہوگئی یا ترک انگریز کہلانے لگے؟

بھائی سرسوتی سرن فارسی لپی کی محبت میں اُن کٹھنائیوں کے بھی قائل نہیں جو لکھنے اور چھاپنے میں ہوتی ہیں۔ ان

कठिनाइयों को पूरी तरह बयान करने के लिये तो बहुत बड़े लेख की अलग ज़रूरत है. यहाँ उसकी गुँजायश नहीं. एक जगह अपने मज़मून में लिखते हैं—"डाक्टर साहब ने आगे चल कर कहा है कि फ़ारसी ख़त कितना ही ख़ूबसूरत सही मगर छपाने में जितनी कठिनाइयाँ हैं उन्हें देखकर इस ख़ूबसूरती से हाथ उठाना पड़ता है".......फिर आगे चल कर लिखते हैं कि "ताज्जुब है कि आगे चल कर अरबी लिपि के खिलाफ़ वह इस दलील को उलटी कर देते हैं और कहते हैं (यानी ऐजाज़ का कहना है) कि "यह टाइप इतने ख़ूबसूरत नहीं होते जितना आप चाहते हैं. आप की नज़रों को तकलीफ़ होती है." मालूम नहीं यह दलील उनको उलटी क्यों नज़र आई. अपनी मोहब्बत के जोश में उन्होंने यह भी ग़ौर नहीं किया कि 'ख़त' और टाइप में फ़रक़ होता है. हाथ से लिखने में ख़ूबसूरती पैदा होती है लेकिन टाइप में जब यही हरूफ़ ढाले जाते हैं तो अलग अलग जोड़ों के कारन छपने में भद्दा पन आ जाता है. इस मुश्किल को हल करने में उर्दू के प्रेमियों ने लाखों रुपये खर्च कर दिये. मगर मुश्किल हल न हुई और अब इस मुश्किल को हल करना बस से बाहर मालूम हुआ है. इसलिये भी यह ज़रूरी मालूम होता है कि नागरी लिपि को अपना लिया जाय जिसके टाइप में भी हरूफ़ भद्दे नहीं होते.

एक जगह भाई सरस्वती सरन कहते हैं कि "उर्दू के लिये फ़ारसी लिपि में ज़रूरी सुधार किया जा सकता है.........लेकिन इस में भी इस बात का ध्यान रखना होगा कि हम कहीं लिपि को आसान बनाने के चक्कर में भाषा का रूप ही बिगाड़ कर न रख दें". मिसाल के लिये एक सुझाव है कि एक सी आवाज़ वाले हरूफ़ एक तरह से लिखे जायें. ज़ाल (ذ), ज़े (ز), ज़्वाद (ض) और ज़ोय (ظ) के बजाय सिर्फ़ ज़े (ز) से काम लिया जाये...नतीजा यह होगा कि उर्दू पढ़ने वालों को काफ़ी अटपटा सा लगेगा बल्कि कई शब्दों के अर्थ ही बदल जायेंगे. क़ाज़ी शब्द का मतलब होता है न्यायाधीश,

کٹھنائیوں کو پوری طرح بیان کرنے کے لئے تو بہت بڑے لیکھ کی الگ ضرورت ہے. یہاں اس کی گنجائش نہیں. ایک جگہ اپنے مضمون میں لکھتے ہیں— "ڈاکٹر صاحب نے آگے چل کر کہا ہے کہ فارسی خط کتنا ہی خوبصورت سہی مگر چھپانے میں جتنی کٹھنائیاں ہیں اُنہیں دیکھکر اس خوبصورتی سے ہاتھ اُٹھانا پڑتا ہے."......پھر آگے چلکر لکھتے ہیں کہ "تعجب ہے کہ آگے چل کر عربی لپی کے خلاف وہ اس دلیل کو الٹی کر دیتے ہیں اور کہتے ہیں (یعنی اعجاز کا کہنا ہے) کہ "یہ ٹائپ اتنے خوبصورت نہیں ہوتے جتنا آپ چاہتے ہیں. آپ کی نظروں کو تکلیف ہوتی ہے." معلوم نہیں یہ دلیل انکو الٹی کیوں نظر آئی. اپنی محبت کے جوش میں اُنہوں نے یہ بھی غور نہیں کیا کہ "خط" اور ٹائپ میں فرق ہوتا ہے. ہاتھ سے لکھنے میں خوبصورتی پیدا ہوتی ہے لیکن ٹائپ میں جب یہی حروف ڈھالے جاتے ہیں تو الگ الگ جوڑوں کے کارن چھپنے میں بھدا پن آجاتا ہے. اس مشکل کو حل کرنے میں اردو کے پریمیوں نے لاکھوں روپے خرچ کردئے. مگر مشکل حل نہ ہوئی اور اب اس مشکل کو حل کرنا بس سے باہر معلوم ہوتا ہے. اس لئے بھی یہ ضروری معلوم ہوتا ہے کہ ناگری لپی کو اپنا لیا جائے جس کے ٹائپ میں بھی حروف بھدے نہیں ہوتے.

ایک جگہ بھائی سرسوتی سرن کہتے ہیں کہ "اردو کے لئے فارسی لپی میں ضروری سدھار کیا جا سکتا ہے.........لیکن اس میں بھی اس بات کا دھیان رکھنا ہوگا کہ ہم کہیں لپی کو آسان بنانے کے چکر میں بھاشا کا روپ ہی بگاڑ کر نہ رکھدیں." مثال کے لئے ایک سجھاؤ ہے کہ ایک سی آواز والے حروف ایک طرح سے لکھے جائیں. 'ذ' 'ز' 'ض' اور 'ظ' کے بجائے صرف 'ز' سے کام لیا جائے.........نتیجہ یہ ہوگا کہ اردو پڑھنے والوں کو کافی اٹ پٹا سا لگیگا بلکہ کئی شبدوں کے ارتھ ہی بدل جائینگے. قاضی شبد کا مطلب ہوتا ہے نیایا دھیش'

अभी क़ाज़ी ज़्वाद (ض) से लिखा जाता है. जे (ز) से लिखने पर यह क़ाज़ी (قاضي) क़ा.ी (قازي) हो जायगा. 'क़ाज़' (ز से) एक चिड़िया होती है. चुनान्चे इस सुधरे हुए न्यायाधीश का संबन्ध क़ाज़ चिड़िया से क़ायम हो जायगा." यह है नज़रिया लिपि सुधार के सिलसिले में भाई सरस्वती सरन का. इसका मतलब है कि वह किसी तरह से भी लिपि सुधार के लिये तैयार नहीं. काश, वह यह सोचते कि एक ही आवाज़ से इमला लिखने में बच्चों को कितनी तकलीफ़ होती है. वह सीन (س) के बजाय से (ث) या स्वाद (ص) से कोई शब्द लिख देते हैं तो सब उनको बेवक़ूफ़ समझते हैं. इम्तहान में नम्बर काट देते हैं लेकिन इस रवैये को इसलिये क़ायम रखना चाहते हैं कि आप ऐसे लोग क़ज़ी (قاضی) को क़ाज़ी (قازي) न समझ लें. आपके कानों को धोका न हो. लड़कों की तालीम की तरक़्क़ी में आपका यह लतीफ़ मज़ाक़ रुकावट डालता रहे और आप 'राज महल' में बैठकर लुत्फ़ लेते रहें. कभी आपने यह भी सोचा कि लुग़त देख कर कितने लड़के या अदीब मादरी ज़बान को पढ़ते हैं. शायद एक फ़ीसदी भी मिसाल के लिये न मिल सकें. और अगर भूले भटके कोई शख़्स लुग़त से पढ़ना चाहता ही हो तो आप लुग़ात में वही रखिये जो क़ाज़ी (قاضی) का सही इमला है. बच्चों का ख़ून क्यों करना चाहते हैं. आप यह तो समझते ही होंगे कि एक ही शब्द के कभी कभी अलग अलग मानी होते हैं. इमला भी बिलकुल एक ही सा होता है मगर पढ़ते समय आप ज़रूरत के लिहाज़ से उसके वही मानी निकालते हैं जो मौक़े के लिहाज़ से होता है. मिसाल के लिये एक लफ़्ज़ ले लीजिये مول यह तीन मानों में इस्तेमाल होता है, हालांकि लिखने में इमला बिलकुल एक ही रहता है. कभी मेल (इत्तफ़ाक़) के मानी में पढ़ा जाता है. कभी मील (फ़ासले) के लिये आता है और कभी मैल (गन्दगी) के माने में आता है.

ابھی قاضی ض) سے لکھا جاتا ہے. 'ز' سے لکھنے پر یہ قاضی قازی ہو جائیگا. 'قاز' (ز سے) ایک چڑیا ہوتی ہے. چنانچہ اس سدھرے ہوئے نیایا دھیش کا سمبندھ قاز چڑیا سے قایم ہو جائیگا." یہ ہے نظریہ لپی سدھار کے سلسلے میں بھائی سرسوتی سرن کا. اس کا مطلب ہے کہ وہ کسی طرح سے بھی لپی سدھار کے لئے تیار نہیں. کاش' وہ یہ سوچتے کہ ایک ہی آواز سے املا لکھنے میں بچوں کو کتنی تکلیف ہوتی ہے. وہ 'س' کے بجائے 'ث' یا 'ص' سے کوئی شبد لکھدیتے ہیں تو سب ان کو بے وقوف سمجھتے ہیں. امتحان میں نمبر کاٹ دیتے ہیں. لیکن اس رویہ کو اس لئے قایم رکھنا چاہتے ہیں کہ آپ ایسے لوگ قاضي کو قازی نہ سمجھ لیں. آپ کے کانوں کو دھوکا نہ ہو. لوکوں کی تعلیم کی ترقی میں آپ کا یہ لطیف مذاق رکاوٹ ڈالتا رہے اور آپ 'راج محل' میں بیٹھ کر لطف لیتے رہیں. کبھی آپ نے یہ بھی سوچا کہ لغت دیکھکر کتنے لڑکے یا ادیب مادری زبان کو پڑھتے ہیں. شاید ایک فیصدی بھی مثال کے لئے نہ مل سکیں. اور اگر بھولے بھٹکے کوئی شخص لغت سے پڑھنا چاہتا ہی ہو تو آپ لغات میں وہی رکھئے جو قاضی کا صحیح املا ہے. بچوں کا خون کیوں کرنا چاہتے ہیں. آپ یہ تو سمجھتے ہی ہونگے کہ ایک ایک ہی شبد کے کبھی کبھی الگ الگ معنی ہوتے ہیں. املا بھی بالکل ایک ہی سا ہوتا ہے مگر پڑھتے سمے آپ ضرورت کے لحاظ سے اس کے وہی معنی نکالتے ہیں جو موقع کے لحاظ سے ہوتا ہے. مثال کے لئے ایک لفظ لے لیجئے 'مول' یہ تین معنوں میں استعمال ہوتا ہے' حالانکہ لکھنے میں املا بالکل ایک ہی رہتا ہے. کبھی مول (اتفاق) کے معنی میں پڑھا جاتا ہے کبھی مول (فاصلہ کے لئے آتا ہے اور کبھی مول (گندگی) کے معنی میں آتا ہے.

आप कहेंगे कि ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरा से इसको देख कर सही मतलब निकालते हैं. लेकिन क्या आप इंसाफ़ से कह सकते हैं कि रोज़मर्रा की लिखाई में ज़ेर, ज़बर, पेश दिया जाता है ? फिर, जब बग़ैर ज़ेर, ज़बर, पेश के आप को सही पढ़ लेना आसान होता है तो क़ाज़ी को ज़े (ز) से लिखकर जानवर कैसे समझा जायगा ? आगे चलकर आप ख़ुद कहते हैं कि अंगरेज़ी ज़बान में भी कुछ ख़राबियाँ हैं, जैसे बी, यू, टी बट और पी, यू, टी पुट वग़ैरा. लेकिन समझदार पढ़े लिखे लोगों को कभी धोका नहीं होता और वह सही पढ़ लेते हैं और सही बोल भी लेते हैं. तो फिर उर्दू वालों को ज़्वाद (ض) के बजाय ज़े (ز) से क़ाज़ी समझ लेना क्यों मुमकिन न होगा. जब आप अमल की दुनिया में क़दम रखियेगा तो मालूम होगा कि जज़्बात बहुत कम कारामद साबित होते हैं.

आख़िर में यह भी अर्ज़ करदूँ कि मैं इससे बिलकुल नहीं घबराता कि उर्दू अपनी क़ाबलियत के कारन हिन्दी ज़बान से मुक़ाबला न कर सकेगी. मुझे पूरा विश्वास है कि उर्दू में अपने गुनों के कारन इतनी जान है कि वह संसार की बड़ी से बड़ी ज़बान से लोहा ले सकती है और लेगी. मुमकिन है कुछ दिनों के लिये चाँद गहन में आजाय, उर्दू ज़बान की तरक़्क़ी की रफ़्तार धीमी पड़ जाय मगर वह ख़तम नहीं हो सकती चाहे कोई राज ही उसके रास्ते में रोड़े अटकाये. इसलिये कि उसकी बुनियाद जनता की हमदर्दी और मोहब्बत पर है. इसमें जनता के दिलों की पुकार है और बड़ी ख़ूबियों के साथ है. उर्दू हिन्दुस्तान की मिली जुली कलचर का बेहतरीन नमूना है. इसका मिटाना क़ुदरत के बस में भी नहीं. लेकिन लिपि की ख़राबियाँ इसकी रफ़्तार को कम किये हुए हैं. अगर यह रोड़ा दूर हो जाये तो उर्दू ज़बान और अधिक तेज़ी से तरक़्क़ी के लिये क़दम उठा सकेगी. अगर हो सके तो आप मेरी बातों को जज़्बात से ज़रा हट कर अमली निगाह से देखने की कोशिश करें.

آپ کہینگے کہ زیر' زبر' پیش وغیرہ سے اس کو دیکھ کر صحیح مطلب نکالتے ہیں . لیکن کیا آپ انصاف سے کہہ سکتے ہیں کہ روز مرہ کی لکھائی میں زیر' زبر' پیش دیا جاتا ہے ؟ پھر جب بغیر زیر' زبر' پیش کے آپ کو صحیح پڑھ لینا آسان ہوتا ہے تو قاضی کو (ز) سے لکھکر جانور کیسے سمجھا جائیگا ؟ آگے چل کر آپ خود کہتے ہیں کہ انگریزی زبان میں بھی کچھ خرابیاں ہیں ' جیسے بی' یو' ٹی بٹ اور پی' یو' ٹی پٹ وغیرہ. لیکن سمجھدار پڑھے لکھے لوگوں کو کبھی دھوکا نہیں ہوتا اور وہ صحیح پڑھ لیتے ہیں اور صحیح بول بھی لیتے ہیں. تو پھر اردو والوں کو 'ض' کے بجائے 'ز' سے قاضی سمجھ لینا کیوں ممکن نہ ہوگا . جب آپ عمل کی دنیا میں قدم رکھینگا تو معلوم ہوگا کہ جذبات بہت کم کارآمد ثابت ہوتے ہیں .

آخر میں یہ بھی عرض کر دوں کہ میں اس سے بالکل نہیں گھبراتا کہ اردو اپنی قابلیت کے کارن ہندی زبان سے مقابلہ نہ کر سکیگی . مجھے پورا وشواس ہے کہ اردو میں اپنے گنوں کے کارن اتنی جان ہے کہ وہ سنسار کی بڑی سے بڑی زبان سے لوہا لے سکتی ہے اور لے گی . ممکن ہے کچھ دنوں کے لئے چاند گہن میں آجائے' اردو زبان کی ترقی کی رفتار دھیمی ہوجائے مگر وہ ختم نہیں ہو سکتی چاہے کوئی راج ہی اس کے راستے میں روڑے اٹکائے . اس لئے کہ اس کی بنیاد جنتا کی ہمدردی اور محبت پر ہے . اس میں جنتا کے دلوں کی پکار ہے اور بڑی خوبیوں کے ساتھ ہے . اردو ہندستان کی ملی جلی کلچر کا بہترین نمونہ ہے . اس کا مٹانا قدرت کے بس میں بھی نہیں . لیکن لپی کی خرابیاں اس کی رفتار کو کم کئے ہوئے ہیں . اگر یہ روڑا دور ہوجائے تو اردو زبان اور ادھک تیزی سے ترقی کے لئے قدم اٹھاسکیگی . اگر ہو سکے تو آپ میری باتوں کو جذبات سے ذرا ہٹ کر عملی نگاہ سے دیکھنے کی کوشش کریں .

"पंडित चाचा"

(बहन अशरफ़ जहाँ ख़ातून)

ग़फ़ूर जब से हमारे गाँव में आया था, उसे किसी ने हँसते या मुस्कराते न देखा था. उसके बारे में जब किसी से सुना तो यही सुना कि वह ख़ामोश, उदास और खोया खोया सा रहता है. वह हमारे चचा के यहाँ दूर पहाड़ी देश कश्मीर से आया था. भाई साहब जब कश्मीर की रक्षा के लिये भारती फ़ौज की तरफ़ से गये थे तो उसे अपने साथ ले आये थे.

रिफ़्युजी, शरनार्थी और महाजिर नाम मेरे लिये नये नहीं थे. हिन्द के बँटवारे के बाद इन नामों के बहुत से लोग भारत और पाकिस्तान में फैल गये थे. शहरों में, क़सबों में, रेल में, बस में हर जगह मैंने इन शरनार्थियों को देखा था. यह लोग अपने अपने घर बार, अपने खेत, अपनी जन्म भूमि छोड़ने को इसलिये मजबूर किये गये थे कि दूसरे फ़िरक़े वालों को इनका अपने साथ रहना पसन्द नहीं था. इसलिये इन शरनार्थियों को दूसरे फ़िरक़े के लोगों से भारत में भी नफ़रत थी. हर शरनार्थी की एक ही सी कहानी थी. ग़फ़ूर के बारे में भी मैंने समझ लिया था कि यह भी दूसरे फ़िरक़े के लोगों के ज़ुल्मों के कारन अपना पृथ्वी का स्वर्ग कहलाने वाला कश्मीर छोड़ने पर मजबूर हुआ होगा. इसीलिये मैं समझती थी कि यह भी एक कहानी सुना देगा. इसकी कहानी भी उन लाखों हिन्दू, सिक्ख शरनार्थियों की कहानी से मिलती जुलती होगी. फ़रक़ केवल इतना होगा कि इसकी कहानी में मुसलमानों की जगह ज़ुल्म करने वाले हिन्दू और सिक्ख

"پنڈت چاچا"

(بہن اشرف جہاں خاتون)

غفور جب سے ہمارے گاؤں میں آیا تھا، اسے کسی نے ہنستے یا مسکراتے نہ دیکھا تھا. اس کے بارے میں جب کسی سے سنا تو یہی سنا کہ وہ خاموش، اداس اور کھویا کھویا سا رہتا ہے. وہ ہمارے چچا کے یہاں دور پہاڑی دیش کشمیر سے آیا تھا. بھائی صاحب جب کشمیر کی رکشا کے لئے بھارتی فوج کی طرف سے گئے تھے تو اسے اپنے ساتھ لے آئے تھے.

ریفیوجی، شرنارتھی اور مہاجر نام میرے لئے نئے نہیں تھے. ہند کے بٹوارے کے بعد ان ناموں کے بہت سے لوگ بھارت اور پاکستان میں پھیل گئے تھے. شہروں میں، قصبوں میں، ریل میں، بس میں ہر جگہ میں نے ان شرنارتھیوں کو دیکھا تھا. یہ لوگ اپنے اپنے گھر بار، اپنے کھیت، اپنی جنم بھومی چھوڑنے کو اس لئے مجبور کئے گئے تھے کہ دوسرے فرقہ والوں کو انکا اپنے ساتھ رہنا پسند نہیں تھا اس لئے ان شرنارتھیوں کو دوسرے فرقے کے لوگوں سے بھارت میں بھی نفرت تھی. ہر شرنارتھی کی ایک ہی سی کہانی تھی. غفور کے بارے میں بھی میں نے سمجھ لیا تھا کہ یہ بھی دوسرے فرقے کے لوگوں کے ظلموں کے کارن اپنا پرتھوی کا سورگ کہلانے والا کشمیر چھوڑنے پر مجبور ہوا ہوگا! اسیلئے میں سمجھتی تھی کہ یہ بھی ایک کہانی سنا دے گا. اس کی کہانی بھی ان لاکھوں ہندو، سکھ شرنارتھیوں کی کہانی سے ملتی جلتی ہوگی. فرق کیول اتنا ہوگا کہ اس کی کہانی میں مسلمانوں کی جگہ ظلم کرنے والے ہندو اور سکھ

होंगे. और, मुझे ऐसी कहानियों, ऐसी बातों से चिढ़ है जो एक फ़िरक़े के मन में दूसरे फ़िरक़े के लोगों के लिये नफ़रत पैदा करें.

लेकिन एक दिन जब शम्मू बाहर किसी से सुन कर घर में आई और उसने बताया कि ग़फ़ूर रात को 'अब्बा अब्बा', 'अम्मा अम्मा' 'आयशा आयशा' पुकारता है, कभी कभी वह चिल्ला उठता है—'मुझे बचाओ, मुझे बचाओ' और कभी कभी 'पंडित चाचा' 'पंडित चाचा' कह कर बड़बड़ाता है तो एका एक मेरे दिल में ग़फ़ूर के लिये हमदर्दी का जज़्बा पैदा हो गया. मेरी आंखों के सामने ग़फ़ूर के कुन्बे के लोगों की तसवीरें फिरने लगीं. ग़फ़ूर का बाप, उसकी माँ, आयशा, सब मेरे सामने चलने फिरने लगे. पर एका एक मैं उस सपने से चौंक पड़ी. यह पंडित चाचा कौन ? मेरे मन में ज़बरदस्त इच्छा पैदा हुई कि ग़फ़ूर की आप बीती सुनूं. मुझे उसके अन्धेरे जीवन में रोशनी की एक किरन चमकती दिखाई पड़ती थी और जैसे जैसे मैं 'पंडित चाचा' के बारे में सोचती थी, यह किरन तेज़ होती जाती थी. अन्धेरा घट रहा था और रोशनी बढ़ रही थी.

आख़िर मैंने चची को राज़ी कर लिया कि वह ग़फ़ूर के मुँह से ग़फ़ूर की कहानी सुनवा दें. और एक दिन शाम को ग़फ़ूर को घर में बुला कर कहा गया कि वह कश्मीर से भागने का हाल सुनाये. सब लोग चुप चाप बैठे थे. ग़फ़ूर अपनी कहानी सुनाते समय कई बार गला रुन्ध जाने के कारन ख़ामोश हो गया. कई बार ऐसा मालूम हुआ कि अब वह रो पड़ेगा. मगर ऐसा मालूम होता था कि ज़माने की सख़्तियों ने उसके दिल को भी पत्थर बना दिया है.

जब ग़फ़ूर अपनी कहानी सुना चुका तो मैंने देखा कि सुनने वालों में से कई की आंखों में आंसू थे, कई की चीख़ निकलते निकलते रह गई और एक लड़की तो ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी ग़फ़ूर की दुख भरी कहानी सुनकर. लेकिन मैं ग़फ़ूर की कहानी सुनकर एक दूसरे ही सोच में खो गई. ग़फ़ूर की कहानी सच मुच इंसान की हैवानियत

ھونگے . اور ' مجھے ایسی کہانیوں ' ایسی باتوں سے چڑھ ھے جو ایک فرقے کے من میں دوسرے فرقے کے لوگوں کے لئے نفرت پیدا کریں .

لیکن ایکدن جب شمو باھر کسی سے سنکر گھر میں آئی اور اسنے بتایا کہ غفور رات کو 'ابا ابا' 'اماں اماں' 'عائشہ عائشہ' پکارتا ھے ' کبھی کبھی وہ چلا اٹھتا ھے —'مجھے بچاؤ' مجھے بچاؤ' اور کبھی کبھی 'پنڈت چاچا' پنڈت چاچا' کہکر بڑبڑاتا ھے تو ایکا ایک میرے دل میں غفور کے لئے ھمدردی کا جذبہ پیدا ھو گیا . میری آنکھوں کے سامنے غفور کے کنبے کے لوگوں کی تصویریں پھرنے لگیں . غفور کا باپ' اسکی ماں ' عائشہ ' سب میرے سامنے چلنے پھرنے لگے . پر ایکا ایک میں اُس سپنے سے چونک پڑی . یہ پنڈت چاچا کون ؟ میرے من میں زبردست اچھا پیدا ھوئی کہ غفور کی آپ بیتی سنوں . مجھے اس کے اندھیرے جیون میں روشنی کی ایک کرن چمکتی دکھائی پڑتی تھی ' اور جیسے جیسے میں ' پنڈت چاچا ' کے بارے میں سوچتی تھی ' یہ کرن تیز ھوتی جاتی تھی . اندھیرا گھٹ رھا تھا اور روشنی بڑھ رھی تھی .

آخر میں نے چچی کو راضی کر لیا کہ وہ غفور کے منہ سے غفور کی کہانی سنوا دیں . اور ایک دن شام کو غفور کو گھر میں بلا کر کہا گیا کہ وہ کشمیر سے بھاگنے کا حال سنائے . سب لوگ چپ چاپ بیٹھے تھے . غفور اپنی کہانی سناتے سمے کئی بار گلا روندھ جانے کے کارن خاموش ھوگیا . کئی بار ایسا معلوم ھوا کہ اب وہ رو پڑیگا . مگر معلوم ایسا ھوتا تھا کہ زمانے کی سختیوں نے اس کے دل کو بھی پتھر بنا دیا ھے .

جب غفور اپنی کہانی سنا چکا تو میں نے دیکھا کہ سننے والوں میں سے کئی کی آنکھوں میں آنسو تھے ' کئی کی چیخ نکلتے نکلتے رہ گئی اور ایک لڑکی تو زور زور سے رو پڑی غفور کی دکھ بھری کہانی سنکر . لیکن میں غفور کی کہانی سنکر ایک دوسرے ھی سوچ میں کھو گئی . غفور کی کہانی سچ مچ انسان کی حیوانیت

की कहानी थी. उसकी कहानी सुनकर मालूम होता था कि पृथ्वी के स्वर्ग कश्मीर पर भी किस तरह देवताओं की जगह शैतानों का राज हो गया था. उस सुन्दर पहाड़ की ऊँचाई पर बसने वाले कितनी निचाई में गिर गये थे. लेकिन फिर मुझे एक देवता, एक फ़रिश्ते का ख़याल आया, ग़फ़ूर का चाचा—पंडित चाचा—रेगिस्तान में एक मीठे ठन्डे पानी का चश्मा, घोर अन्धियारे में रोशनी का एक मीनार, हैवानियत के राज में इंसानियत की एक मूरत—अच्छा, अब मैं अपने शब्दों में ग़फ़ूर और उसके चाचा की कहानी आप को सुना ही दूं. सुनिये और कहिये कि इंसानियत अमर है, रोशनी कभी मिट नहीं सकती और भलाई सदा ज़िन्दा रहने वाली चीज़ है:

कश्मीर के ज़िला उधमपुर के एक गाँव में ग़फ़ूर का घर था. उस गाँव का नाम था जगानो. ग़फ़ूर के घर में उसका बाप था जो बुनाई करता था, उसकी माँ थी, एक छोटा भाई और दो बहनें थीं. ग़फ़ूर के बाप फ़ीरोज़ उद्दीन और पंडित सन्त राम की आपस में बड़ी दोस्ती थी. ग़फ़ूर उनको पंडित चाचा कहा करता था. ग़फ़ूर के गाँव में कभी किसी तरह का झगड़ा न हुआ था. जगानो के हिन्दू और मुसलमान बड़े इतमीनान से ज़िन्दगी बिता रहे थे. लेकिन एकाएक गाँव के हिन्दू मुसलमानों की चहल पहल बन्द हो गई. एक भयानक ख़ामोशी छा गई. ऐसी ख़ामोशी जो तूफ़ान आने से पहले होती है. जिस तूफ़ान ने पंजाब के दोनों हिस्सों को हिला कर रख दिया था वही तूफ़ान ग़फ़ूर के गाँव में भी आने वाला था. पर ग़फ़ूर या उसके घर वालों को उसकी ख़बर नहीं थी. गाँव में न रेडियो था, न अख़बार आता था कि कुछ पता चलता. लेकिन एक दिन जगानो में गाँव के बाहर के बहुत से लोग आगये. इन बाहरी लोगों में ग़फ़ूर ने अपने गाँव के कुछ डोगरों को भी देखा. इन लोगों ने जगानो के मुसलमानों को इकट्ठा करके उन से कहा कि तुम लोग पाकिस्तान चले जाओ. गाँव वालों के लिये यह हुक्म बिलकुल अनोखा था.

کی کہانی تھی . اسکی کہانی سنکر معلوم ہوتا تھا کہ پرتھوی کے سورگ کشمیر پر بھی کسطرح دیوتاؤں کی جگہ شیطانوں کا راج ہوگیا تھا . اس سندر پہاڑ کی اونچائی پر بسنے والے کتنی نیچائی میں گر گئے تھے . لیکن پھر مجھے ایک دیوتا ' ایک فرشتے کا خیال آیا ' غفور کا چاچا — پنڈت چاچا — ریگستان میں ایک میٹھے ٹھنڈے پانی کا چشمہ ' گھور اندھیارے میں روشنی کا ایک مینار ' حیوانیت کے راج میں انسانیت کی ایک مورت — اچھا ' اب میں اپنے شبدوں میں غفور اور اس کے چاچا کی کہانی آپ کو سنا ہی دوں . سنئے اور کہئے کہ انسانیت امر ہے ' روشنی کبھی مٹ نہیں سکتی اور بھلائی سدا زندہ رہنے والی چیز ہے :

کشمیر کے ضلع ادھم پور کے ایک گاؤں میں غفور کا گھر تھا . اس گاؤں کا نام تھا جگانو . غفور کے گھر میں اس کا باپ تھا جو بنائی کرتا تھا ' اس کی ماں تھی ' ایک چھوٹا بھائی اور دو بہنیں تھیں . غفور کے باپ فیروز الدین اور پنڈت سنت رام کی آپس میں بڑی دوستی تھی . غفور ان کو پنڈت چاچا کہا کرتا تھا . غفور کے گاؤں میں کبھی کسی طرح کا جھگڑا نہ ہوا تھا . جگانو کے ہندو اور مسلمان بڑے اطمینان سے زندگی بتا رہے تھے . لیکن ایکاایک گاؤں کے ہندو مسلمانوں کی چہل پہل بند ہوگئی . ایک بھیانک خاموشی چھا گئی . ایسی خاموشی جو طوفان آنے سے پہلے ہوتی ہے . جس طوفان نے پنجاب کے دونوں حصوں کو ہلا کر رکھدیا تھا ' وہی طوفان غفور کے گاؤں میں بھی آنے والا تھا . پر غفور یا اس کے گھر والوں کو اس کی خبر نہیں تھی . گاؤں میں نہ ریڈیو تھا نہ اخبار آتا تھا کہ کچھ پتہ چلتا . لیکن ایک دن جگانو میں گاؤں کے باہر کے بہت سے لوگ آگئے . ان باہری لوگوں میں غفور نے اپنے گاؤں کے کچھ ڈوگروں کو بھی دیکھا . ان لوگوں نے جگانو کے مسلمانوں کو اکٹھا کر کے ان سے کہا کہ تم لوگ پاکستان چلے جاؤ . گاؤں والوں کے لئے یہ حکم بالکل انوکھا تھا .

अपना घर बार छोड़ कर दूसरे देश में जाने की बात सोचना भी इन लोगों के लिये कठिन था . गफ़ूर के बाप ने साफ़ साफ़ कह दिया कि हम पाकिस्तान नहीं जायेंगे . हम कशमीर के रहने वाले हैं . कशमीर हमारा वतन है . पाकिस्तान के नेताओं के दो क़ौम के सिद्धान्त का हमारे नेता शेरे कशमीर शेख़ अबदुल्ला और हमने सदा विरोध किया है . हम पाकिस्तान हरगिज नहीं जायेंगे.

यह जवाब सुन कर उन बाहरी लोगों ने आपस में कुछ बातें कीं. उनकी बातें पंजाबी में हो रही थीं इसलिये जगानो का कोई मुसलमान न समझ पाया . थोड़ी देर बाद वह लोग चले गये . गफ़ूर के बाप ने गाँव के एक डोगरे से जब पूछा कि हमें पाकिस्तान क्यों भेजा जा रहा था तो उसने कहा—"तुम्हारी भलाई के लिये ही ऐसा कहा जा रहा था."

लेकिन जब दूसरे दिन सुबह थाने के सिपाहियों ने आकर मुसलमानों के हथियारों पर क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया तो गफ़ूर के बाप को भी चिन्ता हुई . वह रात गाँव के मुसलमानों ने उसी तरह बिताई जैसे कोई फांसी का हुक्म पाने वाला मुजरिम बिताता है जिसे दूसरे ही दिन फांसी पर लटकना हो . रात भर लोग आने वाले ख़तरे से बचने की तरकीबें सोचते रहे पर किसी की समझ में कुछ न आया .

दूसरे दिन शाम के चार बजे के क़रीब दो सौ आदमियों का एक मजमा बाहर से आया . इन लोगों के पास बन्दूक़, तलवार, बल्लम, भाले और लाठियाँ थीं . उन्हों ने आते ही मुसलमानों को उनके घरों से ज़बरदस्ती निकालना शुरू कर दिया . जब सब मुसलमान घरों से बाहर एक जगह इकट्ठा हो गये तो हिन्दुओं के घरों की तलाशी ली गई . दो बच्चे, एक औरत और एक बूढ़ा इस तलाशी में और मिले. जब यह विश्वास हो गया कि अब गाँव में कोई मुसलमान नहीं बचा तो उन्हें गाँव से बाहर चलने का हुक्म दिया गया. जिन औरतों या

اپنا گھربار چھوڑ کر دوسرے دیش میں جانے کی بات سوچنا بھی ان لوگوں کے لئے کٹھن تھا . غفور کے باپ نے صاف صاف کہدیا کہ ھم پاکستان نہیں جائیں گے . ھم کشمیر کے رھنے والے ھیں . کشمیر ھمارا وطن ھے . پاکستان کے نیتاؤں کے دو قوم کے سدھانت کا ھمارے نیتا شیر کشمیر شیخ عبداللہ اور ھم نے سدا ورودھ کیا ھے . ھم پاکستان ھرگز نہیں جائیں گے .

یہ جواب سنکر اُن باھری لوگوں نے آپس میں کچھ باتیں کیں . اُن کی باتیں پنجابی میں ھو رھی تھیں اِس لئے جگانو کا کوئی مسلمان نہ سمجھ پایا . تھوڑی دیر بعد وہ لوگ چلے گئے . غفور کے باپ نے گاؤں کے ایک ڈوگرے سے جب پوچھا کہ ھمیں پاکستان کیوں بھیجا جا رھا تھا تو اُس نے کہا—" تمہاری بھلائی کے لئے ھی ایسا کہا جا رھا تھا ."

لیکن جب دوسرے دن صبح تھانے کے سپاھیوں نے آکر مسلمانوں کے ھتھیاروں پر قبضہ کرنا شروع کر دیا تو غفور کے باپ کو بھی چنتا ھوئی . وہ رات گاؤں کے مسلمانوں نے اُسی طرح بتائی جیسے کوئی پھانسی کا حکم پانے والا مجرم بتاتا ھے جسے دوسرے ھی دن پھانسی پر لٹکنا ھو . رات بھر لوگ آنے والے خطرے سے بچنے کی ترکیبیں سوچتے رھے پر کسی کی سمجھ میں کچھ نہ آیا .

دوسرے دن شام کے چار بجے کے قریب دو سو آدمیوں کا ایک مجمع باھر سے آیا . ان لوگوں کے پاس بندوق، تلوار، بلم، بھالے اور لاٹھیاں تھیں . انھوں نے آتے ھی مسلمانوں کو اُن کے گھروں سے زبردستی نکالنا شروع کر دیا . جب سب مسلمان گھروں سے باھر ایک جگہ اکٹھا ھو گئے تو ھندوؤں کے گھروں کی تلاشی لی گئی . دو بچے، ایک عورت اور ایک بوڑھا اِس تلاشی میں اور ملے . جب یہ وشواس ھوگیا کہ اب گاؤں میں کوئی مسلمان نہیں بچا تو انھیں گاؤں سے باھر چلنے کا حکم دیا گیا . جن عورتوں یا

बूढ़ों के पाँव न उठते थे उन्हें भालों और संगीनों से मार मार कर चलने पर मजबूर किया जाता था. गाँव से एक मील दूर एक मैदान में पहुंच कर मजमे के नेताओं ने आपस में कुछ बातें कीं. पंडित सन्त राम और दूसरे कुछ लोगों ने उन नेताओं से कहा भी कि मुसलमानों को मारो मत, चाहे इन को गाँव से निकाल दो. पर किसी ने उन की बात न सुनी.

फिर हमलावरों ने ज़ोर का नारा लगा कर तलवारें निकाल लीं. बंदूकें तन गईं और बरछे भाले चमकने लगे. ग़फ़ूर समझा कि अब सब लोगों को मार डाला जायगा. लेकिन हमलावरों ने औरतों को हुक्म दिया कि वह अपने सब गहने उतार दें. ग़फ़ूर की माँ ने झट हाथ, गले और कान के सब गहने उतार कर हमलावरों के सामने फेंक दिये. दूसरी औरतों ने भी यही किया. अपने गहने उतारने के बाद औरतों ने अपनी बच्चियों के सब गहने उतारे. और इसके बाद ग़फ़ूर की आँखों ने जो कुछ देखा उसका ख़याल आने से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. उसके सामने ही कई बच्चों को भालों से छेद दिया गया, औरतों पर तलवार चलाई गई और मर्दों को गोलियों का निशाना बनाया गया. जब एक बरछा ग़फ़ूर के बाप की छाती पर मारा गया तो उसने एक ज़ोर की चीख़ मारी और ग़फ़ूर को साथ लेता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा. गिरते गिरते ग़फ़ूर को ऐसा मालूम हुआ कि उस की जांघ भी बरछे से छिद गई है. फिर ग़फ़ूर को कुछ पता न चला. वह बेहोश हो गया.

जब ग़फ़ूर को होश आया तो अन्धेरा हो चुका था. उसे अपने ऊपर बोझसा मालूम हुआ. ग़फ़ूर ने देखा कि उसके ऊपर उसके बाप की लाश पड़ी है. ख़ून से ग़फ़ूर का सारा बदन लथ पथ हो गया था. ग़फ़ूर की जांघ में ज़ोर का दर्द हो रहा था. एकाएक ग़फ़ूर को सारी बातें याद आ गईं और फिर वह दम साध कर पड़ रहा. वह डर रहा था कि उसके दिल की धड़कन सुनकर कहीं कोई ज़ालिम

بوڑھوں کے پاؤں نہ اُٹھتے تھے اُنھیں بھالوں اور سنگینوں سے مار مار کر چلنے پر مجبور کیا جاتا تھا. گاؤں سے ایک میل دور ایک میدان میں پہنچ کر مجمع کے نیتاؤں نے آپس میں کچھ باتیں کیں. پنڈت سنت رام اور دوسرے کچھ لوگوں نے اُن نیتاؤں سے کہا بھی کہ مسلمانوں کو مارو مت چاہے اِن کو گاؤں سے نکالدو. پر کسی نے انکی بات نہ سنی.

پھر حملہ آوروں نے زور کا نعرہ لگاکر تلواریں نکال لیں. بندوقیں تن گئیں اور برچھے بھالے چمکنے لگے. غفور سمجھا کہ اب سب لوگوں کو مار ڈالا جائیگا. لیکن حملہ آوروں نے عورتوں کو حکم دیا کہ وہ اپنے سب گہنے اُتار دیں. غفور کی ماں نے جھٹ ہاتھ گلے اور کان کے سب گہنے اُتار کر حملہ آوروں کے سامنے پھینک دئے. دوسری عورتوں نے بھی یہی کیا. اپنے گہنے اُتارنے کے بعد عورتوں نے اپنی بچیوں کے سب گہنے اُتارے. اور اسکے بعد غفور کی آنکھوں نے جو کچھ دیکھا اُسکا خیال آنے سے ہی رونگٹے کھڑے ہوجاتے ہیں. اُسکے سامنے ہی کئی بچوں کو بھالوں سے چھید دیا گیا، عورتوں پر تلوار چلائی گئی اور مردوں کو گولیوں کا نشانہ بنایا گیا. جب ایک برچھا غفور کے باپ کی چھاتی پر مارا گیا تو اُسنے ایک زور کی چیخ ماری اور غفور کو ساتھ لیتا ہوا زمین پر گر پڑا. گرتے گرتے غفور کو ایسا معلوم ہوا کہ اُسکی جانگھ بھی برچھے سے چھد گئی ہے. پھر غفور کو کچھ پتہ نہ چلا. وہ بیہوش ہو گیا.

جب غفور کو ہوش آیا تو اندھیرا ہوچکا تھا. اُسے اپنے اوپر بوجھ سا معلوم ہوا. غفور نے دیکھا کہ اُس کے اوپر اُس کے باپ کی لاش پڑی ہے. خون سے غفور کا سارا بدن لتھ پتھ ہو گیا تھا. غفور کی جانگھ میں زور کا درد ہو رہا تھا. ایکا ایک غفور کو ساری باتیں یاد آگئیں اور پھر وہ دم سادھ کر پڑ رہا. وہ ڈر رہا تھا کہ اُس کے دل کی دھڑکن سن کر کہیں کوئی ظالم

फिर न आ जाये. जब ग़फ़ूर को विश्वास हो गया कि आस पास कोई आदमी नहीं है तो उसने सर इठा कर इधर उधर देखा. जगानो के सारे मुसलमान मर्द, औरत, बच्चे मैदान में कभी न टूटने वाली नींद में मगन थे. ग़फ़ूर के बाप का शरीर बरफ़ की तरह ठन्डा था और हाथ पैर अकड़ गये थे. एकाएक ग़फ़ूर को किसी के आने की आहट सुनाई पड़ी. वह फिर आँखें बन्द करके चुपचाप पड़ गया. फिर उसे एक आवाज़ सुनाई दी. कोई उसका नाम लेकर पुकार रहा था. लाशों को देखता भालता कोई उसके पास आ गया और उसे हिला कर बोला—"ग़फ़ूर, ग़फ़ूर बेटा, बोलो. मैं हूँ सन्तराम." ग़फ़ूर को अब किसी पर विश्वास न रहा था. उसने देख लिया था कि पंडित चाचा भी उसको और उसके घर वालों को मुसीबत में देख कर चल दिये थे. वह चाहते तो उसके अब्बा को बचा सकते थे. वह कुछ न बोला.

"ग़फ़ूर, बेटा उठो. जलदी करो. कोई आ गया तो मेरी जान की भी ख़ैर नहीं. चलो जलदी करो. मैं तुम्हें लेने आया हूं." पंडित सन्त राम उसे बुला रहे थे.

अब ग़फ़ूर ने आंखें खोलीं. पंडित जी की आँखों में उसे रात के अंधेरे में भी अपने लिये वही प्रेम झलकता दिखाई पड़ा जो उसे अपने बाप की आँखों में नज़र आया करता था.

"चाचा!" ग़फ़ूर ने कहा. वह चाहता था कि उठकर पंडित चाचा की छाती से लिपट जाये.

पंडित जी ने कहा—"ग़फ़ूर, ज़ोर से मत बोलो. मैं गाँव वालों से छिपकर यहाँ आया हूं. मुझे सुन्दर सिंह ने बताया कि शायद तुम्हारी जान बच गई है. उठो जल्दी करो."

पंडित जी ने ग़फ़ूर के बाप की लाश को खेंच कर अलग किया. फिर ग़फ़ूर की जांघ पर रुमाल की पट्टी बाँधी. दोनों उन लाशों के बीच खड़े थे. रात का अन्धेरा बढ़ता जा रहा था. बड़ा भयानक

پھر نہ آجائے. جب غفور کو وشواس ہوگیا کہ اس پاس کوئی آدمی نہیں ہے تو اس نے سر اٹھا کر ادھر ادھر دیکھا. جگانو کے سارے مسلمان مرد، عورت، بچے، میدان میں کبھی نہ ٹوٹنے والی نیند میں مگن تھے. غفور کے باپ کا شریر برف کی طرح ٹھنڈا تھا اور ہاتھ پیر اکڑ گئے تھے. ایکا ایک غفور کو کسی کے آنے کی آہٹ سنائی پڑی. وہ پھر آنکھیں بند کرکے چپ چاپ پڑ گیا. پھر اسے ایک آواز سنائی دی. کوئی اسکا نام لے کر پکار رہا تھا. لاشوں کو دیکھتا بھالتا کوئی اس کے پاس آگیا اور اسے ہلا کر بولا—"غفور، بیٹا، بولو. میں ہوں سنت رام." غفور کو اب کسی پر وشواس نہ رہا تھا. اس نے دیکھ لیا تھا کہ پنڈت چاچا بھی اسکو اور اسکے گھر والوں کو مصیبت میں دیکھکر چلدئے تھے. وہ چاہتے تو اسکے باپ کو بچا سکتے تھے. وہ کچھ نہ بولا.

"غفور بیٹا اٹھو. جلدی کرو. کوئی آگیا تو میری جان کی بھی خیر نہیں. چلو جلدی کرو. میں تمہیں لینے آیا ہوں." پنڈت سنت رام اسے بلا رہے تھے.

اب غفور نے آنکھیں کھولیں. پنڈت جی کی آنکھوں میں اسے رات کے اندھیرے میں بھی اپنے لئے وہی پریم جھلکتا دکھائی پڑا جو اسے اپنے باپ کی آنکھوں میں نظر آیا کرتا تھا.

"چاچا!" غفور نے کہا. وہ چاہتا تھا کہ اٹھکر پنڈت چاچا کی چھاتی سے لپٹ جائے.

پنڈت جی نے کہا—"غفور زور سے مت بولو. میں گاؤں والوں سے چھپ کر یہاں آیا ہوں. مجھے سندر سنگھ نے بتایا کہ شاید تمہاری جان بچ گئی ہے. اٹھو جلدی کرو."

پنڈت جی نے غفور کے باپ کی لاش کو کھینچ کر الگ کیا. پھر غفور کی جانگھ پر رومال کی پٹی باندھی. دونوں ان لاشوں کے بیچ کھڑے تھے. رات کا اندھیرا بڑھتا جا رہا تھا. بڑا بھیانک

नज़ारा था. पंडित जी के पीछे गफ़ूर चला तो एक तरफ़ से आवाज़ आई—"भय्या ! पानी."

यह आयशा थी. ग़फ़ूर झपट कर उसके पास पहुँचा. उसने देखा कि आयशा माँ के पास पड़ी है. वह चाहता था कि बहन से लिपट जाये. लेकिन आयशा का हाल और भी बुरा था. उसकी रीढ़ की हड्डी टूट चुकी थी. सिर्फ़ चमड़ी ने उनके ऊपर और नीचे के धड़ को जोड़ रखा था. उसका पेट फट गया था. पंडित जी ने लोटे का पानी उसके मुँह में डाला. पर मुँह का सारा पानी पेट से बह गया. पंडित जी जानते थे कि वह बच नहीं सकती. पर ग़फ़ूर ने जब उसे अपने साथ ले चलना चाहा तो पंडित जी ने कहा—"इसे उठा लो और मेरे साथ ले चलो."

पंडित जी उसे गाँव से बाहर जंगल में ले गये. एक पहाड़ी की ढाल पर एक कोठरी से बनी थी. पंडित जी ने ग़फ़ूर को वहाँ छोड़ दिया. लोटे में पानी भर के दे दिया. रात ही को दो घंटे बाद पंडित जी फिर गये. अपने साथ वह रोटी, कपड़ा, दूध और घी ले गये. फिर घी गरम कर के आयशा के मला गया. उसे दूध पिलाया गया. पर कोई चीज़ पेट में रुकती न थी इसी तरह आयशा २४ घंटे तक जिन्दा रही फिर उसकी जान निकल गई. पंडित जी रोज़ रात को खाने पीने का सामान लाते और ग़फ़ूर को तसल्ली देकर चले जाते. जब आयशा मर गई तो पंडित जी ग़फ़ूर को अपने घर ले गये. उसे उन्होंने तहख़ाने में छिपा कर रखा. ग़फ़ूर के सर में भी चोट आई थी. चार पाँच दिन में उसके सर और जाँघ की चोट अच्छी हो गई. ग़फ़ूर को पंडित जी के घर में किसी तरह की तकलीफ़ न थी. सिर्फ़ वह आज़ादी से घूम फिर न सकता था. पर ज़ोरदार आँधी और तूफ़ान में जिस तरह पिंजरे में बन्द छत के नीचे टंगा हुआ पन्छी दूसरे आज़ाद पन्छियों की मुसीबत देख एक छन के लिये अपने बन्दी जीवन के सारे दुख भूल जाता है उसी तरह ग़फ़ूर

نظارہ تھا. پنڈت جی کے پیچھے غفور چلا تو ایک طرف سے آواز آئی—"بھیا ! پانی."

یہ عائشہ تھی. غفور جھپٹ کر اسکے پاس پہنچا. اس نے دیکھا کہ عائشہ ماں کے پاس پڑی ہے. وہ چاہتا تھا کہ بہن سے لپٹ جائے. لیکن عائشہ کا حال اور بھی برا تھا. اسکی ریڑھ کی ہڈی ٹوٹ چکی تھی. صرف چمڑی نے اس کے اوپر اور نیچے کے دھڑ کو جوڑ رکھا تھا. اسکا پیٹ پھٹ گیا تھا. پنڈت جی نے لوٹے کا پانی اس کے منہ میں ڈالا. پر منہ کا سارا پانی پیٹ سے بہ گیا. پنڈت جی جانتے تھے کہ وہ بچ نہیں سکتی. پر غفور نے جب اسے اپنے ساتھ لے چلنا چاہا تو پنڈت جی نے کہا—"اسے اٹھالو اور میرے ساتھ لے چلو."

پنڈت جی اسے گاؤں سے باہر جنگل میں لے گئے ایک پہاڑی کی ڈھال پر ایک کوٹھری سی بنی تھی. پنڈت جی نے غفور کو وہاں چھوڑ دیا. لوٹے میں پانی بھر کے دیدیا. رات ہی کو دو گھنٹے بعد پنڈت جی پھر گئے. اپنے ساتھ وہ روٹی، کپڑا، دودھ اور گھی لے گئے. گھی گرم کر کے عائشہ کے ملا گیا. اسے دودھ پلایا گیا. پر کوئی چیز پیٹ میں رکتی نہ تھی. اسی طرح عائشہ ۲۴ گھنٹے تک زندہ رہی پھر اسکی جان نکل گئی. پنڈت جی روز رات کو کھانے پینے کا سامان لاتے اور غفور کو تسلی دیکر چلے جاتے. جب عائشہ مر گئی تو پنڈت جی غفور کو اپنے گھر لے گئے. اسے انہوں نے تہ خانے میں چھپا کر رکھا. غفور کے سر میں بھی چوٹ آئی تھی. چار پانچ دن میں اس کے سر اور جانگھ کی چوٹ اچھی ہوگئی. غفور کو پنڈت جی کے گھر میں کسی طرح کی تکلیف نہ تھی. صرف وہ آزادی سے گھوم پھر نہ سکتا تھا. پر زوردار آندھی اور طوفان میں جس طرح پنجرے میں بند چھت کے نیچے ٹنگا ہوا پنچھی دوسرے آزاد پنچھیوں کی مصیبت دیکھ ایک چھن کے لئے اپنے بندی جیون کے سارے دکھ بھول جاتا ہے اسی طرح غفور

पंडित जी के घर की चार दीवारी में अपनी जान की रक्षा देख कर आज़ादी के सारे सुख भूल गया था.

गाँव वालों को शायद ख़बर लग गई थी कि पंडित जी के घर में कोई मुसलमान छिपा है. एक दिन गाँव के और बाहर के बहुत से लोगों ने पंडित जी के घर धावा बोल दिया. पंडित जी ने ग़फ़ूर को तहखाने में बन्द करके ऊपर घास फूस डाल दिया और बाहर निकल कर पूछा कि आप लोग क्यों आये हैं. बलवाइयों ने कहा कि आपने किसी मुसलमान को घर में शरन दे रखी है. हम तलाशी लेंगे. पंडित संतराम ने चेहरे पर ज़रा भी घबराहट न आने दी. शान्त और गम्भीर आवाज़ में बोले—"आइये, घर देख लीजिये. पर मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि अगर मेरे घर में कोई मुसलमान निकल आये तो आप उसके साथ मुझे भी मार डालियेगा. लेकिन अगर कोई मुसलमान न मिला तो मैं आप में से किसी को अपने घर से जीवित न जाने दूंगा. मैं बन्दूक़ लेकर दरवाज़े पर बैठता हूँ. आप घर में जाइये."

बलवाइयों ने तमाम घर छान मारा. तहख़ाने के दरवाज़े पर बिछी घास पर संजोग से पंडित जी की बकरी आकर बैठ गई थी इसलिये उधर किसी का ध्यान ही न गया. सब लोग मुँह लटका कर बाहर चले. पंडित जी ने बन्दूक़ तान ली, पर गोली नहीं चलाई. बोले—"कहिये, आपको अपना वायदा याद है? मैं गोली चला सकता हूँ. लेकिन आप लोग इतने कायर हैं कि मैं आप के ख़ून में अपना हाथ रंगना पाप समझता हूँ. मैं तो आप को तब बहादुर मानता जब आप यहाँ के बे गुनाह मुसलमानों को मारने की जगह पाकिस्तान जा कर उनका मुक़ाबला करते जहाँ बे गुनाह हिन्दू सिक्ख मारे जा रहे हैं."

आख़िर तीसरे दिन गाँव में फ़ौज आ गई. सिपाहियों ने आकर बताया कि कश्मीर का राजा क़बायलियों के डर से श्रीनगर छोड़कर जम्मू भाग गया है और राज की बाग डोर शेख़ अबदुल्ला अपने

پنڈت جی کے گھر کی چار دیواری میں اپنی جان کی رکشا دیکھ کر آزادی کے سارے سکھ بھول گیا تھا۔

گاؤں والوں کو شاید خبر لگ گئی تھی کہ پنڈت جی کے گھر میں کوئی مسلمان چھپا ہے۔ ایک دن گاؤں کے اور باہر کے بہت سے لوگوں نے پنڈت جی کے گھر دھاوا بول دیا۔ پنڈت جی نے غفور کو تہہ خانے میں بند کر کے اوپر گھاس پھوس ڈالدیا اور باہر نکل کر پوچھا کہ آپ لوگ کیوں آئے ہیں۔ بلوائیوں نے کہا کہ آپ نے کسی مسلمان کو گھر میں شرن دے رکھی ہے۔ ہم تلاشی لینگے۔ پنڈت سنت رام نے چہرے پر ذرا بھی گھبراہٹ نہ آنے دی۔ شانت اور گمبھیر آواز میں بولے — "آئیے، گھر دیکھ لیجئے۔ پر میں ایک بات چاہتا ہوں کہ اگر میرے گھر میں کوئی مسلمان نکل آئے تو آپ اس کے ساتھ مجھے بھی مار ڈالئے گا۔ لیکن اگر کوئی مسلمان نہ ملا تو میں آپ میں سے کسی کو اپنے گھر سے جیوت نہ جانے دوں گا۔ میں بندوق لیکر دروازے پر بیٹھتا ہوں۔ آپ گھر میں جائیے۔"

بلوائیوں نے تمام گھر چھان مارا۔ تہہ خانے کے دروازے پر بچھی گھاس پر سنجوگ سے پنڈت جی کی بکری آکر بیٹھ گئی تھی اس لئے ادھر کسی کا دھیان ہی نہ گیا۔ سب لوگ منہ لٹکا کر باہر چلے۔ پنڈت جی نے بندوق تان لی پر گولی نہیں چلائی۔ بولے — "کہئے، آپ کو اپنا وعدہ یاد ہے؟ میں گولی چلا سکتا ہوں۔ لیکن آپ لوگ اتنے کایر ہیں کہ میں آپ کے خون میں اپنے ہاتھ رنگنا پاپ سمجھتا ہوں۔ میں تو آپ کو تب بہادر مانتا جب آپ یہاں کے بے گناہ مسلمانوں کو مارنے کی جگہ پاکستان جاکر اُن کا مقابلہ کرتے جہاں بے گناہ ہندو سکھ مارے جا رہے ہیں۔"

آخر تیسرے دن گاؤں میں فوج آگئی۔ سپاہیوں نے آکر بتایا کہ کشمیر کا راجہ قبائلیوں کے ڈر سے شری نگر چھوڑ کر جموں بھاگ گیا ہے اور اب راج کی باگ ڈور شیخ عبداللہ اپنے

हाथ में लेकर हमलावरों का मुक़ाबला कर रहे हैं. पंडित जी ने गाँव के कई डोगरों को गिरफ़्तार कराया जिन्होंने अपने पड़ोसी मुसलमानों को मारने में हिस्सा लिया था. और फिर ग़फ़ूर को अपने साथ लेकर गाँव में घूम घूम कर कहा—"यह देखो. फ़ीरोज़ दीन के लड़के को मैंने ही अपने घर में छिपा रखा था." उन्होंने ग़फ़ूर के बाप की एक बकरी और तीन भेड़ें गाँव के एक डोगरे के यहाँ से लेकर ग़फ़ूर के हवाले कर दीं. ग़फ़ूर के बाप का कुछ सामान दूसरे घरों से निकलवाया. फिर सब सामान बेचकर ग़फ़ूर को रुपये दिये और उस से कहा—"बेटा, मैं तेरे बाप को न बचा सका. "तेरी माँ को न बचा सका. तेरे भाई बहनों की रक्षा न कर सका. मैं उनके लिये जान दे सकता था पर जिन हैवानों ने उन्हें मारा है उन से उनकी रक्षा न कर सकता था और अगर मैं भी मर गया होता तो आज तू भी ज़िन्दा न बचा होता. अब तुझे कोई डर नहीं है. अब कशमीर में कशमीर की जनता का राज क़ायम हो गया है. मैं चाहता हूँ कि तू अपने घर में रह कर अपना कारबार संभाल. मैं हर तरह तेरी मदद करूँगा." यह कहते समय ग़फ़ूर ने देखा कि पंडित चाचा की आँखों में आँसू भर आये हैं. ग़फ़ूर भी उनका यह प्रेम देख कर अपने माँ बाप को याद करके बहुत रोया.

पर उस गाँव में ग़फ़ूर का जी बिलकुल न लगा. उसे अपने अकेले घर में वहशत होती थी. आख़िर एक दिन वह अपना गाँव छोड़ कर श्रीनगर के लिये चल पड़ा. रास्ते में एक जगह उसकी जेब से किसी गिरहकट ने सब रुपये निकाल लिये और वह कंगाल हो गया. वह श्रीनगर के बाज़ार में जब मज़दूरी की तलाश में घूम रहा था तभी भाई साहब से उसकी मुलाक़ात हो गई और वह उनके साथ चलिया आ गया.

यह थी ग़फ़ूर की आपबीती. इसमें मारकाट की तफ़सील मैंने जान बूझ कर छोड़ दी है. मैं कभी भी यह कहानी आपको न

ہاتھ میں لیکر حملہ آوروں کا مقابلہ کر رہے ہیں. پنڈت جی نے گاؤں کے کئی ڈوگروں کو گرفتار کرایا جنھوں نے اپنے پڑوسی مسلمانوں کو مارنے میں حصہ لیا تھا. اور پھر غفور کو اپنے ساتھ لے کر گاؤں میں گھوم گھوم کر کہا—" یہ دیکھو، فیروز دین کے لڑکے کو میں نے ہی اپنے گھر میں چھپا رکھا تھا." انھوں نے غفور کے باپ کی ایک بکری اور تین بھیڑیں گاؤں کے ایک ڈوگرے کے یہاں سے لے کر غفور کے حوالے کر دیں. غفور کے باپ کا کچھ سامان دوسرے گھروں سے نکلوایا پھر سب سامان بیچ کر غفور کو روپئے دیئے اور اس سے کہا— "بیٹا، میں تیرے باپ کو نہ بچا سکا تیری ماں کو نہ بچا سکا. تیرے بھائی بہنوں کی رکشا نہ کر سکا. میں ان کے لئے جان دے سکتا تھا پر جن حیوانوں نے انہیں مارا ہے ان سے ان کی رکشا نہ کر سکتا تھا اور اگر میں بھی مر گیا ہوتا تو آج تو بھی زندہ نہ بچا ہوتا. اب تجھے کوئی ڈر نہیں ہے. اب کشمیر میں کشمیر کی جنتا کا راج قائم ہو گیا ہے. میں چاہتا ہوں کہ تو اپنے گھر میں رہکر اپنا کاروبار سنبھال. میں ہر طرح تیری مدد کروں گا." یہ کہتے سمے غفور نے دیکھا کہ پنڈت چاچا کی آنکھوں میں آنسو بھر آئے ہیں. غفور بھی ان کا یہ پریم دیکھکر اور اپنے ماں باپ کو یاد کر کے بہت رویا.

پر اس گاؤں میں غفور کا جی بالکل نہ لگا. اسے اپنے اکیلے گھر میں وحشت ہوتی تھی. آخر ایک دن وہ اپنا گاؤں چھوڑ کر شری نگر کے لئے چل پڑا. راستے میں ایک جگہ اس کی جیب سے گرہ کٹ نے سب روپے نکال لئے اور وہ کنگال ہوگیا. وہ شری نگر کے بازار میں جب مزدوری کی تلاش میں گھوم رہا تھا تبھی بھائی صاحب سے اس کی ملاقات ہوگئی اور وہ ان کے ساتھ چلیا آگیا.

یہ تھی غفور کی آپ بیتی. اس مار کاٹ کی تفصیل میں نے جان بوجھکر چھوڑ دی ہے. میں کبھی بھی یہ کہانی آپ کو نہ

सुनाती अगर इसका सम्बन्ध पंडित सन्तराम से न होता. आज गफ़ूर के जीवन पर उसके 'पंडित चाचा' का कितना असर है यह गफ़ूर से बात कर के ही देखा जा सकता है. मैंने उससे पूछा था कि तुमको हिन्दुओं से तो बड़ी नफ़रत होगी. लेकिन इसका जवाब गफ़ूर ने 'हां' में नहीं दिया. वह बोला—"हिन्दुओं से नफ़रत कैसी. आख़िर पंडित चाचा भी तो हिन्दू थे. सभी हिन्दू थोड़े ही ख़राब होते हैं. और जिन लोगों ने मेरे गांव के मुसलमानों को मारा उन्हें मुसलमान भी तो सता चुके थे. मुसलमानों ने भी इसी बेरहमी से उनके रिश्तेदारों को मारा होगा. वह लोग ग़ुस्से में पागल हो गये थे. आदमी पागल हो जाये तो उसे अच्छे बुरे का ख़याल नहीं रहता. उसे तो माफ़ कर देना चाहिये. उस पर तरस खाना चाहिये."

मैं चाहती हूं कि गफ़ूर का यह जवाब हर पढ़ने वाला ध्यान से पढ़े. उस पर ग़ौर करे और दूसरों को सुनाये. जिस आदमी की आंखों के सामने उसके घर के सारे आदमी क़त्ल कर दिये गये हों उसके दिल में क़ातिलों के लिये ज़रा भी नफ़रत नहीं. गफ़ूर अधिक पढ़ा लिखा होता तो मैं समझती कि उसने इसलाम के पैग़म्बर का पैग़ाम समझा है, हज़रत ईसा की ज़िन्दगी से सबक़ लिया है या महात्मा गांधी की तालीम का उस पर असर पड़ा है. लेकिन गफ़ूर तो अपने मज़हब के बारे में भी ज़्यादा जानकारी नहीं रखता. उसके इस जवाब में पंडित संतराम की इंसानियत बोल रही है. पंडित संतराम, गफ़ूर के पंडित चाचा, जिनके बरताव ने गफ़ूर से अपनी सारी क़ौम का क़सूर माफ़ करा लिया और एक वह दिल जिसको नफ़रत का भंडार होना चाहिये था उसको प्रेम से भर दिया.

नफ़रत मुर्दाबाद !
इंसानियत ज़िन्दा बाद !!

سناتی اگر اس کا سمبندھ پنڈت سنت رام سے نہ ہوتا۔ آج غفور کے جیون پر اس کے 'پنڈت چاچا' کا کتنا اثر ہے یہ غفور سے باتیں کر کے ہی دیکھا جا سکتا ہے۔ میں نے اس سے پوچھا تھا کہ تم کو ہندوؤں سے تو بڑی نفرت ہوگی۔ لیکن اس کا جواب غفور نے 'ہاں' میں نہیں دیا—وہ بولا—"ہندوؤں سے نفرت کیسی۔ آخر پنڈت چاچا بھی تو ہندو تھے۔ سبھی ہندو تھوڑے ہی خراب ہوتے ہیں۔ اور جن لوگوں نے میرے گاؤں کے مسلمانوں کو مارا انہیں مسلمان بھی تو ستا چکے تھے۔ مسلمانوں نے بھی اسی بے رحمی سے ان کے رشتہ داروں کو مارا ہوگا۔ وہ لوگ غصے میں پاگل ہو گئے تھے۔ آدمی پاگل ہو جائے تو اسے اچھے برے کا خیال نہیں رہتا۔ اسے تو معاف کر دینا چاہئے۔ اس پر ترس کھانا چاہئے۔"

میں چاہتی ہوں کہ غفور کا یہ جواب ہر پڑھنے والا دھیان سے پڑھے۔ اس پر غور کرے اور دوسروں کو سنائے۔ جس آدمی کی آنکھوں کے سامنے اس کے گھر کے سارے آدمی قتل کر دیئے گئے ہوں اس کے دل میں قاتلوں کے لئے ذرا بھی نفرت نہیں۔ غفور ادھک پڑھا لکھا ہوتا تو میں سمجھتی کہ اس نے اسلام کے پیغمبر کا پیغام سمجھا ہے، حضرت عیسیٰ کی زندگی سے سبق لیا ہے یا مہاتما گاندھی کی تعلیم کا اس پر اثر ہوا ہے۔ لیکن غفور تو اپنے مذہب کے بارے میں بھی زیادہ جانکاری نہیں رکھتا۔ اس کے اس جواب میں پنڈت سنت رام کی انسانیت بول رہی ہے۔ پنڈت سنت رام، غفور کے 'پنڈت چاچا' جن کے برتاؤ نے غفور سے اپنی ساری قوم کا قصور معاف کرالیا اور ایک وہ دل جس کو نفرت کا بھنڈار ہونا چاہئے تھا اس کو پریم سے بھر دیا۔

نفرت مردہ باد !
انسانیت زندہ باد !!

हमारी राय

ہماری رائے

पाकिस्तान से एक ख़त

एडीटर 'नया हिन्द' के नाम लाहौर से एक ख़त आया है जिसे हम नीचे दे रहे हैं. कमानों के अन्दर शब्दों के मानी हमारे हैं.

१६, टेम्पुल रोड, लाहौर.
७ अगस्त, '५०

मुकर्रमी एडीटर साहब, "नया हिन्द", इलाहाबाद, तसलीम.

भारत में "नया हिन्द" ऐसे महानामे का वजूद (होना) ग़नीमत है. लेकिन मैं एक बेइन्साफ़ी की तरफ़ आपकी तवज्जह दिलाना चाहता हूं. वह किसी हद तक सियासी बदद्यानती (राजकाजी बेईमानी) भी है. मुमकिन है वह नादानिस्ता (अनजाने) हो रही हो. बहरहाल आपको इसका तदारुक (इसकी रोक थाम) ज़रूर करना चाहिये. "नया हिन्द" के टाइटिल पेज पर आप जो हिन्द का नक़शा देते हैं (जिस पर गान्धी जी की तसवीर होती है) वह अखण्ड हिंदुस्तान का नक़शा है और उसमें पाकिस्तान का ज़िक्र नहीं. हालां कि आप ऐसे लोग पाकिस्तान के वजूद के क़ायल हैं. और इसका सबूत आपकी तहरीरें और अमल है. और अन्दर भी सफ़ा एक पर आप जो हिन्द का नक़शा छापते हैं उसमें पाकिस्तान को अलहदा दिखाते हैं. उम्मीद है कि आप टाइटिल पेज की ग़लती की तलाफ़ी (भूल सुधार) भी आइन्दा माह से कर दिया करेंगे और इस अखंडता का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) नहीं करेंगे.

پاکستان سے ایک خط

ایڈیٹر ' نیا ہند ' کے نام لاہور سے ایک خط آیا ہے جسے ہم نیچے دے رہے ہیں ۔ کمانوں کے اندر شبدوں کے معنی ہمارے ہیں۔

۱۶ ٹمپل روڈ ' لاہور ۔
۷ اگست ' ۵۰'

مکرمی اڈیٹر صاحب ' "نیا ہند" الہ آباد ' تسلیم ۔

بھارت میں "نیا ہند" ایسے ماہنامے کا وجود (ہونا) غنیمت ہے ۔ لیکن میں ایک بے انصافی کی طرف آپکی توجہ دلانا چاہتا ہوں ۔ یہ کسی حد تک سیاسی بددیانتی (راج کاجی بے ایمانی) بھی ہے ۔ ممکن ہے وہ نادانستہ (انجانے) ہو رہی ہو ۔ بہر حال آپکو اس کا تدارک (اس کی روک تھام) ضرور کرنا چاہئے ۔ "نیا ہند" کے ٹائٹل پیج پر آپ جو ہند کا نقشہ دیتے ہیں (جس پر گاندھی جی کی تصویر ہوتی ہے) وہ اکھنڈ ہندستان کا نقشہ ہے اور اس میں پاکستان کا ذکر نہیں ۔ حالانکہ آپ ایسے لوگ پاکستان کے وجود کے قائل ہیں ۔ اور اس کا ثبوت آپ کی تحریریں اور عمل ہے ۔ اور اندر بھی صفحہ ایک پر آپ جو ہند کا نقشہ چھاپتے ہیں اس میں پاکستان کو علیحدہ دکھاتے ہیں ۔ امید ہے کہ آپ ٹائٹل پیج کی غلطی کی تلافی (بھول سدھار) بھی آئندہ ماہ سے کر دیا کریں گے ۔ اور اس اکھنڈتا کا مظاہرہ (پردرشن) نہیں کریں گے ۔

श्री सुन्दरलाल जी के 'इसलाम का संगठन' मज़मून पर मुबारक बाद अर्ज़ करता हूँ. मुझे यह मज़मून बहुत पसन्द आया है. उम्मीद है मेरे बाक़ी मुसलमान भाइयों ने भी इसे पसन्द किया होगा. उम्मीद है पंडित जी इस सिलसिले को जारी रखेंगे ताकि इसलाम के मुताल्लिक़ हिन्दू भाइयों के दिलों में पैदा शुदा ग़लतफ़हमियाँ रफ़ा हो जायं.

एहक़र (विनीत)
मजीद निज़ामी

'नया हिन्द' हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा है. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का कोई ख़ास सम्बन्ध राजकाज से नहीं है और उसके क़ायदों में लिखा है कि हर धर्म और हर राजकाजी पारटी के लोग उसके मेम्बर हो सकते हैं, शर्त कि वह सोसाइटी के ख़ास उसूलों यानी एक मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर और दुनिया के सब बड़े-बड़े धर्म मज़हबों की बुनियादी एकता में विश्वास रखते हों. इस तरह पाकिस्तान की अलहदगी के क़ायल और राजकाजी मानी में अखंड हिन्दुस्तान के विश्वासी दोनों सोसाइटी के मेम्बर हो सकते हैं.

'नया हिन्द' का राजकाजी मानी में 'अखंड हिन्दुस्तान' की मांग से कोई सम्बन्ध नहीं है. 'नया हिन्द' की जिन्दगी का यह पांचवां साल है और उसकी अब तक की सारी फ़ाइलें इस बारे में बिलकुल साफ़ हैं. हमने अनेक बार यह कहा है कि एक देश में कई कई आज़ाद हकूमतों का होना कोई अनोखी बात नहीं है. हमारे इस देश के पिछले ढाई हज़ार बरस के इतिहास में शायद ढाई सौ बरस भी ऐसे नहीं मिलेंगे जब उत्तर से दक्खिन और पूरब से पच्छिम तक सारा हिन्दुस्तान एक ही हकूमत के मातहत रहा हो. इन ढाई सौ बरस में हम सन् १८५९ से १९४७ तक ८८ बरस के अंगरेज़ी राज को भी शामिल कर रहे हैं. इस तमाम समय में अधिकतर कई कई पूरी तरह आज़ाद हकूमतें इस देश के अलग अलग हिस्सों में रही हैं जिनमें अकसर एक दूसरे से

شری سندرلال جی کے ' اسلام کا سنگٹھن ' مضمون پر مبارکباد عرض کرتا ہوں - مجھے یہ مضمون بہت پسند آیا ہے - امید ہے میرے باقی مسلمان بھائیوں نے بھی اسے پسند کیا ہوگا امید ہے پنڈت جی اس سلسلے کو جاری رکھینگے تاکہ اسلام کے متعلق ہندو بھائیوں کے دلوں میں پیدا شدہ غلط فہمیاں رفع ہوجائیں -

احقر (ونیت)
مجید نظامی

' نیا ہند ' ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچہ ہے - ہندستانی کلچر سوسائٹی کا کوئی خاص سمبندھ راج کاج سے نہیں ہے اور اس کے قاعدوں میں لکھا ہے کہ ہر دھرم اور ہر راج کاجی پارٹی کے لوگ اس کے ممبر ہوسکتے ہیں ' شرطیکہ وہ سوسائٹی کے خاص اصولوں یعنی ایک ملی جلی ہندستانی کلچر اور دنیا کے سب بڑے بڑے دھرم مذہبوں کی بنیادی ایکتا میں وشواس رکھتے ہوں - اس طرح پاکستان کی علیحدگی کے قائل اور راج کاجی معنی میں اکھنڈ ہندستان کے وشواسی دونوں سوسائٹی کے ممبر ہوسکتے ہیں -

' نیا ہند ' کا راج کاجی معنی میں ' اکھنڈ ہندستان ' کی مانگ سے کوئی سمبندھ نہیں ہے - ' نیا ہند ' کی زندگی کا یہ پانچواں سال ہے اور اس کی ابتک کی ساری فائلیں اس بارے میں بالکل صاف ہیں - ہم نے انیک بار یہ کہا ہے کہ ایک دیش میں کئی کئی آزاد حکومتوں کا ہونا کوئی انوکھی بات نہیں ہے - ہمارے اس دیش کے پچھلے ڈھائی ہزار برس کے اتہاس میں شاید ڈھائی سو برس بھی ایسے نہیں ملینگے جب اتر سے دکھن اور پورب سے پچھم تک سارا ہندستان ایک ہی حکومت کے ماتحت رہا ہو - ان ڈھائی سو برس میں ہم سن ۱۸۵۹ سے ۱۹۴۷ تک ۸۸ برس کے انگریزی راج کو بھی شامل کررہے ہیں - اس تمام سمے میں ادھک تر کئی کئی پوری طرح آزاد حکومتیں اس دیش کے الگ الگ حصوں میں رہی ہیں - جن میں اکثر ایک دوسرے سے

फ़ौजी और राजकाजी टक्करें भी होती रही हैं. इसलिये पाकिस्तान की मांग या उसका होना हमें कभी भी इतनी अनोखी चीज़ नहीं मालूम हुआ जितनी हमारे बहुत से और देशवासियों को.

आजकल की हालत में हम भारत और पाकिस्तान दोनों का दिल से भला चाहते हैं. हम चाहते हैं कि दोनों पूरी तरह आज़ाद और ख़ुशहाल रहें, दोनों के आपसी झगड़े मिटें और दोनों में मेल मुहब्बत, आना जाना, लेनदेन और रिश्तेनाते बढ़ें. जो लोग इनमें से किसी एक पर चढ़ाई करके उसे दूसरे में मिला लेने की बातें सोचते या करते हैं उन्हें हम केवल नासमझ ही नहीं दोनों का दुश्मन और सारे देश का दुश्मन मानते हैं.

पर इस सम्बन्ध में हम कुछ बातें साफ़ कर देना चाहते हैं. एक यह कि दो या अधिक आज़ाद हकूमतों के होने से मुल्क या देश दो नहीं हो जाते. पिछले ढाई हज़ार बरस के अन्दर जब जब इस देश में कई कई पूरी तरह आज़ाद हकूमतें रही हैं तब तब भी देश एक रहा है और एक ही 'हिंदुस्तान' नाम से पुकारा गया है. जिस समय दिल्ली की विधान सभा ने देश के इस बड़े हिस्से का नाम हिन्द या हिन्दुस्तान न रख कर 'भारत' रखा तो हमें थोड़ी सी तसल्ली हुई. 'नया हिन्द' की निगाह में हिन्द या हिन्दुस्तान के अन्दर भारत और पाकिस्तान दोनों शामिल हैं. हमारा नुसख़ा है भारत+पाकिस्तान= हिन्द या हिन्दुस्तान. हमारे विचार से जो आदमी भारत की जय बोलता है वह इस टुकड़े की जय मनाता है और उसे हक़ है. जो पाकिस्तान ज़िन्दाबाद कहता है वह उस टुकड़े की ज़िन्दगी चाहता है और उसे भी हक़ है. पर जो जयहिन्द पुकारता है वह दोनों की ख़ैर मनाता है. हो सकता है कि हमारा सपना केवल एक सपना हो, पर हमें अपने सपने पर घमण्ड है. 'नया हिन्द' में हिन्द का यही मतलब है.

فوجی اور راج کاجی ٹکریں بھی ہوتی رہی ہیں - اس لئے پاکستان کی مانگ یا اُس کا ہونا ہمیں کبھی بھی اِتنی انوکھی چیز نہیں معلوم ہوا جتنی ہمارے بہت سے اور دیش واسیوں کو -

آج کل کی حالت میں ہم بھارت اور پاکستان دونوں کا دل سے بھلا چاہتے ہیں ۔ ہم چاہتے ہیں کہ دونوں پوری طرح آزاد اور خوشحال رہیں ، دونوں کے آپسی جھگڑے مٹیں اور دونوں میں میل محبت ، آنا جانا ، لین دین اور رشتے ناتے بڑھیں - جو لوگ ان میں سے کسی ایک پر چڑھائی کرکے اسے دوسرے میں ملا لینے کی باتیں سوچتے یا کرتے ہیں انہیں ہم کیول ناسمجھ ہی نہیں دونوں کا دشمن اور سارے دیش کا دشمن مانتے ہیں -

پر اِس سمبندھ میں ہم کچھ باتیں صاف کردینا چاہتے ہیں - ایک یہ کہ دو یا ادھک آزاد حکومتوں کے ہونے سے ملک یا دیش دو نہیں ہوجاتے - پچھلے ڈھائی ہزار برس کے اندر جب جب اس دیش میں کئی کئی پوری طرح آزاد حکومتیں رہی ہیں تب تب بھی دیش ایک رہا ہے اور ایک ہی ' ہندستان ' نام سے پکارا گیا ہے - جس سمے دلی کی ودھان سبھا نے دیش کے اس بڑے حصے کا نام ' ہند ' یا ' ہندستان ' نہ رکھ کر ' بھارت ' رکھا تو ہمیں تھوڑی سی تسلی ہوئی - ' نیا ہند ' کی نگاہ میں ہند یا ہندستان کے اندر بھارت اور پاکستان دونوں شامل ہیں - ہمارا نسخہ ہے بھارت + پاکستان = ہند یا ہندستان - ہمارے وچار سے جو آدمی بھارت کی جے بولتا ہے وہ اس ٹکڑے کی جے مناتا ہے اور اُسے حق ہے - جو پاکستان زندہ باد کہتا ہے وہ اس ٹکڑے کی زندگی چاہتا ہے اور اسے بھی حق ہے - پر جو جے ہند پکارتا ہے وہ دونوں کی خیر مناتا ہے - ہوسکتا ہے کہ ہمارا سپنا کیول ایک سپنا ہو ، پر ہمیں اپنے سپنے پر گھمنڈ ہے - ' نیا ہند ' میں ہند کا یہی مطلب ہے -

इस नाज़ुक सवाल पर हम अपने पाकिस्तानी भाइयों से कुछ और कहना चाहते हैं. 'नया हिन्द' जैसे रिसाले के टाइटिल पेज पर भी जिसके 'वजूद' को ऊपर दिये हुए खत में भी "ग़नीमत" कहा गया है, पूरे हिन्दुस्तान के नक़्शे को देखकर यह घबराहट क्यों? उस नक़्शे में तो लंका और बरमा भी शामिल हैं. हमला या चढ़ाई करना किसी देश का भी दूसरे देश पर या किसी राज का दूसरे राज पर, सिवाय उस सूरत के जब कि जिस देश या जिस राज पर हमला किया गया है उसकी बहुगिनत जनता हमले के हक़ में हो और वह हमला उस जनता को किसी तीसरी ज़ालिम ताक़त के पंजे से छुड़ाने के लिये किया गया हो, हम एक एखलाक़ी गुनाह मानते हैं. पर अखंड हिन्दुस्तान के नाम ही से इस तरह घबराना न हमारी दूरदेशी का सबूत है और न बड़े दिल का. ज़रूरत है कि हम अपने अपने घरौंदों से निगाह हटाकर उसे ज़रा दूर तक बाहर दुनिया पर डालें. अखंड हिन्दुस्तान तो छोटी सी चीज़ है. दुनिया का भला चाहने वाले बहुत से लोग अखंड एशिया और अखंड दुनिया तक के सपने देख रहे हैं. हम मानते हैं कि अखंड हिन्दुस्तान, अखंड एशिया, या अखंड दुनिया की अपनी शर्तें, अपनी सूरतें और अपनी हालतें होंगी जो आज कल की सूरतों और हालतों से बिलकुल मुख़्तलिफ़ होंगी. पर हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि इस नेक सपने के पूरे होने में ही आगे की इनसानी क़ौम का भला है.

हमने यहाँ इनसानी क़ौम को एक क़ौम कहा है. यही सबक़ हमने इसलाम और क़ुरान से सीखा है—और यही हिन्दू धर्म और उपनिषदों से. पुस्तकों के हवाले देकर इस नोट को लम्बा करने की ज़रूरत नहीं है. भगवान का लगाया हुआ यह बाग़ अलग अलग फूलों की क्यारियों का जमघट होते हुए भी एक है और हमारे लिये इसकी सब से बड़ी तालीम रंग बिरंगे फूलों के गुलदस्ते और गजरे बनाना सीखना है.

اس نازک سوال پر ہم اپنے پاکستانی بھائیوں سے کچھ اور کہنا چاہتے ہیں ۔ 'نیا ہند' جیسے رسالے کے ٹائٹل پیج پر بھی جس کے 'وجود' کو اوپر دیئے ہوئے خط میں بھی "غنیمت" کہا گیا ہے، پورے ہندستان کے نقشے کو دیکھ کر یہ گھبراہٹ کیوں؟ اس نقشے میں تو لنکا اور برما بھی شامل ہیں ۔ حملہ یا چڑھائی کرنا کسی دیش کا بھی دوسرے دیش پر یا کسی راج کا دوسرے راج پر، سوائے اس صورت کے جب کہ جس دیش یا جس راج پر حملہ کیا گیا ہے اسکی بہو گنت جنتا حملے کے حق میں ہو اور وہ حملہ اس جنتا کو کسی تیسری ظالم طاقت کے پنجے سے چھڑانے کے لئے کیا گیا ہو، ہم ایک اخلاقی گناہ مانتے ہیں ۔ پر اکھنڈ ہندستان کے نام ہی سے اس طرح گھبرانا نہ ہماری دوراندیشی کا ثبوت ہے اور نہ بڑے دل کا ۔ ضرورت ہے کہ ہم اپنے اپنے گھروندوں سے نگاہ ہٹا کر اسے ذرا دور تک باہر دنیا پر ڈالیں ۔ اکھنڈ ہندستان تو چھوٹی سی چیز ہے ۔ دنیا کا بھلا چاہنے والے بہت سے لوگ اکھنڈ ایشیا اور اکھنڈ دنیا تک کے سپنے دیکھ رہے ہیں ۔ ہم مانتے ہیں کہ اکھنڈ ہندستان، اکھنڈ ایشیا یا اکھنڈ دنیا کی اپنی شرطیں، اپنی صورتیں اور اپنی حالتیں ہونگی جو آج کل کی صورتوں اور حالتوں سے بالکل مختلف ہونگی ۔ پر ہمیں یہ بھی سمجھ لینا چاہئے کہ اس نیک سپنے کے پورے ہونے میں ہی آگے کی انسانی قوم کا بھلا ہے ۔

ہم نے یہاں انسانی قوم کو ایک قوم کہا ہے ۔ یہی سبق ہم نے اسلام اور قرآن سے سیکھا ہے — اور یہی ہندو دھرم اور اپنشدوں سے ۔ پستکوں کے حوالے دے کر اس نوٹ کو لمبا کرنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ بھگوان کا لگایا ہوا یہ باغ الگ الگ پھولوں کی کیاریوں کا جمگھٹ ہوتے ہوئے بھی ایک ہے اور ہمارے لئے اس کی سب سے بڑی تعلیم رنگ برنگے پھولوں کے گلدستے اور گجرے بنانا سیکھنا ہے ۔

हम सबको इस कड़वी सच्चाई को भी भूलना नहीं चाहिये कि पाकिस्तान और भारत का अलग अलग वजूद इस देश के मुसलमानों या हिन्दुओं की नेकी या बदी या ताक़त या कमज़ोरी का ही नतीजा नहीं है और न यह अलहदगी इन दोनों में से किसी के भी नफ़े नुक़सान को निगाह में रखकर वजूद में लाई गई है. यह पैदावार है उसी गंदी पच्छिमी सियासत की जिसने आज से चालीस बरस पहले ईरान को बीच से चीरने की कोशिश की थी, जिसने अरबों की छाती पर बैठ कर फ़िलस्तीन के हिस्से बखरे कर डाले, जिसने मिस्र के टुकड़े किये, जिसने आयर लैंड को दो हिस्सों में बांटा, जिसने जरमनी की तीन फांकें कर दीं, जो इस नोट के लिखे जाने के समय भी कोरिया को चीर डालने पर तुली हुई है और जिसकी पैनी छुरी अब कशमीर पर भी पड़ती हुई नज़र आती है. हम यह मानते हैं कि दुनिया के इन सब बदक़िस्मत मुलकों में अपनी अपनी भी कमज़ोरियां हैं. अगर इनसानी जिस्म की ख़िल्त में, उसकी प्रकृति में कोई बिगाड़ न आ जावे तो बाहर के जरासीम या कीड़े उस जिस्म में रोग पैदा नहीं कर सकते. मशहूर कहावत है कि ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती. हम सैकड़ों बार कह चुके हैं और फिर दुहराते कि हमारी इस समय की हालत की ज़िम्मेवारी न केवल मुसलमानों पर है न केवल हिन्दुओं पर. हम अनेक बार कह चुके हैं कि अगर केवल हिन्दुओं के दिल फ़िरक़ेवाराना ज़हर से पाक होते, अगर अपने को इंडियन नैशनल कांग्रेस कहने वाली जमात भी इस ज़हर से पाक होती तो न मुसलिम लीग बन सकती थी, न हिन्दू सभा और न पाकिस्तान और भारत. हम रूहानी दर्द के साथ यह भी देख रहे हैं कि रोग अभी ज़ोरों पर है. इस मुल्क में या किसी मुल्क में इधर या उधर हममें से किसी को भी अपनी ढाई ईंट की या डेढ़ ईंट की मसजिद पर ख़ुशी या घमंड नहीं होना चाहिये. हम सब

ہم سب کو اس کڑوی سچائی کو بھی بھولنا نہیں چاہئے کہ پاکستان اور بھارت کا الگ الگ وجود اس دیش کے مسلمانوں یا ہندوؤں کی نیکی یا بدی یا طاقت یا کمزوری کا ہی نتیجہ نہیں ہے اور نہ یہ علاحدگی ان دونوں میں سے کسی کے بھی نفع نقصان کو نگاہ میں رکھکر وجود میں لائی گئی ہے - یہ پیداوار ہے اسی گندی پچھلی سیاست کی جس نے آج سے چالیس برس پہلے ایران کو بیچ سے چیرنے کی کوشش کی تھی ' جس نے عربوں کی چھاتی پر بیٹھ کر فلسطین کے حصے بخرے کر ڈالے ' جس نے مصر کے ٹکڑے کئے ' جس نے آئرلینڈ کو دو حصوں میں بانٹا ' جس نے جرمنی کی تین پھانکیں کردیں ' جو اس نوٹ کے لکھے جانے کے سمے بھی کوریا کو چیر ڈالنے پر تلی ہوئی ہے اور جس کی پینی چھری اب کشمیر پر بھی پڑتی ہوئی نظر آتی ہے - ہم یہ مانتے ہیں کہ دنیا کے ان سب بدقسمت ملکوں میں اپنی اپنی بھی کمزوریاں ہیں - اگر انسانی جسم کی خلط میں ' اس کی پرکرتی میں کوئی بگاڑ نہ آجاوے تو باہر کے جراثیم یا کیڑے اس جسم میں روگ پیدا نہیں کرسکتے - مشہور کہاوت ہے کہ تالی کبھی ایک ہاتھ سے نہیں بجتی - ہم سیکڑوں بار کہہ چکے ہیں اور پھر دہراتے ہیں کہ ہماری اس سمے کی حالت کی ذمہ واری نہ کیول مسلمانوں پر ہے نہ کیول ہندوؤں پر - ہم انیک بار کہہ چکے ہیں کہ اگر کیول ہندوؤں کے دل فرقہ وارانہ زہر سے پاک ہوتے ' اگر اپنے کو انڈین نیشنل کانگریس کہنے والی جماعت بھی اس زہر سے پاک ہوتی تو نہ مسلم لیگ بن سکتی تھی ' نہ ہندو سبھا اور نہ پاکستان اور بھارت - ہم روحانی درد کے ساتھ یہ بھی دیکھ رہے ہیں کہ روگ ابھی زوروں پر ہے - اس ملک میں یا کسی ملک میں ادھر یا ادھر ہم میں سے کسی کو بھی اپنی ڈھائی اینٹ کی یا ڈیڑھ اینٹ کی مسجد پر خوشی یا گھمنڈ نہیں ہونا چاہئے - ہم سب

में कमज़ोरियां थीं और हैं और मालूम होता है कि फ़िलहाल एक दरजे तक बढ़ भी रही हैं. पर हम मायूस क्यों हों ? हमें सब के दिलो में बैठे हुए ईश्वर अल्लाह पर भरोसा क्यों न हो ? हम अपनी और सब की कमज़ोरियों और बुराइयों को दूर करने और अपने और सबके दिलों को बड़ा करने की भगवान से प्रार्थना. क्यों न करें और भगवान की तरफ़ से निराश भी क्यों हों ?

हम इसलामी हकूमत या रामराज दोनों में से किसी के भी ख़िलाफ़ नहीं हैं. पर अगर इन शब्दों का मतलब दुनिया के किसी भी हिस्से पर किसी एक शरीयत, कर्मकांड या रीत रिवाज के पालने वालों की हकूमत है तो हमें यह समझ लेना चाहिये कि इस तरह की हकूमत न इख़लाक़ की निगाह से जायज़ है और न दुनिया की दौड़ में ठहर सकती है. लेकिन अगर इन शब्दों का मतलब इन्साफ़, बराबरी, रवादारी, इनसानी मुहब्बत और इसी तरह के दूसरे असूलों से है तो फिर इसलामी हकूमत और रामराज दोनों का एक ही मतलब है. दोनों एक ही हक़ीक़त की तरफ़ इशारा कर रहे हैं.

यह भी एक अमिट हक़ीक़त है कि सच यह है कि धीरे धीरे लेकिन मज़बूत क़दमों के साथ इनसानी दुनिया अपने बीच की दीवारों को गिरा कर फूट से एकता की तरफ़ बढ़ती जा रही है. दुनिया की कोई ताक़त उसके इस बढ़ने को नहीं रोक सकती. हमारा फ़र्ज़ सिर्फ़ यह है कि दुनिया माली और सियासी मैदानों में जो कुछ करना चाह रही है उसे हम हिम्मत के साथ इख़लाक़ी और रुहानी मैदानों में भी पूरा करने की तरफ़ जुट जावें. मौलाना रूम का यह मशहूर शेर हमारे लिये काफ़ी सबक़ रखता है—

तू बराए वस्ल करदन आमदी
नै बराए फ़स्ल करदन आमदी

अल्लाह ने हज़रत मूसा को तंबीह की थी कि तुझे फाड़ने के लिये नहीं भेजा गया था मिलाने के लिये भेजा गया था.

میں کمزوریاں تھیں اور ہیں اور معلوم ہوتا ہے کہ فی الحال ایک درجے تک بڑھ بھی رہی ہیں۔ پر ہم مایوس کیوں ہوں؟ ہمیں سب کے دلوں میں بیٹھے ہوئے ایشور اللہ پر بھروسہ کیوں نہ ہو؟ ہم اپنی اور سب کی کمزوریوں اور برائیوں کو دور کرنے اور اپنے اور سب کے دلوں کو بڑا کرنے کی بھگوان سے پرارتھنا کیوں نہ کریں اور بھگوان کی طرف سے نراش بھی کیوں ہوں؟

ہم اسلامی حکومت یا رام راج دونوں میں سے کسی کے بھی خلاف نہیں ہیں۔ پر اگر ان شبدوں کا مطلب دنیا کے کسی بھی حصے پر کسی ایک شریعت، کرم کانڈ یا ریت رواج کے پالنے والوں کی حکومت ہے تو ہمیں یہ سمجھ لینا چاہیئے کہ اس طرح کی حکومت نہ اخلاق کی نگاہ سے جائز ہے اور نہ دنیا کی دوڑ میں ٹھہر سکتی ہے۔ لیکن اگر ان شبدوں کا مطلب انصاف، برابری، رواداری، انسانی محبت اور اس طرح کے دوسرے اصولوں سے ہے تو پھر اسلامی حکومت اور رام راج دونوں کا ایک ہی مطلب ہے۔ دونوں ایک ہی حقیقت کی طرف اشارہ کر رہے ہیں۔

یہ بھی ایک امٹ حقیقت ہے کہ سچ یہ ہے کہ دھیرے دھیرے لیکن مضبوط قدموں کے ساتھ انسانی دنیا اپنے بیچ کی دیواروں کو گرا کر پھوٹ سے ایکتا کی طرف بڑھتی جا رہی ہے۔ دنیا کی کوئی طاقت اس کے اس بڑھنے کو نہیں روک سکتی۔ ہمارا فرض صرف یہ ہے کہ دنیا مالی اور سیاسی میدانوں میں جو کچھ کرنا چاہ رہی ہے اسے ہم ہمت کے ساتھ اخلاقی اور روحانی میدانوں میں بھی پورا کرنے کی طرف جٹ جاویں۔ مولانا روم کا یہ مشہور شعر ہمارے لئے کافی سبق رکھتا ہے—

تو برائے وصل کردن آمدی
نے برائے فصل کردن آمدی

اللہ نے حضرت موسیٰ کو تنبیہ کی تھی کہ تجھے پھاڑنے کے لئے نہیں بھیجا گیا تھا ملانے کے لئے بھیجا گیا تھا۔

भाई मजीद निज़ामी ने हमारे 'इसलाम का संगठन' मज़मून पर हमें मुबारकबाद दी है. हम दिल से उनके शुक्रगुज़ार हैं. मुसलमान भाइयों के दिलों में भी हिन्दू धर्म के बारे में काफ़ी ग़लतफ़हमियां हैं और उनके दूर करने की भी उतनी ही ज़रूरत है. पाकिस्तान के कुछ भाई अगर इस तरफ़ ध्यान दें तो उससे दिलों के नज़दीक लाने में और भी मदद मिले.

१-९-५०

—सुन्दरलाल

मानसिक तन्दुरुस्ती

अगर ईश्वर पर श्रद्धा और आशा से भरा हुआ दिल हो तो मुसीबतों के बीच में भी हिम्मत और अच्छे काम में लगे रहकर शान्ति महसूस की जा सकती है. नीचे लिखे हुए क़िस्से से मानसिक स्वास्थ्य यानी ज़ेहनी तन्दुरुस्ती की एक मिसाल मिलती है.

श्रीमती लज्जावती देवी दिल्ली छावनी की एक पंजाबी बहन हैं. पिछले साल उन्होंने अपनी और अपने कताई मन्डल की काती हुई सूत की गुन्डियां गांधी जयन्ती के मौक़े पर भेंट की थीं. इस साल वह लिखती हैं:—

"इस साल कुछ सिक्के जमा करके आप ही के ज़रिये दान भेजना चाहती हूँ. असली गुन्डी तो मैं ख़ुद ही कात सकती हूँ. क्योंकि दूसरी जो बहनें चर्खा संघ कताई मन्डल में आती हैं वह इस चीज़ को अभी ठीक से नहीं समझ सकी हैं, फिर भी काफ़ी कात रही हैं. जैसा कि मैंने ४५ गुन्डियों पर चरखा देने का क़ायदा बना रखा है, वह चालू है अभी तक दस बहनों ने गुन्डी का हिसाब ख़तम किया है. साथ साथ इस चीज़ को समझाने का भी जतन किया जाता है. मैं देखती हूँ कि आज हम अपना समय दूसरों के दोश निकालने में ही बरबाद कर रहे

بھائی مجید نظامی نے ہمارے 'اسلام کا سنگٹھن' مضمون پر ہمیں مبارکباد دی ہے۔ ہم دل سے اُن کے شکرگذار ہیں۔ مسلمان بھائیوں کے دلوں میں بھی ہندو دھرم کے بارے میں کافی غلط فہمیاں ہیں اور اُن کے دور کرنے کی بھی اُتنی ہی ضرورت ہے۔ پاکستان کے کچھ بھائی اگر اس طرف دھیان دیں تو اس سے دلوں کے نزدیک لانے میں اور بھی مدد ملے۔

۱-۹-۵۰

—سندرلال

مانسک تندرستی

اگر ایشور پر شردھا اور آشا سے بھرا ہوا دل ہو تو مصیبتوں کے بیچ میں بھی ہمت اور اچھے کام میں لگے رہکر شانتی محسوس کی جا سکتی ہے۔ نیچے لکھے ہوئے قصے سے مانسک سواستھیہ یعنی ذہنی تندرستی کی ایک مثال ملتی ہے۔

شریمتی لجاوتی دیوی دلی چھاونی کی ایک پنجابی بہن ہیں۔ پچھلے سال انھوں نے اپنی اور اپنے کتائی منڈل کی کاتی ہوئی سوت کی گنڈیاں گاندھی جینتی کے موقعہ پر بھینٹ کی تھیں۔ اِس سال وہ لکھتی ہیں:—

"اِس سال کچھ سکے جمع کرکے آپ ہی کے ذریعے دان بھیجنا چاہتی ہوں۔ اصلی گنڈی تو میں خود ہی کات سکتی ہوں۔ کیونکہ دوسری جو بہنیں چرخہ سنگھ کتائی منڈل میں آتی ہیں وہ اس چیز کو ابھی ٹھیک سے نہیں سمجھ سکی ہیں، پھر بھی کافی کات رہی ہیں۔ جیسا کہ میں نے ۳۵ گنڈیوں پر چرخہ دینے کا قاعدہ بنا رکھا ہے، وہ چالو ہے۔ ابھی تک دس بہنوں نے گنڈی کا حساب ختم کیا ہے۔ ساتھ ساتھ اس چیز کو سمجھانے کا بھی جتن کیا جاتا ہے۔ میں دیکھتی ہوں کہ آج ہم اپنا سمے دوسروں کے دوش نکالنے میں ہی برباد کر رہے

हैं. इससे मैं इन बहनों को बचाना चाहती हूँ. मुझे अचरज होता है कि दूसरों के दोश देखने से इन बेचारी बहिनों को कैसे शान्ति मिल सकती है.

"मुझे और मेरे भाईयों को अपने पिताजी की तरफ से दूसरे ढंग की तालीम मिली है. २ अगस्त को, आज़ादी के कुछ ही दिन पहले मेरे एक ३३ साल के भाई दूसरों की रक्षा करते करते क़त्ल हो गये. उस वक्त मेरे दूसरे तीन भाई लुधियाने के पास खन्ने में बहुत से मुस्लिम भाईयों को बचा बचा कर कैम्पों में भेजने का काम करते थे. एक तरफ से भाई की मौत का सदमा और उनकी बेवा और छै बच्चों का दुख दिल में भरा था और दूसरी तरफ से मुसलमान भाईयों की जान बचाने से शान्ति मिलती था. अब भी मेरे बड़े भाई आज़ाद रूप से सेवा में लगे हैं. हमें तो इसी में शान्ति मिलती है.

"अपने पिता की तालीम से मैं हमेशा आशावादी रहती हूँ. कभी भी निराश नहीं होती. मेरी दो लड़कियों में से एक का ब्याह चार साल पहले हो चुका. दूसरी का पाँच छै महीने में हो जायगा. फिर मैं ज्यादा आज़ाद हो जाऊँगी और भगवान चाहेगा तो अधिक सेवा कर सकूँगी. पहले मेरे जीवन के साथी को मेरे कम से काम सन्तोश था, लेकिन पूज्य बापू की हत्या के बाद वह भी अनुकूल (मुआफ़िक़) होते जा रहे हैं. यह सब मैं भगवान की कृपा ही मानती हूँ."

सूत का दान अपने कातने वाले की मेहनत का दान है. एक ही गुन्डी का हो, तो भी वह पूरा दान है.

वर्धा ८-९-'५० कि० घ० मशरूवाला

('हरिजन सेवक' से)

ھوں - اِس سے مَیں اِن بہنوں کو بچانا چاھتی ھوں - مجھے اچرج ھوتا ھے کہ دوسروں کے دوش دیکھنے سے اِن بیچاری بہنوں کو کیسے شانتی مل سکتی ھے -

" مجھے اور میرے بھائیوں کو اپنے پتا جی کی طرف سے دوسرے ڈھنگ کی تعلیم ملی ھے - ۲ اگست کو ' آزادی کے کچھ ھی دن پہلے میرے ایک ۳۳ سال کے بھائی دوسروں کی رکشا کرتے کرتے قتل ھوگئے - اُس وقت میرے دوسرے تین بھائی لدھیانے کے پاس کھنے میں بہت سے مسلم بھائیوں کو بچا بچا کر کیمپوں میں بھیجنے کا کام کرتے تھے - ایک طرف سے بھائی کی موت کا صدمہ اور اُن کی بیوہ اور چھ بچوں کا دکھ دل میں بھرا تھا اور دوسری طرف سے مسلمان بھائیوں کی جان بچانے سے شانتی ملتی تھی - اب بھی میرے بڑے بھائی آزاد روپ سے سیوا میں لگے ھیں - ھمیں تو اسی میں شانتی ملتی ھے -

" اپنے پتا کی تعلیم سے میں ھمیشہ آشاوادی رھتی ھوں - کبھی بھی نراش نہیں ھوتی - میری دو لڑکیوں میں سے ایک کا بیاہ چار سال پہلے ھوچکا - دوسری کا پانچ چھ مہینے میں ھوجائیگا - پھر میں زیادہ آزاد ھوجاؤں گی اور بھگوان چاھے گا تو ادھک سیوا کرسکوں گی - پہلے میرے جیون کے ساتھی کو میرے کام سے کم سنتوش تھا ' لیکن پوجیہ باپو کی ھتیا کے بعد وہ بھی انوکول (موافق) ھوتے جارھے ھیں - یہ سب میں بھگوان کی کرپا ھی مانتی ھوں -"

سوت کا دان اپنے کاتنے والے کی محنت کا دان ھے - ایک ھی گنڈی کا ھو ' تو بھی وہ پورا دان ھے -

وردھا ۸-۹-'۵۰ ک - گھ - مشرو والا

('ھریجن سیوک' سے)

यू. एन. ओ. कैसी कसौटी ?

सोना जब खरा हो और अच्छी तरह छेद, तपा और पीटकर परख लिया गया हो और फिर अगर वह किसी कसौटी पर चमकती हुई लकीर न बनाये तो इसमें सोने का दोश नहीं. कसौटी में ही कोई खराबी होनी चाहिये. लाल चीन आज हर तरह सोना साबित हो चुका, पर यू. एन. ओ. की कसौटी पर वह खरा नहीं उतर रहा. क्यों ? क्योंकि उस कसौटी पर अमरीका का रंग चढ़ा हुआ है.

लाल चीन को चीन की सच्ची सरकार सबसे पहले बरमा ने माना. हो सकता है चीन के पड़ोसी होने के नाते उसके मनाने की तह में किसी तरह की कमज़ोरी रही हो पर जब भारत ने लाल चीन को चीन की सरकार मान लिया और उसके बाद दुनिया की बड़ी ताक़तों में से बरतानिया ने भारत का साथ दिया तब यह नहीं कह जा सकता कि भारत और बरतानिया के मानने की किसी तह में कमज़ोरी या डर का कोई अंश था. इन दोनों ने खरे सोने को परख कर खरा सोना कह दिया. भारत के बारे में कुछ मन चले यह इलजाम लगा सकते हैं कि वह लाल रूस का पड़ोसी है पर बरतानिया पर तो वह ऐसा कोई इलजाम भी नहीं लगा सकते. लाल चीन हर तरह खरा सोना है और उसे यू. एन. ओ. में जगह न मिलने से कोई नाखरा कहे तो उसके मन में ही कुछ खुटक होनी चाहिये. यू. एन. ओ. चीन को अपने में शामिल न कर के दुनिया की आबादी के आधे से ज़्यादा हिस्से को बेपरवाही की नज़र से देख कर अपनी नज़र में आप गिरती जा रही है. लाल चीन को

یو - این - او - کیسی کسوٹی ؟

سونا جب کھرا ہو اور اچھی طرح چھید، تپا اور پیٹ کر پرکھ لیا گیا ہو اور پھر اگر وہ کسی کسوٹی پر چمکتی ہوئی لکیر نہ بنائے تو اس میں سونے کا دوش نہیں، کسوٹی میں ہی کوئی خرابی ہونی چاہئے - لال چین آج ہر طرح سونا ثابت ہو چکا، پر یو - این - او - کی کسوٹی پر وہ کھرا نہیں اتر رہا، کیوں ؟ کیوں کہ اس کسوٹی پر امریکہ کا رنگ چڑھا ہوا ہے -

لال چین کو چین کی سچی سرکار سب سے پہلے برما نے مانا - ہوسکتا ہے چین کے پڑوسی ہونے کے ناتے اس کے ماننے کی تہ میں کسی طرح کی کمزوری رہی ہو، پر جب بھارت نے لال چین کو چین کی سرکار مان لیا اور اس کے بعد دنیا کی بڑی طاقتوں میں سے برطانیہ نے بھارت کا ساتھ دیا تب یہ نہیں کہا جاسکتا کہ بھارت اور برطانیہ کے ماننے کی کسی تہ میں کمزوری یا ڈر کا کوئی انش تھا - ان دونوں نے کھرے سونے کو پرکھ کر کھرا سونا کہہ دیا - بھارت کے بارے میں کچھ من چلے یہ الزام لگاسکتے ہیں کہ وہ لال روس کا پڑوسی ہے پر برطانیہ پر تو وہ ایسا کوئی الزام بھی نہیں لگا سکتے - لال چین ہر طرح کھرا سونا ہے اور اسے یو - این - او - میں جگہ نہ ملنے سے کوئی نا کھرا کہے تو اس کے من میں ہی کچھ کھٹک ہونی چاہئے - یو - این - او - چین کو اپنے میں شامل نہ کر کے دنیا کی آبادی کے آدھے سے زیادہ حصے کو بے پرواہی کی نظر سے دیکھ کر اپنی نظر میں آپ گرتی جارہی ہے - لال چین کو

खरा सोना कहने में चीन की सैंतालिस करोड़ आबादी, भारत की तैंतीस करोड़ आबादी, बरतानिया और उसकी कुछ बस्तियों की दस बारह करोड़ अबादी, रूस की दस करोड़ आबादी और छोटे मोटे मुल्कों की दस बारह करोड़ आबादी यानी कुल दुनिया के सवा अरब यानी आधे से ज्यादा लोग शामिल हैं. हमारी समझ में नहीं आता कि यू. एन. ओ. में किसी मुल्क के शामिल होने का क्या विधान है? क्या उसका सारा विधान अमरीका की 'हां' और 'ना' पर ही निर्भर है? हमें मालूम है अमरीका को 'वेटो' (Veto) का हथियार मिला हुआ है. यह हथियार तो औरों के पास भी है. यह शान्ति का हथियार है, लड़ाई का नहीं. पर जब अमरीका खुद क़ायदों की परवाह नहीं करता तब औरों ने भी अमरीका की परवाह किये बग़ैर लाल चीन को यू. एन. ओ. में क्यों नहीं शामिल कर लिया?

विटो (Veto) पावर के बारे में हमारे अपने विचार अलग हैं और उनको हम कभी अलग लेख की शकल में अपने पढ़ने वालों के सामने रखेंगे. पर यहाँ हम इतना कहना चाहते हैं कि दुनिया की पंचायत U.N.O. में एक से ज्यादा VetoPower का अर्थ है उस संगठन या उस पंचायत को शान्ति का संस्था बना देना न कि लड़ाई का गुट. बरतानिया की ग़ैरहाज़िरी की परवाह न करके भूल हुई थी पर रूस की ग़ैरहाज़िरी की परवाह न करके यू. एन. ओ. ने आफ़त खड़ी करली. रूस हाज़िर होता तो दुनिया इस नई बेचैनी से बच गई होती. विटो शक्ति में कुछ बुराइयाँ हो सकती हैं पर यह भलाई ज़रूर है कि वह बड़ी लड़ाई से रोक सकती है.

کھرا سونا کہنے میں چین کی سینتالیس کروڑ آبادی، بھارت کی تینتیس کروڑ آبادی، برطانیہ اور اس کی کچھ بستیوں کی دس بارہ کروڑ آبادی، روس کی دس کروڑ آبادی اور چھوٹے موٹے ملکوں کی دس بارہ کروڑ آبادی یعنی کل دنیا کے سوا ارب یعنی آدھے سے زیادہ لوگ شامل ہیں۔ ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ یو - این - او - میں کسی ملک کے شامل ہونے کا کیا ودھان ہے؟ کیا اس کا سارا ودھان امریکہ کی 'ہاں' اور 'نا' پر ہی نربھر ہے؟ ہمیں معلوم ہے امریکہ کو 'ویٹو' (veto) کا ہتھیار ملا ہوا ہے۔ یہ ہتھیار تو اوروں کے پاس بھی ہے۔ یہ شانتی کا ہتھیار ہے، لڑائی کا نہیں۔ جب امریکہ خود قاعدوں کی پرواہ نہیں کرتا تب اوروں نے بھی امریکہ کی پرواہ کئے بغیر لال چین کو یو - این - او - میں کیوں نہیں شامل کرلیا؟

ویٹو (veto) پاور کے بارے میں ہمارے اپنے وچار الگ ہیں اور اُن کو ہم کبھی الگ لیکھ کی شکل میں اپنے پڑھنے والوں کے سامنے رکھیں گے۔ پر یہاں ہم اتنا کہنا چاہتے ہیں کہ دنیا کی پنچایت یو - این - او - میں ایک سے زیادہ Veto Power کا ارتھ ہے اس سنگٹھن یا اس پنچایت کو شانتی کی سنستھا بنا دینا نہ کہ لڑائی کا گٹ۔ برطانیہ کی غیر حاضری کی پرواہ نہ کرکے بھول ہوئی تھی پر روس کی غیر حاضری کی پرواہ نہ کرکے یو - این - او - نے آفت کھڑی کرلی۔ روس حاضر ہوتا تو دنیا اس نئی بےچینی سے بچ گئی ہوتی۔ ویٹو شکتی میں کچھ برائیاں ہوسکتی ہیں پر یہ بھلائی ضرور ہے کہ وہ بڑی لڑائی سے روک سکتی ہے۔

लाल चीन Veto Power के झगड़े, आपसी मनमुटाव और नियमों की बेपरवाही की वजह से खरा सोना होते हुए यू. एन. ओ. के सराफ़े के बाजार से बाहर पड़ा है और पीला चीन पीतल होते हुए यू. एन. ओ. के सराफ़े की ऊँची दूकान की मजबूत तिजोरी के मजबूत खाने में जगह पाए हुए है. भारत और बरतानिया यह खड़े खड़े देख रहे हैं और ऐसा मालूम होता है मानो देख ही नहीं रहे. रूस ने समझदारी की और वह इतना ही कर सका कि उसने नाइन्साफ़ी के तमाशे को न देखकर अपनी आँखें बन्द कर लीं. बस इतने पर बहुत से देश उसे नक्कू बना बैठे. यू. एन. ओ. उस वक़्त तक अमन और खरी सरकार की सच्ची कसौटी नहीं समझी जा सकती जब तक वह लाल चीन को अपने संगठन में जगह न दे. यू. एन. ओ. को नहीं मालूम कि उसने यह भूल करके दुनिया को दो दलों में बाँट दिया है—एक लाल चीन को चीन की खरी सरकार मानने वाला और दूसरा लाल चीन को चीन की खरी सरकार न मानने वाला. या दूसरे शब्दों में एक वह दल, जो फ़ारमूसाई पीले चीन को नफ़रत की नजर से देखता, नाचीज और दग़ाबाज समझता और किसी तरह उसको चीन की सरकार मानने के लिये तैयार नहीं होता है और दूसरा वह दल, जो फ़ारमूसाई पीले चीन को प्यार की नजर से देखता है, सब कुछ और भलामानस समझता है और सब तरह उसको चीन की सरकार मानता है. दो शब्दों में इनको माउ दल' और 'च्यांग दल' नाम दिये जा सकते हैं. लाल चीन के यू. एन. ओ. में शामिल होते ही कम से कम उस समय तक के लिये दुनिया में शान्ति की जरूर गारन्टी हो जायगी जब तक फिर यू. एन. ओ.

لال چین کے Veto Power کے جھگڑے، آپسی من مٹاو اور نیموں کی بے پرواہی کی وجہ سے کھرا سونا ہوتے ہوئے یو۔این۔او۔ کے صرافے کے بازار سے باہر پڑا ہے اور پیلا چین پیتل ہوتے ہوئے یو۔این۔او۔ کے صرافے کی اونچی دوکان کی مضبوط تجوری کے مضبوط خانے میں جگہ پائے ہوئے۔ بھارت اور برطانیہ یہ کھڑے کھڑے دیکھ رہے ہیں اور ایسا معلوم ہوتا ہے، مانو دیکھ ہی نہیں رہے۔ روس نے سمجھداری کی اور وہ اتنا ہی کرسکا کہ اس نے نا انصافی کے تماشے کو نہ دیکھ کر اپنی آنکھیں بند کرلیں۔ بس اتنے پر بہت سے دیش اسے 'نکو' بنا بیٹھے۔ یو۔این۔او۔ اس وقت تک امن اور کھری سرکار کی سچی کسوٹی نہیں سمجھی جاسکتی جب تک وہ لال چین کو اپنے سنگٹھن میں جگہ نہ دے۔ یو۔این۔او۔ کو نہیں معلوم کہ اس نے یہ بھول کرکے دنیا کو دو دلوں میں بانٹ دیا ہے — ایک لال چین کو چین کی کھری سرکار ماننے والا اور دوسرا لال چین کو چین کی کھری سرکار نہ ماننے والا۔ یا دوسرے شبدوں میں ایک وہ دل، جو فارموسائی پیلے چین کو نفرت کی نظر سے دیکھتا، ناچیز اور دغاباز سمجھتا اور کسی طرح اس کو چین کی سرکار ماننے کیلئے تیار نہیں ہوتا ہے، اور دوسرا وہ دل، جو فارموسائی پیلے چین کو پیار کی نظر سے دیکھتا ہے، سب کچھ اور بھلا مانس سمجھتا ہے اور سب طرح اس کو چین کی سرکار مانتا ہے۔ دو شبدوں میں ان کو 'ماؤ دل' اور 'چیانگ دل' نام دیئے جاسکتے ہیں۔ لال چین کے یو۔این۔او۔ میں شامل ہوتے ہی کم سے کم اس سمے تک کیلئے دنیا میں شانتی کی ضرور گارنٹی ہوجائیگی جب تک پھر یو۔این۔او۔

दूसरी भूल करके अपने दो टुकड़े न कर ले.

अमरीका जब यू. एन. ओ. में लाल रूस के साथ बैठ सकता है तब लाल चीन के साथ बैठने में उसे झिझक क्यों ? क्या इस वजह से कि माउ ने कभी कुछ अमरीकियों और एक अमरीकी राजदूत की ओर कुछ बेपरवाही दिखाई थी, और वह भी उस वक़्त जब अमरीका माउ के दुश्मन, च्यांग को करोड़ों रुपये देकर उसके खिलाफ़ लड़वा रहा था ? और क्या इस छोटी सी बात को अमरीका अपने दिल में जमाए रखकर यह समझता है कि वह दुनिया के और मुल्कों की नज़रों में ऊंचे दरजे का राजनेता होने का सबूत दे रहा है ? राजनेतापन ऐसी बात को भुला देने में है न कि याद रखने में. उसे यह सबक़ बरतानिया से लेना चाहिये. बरतानिया में समझ की सूझ अमरीका से आज भी कहीं ज्यादा है.

अमरीका वाले यह समझ लें कि अगर वह चीन को यू. एन. ओ. में शामिल करने से रोकते हैं तो हम भारतवासी और कितने ही दूसरे मुल्क यह समझते रहेंगे कि अमरीका वाले लड़ाई पसन्द हैं अमन पसन्द नहीं. आज कोरिया रूस के हाथ में हो या न हो पर यू. एन. ओ. हमें साफ़ अमरीका के हाथ में ही नहीं ट्रूमैन के हाथ में दिखाई दे रही है. अमरीका अगर चाहे तो आज लाल चीन यू. एन. ओ. में शामिल हो सकता है और सारी दुनिया को चैन की साँस लेने के लिये मौक़ा मिल सकता है. अमरीका इतनी समझदारी करने पर शान्ति के इनाम का हक़दार हो जायेगा और अगर स्टालिन छोटे दिल वाला नहीं है तो उसे ट्रूमैन को अपना शान्ति इनाम देने में कोई झिझक न होगी.

دوسری بھول کرکے اپنے دو ٹکڑے نہ کرلے۔

امریکہ جب یو۔این۔او۔میں لال روس کے ساتھ بیٹھ سکتا ہے تب لال چین کے ساتھ بیٹھنے میں اُسے جھجھک کیوں؟ کیا اس وجہ سے کہ ماؤ نے کبھی کچھ امریکیوں اور ایک امریکی راج دوت کی اور کچھ بےپرواہی دکھائی تھی، اور وہ بھی اُس وقت جب امریکہ ماؤ کے دشمن، چیانگ کو کروڑوں روپیہ دےکر اُس کے خلاف لڑوا رہا تھا؟ اور کیا اس چھوٹی سی بات کو امریکہ اپنے دل میں جمائے رکھ کر یہ سمجھتا ہے کہ وہ دنیا کے اور ملکوں کی نظروں میں اونچے درجے کا راج نیتا ہونے کا ثبوت دے رہا ہے؟ راج نیتا پن ایسی بات کو بھلا دینے میں ہے نہ کہ یاد رکھنے میں۔ اُسے یہ سبق برطانیہ سے لینا چاہئے۔ برطانیہ میں سمجھ کی سوجھ امریکہ سے آج بھی کہیں زیادہ ہے۔

امریکہ والے یہ سمجھ لیں کہ اگر وہ چین کو یو۔این۔او۔ میں شامل کرنے سے روکتے ہیں تو ہم بھارت واسی اور کتنے ہی دوسرے ملک یہ سمجھتے رہینگے کہ امریکہ والے لڑائی پسند ہیں امن پسند نہیں۔ آج کوریا روس کے ہاتھ میں ہو یا نہ ہو پر یو۔این۔او۔ ہمیں صاف امریکہ کے ہاتھ میں ہی نہیں، ٹرومین کے ہاتھ میں دکھائی دے رہی ہے۔ امریکہ اگر چاہے تو آج لال چین یو۔این۔او۔ میں شامل ہوسکتا ہے اور ساری دنیا کو چین کی سانس لینے کے لئے موقعہ مل سکتا ہے۔ امریکہ اتنی سمجھداری کرنے پر شانتی کے انعام کا حقدار ہوجائیگا اور اگر اسٹالن چھوٹے دل والا نہیں ہے تو اُسے ٹرومین کو اپنا شانتی انعام دینے میں کوئی جھجھک نہ ہوگی۔

मिस्र लाल चीन से न जाने क्यों रूठा हुआ है? अगर लाल रूस ने कभी किसी वजह से इसराईली सरकार को सरकार माननेकी भूल या भलाई की तो उसकी वजह से लाल चीन से बिगड़ने की ज़रूरत? मिस्र को चाहिये कि वह लाल चीनको लाल रूस से अलग करके देखे और फिर अपना फ़ैसला दे. इतना ही नहीं, उसको इस वक़्त यह भी देखना चाहिये कि दुनिया की भलाई किस बात में है. अफ़रीका पर यूरप या अमरीका का छा जाना मिस्र के लिये कोई भली चीज़ नहीं. लाल चीन की कमज़ोरी में एशिया की कमज़ोरी छिपी हुई है. एशिया के किसी हिस्से पर अमरीका का छा जाना बराबर है यूरप का अफ़रीका के बहुत से हिस्सों पर छा जाने के. मिस्र को इस वक़्त अपने जोश के दबाव में आकर कोई काम करना ठीक नहीं, वह अपने जोश को क़ाबू में रख कर जो कुछ करेगा वह उसके लिये तो ठीक होगा ही, अफ़रीका और सारी दुनिया के लिये भी ठीक होगा. जो मिस्र उस कोरिया के बारे में जो आज लाल रूस का मुरीद माना जाता है इतनी अक़्लमन्दी का काम कर सकता है वह उस लाल चीन के बारे में जो एक दिन रूस के साथ बराबरी का दावा करेगा क्यों उतनी ही अक़्लमन्दी से काम नहीं लेता? हम मिस्र की कोई ऐसी ज़ोरदार दलीलें भी तो नहीं पाते जिनके बूते पर वह लाल चीन को यू. एन. ओ. के फाटक पर खड़ा हुआ रोक रहा है. क्या वह नहीं चाहता कि यू. एन. ओ. दुनिया के सब मुल्कों की नुमाइन्दा जमात हो? लाल चीन छोटा मोटा मुल्क नहीं. मिस्र से कई गुना बड़ा मुल्क है. इतनी बड़ी आबादी को अलग गुट बनाने का मौक़ा देना क्या लड़ाई को दावत देना नहीं है?

अमरीका और मिस्र दोनों चीन से बिगड़े हुए हैं, पर अमरीका

مصر لال چین سے نہ جانے کیوں روٹھا ہوا ہے؟ اگر لال روس نے کبھی کسی وجہ سے اسرائیلی سرکار کو سرکار ماننے کی بھول یا بھلائی کی تو اس کی وجہ سے لال چین سے بگڑنے کی ضرورت؟ مصر کو چاہئے کہ وہ لال چین کو لال روس سے الگ کر کے دیکھے اور پھر اپنا فیصلہ دے۔ اتنا ہی نہیں، اس کو اس وقت یہ بھی دیکھنا چاہئے کہ دنیا کی بھلائی کس بات میں ہے۔ افریقہ پر یورپ یا امریکہ کا چھاجانا مصر کیلئے کوئی بھلی چیز نہیں۔ لال چین کی کمزوری میں ایشیا کی کمزوری چھپی ہوئی ہے۔ ایشیا کے کسی حصہ پر امریکہ کا چھاجانا برابر ہے یورپ کا افریقہ کے بہت سے حصوں پر چھاجانے کے۔ مصر کو اس وقت اپنے جوش کے دباؤ میں آکر کوئی کام کرنا ٹھیک نہیں۔ وہ اپنے جوش کو قابو میں رکھ کر جو کچھ کریگا وہ اس کے لئے تو ٹھیک ہوگا ہی، افریقہ اور ساری دنیا کے لئے بھی ٹھیک ہوگا۔ جو مصر اس کوریا کے بارے میں جو آج لال روس کا مرید مانا جاتا ہے اتنی عقلمندی کا کام کرسکتا ہے وہ اس لال چین کے بارے میں جو ایک دن روس کے ساتھ برابری کا دعویٰ کریگا کیوں اتنی ہی عقلمندی سے کام نہیں لیتا؟ ہم مصر کی کوئی ایسی زوردار دلیلیں بھی تو نہیں پاتے جن کے بوتے پر وہ لال چین کو یو۔ این۔ او۔ کے پھاٹک پر کھڑا ہوا روک رہا ہے۔ کیا وہ نہیں چاہتا کہ یو۔ این۔ او۔ دنیا کے سب ملکوں کی نمائندہ جماعت ہو؟ لال چین چھوٹا موٹا ملک نہیں۔ مصر سے کئی گنا بڑا ملک ہے۔ اتنی بڑی آبادی کو الگ گٹ بنانے کا موقعہ دینا کیا لڑائی کو دعوت دینا نہیں ہے؟

امریکہ اور مصر دونوں چین سے بگڑے ہوئے ہیں، پر امریکہ

के राज़ी होतेही-मिस्र भी राज़ी हो जायगा. उनके राज़ी न होनेकी वजह हमने ऊपर देदी है. हो सकता है और भी वजह हो जिन से हम नावाक़िफ़ हैं पर इससे क्या ? दुनिया की भलाई और शान्ति की ख़ातिर उनको भी भुला देने में अमरीका और मिस्र किसी से पीछे न रहेंगे.

यू. एन. ओ. अमरीका के रंग में रंग कर अपनी मौत आप मर जायगी. अमरीका यू. एन. ओ. को अपने रंग में रंग कर बेहद टोटे में रहेगा और यू. एन. ओ. की जान ले बैठेगा. यू. एन. ओ. का दम निकलते ही जिन ५२ मुल्कों को अमरीका अपना साथी समझे हुए है वह सब ऐसे बिखर जायेंगे जैसे डोरा टूटने पर माला के दाने. और फिर न जाने उन मुल्कों के किस किस तरह के गुट बनेंगे. अमरीका की मालदारी और उस मालदारी के डर से लड़ाई के सामान की तैयारी उसे खा जायगी और उसके गढ़े एटलांटिक पैक्ट के धुर्रे उड़ा देगी. यह ठीक है, ग़रीब रूस भी पिच जायगा. पर उसके पिच जाने से अमरीका के हाथ क्या आयेगा ? अमरीका यह भूल बैठे कि वह रूस को हरा कर उससे कुछ फ़ायदा उठा सकता है. अमरीका व्योपारी मुल्क है और व्योपारी का लड़ाई टालने में ही भला है लड़ाई पालने में नहीं.

यू. एन. ओ. सच्ची कसौटी भले ही हो. पर हम तो उस वक़्त तक उस पर अमरीका का रंग चढ़ा हुआ ही समझते रहेंगे जब तक वह लाल चीन के बारे में अपनी परख की क़ाबलियत का सबूत दे कर उसे अपने में नहीं मिला लेती और इस तरह आने वाली तीसरी बड़ी जंग को नहीं रोक देती.

ता०, २७-७-५०   —भगवान दीन

کے راضی ہوتے ہی مصر بھی راضی ہوجائیگا - اُن کے راضی نہ ہونے کی وجہ ہمنے اُوپر دیدی ہے - ہوسکتا ہے اور بھی وجہ ہو جن سے ہم ناواقف ہوں پر اس سے کیا ؟ دنیا کی بھلائی اور شانتی کی خاطر اُن کو بھی بھلا دینے میں امریکہ اور مصر کسی سے پیچھے نہ رہینگے -

یو - این - او - امریکہ کے رنگ میں رنگ کر اپنی موت آپ مر جائیگی - امریکہ یو - این - او - کو اپنے رنگ میں رنگ کر بے حد ٹوٹے میں رہے گا - اور یو - این - او - کی جان لے بیٹھیگا - یو - این - او - کا دم نکلتے ہی جن ۵۲ ملکوں کو امریکہ اپنا ساتھی سمجھے ہوئے ہے وہ سب ایسے بکھر جائینگے جیسے ڈورا ٹوٹنے پر مالا کے دانے - اور پھر نہ جانے اُن ملکوں کے کس کس طرح کے گُٹ بنینگے - امریکہ کی مالداری اور اُس مالداری کے ڈر سے لڑائی کے سامان کی تیاری اُسے کھاجائیگی - اور اُس کے گڑھے اٹلانٹک پیکٹ کے دھرے اُڑادیگی - یہ ٹھیک ہے ' غریب روس بھی پچ جائیگا پر اُس کے پچ جانے سے امریکہ کے ہاتھ کیا آئیگا ؟ امریکہ یہ بھول بیٹھے کہ وہ روس کو ہرا کر اُس سے کچھ فائدہ اٹھا سکتا ہے - امریکہ بیوپاری ملک ہے اور بیوپاری کا لڑائی ٹالنے میں ہی بھلا ہے - لڑائی پالنے میں نہیں -

یو - این - او - سچی کسوٹی بھلے ہی ہو پر ہم تو اُس وقت تک اس پر امریکہ کا رنگ چڑھا ہوا ہی سمجھتے رہینگے جب تک وہ لال چین کے بارے میں اپنی پرکھ کی قابلیت کا ثبوت دے کر اُسے اپنے میں نہیں ملا لیتی اور اس طرح آنے والی تیسری بڑی جنگ کو نہیں روک دیتی -

—بھگوان دین -   ۵۰-۷-۲۷

श्री अक्षय ब्रह्मचारी का उपवास

मैं पढ़ने वालों का ध्यान अपने 'अयोध्या के मुस्लिम' नाम के लेख की तरफ खींचता हूं, जो १९-८-'५० के 'हरिजन' में छपा है. उसमें कहने के अनुसार श्री अक्षय ब्रह्मचारी ने पिछली २२ अगस्त को अपना उपवास शुरू कर दिया था. पूरे एक माह बाद (ज्यादा निश्चय से कहा जाय तो उपवास शुरू करने के ३२ वें दिन) श्री विनोबा जी और मेरी सलाह से उन्होंने कल (२२ सितम्बर को) अपना उपवास तोड़ दिया. जगह की कमी होने के कारन इस माह की घटनाओं का पूरा बयान यहाँ मैं नहीं दे रहा हूं. इतना कहना काफ़ी होगा कि धारा सभा में पूछे गये एक सवाल के जवाब के आखिर में उत्तर प्रदेश के बड़े वज़ीर माननीय पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त ने नीचे लिखा विश्वास दिलाया :

"मैं आप से कह चुका हूं कि मैं नहीं चाहता कि कोई कठिनाई किसी क़िस्म के हक़ को अमल में लाने में हो. अगर कोई ग़लत चीज़ हुई तो उसको हमने ठीक करने की कोशिश की. जिनके दिल को चोट लगी, उसका हमें अफ़सोस है. उसके लिये हम उनसे कम परेशान और दुखी नहीं हुए और हमारी यह ख़्वाहिश है, हम यह चाहते हैं कि सब लोग भलमनसाहत से रहें और हर शख़्स अपने हक़ का पूरा फ़ायदा उठा सके और हमारे सूबे में ऐसी आबोहवा पैदा हो, जिस से किसी को इस तरह का कोई शक न हो कि उसके लिये किसी क़िस्म का ख़तरा है और वह शान के साथ, इज़्ज़त के साथ रहता हुआ ख़ुशी और अमन से अपना जीवन नहीं बिता सकता."

(मूल हिन्दी)

उत्तर प्रदेश के घर मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने भी अक्षय जी को लिखे अपने निजी ख़त में बड़े वज़ीर के ऊपर के

شری اکشے برہمچاری کا اُپواس

میں پڑھنے والوں کا دھیان اپنے 'ایودھیا کے مسلم' نام کے لیکھ کی طرف کھینچتا ہوں، جو ۵۰-۸-۱۹ کے 'ہریجن' میں چھپا ہے. اس میں کہنے کے انوسار شری اکشے برہمچاری نے پچھلی ۲۲ اگست کو اپنا اُپواس شروع کر دیا تھا. پورے ایک ماہ بعد (زیادہ نشچے سے کہا جائے تو اُپواس شروع کرنے کے ۳۲ ویں دن) شری ونوبا جی اور میری صلاح سے انہوں نے کل (۲۲ ستمبر کو) اپنا اُپواس توڑ دیا. جگہ کی کمی ہونے کے کارن اس ماہ کی گھٹناؤں کا پورا بیان یہاں میں نہیں دے رہا ہوں. اتنا کہنا کافی ہوگا کہ دھارا سبھا میں پوچھے گئے ایک سوال کے جواب کے آخر میں اُتر پردیش کے بڑے وزیر مانیہ پنڈت گووند بلبھ پنت نے نیچے لکھا وشواس دلایا :

"میں آپ سے کہ چکا ہوں کہ میں نہیں چاہتا کہ کوئی کٹھنائی کسی قسم کے حق کو عمل میں لانے میں ہو. اگر کوئی غلط چیز ہوئی تو اسکو ہم نے ٹھیک کرنے کی کوشش کی. جنکے دل کو چوٹ لگی، اسکا ہمیں افسوس ہے. اسکے لئے ہم ان سے کم پریشان اور دکھی نہیں ہوئے اور ہماری یہ خواہش ہے، ہم یہ چاہتے ہیں کہ سب لوگ بھلمنساہت سے رہیں اور ہر شخص اپنے حق کا پورا فائدہ اٹھا سکے اور ہمارے صوبے میں ایسی آب و ہوا پیدا ہو، جس سے کسی کو اسطرح کی کوئی شنکا نہ ہو کہ اُس کے لئے کسی قسم کا خطرہ ہے اور وہ شان کے ساتھ، عزت کے ساتھ رہتا ہوا خوشی اور امن سے اپنا جیون نہیں بتا سکتا." (مول ہندی)

اُتر پردیش کے گھر منتری شری لال بہادر شاستری نے بھی اکشے جی کو لکھے اپنے نجی خط میں بڑے وزیر کے اوپر کے

जवाब का ज़िक्र करते हुए लिखा :

"आप देखेंगे कि सरकार ने अयोध्या की हालत ठीक करने की पिछले महीनों में पूरी कोशिश की है. फिर भी अगर वहाँ कोई कमी है, तो हमारा फ़र्ज़ है कि उसे पूरा करें. इसमें सब के सहयोग और सहायता की जरूरत है. सब से ज्यादा जरूरी यह है कि वहाँ का वायुमंडल ठीक किया जाय, ताकि वहाँ के सब रहने वाले आपस में मेल मिलाप से रहें......

"अन्त में हमें यही कहना है कि मेरी और सब की यही दिली ख्वाहिश है कि आप अपना अनशन तोड़ दें." (मूल हिन्दी)

इसके अलावा, इस बारे में मेरे और पन्त जी के बीच तार और चिट्ठियों का आना जाना भी हुआ.

श्री अक्षय ब्रह्मचारी अभी भी इन वचनों को काफ़ी मानने में हिचकिचाहट महसूस कर रहे थे. उनका डर बिलकुल निराधार नहीं था. दूसरी तरफ़, सरकार को भी कठिन हालत से निपटना था. उसकी जनता के सहयोग की मांग ठीक ही थी.

इन वचनों और दूसरी बातों को ध्यान में रखकर श्री विनोबाजी ने और मैंने श्री अक्षय ब्रह्मचारी को अपना उपवास बन्द कर देने की सलाह दी. हमें बड़ी खुशी है कि उन्होंने हमारी सलाह मान ली.

भगवान अक्षय जी को दुखी इनसानों की बेग़रज़ सेवा करने के लिये शक्ति और शरीर, मन व हृदय की सफ़ाई दें. यह उपवास उनके लिये सच्चे सत्याग्रही की ऊँची से ऊँची योग्यता हासिल करने की पुकार सिद्ध हो. इस सम्बन्ध में मैं फ़ैज़ाबाद और अयोध्या के हिन्दू मुसलमानों से बहुत कुछ कहना चाहता हूँ. लेकिन इसके लिये मैं दूसरा मौक़ा चुनूँगा.

वर्धा, २३-९-५०.

कि० घ० मशरूवाला

('हरिजन सेवक' से)

جواب کا ذکر کرتے ہوئے لکھا :

''آپ دیکھینگے کہ سرکار نے ایودھیا کی حالت ٹھیک کرنے کی پچھلے مہینوں میں پوری کوشش کی ہے . پھر بھی اگر وہاں کوئی کمی ہے' تو ہمارا فرض ہے کہ اسے پورا کریں. اسمیں سب کے سہیوگ اور سہایتا کی ضرورت ہے . سب سے زیادہ ضروری یہ ہے کہ وہاں کا وایومنڈل ٹھیک کیا جائے' تاکہ وہاں کے سب رہنے والے آپس میں میل ملاپ سے رہیں.........

''انت میں ہمیں یہی کہنا ہے کہ میری اور سب کی یہی دلی خواہش ہے کہ آپ اپنا ان شن توڑ دیں .'' (مول ہندی)

اسکے علاوہ' اس بارے میں میرے اور پنت جی کے بیچ تار اور چٹھیوں کا آنا جانا بھی ہوا.

شری اکشے برہمچاری ابھی بھی ان وچنوں کو کافی ماننے میں ہچکچاہٹ محسوس کر رہے تھے . انکا ڈر بالکل نرادھار نہیں تھا. دوسری طرف' سرکار کو بھی کٹھن حالت سے نپٹنا تھا . اس کی جنتا کے سہیوگ کی مانگ ٹھیک ہی تھی .

ان وچنوں اور دوسری باتوں کو دھیان میں رکھکر شری ونوبا جی نے اور میں نے شری اکشے برہمچاری کو اپنا اپواس بند کر دینے کی صلاح دی . ہمیں بڑی خوشی ہے کہ انہوں نے ہماری صلاح مان لی .

بھگوان اکشے جی کو دکھی انسانوں کی بے غرض سیوا کرنے کے لئے شکتی اور شریر' من و ہردیہ کی صفائی دے . یہ اپواس ان کے لئے سچے ستیا گرہی کی اونچی سے اونچی یوگیتا حاصل کرنے کی پکار سدھ ہو . اس سمبندھ میں میں فیض آباد اور ایودھیا کے ہندو مسلمانوں سے بہت کچھ کہنا چاہتا ہوں . لیکن اسکے لئے میں دوسرا موقع چنونگا .

وردھا . ۲۳-۹-۵۰

ک . گھ . مشرو والا

('ہریجن سیوک' سے)

पंडित सुन्दरलाल की और किताबें: —

हिन्दू मुस्लिम एकता — इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़ — साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है — महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गये हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़ — इस छोटी सी किताब में सन १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

پنڈت سندر لال کی اور کتابیں :—

ھندو مسلم ایکتا — اس میں وہ چار لکچر جمع کر دیئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق — سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی ، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج ، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا .

قیمت بارہ آنے

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے — مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا درد ناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق — اس چھوٹی سی کتاب میں ۱۹۴۹-۵۰ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ — مینیجر 'نیا ھند' ۱۴۵ ' مٹھی گنج ' الہ آباد .

हिन्द के विधान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त—लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्हों ने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामीकी जंजीरोंसे आजाद करनेकी कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद— सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती बाड़ी से दिल चस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न सन्कट को दूर करने में बिश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

ہند کے ودھان کی انگریزی ہندی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کیلئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے. قیمت دو روپئے.

مسلم دیش بھکت — لیکھک — شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال، جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے.

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے.

آج کے شہید — سمپادک — شری رتن لال بنسل

اِس کتاب میں ان ویروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی.

ان بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے.

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب.

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ.

کسان کی پکار — لیکھک — شری آر. وینکٹ راو.

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں، اُن لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں اور بھارت کے ان سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں. قیمت پانچ آنے.

ملنے کا پتہ — منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد.

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं.

पाँच से ज्यादह् किताबें खरीदने वालों और बुकसेलरों को ३३फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अली सोख्ता

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह् दी थी कि कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बनाकर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी की तरफ़ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोख्ता ने की है जो गांधी वाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधी वाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफ़ेकी सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर; 'नया हिन्द' १४५ मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں۔

پانچ سے زیادہ کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو ۳۳فیصدی کمیشن دیا جائے گا۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا۔

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا۔ اس ودھان میں انہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں۔

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلاکر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کردیں۔ یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۳۵ مٹھی گنج' الہ آباد۔

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गयाहै . यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब कीक़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

मलने का पता—मैनेजर "नया [illegible] मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قرآن

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے .

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے .

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے . اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے . یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُنھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ .

ملنے کا پتہ—مینیجر "نیا ہند" ۱۳۵، مٹھی گنج، الٰہ آباد .

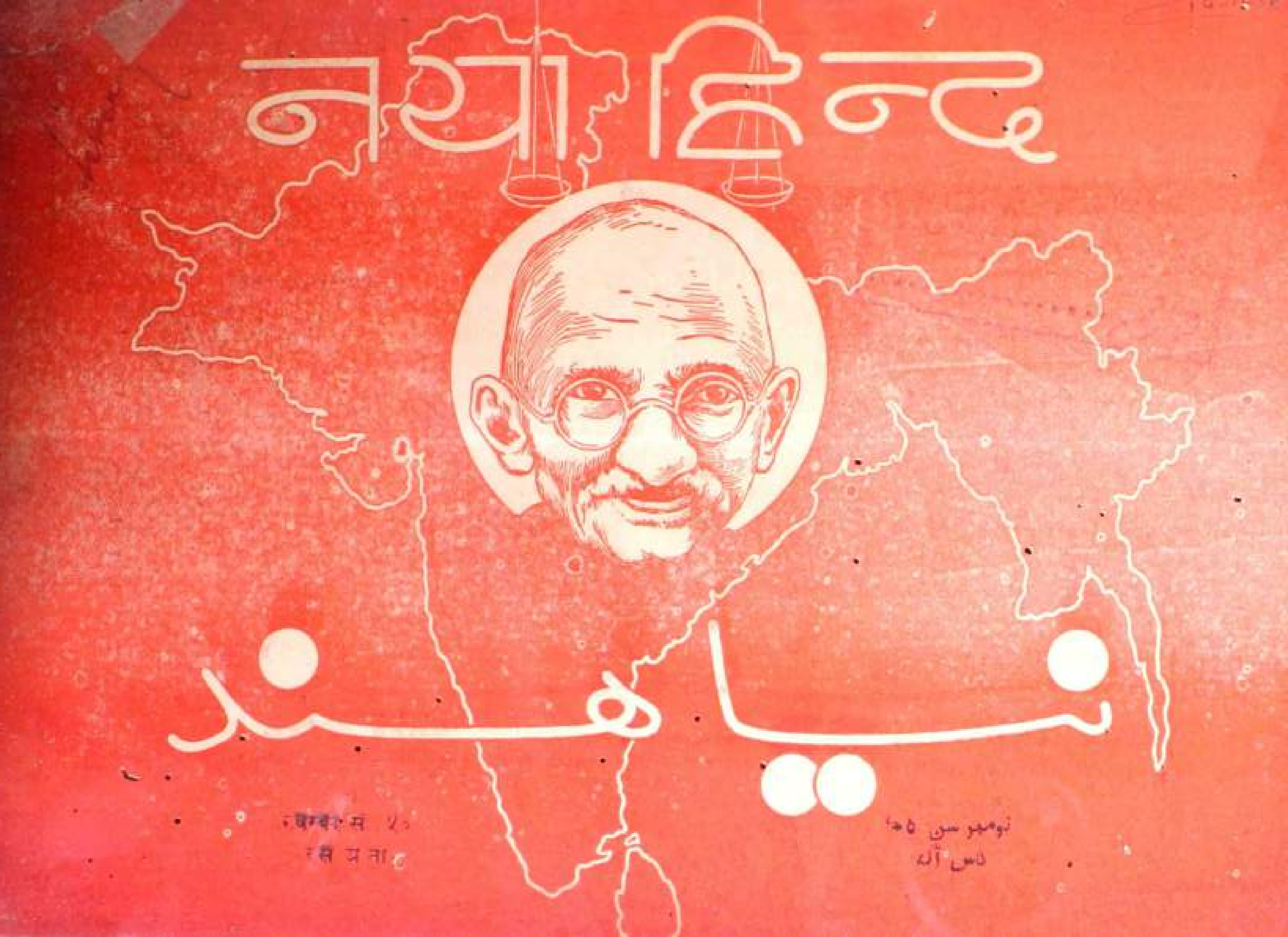
नया हिन्द
نیا ہند
नवम्बर सन ४८
दस आना
نومبر سن ۴۸ء
دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हुसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

नवम्बर १९५०

क्या किस से	सफ़ा
१ – बोल अरी मानवता बोल ! (कविता)—भाई 'सागर' बालूपुरी	३८९
२ – नासिक कांगरेस—भाई सुरेश राम भाई ..	३९१
३ – करोरपति राजपति—भाई अब्दुल हलीम अन्सारी	४११
४ – एटम मंथन (मथना)—भाई जगदीश एम. एस-सी.	४१३
५ – दो बच्चों की दूसरी चिट्ठी महात्मा गांधी के नाम—भाई ख़्वाजा अहमद अब्बास	४१७
६ – कोरिया और हमारा फ़र्ज़—भगवानदीन ...	४२२
७ – हज़रत ईसा की पहाड़ पर की तक़रीर—अनुवादक, भाई हसन अमीन	४२९
८ – कौटिल्य का अर्थशास्त्र—भाई ओंकार नाथ शास्त्री	४५६
९ – बच्चों की दुनिया—दीप माला (कविता)—बालक शायर, नेक लड़का (कहानी)—भाई प्रेम भाई, आज़ादी का गीत (कविता)—भाई सुरेश चन्द्र अरोड़ा	४६२
१० – हमारी राय—श्रीयुत मंडल साहब का त्यागपत्र—भगवान दीन, कांगरेस में लोकशाही फ़्रन्ट—भगवान दीन, इन्सानियत ?—सुन्दर लाल, बड़ौयत, अमरका और जनरल मैकआर्थर—भगवान दीन, तिब्बत पर चीन का हमला—भगवान दीन.	४६८

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने. मैनेजर
१३५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद. 'नया हिन्द'

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

نومبر ۱۹۵۰

کیا کس سے	صفحہ
۱ – بول اری مانوتا بول (کویتا)—بھائی 'ساگر' بالو پوری	۳۸۹
۲ – ناسک کانگریس—بھائی سریش رام بھائی	۳۹۱
۳ – کرور پتی راج پتی—بھائی عبدالحلیم انصاری	۴۱۱
۴ – ایٹم منتھن (متھنا)—بھائی جگدیش ایم-ایس سی	۴۱۳
۵ – دو بچوں کی دوسری چٹھی مہاتما گاندھی کے نام—بھائی خواجہ احمد عباس	۴۱۷
۶ – کوریا اور ہمارا فرض—بھگوان دین	۴۲۲
۷ – حضرت عیسیٰ کی پہاڑ پر کی تقریر—انوادک، بھائی حسن امیں	۴۲۹
۸ – کوٹلیہ کا ارتھ شاستر—بھائی اونکار ناتھ شاستری	۴۵۶
۹ – بچوں کی دنیا—دیپ مالا (کویتا)—بالک شاعر، نیک لڑکا (کہانی)—بھائی پریم بھائی، آزادی کا گیت (کویتا)—بھائی سریش چندر اروڑا	۴۶۲
۱۰ – ہماری رائے—شری یت منڈل صاحب کا تیاگ پتر—بھگوان دین، کانگریس میں لوک شاہی فرنٹ—بھگوان دین، انسانیت ؟—سندر لال، بڑیوت، امریکہ اور جنرل میک آرتھر—بھگوان دین، تبت پر چین کا حملہ—بھگوان دین ...	۴۶۸

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے۔ مینیجر
۱۳۵، مٹھی گنج، الہ آباد۔ ' نیا ہند '

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ६ नवम्बर सन् '५० नम्बर ५

نمبر ۵ نومبر سن ۵۰ جلد ۹

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ھندستانی بولی'
' نیا ھند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی ۔

बोल अरी, मानवता बोल!

(भाई 'सागर' बालू पुरी)

बोल अरी, मानवता बोल !
जीवन का अब कितना मोल ?

बोल अरी तू, कौन जगत में
बांट रहा विष का प्याला ?
जगती के कोने कोने में
जलती है कैसी ज्वाला ?

بول اری' مانوتا بول !

(بھائی 'ساگر' بالو پوری)

بول اری ' مانوتا بول !
جیون کا اب کتنا مول !

بول اری تو' کون جگت میں
بانٹ رہا وش کا پیالہ ؟
جگتی کے کونے کونے میں
جلتی ہے کیسی جوالا ؟

दलकर क्यों धानव मानव को
हँसता प्रीत-विजय का ढोल ?

बोल अरी, मानवता बोल!
जीवन का अब कितना मोल?

परहित की साकार मूर्ति तुम
दया प्रेम सत की ललना

मधुर चेतना मन की हर कर
हँसती बनकर क्यों छलना

जाग जाग अब री मानवता
मानव मन का मन्दिर खोल

बोल अरी, मानवता बोल!
जीवन का अब कितना मोल?

دل کر کیوں دانو مانو کو
ہنستا پیت وجے کا ڈھول !

بول اری، مانوتا بول !
جیون کا اب کتنا مول ؟

پرہت کی ساکار مورتی تم
دیا پریم ست کی للنا

مدھر چیتنا من کی ہرکر
ہنستی بنکر کیوں چھلنا

جاگ جاگ اب ری مانوتا
مانو من کا مندر کھول

بول اری، مانوتا بول !
جیون کا اب کتنا مول ؟

नासिक कांगरेस

(भाई सुरेश राम भाई)

[भाई सुरेश राम भाई 'नया हिन्द' के प्रतिनिधि की हैसियत से नासिक गये थे. जो उन्होंने वहां देखा सुना और जाना वह इस लेख में दर्ज है.—एडीटर]

तीन बरस से ऊपर हो चुके जब हम खुद अपने देश के मालिक बने. सब को उम्मीद थी कि अंगरेज के जाने के बाद हम चैन से रहेंगे—चीज़ें सस्ती होंगी, खाने को अनाज और पहनने को कपड़ा मिलेगा, हिन्दू मुसलिम झगड़े बन्द हो जायँगे और सब शान्ति से जीवन बिताते हुए तरक़्क़ी की तरफ़ क़दम बढ़ायेंगे. हुकूमत की बाग कांगरेस ने अपने हाथ में ली. उसने हमेशा से हिन्दुस्तान की ख़िदमत की थी और वही एक ऐसी संस्था थी जो अपने देश व्यापी संगठन की मदद से इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी निभा सकती थी.

पर इन तीन बरसों में 'मेरे मन कुछ और है विधना के कुछ और' वाली बात हुई. आज़ादी का सूरज निकला ही था—धूप भी अभी नहीं आई थी—कि पंजाब में खून ख़राबी हो गई. इधर के मुसलमानों ने पाकिस्तान की राह पकड़ी और वहाँ के हिन्दुओं ने यहाँ की शरन ली. लाखों मर्द, औरत और बच्चे इधर से उधर आना जाना शुरू हो गये जिनकी संभाल करना कोई हँसी खेल नहीं था. इससे एक तरफ़ जहाँ हुकूमतों पर बार बढ़ गया वहाँ दूसरी तरफ़ दोनों

ناسک کانگریس

(بھائی سریش رام بھائی)

[بھائی سریش رام بھائی 'نیا ہند' کے پرتی ندھی کی حیثیت سے ناسک گئے تھے . جو انہوں نے وہاں دیکھا سنا اور جانا وہ اس لیکھ میں درج ہے . —ایڈیٹر]

تین برس سے اوپر ہو چکے جب ہم خود اپنے دیش کے مالک بنے . سبکو امید تھی کہ انگریز کے جانے کے بعد ہم چین سے رہینگے—چیزیں سستی ہونگی' کھانے کو اناج اور پہننے کو کپڑا ملیگا' ہندو مسلم جھگڑے بند ہو جائینگے اور سب شانتی سے جیون بتاتے ہوئے ترقی کی طرف قدم بڑھائینگے . حکومت کی باگ کانگریس نے اپنے ہاتھ میں لی . اس نے ہمیشہ سے ہندستان کی خدمت کی تھی اور وہی ایک ایسی سنستھا تھی جو اپنے دیش ویاپی سنگٹھن کی مدد سے اتنی بڑی ذمےداری نبھا سکتی تھی .

پر ان تین برسوں میں ''میرے من کچھ اور ہے' ودھنا کے کچھ اور'' والی بات ہوئی . آزادی کا سورج نکلا ہی تھا—دھوپ بھی ابھی نہیں آئی تھی—کہ پنجاب میں خون خرابی ہو گئی . ادھر کے مسلمانوں نے پاکستان کی راہ پکڑی اور وہاں کے ہندوؤں نے یہاں کی شرن لی . لاکھوں مرد' عورت اور بچے ادھر سے ادھر آنا جانا شروع ہوگئے جنکی سنبھال کرنا کوئی ہنسی کھیل نہیں تھا . اس سے ایک طرف جہاں حکومتوں پر بار بڑھ گیا وہاں دوسری طرف دونوں

मुल्कों के आपसी सम्बन्ध बिगड़ गये. ऊपर से कशमीर की सुन्दर भूमि पर क़बायली लोगों और पाकिस्तान की फ़ौजों ने चढ़ाई बोल दी, इधर की फ़ौजें भी वहाँ गईं और सन १९४८ में पूरे साल घमासान लड़ाई चलती रही जिससे दोनों हकूमतों पर और भी ज्यादा बोझ पड़ गया.

इस तरह भारत के पाकिस्तान से सम्बन्ध ख़राब हुए. शरनार्थियों का पेचीदा सवाल था ही, कशमीर एक नया सिर दर्द बन गया— नतीजा यह हुआ कि हमारी हकूमत जरूरी बातों से हट कर इन अचानक और असाधारन बातों में फँस गई. मुल्क की आर्थिक हालत सरकार के क़ाबू से बाहर हो गई, मंहगाई बढ़ती चली गई.

अभी तक पूरबी पाकिस्तान (यानी पूरबी बंगाल) की तरफ़ कुछ शान्ति थी. सन १९५० के शुरू होते ही वहाँ की हालत भी ख़राब हो गई. हज़ारों लाखों आदमी उधर से इधर आने लगे. इसका असर इधर के लोगों के दिल पर भी हुआ. उन्होंने बदला लेने की सोची. यह ऐसी दवा थी जिससे मरज़ बढ़ता ही जाने वाला था. हालत संगीन हो रही थी. ऐसी स्थिति में प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री मिस्टर लियाक़त अली ख़ाँ को दिल्ली आने की दावत दी. आठ रोज की बातचीत के बाद दोनों सरकारों में एक सममौता हुआ जिसमें यह बिश्वास दिलाया गया कि दोनों जगह के कमगिनत लोग पूरी सलामती से रह सकेंगे.

इसी बीच कोरिया में लड़ाई छिड़ गई. इससे चीजों के दाम और भी चढ़ गये. अनाज तक के मिलने में दुश्वारी हो गई और बिहार, तामिलनाद और केरल के इलाक़ों में तो हालत अकाल के

ملکوں کے آپسی سمبندھ بگڑ گئے . اوپر سے کشمیر کی سندر بھومی پر قبائلی لوگوں اور پاکستان کی فوجوں نے چڑھائی بول دی' اِدھر کی فوجیں بھی وہاں گئیں اور سن ۱۹۴۸ میں پورے سال گھمسان لڑائی چلتی رہی جس سے دونوں حکومتوں پر اور بھی زیادہ بوجھ پڑگیا .

اِسطرح بھارت کے پاکستان سے سمبندھ خراب ہوے . شرنارتھیوں کا پیچیدہ سوال تھا ہی' کشمیر ایک نیا سر درد بن گیا—نتیجہ یہ ہوا کہ ہماری حکومت ضروری باتوں سے ہٹ کر ان اچانک اور اسادھارن باتوں میں پھنس گئی . ملک کی آرتھک حالت سرکار کے قابو سے باہر ہوگئی' مہنگائی بڑھتی چلی گئی .

ابھی تک پوربی پاکستان (یعنی پوربی بنگال) کی طرف کچھ شانتی تھی . سن ۱۹۵۰ کے شروع ہوتے ہی وہاں کی حالت بھی خراب ہو گئی . ہزاروں لاکھوں آدمی اُدھر سے اِدھر آنے لگے . اسکا اثر اِدھر کے لوگوں کے دل پر بھی ہوا . اُنھوں نے بدلہ لینے کی سوچی . یہ ایسی دوا تھی جس سے مرض بڑھتا ہی جانے والا تھا . حالت سنگین ہو رہی تھی . ایسی استھتی میں پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے پاکستان کے پردھان منتری مسٹر لیاقت علی خاں کو دلی آنے کی دعوت دی . آٹھ روز کی بات چیت کے بعد دونوں سرکاروں میں ایک سمجھوتہ ہوا جس میں یہ وشواس دلایا گیا کہ دونوں جگہ کے کم گنت لوگ پوری سلامتی سے رہ سکیں گے .

اسی بیچ کوریا میں لڑائی چھڑ گئی . اس سے چیزوں کے دام اور بھی چڑھ گئے . اناج تک کے ملنے میں دشواری ہو گئی اور بہار' تامل ناد اور کیرل کے علاقوں میں تو حالت اکال کے

दरजे तक पहुँच गई—कहीं कहीं चावल के दानों का दिखना भी दूभर हो गया.

इन सब मुसीबतों को बरदाश्त किया जा सकता था और संभाला जा सकता था. पर ग़ज़ब यह हुआ कि जो इसे संभाल सकते थे खुद उन्हीं के संभालने की नौबत आ गई—कांगरेस के सारे संगठन में मानो ऐसा पानी लगा कि उसकी शकल ही बदल गई, उसका हर हिस्सा सड़ने लगा और पुरानी नैतिक ऊँचाई केवल एक कहानी रह गई. तीन साल पहले जिसे लोग पूजते थे उसे देखकर उन्हें घिन आने लगी. पुराने ख़ादिम नये हाकिम बने. उनमें न ख़िदमत की शान रही न हकूमत की आनबान. नतीजा यह हुआ कि भारत सरकार की कुल मशीनरी ढीली पड़ गई जिससे जनता का दुख और भी बढ़ गया. वह अकसर मन मसोस कर रह जाती और हसरत के साथ पुरानी विदेशी हकूमत की याद करती. इस बीच जनता की फ़रियाद का सुनने वाला गांधी—बस एक गांधी—भी इस दुनिया से जा चुका था.

× × ×

इस दर्द भरी हालत में कांगरेस की वर्किंग कमेटी ने यह तय किया कि कांगरेस का छप्पनवां सालाना इजलास नासिक में किया जाय. वैसे तो कांगरेस को जन्म लिये पैंसठ साल हो चुके लेकिन इधर सन् १९३० के बाद से कई साल बीच बीच में सालाना इजलास न हो पाया था. हर इजलास के मौक़े पर वर्किंग कमेटी की तरफ़ से एक आदमी का नाम आ जाता था और वह कांगरेस का प्रधान बन जाता. दो तीन बार चुनाव भी हुए. लेकिन नासिक के लिये सात उम्मीदवार

درجے تک پہنچ گئی—کہیں کہیں چاول کے دانوں کا دیکھنا بھی دوبھر ہوگیا .

اِن سب مصیبتوں کو برداشت کیا جا سکتا تھا اور سنبھالا جا سکتا تھا . پر غضب یہ ہوا کہ جو اِسے سنبھال سکتے تھے خود اُنھوں کے سنبھالنے کی نوبت آگئی—کانگریس کے سارے سنگٹھن میں مانو ایسا پانی لگا کہ اُسکی شکل ہی بدل گئی' اُسکا ہر حصہ سڑنے لگا اور پرانی نیتک اُونچائی کیول ایک کہانی رہ گئی . تین سال پہلے جسے لوگ پوجتے تھے اُسے دیکھکر انھیں گھن آنے لگی . پرانے خادم نئے حاکم بنے . اُن میں نہ خدمت کی شان رہی نہ حکومت کی آن بان . نتیجہ یہ ہوا کہ بھارت سرکار کی کل مشینری ڈھیلی پڑ گئی جس سے جنتا کا دکھ اور بھی بڑھ گیا . وہ اکثر من مسوس کر رہ جاتی اور حسرت کے ساتھ پرانی ودیشی حکومت کی یاد کرتی . اس بیچ جنتا کی فریاد کا سننے والا گاندھی—بس ایک گاندھی—بھی اس دنیا سے جا چکا تھا .

× × ×

اس درد بھری حالت میں کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے یہ طے کیا کہ کانگریس کا چھپنواں سالانہ اجلاس ناسک میں کیا جائے . ویسے تو کانگریس کو جنم لئے پینسٹھ سال ہوچکے لیکن اِدھر سن ۱۹۳۰ کے بعد سے کئی سال بیچ بیچ میں سالانہ اجلاس نہ ہو پایا تھا . ہر اجلاس کے موقع پر ورکنگ کمیٹی کی طرف سے ایک آدمی کا نام آجاتا تھا اور وہ کانگریس کا پردھان بن جاتا . دو تین بار چناؤ بھی ہوئے . لیکن ناسک کے لئے سات اُمیدوار

थे जिनमें चार बैठ गये और तीन खड़े रहे. इसलिये चुनाव हुआ जिसमें आचार्य जीवत राम भगवान दास कृपालानी और श्री शंकर राव जी देव को हरा कर बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन के नासिक कांगरेस के प्रधान चुने जाने का एलान किया गया.

चुनाव के पहले से ही अखबारों में और जगह जगह चर्चा थी कि इस चुनाव में जो जीतेगा उसकी जीत के क्या माने होंगे. एक आम खयाल यह था कि टंडन जी के प्रधान हो जाने से फ़िरक़ा परस्ती की वह सब ताक़तें ज़ोर पकड़ जायंगी जिन्हें जवाहर लाल जी दबाना चाहते हैं और इसलिये सरकार और कांगरेस के बीच तनातनी होने का अन्देशा है.

देश की नाड़ी को जवाहर लाल जी अच्छी तरह पहचानते हैं. उन्होंने एक लम्बा बयान निकाला जिसमें यह बताया कि उनकी हकूमत की पालिसी—पाकिस्तान के साथ और दूसरे मुल्कों के साथ—क्या है, और यहाँ की राजकाजी और आर्थिक हालत संभालने का उनके पास क्या इलाज है. उन्होंने नासिक जाने वाले डेलीगेटों के सामने यह विचार रखा कि वह अच्छी तरह और ठंडे दिल से सब मामलों पर ग़ौर करें, अपनी राय क़ायम करें और फिर उसके अनुसार नासिक में फ़ैसला करें, ताकि दुनिया के आगे यह साफ़ हो जाय कि कांगरेस का क्या मक़सद है, वह क्या चाहती है और किस तरफ़ चलना चाहती है.

इस वातावरन में नासिक में कांगरेस का इजलास हुआ. इसमें हमेशा छै दिन लगा करते हैं, पहले दो दिन पुरानी वर्किंग कमेटी की बैठक, बीच के दो दिन नये कांगरेस प्रधान की सदारत में नई

تھے جن میں چار بیٹھ گئے اور تین کھڑے رہے ۔ اس لئے چناؤ ہوا جس میں آچاریہ جیوت رام بھگوان داس کرپالانی اور شری شنکر راؤ جی دیو کو ہرا کر بابو پرشوتم داس ٹنڈن کے ناسک کانگریس کے پردھان چنے جانے کا اعلان کیا گیا ۔

چناؤ کے پہلے سے ہی اخباروں میں اور جگہ جگہ چرچا تھی کہ اس چناؤ جو میں جیتیگا اسکی جیت کے کیا معنے ہونگے ۔ ایک عام خیال یہ تھا کہ ٹنڈن جی کے پردھان ہوجانے سے فرقہ پرستی کی وہ سب طاقتیں زور پکڑ جائینگی جنھیں جواہر لال جی دبانا چاہتے ہیں اور اس لئے سرکار اور کانگریس کے بیچ تناتنی ہونیکا اندیشہ ہے ۔

دیش کی ناڑی کو جواہر لال جی اچھی طرح پہچانتے ہیں ۔ انھوں نے ایک لمبا بیان نکلا جس میں یہ بتایا کہ اُن کی حکومت کی پالیسی — پاکستان کے ساتھ اور دوسرے ملکوں کے ساتھ — کیا ہے ' اور یہاں کی راج کاجی اور آرتھک حالت سنبھالنے کا اُن کے پاس کیا علاج ہے ۔ انھوں نے ناسک جانے والے ڈیلی گیٹوں کے سامنے یہ وچار رکھا کہ وہ اچھی طرح اور ٹھنڈے دل سے سب معاملوں پر غور کریں ' اپنی رائے قائم کریں اور پھر اُس کے انوسار ناسک میں فیصلہ کریں ' تاکہ دنیا کے آگے یہ صاف ہوجائے کہ کانگریس کا کیا مقصد ہے ' وہ کیا چاہتی ہے اور کس طرف چلنا چاہتی ہے ۔

اس واتاورن میں ناسک میں کانگریس کا اجلاس ہوا ۔ اس میں ہمیشہ چھ دن لگا کرتے ہیں ' پہلے دو دن پرانی ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک ' بیچ کے دو دن نئے کانگریس پردھان کی صدارت میں نئی

कुल हिन्द कांगरेस कमेटी या विषय नियामक समिति (सबजैक्ट कमेटी) की बैठक और आखिरी दो दिन कांगरेस का खुला इजलास. नासिक की तारीखें थीं १६ सितम्बर १९५० से २१ सितम्बर तक.

वर्किंग कमेटी की बैठक

तारीख १६, १७ और १८ की सुबह को वर्किंग कमेटी की बैठकें हुईं. ऐसे मौक़े पर वर्किंग कमेटी मुल्क की हालत और अपने कांगरेस संगठन को देख कर कुछ ठहराव पास करती है जिन्हें वह विषय नियामक समिति के सामने रखती है. वहाँ पर बहस, तरमीम वग़ैरा के बाद वह कांगरेस के खुले इजलास में पेश किये जाते हैं और वहाँ पर पास होने के बाद उन पर कांगरेस की छाप लग जाती है.

इस मरतबा बड़ी गरम खबर थी कि नये कांगरेस प्रधान और सरकारी प्रधान मंत्री में काफ़ी मतभेद है जो नासिक कांगरेस में ज़रूर रंग लायगा. लेकिन गोदावरी के पानी का असर कहिये सब चीज़ें बहुत ही शान्ति, बल्कि ठंडे पन से हुईं. वर्किंग कमेटी ने सात ठहराव तैयार किये—(१) गये हुओं के लिये शोक, (२) आसाम की विपदा, (३) खादी, (४) आर्थिक प्रोग्राम, (५)शरनार्थी, (६) परदेशी नीति और (७) साम्प्रदायिकता.

इस तरह १८ तारीख़ की दोपहर को विषय नियामक समिति की बैठक के वक़्त तक लोगों का डर बहुत काफ़ी निकल चुका था. गरमी या तनातनी का डर बे सिर पैर का साबित हुआ. वर्किंग कमेटी के सभी फ़ैसले आपस की सलाह और एक राय से हुए थे.

کل ہند کانگریس کمیٹی یا وشے نیامک سمیتی (سبجیکٹ کمیٹی) کی بیٹھک اور آخری دو دن کانگریس کا کھلا اجلاس . ناسک کی تاریخیں تھیں ١٦ ستمبر ١٩٥٠ سے ٢١ ستمبر تک .

ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک

تاریخ ١٦ ، ١٧ اور ١٨ کی صبح کو ورکنگ کمیٹی کی بیٹھکیں ہوئیں . ایسے موقع پر ورکنگ کمیٹی ملک کی حالت اور اپنے کانگریس سنگٹھن کو دیکھ کر کچھ ٹھہراؤ پاس کرتی ہے جنہیں وہ وشے نیامک سمیتی کے سامنے رکھتی ہے . وہاں پر بحث ، ترمیم وغیرہ کے بعد وہ کانگریس کے کھلے اجلاس میں پیش کئے جاتے ہیں اور وہاں پر پاس ہونے کے بعد اُن پر کانگریس کی چھاپ لگ جاتی ہے .

اِس مرتبہ بڑی گرم خبر تھی کہ نئے کانگریس پردھان اور سرکاری پردھان منتری میں کافی مت بھید ہے جو ناسک کانگریس میں ضرور رنگ لائیگا . لیکن گوداوری کے پانی کا اثر کہئے سب چیزیں بہت ہی شانتی ، بلکہ ٹھنڈے پن سے ہوئیں . ورکنگ کمیٹی نے سات ٹھہراؤ تیار کئے — (١) گئے ہوؤں کے لئے شوک ، (٢) آسام کی بپدا ، (٣) کھادی ، (٤) آرتھک پروگرام ، (٥) شرنارتھی ، (٦) پردیشی نیتی اور (٧) سامپردایکتا .

اِس طرح ١٨ تاریخ کی دوپہر کو وشے نیامک سمیتی کی بیٹھک کے وقت تک لوگوں کا ڈر بہت کافی نکل چکا تھا . گرمی یا تنا تنی کا ڈر بے سر پیر کا ثابت ہوا . ورکنگ کمیٹی کے سبھی فیصلے آپس کی صلاح اور ایک رائے سے ہوئے تھے .

स्वागत का इन्तज़ाम

आगे की कारवाई पर रोशनी डालने से पहले नासिक कांगरेस के नगर, वहाँ की रौनक़ और इन्तज़ाम वग़ैरा को देख लेना ज़रूरी है.

नासिक हिन्दुस्तान के उन चार तीर्थों में से है जहाँ हर बारहवें साल कुम्भ लगा करता है. बम्बई से वरधा नागपुर होते हुए कलकत्ते जाने वाली रेल पर बम्बई से ११२ मील की दूरी पर नासिक रोड नाम का स्टेशन है. स्टेशन से तीन मील पर नासिक की पुरानी बस्ती है. बम्बई से एक पक्की सड़क भी नासिक होती हुई आगरे जाती है.

दक्खिन की गंगा गोदावरी के दाएं किनारे पर नासिक बसा हुआ है और बाएं किनारे पर पंचवटी नाम की मशहूर जगह है जहाँ राजा रामचन्द्र ने अपने बनवास के कई बरस बिताए थे. पंचवटी में ही लछमन जी ने सरूपनखा की नाक काटी थी. इसी जगह से रावन सीताजी को उड़ा ले गया था. नासिक शहर से तेरह चौदह मील पर त्रयम्बकेश्वर का नामी मंदिर है जहाँ कुम्भ लगा करता है. त्रयम्बकेश्वर से क़रीब पाँच सौ फ़ुट की ऊँचाई पर गंगाद्वार है जहाँ से कहा जाता है गोदावरी निकली है.

वैसे नासिक एक मामूली सी और पच्छिमी घाट के पहाड़ों में लुकी छिपी जगह है जहाँ हमारे ब्रिटिश हाकिमों ने सन् १९२२ में रुपया ढालने और नोट छापने का कारख़ाना खोला था. वहाँ यह काम अब भी जारी है.

سواگت کا انتظام

آگے کی کاروائی پر روشنی ڈالنے سے پہلے ناسک کانگریس کے نگر، وہاں کی رونق اور انتظام وغیرہ کو دیکھ لینا ضروری ہے .

ناسک ہندستان کے اُن چار تیرتھوں میں سے ہے جہاں ہر بارھویں سال کمبھ لگا کرتا ہے . بمبئی سے وردھا ناگپور ہوتے ہوئے کلکتے جانے والی ریل پر بمبئی سے ۱۱۲ میل کی دوری پر ناسک روڈ نام کا اسٹیشن ہے . اسٹیشن سے تین میل پر ناسک کی پرانی بستی ہے. بمبئی سے ایک پکی سڑک بھی ناسک ہوتی ہوئی آگرے جاتی ہے .

دکھن کی گنگا گوداوری کے دائیں کنارے پر ناسک بسا ہوا ہے اور بائیں کنارے پر پنچ وٹی نام کی مشہور جگہ ہے جہاں راجہ رام چندر نے اپنے بن باس کے کئی برس بتائے تھے . پنچ وٹی میں ہی لکشمن جی نے سروپ نکھا کی ناک کاٹی تھی . اسی جگہ سے راون سیتا جی کو اُڑا لے گیا تھا . ناسک شہر سے تیرہ چودہ میل پر تریمبکیشور کا نامی مندر ہے جہاں کمبھ لگا کرتا ہے. تریمبکیشور سے قریب پانچ سو فٹ کی اونچائی پر گنگا دوار ہے جہاں سے کہا جاتا ہے گوداوری نکلی ہے .

ویسے ناسک ایک معمولی سی اور پچھمی گھاٹ کے پہاڑوں میں لکی چھپی جگہ ہے جہاں ہمارے برٹش حاکموں نے سن ۱۹۲۲ میں روپیہ ڈھالنے اور نوٹ چھاپنے کا کارخانہ کھولا تھا . وہاں یہ کام اب بھی جاری ہے .

हाँ तो नासिक रोड स्टेशन से क़रीब सवा मील की दूरी पर, शहर को जाने वाली सड़क के बाईं तरफ़ गांधीनगर बनाया गया था जहाँ यह ५६वीं कांग्रेस हुई. गांधीनगर के अन्दर की ख़ास चीज़ें यह थीं—स्वागत समिति के दफ़्तर, डाक, तार, फ़ोन और रेल के दफ़्तर, नुमायश, विषय नियामक समिति का पंडाल और नुमायश के ठीक सामने कांग्रेस के खुले इजलास का बन्द पंडाल. गांधीनगर से क़रीब पौन मील पर 'उपनगर' था जहाँ कांग्रेस के डेलीगेट ठहराए गये थे. वर्किंग कमेटी के मेम्बरों या बड़े नेताओं के ठहरने के लिये अलग बंगलों का इन्तज़ाम था.

उपनगर के चारों तरफ़ हाता घिरा हुआ था जिस पर पहरा था. घुसने के लिये एक सजा हुआ फाटक था जिसके पास एक दफ़्तर था जहाँ अन्दर जाने के लिये टिकट मिलते थे. फाटक पर और उपनगर के अन्दर स्वयं सेवकों की ड्यूटी थी. अलग अलग सूबों के लिये अलग अलग बैरकें थीं. कुछ बैरकें तो मिलिटरी की थीं पहले की बनीं, मगर ज़्यादातर ताज़ी टीन की बनाई गई थीं. पेशाब घरों, पाख़ानों और नहान घरों का माक़ूल इन्तज़ाम था, लेकिन बन्द नलदार नहान घर नहीं थे. भोजन करने के लिये एक बड़ा कमरा था जिसमें कोई बीस पचास लैनें लगी होंगी और हर लैन में चालीस कुरसियाँ. खाना दोपहर व शाम, दो वक़्त मिलता था. एक वक़्त का एक रुपया लगता था. खाना सादा था मगर अच्छी तरह पका हुआ. परोसने का ढंग और सफ़ाई भी सन्तोष जनक थी.

उपनगर से गांधीनगर आने जाने के लिये बस चलती थी. गांधीनगर का दरवाज़ा सिंहगढ़ के नामी क़िले का हूबहू नमूना

ہاں تو ناسک روڈ اسٹیشن سے قریب سوا میل کی دوری پر، شہر کو جانے والی سڑک کے بائیں طرف گاندھی نگر بنایا گیا تھا جہاں یہ ۵۶ویں کانگریس ہوئی۔ گاندھی نگر کے اندر کی خاص چیزیں یہ تھیں — سواگت سمیتی کے دفتر، ڈاک، تار، فون اور ریل کے دفتر، نمائش، وشے نیامک سمیتی کا پنڈال اور نمائش کے ٹھیک سامنے کانگریس کے کھلے اجلاس کا بند پنڈال۔ گاندھی نگر سے قریب پون میل پر 'اپ نگر' تھا جہاں کانگریس کے ڈیلی گیٹ ٹھہرائے گئے تھے۔ ورکنگ کمیٹی کے ممبروں یا بڑے نیتاؤں کے ٹھہرنے کے لئے الگ بنگلوں کا انتظام تھا۔

اپ نگر کے چاروں طرف احاطہ گھرا ہوا تھا جس پر پہرا تھا۔ گھسنے کے لئے ایک سجا ہوا پھاٹک تھا جس کے پاس ایک دفتر تھا جہاں اندر جانے کے لئے ٹکٹ ملتے تھے۔ پھاٹک پر اور اپ نگر کے اندر سویم سیوکوں کی ڈیوٹی تھی۔ الگ الگ صوبوں کے لئے الگ الگ بیرکیں تھیں۔ کچھ بیرکیں تو ملٹری کی تھیں پہلے کی بنی، مگر زیادہ تر تازی ٹین کی بنائی گئی تھیں۔ پیشاب گھروں، پاخانوں اور نہان گھروں کا معقول انتظام تھا، لیکن بند نل دار نہان گھر نہیں تھے۔ بھوجن کرنے کے لئے ایک بڑا کمرہ تھا جس میں کوئی بیس پچیس لینیں لگی ہونگی اور ہر لین میں چالیس کرسیاں۔ کھانا دوپہر و شام، دو وقت ملتا تھا، ایک وقت کا ایک روپیہ لگتا تھا۔ کھانا سادہ تھا مگر اچھی طرح پکا ہوا۔ پروسنے کا ڈھنگ اور صفائی بھی سنتوش جنک تھی۔

اپ نگر سے گاندھی نگر آنے جانے کے لئے بس چلتی تھی۔ گاندھی نگر کا دروازہ سنگھ گڑھ کے نامی قلعہ کا ہو بہو نمونہ

बनाया गया था. उस में नौबत का भी इन्तजाम था. गांधीनगर भी चारों तरफ से घिरा हुआ था. मिलिटरी का पहरा था. गेट और सड़क पर स्वयंसेवक और पुलिस थी. गांधीनगर में घुसने के लिये आपके पास या तो प्रतिनिधि, प्रेस या विशेष दर्शक वग़ैरा का कोई न कोई पास होना चाहिये या बाहर से दो आने का टिकट खरीदिये.

नासिक का इजलास काम चलाऊ अधिवेशन था. इसलिये बिना पैसा खर्च किये गांधीनगर में घुसना नामुमकिन था, और खुले अधिवेशन का पंडाल भी अच्छी तरह से बंद था. वहाँ पर लगभग पंद्रह हजार आदमियों के लिये इन्तजाम था और उतनी ही कुरसियां. नेताओं के लिये पीछे की तरफ "डैस" थी. बोलने के लिये एक ऊँचा मचान. मचान से जरा हट कर, छत से सटा हुआ, सिनेमा फिल्म लेने का इन्तजाम था. विषय नियामक समिति का पंडाल भी बंद था. दोनों जगह सजावट रंगीन खादी और तसवीरों से की गई थी. बड़े पंडाल को देख कर ऐसा लगता था कि अगर स्वागत समिति को और वक़्त मिलता तो वह सजावट पूरी कर लेती.

बड़े पंडाल के सामने ही चंदे के लिये नुमायश थी. नुमायश के फाटक के अंदर महात्मा गांधी की मूर्ति थी. नुमायश खोलने का काम श्री आना साहब सहस्त्रबुद्धे ने किया था जो महाराष्ट्र के नामी ग्रामोद्योगी कार कर्ता हैं. नुमायश मामूली थी जैसी कि इलाहाबाद लखनऊ में हर साल हुआ करती है. एक अजीब बात थी—नुमायश के फाटक पर बिजली की बत्तियों से केवल एक शब्द लिखा हुआ था—वह था नुमायश के मानी रखने वाला अंगरेजी शब्द. हा ! जिस

بنایا گیا تھا. اس میں نوبت کا بھی انتظام تھا. گاندھی نگر بھی چاروں طرف سے گھرا ہوا تھا. ملٹری کا پہرا تھا. گیٹ اور سڑک پر سویم سیوک اور پولیس تھی. گاندھی نگر میں گھسنے کے لئے آپ کے پاس یا تو پرتیندھی، پریس یا وشیش درشک وغیرہ کا کوئی نہ کوئی پاس ہونا چاہئے یا باہر سے دو آنے کا ٹکٹ خریدئے.

ناسک کا اجلاس کام چلاؤ ادھیویشن تھا. اسلئے بنا پیسہ خرچ کئے گاندھی نگر میں گھسنا ناممکن تھا، اور کھلے ادھیویشن کا پنڈال بھی اچھی طرح سے بند تھا. وہاں پر لگ بھگ پندرہ ہزار آدمیوں کے لئے انتظام تھا اور اتنی ہی کرسیاں. نیتاؤں کے لئے پیچھے کی طرف "ڈیس" تھی. بولنے کے لئے ایک اونچا مچان. مچان سے ذرا ہٹ کر، چھت سے سٹا ہوا، سنیما فلم لینے کا انتظام تھا. وشے نیامک سمیتی کا پنڈال بھی بند تھا. دونوں جگہ سجاوٹ رنگین کھادی اور تصویروں سے کی گئی تھی. بڑے پنڈال کو دیکھکر ایسا لگتا تھا کہ اگر سواگت سمیتی کو اور وقت ملتا تو وہ سجاوٹ پوری کر لیتی.

بڑے پنڈال کے سامنے ہی چندے کے لئے نمائش تھی. نمائش کے پھاٹک کے اندر مہاتما گاندھی کی مورتی تھی. نمائش کھولنے کا کام شری آنا صاحب سہستربدھے نے کیا تھا جو مہاراشٹر کے نامی گرام ادیوگی کار کرتا ہیں. نمائش معمولی تھی جیسی کہ الہ آباد لکھنؤ میں ہر سال ہوا کرتی ہے. ایک عجیب بات تھی—نمائش کے پھاٹک پر بجلی کی بتیوں سے کیول ایک شبد لکھا ہوا تھا - وہ تھا نمائش کے معنی رکھنے والا انگریزی شبد. ہا! جس

पाठ के लिये हमसे बापू ने संन १९१६ में कहा था कि एक साल के अंदर याद कर लेना उसमें हम अभी तक कोरे के कोरे !

नासिक में तारीफ़ के लायक़ दो चीज़ें थीं—पहली सफ़ाई. पाखाने संडास और पेशाब घर की सफ़ाई भंगी नहीं करते थे बल्कि ऊँची जातों के स्वयं सेवक करते थे. पेशाब घर की व्यवस्था बहुत ही लाजवाब थी. पाखाने उतने कामयाब इस वजह से नहीं हुए क्यों कि बरसात की वजह से मिट्टी चिपकती थी और उसे मैले पर ढका नहीं जा सकता था. दूसरी चीज थी स्वयंसेवकों की सख्ती. उन्हें अच्छी तरह सिखाया गया था जिसकी वजह से वह बिना पास किसी को अंदर घुसने नहीं देते थे. दस रुपये खर्च किये बग़ैर गांधी नगर के अंदर जाना नामुमकिन था. शायद इसी वजह से "रचनात्मक कार कर्त्ता" नाम का जीव इस कांग्रेस में मुशकिल से ही दीख पड़ता था क्योंकि वह पैसा कहाँ से लाकर खर्च करते. यह एक सोचने की बात है.

विषय समिति की बैठकें

हर कांग्रेस में सब से ज़ोरदार चीज होती है विषय नियामक समिति की बैठकें. इस में वर्किंग कमेटी की तरफ़ से आने वाले हर सुझाव पर सुधार पेश किये जाते हैं, बहसें होती हैं, वोट लिये जाते हैं और तब कहीं सुझाव ठहराव बनकर पास होते हैं.

नासिक में विषय समिति में भी, खुले इजलास में भी, हमारे तीन महारथी—सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद और राजा जी तो मानो होंठ सीकर आए थे. डाक्टर पट्टाभि सीता रामय्या और डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोष बहुत थोड़ा थोड़ा बोले और वह भी "मासूम"

پاتھ کےلئے ہم سے باپو نے سن ۱۹۱۶ میں کہا تھا کہ ایک سال کے اندر یاد کر لینا اُس میں ہم ابھی تک کورے کے کورے !

ناسک میں تعریف کے لائق دو چیزیں تھیں—پہلی صفائی۔ پاخانے سنڈاس اور پیشاب گھر کی صفائی بھنگی نہیں کرتے تھے بلکہ اونچی جاتوں کے سویم سیوک کرتے تھے۔ پیشاب گھر کی ویوستھا بہت ہی لاجواب تھی۔ پاخانے اُتنے کامیاب اِس وجہ سے نہیں ہوئے کیونکہ برسات کی وجہ سے مٹی چپکتی تھی اور اُسے میلے پر ڈھکا نہیں جاسکتا تھا۔ دوسری چیز تھی سویم سیوکوں کی سختی۔ اُنہیں اچھی طرح سکھایا گیا تھا جس کی وجہ سے وہ بنا پاس کسی کو اندر گھسنے نہیں دیتے تھے۔ دس روپیہ خرچ کئے بغیر گاندھی نگر کے اندر جانا ناممکن تھا۔ شاید اسی وجہ سے "رچناتمک کار کرتا" نام کا جیو اُس کانگریس میں مشکل سے ہی دیکھ پڑتا تھا کیونکہ وہ پیسہ کہاں سے لاکر خرچ کرتے۔ یہ ایک سوچنے کی بات ہے۔

وشے سمیتی کی بیٹھکیں

ہر کانگریس میں سب سے زور دار چیز ہوتی ہے وشے نیامک سمیتی کی بیٹھکیں۔ اس میں ورکنگ کمیٹی کی طرف سے آنے والے ہر سجھاؤ پر سدھار پیش کئے جاتے ہیں، بحثیں ہوتی ہیں، ووٹ لئے جاتے ہیں اور تب کہیں سجھاؤ ٹھہراؤ بن کر پاس ہوتے ہیں۔

ناسک میں وشے سمیتی میں بھی، کھلے اجلاس میں بھی، ھمارے تین مہارتھی—سردار پٹیل، مولانا آزاد اور راجہ جی تو مانو ہونٹ سی کر آئے تھے۔ ڈاکٹر پٹابھی سیتارامیا اور ڈاکٹر پربھول چاندر گھوش بہت تھوڑا تھوڑا بولے اور وہ بھی "معصوم"

ठहरावों पर. सारे इजलास में मंच के ऊपर बार बार बस एक ही हस्ती आती दिखलाई देती—पंडित जवाहर लाल. इसी वजह से अकसर लोगों ने नासिक कांगरेस को जवाहर लाल की कांगरेस कहा है.

विषय समिति की बैठक के शुरू में प्रधान की जगह कांगरेस के पिछले जयपुर वाले इजलास के सदर डाक्टर पट्टाभि सीता रामय्या ने ली. उन्होंने पिछले पौने दो बरस की हालत पर रोशनी डाली और बताया कि किस तरह अचानक २६ जनवरी १९५० को उनका "राष्ट्रपति" का खिताब उनसे छीनकर भारत के जनराज के प्रधान को दे दिया गया. इसके बाद बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन ने जगह ली और कारवाई शुरू हुई. यह बैठकें १८, १९ को हुई लेकिन काम ज्यादा था इसलिये २० की सुबह और रात को भी चलीं.

वर्किंग कमेटी के दो प्रस्तावों (शोक वाला और आसाम वाला) को छोड़कर बाक़ी सब पर खूब बहसें हुईं, सुधार आये, चर्चे हुए, वोट लिये गये; लेकिन कोई भी सुधार पास नहीं हुआ और न वर्किंग कमेटी को यह मंज़ूर ही था. यहाँ तक हालत हुई कि एक ठहराव में "Democracy" शब्द के पहले "Secular" शब्द बढ़ाने के लिये तजवीज़ की गई वह भी नामंज़ूर. हालांकि यह बात कबूल की गई कि यह शब्द असली ठहराव में था मगर छपाई की जलदी में प्रेस ने किसी तरह ग़ायब कर दिया! ऐसा महसूस हो रहा था कि विषय नियामक समिति का होना न होना बराबर है. किसी तरह की भी रद्दो बदल "हाई कमांड" को मंज़ूर नहीं थी!

ٹھہراؤں پر . سارے اجلاس میں منچ کے اوپر بار بار بس ایک ہی ہستی آتی دکھلائی دیتی ــ پنڈت جواہر لال . اسی وجہ سے اکثر لوگوں نے ناسک کانگریس کو جواہر لال کی کانگریس کہا ہے .

وشے سمیتی کی بیٹھک کے شروع میں پردھان کی جگہ کانگریس کے پچھلے جے پور والے اجلاس کے صدر ڈاکٹر پٹابھی سیتارامیا نے لی . انہوں نے پچھلے پونے دو برس کی حالت پر روشنی ڈالی اور بتایا کہ کسطرح اچانک ۲۶ جنوری ۱۹۵۰ کو انکا "راشٹرپتی" کا خطاب ان سے چھین کر بھارت کے جن راج کے پردھان کو دے دیا گیا . اس کے بعد بابو پرشوتم داس ٹنڈن نے جگہ لی اور کاروائی شروع ہوئی . یہ بیٹھکیں ۱۸ ' ۱۹ کو ہوئیں لیکن کام زیادہ تھا اس لئے ۲۰ کی صبح اور رات کو بھی چلیں .

ورکنگ کمیٹی کے دو پرستاؤں (شوک والا اور آسام والا) کو چھوڑ کر باقی سب پر خوب بحثیں ہوئیں ' سدھار آئے ' چرچے ہوئے ' ووٹ لئے گئے ! لیکن کوئی بھی سدھار پاس نہیں ہوا اور نہ ورکنگ کمیٹی کو یہ منظور ہی تھا . یہاں تک حالت ہوئی کہ ایک ٹھہراؤ میں "Democracy" شبد کے پہلے "Secular" شبد بڑھانے کے لئے تجویز کی گئی وہ بھی نامنظور . حالانکہ یہ بات قبول کی گئی کہ یہ شبد اصلی ٹھہراؤ میں تھا مگر چھپائی کی جلدی میں پریس نے کسی طرح غائب کر دیا ! ایسا محسوس ہورہا تھا کہ کہ وشے نیامک سمیتی کا ہونا نہ ہونا برابر ہے . کسی طرح کی بھی رد و بدل " ہائی کمانڈ " کو منظور نہیں تھی .

पंडित नेहरू के भाषन .

इन बैठकों में पंडित जवाहर लाल के दो ज़बरदस्त भाषन परदेशी नीति और हिन्दू मुसलिम सवाल पर हुए. उन्होंने बताया—'कहा जाता है कि हमारी परदेशी नीति से हमें कोई फ़ायदा नहीं पहुंच रहा है. अगर हम फ़ायदे के पीछे पड़ जायें तो हमें ज़रूर बेइन्तहा फ़ायदा पहुँच सकता है. लेकिन कुछ ऐसी चीज़ों को फिर छोड़ देना पड़ेगा जिन्हें हम क़ीमती समझते हैं. पैसे और दूसरे तरीक़े की काफ़ी इमदाद हमें मिल सकती है बशर्ते कि हम अपने काम करने की आज़ादी को कम कर दें या ख़तम कर दें........."

आगे चलकर आपने कहा—"मैं यह भी कहूंगा कि कुछ हद तक, इसमें मैं कोई बढ़ाकर बात नहीं कहना चाहता, पिछले दो तीन महीनों में भारत ने दूसरे मुल्कों की पालिसी पर असर डाला है और इसी का यह एक नतीजा है कि लड़ाई कोरिया तक ही महदूद रह गई है."

साम्प्रदायिकता वाले ठहराव के सिलसिले में पंडित जी ने कांगरेस के अंदर फैली बीमारी पर रोशनी डालते हुए कहा—

"यह वाक़ेआ है कि कांगरेस वाले आज कोई भी अपनी बुराई या आलोचना सुनना नहीं चाहते. इसके साफ़ मानी हैं कि हमारे संगठन के अंदर कीड़ा लग गया है जो दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है. आप अपने को भले ही मुबारकबाद देते रहें लेकिन असल चीज़ यह है कि पंडाल के बाहर हज़ारों लाखों आदमी क्या कहते हैं."

"महात्मा गांधी ने एक बुनियादी चीज़ जो हमें बताई है वह है

پنڈت نہرو کے بھاشن

ان بیٹھکوں میں پنڈت جواہرلال کے دو زبردست بھاشن پردیشی نیتی اور ہندو مسلم سوال پر ہوئے . انہوں نے بتایا—"کہا جاتا ہے کہ ہماری پردیشی نیتی سے ہمیں کوئی فائدہ نہیں پہونچ رہا ہے . اگر ہم فائدے کے پیچھے پڑجائیں تو ہمیں ضرور بےانتہا فائدہ پہونچ سکتا ہے . لیکن کچھ ایسی چیزوں کو پھر چھوڑ دینا پڑیگا جنہیں ہم قیمتی سمجھتے ہیں . پیسے اور دوسرے طریقے کی کافی امداد ہمیں مل سکتی ہے بشرطیکہ ہم اپنے کام کرنے کی آزادی کو کم کردیں یا ختم کردیں.........."

آگے چل کر آپنے کہا—"میں یہ بھی کہونگا کہ کچھ حد تک' اس میں میں کوئی بڑھا کر بات نہیں کہنا چاہتا' پچھلے دو تین مہینوں میں بھارت نے دوسرے ملکوں کی پالیسی پر اثر ڈالا ہے اور اسی کا یہ ایک نتیجہ ہے کہ لڑائی کوریا تک ہی محدود رہ گئی ہے ."

سامپردایکتا والے ٹھہراؤ کے سلسلے میں پنڈت جی نے کانگریس کے اندر پھیلی بیماری پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا—

"یہ واقعہ ہے کہ کانگریس والے آج کوئی بھی اپنی برائی یا آلوچنا سننا نہیں چاہتے . اس کے صاف معنی ہیں کہ ہمارے سنگٹھن کے اندر کیڑا لگ گیا ہے جو دن پر دن بڑھتا ہی جا رہا ہے . آپ اپنے کو بھلے ہی مبارکباد دیتے رہیں لیکن اصل چیز یہ ہے کہ پنڈال کے باہر ہزاروں لاکھوں آدمی کیا کہتے ہیں ."

"مہاتما گاندھی نے ایک بنیادی چیز جو ہمیں بتائی ہے وہ ہے

अपनी ग़लतियों को क़बूल करना. सन् १९१९ की अमृतसर कांगरेस में उन्होंने ज़ोर दिया था कि रौलेट क़ानून वाले ठहराव से ज़्यादा अहमियत उस ठहराव को दी जाये जिसमें कांगरेसमैनों की अपनी ग़लती मानने की और उसे सुधारने की बात कही गई है. आज कांगरेस वालों के सामने अपनी ग़लतियाँ मानने का वैसा ही सवाल है."

इसके बाद पंडित जी ने नासिक में वह शब्द कहे जो आज सब जगह गूंज रहे हैं—

इस हिन्दू मुसलिम सवाल पर आप इधर उधर नहीं कर सकते. अगर आप चाहते हैं कि मैं कांगरेस को रास्ता दिखलाऊँ तो यह प्रस्ताव आपको बिला किसी शक या शुबहे के पास करना है; शर्त यह है कि आपके दिल और दिमाग़ भी इस मामले में बिलकुल साफ़ हों."

खुला इजलास

२० सितम्बर दोपहर के ढाई बजे कांगरेस का खुला इजलास होने वाला था. कांगरेस की ६५ साल की ज़िन्दगी में शायद ही किसी प्रधान की तरफ़ से इतनी ग़लतफ़हमी जनता में रही हो (या पैदा की गई हो) जितनी नासिक के प्रधान बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन की तरफ़ से. टंडन जी इलाहाबाद के हैं और पिछले ४०, ४२ साल से देश सेवा के काम में लगे हैं. उनकी उमर इस वक़्त ६८ साल के क़रीब है—चमकते हुए चेहरे पर सुनहरी दाढ़ी. शायद ही कोई ऐसा इन्सान हो जो उनकी नेकनियती और नेक चलनी का क़ायल न हो.

اپنی غلطیوں کو قبول کرنا. سن 1919 کی امرتسر کانگریس میں انہوں نے زور دیا تھا کہ رولٹ قانون والے ٹھہراؤ سے زیادہ اہمیت اس ٹھہراؤ کو دی جائے جسمیں کانگریس مینوں کی اپنی غلطی ماننے کی اور اسے سدھارنے کی بات کہی گئی ہے. آج کانگریس والوں کے سامنے اپنی غلطیاں ماننے کا ویسا ہی سوال ہے."

اسکے بعد پنڈت جی نے ناسک میں وہ شبد کہے جو آج سب جگہ گونج رہے ہیں—

"اس ہندو مسلم سوال پر آپ ادھر ادھر نہیں کر سکتے. اگر آپ چاہتے ہیں کہ میں کانگریس کو راستہ دکھلاؤں تو یہ پرستاؤ آپکو بلا کسی شک یا شبہہ کے پاس کرنا ہے؛ شرط یہ ہے کہ آپکے دل اور دماغ بھی اس معاملے میں بالکل صاف ہوں."

کھلا اجلاس

٢٠ ستمبر دوپہر کے ڈھائی بجے کانگریس کا کھلا اجلاس ہونے والا تھا. کانگریس کی ٦٥ سال کی زندگی میں شاید ہی کسی پردھان کی طرف سے اتنی غلط فہمی جنتا میں رہی ہو (یا پیدا کی گئی ہو) جتنی ناسک کے پردھان بابو پرشوتم داس ٹنڈن کی طرف سے. ٹنڈن جی الہ آباد کے ہیں اور پچھلے ٤٠، ٤٢ سال سے دیش سیوا میں لگے ہیں. انکی عمر اسوقت ٦٨ سال کے قریب ہے—چمکتے ہوئے چہرے پر سنہری داڑھی. شاید ہی کوئی ایسا انسان ہو جو انکی نیک نیتی اور نیک چلنی کا قائل نہ ہو.

खुले इजलास में सबसे पहले स्वागत कमेटी के प्रधान श्री भाऊ साहब हीरे की तक़रीर हुई जिसमें आपने सब आने वालों का शानदार स्वागत किया और इन्तज़ाम की भूल चूक के लिये माफ़ी चाही. आपने आख़िर में देश के नेताओं से अपील की कि हमें रास्ता दिखाइये ताकि हम एक दिल होकर उस पर चलें और अपने मुल्क को चंगा बनायें.

टन्डन जी का ऐड्रेस

टंडन जी का भाषन हिन्दी में हुआ. टंडन जी ने हुकूमत की क़रीब क़रीब तमाम पालिसियों का समर्थन किया. आपने कहा कि "अब तो हमारा विधान बन गया है और मैं विधानों को आदर ही नहीं बल्कि पूजा की भावना से देखता हूं. लेकिन हिन्दुस्तान के अंदर कभी किसी किताब को अन्तिम शब्द नहीं माना गया. हमेशा ही बुद्धि को सबसे ऊपर ठहराया गया. तर्क को ऋषि कहा गया है. इसलिये हमारे देश की बुनियादी चट्टान कोई किताब न होकर सचेत बुद्धि ही होगी."

परदेशी नीति के बारे में टंडन जी ने कहा कि आज जो दुनिया में दो दल हैं हम उनसे अलग रहना चाहते हैं. लेकिन—

"मेरी तामीर में मुज़मिर है एक सूरत ख़राबी की."

आपने बताया कि "इस मामले में हमारी सरकार ने जो नीति बरती है उसे आजकल की परिस्थिति में मैं ठीक समझता हूं और उसकी ताईद करता हूँ."

हिन्दू मुसलिम मामले में टंडन जी ने कुछ खरी खरी बातें

کھلے اجلاس میں سب سے پہلے سواگت کمیٹی کے پردھان شری بھاؤ صاحب ھیرے کی تقریر ہوئی جس میں آپ نے سب آنے والوں کا شاندار سواگت کیا اور انتظام کی بھول چوک کے لئے معافی چاہی. آپ نے آخر میں دیش کے نیتاؤں سے اپیل کی کہ ہمیں راستہ دکھائیں. تاکہ ہم ایک دل ہو کر اس پر چلیں اور ملک کو چنگا بنائیں.

ٹنڈن جی کا ایڈریس

ٹنڈن جی کا بھاشن ہندی میں ہوا. ٹنڈن جی نے حکومت کی قریب قریب تمام پالیسیوں کا سمرتھن کیا. آپ نے کہا کہ "اب تو ہمارا ودھان بن گیا ہے اور میں ودھانوں کو آدر ہی نہیں بلکہ پوجا کی بھاونا سے دیکھتا ہوں. لیکن ہندستان کے اندر کبھی کسی کتاب کو انتم شبد نہیں مانا گیا. ہمیشہ ہی بدھی کو سب سے اوپر ٹھہرایا گیا. ترک کو رشی کہا گیا ہے. اسلئے ہمارے دیش کی بنیادی چٹان کوئی کتاب نہ ہو کر سچیت بدھی ہی ہوگی."

پردیشی نیتی کے بارے میں ٹنڈن جی نے کہا کہ آج جو دنیا میں دو دل ہیں ہم اُن سے الگ رہنا چاہتے ہیں. لیکن—

"میری تعمیر میں مضمر ہے ایک صورت خرابی کی"

آپ نے بتایا کہ "اس معاملے میں ہماری سرکار نے جو نیتی برتی ہے اُسے آجکل کی پرستھتی میں میں ٹھیک سمجھتا ہوں اور اُسکی تائید کرتا ہوں."

ہندو مسلم معاملے میں ٹنڈن جی نے کچھ کھری کھری باتیں

कहीं हैं जिन्हें हर एकता प्रेमी पसंद करेगा—

"हमारी यह तय शुदा पालिसी है कि अपने राजकाज में हम साम्प्रदायिकता को दखल नहीं देंगे देंगें. सब धर्म वालों के एक से अधिकार रहेंगे और इस देश को मजबूत बनाने में सब मिलकर काम करेंगे...बहुत तादाद वालों के ऊपर यह खास ज़िम्मेवारी है कि कम तादाद वालों की हिफाजत करें और कोई बदअमनी न होने दें."

पाकिस्तान और भारत के सम्बन्धों पर रोशनी डालते हुए आपने कहा कि हमने बहुत से राजीनामे उससे किये लेकिन इससे हमारी मुसीबतें दूर नहीं हुई हैं. "मुझे ऐसा लगता है कि पाकिस्तान के साथ हमारा रुख कुछ ज्यादा मजबूती का होना चाहिये."

शरनार्थियों के सिलसिले में आपने कहा कि "सरकार ने बहुत कुछ किया है लेकिन अभी बहुत ज्यादा करना बाक़ी है और मेरी सलाह है कि एक तरह का नया टैक्स लगा दिया जाय और उससे इस गम्भीर सवाल को हल किया जाय."

कलचर और धर्म पर रोशनी डालते हुए आपने बताया कि यह दो अलग चीजें हैं. "मेरी अर्ज है कि आइन्दा अब हमारा मुल्क यह ग़लती न करे कि कलचर और धर्म को एक समझ ले. कई धर्म के मानने वालों की कलचर एक हो सकती है जैसे चीन में." टंडन जी ने अपील की :

"आज हम कांगरेसजनों के ऊपर एक भारी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने अंदर यह जज़्बा पैदा करें कि इस वक़्त मुल्क को ज़रूरत है एक मिली जुली कलचर के पैदा करने और उसे बढ़ाने की, साथ ही

کہی ہیں جنہیں ہر ایکتا پریمی پسند کریگا—

"ہماری یہ طے شدہ پالیسی ہے کہ اپنے راج کاج میں ہم سامپردائیکتا کو دخل نہیں دینگے دینگے. سب دھرم والوں کے ایک سے ادھیکار رہینگے اور اس دیش کو مضبوط بنانے میں سب مل کر کام کرینگے........بہت تعداد والوں کے اوپر یہ خاص ذمہ داری ہے کہ کم تعداد والوں کی حفاظت کریں اور کوئی بدامنی نہ ہونے دیں."

پاکستان اور بھارت کے سمبندھوں پر روشنی ڈالتے ہوئے آپنے کہا کہ ہم نے بہت سے راضی نامے اس سے کئے. لیکن اس سے ہماری مصیبتیں دور نہیں ہوئی ہیں. "مجھے ایسا لگتا ہے کہ پاکستان کے ساتھ ہمارا رخ کچھ زیادہ مضبوطی کا ہونا چاہئے."

شرنارتھیوں کے سلسلے میں آپنے کہا کہ "سرکار نے بہت کچھ کیا ہے لیکن ابھی بہت زیادہ کرنا باقی ہے اور میری صلاح ہے کہ ایک طرح کا نیا ٹیکس لگا دیا جائے اور اس سے اس گمبھیر سوال کو حل کیا جائے."

کلچر اور دھرم پر روشنی ڈالتے ہوئے آپنے بتایا کہ یہ دو الگ چیزیں ہیں. "میری عرض ہے کہ اب آئندہ ہمارا ملک یہ غلطی نہ کرے کہ کلچر اور دھرم کو ایک سمجھ لے. کئی دھرم کے ماننے والوں کی کلچر ایک ہو سکتی ہے جیسے چین میں." ٹنڈن جی نے اپیل کی:

"آج ہم کانگریس جنوں کے اوپر ایک بھاری ذمہ داری ہے کہ وہ اپنے اندر یہ جذبہ پیدا کریں کہ اس وقت ملک کو ضرورت ہے ایک ملی جلی کلچر کے پیدا کرنے اور اسے بڑھانے کی. ساتھ ہی

साथ अपने से दूसरे धर्म के लोगों के साथ हमें प्रेम और सहन शीलता का व्यवहार करना चाहिये."

इसके बाद देश के आर्थिक सवालों पर आपने अपने विचार ज़ाहिर किये—किसान, मजदूर, कन्ट्रोल, योजनायें और देहाती उद्योग-धंधे. आपने कहा कि सरकार कन्ट्रोल तभी लगाये जब कि बहुत जरूरी हो जाय. योजनाओं के बारे में आपने सिफ़ारिश की कि २५,२६ अप्रैल को देहली में जो तजवीजें सारे सूबों के बड़े वज़ीरों और कांगरेस सभापतियों ने पेश की हैं उनपर अमल किया जाय.

टंडनजी ने गाँव के धंधों और खादी के लिये जोरदार अपील की. आपने सूबों की सरकारों से अपील की कि मंहगी कह कर खादी को छोड़ देना उन्हें शोभा नहीं देता. कांगरेस सरकारों का फ़र्ज़ है कि खादी और गाँव के धंधों के माल का प्रचार करें और इसकी ज्यादा से ज्यादा तरक़्क़ी मे मदद दें. गाँव के धन्धों में आपने बिजली के इस्तेमाल की सिफ़ारिश की.

हमारी मौजूदा शिक्षा पद्धति पर आपने कहा कि विद्या या ज्ञान के साथ साथ इसे चालचलन की तरक़्क़ी पर जोर देना चाहिये. साथ ही साथ चीजें तैयार करके इसमें तालीम का खर्च भी निकलना चाहिये. "हमारे आदर्श ऊँचे हों, हममें डिसिप्लिन होना चाहिये, हमारे समाज का नैतिक स्तर ऊँचा उठना चाहिये तभी हम गांधी जी का रामराज क़ायम कर सकेंगे."

आखीर में टंडन जी ने कांगरेस के अदर की गंदगी पर दुख ज़ाहिर किया. आपने कहा कि हमारे विधान में कांगरेस के मेम्बर बनने की जो शर्तें हैं उन्हें पूरा करने वाले एक ज़िले में हज़ार आदमी

ساتھ اپنے سے دوسرے دھرم کے لوگوں کے ساتھ ہمیں پریم اور سہن شیلتا
کا ویوہار کرنا چاہئے ۔"

اسکے بعد دیش کے آرتھک سوالوں پر آپنے اپنے وچار ظاہر کئے —
کسان، مزدور، کنٹرول، یوجناؤں اور دیہاتی ادیوگ دھندے ۔ آپنے
کہا کہ سرکار کنٹرول، تبھی لگائے جبکہ بہت ضروری ہوجائے ۔ یوجناؤں
کے بارے میں آپنے سفارش کی کہ ۲۵، ۲۶ اپریل کو دہلی میں جو
تجویزیں سارے صوبوں کے بڑے وزیروں اور کانگریس سبھا پتیوں نے
پیش کی ہیں اُن پر عمل کیا جائے ۔

ٹنڈن جی نے گاؤں کے دھندوں اور کھادی کے لئے زوردار اپیل کی ۔
آپ نے صوبوں کی سرکاروں سے اپیل کی کہ مہنگی کہہ کر کھادی کو
چھوڑ دینا انہیں شوبھا نہیں دیتا ۔ کانگریس سرکاروں کا فرض ہے
کہ کھادی اور گاؤں کے دھندوں کے مال کا پرچار کریں اور اسکی زیادہ
سے زیادہ ترقی میں مدد دیں ۔ گاؤں کے دھندوں میں آپنے بجلی کے
استعمال کی سفارش کی ۔

ہماری موجودہ شکشا پدھتی پر آپنے کہا کہ ودیا یا گیان کے ساتھ
ساتھ اسے چال چلن کی ترقی پر زور دینا چاہئے ۔ ساتھ ہی ساتھ چیزیں
تیار کر کے اسمیں تعلیم کا خرچ بھی نکلنا چاہئے ۔ "ہمارے آدرش
اونچے ہوں، ہم میں ڈسپلن ہونا چاہئے، ہمارے سماج کا نیتک
استر اونچا اٹھنا چاہئے تبھی ہم گاندھی جی کا رام راج قایم کر
سکیں گے ۔"

آخر میں ٹنڈن جی نے کانگریس کے اندر کی گندگی پر دکھ
ظاہر کیا ۔ آپنے کہا کہ ہمارے ودھان میں کانگریس کے ممبر بننے کی
جو شرطیں ہیں انہیں پورا کرنیوالے ایک ضلع میں ہزار آدمی

भी नहीं मिलेंगे, लेकिन रजिस्टर पर लाखों की तादाद है! कांगरेस में सिर्फ़ उन्हें ही आने दिया जाय जो ईमानदारी से आयें और ईमानदारी से काम करें।

इसके बाद विषय समिति में पास हुए प्रस्ताव एक के बाद एक लाये गये. हिन्दू मुसलिम सवाल पर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस खुले इजलास में भी एक भाषन दिया. आपने कहा—

"यह तय होना चाहिये कि हमारे दिल में क्या है, दिमाग़ में क्या है...मैं चाहता हूँ कि जिस प्रस्ताव पर मैं बोल रहा हूँ उसे आप समझें, उस पर अमल करें...

"मैं बहुत नम्रता और अदब से लेकिन बहुत ज़ोर से आप से कहना चाहता हूँ कि अगर शक हो तो आप इसे क़बूल न करें...जो दो रास्तों पर चलता है वह कहीं का नहीं रहता...

"हमें अपने गुस्से को रोकना है और सही क़दम उठाना है... अगर मैं किसी बात को सही समझता हूँ तो सारी दुनिया का मुक़ाबला करूँगा, सारे हिन्दुस्तान का मुक़ाबला करूँगा...हाँ, डेमोक्रेसी में आप यह कर सकते हैं कि मुझे निकाल दें. लेकिन जब आप प्राइम मिनिस्ट्री से मुझे हटा देंगे तो फिर यह डेमोक्रेसी भी मुझे नहीं रोक सकती. इसलिये इस बारे में डेमोक्रेसी का नाम न लाया जाय...कांगरेस में अगर दम है तो डेमोक्रेसी का मुक़ाबला करे, बाहर आकर मुक़ाबला करे...

"मैं आशा करता हूँ कि आप ज़ोरों से इसे स्वीकार करेंगे और इस पर अमल करेंगे."

بھی نہیں ملینگے' لیکن رجسٹر پر لاکھوں کی تعداد ہے! کانگریس میں صرف اُنہیں ہی آنے دیا جائے جو ایمانداری سے آئیں اور ایمانداری سے کام کریں۔

اسکے بعد وشے سمیتی میں پاس ہوئے پرستاو ایک کے بعد ایک لائے گئے۔ ہندو مسلم سوال پر پنڈت جواہر لال نہرو نے اس کھلے اجلاس میں بھی ایک بھاشن دیا۔ آپنے کہا—

"یہ طے ہونا چاہئے کہ ہمارے دل میں کیا ہے' دماغ میں کیا ہے.........میں چاہتا ہوں کہ جس پرستاو پر میں بول رہا ہوں اُسے آپ سمجھیں' اُس پر عمل کریں.........

"میں بہت نمرتا اور ادب سے لیکن بہت زور سے آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ اگر شک ہو تو آپ اِسے قبول نہ کریں.........جو دو راستوں پر چلتا ہے وہ کہیں کا نہیں رہتا.........

"ہمیں اپنے غصے کو روکنا ہے اور صحیح قدم اُٹھانا ہے......... اگر میں کسی بات کو صحیح سمجھتا ہوں تو ساری دنیا کا مقابلہ کرونگا سارے ہندستان کا مقابلہ کرونگا......... ہاں' ڈیموکریسی میں آپ یہ کر سکتے ہیں کہ مجھے نکال دیں. لیکن جب آپ پرائم منسٹری سے مجھے ہٹا دینگے تو پھر یہ ڈیموکریسی بھی مجھے نہیں روک سکتی. اسلئے اِس بارے میں ڈیموکریسی کا نام نہ لایا جائے.........کانگریس میں اگر دم ہے تو ڈیموکریسی کا مقابلہ کرے' باہر آکر مقابلہ کرے.........

"میں آشا کرتا ہوں کہ آپ زوروں سے اِسے سویکار کرینگے اور اس پر عمل کرینگے۔"

कन्ट्रोल पर वोट

दूसरे दिन खुले इजलास की सुबह साढ़े आठ से साढ़े ग्यारह तक बैठक रही, फिर ढाई बजे से रात के ग्यारह बजे तक विषय समिति के सभी प्रस्ताव पास होते चले गए. केवल आर्थिक प्रोग्राम पर एक ठहराव था जिसमें कुछ गरमी आगई. इस ठहराव पर एक तरमीम थी कि कन्ट्रोल वाला पैरा एक दम निकाल दिया जाय. यूँ भी कन्ट्रोल के ख़िलाफ़ कई लोगों ने बड़े दर्द भरे लफ़्ज़ों में अपील की थी.

रात के पौने दस हो रहे थे. रुपये में चौदह आने प्रतिनिधि पंडाल से चले गए थे. जब इस तरमीम पर वोट लिये गये तो १२८ हाथ इस तरमीम के माफ़िक़ उठे और १७२ ख़िलाफ़. डिवीज़न की माँग की गई. टंडन जी ने फ़ौरन ही यह माँग मंजूर करली. यहाँ हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि टंडन जो जिस सभा में सभापति होंगे वहाँ किसी को यह शिकायत नहीं हो सकती कि मेरी बात न सुनी गई.

डिवीज़न के नाम से सारे पंडाल में गरमी आगई. ऊपर डैस पर से लोग नीचे उतरने लगे ताकि वोट दे सकें. उसी वक़्त पंडित जवाहर लाल नेहरू भी कहीं बाहर से आ पहुंचे—जिनके आने से कन्ट्रोल वालों की जान में जान आ गई. बाक़ायदा टिकट देख कर गिनती हुई—तरमीम की तरफ़ ११७, ख़िलाफ़ १९०. तरमीम गिर गई और फिर दूसरी तरमीमें भी गिर गईं और असली ठहराव भारी बहुमत से पास हो गया.

کنٹرول پر ووٹ

دوسرے دن کھلے اجلاس کی صبح ساڑھے آٹھ سے ساڑھے گیارہ تک بیٹھک رہی ' پھر ڈھائی بجے سے رات کے گیارہ بجے تک وشے سمیتی کے سبھی پرستاؤ پاس ہوتے چلے گئے . کیول آرتھک پروگرام پر ایک ٹھہراو تھا جس میں کچھ گرمی آگئی . اس ٹھہراو پر ایک ترمیم تھی کہ کنٹرول والا پیرا ایک دم نکال دیا جائے . یوں بھی کنٹرول کے خلاف کئی لوگوں نے بڑے درد بھرے لفظوں میں اپیل کی تھی .

رات کے پونے دس ہو رہے تھے . روپے میں چودہ آنے پرتی ندھی پنڈال سے چلے گئے تھے جب اس ترمیم پر ووٹ لئے گئے تو ۱۲۸ ہاتھ اس ترمیم کے موافق اٹھے اور ۱۷۲ خلاف . ڈویژن کی مانگ کی گئی . ٹنڈن جی نے فوراً ہی یہ مانگ منظور کرلی . یہاں ہم یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ ٹنڈن جی جس سبھا میں سبھاپتی ہونگے وہاں کسی کو یہ شکایت نہیں ہوسکتی کہ میری بات نہ سنی گئی .

ڈویژن کے نام سے سارے پنڈال میں گرمی آگئی . اوپر ڈیس پر سے لوگ نیچے اُترنے لگے تاکہ ووٹ دے سکیں . اسی وقت پنڈت جواہر لال نہرو بھی کہیں باہر سے آپہونچے -- جن کے آنے سے کنٹرول والوں کی جان میں جان آگئی . باقاعدہ ٹکٹ دیکھکر گنتی ہوئی -- ترمیم کی طرف ۱۱۷ ' خلاف ۱۹۰ . ترمیم گرگئی اور پھر دوسری ترمیمیں بھی گر گئیں اور اصلی ٹھہراؤ بھاری بہومت سے پاس ہوگیا .

इससे पता चलता है कि कन्ट्रोल के मसले पर कांगरेस के प्रतिनिधियों के कितने ज़बरदस्त ख़याल हैं. डर है कि अगर पूरी तादाद में प्रतिनिधि मौजूद होते तो शायद यह ठहराव यूं ही पास न हो जाता. लेकिन अगर हो भी जाता तब भी हम यह अंदाज़ लगा सकते हैं कि देश का एक बड़ा भारी हिस्सा कन्ट्रोल के मामले में सरकारी नीति के ख़िलाफ़ है.

नासिक कांगरेस का आख़िरी प्रस्ताव—खादी का प्रचार—सभापति की तरफ़ से आया क्यों कि उसमें किसी को विरोध नहीं था.

टंडन जी की अपील

आख़िर में टंडन जी ने कहा—"हम यहाँ से स्फूर्ति ले कर जाते हैं, हमें यह निश्चय करना है कि कांगरेस को किस ओर चलना है, कांगरेस को रहना भी है या नहीं... जनता के और प्रतिनिधियों के उत्साह ने यह बतलाया है कि कांगरेस में अभी बहुत शक्ति है.

'देश ऊँचा चुनाव से नहीं होता; चरित्र से, काम से होता है.... हम कांगरेस संगठन को मज़बूत करें... पैर जमादें तो कांगरेस कहीं अधिक शक्ति शालिनी हो सकती है...

"अगर मुझ से पूछा जाय कि दोनों में क्या पसन्द है—संसार का ऊँचे से ऊँचा पद और आपके हृदय में स्थान—तो मुझे चुनने में देर नहीं लगेगी—पद तो निष्प्राण है...."

इस सम्बन्ध में टंडन जी ने एक कहानी सुनाई—एक राजा एक बार जब जंगल में शिकार कर रहा था तो कहीं से बंसी की आवाज़ आई. पास पहुँचा तो फटे कपड़े पहने एक गड़रिया मस्त

اس سے پتہ چلتا ہے کہ کنٹرول کے مسئلے پر کانگریس کے پرتیندھیوں کے کتنے زبردست خیال ہیں. ڈر ہے کہ اگر پوری تعداد میں پرتی ندھی موجود ہوتے تو شاید یہ ٹھہراؤ یوں ہی پاس نہ ہو جاتا. لیکن اگر ہو بھی جاتا تب بھی ہم یہ انداز لگا سکتے ہیں کہ دیش کا ایک بڑا بھاری حصہ کنٹرول کے معاملے میں سرکاری نیتی کے خلاف ہے.

ناسک کانگریس کا آخری پرستاو—کھادی کا پرچار—سبھاپتی کی طرف سے آیا کیونکہ اس میں کسی کو ورودھ نہیں تھا.

ٹنڈن جی کی اپیل

آخر میں ٹنڈن جی نے کہا—"ہم یہاں سے اسپھورتی لے کر جاتے ہیں، ہمیں یہ نشچے کرنا ہے کہ کانگریس کو کس اور چلنا ہے، کانگریس کو رہنا بھی ہے یا نہیں.........جنتا کے اور پرتی ندھیوں کے اتساہ نے یہ بتلایا ہے کہ کانگریس میں ابھی بہت شکتی ہے.

"دیش اونچا چناؤ سے نہیں ہوتا؛ چرتر سے، کام سے ہوتا ہے.... .... ہم کانگریس سنگٹھن کو مضبوط کریں........پیر جمادیں تو کانگریس کہیں ادھک شکتی شالنی ہو سکتی ہے.. ...

"اگر مجھ سے پوچھا جائے کہ دونوں میں کیا پسند ہے—سنسار کا اونچے سے اونچا پد اور آپکے ہردیہ میں استھان—تو مجھے چننے میں دیر نہیں لگیگی—پد تو نشپران ہے........"

اس سمبندھ میں ٹنڈن جی نے ایک کہانی سنائی—ایک راجہ ایک بار جب جنگل میں شکار کر رہا تھا تو کہیں سے بنسی کی آواز آئی. پاس پہونچا تو پھٹے کپڑے پہنے ایک گڈریا مست

हो कर गा रहा था राजा उस पर खुश हो गये और उससे अपने साथ चलने को कहा. राजा के यहाँ पहुँच कर, धीरे धीरे तरक़्क़ी करके, वह आदमी प्रधान वज़ीर बन गया. कुछ लोगों को ईर्षा हुई. राजा से शिकायत की गई कि एक कोठरी है जंगल में जहाँ इसने अपने राज काज की कमाई रख छोड़ी है जिससे सब को असंतोष है. राजा ने बहुत संकोच के साथ यह बात उससे कही. वह फ़ौरन ही राजा के साथ जंगल को गया और वह कोठरी खोल दिखाई. राजा ने देखा कि उसके अंदर सिर्फ़ गड़रिये की बंसी है और उसके फटे कपड़े—जिन्हें पहने राजा ने उसे पहली बार देखा था. राजा को बहुत ही शर्म आई और माफ़ी मांगी, लेकिन गड़रिये ने राजा की न सुनी, अपने फटे कपड़े पहने और बंसी लेकर मस्ती से गाता हुआ वह जंगल में निकल गया!

टंडन जी ने कहा कि हम सब भी फटे कपड़ों के आदी हों और स्वराज की बंसी वाले बन जायं. चुनाव में पड़ कर तेजस्वता को मंद न होने दें, कांगरेस संगठन को ऊँचा करें और अपने चरित्र में मज़बूती लायं.

स्वागत समिति को, स्वयंसेवकों और नासिक की जनता को धन्यवाद देकर टंडन जी ने नासिक का इजलास ख़तम किया.

× × ×

आगे क्या होगा—कांगरेस कहाँ तक अपनी पुरानी ऊँचाई को पा सकेगी—यह तो अभी नहीं कहा जा सकता. लेकिन नासिक कांगरेस से एक चीज़ साफ़ हो गई कि पंडित जवाहर लाल नेहरू और बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन दोनों उतारू हैं देश की भलाई पर और

ہو کر گا رہا تھا۔ راجہ اُس پر خوش ہوگئے اور اُس سے اپنے ساتھ چلنے کو کہا۔ راجہ کے یہاں پہونچ کر، دھیرے دھیرے ترقی کرکے، وہ آدمی پردھان وزیر بن گیا۔ کچھ لوگوں کو ایرشا ہوئی۔ راجہ سے شکایت کی گئی کہ ایک کوٹھری ہے جنگل میں جہاں اس نے اپنے راج کاج کی کمائی رکھ چھوڑی ہے جس سے سب کو اسنتوش ہے۔ راجہ نے بہت ہی سنکوچ کے ساتھ یہ بات اُس سے کہی۔ وہ فوراً ہی راجہ کے ساتھ جنگل کو گیا اور وہ کوٹھری کھول دکھائی۔ راجہ نے دیکھا کہ اُس کے اندر صرف گڑریے کی بنسی ہے اور اُسکے پھٹے کپڑے—جنھیں پہنے راجہ نے اُسے پہلی بار دیکھا تھا۔ راجہ کو بہت ہی شرم آئی اور معافی مانگی لیکن گڑریے نے راجہ کی نہ سنی، اپنے پھٹے کپڑے پہنے اور بنسی لیکر مستی سے گاتا ہوا وہ جنگل میں نکل گیا!

ٹنڈن جی نے کہا کہ ہم سب بھی پھٹے کپڑوں کے عادی ہیں اور سوراج کی بنسی والے بن جائیں۔ چناؤ میں پڑ کر تیجسوتا کو مند نہ ہونے دیں، کانگریس سنگٹھن کو اونچا کریں اور اپنے چرتر میں مضبوطی لائیں۔

سواگت سمیتی کو، سویم سیوکوں اور ناسک کی جنتا کو دھنیہ واد دے کر ٹنڈن جی نے ناسک کا اجلاس ختم کیا۔

× × × × ×

آگے کیا ہوگا—کانگریس کہانتک اپنی پرانی اونچائی کو پاسکے گی—یہ تو ابھی نہیں کہا جا سکتا۔ لیکن ناسک کانگریس سے ایک چیز صاف ہو گئی کہ پنڈت جواہر لال نہرو اور بابو پرشوتم داس ٹنڈن دونوں اتارو ہیں دیش کی بھلائی پر اور

कांग्रेस को पाक साफ बनाने पर, टंडन जी की सादगी, उनका खादी व ग्रामोद्योग प्रेम सोने पर सुहागा है.

हमें यक़ीन है कि टंडन जी कांगरेससंगठन को काफ़ी शुद्ध और मज़बूत कर सकते हैं, लेकिन किस तरह, यह एक बड़ा सवाल है, जिस पर कांगरेस और हिन्दुस्तान दोनों का भविष्य निरभर है.

गांधीजी का बस्ट यानी शिरो मोर्ति

ऊटी से कोन्नूर जाने वाली सड़क के किनारे अरवनकाडु में सरकार की कारडाइट (बिना धुएँ की बारूद) बनाने की फ़ैक्टरी है. उसके मुख्य फाटक पर गांधी जी का एक बड़ा बस्ट यानी शिरो मूर्ति बिठाई गई है. सड़क से आन जाने वाले राहगीरों का ध्यान उसकी ओर जाये बिना नहीं रहता. उस शान्ति के प्रेमी महात्मा से भक्ति प्रकट करने का यह ढंग कैसा अजीब है. इसकी कल्पना ही की जा सकती है, बयान नहीं हो सकता. यह सच है कि हम में से बहुतों ने गांधी जी का शान्ति प्रेम अपनाया नहीं है, कई ने तो उनके राजकाजी, आर्थिक और समाजी सिद्धान्तों को भी नहीं माना है. लेकिन एक कारडाइट फ़ैक्टरी के फाटक पर – जहाँ फ़ौजी इस्तेमाल के लिये बड़े पैमाने पर हथियार बनाये जा रहे हों— उनकी मूर्ति क़ायम करना और इस तरह उस महान शान्ति प्रेमी आत्मा की पवित्र याद की बेइज़्ज़ती करना बहुत ही नामुनासिब मालूम होता है. क्या हमें ऐसा करना चाहिये ?

ल. न. राव,
मेम्बर, भारत सेवक समाज,

ऊटा कामंड, ४-९-५०.
('हरिजन' से)

کانگریس کو پاک صاف بنانے پر، ٹنڈن جی کی سادگی، اُن کا کھادی و گرام ادیوگ پریم سونے پر سہاگا ہے۔

ہمیں یقین ہے کہ ٹنڈن جی کانگریس سنگٹھن کو کافی شدھ اور مضبوط کر سکتے ہیں۔ لیکن کس طرح، یہ ایک بڑا سوال ہے، جس پر کانگریس اور ہندستان دونوں کا بھوشیہ نربھر ہے۔

گاندھی جی کا بسٹ یعنی شرومورتی

اوٹی سے کونور جانے والی سڑک کے کنارے اروں کاڈو میں سرکار کی کارڈائٹ (بنا دھوئیں کی بارود) بنانے کی فیکٹری ہے۔ اُس کے مکھیہ پھاٹک پر گاندھی جی کا ایک بڑا بسٹ یعنی شرو مورتی بٹھائی گئی ہے۔ سڑک سے آنے جانے والے راہگیروں کا دھیان اُسکی اور جائے بنا نہیں رہتا۔ اُس شانتی کے پریمی مہاتما سے بھکتی پرکٹ کرنے کا یہ ڈھنگ کیسا عجیب ہے۔ اِسکی کلپنا ہی کی جا سکتی ہے، بیان نہیں ہو سکتا۔ یہ سچ ہے کہ ہم میں سے بہتوں نے گاندھی جی کا شانتی پریم اپنایا نہیں ہے، کئی نے تو اُن کے راج کاجی، آرتھک اور سماجی سدھانتوں کو بھی نہیں مانا ہے۔ لیکن ایک کارڈائٹ فیکٹری کے پھاٹک پر—جہاں فوجی استعمال کے لئے بڑے پیمانے پر ہتھیار بنائے جا رہے ہوں- اُن کی مورتی قائم کرنا اور اسطرح اُس مہان شانتی پریمی آتما کی پوتر یاد کی بے عزتی کرنا بہت ہی نامناسب معلوم ہوتا ہے۔ کیا ہمیں ایسا کرنا چاہئے؟

ل۔ ن۔ راؤ
ممبر، بھارت سیوک سماج

اوٹا کمنڈ، ۴-۹-۵۰
('ہریجن' سے)

करोरपति राजपति

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

राजपति, राज यानी राष्ट्र का सेवक और सरदार होता है.

राजपति, बिला ताज का नरेश होता है लेकिन फिर भी शाही उसका उद्देश होता है.

राजपति, राज का नाज़िम और क़ौम का ख़ादिम होता है यानी राज का नियम चलाने वाला और राष्ट्र की सेवा करने वाला !

राजपति, जनता का रक्षक भी होता है और शुभ चिन्तक भी.

राजपति, ओहदे दार भी होता है और ख़िदमतगार भी.

ख़िदमत से वह पद पाता है और पद से इज़्ज़त

लेकिन वह इज़्ज़त कब तक ?

जब तक वह सेवा की ज़िम्मेदारियां पूरी करे और जब तक ज़िम्मेदारियों का बोझ अपने कन्धों पर उठाये रखे. जब तक वह जनता की चिन्ता छीन ले और जब तक अपना सुख खोकर उसका दुख दूर करे.

जब तक वह परजा को आराम पहुँचाये. आराम उसको पहुंचा कर अपनी आत्मा को शान्ति दे और सेवा में आनन्द पाये.

बेशक जनराज सरमायादारी के खिलाफ़ होता है. यही कारन है कि उसकी हद में सरमायादार को घबराहट मालूम पड़ती है और

کروڑ پتی راج پتی

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

راج پتی، راج یعنی راشٹر کا سیوک اور سردار ہوتا ہے .

راج پتی، بلا تاج کا نریش ہوتا ہے لیکن پھر بھی شاہی اُس کا اُدیش ہوتا ہے .

راج پتی، راج کا ناظم اور قوم کا خادم ہوتا ہے یعنی راج کا نیم چلانے والا اور راشٹر کی سیوا کرنے والا !

راج پتی، جنتا کا رکشک بھی ہوتا ہے اور شبھ چنتک بھی .

راج پتی، عہدے دار بھی ہوتا ہے اور خدمت گار بھی .

خدمت سے وہ پد پاتا ہے اور پد سے عزت .

لیکن وہ عزت کب تک ؟

جب تک وہ سیوا کی ذمے داریاں پوری کرے اور جب تک ذمے داریوں کا بوجھ اپنے کندھوں پر اُٹھائے رکھے . جب تک وہ جنتا کی چنتا چھین لے اور جب تک اپنا سکھ کھوکر اُس کا دکھ دور کرے .

جب تک وہ پرجا کو آرام پہونچائے . آرام اُسکو پہونچا کر اپنی آتما کو شانتی دے اور سیوا میں آنند پائے .

بے شک جن راج سرمایہ داری کے خلاف ہوتا ہے . یہی کارن ہے کہ اُس کی حد میں سرمایہ دار کو گھبراہٹ معلوم پڑتی ہے اور

पूंजीवाद को खौफ़ और हिरास ! लेकिन यह अजीब बात कि जम्हूरियत का सदर सरमायादार के खिलाफ़ होते हुए खुद अपनी जगह पर पक्का सरमायादार होता है.

बेशक, राजपति बाज़ जगह लखपति होता है और बाज़ जगह करोरपति !

जहाँ जनता करोरों की गिनती और शुमार में है, वहाँ राजपति करोरपति है. जब वह करोरपति है तो उसकी जिम्मेदारियाँ भी करोरों गुना हैं और बोझ भी करोरों का, इसलिये उसको होशियार रहना चाहिये कि उसे हिसाब भी करोरों के चुकाना होंगे और जवाब भी करोरों देना होंगे.

हिसाब के दिन

खुदा के हुज़ूर में

भगवान के न्याय मन्दिर में.

देश की मरदुम शुमारी यानी देश की मिली जुली आबादी उसकी ताक़त, शक्ति और दौलत है—वह सारा जन ही उसका धन और सरमाया है. वह सरमाया ही उसका ज़िन्दा भंडार है. उसी ज़िन्दा भंडार का वह सरमायादार है और उसी शक्ति का वह रक्षक, इस लिये यह कहना ठीक कि "हमारा राजपति करोरपति है."

—

پونجی واد کو خوف اور هراس ! لیکن یه عجیب بات که جمهوریت کا صدر سرمایه‌دار کے خلاف هوتے هوئے خود اپنی جگه پر پکا سرمایه‌دار هوتا هے .

بے شک' راج پتی بعض جگه لکھ پتی هوتا هے اور بعض جگه کرور پتی !

جهاں جنتا کروروں کی گنتی اور شمار میں هے' وهاں راج پتی کرور پتی هے . جب وه کرور پتی هے تو اُس کی ذمے داریاں بهی کروروں گنا هیں اور بوجھ بهی کروروں کا' اِس لئے اُس کو هوشیار رهنا چاهئے که اُسے حساب بهی کروروں کے چکانا هوں گے اور جواب بهی کروروں دینا هوں گے .

حساب کے دن

خدا کے حضور میں

بھگوان کے نیائے مندر میں .

دیش کی مردم شماری یعنی دیش کی ملی جلی آبادی اُس کی طاقت' شکتی اور دولت هے—وه سارا جن هی اُس کا دهن اور سرمایه هے . وه سرمایه هی اُس کا زنده بھنڈار هے . اُسی زنده بھنڈار کا وه سرمایه‌دار هے اور اُسی شکتی کا وه رکشک' اِس لئے یه کهنا ٹھیک که "همارا راج پتی کرور پتی هے ."

—

ऐटम मन्थन (मथना)

(भाई जगदीश एम. एस-सी.)

[ऐटम बम के सिलसिले का यह तीसरा लेख 'नयाहिन्द' में छापा जा रहा है. इस लेख में बताया गया है कि ऐटम बम इंसानों की जान लेने का कितना भयानक हथियार है और उससे कैसे कैसे नुक़सान होते हैं. इस लेख में हाइड्रोजन बम बनाने की क्रिया भी समझाई गई है.—एडीटर]

यूरेनियम (Uranium) और प्लूटोनियम (Plutonium) के ऐटम बम बन गये फिर भी बड़ी बड़ी क़ौमों को चैन न आया. एक दूसरे के डर से इनमें यही कोशिश जारी रही कि सब से ताक़तवर ऐटम बम का मालिक वही हो. इसकी किसी को परवा नहीं कि दुनिया की आम जनता का ही, जो किसी लड़ाई झगड़े में नहीं पड़ती, नाश होगा. बड़ी बड़ी क़ौमों के सरदार आपस के खिचाव और लालच में इस बात को भूल गए. सब को यक़ीन हो गया कि जो मुल्क सबसे ताक़तवर ऐटम बम का मालिक होगा वही दुनिया फ़तह करेगा.

ऐटम बम की ताक़त को बढ़ाने के लिये नए नए तरीक़े सोचे जाने लगे. दस-सेर से ज्यादा यूरेनियम और प्लूटोनियम एक जगह जमा नहीं किया जा सकता था. इसलिये ज्यादा बड़ा यूरेनियम का ऐटम बम नहीं बन सकता था. इस के लिये दूसरी ही तरकीब सोची

ایٹم منتھن (متھنا)

(بھائی جگدیش ایم . ایس سی .)

[ایٹم بم کے سلسلے کا یہ تیسرا لیکھ 'نیا ھند' میں چھاپا جا رہا ھے . اس لیکھ میں بتایا گیا ھے کہ ایٹم بم انسانوں کی جان لینے کا کتنا بھیانک ہتھیار ھے اور اُس سے کیسے کیسے نقصان ھوتے ھیں . اس لیکھ میں ہائیڈروجن بم بنانے کی کریا بھی سمجھائی گئی ھے .—ایڈیٹر]

یورینیم (Uranium) اور پلوٹونیم (Plutonium) کے ایٹم بم بن گئے پھر بھی بڑی بڑی قوموں کو چین نہ آیا . ایک دوسرے کے ڈر سے ان میں یہی کوشش جاری رہی کہ سب سے طاقتور ایٹم بم کا مالک وہی ھو . اسکی کسی کو پرواہ نہیں کہ دنیا کی عام جنتا کا ہی، جو کبھی لڑائی جھگڑے میں نہیں پڑتی، ناش ھوگا . بڑی بڑی قوموں کے سردار آپس کے کھنچاؤ اور لالچ میں اس بات کو بھول گئے . سب کو یقین ھو گیا کہ جو ملک سب سے طاقتور ایٹم بم کا مالک ھوگا وہی دنیا فتح کرے گا .

ایٹم بم کی طاقت کو بڑھانے کے لئے نئے نئے طریقے سوچے جانے لگے . دس سیر سے زیادہ یورینیم اور پلوٹونیم ایک جگہ جمع نہیں کیا جاسکتا تھا . اس لئے زیادہ بڑا یورینیم کا ایٹم بم نہیں بن سکتا تھا . اسکے لئے دوسری ہی ترکیب سوچی

गई. भारी भारी ऐटम बीज के फटने से जो ताक़त निकलती है उस का बम बन ही गया. दूसरी तरफ़ हलके हलके ऐटम बीज में न्यूट्रोन (Neutron) प्रोटोन (Proton) की ईंटें जोड़ कर ज़रा भारी तत्व के बनाने से भी ताक़त बाहर निकलती है.

सब से मज़बूत ऐटम बीज हीलियम (Helium) नाम के तत्व का होता है. इस के ऐटम बीज का नाम ऐल्फ़ा पारटिकिल (Alpha particle) है जो पहले ही बताया जा चुका है. यह ऐल्फ़ा पारटिकिल रेडियम (Radium) के ऐटम बम के टूटने से बाहर निकलता है और इस की चोट से दूसरे तत्व के ऐटम बीज तो टूट गये पर इस पर कभी कोई असर न हुआ. पहले यह लिखा जा चुका है कि ऐल्फ़ा पारटिकिल चार प्रोटोन और दो इलेक्ट्रोन (Electron) का जुड़वाँ बना है. यह चार ईंट का जोड़ इतना मज़बूत साबित हुआ कि साइन्स वालों ने सोचा कि इसके बनने से शायद ताक़त मिले. भारी हाइड्रोजन (Hydrogen) H_2 के बारे में बताया जा चुका है कि इसके ऐटम बीज में एक प्रोटोन और एक न्यूट्रोन होता है और यह न्यूट्रोन की टक्कर से आसानी से टूट जाता है. भारी हाइड्रोजन का ऐटम बीज ऐल्फ़ा पारटिकिल का ठीक आधा होता है. अगर किसी तरह भारी हाइड्रोजन के दो ऐटम बीजों को आपस में मिला दिया जाय तो ऐल्फ़ा पारटिकिल बन जायेगा और इस तरह भारी हाइड्रोजन से हीलियम बन सकेगा.

गनित (Mathematics) से मालूम हुआ कि इस क्रिया से बहुत बड़ी ताक़त निकलेगी. पर कड़ी के चालू करने के लिये शुरू में इतनी गरमी और दबाव की ज़रूरत है जो या तो सूरज के अंदरूनी हिस्से में मौजूद

گئی . بھاری بھاری ایٹم بیج کے پھٹنے سے جو طاقت نکلتی ہے اسکا بم بن ہی گیا . دوسری طرف ہلکے ہلکے ایٹم بیج میں نیوٹرون (Neutron) پروٹون (Proton) کی اینٹیں جوڑ کر ذرا بھاری تتو کے بنانے سے بھی طاقت باہر نکلتی ہے .

سب سے مضبوط ایٹم بیج ہیلیم (Helium) نام کے تتو کا ہوتا ہے . اس کے ایٹم بیج کا نام ایلفا پارٹیکل (Alpha particle) ہے جو پہلے ہی بتایا جاچکا ہے. یہ ایلفا پارٹیکل ریڈیم (Radium) کے ایٹم کے ٹوٹنے سے باہر نکلتا ہے اور اسکی چوٹ سے دوسرے تتو کے ایٹم بیج تو ٹوٹ گئے پر اس پر کبھی کوئی اثر نہ ہوا . پہلے یہ لکھا جا چکا ہے کہ ایلفا پارٹیکل چار پروٹون اور دو الیکٹرون (Electron) کا جڑواں بنا ہے . یہ چار اینٹ کا جوڑ اتنا مضبوط ثابت ہوا کہ سائنس والوں نے سوچا کہ اسکے بننے سے شاید طاقت ملے . بھاری ہائیڈروجن (Hydrogen) H_2 کے بارے میں بتایا جا چکا ہے کہ اس کے ایٹم بیج میں ایک پروٹون اور ایک نیوٹرون ہوتا ہے اور یہ نیوٹرون کی ٹکر سے آسانی سے ٹوٹ جاتا ہے . بھاری ہائیڈروجن کا ایٹم بیج ایلفا پارٹیکل کا ٹھیک آدھا ہوتا ہے . اگر کسی طرح بھاری ہائیڈروجن کے دو ایٹم بیجوں کو آپس میں ملا دیا جائے تو ایلفا پارٹیکل بن جائیگا اور اسطرح بھاری ہائیڈروجن سے ہیلیم بن سکیگا .

گنت (Mathematics) سے معلوم ہوا کہ اس کریا سے بہت بڑی طاقت نکلیگی . پر کڑی کے چالو کرنے کے لئے شروع میں اتنی گرمی اور دباؤ کی ضرورت ہے جو یا تو سورج کے اندرونی حصے میں موجود

है या ऐटम बम के फटने पर ज़ाहिर होती है. गरमी दस लाख डिगरी की और दबाव भी कई लाख मन का चाहिये. यह तभी हो सकता है जब भारी हाइड्रोजन के बीचो बीच में यूरेनियम या प्लूटोनियम का ऐटम बम फटे. इस तरह का बम बनाने की क्रिया शुरू हो गई. इस बम का नाम हाइड्रोजन बम (Hydrogen Bomb) रखा गया है. यह बम जितना चाहें उतना बड़ा बना सकते हैं क्योंकि हाइड्रोजन की मात्रा पर कोई क़ैद नहीं. इसके जो ख़तरनाक असर हो सकते हैं उन पर भी सोच विचार किया जा रहा है.

एन्सटाइन (Einstein) ने दुनिया को आगाह किया है कि हाइड्रोजन बम बनाने की क्रिया रोक दो वरना दुनिया का अंत दूर नहीं. कम से कम इन्सानी सभ्यता कई हज़ार बरस पीछे चली जायगी और अगर आने वाली इन्सानी नसल पर बुरा असर न पड़े तो समझिये कि जान बची और लाखों पाए. ग़ौर करने की बात है कि ऐसा कौन सा बड़ा उसूल दुनिया के सामने है जिस की वेदी पर यह नरमेध यज्ञ किया जाए जिसमें दुनिया और मानव जाति का नाश ही नाश है और उसके ख़तम हो जाने की पूरी संभावना है. अफ़सोस की बात तो यह है कि दुनिया की क़िस्मत का फ़ैसला अब रूस और अमरीका के हाथ में चला गया है जो साम्राजशाही के सुनहरे ख़्वाब देखते हुए मानव जाति को एक ऐसे गड्ढे की तरफ़ लिये जा रहे हैं जिसमें से फिर निकलने का कोई रास्ता शायद न मिले. अब जनता अपना उद्धार अपने हाथों ही कर सकती है दूसरा कोई चारा नहीं.

ھے یا ایٹم بم کے پھٹنے پر ظاھر ھوتی ھے . گرمی دس لاکھ ڈگری کی اور دباؤ بھی کئی لاکھ من کا چاھئے . یہ تبھی ھوسکتا ھے جب بھاری ھائیڈروجن کے بیچو بیچ میں یورینیم یا پلوٹونیم کا ایٹم بم پھٹے . اس طرح کا بم بنانے کی کریا شروع ھوگئی . اس بم کا نام ھائیڈروجن بم (Hydrogen Bomb) رکھا گیا ھے . یہ بم جتنا چاھیں اتنا بڑا بنا سکتے ھیں کیونکہ ھائیڈروجن کی ماترا پر کوئی قید نہیں . اسکے جو خطرناک اثر ھوسکتے ھیں ان پر بھی سوچ وچار کیا جا رھا ھے .

اینسٹائن (Einstein) نے دنیا کو آگاہ کیا ھے کہ ھائیڈروجن بم بنانے کی کریا روک دو ورنہ دنیا کا انت دور نہیں . کم سے کم انسانی سبھیتا کئی ھزار برس پیچھے چلی جائیگی اور آنے والی انسانی نسل پر برا اثر نہ پڑے تو سمجھئے کہ جان بچی اور لاکھوں پائے . غور کرنے کی بات ھے کہ ایسا کون سا بڑا اصول دنیا کے سامنے ھے جس کی ویدی پر یہ نرمیدھ یگیہ کیا جائے جس میں دنیا اور مانو جاتی کا ناش ھی ناش ھے اور اس کے ختم ھوجانے کی پوری سمبھاونا ھے . افسوس کی بات تو یہ ھے کہ دنیا کی قسمت کا فیصلہ اب روس اور امریکہ کے ھاتھ میں چلا گیا ھے جو سامراج شاھی کے سنہرے خواب دیکھتے ھوئے مانو جاتی کو ایک ایسے گڑھے کی طرف لئے جارھے ھیں جس میں سے پھر نکلنے کا کوئی راستہ شاید نہ ملے . اب جنتا اپنا ادھار اپنے ھاتھوں ھی کر سکتی ھے دوسرا کوئی چارا نہیں .

, ऐटम बम के फटने का जो नतीजा होता है वह हम नीचे लिख रहे हैं :—

(१) ऐटम बम फटने से सूरज से भी तेज रोशनी निकलती है जिस से लोग अंधे हो जाते हैं या उनकी आखें खराब जाती हैं.

(२) दस लाख डिगरी सेंटीग्रेड (Centigrade) की तेज लपट से सभी चीजें या तो जल जाती हैं या पिघल जाती हैं.

(३) बम फटने से जो ऐटमी किरनें निकलती हैं वह शरीर में घाव कर देती हैं. बाल झड़ जाते हैं. खून बनना बंद हो जाता है. कैन्सर (Cancer) होने की ज्यादा संभावना रहती है. यहाँ तक कि इन्सानी नसल के बीज में गड़बड़ी हो जाती है और अजीब अजीब तरह की सन्तानें पैदा होने लगती हैं.

(४) जिस जगह ऐटमी किरनें पड़ती हैं वहाँ की मिट्टी से भी यह किरनें निकलने लगती हैं. यह असर महीनों तक रहता है.

(५) हवा में ऐटम बम फटने से जो धूल उड़ती है उसमें से भी ऐटमी किरनें निकलती हैं. यह धूल जहाँ गिरती है वहाँ सभी चीजों का नाश कर देती है.

(६) समुन्दर में ऐटम बम फटने से जो पानी भाप बन कर उड़ जाता है उसमें भी ऐटमी किरनें होती हैं और यह भी जीवधारियों के लिये खतरनाक हैं. जो जहाज इस पानी में चलेगा उसमें से भी यह किरनें निकलने लगेंगी. ऐसे जहाज में कोई आदमी काम नहीं कर सकता. यह भाप समुन्दर के किनारे के शहरों को भी बरबाद कर देगी.

(७) एक खोज से पता लगा है कि ऐटमी धूल तो ऐटम बम से भी ज्यादा खतरनाक है क्योंकि वह चुपचाप शहर पर छा सकती है और सब का नाश कर सकती है.

ایٹم بم کے پھٹنے کا جو نتیجہ ہوتا ہے وہ ہم نیچے لکھ رہے ہیں :—

(1) ایٹم بم پھٹنے سے سورج سے بھی تیز روشنی نکلتی ہے جس سے لوگ اندھے ہوجاتے ہیں یا اُنکی آنکھیں خراب جاتی ہیں ۔

(2) دس لاکھ ڈگری سینٹی گریڈ (Centigrade) کی تیز لپٹ سے سبھی چیزیں یا تو جل جاتی ہیں یا پگھل جاتی ہیں ۔

(3) بم پھٹنے سے جو ایٹمی کرنیں نکلتی ہیں وہ شریر میں گھاؤ کر دیتی ہیں ۔ بال جھڑ جاتے ہیں ۔ خون بننا بند ہوجاتا ہے ۔ کینسر (Cancer) ہونے کی زیادہ سمبھاونا رہتی ہے ۔ یہاں تک کہ انسانی نسل کے بیج میں گڑبڑی ہوجاتی ہے اور عجیب عجیب طرح کی سنتانیں پیدا ہونے لگتی ہیں ۔

(4) جس جگہ ایٹمی کرنیں پڑتی ہیں وہاں کی مٹی سے بھی یہ کرنیں نکلنے لگتی ہیں ۔ یہ اثر مہینوں تک رہتا ہے ۔

(5) ہوا میں ایٹم بم پھٹنے سے جو دھول اُڑتی ہے اُس میں سے بھی ایٹمی کرنیں نکلتی ہیں ۔ یہ دھول جہاں گرتی ہے وہاں سبھی چیزوں کا ناش کر دیتی ہے ۔

(6) سمندر میں ایٹم پھٹنے سے جو پانی بھاپ بن کر اڑ جاتا ہے اُس میں بھی ایٹمی کرنیں ہوتی ہیں اور یہ بھی جیو دھاریوں کے لئے خطرناک ہیں ۔ جو جہاز اس پانی میں چلیگا اُس میں سے بھی یہ کرنیں نکلنے لگینگی ۔ ایسے جہاز میں کوئی آدمی کام نہیں کرسکتا ۔ یہ بھاپ سمندر کے کنارے کے شہروں کو بھی برباد کر دیگی ۔

(7) ایک کھوج سے پتہ لگا ہے کہ ایٹمی دھول تو ایٹم بم سے بھی زیادہ خطرناک ہے کیونکہ وہ چپ چاپ شہر پر چھا سکتی ہے اور سب کا ناش کر سکتی ہے ۔

महात्मा गांधी के नाम

(भाई ख़्वाजा अहमद अब्बास)

मुक़ाम जन्नत या स्वर्ग, अल्लामियाँ या भगवान की मार्फ़त, जनाब महात्मा गांधी जी साहेब को मिले

प्यारे बापू, हमारे बापू,

तीन बरस के बाद हम दोनों अनवर और गोपाल मिलकर आपको यह दूसरी चिट्ठी लिख रहे हैं . एक ख़ास वजह से.

आपके स्वर्गवासी हो जाने के थोड़े दिन बाद ही हमने आपको चिट्ठी लिखी थी. उम्मीद है, आपको जरूर मिली होगी. वह चिट्ठी अनवर ने हम सब, यानी अनवर के छोटे भाई बुन्दू और छोटी बहिन जैनब और गोपाल और गोपाल की बहिन सीता और मोहन की तरफ़ से लिखी थी. (मोहन तो आपको याद होगा ही. वही शरनार्थी लड़का जो कई महीने तक मुंह से कुछ नहीं बोलता था और जिसकी आंखें कहती थीं, बापू को ख़त लिखो. बापू, अब वह बोलने लगा है और आपको बहुत याद करता है. अगर आप हमारे पास होते तो उस जैसे लाखों शरनार्थियों को इतने दुख न सहने पड़ते. और हाँ, बापू, हम एक रिफ़्यूजी केम्प देखने गए थे. वहाँ लोग बड़ी तकलीफ़ में थे. मगर उसका हाल हम आगे चलकर लिखेंगे.)

مہاتما گاندھی کے نام

(بھائی خواجہ احمد عباس)

مقام جنت یا سورگ، اللہ میاں یا بھگوان کی معرفت، جناب مہاتما گاندھی جی صاحب کو ملے

پیارے باپو، ہمارے باپو،

تین برس کے بعد ہم دونوں انور اور گوپال مل کر آپکو یہ دوسری چٹھی لکھ رہے ہیں ۔ ایک خاص وجہ سے ۔

آپکے سورگ واسی ہو جانے کے تھوڑے دن بعد ہی ہم نے آپکو چٹھی لکھی تھی ۔ امید ہے، آپکو ضرور ملی ہوگی ۔ وہ چٹھی انور نے ہم سب، یعنی انور کے چھوٹے بھائی بندو اور چھوٹی بہن زینب اور گوپال اور گوپال کی بہن سیتا اور موہن کی طرف سے لکھی تھی ۔ (موہن تو آپکو یاد ہوگا ہی ۔ وہی شرنارتھی لڑکا جو کئی مہینے تک منہ سے کچھ نہیں بولتا تھا اور جسکی آنکھیں کہتی تھیں، باپو کو خط لکھو ۔ باپو، اب وہ بولنے لگا ہے اور آپکو بہت یاد کرتا ہے ۔ اگر آپ ہمارے پاس ہوتے تو اُس جیسے لاکھوں شرنارتھیوں کو اتنے دکھ نہ سہنے پڑتے ۔ اور ہاں، باپو، ہم ایک رفوجی کیمپ دیکھنے گئے تھے ۔ وہاں لوگ بڑی تکلیف میں تھے ۔ مگر اُسکا حال ہم آگے چل کر لکھینگے ۔)

अब आपको हमारी पहली चिट्ठी ज़रूर याद आ गई होगी. जब वह चिट्ठी हमने भेजी थी, हम दोनों आठ आठ बरस के थे. और उस चिट्ठी में अनवर ने लिखाई की बहुत सी ग़लतियाँ भी की होंगी. मगर अब तो हम ग्यारह बरस के हो गए हैं और चौथी किलास में पढ़ते हैं. अनवर ने हिन्दी भी सीख ली है और गोपाल ने उर्दू. अब हम दोनों उर्दू हिन्दी दोनों लिपिओं में लिख पढ़ सकते हैं, जैसा आप कहते थे सब हिन्दुस्तानियों को करना चाहिए. इसलिए आपको यह चिट्ठी दोनों लिपिओं में लिखकर भेज रहे हैं. अनवर हिन्दी में लिख रहा है, गोपाल उर्दू में. क्यों कि हम दोनों ने दूसरी लिपि नई नई सीखी है, इसलिए ग़लती हो तो माफ़ करें.

हां, तो अपनी पहली चिट्ठी में हमने आपको लिखा था कि जब आपका इंतिक़ाल (देहान्त) हुआ, तो हिन्दुस्तान पाकिस्तान में सब हिन्दू मुसलमान बहुत रोये और सबने तोबा की और सबने कान पकड़े कि अब मार धाड़ नहीं करेंगे. और हमने (यानी अनवर और गोपाल और बुंदू और जैनब और सकीना और सीता ने) अपने तीर कमान और हवाई बंदूक़ और लकड़ी का पिस्तौल—जिनको लेकर हम हिन्दू सेना और इसलामी फ़ौज का खेल खेला करते थे—सब तोड़ कर पानी में फेंक दिये थे और कान पकड़कर तोबा की थी कि अब कभी आपस में न लड़ेंगे और आपको लिखा था कि अब हमें 'क्षमा'' कर दीजिए और लौट आइए.

मगर आप लौटकर नहीं आए, बापू. बहुत दिनों तक हम इंतज़ार करते रहे और रोज़ एक दूसरे से कहते कि बापू लौटकर ज़रूर आएंगे, ज़रूर आएंगे. क्योंकि सब कहते हैं, बापू ने बच्चों की बात

اب آپکو ہماری پہلی چٹھی ضرور یاد آگئی ہو گی. جب وہ چٹھی ہم نے بھیجی تھی، ہم دونوں آٹھ آٹھ برس کے تھے. اور اُس چٹھی میں انور نے لکھائی کی بہت سی غلطیاں بھی کی ہونگی. مگر اب تو ہم گیارہ برس کے ہو گئے ہیں اور چوتھی کلاس میں پڑھتے ہیں. انور نے ہندی بھی سیکھ لی ہے اور گوپال نے اُردو. اب ہم دونوں اُردو ہندی دونوں لپیوں میں لکھ پڑھ سکتے ہیں، جیسا آپ کہتے تھے سب ہندستانیوں کو کرنا چاہئے. اسلئے آپکو یہ چٹھی دونوں لپیوں میں لکھ کر بھیج رہے ہیں. انور ہندی میں لکھ رہا ہے، گوپال اُردو میں. کیونکہ ہم دونوں نے دوسری لپی نئی نئی سیکھی ہے، اس لئے غلطی ہو تو معاف کریں.

ہاں، تو اپنی پہلی چٹھی میں ہم نے آپ کو لکھا تھا کہ جب آپ کا انتقال (دیہانت) ہوا، تو ہندستان پاکستان میں سب ہندو مسلمان بہت روئے اور سب نے توبہ کی اور سب نے کان پکڑے کہ اب مار دھاڑ نہیں کرینگے. اور ہم نے (یعنی انور اور گوپال اور بلدو اور زینب اور سکینہ اور سیتا نے) اپنے تیر کمان اور ہوائی بندوق اور لکڑی کا پستول—جن کو لے کر ہم ہندو سینا اور اسلامی فوج کا کھیل کھیلا کرتے تھے—سب توڑ کر پانی میں پھینک دیئے تھے اور کان پکڑ کر توبہ کی تھی کہ اب کبھی آپس میں نہ لڑینگے اور آپ کو لکھا تھا کہ اب ہمیں ''شما'' کر دیجئے اور لوٹ آئیے.

مگر آپ لوٹ کر نہیں آئے، باپو. بہت دنوں تک ہم انتظار کرتے رہے اور روز ایک دوسرے سے کہتے کہ باپو لوٹ کر ضرور آئینگے، ضرور آئینگے. کیونکہ سب کہتے ہیں، باپو نے بچوں کی بات

कभी नहीं टाली. पर जब आप नहीं आए, तो हमने सोचा, शायद हमने ही कोई ऐसी बात की होगी जिससे हमारे बापू अब तक हम से रूठे हुए हैं. फिर सुना, पाकिस्तान हिन्दुस्तान दोनों मुल्कों में अब भी ऐसे बुरे लोग हैं जिन्होंने आपके देहान्त पर झूट मूठ कान तो पकड़े थे, मगर जिनके दिलों में अब भी बुरे विचार भरे हुए हैं. और कितने ही हिन्दू मुसलमान अब भी एक दूसरे को मारना चाहते हैं.

और फिर हमारे पड़ोस में एक बंगाली बाबू शरनार्थी आकर ठहरे, जो बेचारे पूर्वी पाकिस्तान से आए हैं, अपनी जमीन, घर सब छोड़कर. क्योंकि वहाँ के बुरे मुसलमान हिन्दुओं को मार रहे थे. बापू, यह बंगाली बाबू एक अलग ही भाषा बोलते हैं, जो समझ में तो नहीं आती, मगर बड़ी मीठी लगती है. और जब वह हिन्दुस्तानी भी बोलते हैं तो अजीब ढंग से, जैसे मुंह में रसगुल्ला लेकर बोल रहे हों. इस बंगाली खानदान के सब से बड़े बूढ़े जो हैं उन्हें सब शम्भूदादा शम्भूदादा कहते हैं. यह बड़ी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी है, जैसी अनवर के दादा अब्बा की थी. कहते हैं, उनकी उमर सौ बरस की है, मगर अस्सी बरस की तो जरूर होगी. बड़े अच्छे आदमी हैं, और इतने बुड्ढे होने पर भी बच्चों को बहुत प्यार करते हैं. वह बताते हैं कि आपके जन्नत (स्वर्ग) सिधारने के एक डेढ़ बरस बाद तक तो पूर्वी पाकिस्तान में भी अमन अमान रहा, पर फिर धीरे धीरे बुरे बुरे आदमियों ने हिन्दुओं को कम गिनती में समझकर उनको तंग करना शुरू कर दिया. बहुत सों को मारा भी. लाखों हिन्दू, रेलों और जहाजों में और पैदल हिन्दुस्तान की तरफ़ चल

کبھی نہیں ٹالی . پر جب آپ نہیں آئے ، تو ہم نے سوچا ، شاید ہم نے ہی کوئی ایسی بات کی ہوگی جس سے ہمارے بابو اب تک ہم سے روٹھے ہوئے ہیں . پھر سنا ، پاکستان ہندستان دونوں ملکوں میں اب بھی ایسے برے لوگ ہیں جنہوں نے آپ کے دیہانت پر جھوٹ موٹھ کان تو پکڑے تھے ، مگر جن کے دلوں میں اب بھی برے وچار بھرے ہوئے ہیں . اور کتنے ہی ہندو مسلمان اب بھی ایک دوسرے کو مارنا چاہتے ہیں .

اور پھر ہمارے پڑوس میں ایک بنگالی بابو شرنارتھی آکر ٹھہرے ، جو بیچارے پوربی پاکستان سے آئے ہیں ، اپنی زمین ، گھر سب چھوڑ کر . کیونکہ وہاں کے برے مسلمان ہندوؤں کو مار رہے تھے . بابو ، یہ بنگالی بابو ایک الگ ہی بھاشا بولتے ہیں ، جو سمجھ میں تو نہیں آتی ، مگر بڑی میٹھی لگتی ہے . اور جب وہ ہندستانی بھی بولتے ہیں تو عجیب ڈھنگ سے ، جیسے منہ میں رس گلا لیکر بول رہے ہوں . اس بنگالی خاندان کے سب سے بڑے بوڑھے جو ہیں انہیں سب شمبھو دادا شمبھو دادا کہتے ہیں . یہ بڑی لمبی سفید داڑھی ہے ، جیسے انور کے دادا ابا کی تھی . کہتے ہیں ، ان کی عمر سو برس کی ہے ، مگر اسی برس کی تو ضرور ہوگی . بڑے اچھے آدمی ہیں ، اور اتنے بڈھے ہونے پر بھی بچوں کو بہت پیار کرتے ہیں . وہ بتاتے ہیں کہ آپ کے جنت (سورگ) سدھارنے کے ایک ڈیڑھ برس بعد تک تو پوربی پاکستان میں بھی امن امان رہا ، پر پھر دھیرے دھیرے برے برے آدمیوں نے ہندوؤں کو کم گنتی میں سمجھ کر ان کو تنگ کرنا شروع کر دیا . بہت سوں کو مارا بھی . لاکھوں ہندو ، ریلوں اور جہازوں میں اور پیدل ہندستان کی طرف چل

पड़े. और सुना है कि कलकत्ते जैसे बड़े शहर में भी इतने लोगों को समाने की जगह नहीं मिलो और हजारों तो रेल के स्टेशन पर ही पड़े रहे, और शायद अब भी पड़े हैं. शम्भूदादा कहते हैं कि हमारे हिन्दुस्तान की तरफ़ के बंगाल में भी अच्छा नहीं हुआ और बुरे हिन्दुओं ने भी मुसलमानों को तंग किया और कितनों को मारा भी. और जैसा पहले पंजाब में हुआ था, उसी तरह बंगाल में भी लाखों मुसलमान पाकिस्तान जाने लगे और लाखों हिन्दू उधर से इधर आने लगे.

तो फिर हमने सोचा कि बापू ने अपनी जान भी दी और हम हिन्दुस्तान पाकिस्तान वालों ने कुछ सीखा भी नहीं. जभी तो बापू अब तक हमसे रूठे हुए हैं और लौटकर नहीं आते.

दर असल हम इसीलिए आपको यह ख़त लिख रहे हैं कि आप अभी लौटकर आइएगा नहीं. आपकी जान फिर ख़तरे में है. आपके दुश्मन गिनती में बढ़ते ही जा रहे हैं और अब तो खुले ऊंची ऊंची बातें आपके ख़िलाफ़ करते हैं. पंडित जवाहरलाल नेहरू आपके बताए हुए रास्ते पर चलने को कहते हैं कि हिन्दू मुसलमान एक दूसरे को भाई भाई समझें और हिन्दुस्तान पाकिस्तान सुलह सफ़ाई से रहें तो उनको भी बहुत से लोग बुरा कहते हैं और गालियाँ देते हैं. और हमें तो उनकी जान भी ख़तरे में लगती है. इसीलिए हम यह ख़त आपको लिख रहे हैं कि अभी आप लौटकर न आइएगा. मगर हम आपके बताए हुए रास्ते पर चलकर आपकी रक्षा का इंतिज़ाम करने की कोशिश कर रहे हैं और जब हमारी ताक़त ऐसी

پڑے . اور سنا ہے کہ کلکتہ جیسے بڑے شہر میں بھی اتنے لوگوں کو سمانے کی جگہ نہیں ملی اور ہزاروں تو ریل کے اسٹیشن پر ہی پڑے رہے ' اور شاید اب بھی پڑے ہیں . شمبھو دادا کہتے ہیں کہ ہمارے ہندستان کی طرف کے بنگال میں بھی اچھا نہیں ہوا اور برے ہندوؤں نے بھی مسلمانوں کو تنگ کیا اور کتنوں کو مارا بھی . اور جیسا پہلے پنجاب میں ہوا تھا ' اسی طرح بنگال میں بھی لاکھوں مسلمان پاکستان جانے لگے اور لاکھوں ہندو اُدھر سے اِدھر آنے لگے .

تو پھر ہم نے سوچا کہ باپو نے اپنی جان بھی دی اور ہم ہندستان پاکستان والوں نے کچھ سیکھا بھی نہیں . جبھی تو باپو اب تک ہم سے روٹھے ہوئے ہیں اور لوٹ کر نہیں آتے .

دراصل ہم اِسی لئے آپ کو یہ خط لکھ رہے ہیں کہ آپ ابھی لوٹ کر آئیگا نہیں . آپ کی جان پھر خطرے میں ہے . آپ کے دشمن گنتی میں بڑھتے ہی جارہے ہیں اور اب تو کھلے اونچی اونچی باتیں آپ کے خلاف کرتے ہیں . پنڈت جواہر لال نہرو آپ کے بتائے ہوئے راستے پر چلنے کو کہتے ہیں کہ ہندو مسلمان ایک دوسرے کو بھائی بھائی سمجھیں اور ہندستان پاکستان صلح صفائی سے رہیں تو اُن کو بھی بہت سے لوگ برا کہتے ہیں اور گالیاں دیتے ہیں . اور ہمیں تو اُن کی جان بھی خطرے میں لگتی ہے . اسی لئے ہم یہ خط آپ کو لکھ رہے ہیں کہ ابھی آپ لوٹ کر نہ آئیے گا . مگر ہم آپ کے بتائے ہوئے راستے پر چل کر آپ کی رکشا کا انتظام کرنے کی کوشش کر رہے ہیں اور جب ہماری طاقت ایسی

ज़ोरदार हो जाएगी तो हम आपको लिख देंगे और आप ज़रूर लौट आइएगा. फिर कोई डर की बात नहीं.

अभी तो चुपके चुपके हम आपके दुश्मनों के नाम लिख रहे हैं. ऐसे तीन चार आदमी तो हमारे पड़ोस ही में रहते हैं.

एक तो सेठ शेर अली पीर अली है जो सड़क की नुक्कड़ वाली बिल्डिंग में रहता है. वह बिल्डिंग भी उसी की था, मगर थोड़े दिन हुए उसने इस बिल्डिंग को एक सिंध से आए हुए हिन्दु सेठ के हाथ बेच दिया. सुना है डेढ़ लाख में. शेर अली पीर अली के ऐसे ही और भी कई मकान शहर में थे. एक एक करके उसने सारे मकान बेच दिये हैं और अब वह चुपके से इस रुपए को पाकिस्तान भेज रहा है और जल्द ही खुद भी अपने सारे खानदान समेत पाकिस्तान जाने वाला है. यह शेरअली पीरअली पहले मुस्लिम लीग में हुआ करता था और सुना है दंगा फ़िसाद करने वाले मुसलमानों को पैसा भी देता था और आपको गालियां देता था. मगर पाकिस्तान बनने के बाद वह झूटमूठ कांगरेसी बन गया और दिखाने के लिए आपका नाम भी इज़्ज़त से लेने लग गया. और जब हमारे मोहल्ले की अमन कमेटी बनी, तो उसका भी मेम्बर बन गया, मगर दरअसल उसके दिल में शुरू से खोट था और वह अपनी जायदाद बेचने के इन्तज़ार में था ताकि सारा रुपया भेज कर खुद भी पाकिस्तान में भाग जाए.

मुमकिन है आप कहें कि क्यों किसी शरीफ़ आदमी पर शक करते हो? बापू! आप तो जैसे खुद अच्छे और नेकदिल आदमी थे, वैसा ही औरों को समझते थे. मगर आपको नहीं मालूम आपके

زوردار ہوجائیگی تو ہم آپ کو لکھ دینگے اور آپ ضرور لوٹ آئیگا . پھر کوئی ڈر کی بات نہیں .

ابھی تو چپکے چپکے ہم آپ کے دشمنوں کے نام لکھ رہے ہیں . ایسے تین چار آدمی تو ہمارے پڑوس ہی میں رہتے ہیں .

ایک تو سیٹھ شیر علی پیر علی ہے جو سڑک کی نکڑ والی بلڈنگ میں رہتا ہے . وہ بلڈنگ بھی اُسی کی تھی ' مگر تھوڑے دن ہوئے اُس نے اس بلڈنگ کو ایک سندھ سے آئے ہوئے ہندو سیٹھ کے ہاتھ بیچ دیا . سنا ہے ڈیڑھ لاکھ میں . شیر علی پیر علی کے ایسے ہی اور بھی کئی مکان شہر میں تھے . ایک ایک کر کے اس نے سارے مکان بیچ دیئے ہیں اور اب وہ چپکے سے اس روپے کو پاکستان بھیج رہا ہے اور جلد ہی خود بھی اپنے سارے خاندان سمیت پاکستان جانے والا ہے . یہ شیرعلی پیرعلی پہلے مسلم لیگ میں ہوا کرتا تھا اور سنا ہے دنگا فساد کرنے والے مسلمانوں کو پیسے بھی دیتا تھا اور آپ کو گالیاں دیتا تھا . مگر پاکستان بننے کے بعد وہ جھوٹ موٹھ کانگریسی بن گیا اور دکھانے کے لئے آپ کا نام بھی عزت سے لینے لگ گیا . اور جب ہمارے محلے کی امن کمیٹی بنی ' تو اُس کا بھی ممبر بن گیا ' مگر دراصل اُس کے دل میں شروع سے کھوٹ تھا اور وہ اپنی جائداد بیچنے کے انتظار میں تھا تاکہ سارا روپیہ بھیج کر خود بھی پاکستان میں بھاگ جائے .

ممکن ہے آپ کہیں کہ کیوں کسی شریف آدمی پر شک کرتے ہو ؟ باپو ! آپ تو جیسے خود اچھے اور نیک دل آدمی تھے ' ویسا ہی اوروں کو سمجھتے تھے . مگر آپ کو نہیں معلوم آپ کے

दुश्मन आपके और आपके साथियों के खिलाफ़ कैसी कैसी चालें चल रहे हैं. 'यह शेरअली पीरअली बड़ा खतरनाक आदमी है. इसका लड़का महमूद हमारी ही क्लास में पढ़ता था. जब उसने नाम कटाया तो अनवर ने पूछा, क्यों महमूद स्कूल क्यों छोड़ दिया. तो उसने चुपके से अनवर को बताया कि उसका बाप और सब घरवाले पाकिस्तान जा रहे हैं. अनवर ने कहा—'और तुम्हारी जायदाद का क्या होगा?' तो महमूद बोला—'मेरे अब्बा ने सब इन्तज़ाम कर लिया है, आधे से ज़ादा रुपिया तो पाकिस्तान पहुँच भी गया., फिर अनवर से कहने लगा, 'तुम्हारे अब्बा भी पाकिस्तान क्यों नहीं जाते? इन काफ़िरों के मुल्क में क्यों रहते हो?' अनवर ने कहा—'ख़बरदार, जो ऐसी बात कही.' महमूद ने कहा—'जाओ जाओ, हम किसीसे नहीं डरते. जानते हो, एक मुसलमान दस काफ़िरों पर भारी होता है. जब हमारी पाकिस्तानी फ़ौजें हिन्दुस्तान को फ़तह करेंगी तब पता चलेगा!' इस पर अनवर उसे मारने लगा था कि गोपाल वहाँ आ गया और उसने कहा—'नहीं अनवर, बापू ने मार धाड़ से मना किया है.' मगर उस दिन से महमूद जब भी अनवर को देखता है, उसको काफ़िर कहकर चिढ़ाता है. हमारा इरादा है कि उसे ठीक बना दें, मगर आपसे डरते हैं.

असली बात अनवर को चिढ़ाने की नहीं है मगर इस शेरअली पीरअली और उसके बेटे जैसों ने यहाँ के सारे मुसलमानों को बदनाम कर दिया है. बहुत से हिन्दू कहने लगे हैं कि मुसलमानों का क्या इतबार? शेरअली पीरअली की तरह यह सब छिपे हुए

دشمن آپکے اور آپکے ساتھیوں کے خلاف کیسی کیسی چالیں چل رہے ہیں. یہ شیرعلی پیرعلی بڑا خطرناک آدمی ہے. اس کا لڑکا محمود ہماری ہی کلاس میں پڑھتا تھا. جب اُس نے نام کٹایا تو انور نے پوچھا 'کیوں محمود اسکول کیوں چھوڑ دیا' تو اُس نے چپکے سے انور کو بتایا کہ اُس کا باپ اور سب گھر والے پاکستان جا رہے ہیں. انور نے کہا—' اور تمہاری جائداد کا کیا ہوگا؟' تو محمود بولا—'میرے ابا نے سب انتظام کر لیا ہے' آدھے سے زیادہ روپیہ تو پاکستان پہونچ بھی گیا. پھر انور سے کہنے لگا 'تمہارے ابا بھی پاکستان کیوں نہیں جاتے؟ ان کافروں کے ملک میں کیوں رہتے ہو؟' انور نے کہا— 'خبردار' جو ایسی بات کہی. محمود نے کہا—' جاؤ جاؤ' ہم کسی سے نہیں ڈرتے. جانتے ہو' ایک مسلمان دس کافروں پر بھاری ہوتا ہے. جب ہماری پاکستانی فوجیں ہندستان کو فتح کرینگی تب پتہ چلے گا!' اس پر انور اُسے مارنے لگا تھا کہ گوپال وہاں آگیا اور اُسنے کہا—' نہیں انور' باپو نے مار دھاڑ سے منع کیا ہے.' مگر اُس دن سے محمود جب بھی انور کو دیکھتا ہے' اُس کو کافر کہہ کر چڑھاتا ہے. ہمارا ارادہ ہے کہ اُسے ٹھیک بنا دیں مگر آپ سے ڈرتے ہیں.

اصل بات انور کو چڑھانے کی نہیں ہے مگر اس شیر علی پیر علی اور اُسکے بیٹے جیسوں نے یہاں کے سارے مسلمانوں کو بدنام کر دیا ہے. بہت سے ہندو کہنے لگے ہیں کہ مسلمانوں کا کیا اعتبار؟ شیر علی پیر علی کی طرح یہ سب چھپے ہوئے

पाकिस्तानी हैं. और इस तरह दिलों में खोट पड़ता जा रहा है और न जाने फिर कब खून खराबा शुरू हो जाए.

एक दिन की बात है कि हमारी क्लास का एक लड़का भीषम राव गोपाल को अलग ले जाकर कहने लगा, कल इतवार की छुट्टी है. सवेरे हमारे हाँ लड़कों का जलसा है, उसमें ज़रूर आना. गोपाल ने कहा, अच्छा मैं अनवर से कहूंगा कि सवेरे क्रिकेट खेलने के बजाए भीषम के वहाँ जलसे में चलेंगे. इस पर भीषम बोला, नहीं अनवर को मत लाना. गोपाल ने कहा, मैं और अनवर तो सब जगह साथ ही जाते हैं. भीषम बोला, तुम हिन्दू होकर इस मुसलमान लड़के अनवर से क्यों मिलते जुलते हो. गोपाल ने कहा, अनवर तो मेरा दोस्त है. भीषम ने कहा, भला कोई मुसलमान किसी हिन्दू का दोस्त हो सकता है कभी ? यह तो हमारे दुश्मन हैं दुश्मन. गोपाल ने कहा, देखो मेरे दोस्त को कुछ कहोगे तो मुझसे बुरा कोई न होगा. भीषम ने कहा, खैर तुम कल जलसे में तो आना, फिर देखा जाएगा. मगर अनवर को साथ मत लाना, वहाँ पूजा भी होगी इसलिये मुसलमानों का आना ठीक नहीं.

गोपाल ने अनवर को यह बात बताई और कहा, मैं तो नहीं जाऊँगा ऐसे जलसे में. अनवर ने कहा, जाकर तो देखो क्या होता है. जिन लोगों ने बापू को क़त्ल किया था, वह भी तो ऐसे ही जलसे किया करते थे. कौन जानता है, बापू के खिलाफ़ कोई नई साज़िश कर रहे हों.

सो अगले दिन सुबह को गोपाल भीषम राव के यहाँ पहुंच गया. वहाँ देखा तो बहुत से लड़के जमा थे और आँगन में कसरत कर रहे

پاکستانی ہیں. اور اس طرح دلوں میں کھوٹ پڑتا جا رہا ہے اور نہ جانے پھر کب خون خرابا شروع ہو جائے .

ایک دن کی بات ہے کہ ہماری کلاس کا ایک لڑکا بھیشم راو گوپال کو الگ لیجا کر کہنے لگا' کل اتوار کی چھٹی ہے . سویرے ہمارے ہاں لڑکوں کا جلسہ ہے' اس میں ضرور آنا . گوپال نے کہا' اچھا میں انور سے کہونگا کہ سویرے کریکٹ کھیلنے کے بجائے بھیشم کے وہاں جلسے میں چلیں گے . اس پر بھیشم بولا' نہیں انور کو مت لانا . گوپال نے کہا' میں اور انور تو سب جگہ ساتھ ہی جاتے ہیں . بھیشم بولا' تم ہندو ہوکر اس مسلمان لڑکے انور سے کیوں ملتے جلتے ہو . گوپال نے کہا' انور تو میرا دوست ہے . بھیشم نے کہا' بھلا کوئی مسلمان کسی ہندو کا دوست ہو سکتا ہے کبھی؟ یہ تو ہمارے دشمن ہیں دشمن . گوپال نے کہا' دیکھو میرے دوست کو کچھ کہو گے تو مجھ سے برا کوئی نہ ہوگا . بھیشم نے کہا' خیر تم کل جلسے میں تو آنا' پھر دیکھا جائیگا . مگر انور کو ساتھ مت لانا' وہاں پوجا بھی ہوگی اس لئے مسلمانوں کا آنا ٹھیک نہیں .

گوپال نے انور کو یہ بات بتائی اور کہا' میں تو نہیں جاؤں گا ایسے جلسے میں . انور نے کہا' جاکر تو دیکھو کیا ہوتا ہے . جن لوگوں نے باپو کو قتل کیا تھا' وہ بھی تو ایسے ہی جلسے کیا کرتے تھے . کون جانتا ہے' باپو کے خلاف کوئی نئی سازش کر رہے ہوں .

سو اگلے دن صبح کو گوپال بھیشم راو کے ہاں پہنچ گیا . وہاں دیکھا تو بہت سے لڑکے جمع تھے . اور آنگن میں کسرت کر رہے

थे. कसरत के बाद लाठी चलाना और तीर चलाना सिखाया गया. गोपाल ने भीषम से कहा तीर कमान और पिस्तौल तो हमारे पास भी थे, मगर जिस दिन बापू का देहांत हुआ, हमने वह सब समन्दर में फेंक दिए. इसपर भीषम बोला, यह क्या ग़ज़ब किया, मिल जाएं तो निकाल लाओ, तीरों को तेज कर लो और पिस्तौल में गोलियाँ भर लो. बड़े घमसान की लड़ाई आनेवाली है. गोपाल ने कहा, क्यों किससे लड़ाई की तैयारी है? उसने जवाब दिया, दुश्मन तो सबको ही मालूम है. पहले तो जो मुसलमान यहाँ हैं उनको सबक़ सिखाना है, और फिर पाकिस्तान पर फ़तह पानी है. गोपाल कुछ कहना ही चाहता था कि इतने में पूजा शुरू हो गई. मगर बजाय देवी लक्ष्मी या देवी सरस्वती या कृष्न महाराज के काली माता की पूजा की गई. फिर भीषम के पिताजी ने एक तक़रीर की, जिसमें कहा कि हिन्दू बच्चों को अभी से अपने धर्म और देश के लिए लड़ने मरने को तैयार हो जाना चाहिए. भारत माता के दो टुकड़े किए गए हैं. हमें पाकिस्तान को मलियामेट करके इस इलाक़े को एक बार फिर भारत भूमि में मिलाना है. और जो मुसलमान हिन्दुस्तान में हैं उनको भी उनकी ग़द्दारी की सज़ा देनी है. इसपर गोपाल से न रहा गया. उसने कहा—'बापू ने तो हमें लड़ने मरने को मना किया था. हमें उनके बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए. आपका नाम सुनकर भीषम के पिता ही नहीं, जितने लड़के भी मौजूद थे, सब हँस पड़े और भीषम के पिता बोले, बेटा, तुम भी किसका नाम लेते हो. यह गांधी का ही तो किया धरा है कि आज मुसलमानों के हौसले इतने बढ़ गए हैं. और आपको बहुत कुछ

تھے. کسرت کے بعد لاٹھی چلانا اور تیر چلانا سکھایا گیا. گوپال نے بھیشم سے کہا' تیر کمان اور پستول تو ہمارے پاس بھی تھے' مگر جس دن باپو کا دیہانت ہوا' ہم نے وہ سب سمندر میں پھینک دیئے. اس پر بھیشم بولا' یہ کیا غضب کیا' مل جائیں تو نکال لاؤ' تیروں کو تیز کر لو اور پستول میں گولیاں بھر لو. بڑے گھمسان کی لڑائی آنے والی ہے. گوپال نے کہا' کیوں کس سے لڑائی کی تیاری ہے؟ اسنے جواب دیا' دشمن تو سب کو ہی معلوم ہے. پہلے تو جو مسلمان یہاں ہیں اُن کو سبق سکھانا ہے' اور پھر پاکستان پر فتح پانی ہے. گوپال کچھ کہنا ہی چاہتا تھا کہ اتنے میں پوجا شروع ہوگئی. مگر بجائے دیوی لکشمی یا دیوی سرسوتی یا کرشن مہاراج کے کالی ماتا کی پوجا کی گئی. پھر بھیشم کے پتا جی نے ایک تقریر کی' جس میں کہا کہ ہندو بچوں کو ابھی سے اپنے دھرم اور دیش کے لئے لڑنے مرنے کو تیار ہو جانا چاہئے. بھارت ماتا کے دو ٹکڑے کئے گئے ہیں. ہمیں پاکستان کو ملیا میٹ کرکے اس علاقے کو ایک بار پھر بھارت بھومی میں ملانا ہے. اور جو مسلمان ہندوستان میں ہیں اُن کو بھی اُنکی غداری کی سزا دینی ہے. اس پر گوپال سے نہ رہا گیا. اسنے کہا— 'باپو نے تو ہمیں لڑنے مرنے کو منع کیا تھا. ہمیں اُن کے بتائے ہوئے راستے پر چلنا چاہئے. آپ کا نام سنکر بھیشم کے پتا ہی نہیں' جتنے لڑکے بھی موجود تھے' سب ہنس پڑے اور بھیشم کے پتا بولے' بیٹا' تم بھی کس کا نام لیتے ہو. یہ گاندھی کا ہی تو کیا دھرا ہے کہ آج مسلمانوں کے حوصلے اتنے بڑھ گئے ہیں. اور آپ کو بہت کچھ

बुरा भला कहा जो गोपाल से न सुना गया और वह रो पड़ा. और इसपर जब सब हँस पड़े और उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे तो वह वहाँ से उठकर चला आया.

एक बुरा आदमी और हमारे मोहल्ले में रहता है. उसका नाम है सेठ करोड़ीमल. उसका बेटा सोनामल भी हमारे स्कूल में पढ़ता है—बड़ा कूढ़मग़ज़ और बदतमीज़. है हमसे बड़ा, मगर अभी तीसरी क्लास ही में पढ़ता है. तीन बरस से इसी क्लास में है. कभी फ़ेल हो जाता है, कभी इम्तहान ही नहीं देता हर रोज़ वह एक लम्बी चौड़ी काली मोटर में बैठकर स्कूल आता है. रेशमी क़मीज़ें और नेकर पहनता है और उसके हाथ पर एक बड़ी ख़ूबसूरत सोने की घड़ी लगी रहती है. उसका बाप उसे पांच रुपया रोज़ जेबख़र्च के देता है. इसलिए बड़ी क्लासों के लड़के भी उसकी ख़ुशामद में लगे रहते हैं. सिरफ़ हम दोनों ही हैं, जो उसे मुँह नहीं लगाते. सोनामल को अपनी अमीरी की शान जताने का बड़ा शौक़ है, इसलिए उसने अपने जनम दिन पर सारे स्कूल के लड़कों की दावत कर डाली. हमारा इरादा तो उसके हाँ जाने का नहीं था, मगर अनवर के अब्बा ने उससे कहा तुम ज़रूर जाना, नहीं तो लोग शायद यह समझें कि तुम मुसलमान होने की वजह से वहाँ नहीं गए. फिर हमने भी सोचा, चलकर देखें तो सही वहाँ क्या होता है. कोई हौवा थोड़े ही है कि खा जाएगा. सो हम दोनों भी दावत में पहुँच गए.

बापू, आप तो जानते ही हैं कि आजकल राशन कार्ड बिना चुटकी भर आटा भी नहीं मिलता. मसलन अनवर के घर में सब

برا بھلا کہا جو گوپال سے نہ سنا گیا اور وہ رو پڑا۔ اور اسپر جب سب ھنس پڑے اور اُسکا مذاق اُڑانے لگے تو وہ وھاں سے اُٹھکر چلا آیا۔

ایک برا آدمی اور ھمارے محلے میں رھتا ھے۔ اُسکا نام ھے سیٹھ کروڑی مل۔ اُس کا بیٹا سونا مل بھی ھمارے اسکول میں پڑھتا ھے—بڑا کوڑھ مغز اور بدتمیز۔ ھے ھم سے بڑا، مگر ابھی تیسری کلاس ھی میں پڑھتا ھے۔ تین برس سے اسی کلاس میں ھے۔ کبھی فیل ھو جاتا ھے، کبھی امتحان ھی نہیں دیتا۔ ھر روز وہ ایک لمبی چوڑی کالی موٹر میں بیٹھ کر اسکول آتا ھے۔ ریشمی قمیضیں اور نیکر پہنتا ھے اور اُس کے ھاتھ پر ایک بڑی خوبصورت سونے کی گھڑی لگی رھتی ھے۔ اُسکا باپ اُسے پانچ روپیہ روز جیب خرچ کے دیتا ھے۔ اس لئے بڑی کلاسوں کے لوکے بھی اُس کی خوشامد میں لگے رھتے ھیں۔ صرف ھم دونوں ھی ھیں، جو اُسے منہ نہیں لگاتے۔ سونا مل کو اپنی امیری کی شان جتانے کا بڑا شوق ھے، اسلئے اُس نے اپنے جنم دن پر سارے اسکول کے لڑکوں کی دعوت کر ڈالی۔ ھمارا ارادہ تو اُس کے ھاں جانے کا نہیں تھا، مگر انور کے ابا نے اُس سے کہا تم ضرور جانا، نہیں تو لوگ شاید یہ سمجھیں کہ تم مسلمان ھونے کی وجہ سے وھاں نہیں گئے۔ پھر ھم نے بھی سوچا، چل کر دیکھیں تو سہی وھاں کیا ھوتا ھے۔ کوئی ھوا تھوڑے ھی ھے کہ کھا جائیگا۔ سو ھم دونوں بھی دعوت میں پہونچ گئے۔

باپو، آپ تو جانتے ھی ھیں کہ آجکل راشن کارڈ بنا چٹکی بھر آٹا بھی نہیں ملتا۔ مثلاً انور کے گھر میں سب

मिलाकर पूरे नौ राशन कार्ड हैं, तब भी बस हफ़्ते भर के लिए ४ सेर चावल आते हैं और १३ सेर आटा, और बस. दो मेहमान भी आ जाएं तो अब्बा खाने की मेज़ पर कह देते हैं—"घरवाले सब होशियार—होशियार—" जिससे अनवर और उसके भाई बहन सब समझ जाते हैं कि कम खाना चाहिए ताकि मेहमान भूके न रह जाएं. और गोपाल के पिताजी तो रोज़ ही सब बच्चों को कहते रहते हैं कि कच्ची तरकारियाँ ज़्यादा खाओ, चावल पूरी कम खाओ. राशन का ज़माना है. मगर उस दिन सोनामल के हाँ जो पहुँचे तो ऐसा लगा कि जैसे राशन वाशन सब खतम हो गया हो. बापू, सुना है आप तो बहुत कम खाते थे. दो चार खजूरें और बकरी का आध सेर दूध. इतना दूध तो अनवर की नई छोटी बहन मीना ही पी जाती है. (हाँ, मीना का परिचय तो आपसे कराया ही नहीं. आपको जब हमने पहला खत लिखा था, वह तो उसके बहुत दिनों बाद आई थी. वह अभी डेढ़ बरस की है और आपकी तरह मुँह में दांत भी नहीं हैं. वह अभी बोलती भी नहीं, मा मा बा बा ही बस करती है. अगर वह बोलती, तो ज़रूर आपको सलाम लिखवाती क्योंकि वह आपसे बहुत मुहब्बत करती है और आपकी तसवीर के सामने खड़ी बापू बापू करती रहती है. और कभी कहती है बापू बापू आजा आजा) हम बात तो कर रहे थे सोनामल की दावत की, और पहुँच गए कहाँ से कहाँ. हाँ, तो वहाँ खाना जो देखा तो हमारी आँखें फटी की फटी रह गईं. बड़े बड़े कढ़ाओं में सैकड़ों हज़ारों पूरियाँ तली जा रही थीं. दस क़िस्म की तरकारियाँ, मटर पुलाओ, मीठे चावल, फीरनी, दही बड़े, पकौड़े, पकौड़ियाँ, रसगुल्ले,

ملاکر پورے نو راشن کارڈ ہیں، تب بھی بس ہفتہ بھر کے لئے ۴ سیر چاول آتے ہیں اور ۱۳ سیر آٹا، اور بس۔ دو مہمان بھی آجائیں تو ابا کھانے کی میز پر کہہ دیتے ہیں—"گھر والے سب ہوشیار—ہوشیار—" جس سے انور اور اسکے بھائی بہن سب سمجھ جاتے ہیں کہ کم کھانا چاہئے تاکہ مہمان بھوکے نہ رہ جائیں۔ اور گوپال کے پتاجی تو روز ہی سب بچوں کو کہتے رہتے ہیں کہ کچی ترکاریاں زیادہ کھاؤ، چاول پوری کم کھاؤ۔ راشن کا زمانہ ہے۔ مگر اسدن سونا مل کے ہاں جو پہونچے تو ایسا لگا کہ جیسے راشن واشن سب ختم ہو گیا ہو۔ باپو، سنا ہے آپ تو بہت کم کھاتے تھے۔ دو چار کھجوریں اور بکری کا آدھ سیر دودھ۔ اتنا دودھ تو انور کی نئی چھوٹی بہن مینا ہی پی جاتی ہے۔ (ہاں، مینا کا پریچے تو آپ سے کرایا ہی نہیں۔ آپکو جب ہم نے پہلا خط لکھا تھا، وہ تو اسکے بہت دنوں بعد آئی تھی۔ وہ ابھی ڈیڑھ برس کی ہے اور آپکی طرح منہ میں دانت بھی نہیں ہیں۔ وہ ابھی بولتی بھی نہیں، ماں ماں با با ہی بس کرتی ہے۔ اگر وہ بولتی، تو ضرور آپکو سلام لکھواتی کیونکہ وہ آپ سے بہت محبت کرتی ہے اور آپکی تصویر کے سامنے کھڑی باپو باپو کرتی رہتی ہے۔ اور کبھی کہتی ہے باپو باپو آجا آجا) ہم بات تو کر رہے تھے سونا مل کی دعوت کی اور پہونچ گئے کہاں سے کہاں۔ ہاں، تو وہاں کھانا جو دیکھا تو ہماری آنکھیں پھٹی کی پھٹی رہ گئیں۔ بڑے بڑے کڑھاؤں میں سیکڑوں ہزاروں پوریاں تلی جارہی تھیں۔ دس قسم کی ترکاریاں، مٹر پلاؤ، میٹھے چاول، فیرنی، دہی بڑے، پکوڑے، پکوڑیاں، رس گلے،

गुलाब जामन, जलेबियां और न जाने क्या अलाबला. आप देखते तो आपको भी बहुत बुरा लगता और गुस्सा भी आता. क्योंकि उसी दिन सुबह के अखबार में छपा था कि बिहार के अकाल में कितने ही ग़रीब आदमी भूक से मर गए हैं.

गोपाल ने सोनामल से पूछा, क्यों भई राशन के ज़माने में तुम्हारे हां इतने चावल और इतना आटा कहाँ से आ गया, तो वह हंसकर बोला, अरे यह क्या है ? हम चाहें तो हज़ारों आदमियों को भोजन खिला सकते हैं एकदम. गोपाल ने पूछा, भला इतना बहुत राशन कहाँ से आएगा. इस पर सोनामल ने चुपके से गोपाल के कान में कहा, किसी से कहना नहीं मगर मेरे पिताजी के गोदामों में हज़ारों मन अनाज पड़ा है. उड़ती उड़ती खबर हमने पहले भी सुनी थी कि करोड़ीमल बलैक मारकेट करता है, मगर उस दिन तो उसके बेटे ने ही भांडा फोड़ दिया. यह सुनकर हम दोनों का तो खाने को जी न चाहा, मगर औरों का साथ देने को बैठे रहे. इतने में सेठ करोड़ीमल खुद भी आ गया. बापू, वह इतना मोटा है, इतना मोटा है कि (आप बुरा न मानें तो कह दें) आप जैसे तो उसमें से दस बारह आदमी बन सकते हैं. इतनी बड़ी तोंद जैसे मटका. ऐसा लगता है जैसे बलैक मारकेट का सारा अनाज उसके पेट में भरा हुआ है. हंसता है तो ऐसा लगता है जैसे भूचाल आ गया हो. वह जब आया तो हमने देखा कि खद्दर के कपड़े और गांधी टोपी पहने है. हमने सोचा, इन काले बाज़ारवालों की हिम्मत तो देखो, बापू के खद्दर और टोपी को भी बदनाम करते हैं. कमरे में तिजोरी के ऊपर ही उसने आपकी बड़ी सारी रंगीन तस्वीर भी लगा रखी है. कमरे में

گلاب جامن، جلیبیاں اور نہ جانے کیا الا بلا . آپ دیکھتے تو آپکو بھی بہت برا لگتا اور غصہ بھي آتا . کیونکہ اُسیدن صبح کے اخبار میں چھپا تھا کہ بہار کے اکال میں کتنے ہی غریب آدمی بھوکھ سے مر گئے ہیں .

گوپال نے سونا مل سے پوچھا ' کیوں بھئي راشن کے زمانے میں تمہارے ہاں اتنے چاول اور اتنا آٹا کہاں سے آگیا ' تو وہ ہنس کر بولا ' ارے یہ کیا ہے ؟ ہم چاہیں تو ہزاروں آدمیوں کو بھوجن کھلا سکتے ہیں ایک دم . گوپال نے پوچھا ' بھلا اتنا بہت راشن کہاں سے آئیگا . اس پر سونا مل نے چپکے سے گوپال کے کان میں کہا ' کسي سے کہنا نہیں مگر میرے پتا جی کے گوداموں میں ہزاروں من اناج پڑا ہے . اُڑتي اُڑتي خبر ہم نے پہلے بھي سنی تھی کہ کروڑی مل بلیک مارکیٹ کرتا ہے ' مگر اُسدن تو اُس کے بیٹے نے ہی بھانڈا پھوڑ دیا . یہ سن کر ہم دونوں کا تو کھانے کو جی نہ چاہا ; مگر اوروں کا ساتھ دینے کو بیٹھے رہے . اتنے میں سیٹھ کروڑی مل خود بھی آگیا . باپو ! وہ اتنا موٹا ہے ' اتنا موٹا ہے کہ (آپ برا نہ مانیں تو کہہ دیں) آپ جیسے تو اُس میں سے دس بارہ آدمي بن سکتے ہیں . اتنی بڑي توند جیسے مٹکا . ایسا لگتا ہے جیسے بلیک مارکیٹ کا سارا اناج اُس کے پیٹ میں بھرا ہوا ہے . ہنستا ہے تو ایسا لگتا ہے جیسے بھونچال آگیا ہو . وہ جب آیا تو ہم نے دیکھا کہ کھدر کے کپڑے اور گاندھي ٹوپی پہنے ہے . ہم نے سوچا ان کالے بازار والوں کی ہمت تو دیکھو ' باپو کے کھدر اور ٹوپی کو بھی بدنام کرتے ہیں . کمرے میں تجوری کے اوپر ہي اُس نے آپ کی بڑي ساری رنگین تصویر بھی لگا رکھی ہے . کمرے میں

आते ही उसकी तरफ़ प्रनाम करके बैठ गया और लगा पूरियों और रसगुल्लों और जलेबियों का सफ़ाया करने. वह दिन और आज का दिन. हमने तो सोनामल से बात करना ही छोड़ दिया है.

मगर वह रिफ़्जी कैम्प की बात लिखना तो भूल ही गए. हुआ यह कि मोहन के एक रिश्ते के मामा वहाँ रहते हैं. सो पिछले इतवार को उसने हम दोनों से कहा कि मैं अपने मामा से मिलने जा रहा हूं. तुम दोनों रिफ़्जी कैम्प देखने चलते हो? हमने कभी रिफ़्जी कैम्प नहीं देखा था. हमने कहा चलो. शहर से तीन चार मील होगी वह जगह. पहले तो हम बस में गए. फिर पैदल. पक्की सड़क से कच्ची सड़क. बारिश की वजह से खूब कीचड़ और दलदल हो रही थी. घुटनों घुटनों तक हमारी टांगें कीचड़ में भर गईं. उधर से एक ट्रक आ रही थी. उसके पहियों ने जो गंदे पानी के छींटे उड़ाए तो हमारी तो बेवक़्त की होली हो गई. कैम्प जाकर देखा तो आठ दस तो टूटी फूटी पुरानी मिलिटरी की बारकें हैं. उनमें तख़्ते लगा लगाकर कोठरियां बनाई हुई हैं और एक एक छोटी सी कोठरी में सारे घरवाले. हम तो देखकर हैरान रह गए कि एक कोठरी में इतने आदमी कैसे रह सकते हैं. बापू, यह कोठरियां वाले तो फिर भी औरों से अच्छी हालत में हैं. कितने ही शरनार्थी तो बाल बच्चों समेत तम्बुओं और झोंपड़ियों में रह रहे हैं. लकड़ी और टीन के टुकड़ों को जोड़ जोड़कर झोंपड़ियाँ सी बना ली हैं. अन्दर ज़मीन बारिश से गीली, और वहीं बिचारे शरनार्थी पड़े हुए थे. यह सब देखकर हमें बड़ा दुख हुआ. पर मोहन के मामा ने जो बताया वह सुन कर तो हमें बड़ा ही गुस्सा आया. बारकों समेत यह सारा ज़मीन एक ठेकेदार ने ले रक्खी है

آتے ہی اُس کی طرف پرنام کر کے بیٹھ گیا اور لگا پوریوں اور رس گلوں اور جلیبیوں کا صفایا کرنے ۔ وہ دن اور آج کا دن ۔ ہم نے تو سونا مل سے بات کرنا ہی چھوڑ دیا ہے ۔

مگر وہ رفیوجی کیمپ کی بات لکھنا تو بھول ہی گئے ۔ ہوا یہ کہ موہن کے ایک رشتے کے ماما وہاں رہتے ہیں ۔ سو پچھلے اتوار کو اُس نے ہم دونوں سے کہا کہ میں اپنے ماما سے ملنے جا رہا ہوں ۔ تم دونوں رفیوجی کیمپ دیکھنے چلتے ہو ؟ ہم نے کبھی رفیوجی کیمپ نہیں دیکھا تھا ۔ ہم نے کہا چلو ۔ شہر سے تین چار میل ہوگی وہ جگہ ۔ پہلے تو ہم بس میں گئے ۔ پھر پیدل ۔ پکی سڑک سے کچی سڑک ۔ بارش کی وجہ سے خوب کیچڑ اور دلدل ہو رہی تھی ۔ گھٹنوں گھٹنوں تک ہماری ٹانگیں کیچڑ میں بھر گئیں ۔ اُدھر سے ایک ٹرک آ رہی تھی اُس کے پہیوں نے جو گندے پانی کے چھینٹے اُڑائے تو ہماری تو بے وقت کی ہولی ہو گئی ۔ کیمپ جا کر دیکھا تو آٹھ دس تو ٹوٹی پھوٹی پرانی ملٹری کی بارکیں ہیں ۔ ان میں تختے لگا لگا کر کوٹھریاں بنائی ہوئی ہیں اور ایک ایک چھوٹی سی کوٹھری میں سارے گھر والے ۔ ہم تو دیکھ کر حیران رہ گئے کہ ایک کوٹھری میں اتنے آدمی کیسے رہ سکتے ہیں ۔ باپو، یہ کوٹھریوں والے تو پھر بھی اوروں سے اچھی حالت میں ہیں کتنے ہی شرنارتھی تو بال بچوں سمیت تمبوؤں اور جھونپڑیوں میں رہ رہے ہیں ۔ لکڑی اور ٹین کے ٹکڑوں کو جوڑ جوڑ کر جھونپڑیاں سی بنا لی ہیں ۔ اندر زمین بارش سے گیلی، اور وہیں بچارے شرنارتھی پڑے ہوئے تھے ۔ یہ سب دیکھ کر ہمیں بڑا دکھ ہوا ۔ پر موہن کے ماما نے جو بتایا وہ سن کر تو ہمیں بڑا ہی غصہ آیا ۔ بارکوں سمیت یہ ساری زمین ایک ٹھیکے دار نے لے رکھی ہے

और नाम के वास्ते एक झूटमूठ की कमेटी भी बना ली है और इस कमेटी के नाम से वह हर शरनार्थी से किराया लेता है. कोठरी का किराया आठ रुपए महीना और झोंपड़ी या तम्बू का सिर्फ़ ज़मीन का किराया चार रुपए ! और अगर कोई बेचारा किराया न दे सके, तो उसे पुलिस बुलवाकर निकाल देते हैं.

इस कैम्प में बहुत से ग़रीब सिक्ख सरदार जी रहते हैं जो पंजाब और फ़्रंटियर के इलाक़े से आये थे (मोहन के मामा भी सिक्ख सरदारजी हैं और पहले फ़ौज में हवलदार थे. अब बिचारे बेकार हैं मोहन के पिताजी ने उन्हें कुछ रुपए भेजे थे.) और वह ठेकेदार जो इन सबसे किराया लेता है और इन पर जबरदस्ती करता है, वह भी सिक्ख सरदार ही है—सरदार सेवक सिंह. यह जानकर हमें बड़ी हैरानी हुई. और हाँ, मोहन के मामा अपने तम्बू की फटी हुई छत, जिसमें से बरसात का पानी अंदर आता है, दिखाकर कहने लगे, हाय, इससे तो हम पाकिस्तान ही में मर गये होते ! और यह सुनकर हमें भी रोना आ गया और वहाँ से आए तो रस्ते भर हम तीनों में से कोई नहीं बोला. पर दिल ही दिल में सोचते रहे कि यह बुरे लोग क्यों औरों को दुख देते हैं. यह शेरअली पीरअली, यह भापमराव के पिताजी, यह सेठ करोड़ीमल और यह ठेकेदार. और इन सबको ठीक बनाएं तो कैसे ?

फिर मोहन बोला, आओ एक फ़ौज बनाएं शरनार्थियों की...

और गोपाल बोला, और मज़दूरों की...

और अनवर बोला, और किसानों की...

اور نام کے واسطے ایک جھوٹ موٹھ کی کمیٹی بھی بنا لی ہے اور اس کمیٹی کے نام سے وہ ہر شرنارتھی سے کرایہ لیتا ہے . کوٹھری کا کرایہ آٹھ روپیہ مہینہ اور جھونپڑی یا تمبو کا صرف زمین کا کرایہ چار روپیہ ! اور اگر کوئی بچارا کرایہ نہ دے سکے' تو اُسے پولیس بلوا کر نکال دیتے ہیں .

اس کیمپ میں بہت سے غریب سکھ سردار جی رہتے ہیں جو پنجاب اور فرنٹیر کے علاقے سے آئے تھے . (موہن کے ماما بھی سکھ سردار جی ہیں اور پہلے فوج میں حولدار تھے . اب بچارے بیکار ہیں . موہن کے پتاجی نے انہیں کچھ روپے بھیجے تھے) اور وہ ٹھیکیدار جو ان سب سے کرایہ لیتا ہے اور ان پر زبردستی کرتا ہے' وہ بھی سکھ سردار ہی ہے۔۔۔سردار سیوک سنگھ . یہ جان کر ہمیں بڑی حیرانی ہوئی . اور ہاں' موہن کے ماما اپنے تمبو کی پھٹی ہوئی چھت' جس میں سے برسات کا پانی اندر آتا ہے' دکھا کر کہنے لگے' ہائے' اس سے توہم پاکستان ہی میں مر گئے ہوتے ! اور یہ سنکر ہمیں بھی رونا آگیا اور وہاں سے آئے تو رستے بھر ہم تینوں میں سے کوئی نہیں بولا . پر دل ہی دل میں سوچتے رہے کہ یہ برے لوگ کیوں اوروں کو دکھ دیتے ہیں . یہ شیر علی پیر علی' یہ بھیشم راؤ کے پتا جی' یہ سیٹھ کروڑی مل اور یہ ٹھیکیدار . اور ان سب کو ٹھیک بنائیں تو کیسے ؟

پھر موہن بولا' آؤ ایک فوج بنائیں شرنارتھیوں کی . . . .

اور گوپال بولا' اور مزدوروں کی . . . . . .

اور انور بولا' اور کسانوں کی . . . . .

और फिर हम तीनों बोल पड़े, बच्चों की फ़ौज जो इन सब बेईमानों को ठीक बना दे.

...

मगर फ़ौज के पास हथियार भी तो होना चाहिए. शेरअली पीरअली के पास तो लाखों रुपया है. और भीषमराव के साथी तीर कमान और लाठियों से डरिल करते हैं. और करोड़ीमल के पास बलैक मारकेट का अनाज है. और वह रिफ़्यूजी कैम्प का ठेकेदार, उसके पास भी न जाने कितना रुपया होगा और फिर मौक़ा पड़ने पर पुलिस भी तो उसकी मदद करती है! करोड़ीमल की मिल में हड़ताल हुई तो मजदूरों पर गोली चलाने को पुलिस झट से आ गई.

हमारी फ़ौज के पास हथियार आएं तो कहाँ से आएं? हमारे पास तो बस तीर कमान थे और एक हवाई बंदूक़ और एक लकड़ी का पिस्तौल. वह भी हमने समंदर में फेंक दिए थे, और कान पकड़ लिए थे कि अब कभी उनको लेकर आपस में न लड़ेंगे.

यही सोचते हुए उस शाम को जब हम समंदर के किनारे टहलने गए तो समंदर उतर रहा था. बहुत दूर तक हम रेत पर चलते चले गए. आगे जाकर क्या देखते हैं कि रेत के एक टीले में से एक नोकीली चीज बाहर निकली हुई है.

रेत हटाकर देखा तो वह अनवर की हवाई बंदूक़ थी और गोपाल की पिस्तौल और टूटे हुए तीर कमान. पहले हमने सोचा, इनको निकालकर घर ले आएं, ठीक ठाक कर लें. तीरों को नोकीला कर लें. हवाई बंदूक़ में तेल डालकर उसकी कमानी पर से जंग उतार लें. और पिस्तौल को साफ़ करके उसमें पटाखे भर लें. हमें बापू के

اور پھر ہم تینوں بول پڑے' بچوں کی فوج جو ان سب بے ایمانوں کو ٹھیک بنا دے ۔

مگر فوج کے پاس ہتھیار بھی تو ہونے چاہئے. شیرعلی پیرعلی کے پاس تو لاکھوں روپیہ ہے ۔ اور بھیشم راؤ کے ساتھی تیر کمان اور لاٹھیوں سے ڈرل کرتے ہیں ۔ اور کروڑی مل کے پاس بلیک مارکیٹ کا اناج ہے ۔ اور وہ رفیوجی کیمپ کا ٹھیکیدار' اس کے پاس نہ جانے کتنا روپیہ ہوگا اور پھر موقع پڑنے پر پولیس بھی تو اس کی مدد کرتی ہے! کروڑی مل کی مل میں ہڑتال ہوئی تو مزدوروں پر گولی چلانے کو پولیس جھٹ سے آگئی ۔

ہماری فوج کے پاس ہتھیار آئیں تو کہاں سے آئیں؟ ہمارے پاس تو بس تیر کمان تھے اور ایک ہوائی بندوق اور ایک لکڑی کا پستول ۔ وہ بھی ہم نے سمندر میں پھینک دیئے تھے' اور کان پکڑ لئے تھے کہ اب کبھی انکو لیکر آپس میں نہ لڑینگے ۔

یہی سوچتے ہوئے اس شام کو جب ہم سمندر کے کنارے ٹہلنے گئے تو سمندر اتر رہا تھا ۔ بہت دور تک ہم ریت پر چلتے چلے گئے ۔ آگے جاکر کیا دیکھتے ہیں کہ ریت کے ایک ٹیلے میں سے ایک نوکیلی چیز باہر نکلی ہوئی ہے ۔

ریت ہٹا کر دیکھا تو وہ انور کی ہوائی بندوق تھی اور گوپال کی پستول اور ٹوٹے ہوئے تیر کمان ۔ پہلے ہم نے سوچا' انکو نکال کر گھر لے آئیں' ٹھیک ٹھاک کر لیں ۔ تیروں کو نوکیلا کر لیں ۔ ہوائی بندوق میں تیل ڈال کر اسکی کمانی پر سے زنگ اتار لیں ۔ اور پستول کو صاف کرکے اسمیں پٹاخے بھر لیں ۔ ہمیں باپو کے

दुश्मनों से लड़ना है, और यह लोग बातों से मानने वाले नहीं. मगर फिर हमने सोचा कि हमने बापू को वचन दिया है कि इन हथियारों को हाथ न लगाएँ. इसलिए हम उन्हें वहीं रेत में दबा आए हैं.

मगर वह जगह हमें याद है और अब भी जब समंदर का पानी उतरेगा हम उन्हें निकालकर ला सकते हैं इसलिए यह चिट्ठी आपको लिख रहे हैं कि आप की इजाज़त हो तो अपने तीर कमान और हवाई बंदूक और लकड़ी का पिस्तौल लाकर आपके इन सब दुश्मनों को सीधा कर दें.

तो है आपकी इजाज़त बापू ?

जवाब ज़रूर दें और जल्द—क्योंकि दुश्मन ज़ोर पकड़ रहे हैं और हमें भी जल्द से जल्द जवाबी हमला करना ही चाहिए.

आपके बेटे—

गोपाल

अनवर

बापू, एक और बात है. अनवर की नानी अम्मा भी जन्नत (स्वर्ग) को सिधार गई हैं. अल्ला मियां के हाँ तो वह परदा नहीं करती होंगी. वह आपको मिलें तो उनसे कहिएगा, उनका अनवर उन्हें बहुत याद करता है.

अनवर

('सरगम' बम्बई से)

دشمنوں سے لڑنا ہے' اور یہ لوگ باتوں سے ماننے والے نہیں. مگر پھر ہم نے سوچا کہ ہم نے باپو کو وچن دیا ہے کہ اِن ہتھیاروں کو ہاتھ نہ لگائینگے. اسلئے ہم اُنہیں وہیں ریت میں دبا آئے ہیں.

مگر وہ جگہ ہمیں یاد ہے اور اب بھی جب سمندر کا پانی اُتریگا ہم اُنہیں نکالکر لاسکتے ہیں. اسلئے یہ چٹھی آپکو لکھ رہے ہیں کہ آپ کی اجازت ہو تو اپنے تیر کمان اور ہوائی بندوق اور لکڑی کا پستول لاکر آپکے ان سب دشمنوں کو سیدھا کردیں.

تو ہے آپکی اجازت باپو ؟

جواب ضرور دیں اورجلد—کیونکہ دشمن زور پکڑ رہے ہیں اور ہمیں بھی جلد سے جلد جوابی حملہ کرنا ہی چاہئے.

آپ کے بیٹے—

گوپال

انور

باپو ایک اور بات ہے. انور کی نانی اماں بھی جنت (سورگ) کو سدھار گئی ہیں. اللہ میاں کے ہاں تو وہ پردا نہیں کرتی ہونگی. وہ آپکو ملیں تو اُن سے کہئیگا' ان کا انور اُنہیں بہت یاد کرتا ہے.

انور

('سرگم' بمبئی سے)

कोरियां और हमारा फ़र्ज़

कोरिया का इतिहास बताता है कि वह हमेशा से एक रहा है और सन १९४५ तक एक था. जापान की हार के बाद ३८ पड़ी रेखा से उसके उत्तरी और दक्खिनी दो टुकड़े कर दिये गये. यह भी सिर्फ़ नाम के लिये थे. सन १९५० में उत्तरी हिस्से के हमले का शोर मचा कर अमरीका ने, शरारत से, उन दोनों टुकड़ों पर अलग अलग मुल्कों की मुहर लगाकर, एशिया पर छा जाने का एक बहाना ढूंढ लिया.

सन १९०५ से १९४५ तक कोरिया जापान का ग़ुलाम था, पर उस ग़ुलामी में भी कोरिया एक था, दो टुकड़ों में बँटा हुआ नहीं था. जापान की हार के बाद उसको आज़ाद करने वाले रूस और अमरीका ने, उसके दो टुकड़े करके, आपस में बाँट लिया. उत्तरी कोरिया रूस के हाथ में रहा और दक्खिनी कोरिया अमरीका के हाथ में. यह दोनों ही देश उसे आज़ाद करना नहीं चाहते थे. अगर चाहते होते तो इस तरह के बटवारे की ज़रूरत न होती.

कभी सन १९४९ में, क्यों और किस नियत से, रूस ने उत्तरी कोरिया को उत्तरी कोरिया वालों के सपुर्द कर दिया और अपनी फ़ौजें वहाँ से हटा लीं. अमरीका से भी उसने ऐसा करने की माँग की पर अमरीका ने वैसा करना मुनासिब न समझा. अमरीका का ऐसा न करना एशिया के सब मुल्कों को और यूरोप के कुछ मुल्कों

کوریا اور ہمارا فرض

کوریا کا اتہاس بتاتا ہے کہ وہ ہمیشہ سے ایک رہا ہے اور سن ۱۹۴۵ تک ایک تھا . جاپان کی ہار کے بعد ۳۸ پڑی ریکھا سے اُس کے اُتری اور دکھنی دو ٹکڑے کردئیے گئے . یہ بھی صرف نام کے لئے تھے . سن ۱۹۵۰ میں اُتری حصّے کے حملے کا شور مچا کر امریکہ نے ' شرارت سے ' اُن دونوں ٹکڑوں پر الگ الگ ملکوں کی مہر لگا کر ' ایشیا پر چھاجانے کا ایک بہانہ ڈھونڈھ لیا .

سن ۱۹۰۵ سے ۱۹۴۵ تک کوریا جاپان کا غلام تھا ' پر اُس غلامی میں بھی کوریا ایک تھا ' دو ٹکڑوں میں بٹا ہوا نہیں تھا . جاپان کی ہار کے بعد اُس کو آزاد کرنے والے روس اور امریکہ نے ' اُس کے دو ٹکڑے کر کے ' آپس میں بانٹ لیا . اُتری کوریا روس کے ہاتھ میں رہا اور دکھنی کوریا امریکہ کے ہاتھ میں . یہ دونوں ہی دیش اُسے آزاد کرنا نہیں چاہتے تھے . اگر چاہتے ہوتے تو اِس طرح کے بٹوارے کی ضرورت نہ ہوتی .

کبھی سن ۱۹۴۹ میں ' کیوں اور کس نیت سے ' روس نے اُتری کوریا کو اُتری کوریا والوں کے سپرد کر دیا اور اپنی فوجیں وہاں سے ہٹا لیں . امریکہ سے بھی اُس نے ایسا کرنے کی مانگ کی ' پر امریکہ نے ویسا کرنا مناسب نہ سمجھا . امریکہ کا ایسا نہ کرنا ایشیا کے سب ملکوں کو اور یوروپ کے کچھ ملکوں

को यह सोचने के लिये मजबूर करता है कि अमरीका की नियत न साफ़ थी, न साफ़ है.

कुछ लोगों का यह कहना है कि अमरीका दक्खिनी कोरिया के लोगों को भड़का कर उत्तरी कोरिया पर छुटपुट हमले कराता रहा और अगर यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौंसिल ने उत्तरी और दक्खिनी कोरिया वालों को अपने दरबार में बुलाया होता तो हो सकता है यह बात साबित भी हो जाती कि दक्खिनी कोरिया बेशक उत्तरी कोरिया को आये दिन छेड़ता रहता था. पर अमरीका ने अपनी चालाकी से उत्तरी कोरिया और दक्खिनी कोरिया को सुरक्षा कौंसिल में सामने नहीं आने दिया. सुरक्षा कौंसिल ने दुनिया भर की पंचायत होने के नाते ऐसा क्यों किया इस बारे में कोई बयान भी नहीं निकाला.

उत्तरी कोरिया के हमले के बाद यह शोर मचा था कि न तो वह हमला है और न 'एग्रेशन'. वह तो घरेलू लड़ाई है और दोनों कोरिया को एक कर देने की कोशिश है, पर उस वक़्त भी अमरीका ने शोर मचाकर इस तरह के शोर मचाने वालों का मुँह, यह कह कर, बन्द कर दिया कि नहीं यह हमला है और एग्रेशन है और इसके लिये पहले से भी तैयारियाँ थीं. अगर ऐसी तैयारी न होती तो उत्तरी कोरिया इतनी जल्दी इतनी फ़ौजें मैदान में नहीं उतार सकता था.

शुरू शुरू में अमरीका की तरफ़ से यह भी कोशिशें हुईं कि वह यह भी साबित करदे कि उत्तरी कोरिया यह सब कुछ रूस के इशारे पर, उसकी मदद से, उसके जनरैलों के मातहत कर रहा है

کو یہ سوچنے کے لئے مجبور کرتا ہے کہ امریکہ کی نیت نہ صاف تھی ' نہ صاف ہے .

کچھ لوگوں کا یہ کہنا ہے کہ امریکہ دکھنی کوریا کے لوگوں کو بھڑکا کر اُتری کوریا پر چھٹ پٹ حملے کراتا رہا اور اگر یو. این. او. کی سرکشا کونسل نے اُتری اور دکھنی کوریا والوں کو اپنے دربار میں بلایا ہوتا تو ہوسکتا ہے یہ بات ثابت بھی ہوجاتی کہ دکھنی کوریا بیشک اُتری کوریا کو آئے دن چھیڑتا رہتا تھا . پر امریکہ نے اپنی چالاکی سے اُتری کوریا اور دکھنی کوریا کو سرکشا کونسل کے سامنے نہیں آنے دیا . سرکشا کونسل نے دنیا بھر کی پنچایت ہونے کے ناتے ایسا کیوں کیا اس بارے میں کوئی بیان بھی نہیں نکالا .

اُتری کوریا کے حملے کے بعد یہ شور مچا تھا کہ نہ تو وہ حملہ ہے اور نہ 'اگریشن'. وہ تو گھریلو لڑائی ہے اور دونوں کوریا کو ایک کردینے کی کوشش ہے . پر اُس وقت بھی امریکہ نے شور مچا کر اسطرح کے شور مچانے والوں کا منہ ' یہ کہکر ' بند کردیا کہ نہیں یہ حملہ ہے اور اگریشن ہے اور اسکے لئے پہلے سے بھی تیاریاں تھیں . اگر ایسی تیاری نہ ہوتی تو اُتری کوریا اتنی جلدی اتنی فوجیں میدان میں نہیں اُتار سکتا تھا .

شروع شروع میں امریکہ کی طرف سے یہ بھی کوششیں ہوئیں کہ وہ یہ بھی ثابت کر دے کہ اُتری کوریا یہ سب کچھ روس کے اشارے پر' روس کی مدد سے' اُس کے جنریلوں کے ماتحت کر رہا ہے

पर वह छोटे मोटे झूट बोल कर भी दुनिया की आंखों में इतनी धूल न झोंक पाया कि दुनिया के मुल्क यह मानने के लिये तैयार हो जाते कि उत्तरी कोरिया जो कुछ कर रहा था वह रूस के इशारे या उसकी मदद से कर रहा था. आज २४ अक्तूबर सन १९५० तक जनरल मैकआर्थर ने, जो नाम के लिये यूनाइटेड नेशन्स की फ़ौजों के सेनापति बने हुए हैं, कभी यह नहीं कहा कि रूस का उत्तरी कोरिया के हमले के काम में कोई हाथ है या था.

रूस को लपेटने की कोशिश करने का इसके सिवाय क्या मतलब हो सकता है कि अमरीका अपने ऐटम बम के बल पर रूस को मैदान में लाकर तीसरी बड़ी लड़ाई शुरू कर देना चाहता था. और यह यों भी कि अमरीका के ज़िम्मेदार पत्रकार कुछ दिनों से बराबर अमरीका को इस बिना पर तीसरी लड़ाई के लिये उकसाते रहे हैं कि इस वक़्त रूस के पास न ऐटम बम तैयार हैं और न उससे बचने के साधन, इसलिये अमरीका के लिये तीसरी लड़ाई छेड़ने के लिये इससे अच्छा वक़्त और कोई नहीं हो सकता. इन बातो के आधार पर यह मान लेने में कोई अचरज नहीं होना चाहिये कि अमरीका दक्खिनी कोरिया को उत्तरी कोरिया के साथ छेड़ छाड़ करने के लिये उकसाता रहा है.

अगर उत्तरी कोरिया की तैयारी एग्रेशन की दलील हो सकती है तो दक्खिनी कोरिया की फ़ौजों का, यूनाइटेड नेशन्स की आज्ञा के बिना और यूनाइटेड नेशन्स के सेनापति जनरल मैकआर्थर के हुकुम के बिना, ३८ पड़ी रेखा को पार कर जाना भी इस बात की दलील होनी चाहिये कि दक्खिनी कोरिया उत्तरी कोरिया को उत्तरी कोरिया

پر وہ چھوٹے موٹے جھوٹ بول کر بھی دنیا کی آنکھوں میں اتنی دھول نہ جھونک پایا کہ دنیا کے ملک یہ ماننے کے لئے تیار ہوجاتے کہ اُتری کوریا جو کچھ کر رہا تھا وہ روس کے اشارے یا اُس کی مدد سے کر رہا تھا. آج ۲۴ اکتوبر سن ۱۹۵۰ تک جنرل میک آرتھر نے، جو نام کے لئے یونائٹڈ نیشنس کی فوجوں کے سینا پتی بنے ہوئے ہیں، کبھی یہ نہیں کہا کہ روس کا اُتری کوریا کے حملے کے کام میں کوئی ہاتھ ہے یا تھا.

روس کو لپیٹنے کی کوشش کرنے کا اس کے سوائے کیا مطلب ہوسکتا ہے کہ امریکہ اپنے ایٹم بم کے بل پر روس کو میدان میں لاکر تیسری بڑی لڑائی شروع کر دینا چاہتا تھا. اور یہ یوں بھی کہ امریکہ کے ذمے دار پترکار کچھ دنوں سے برابر امریکہ کو اِس بنا پر تیسری لڑائی کے لئے اُکساتے رہے ہیں کہ اِس وقت روس کے پاس نہ ایٹم بم تیار ہیں اور نہ اُس سے بچنے کے سادھن، اس لئے امریکہ کے لئے تیسری لڑائی چھیڑنے کے لئے اِس سے اچھا وقت اور کوئی نہیں ہوسکتا. اِن باتوں کے آدھار پر یہ مان لینے میں کوئی اچرج نہیں ہونا چاہئے کہ امریکہ دکھنی کوریا کو اُتری کوریا کے ساتھ چھیڑ چھاڑ کرنے کے لئے اُکساتا رہا ہے.

اگر اُتری کوریا کی تیاری اگریشن کی دلیل ہوسکتی ہے تو دکھنی کوریا کی فوجوں کا، یونائٹڈ نیشنس کی آگیا کے بنا اور یونائٹڈ نیشنس کے سینا پتی جنرل میک آرتھر کے حکم کے بنا، ۳۸ پڑی ریکھا کو پار کر جانا بھی اس بات کی دلیل ہونی چاہئے کہ دکھنی کوریا اُتری کوریا کو اُتری کوریا

के हमले से पहले छेड़ता रहा था और उत्तरी कोरिया का हमला न हमला था. न एग्रेशन था बल्कि अपनी बचत के लिये जवाबी हमला था. अब रही यह बात कि उत्तरी कोरिया दूर तक आगे क्यों बढ़ता गया. इसका जवाब देने से पहले हम यह कह देना मुनासिब समझते हैं कि यूनाइटेड नेशन्स के हुकुम का बहाना लेकर जनरल मैकआर्थर का ३८ पड़ी रेखा पार करना और उत्तरी कोरिया वालों को आगे मंचूरिया तक खदेड़ने की आवाज़ उठाना क्या इस बात की दलील नहीं है कि अमरीका दक्खिनी कोरिया को उत्तरी कोरिया से छेड़ छाड़ करने के लिये उत्तरी कोरिया के दक्खिनी कोरिया पर हमला करने से पहले उकसाता रहा था. अगर हमारी यह दलील ठीक मान ली जाती है तब हम यह कहेंगे कि उत्तरी कोरिया सिर्फ़ इसलिये आगे बढ़ता रहा कि वह दक्खिनी कोरिया से सारे विदेसियों यानी अमरीकनों को निकाल बाहर करे और फिर सारे कोरिया को एक करके हमेशा के लिये आज़ाद कर दे. और अपने दो पड़ोसी और ज़बरदस्त मुल्क चीन और रूस के साथ मिल कर आराम से रहने लगे. अब अगर और मुल्कों की नज़रों में दक्खिनी कोरिया पर उत्तरी कोरिया का हमला एग्रेशन था तो रहा करे. कम से कम हिन्दुस्तान की नज़र में अगर वह एग्रेशन था तो बिदेसी अमरीकनों के ख़िलाफ़ होना चाहिये था. विदेसियों के ख़िलाफ़ भी अगर एग्रेशन की इजाज़त नहीं दी जायगी तो दुनिया के मुल्क कभी ग़ुलामी से आज़ाद न हो सकेंगे. आज भी जापान और जरमनी दो मुल्क ग़ुलामी के फन्दे में फँसे हुए हैं. अगर यह दोनों मुल्क अमरीकियों और रूसियों पर अपने मुल्कों को आज़ाद करने के लिये चढ़ बैठें और उन्हें

کے حملے سے پہلے چھیڑتا رہا تھا اور اُتری کوریا کا حملہ نہ حملہ تھا، نہ اگریشن تھا بلکہ اپنی بچت کے لئے جوابی حملہ تھا. اب رہی یہ بات کہ اُتری کوریا دور تک آگے کیوں بڑھتا گیا. اس کا جواب دینے سے پہلے ہم یہ کہہ دینا مناسب سمجھتے ہیں کہ یونائٹڈ نیشنس کے حکم کا بہانہ لیکر جنرل میک آرتھر کا ۳۸ پڑی ریکھا پار کرنا اور اُتری کوریا والوں کو آگے مانچوریا تک کھدیڑنے کی آواز اُٹھانا کیا اِس بات کی دلیل نہیں ہے کہ امریکہ دکھنی کوریا کو اُتری کوریا سے چھیڑ چھاڑ کرنے کے لئے اُتری کوریا کے دکھنی کوریا پر حملہ کرنے سے پہلے اُکساتا رہا تھا. اگر ہماری یہ دلیل ٹھیک مان لی جاتی ہے تب ہم یہ کہینگے کہ اُتری کوریا صرف اِس لئے آگے بڑھتا رہا کہ وہ دکھنی کوریا سے سارے بدیسیوں یعنی امریکنوں کو نکال باہر کرے اور پھر سارے کوریا کو ایک کرکے ہمیشہ کے لئے آزاد کر دے. اور اپنے دو پڑوسی اور زبردست ملک چین اور روس کے ساتھ مل کر آرام سے رہنے لگے. اب اگر اور ملکوں کی نظروں میں دکھنی کوریا پر اُتری کوریا کا حملہ اگریشن تھا تو رہا کرے. کم سے کم ہندستان کی نظر میں اگر وہ اگریشن تھا تو بدیسی امریکنوں کے خلاف ہونا چاہئے تھا. بدیسیوں کے خلاف بھی اگر اگریشن کی اجازت نہیں دی جائیگی تو دنیا کے ملک کبھی غلامی سے آزاد نہ ہوسکینگے. آج بھی جاپان اور جرمنی دو ملک غلامی کے پھندے میں پھنسے ہوئے ہیں. اگر یہ دونوں ملک امریکنوں اور روسیوں پر اپنے ملکوں کو آزاد کرنے کے لئے چڑھ بیٹھیں اور انہیں

अपने देश से निकाल बाहर करने की कोशिश करें तो क्या यह एग्रेशन समझा जायगा और अगर यू. यन. ओ. की नजर में एग्रेशन ही है तो उसे चाहिये कि वह जल्दी से जल्दी अमरीकियों और रूसियों को जापान और जरमनी खाली करने का हुकुम दे. पर इन दोनों को ऐसा हुकुम देने की यू. एन. ओ. में ताक़त ही कहाँ है. उनसठ मुल्कों की यू. एन ओ. में से सत्तावन एक ओर और अमरीका और रूस एक ओर रह कर भी ताक़त के लिहाज़ से अमरीका और रूस ही बड़े हो जाते हैं. आबादी के लिहाज से भले ही सत्तावन मुल्कों की आबादी की चौथाई के बराबर भी न हों. ऐसी यू. एन. ओ. से इन्साफ़ की उम्मीद नहीं की जा सकती. किसी अदालत में अगर जजों की गुटबंदी बन जाय तो उस अदालत से किसी को इन्साफ़ नहीं मिल सकता. आज सुरक्षा कौन्सिल का यही हाल हो रहा है. इसको ज्यादा साफ़ करने के लिये हम एक उदाहरन दिये बिना रुक नहीं सकते.

"सर सैयद के लड़के बैरिस्टर सैयद महमूद इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज रह चुके थे. जजी छोड़ कर फिर बैरिस्टरी करने लगे. एक मुवक्किल की तरफ़ से जब वह जोर की बहस कर चुके और हर तरह की दलालों से यह साबित कर चुके कि उनका मुवक्किल ही सचाई पर है तब हाईकोर्ट के जज ने उनके सामने एक सवाल रक्खा और वह यह था कि मैं बैरिस्टर महमूद को ठीक समझूँ या जज महमूद को ठीक समझूँ. सैयद महमूद सच्चे आदमी थे. इसलिये जवाब में बोल बैठे— ठीक तो आप जज महमूद को ही समझिये, बैरिस्टर महमूद तो पैसों का महमूद है. बात असल यह

اپنے دیش سے نکال باہر کرنے کی کوشش کریں تو کیا یہ اگریشن سمجھا جائیگا اور اگر یو. این. او. کی نظر میں اگریشن ہی ہے تو اُسے چاہئیے کہ وہ جلدی سے جلدی امریکیوں اور روسیوں کو جاپان اور جرمنی خالی کرنے کا حکم دے. پر ان دونوں کو ایسا حکم دینے کی یو. این. او. میں طاقت ہی کہاں ہے. اُنسٹھ ملکوں کی یو. این. او. میں سے ستاون ایک اور اور امریکہ اور روس ایک اور رہ کر بھی طاقت کے لحاظ سے امریکہ اور روس ہی بڑے ہوجاتے ہیں. آبادی کے لحاظ سے بھلے ہی ستاون ملکوں کی آبادی کی چوتھائی کے برابر بھی نہ ہوں. ایسی یو. این. او. سے انصاف کی اُمید نہیں کی جاسکتی. کسی عدالت میں اگر ججوں کی گٹ بندی بن جائے تو اُس عدالت سے کسی کو انصاف نہیں مل سکتا. آج سورکشا کونسل کا یہی حال ہورہا ہے. اس کو زیادہ صاف کرنے کے لئے ہم ایک اُداہرن دیئے بنا رک نہیں سکتے.

''سر سید کے لڑکے بیرسٹر سید محمود الہ آباد ہائیکورٹ کے جج رہ چکے تھے. ججی چھوڑ کر پھر بیرسٹری کرنے لگے. ایک موکل کی طرف سے جب وہ زور کی بحث کر چکے اور ہر طرح کی دلیلوں سے یہ ثابت کر چکے کہ انکا موکل ہی سچائی پر ہے تب ہائی کورٹ کے جج نے اُن کے سامنے ایک سوال رکھا اور وہ یہ تھا کہ "میں بیرسٹر محمود کو ٹھیک سمجھوں یا جج محمود کو ٹھیک سمجھوں. سید محمود سچے آدمی تھے. اسلئے جواب میں بول بیٹھے—ٹھیک تو آپ جج محمود کو ہی سمجھئے، بیرسٹر محمود تو پیسوں کا محمود ہے. بات اصل یہ

थी कि सैयद महमूद जज की हैसियत से उसी तरह के मुक़द्दमे में ऐसा फ़ैसला दे चुके थे जो उनके मुवक्किल के बिलकुल ख़िलाफ़ पड़ता था. तभी तो जज को इस तरह का सवाल उठा कर सैयद महमूद की दलीलों से छुटकारा मिला."

आज यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौंसिल में इसी तरह की दलीलें चल रही हैं. अमरीका का पैसा जो कुछ चाहे बुलवा सकता है. अमरीका को छोड़िये, रूस को ही लीजिये. उसने वीटो के अधिकार वाले मुल्क बरतानिया की ग़ैर हाज़िरी में इसराईल को यू. एन. ओ. का मेम्बर बना ही दिया. फिर उसे यह कहने का क्या हक़ रह गया कि वह सब कारवाई ग़ैरक़ानूनी थी जो रूस की ग़ैर हाज़िरी में हुई क्योंकि रूस को वीटो का अख़्तियार मिला हुआ है. यह ठीक है कि उसने बेक़ायदगी का बीज बोया और वह उसका फल भोगे. पर और दूसरे मुल्क एक बेक़ायदगी के बाद दूसरी बेक़ायदगी क्यों होने दें. और अगर होने देंगे तो तीसरी लड़ाई के लिये तैयार रहें. तीसरी लड़ाई यानी दुनिया की आधी या इससे ज्यादा आबादी का मिट्टी में मिल जाना. दूसरे मुल्क अगर आज़ादी से राय देने की ताक़त नहीं रखते तो वह यू. एन. ओ. से अलग होकर दुनिया का ज्यादा भला कर सकते हैं. कुछ मुल्क हम पर बिगड़ सकते हैं और कह सकते हैं कि वह आज़ादी से राय देते हैं, अमरीका के दबे हुए नहीं हैं. तब हम यह कहेंगे कि अगर वह इन्साफ़ से भरी राय नहीं दे सकते तब भी उन्हें यू. एन. ओ. छोड़ देना चाहिये. अगर वह यह कहेंगे कि वह इन्साफ़ से ही राय देते हैं, तब हम यही कहेंगे कि अगर इन्साफ़ से राय दी होती तो आज जो ज़ुल्म दक्खिनी कोरिया

تھی کہ سید محمود جج کی حیثیت سے اسیطرح کے مقدمے میں ایسا فیصلہ دے چکے تھے جو اُن کے مؤکل کے بالکل خلاف پڑتا تھا۔ تبھی تو جج کو اِس طرح کا سوال اُٹھا کر سید محمود کی دلیلوں سے چھٹکارا ملا۔"

آج یو۔ این۔ او۔ کی سُورکشا کونسل میں اِسی طرح کی دلیلیں چل رہی ہیں۔ امریکہ کا پیسہ جو کچھ چاہے بلوا سکتا ہے۔ امریکہ کو چھوڑئیے، روس کو ہی لیجئے۔ اُس نے ویٹو کے ادھیکار والے ملک برطانیہ کی غیر حاضری میں اسرائیل کو یو۔ این۔ او۔ کا ممبر بنا ہی دیا۔ پھر اُسے یہ کہنے کا کیا حق رہ گیا کہ وہ سب کاروائی غیر قانونی تھی جو روس کی غیرحاضری میں ہوئی کیونکہ روس کو ویٹو کا اختیار ملا ہوا ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُس نے بے قاعدگی کا بیج بویا اور وہ اُسکا پھل بھوگے۔ پر اور دوسرے ملک ایک بےقاعدگی کے بعد دوسری بے قاعدگی کیوں ہونے دیں، اور اگر ہونے دینگے تو تیسری لڑائی کے لئے تیار رہیں۔ تیسری لڑائی یعنی دنیا کی آدھی یا اِس سے زیادہ آبادی کا مٹی میں مل جانا۔ دوسرے ملک اگر آزادی سے رائے دینے کی طاقت نہیں رکھتے تو وہ یو۔ این۔ او۔ سے الگ ہوکر دنیا کا زیادہ بھلا کر سکتے ہیں۔ کچھ ملک ہم پر بگڑ سکتے ہیں اور کہہ سکتے ہیں کہ وہ آزادی سے رائے دیتے ہیں، امریکہ کے دبے ہوئے نہیں ہیں۔ تب ہم یہ کہینگے کہ اگر وہ انصاف سے بھری رائے نہیں دے سکتے تب بھی اُنہیں یو۔ این۔ او۔ چھوڑ دینا چاہئے۔ اگر وہ یہ کہینگے کہ وہ انصاف سے ہی رائے دیتے ہیں تب ہم یہی کہینگے کہ اگر انصاف سے رائے دی ہوتی تو آج جو ظلم دکھنی کوریا

पर हो चुका और उत्तरी कोरिया पर हो रहा है वह न हुआ होता. क्या उनका इन्साफ़ इतना भी नहीं चाहता कि दक्खिनी उत्तरी कोरिया कहलाने वाले दोनों मुल्कों के प्रतिनिधियों को बुलाकर मामले की असलियत तो जानते. यू. एन. ओ. जिस दिन सच्चे मानों में बेलाग संस्था बन जायगी उस दिन दुनिया में न कोई मुल्क ग़ुलाम रह सकेगा और न किसी मुल्क पर दूसरे मुल्क का फ़ौजी घेरा रह सकेगा. यू. एन. ओ. को सच्ची यू. एन. ओ. बनने से पहले सब मुल्कों को हर तरह और हर मानों में आज़ाद करने का काम उठाना होगा, और जिसे वह उठाना नहीं चाहती. और ऐसा हुए बिना उससे इन्साफ़ की उम्मीद नहीं की जा सकती. अगर आज रूस की गुट्ट ज़ोरदार होती तो अमरीका वही कर रहा होता जो आज रूस कर रहा है. इस खींचातानी का जो नतीजा हुआ करता है वह हो रहा है.

यू. एन. ओ. और सुरक्षा कौन्सिल के रहते सूडान, सिंगापुर और हाँगकाँग में अंगरेज़ क्यों और किस लिये? हिन्दचीन में फ़रांसीसियों की मार धाड़ क्यों? पाँडेचरी, कारीकाल और माही में फ़रान्सीसी क्यों पड़े हुए हैं? गोआ, दामन, देओ में पुर्तगाली किस लिये? आस्ट्रेलिया जितने बड़े मुल्क में, नहीं नहीं, महाद्वीप में अस्सी लाख आदमी क्यों. इस तरह की नाबराबरी रहते हुए यू. एन. ओ. दुनिया की पंचायत होने का दावा नहीं कर सकती. हम यू. एन. ओ. पर यह इलज़ाम न लगाते अगर वह निरी पंचायत बनी रहती. पर अब तो उसने अपनी फ़ौज बना ली है. इसलिये अब हम उससे इस तरह की माँग कर सकते हैं.

आज जो कुछ कोरिया में हो रहा है उसको यूनाइटेड नेशन्स

پر ہو چکا اور اُتری کوریا پر ہو رہا ہے وہ نہ ہوا ہوتا. کیا اُنکا انصاف اِتنا بھی نہیں چاہتا کہ دکھنی اُتری کوریا کہلانے والے دونوں ملکوں کے پرتی‌ندھیوں کو بُلا کر معاملے کی اصلیت تو جانتے. یو. این. او. جس دن سچے معنوں میں بے لاگ سنستھا بن جائیگی اُس دن دنیا میں نہ کوئی ملک غلام رہ سکیگا اور نہ کسی ملک پر دوسرے ملک کا فوجی گھیرا رہ سکیگا. یو. این. او. کو سچی یو. این. او. بننے سے پہلے سب ملکوں کو ہر طرح اور ہر معنوں میں آزاد کرنے کا کام اُٹھانا ہوگا اور جسے وہ اُٹھانا نہیں چاہتی. اور ایسا ہوئے بنا اُس سے انصاف کی اُمید نہیں کی جا سکتی. اگر آج روس کی گٹ زوردار ہوتی تو امریکہ وہی کر رہا ہوتا جو آج روس کر رہا ہے. اس کھینچا تانی کا جو نتیجہ ہوا کرتا ہے وہ ہو رہا ہے.

یو. این. او. اور سُورکشا کونسل کے رہتے سوڈان، سنگاپور اور ہانگ کانگ میں انگریز کیوں اور کس لئے؟ ہند چین میں فرانسیسیوں کی مار دھاڑ کیوں؟ پانڈیچری، کاری کال اور ماہی میں فرانسیسی کیوں پڑے ہوئے ہیں؟ گوآ، دامن، دیو میں پرتگالی کس لئے؟ آسٹریلیا جتنے بڑے ملک میں، نہیں نہیں، مہا دیپ میں اسی لاکھ آدمی کیوں؟ اس طرح کی نابرابری رہتے ہوئے یو. این. او. دنیا کی پنچایت ہونے کا دعویٰ نہیں کرسکتی. ہم یو. این. او. پر یہ الزام نہ لگاتے اگر وہ نری پنچایت بنی رہتی. پر اب تو اُس نے اپنی فوج بنالی ہے. اس لئے اب ہم اُس سے اس طرح کی مانگ کرسکتے ہیں.

آج جو کچھ کوریا میں ہو رہا ہے اس کو یونائٹڈ نیشنس

के पुलिस ऐक्शन के नाम से पुकारा जाता है. पुलिस ऐक्शन कितनी भयानक चीज़ है इसको हमसे ज़्यादा पंडित जवाहरलाल और सरदार पटेल जानते हैं क्योंकि वह हाल ही में हैदराबाद के ख़िलाफ़ पुलिस कारवाई कर चुके हैं, और दूसरे मुल्कों के वज़ीर भी पुलिस कारवाई की भयानकता से अजानकार नहीं हैं. तब फिर क्यों नहीं इस एगरेशन से भी ख़राब चीज़ को रोका नहीं जा रहा है. पुलिस को लूटमार की बहुत कम आदत होती है और फ़ौजों को तो लूटमार की तालीम दी जाती है. पर जब फ़ौज पुलिस का काम ले बैठे तब जो नतीजे होंगे उसका अन्दाज़ा हमारा क़लम नहीं कर सकता. उत्तर कोरिया के लोग भागे जा रहे हैं. यह हम नहीं कहते, जनरल मेकआर्थर का कहना है. उत्तर कोरिया की राजधानी में यूनाइटेड नेशन्स की छतरी फ़ौज आसानी से उतर गई. किसी ने मुक़ाबला नहीं किया. उत्तर कोरिया वाले राजधानी छोड़ कर भाग गए. फिर यह उनको क्यों खदेड़ा जा रहा है. सब मुल्क चुप हैं और यह ज़ुल्म देख रहे हैं. और अब यह कनाडा से कोरिया किस लिये फ़ौजें जा रही हैं और दूसरे मुल्क क्यों उन भागते हुओं को पीछा करने के लिये बहादुरी दिखाने जा रहे हैं. कोरिया में अब सारे मुल्कों की फ़ौज इकट्ठा करने का क्या मतलब है? क्या रूस को नीचा दिखाना और उसे ज़बरदस्ती लड़ाई के मैदान में लाना? अमरीका ने नीचा देखा—अपनी ग़लती से. रूस ने नीचा दिखाने की कोशिश कभी नहीं की. हाँ, रूस ने कुछ दिनों में ही कोरिया में रह कर कोरिया वालों को कोरिया का सच्चा मालिक बना दिया. और तभी तो वह जान पर खेलकर अपने मुल्क को आज़ाद करने

کے پولیس ایکشن کے نام سے پکارا جاتا ہے . پولیس ایکشن کتنی بھیانک چیز ہے اس کو ہم سے زیادہ پنڈت جواہر لال اور سردار پٹیل جانتے ہیں کیونکہ وہ حال ہی میں حیدرآباد کے خلاف پولیس کاروائی کر چکے ہیں ' اور دوسرے ملکوں کے وزیر بھی پولیس کاروائی کی بھیانکتا سے اجانکار نہیں ہیں . تب پھر کیوں نہیں اس اگریشن سے بھی خراب چیز کو روکا نہیں جارہا ہے . پولیس کو لوٹ مار کی بہت کم عادت ہوتی ہے اور فوجوں کو تو لوٹ مار کی تعلیم دی جاتی ہے . پر جب فوج پولیس کا کام لے بیٹھے تب جو نتیجے ہونگے اُس کا اندازہ ہمارا قلم نہیں کرسکتا . اُتر کوریا کے لوگ بھاگے جا رہے ہیں . یہ ہم نہیں کہتے ' جنرل میک آرتھر کا کہنا ہے . اُتر کوریا کی راجدھانی میں یونائٹڈنیشنس کی چھتری فوج آسانی سے اُتر گئی . کسی نے مقابلہ نہیں کیا . اُتر کوریا والے راجدھانی چھوڑ کر بھاگ گئے . پھر یہ اُن کو کیوں کھدیڑا جا رہا ہے . سب ملک چپ ہیں اور یہ ظلم دیکھ رہے ہیں . اور اب یہ کناڈا سے کوریا کس لئے فوجیں جا رہی ہیں اور دوسرے ملک کیوں اُن بھاگتے ہوؤں کو پیچھا کرنے کے لئے بہادری دکھانے جا رہے ہیں . کوریا میں اب سارے ملکوں کی فوج اکٹھا کرنے کا کیا مطلب ہے ؟ کیا روس کو نیچا دکھانا اور اُسے زبردستی لڑائی کے میدان میں لانا ؟ امریکہ نے نیچا دیکھا—اپنی غلطی سے . روس نے نیچا دکھانے کی کوشش کبھی نہیں کی . ہاں ' روس نے کچھ دنوں میں ہی کوریا میں رہ کر کوریا والوں کو کوریا کا سچا مالک بنا دیا . اور تبھی تو وہ جان پر کھیل کر اپنے ملک کو آزاد کرنے

के लिये अमरीकी फ़ौजों से भिड़ पड़े और उन्हें ख़ूब छकाया. क्या अमरीका अपनी खीज मिटाने के लिये दुनिया भर की फ़ौजों के बल पर बेतहाशा आगे बढ़ता चला जा रहा है. यह समझना उसकी भूल है कि दुनिया में अब अमरीका से बड़ा कोई नहीं है. ऐसा समझना न दिखाई देने वाली और रौबी ताक़त से इनकार करना है.

उत्तरी कोरिया वाले हार जाने पर भी हमारी नज़रों में ऊँचे रहेंगे क्योंकि उन्होंने किसी मुल्क पर चढ़ाई नहीं की थी. अमरीका वाले और वह मुल्क जो आज कोरिया पर अपनी फ़ौजें भेज रहे हैं वह हमारी नज़रों में वही जगह पा सकते हैं जो उस आदमी को मिलती जो ककड़ी के चोर को कटार से मारने की सज़ा देता है, या उन कौरवों की तरफ़ से लड़ने वाले महारथियों को मिली हुई है जिन्होंने सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यू को मारा. कोरिया वाले आज़ादी के लिये लड़ रहे थे. अमरीका और अमरीका के साथी कोरिया की बरबादी के लिये बढ़ रहे हैं. कोरिया का एक भी आदमी मरता है या एक भी मकान टूटता है, फिर चाहे वह दक्खिनी कोरिया का हो या उत्तरी कोरिया का, कोरिया का ही नुक़सान होता है. अब कोरिया आज़ाद किया जा रहा है या बरबाद किया जा रहा है.

३८ पड़ी रेखा पर पहुँचते ही यूनाइटेड नेशन्स को लड़ाई बन्द कर देना चाहिये थी और फिर यह देखना चाहिये था कि उत्तरी कोरिया वाले क्या करते हैं. जनरल मेकआर्थर की यह धमकी हमें न्याय से भरी हुई नहीं मालूम होती कि उत्तरी कोरिया वाले अपने घर में रह कर भी हथियार डाल दें और यूनाइटेड नेशन्स यानी

کے لئے امریکی فوجوں سے بھڑ پڑے اور انھیں خوب چھکایا. کیا امریکہ اپنی کھیج مٹانے کے لئے دنیا بھر کی فوجوں کے بل پر بے تحاشا آگے بڑھتا چلا جا رہا ہے. یہ سمجھنا اُسکی بھول ہے کہ دنیا میں اب امریکہ سے بڑا کوئی نہیں ہے. ایسا سمجھنا نہ دکھائی دینے والی اور غیبی طاقت سے انکار کرنا ہے.

اُتری کوریا والے ہار جانے پر بھی ہماری نظروں میں اونچے رہینگے کیونکہ انہوں نے کسی ملک پر چڑھائی نہیں کی تھی. امریکہ والے اور وہ ملک جو آج کوریا پر اپنی فوجیں بھیج رہے ہیں وہ ہماری نظروں میں وہی جگہ پاسکتے ہیں جو اُس آدمی کو ملتی جو ککڑی کے چور کو کٹار سے مارنے کی سزا دیتا ہے، یا اُن کوروں کی طرف سے لڑنے والے مہارتھیوں کو ملی ہوئی ہے جنھوں نے سبھدرا کے پتر ابھیمنیو کو مارا. کوریا والے آزادی کے لئے لڑ رہے تھے. امریکہ اور امریکہ کے ساتھی کوریا کی بربادی کے لئے بڑھ رہے ہیں. کوریا کا ایک بھی آدمی مرتا ہے یا ایک بھی مکان ٹوٹتا ہے، پھر چاہے وہ دکھنی کوریا کا ہو یا اُتری کوریا کا، کوریا کا ہی نقصان ہوتا ہے. اب کوریا آزاد کیا جا رہا ہے یا برباد کیا جا رہا ہے.

۳۸ پڑی ریکھا پر پہونچتے ہی یونائٹڈ نیشنس کو لڑائی بند کر دینا چاہئے تھی اور پھر یہ دیکھنا چاہئے تھا کہ اُتری کوریا والے کیا کرتے ہیں. جنرل میک آرتھر کی یہ دھمکی ہمیں نیائے سے بھری ہوئی نہیں معلوم ہوتی کہ اُتری کوریا والے اپنے گھر میں رہ کر بھی ہتھیار ڈال دیں اور یونائٹڈ نیشنس یعنی

जनरल मैकआर्थर की शरन में आ जायं. यह काम हमला करने वाले मुल्कों को तो शोभा देता है पर सारी दुनिया की कहलाने वाली पंचायत को शोभा नहीं देता.

अमरीका की जो किरकिरी होनी थी वह हो चुकी और सब मुल्कों ने अमरीका को खूब अच्छी तरह पहचान लिया. अब अमरीका रूस को नीचा दिखाकर अपनी किरकिरी को मिटाना चाहता है. इसमें कोई शक नहीं कि रूस का इस वक़्त चुप बैठना भले ही बुद्धिमानी और दूरंदेशी हो पर लोग इस बुद्धिमानी और दूरंदेशी को यही समझेंगे यह जरा मुश्किल है. एक हिस्सा है जो रूस की इस खामोशी की वजह से अपनी नजरों में उसे वह जगह नहीं देता जो अब तक देता रहा है. उनका यह जगह देना ग़लत हो या सही इससे हमें कोई सरोकार नहीं. अगर आज रूस की थोड़ी सी भी किरकिरी हुई है तो वह उसका हक़दार था. यह सज़ा उसे उस विश्वासघात की मिल रही है जो उसने पिछली लड़ाई में जापान के साथ की थी. रूस तो जापान का दोस्त था पर अमरीका के एटम बम के डर से उसे ज़बरदस्ती जापान के खिलाफ़ तलवार उठानी पड़ी. और इस विश्वासघात की सज़ा तो उसको मिलना ही चाहिये थी.

अमरीका और दूसरे मुल्क कम्यूनिज़्म से ऐसे ही बिदकते हैं जैसे सांड लाल कम्बल से. कम्यूनिज़्म एक तरह की हकूमत है. यह ठीक है कि वह तलवार के जोर से क़ायम की जाती है पर तलवार के जोर से तो सभी तरह की हकूमत क़ायम होती हैं. अमरीकी सरकार बरतानियां से लोहा लेकर ही रिपब्लिक बनी थी. यही हाल

جنرل میک آرتھر کی شرن میں آجائیں. یہ کام حملہ کرنے والے ملکوں کو تو شوبھا دیتا ہے پر ساری دنیا کی کہلانے والی پنچائت کو شوبھا نہیں دیتا.

امریکہ کی جو کرکری ہونی تھی وہ ہو چکی اور سب ملکوں نے امریکہ کو خوب اچھی طرح پہچان لیا. اب امریکہ روس کو نیچا دکھا کر اپنی کرکری کو مٹانا چاہتا ہے. اِسمیں کوئی شک نہیں کہ روس کا اسوقت چپ بیٹھنا بھلے ہی بدھیمانی اور دور اندیشی ہو پر لوگ اس بدھیمانی اور دوراندیشی کو یہی سمجھینگے یہ ذرا مشکل ہے. ایک حصہ ہے جو روس کی اس خاموشی کی وجہ سے اپنی نظروں میں اُسے وہ جگہ نہیں دیتا جو ابتک دیتا رہا ہے. اُنکا یہ جگہ دینا غلط ہو یا صحیح اس سے ہمیں کوئی سروکار نہیں. اگر آج روس کی تھوڑی سی بھی کرکری ہوئی ہے تو وہ اُسکا حقدار تھا. یہ سزا اُسے اُس وشواس گھات کی مل رہی ہے جو اُس نے پچھلی لڑائی میں جاپان کے ساتھ کی تھی. روس تو جاپان کا دوست تھا پر امریکہ کے ایٹم بم کے ڈر سے اُسے زبردستی جاپان کے خلاف تلوار اُٹھانی پڑی. اور اس وشواس گھات کی سزا تو اُس کو ملنا ہی چاہئے تھی.

امریکہ اور دوسرے ملک کمیونزم سے ایسے ہی بدکتے ہیں جیسے سانڈ لال کمبل سے. کمیونزم ایک طرح کی حکومت ہے. یہ ٹھیک ہے کہ وہ تلوار کے زور سے قائم کی جاتی ہے. پر تلوار کے زور سے تو سبھی طرح کی حکومت قایم ہوتی ہے. امریکی سرکار برطانیہ سے لوہا لیکر ہی ریپبلک بنی تھی. یہی حال

फ़रांसीसी और और सरकारों का है. न जाने क्यों अमरीका घबरा उठता है जब किसी मुल्क में रूसी क़िस्म की सरकार क़ायम होती है. हमें मालूम होता है अमरीका को कोई बीमारी हो गई है. रूस को यह बीमारी नहीं है. रूस के पड़ोसी हिन्दुस्तान ने जब रिपब्लिक बनाई और एक तरह से अमरीकी ढंग अख़्तियार किया तो रूस को कोई भड़क नहीं हुई. उसने तो ख़ुशी से आगे बढ़ कर हिन्दुस्तानी रिपब्लिक को अपनाया और उसके साथ हर तरह का रिश्ता जोड़ा. उधर अमरीका को लीजिये. अमरीका से सात समन्दर पार चीन में रूसी ढंग की सरकार क़ायम होती है और अमरीका के कान खड़े हो जाते हैं, रोंगटे खड़े हो जाते हैं—मानो डर ने आ घेरा हो. और वह डर आज तक अमरीका पर छाया हुआ है. उस चीन को यूनाइटेड नेशन्स का मेम्बर नहीं होने देता. अपने हाथ के चीनी खिलौने को वह चीन का सब कुछ माने हुए है. हिन्द चीन आज़ाद होना चाहता है और अपने यहाँ रूसी ढंग की सरकार बनाना चाहता है तो अमरीका को ऐसा मालूम होता है मानो किसी ने अमरीका पर हमला बोल दिया हो. यह सब क्यों और किस लिये. भारत ने बड़ी कोशिश की कि अमरीका यह समझ ले कि कम्यूनिज़्म ऐसे ही एक तरह की हुकूमत है जैसे रिपब्लिक या और दूसरी तरह की हुकूमतें.

भारत ने यह भी समझाने की कोशिश की कि कम्यूनिस्ट सरकारों का यह मतलब नहीं होता कि वह रूस के मातहत हैं या रूस के असर में हैं. पर अमरीकी न समझे, न समझे. वह उलटे भारत और भारत वासियों और हिन्दुस्तानियों पर ही फ़िक़रे कसने लगे. कहने लगे कि यह कैसे हिन्दुस्तानी

فرانسیسی اور اور سرکاروں کا ہے. نہ جانے کیوں امریکہ گھبرا اُٹھتا ہے جب کسی ملک میں روسی قسم کی سرکار قایم ہوتی ہے. ہمیں معلوم ہوتا ہے امریکہ کو کوئی بیماری ہو گئی ہے. روس کو یہ بیماری نہیں ہے. روس کے پڑوسی ہندستان نے جب ری پبلک بنائی اور ایک طرح سے امریکی ڈھنگ اختیار کیا تو روس کو کوئی بھڑک نہیں ہوئی. اُس نے تو خوشی سے آگے بڑھ کر ہندستانی ری پبلک کو اپنایا اور اُسکے ساتھ ہر طرح کا رشتہ جوڑا. اُدھر امریکہ کو لیجئے. امریکہ سے سات سمندر پار چین میں روسی ڈھنگ کی سرکار قائم ہوتی ہے اور امریکہ کے کان کھڑے ہو جاتے ہیں، رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں—مانو ڈر نے آ گھیرا ہو. اور وہ ڈر آجتک امریکہ پر چھایا ہوا ہے. اُس چین کو یونائٹڈ نیشنس کا ممبر نہیں ہونے دیتا. اپنے ہاتھ کے چینی کھلونےکو وہ چین کا سب کچھ مانے ہوئے ہے. ہند چین آزاد ہونا چاہتا ہے اور اپنے یہاں روسی ڈھنگ کی سرکار بنانا چاہتا ہے تو امریکہ کو ایسا معلوم ہوتا ہے مانو کسی نے امریکہ پر حملہ بول دیا ہو. یہ سب کیوں اور کس لئے. بھارت نے بڑی کوشش کی کہ امریکہ یہ سمجھ لے کہ کمیونزم ایسے ہی ایک طرح کی حکومت ہے جیسے ری پبلک یا اور دوسری طرح کی حکومتیں.

بھارت نے یہ بھی سمجھانے کی کوشش کی کہ کمیونسٹ سرکاروں کا یہ مطلب نہیں ہوتا کہ وہ روس کے ماتحت ہیں یا روس کے اثر میں ہیں. پر امریکی نہ سمجھے نہ سمجھے. وہ اُلٹے بھارت اور بھارت واسیوں پر ہی فقرے کسنے لگے. کہنے لگے کہ یہ کیسے ہندستانی

हैं कि रूस चीन के रास्ते हिन्दुस्तान पर चढ़ा चला आता है और यह बेफ़िक्र बैठे हैं. अमरीकियों की यह समझ में ही नहीं आता कि चीन की हकूमत एक आज़ाद हकूमत है. यह ठीक है कि रूस से उसकी दोस्ती है पर उसकी दोस्ती तो भारत से भी है, बर्मा और बरतानिया से भी है. रूस के दोस्त होने से वह रूस के इशारे पर चलने वाला नहीं हो सकता. अमरीका करे तो क्या करे. वह दूसरों को वही तो समझेगा जो वह ख़ुद है. वह दक्खिनी कोरिया में था तो नाम के लिये दक्खिनी कोरिया की सरकार थी. असली मालिक अमरीका था. आज भी वह बात बात पर किसी भी मुल्क को मार्शल मदद बन्द करने की धमकी दे बैठता है. जिस तरह वह ख़ुद दूसरे मुल्कों को अपनी गुट्ट में दबा कर रखना चाहता है, वह रूस को भी अगर इस तरह समझने लगे तो इसमें उसकी समझ का ही दोश समझना चाहिये.

कम्यूनिज़्म ने जन्म लेकर दुनिया भर की हकूमतों को दो हिस्सों में बांट दिया है. एक मज़दूर सरकार और दूसरी सेठिया सरकार. बस अब दुनिया में मज़दूरी और पूँजी दो ही देवियाँ रह गई हैं. सरकारें आम तौर से पूँजी देवी की पूजा करती हैं. पर हर देश की जनता मज़दूरी देवी पर लट्टू है. यू. एन. ओ. में सरकारों के नुमाइन्दे हैं जनता के नुमाइन्दे नहीं. तभी तो अमरीका की गुट्ट में बहुत से लोग आ मिले. पूँजीवादी सरकारें दूसरे मुल्कों पर हमला करती हैं और एक दूसरे की दोस्त बनी रहती हैं.

यह सिर्फ़ इसलिये कि हमले के बाद की लूट में उन्हें भी कुछ हिस्सा मिल ही जाता है. मज़दूरी वादी सरकारें किसी मुल्क पर

ہیں کہ روس چین کے راستے ہندستان پر چڑھا چلا آتا ہے اور یہ بے فکر بیٹھے ہیں۔ امریکنوں کی یہ سمجھ میں ہی نہیں آتا کہ چین کی حکومت ایک آزاد حکومت ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ روس سے اسکی دوستی ہے پر اسکی دوستی تو بھارت سے بھی ہے، برما اور برطانیہ سے بھی ہے۔ روس کے دوست ہونے سے وہ روس کے اشارے پر چلنے والا نہیں ہو سکتا۔ امریکہ کرے تو کیا کرے۔ وہ دوسروں کو وہی تو سمجھیگا جو وہ خود ہے۔ وہ دکھنی کوریا میں تھا تو نام کے لئے دکھنی کوریا کی سرکار تھی۔ اصلی مالک امریکہ تھا۔ آج بھی وہ بات بات پر کسی بھی ملک کو مارشل مدد بند کرنے کی دھمکی دے بیٹھتا ہے۔ جسطرح وہ خود دوسرے ملکوں کو اپنی گٹ میں دباکر رکھنا چاہتا ہے، وہ روس کو بھی اگر اسطرح کا سمجھنے لگے تو اسمیں اسکی سمجھ کا ہی دوش سمجھنا چاہئے۔

کمیونزم نے جنم لے کر دنیا بھر کی حکومتوں کو دو حصوں میں بانٹ دیا ہے۔ ایک مزدور سرکار اور دوسری سیٹھیا سرکار۔ بس اب دنیا میں مزدوری اور پونجی دو ہی دیویاں رہ گئی ہیں۔ سرکاریں عام طور سے پونجی دیوی کی پوجا کرتی ہیں۔ پر ہر دیش کی جنتا مزدوری دیوی پر لٹو ہے۔ یو۔ این۔ او۔ میں سرکاروں کے نمائندے ہیں جنتا کے نمائندے نہیں۔ تبھی تو امریکہ کی گٹ میں بہت سے لوگ آ ملے۔ پونجی وادی سرکاریں دوسرے ملکوں پر حملہ کرتی ہیں اور ایک دوسرے کی دوست بنی رہتی ہیں۔

یہ صرف اس لئے کہ حملے کے بعد کی لوٹ میں انہیں بھی کچھ حصہ مل ہی جاتا ہے۔ مزدور وادی سرکاریں کسی ملک پر

हमला नहीं करती. वह तो अपने मुल्क में ही पूंजीवादी सरकार को गद्दी से हटा कर, सरकार की जगह लेती है. वह अपने मुल्क को लूटे तो कैसे लूटे और उस लूट का मतलब भी क्या होगा. उस लूट से मुल्क तो मालदार होने से रहा. यही वजह है कि वह अकेली पड़ जाती है.

उदाहरन के लिये चीन में मजदूरीवादी हकूमत बनी. इससे रूस के हाथ क्या आया—न चप्पा भर ज़मीन, न रत्ती भर सोना. बस रूस चीन का दोस्त है. उससे उसकी ऐसी दाँत काटी नहीं हो सकती जैसी अमरीका और बरतानिया की. पिछली बड़ी लड़ाई में अमरीका बहुत पीछे मैदान में आया. और उसने साथ दिया बरतानिया का. तब कितनी मौज में रहा. आज जापान में मैकआर्थर साहब की वह मौज है जो कभी लार्ड कर्ज़न को भी हिन्दुस्तान में नसीब न थी. आज अमरीका पहली बड़ी लड़ाई में शामिल होकर टोटे में नहीं है. फ़ारमूसा उसके हाथ में खेल रहा है. बरतानिया में वह हवाई जहाज़ के अड्डे बना सकता है. यू. एन. ओ. को धता बताकर अटलांटिक पैक्ट वह क़ायम कर सकता है. यू. एन. ओ. को हाथ में लेकर कोरिया पर वह छा सकता है और वह दिन दूर नहीं है कि जब वह चीन के फ़ारमूसा पर किन्हीं चार गोलियों को एग्रेशन बताकर चांग काई शेक को बग़ल में लेकर फ़ारमूसा से चीन पर ऐसे ही चढ़ाई कर सकता है जैसे आज दक्खिन कोरिया के नाम पर उत्तर कोरिया में खुल खेल रहा है. पूंजीवादी सरकार होने का यही तो बड़ा भारी नफ़ा है. तभी तो वह मजदूरीवादी सरकार को पसन्द नहीं करती और आए दिन उनके खिलाफ़ प्रचार करता रहता है.

حملہ نہیں کرتیں۔ وہ تو اپنے ملک میں ہی پونجی وادی سرکار کو گدی سے ہٹا کر سرکار کی جگہ لیتی ہیں۔ وہ اپنے ملک کو لوٹیں تو کیسے لوٹیں اور اس لوٹ کا مطلب بھی کیا ہوگا۔ اس لوٹ سے ملک تو مالدار ہونے سے رہا۔ یہی وجہ ہے کہ وہ اکیلی پڑ جاتی ہیں۔

اداہرن کے لئے چین میں مزدوری وادی حکومت بنی۔ اس سے روس کے ہاتھ کیا آیا۔۔۔نہ چپہ بھر زمین، نہ رتی بھر سونا۔ بس روس چین کا دوست ہے۔ اس سے اسکی ایسی دانت کاٹی نہیں ہوسکتی جیسی امریکہ اور برطانیہ کی۔ پچھلی بڑی لڑائی میں امریکہ بہت پیچھے میدان میں آیا۔ اور اس نے ساتھ دیا برطانیہ کا۔ تب کتنی موج میں رہا۔ آج جاپان میں میک آرتھر صاحب کی وہ موج ہے جو کبھی لارڈ کرزن کو بھی ہندستان میں نصیب نہ تھی۔ آج امریکہ پہلی بڑی لڑائی میں شامل ہوکر ٹوٹے میں نہیں ہے۔ فارموسا اس کے ہاتھ میں کھیل رہا ہے۔ برطانیہ میں وہ ہوائی جہاز کے اڈے بنا سکتا ہے۔ یو۔ این۔ او۔ کو دھتا بتا کر اٹلانٹک پیکٹ وہ قائم کرسکتا ہے۔ یو۔ این۔ او کو ہاتھ میں لے کر کوریا پر وہ چھا سکتا ہے اور وہ دن دور نہیں ہے کہ جب وہ چین کے فارموسا پر کنہیں چار گولیوں کو اگریشن بتا کر چانگ کائی شیک کو بغل میں لے کر فارموسا سے چین پر ایسے ہی چڑھائی کر سکتا ہے جیسے آج دکھن کوریا کے نام پر اتر کوریا میں کھل کھیل رہا ہے۔ پونجی وادی سرکار ہونے کا یہی تو بڑا بھاری نفع ہے۔ جبھی تو وہ مزدوری وادی سرکار کو پسند نہیں کرتی اور آئے دن اُن کے خلاف پرچار کرتی رہتی ہے۔

उत्तरी कोरिया मजदूरीवादी सरकार को अपनाए हुए था. इस लिये उत्तरी कोरिया का बच्चा बच्चा उसका साथी था. तभी तो वह इतनी जल्दी तैयारी कर सका और इतने जोश से लड़ सका. दक्खिनी कोरिया को उसने दो महीने में ही मजदूरीवादी सरकार की चाट लगा दी और हमें यह विश्वास है कि दक्खिनी कोरिया में पूँजीवादी सरकार कभी अपनी जगह न बना सकेगी. जनरल मैकआर्थर और यूनाइटेड नेशन्स की फ़ौजें कोरिया को जीत सकती हैं, कोरिया की फ़ौजों को हरा सकती हैं पर कोरिया वालों के दिलों को न जीत सकती हैं, न हरा सकती हैं. हम तो सत्याग्रह के भक्त उसी पर विश्वास करते हैं. अगर हमें उत्तर कोरिया वालों को सलाह देने का अधिकार है और उनको हमारी सलाह की जरूरत है तो हम यही सलाह देंगे कि अगर आज भी वह अपने हथियारों को तोड़ डालें और निहत्थे होकर कोरिया की राजधानी में घुस पड़ें और अपनी जानें दे दें तो अव्वल तो अमरीका या यूनाइटेड नेशन्स की फ़ौजें उनकी जान ले ही नहीं सकेंगी और अगर वह इतने पत्थर दिल हुए कि वह उनकी जानें ले ही लें तो कोरिया वाले सारी दुनिया की सहानुभूति पालेंगे और फिर यह हरगिज न हो सकेगा कि कोई बिदेसी वहाँ अपने पाँव जमा सके. सत्याग्रही की हार कभी नहीं होती. न उसे खीजना पड़ता है, और न शरमिन्दा होना पड़ता है. हाँ, बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना जरूर करना पड़ता है पर सच्चा होने के नाते लोगों की नज़रों में ऊँचा बना रहता है और उनसे सहानुभूति पाता रहता है. सत्याग्रह को अपनाकर हथियार तोड़ना हथियार डालना नहीं है. हथियार डालना दुश्मन से दब जाना है या अन्यायी

اُتری کوریا مزدوری وادی سرکار کو اپنائے ھوئے تھا . اس لئے اُتری کوریا کا بچہ بچہ اُس کا ساتھی تھا . تبھی تو وہ اتنی جلدی تیاری کر سکا اور اتنے جوش سے لڑسکا . دکھنی کوریا کو اُس نے دو مہینے میں ھی مزدوری وادی سرکار کی چاٹ لگا دی اور ھمیں یہ وشواس ھے کہ دکھنی کوریا میں پونجی وادی سرکار کبھی اپنی جگہ نہ بنا سکیگی . جنرل میک آرتھر اور یونائٹڈ نیشنس کی فوجیں کوریا کو جیت سکتی ھیں، کوریا کی فوجوں کو ھرا سکتی ھیں پر کوریا والوں کے دلوں کو نہ جیت سکتی ھیں نہ ھرا سکتی ھیں . ھم تو ستیاگرہ کے بھگت اُسی پر وشواس کرتے ھیں . اگر ھمیں اُتر کوریا والوں کو صلاح دینے کا ادھیکار ھے اور انکو ھماری صلاح کی ضرورت ھے تو ھم یہی صلاح دینگے کہ اگر آج بھی وہ اپنے ھتھیاروں کو توڑ ڈالیں اور نہتّے ھو کر کوریا کی راجدھانی میں گھس پڑیں اور اپنی جانیں دے دیں تو اول تو امریکہ یا یونائٹڈ نیشنس کی فوجیں اُنکی جان لے ھی نہیں سکینگی اور اگر وہ اتنے پتھر دل ھوئے کہ وہ اُنکی جانیں لے ھی لیں تو کوریا والے ساری دنیا کی سہانوبھوتی پالینگے اور پھر یہ ھرگز نہ ھوسکیگا کہ کوئی بدیسی وھاں اپنے پاؤں جما سکے . ستیاگرھی کی ھار کبھی نہیں ھوتی . نہ اُسے کھیجنا پڑتا ھے اور نہ شرمندہ ھونا پڑتا ھے ' ھاں بڑی بڑی مصیبتوں کا سامنا ضرور کرنا پڑتا ھے پر سچا ھونے کے ناتے لوگوں کی نظروں میں اونچا بنا رھتا ھے اور اُن سے سہانوبھوتی پاتا رھتا ھے . ستیاگرہ کو اپنا کر ھتھیار توڑنا ھتھیار ڈالنا نہیں ھے . ھتھیار ڈالنا دشمن سے دب جانا ھے یا انیائی

ने दब जाना है और हथियार तोड़ना यानी दुश्मन की बुराइयों के खिलाफ़ लड़ाई छेड़ना और उसके आगे जोरों से डट जाना. शेर को पिंजड़े में फँसा देख कर बहुत कम लोगों को दया आती है पर गाय को पिंजड़े में देख कर हर आदमी को दौड़कर बचाने की सूझती है. गाय, अपने बच्चे या ग्वाले को बचाने की खातिर जब पूँछ उठाकर और बदन फुलाकर शेर के पेट में अपने सींग भोंकती है तब भी लोगों को शेर पर दया नहीं आती. उनकी सहानुभूति गाय के साथ ही होती है क्यों कि शेर न सचाई पर होता है और न इन्साफ़ पर. उत्तरी कोरिया के रहने वालो, तुम अपनी जान और अपने मुल्क की शान बचाने के लिये लड़े. तुम्हें कोई इतिहास लिखने वाला बुरे लफ़्ज़ों में याद नहीं करेगा. अमरीका और दूसरे मुल्क अपनी शान बढ़ाने के लिये तुम भागते हुओं के पीछे दौड़े जा रहे हैं. उन्हें कोई इतिहास लिखने वाला कभी अच्छे शब्दों से याद न करेगा.

आज जो कोरिया वालों पर बीत रही है उस सब का दोशी रूस. क्योंकि यह आफ़त जो आज कोरिया पर आई हुई है रूस की उस ग़लती का नतीजा है जो उसने उत्तरी कोरिया पर पिछली बड़ी लड़ाई के बाद फ़ौजी घेरा डालने में की. यह काम उसे अपने हाथों में नहीं लेना चाहिये था. यह काम बरतानिया या चीन को देना था. यह फ़ौजी घेरे की चाल जहाँगीरी चाल है, मज़दूरी वादी सरकार को शोभा नहीं देती. ठीक ऐसी ही दूसरी ग़लती उसने जरमनी के बारे में कर रक्खी है. पूरबी जरमनी को जल्दी से जल्दी आज़ाद करने की जोखम अगर रूस उठाने को तैयार नहीं है तो इस तरह की आफ़तों का आए दिन तमाशा देखने के लिये तैयार रहे.

سے دب جانا ہے اور ہتھیار توڑنا یعنی دشمن کی برائیوں کے خلاف لڑائی چھیڑنا اور اُس کے آگے زوروں سے ڈٹ جانا۔ شیر کو پنجڑے میں پھنسا دیکھکر بہت کم لوگوں کو دیا آتی ہے پر گائے کو پنجڑے میں دیکھکر ہر آدمی کو دوڑ کر بچانے کی سوجھتی ہے۔ گائے اپنے بچے یا گوالے کو بچانے کی خاطر جب پونچھ اُٹھا کر اور بدن پھلا کر شیر کے پیٹ میں اپنے سینگ بھونکتی ہے تب بھی لوگوں کو شیر پر دیا نہیں آتی۔ اُنکی سہانبھوتی گائے کے ساتھ ہی ہوتی ہے کیونکہ شیر نہ سچائی پر ہوتا ہے اور نہ انصاف پر۔ اُتری کوریا کے رہنے والو، تم اپنی جان اور اپنے ملک کی شان بچانے کے لئے لڑے۔ تمہیں کوئی اتہاس لکھنے والا برے لفظوں میں یاد نہیں کریگا۔ امریکہ اور دوسرے ملک اپنی شان بڑھانے کے لئے تم بھاگتے ہوؤں کے پیچھے دوڑے جا رہے ہیں۔ اُنہیں کوئی اتہاس لکھنے والا کبھی اچھے شبدوں سے یاد نہ کریگا۔

آج جو کوریا والوں پر بیت رہی ہے اس سب کا دوشی روس۔ کیونکہ یہ آفت جو آج کوریا پر آئی ہوئی ہے روس کی اُس غلطی کا نتیجہ ہے جو اُس نے اُتری کوریا پر پچھلی بڑی لڑائی کے بعد فوجی گھیرا ڈالنے میں کی۔ یہ کام اُسے اپنے ہاتھوں میں نہیں لینا چاہئے تھا۔ یہ کام برطانیہ یا چین کو دینا تھا۔ یہ فوجی گھیرے کی چال جہانگیری چال ہے، مزدوری وادی سرکار کو شوبھا نہیں دیتی۔ ٹھیک ایسی ہی دوسری غلطی اُس نے جرمنی کے بارے میں کر رکھی ہے۔ پوربی جرمنی کو جلدی سے جلدی آزاد کرنے کی جوکھم اگر روس اُٹھانے کو تیار نہیں ہے تو اِسطرح کی آفتوں کا آئے دن تماشہ دیکھنے کے لئے تیار رہے۔

फ़ौजी घेरों की चाल रहते हुए दुनिया में लोकशाही जीवित नहीं रह सकती. रूस ने जैसे ही उत्तर कोरिया से अपना घेरा उठाया था वैसे ही पूरबी जरमनी से उठा लेता तो आज नक़्शा दूसरा ही होता.

बहुत से मुल्कों की फ़ौजें कोरिया जा रही हैं. इसमें बुराई तो यह है कि कोरिया बरबाद हो जायगा और बहुत दिनों तक कोरिया पर बिदेसी छाए रहेंगे और अच्छाई यह है कि बहुत से मुल्कों की फ़ौजें कोरिया में चैन से न बैठ सकेंगी. किसी न किसी बात पर झगड़ा उठे बिना न रहेगा और इस झगड़े की वजह से हो सकता है कोरिया का जल्दी छुटकारा हो जाय.

इस बीसवीं सदी में किसी भी सरकार को कठपुतली सरकार कह बैठने का बहुत रिवाज पड़ गया है. दक्खिनी कोरिया के सिंघमन री साहब जो सचमुच जरनल मैकआर्थर और यूनाइटेड नेशन्स की फ़ौजों के उठाए उठते और बिठाए बैठते हैं, उत्तरी कोरिया की सरकार को कठपुतली सरकार कह कर पुकारते हैं. इस ढीठता का कोई ठिकाना है! अमरीका और सबक़ दे ही क्या सकता है. वह भी तो आज सारे चीन की मालिक सरकार को कठपुतली सरकार और फ़ारमूसा में भाग कर जान बचाने वाली चाँग क़ाईशेक की सरकार को असली सरकार मानता है. उसको यूनाइटेड नेशन्स में भी जगह है और सुरक्षा कौंसिल में भी. पंच कुत्ते को बिल्ली कह दें तो कुत्ता बिल्ली ही है. यू. एन. ओ. की सरकारें जिस को कठपुतली कह दें वही कठपुतली है. पंडित जवाहर लाल जी बस इतना भर कह सकते हैं कि अगर अमरीका और यू. एन. ओ. में शामिल दूसरे मुल्क

فوجی گھیروں کی چال رہتے ہوئے دنیا میں لوک شاہی جیوت نہیں رہ سکتی. روس نے جیسے ہی اُتر کوریا سے اپنا گھیرا اُٹھایا تھا ویسے ہی پوربی جرمنی سے اُٹھا لیتا تو آج نقشا دوسرا ہی ہوتا.

بہت سے ملکوں کی فوجیں کوریا جا رہی ہیں. اسمیں برائی تو یہ ہے کہ کوریا برباد ہو جائیگا اور بہت دنوں تک کوریا پر بدیسی چھائے رہینگے اور اچھائی یہ ہے کہ بہت سے ملکوں کی فوجیں کوریا میں چین سے نہ بیٹھ سکینگی. کسی نہ کسی بات پر جھگڑا اُٹھے بنا نہ رہیگا اور اس جھگڑے کی وجہ سے ہو سکتا ہے کوریا کا جلدی چھٹکارا ہو جائے.

اِس بیسویں صدی میں کسی بھی سرکار کو کٹھ پتلی سرکار کہہ بیٹھنے کا بہت رواج ہو گیا ہے. دکھنی کوریا کے سنگھمن ری صاحب جو سچ مچ جنرل میک آرتھر اور یونائٹڈ نیشنس کی فوجوں کے اُٹھائے اُٹھتے اور بٹھائے بیٹھتے ہیں' اُتری کوریا کی سرکار کو کٹھ پتلی سرکار کہہ کر پکارتے ہیں. اس ڈھٹھائی کا کوئی ٹھکانہ ہے! امریکہ اور سبق دے ہی کیا سکتا ہے. وہ بھی تو آج سارے چین کی مالک سرکار کو کٹھ پتلی سرکار اور فارموسا میں بھاگ کر جان بچانے والی چانگ کائی شیک کی سرکار کو اصلی سرکار مانتا ہے. اسکو یونائٹڈ نیشنس میں بھی جگہ ہے اور سرکشا کونسل میں بھی. پانچ کتے کو بلی کہہ دیں تو کتا بلی ہی ہے. یو. این. او. کی سرکاریں جسکو کٹھ پتلی کہہ دیں وہی کٹھ پتلی ہے. پنڈت جواہر لال جی بس اتنا بھر کہہ سکتے ہیں کہ اگر امریکہ اور یو. این. او. میں شامل دوسرے ملک

सारे चीन की मालिक सरकार को सरकार नहीं मानते तो इससे सचाई में कोई फ़रक़ नहीं आ सकता. पर पंडित जी यह क्यों नहीं सोचते कि जिस संस्था की बदौलत यानी मेजारिटी इस तरह की बेतुकी बात कह डालती है और बेतुके काम कर डालती है उस संस्था की कमीयत यानी माइनारिटी में भी पड़े रहने से कौन सी शान है.

हमें तो अब इसके सिवा कुछ नहीं सूझता कि अब वह वक़्त आ गया है कि कोरिया के मामले को लेकर उन मुल्कों को यू. एन. ओ. से अलग हो जाना चाहिये, जो इस तरह के बेतुकेपन से ऊब गए हैं.

—भगवानदीन

लोग स्वभाव से उस आदमी के ग़ुलाम हैं, जो आप किसी के सामने न झुके.

× × ×

उस नसीहत करने वाले का दिल कितना कठोर है जो भूके को भूक का दुख सहने की नसीहत करे.

× × ×

अगर तुझे मेरे पागल पन के कारन मालूम होते तो तू समझदार बन जाता.

× × ×

हम चमकती ऊँचाइयों तक अंधेरी गहराइयों के रास्ते से ही पहुँच सकते हैं.

—ख़लील जिब्रान

سارے چین کی مالک سرکار کو سرکار نہیں مانتے تو اُس سے سچائی میں کوئی فرق نہیں آسکتا. پر پنڈت جی یہ کیوں نہیں سوچتے کہ جس سنستھا کی بدولت یعنی میجارٹی اس طرح کی بے تکی بات کہہ ڈالتی ہے اور بے تکے کام کر ڈالتی ہے اس سنستھا کی کمیت یعنی مائنارٹی میں بھی پڑے رہنے سے کون سی شان ہے.

ہمیں تو اب اسکے سوا کچھ نہیں سوجھتا کہ اب وہ وقت آگیا ہے کہ کوریا کے معاملے کو لیکر اُن ملکوں کو یو. این. او. سے الگ ہو جانا چاہئے، جو اس طرح کے بے تکے پن سے اُوب گئے ہیں.

—بھگوان دین

لوگ سوبھاؤ سے اُس آدمی کے غلام ہوتے ہیں، جو آپ کسی کے سامنے نہ جھکے.

× × ×

اُس نصیحت کرنے والے کا دل کتنا کٹھور ہے جو بھوکے کو بھوک کا دکھ سہنے کی نصیحت کرے.

× × ×

اگر تجھے میرے پاگل پن کے کارن معلوم ہوتے تو تو سمجھدار بن جاتا.

× × ×

ہم چمکتی اونچائیوں تک اندھیری گہرائیوں کے راستے سے ہی پہنچ سکتے ہیں.

—خلیل جبران

हज़रत ईसा की पहाड़ पर की तक़रीर

(Sermon On The Mount)

(अनुवादक—भाई हसन असीम)

[दुनिया के बड़े बड़े रिशियों, मुनियों, ज्ञानियों और महापुरुषों ने जो अमर भाषन दिये हैं उनमें हज़रत ईसा की पहाड़ी वाली तक़रीर की गिनती लाज़िमी है. इन्जील में, जो कि ईसाई भाइयों की धर्मी किताब है, सारी तक़रीर लिखी हुई है. इसके कई तरजुमे मौजूद हैं, जिन में थोड़ा बहुत फ़रक़ भी पाया जाता है.

जरमन भाषा में ऐसे एडीशन निकले हैं जिसमें इस तक़रीर का तरजुमा साइन्सी असूलों के अनुसार किया गया है. बहर हाल मुख़तलिफ़ एडीशनों, ख़ास कर जरमन एडीशन को सामने रखते हुए मैंने इस अमर तक़रीर का हिन्दुस्तानी अनुवाद किया है.

—अनुवादक]

मुबारक हैं वह जो दिल के ग़रीब हैं क्योंकि सच्ची जीत उन्हीं की है.

मुबारक हैं वह जो ग़मगीन हैं क्योंकि वह तसल्ली पायेंगे.

मुबारक हैं वह जो दयालु और सच्चे हैं क्योंकि वह सुखी होंगे.

मुबारक हैं वह जो रहम दिल हैं, पाक दिल हैं, सुलह पसन्द हैं.

حضرت عیسیٰ کی پہاڑ پر کی تقریر

(Sermon On The Mount)

(انوادک—بھائی حسن اسیم)

[دنیا کے بڑے بڑے رشیوں، منیوں، گیانیوں اور مہاپرشوں نے جو امر بھاشن دئے ہیں ان میں حضرت عیسیٰ کی پہاڑی والی تقریر کی گنتی لازمی ہے. انجیل میں، جو کہ عیسائی بھائیوں کی دھرمی کتاب ہے، ساری تقریر لکھی ہوئی ہے. اس کے کئی ترجمے موجود ہیں، جن میں تھوڑا بہت فرق بھی پایا جاتا ہے.

جرمن بھاشا میں ایسے ایڈیشن نکلے ہیں جس میں اس تقریر کا ترجمہ سائنسی اصولوں کے انوسار کیا گیا ہے. بہر حال مختلف ایڈیشنوں، خاص کر جرمن ایڈیشن کو سامنے رکھتے ہوئے میں نے اس امر تقریر کا ہندستانی انواد کیا ہے.

—انوادک]

مبارک ہیں وہ جو دل کے غریب ہیں کیونکہ سچی جیت انہیں کی ہے.

مبارک ہیں وہ جو غمگین ہیں کیوں کہ وہ تسلی پائینگے.

مبارک ہیں وہ جو دیالو اور سچے ہیں کیوں کہ وہ سکھی ہونگے.

مبارک ہیں وہ جو رحم دل ہیں، پاک دل ہیں، صلح پسند ہیں.

मुबारक हैं वह जो सच्चाई की वजह से सताये गये हैं.

तुम दुनिया के नूर हो, तुम ही से संसार में जोत है, तुम ही से आशायें बंधी हैं और तुम ही से उम्मीदें.

तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था कि—

"ख़ून न करो और जो कोई ख़ून करेगा वह अदालत की सज़ा के लायक़ होगा और जो कोई अपने भाई को पागल कहेगा वह महा अदालत के लायक़ होगा और जो उसको अहमक़ कहेगा वह नरक में जलेगा और जहन्नुम का सज़ावार होगा."

मगर मैं तुम से कहता हूँ कि तुम अगर क़ुरबानगाह (बलिवेदी) पर अपनी भेंट गुज़रानते हो और वहाँ तुम्हें याद आए कि मेरे भाई को मुझ से कुछ शिकायत है तो वहीं क़ुरबानगाह के आगे अपना बलिदान छोड़ दो और जाकर पहले अपने भाई से मिलाप करो, तब आकर अपनी भेंट चढ़ाओ.

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि—

औरत की इज़्ज़त न लो"

"लेकिन मैं तुम से कहता हूँ कि जिस किसी ने बुरी नियत से किसी औरत पर निगाह डाली वह अपने दिल में उसकी इज़्ज़त ले चुका. यह भी कहा गया था कि—

"जो कोई अपनी बीबी को छोड़ दे उसे तलाक़नामा लिख दे."

लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी बीबी को हरामकारी के सिवा किसी और वजह से छोड़ दे वह उसकी इज़्ज़त मिट्टी में मिलाता है. और जो कोई उस छोड़ी हुई से ब्याह करे वह ब्याह न करके उस की इज़्ज़त लेता है.

مبارک ہیں وہ جو سچائی کی وجہ سے ستائے گئے ہیں.

تم دنیا کے نور ہو، تم ہی سے سنسار میں جوت ہے، تم ہی سے آشائیں بندھی ہیں اور تم ہی سے امیدیں.

تم سن چکے ہو کہ اگلوں سے کہا گیا تھا کہ—

"خون نہ کرو اور جو کوئی خون کریگا وہ عدالت کی سزا کے لایق ہوگا اور جو کوئی اپنے بھائی کو پاگل کہیگا وہ مہا عدالت کے لایق ہوگا اور جو اس کو احمق کہیگا وہ نرک میں جلیگا اور جہنم کا سزاوار ہوگا."

مگر میں تم سے کہتا ہوں کہ تم اگر قربان گاہ (بلی ویدی) پر اپنی بھینٹ گذرانتے ہو اور وہاں تمہیں یاد آئے کہ میرے بھائی کو مجھ سے کچھ شکایت ہے تو وہیں قربان گاہ کے آگے اپنا بلیدان چھوڑ دو اور جاکر پہلے اپنے بھائی سے ملاپ کرو، تب آکر اپنی بھینٹ چڑھاؤ.

تم سن چکے ہو کہ کہا گیا تھا کہ—

"عورت کی عزت نہ لو."

لیکن میں تم سے کہتا ہوں کہ جس کسی نے بری نیت سے کسی عورت پر نگاہ ڈالی وہ اپنے دل میں اس کی عزت لے چکا. یہ بھی کہا گیا تھا کہ—

"جو کوئی اپنی بیوی کو چھوڑ دے اسے طلاق نامہ لکھ دے."

لیکن میں تم سے یہ کہتا ہوں کہ جو کوئی اپنی بیوی کو حرام کاری کے سوا کسی اور وجہ سے چھوڑ دے وہ اسکی عزت مٹی میں ملاتا ہے اور جو کوئی اس چھوڑی ہوئی سے بیاہ کرے وہ بیاہ نہ کر کے اسکی عزت لیتا ہے.

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि—

"आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत."

लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि शरारती का मुक़ाबला न करना बल्कि जो कोई तुम्हारे दायें गाल पर थप्पड़ मारे, दूसरा गाल भी उस की तरफ़ फेर दो और अगर कोई तुम पर नालिश करके तुम्हारी क़मीज़ लेना चाहे उसे अपना कोट भी ले लेने दो और जो कोई तुम्हें एक कोस बेगार ले जाये उसके साथ दो कोस चले जाओ. जो कोई तुम से माँगे उसे दो और जो कोई तुम से क़र्ज़ चाहे उससे मुँह न मोड़ो.

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि—

"अपने पड़ोसी से प्रेम करो और अपने दुश्मन से बैर"

लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि अपने दुश्मन से प्रेम करो और अपने सताने वालों के लिये दुआ माँगो. ख़ुदा पापियों और नेकों दोनों पर सूरज चमकाता और सच्चे लोगों और दुराचारियों दोनों पर मेंह बरसाता है. अगर तुम अपने मुहब्बत करने वालों ही से मुहब्बत करो तो तुम्हारे लिये क्या पुन्य है? क्या टैक्स लेने वाले भी ऐसा नहीं करते? और अगर तुम फ़क़त अपने भाई को सलाम करो तो क्या ज्यादा करते हो? क्या ग़ैर क़ौमों के लोग भी ऐसा नहीं करते? ख़बरदार! अपने नेक काम लोगों के दिखाने के लिये न करो. जब तुम दान करो तो अपने आगे नरसिंगा न बजाओ, जैसा कि धोकेबाज़ और दिखावेबाज़ प्रार्थना घरों और कूचों में करते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें. वह अपना पुन्य पा चुके! जब तुम दान करो तो जो तुम्हारा दाहिना हाथ करता है, उसकी ख़बर अपने बायें हाथ को न होने दो ताकि तुम्हारी ख़ैरात छिपी रहे.

تم سن چکے ہو کہ کہا گیا تھا کہ—

''آنکھ کے بدلے آنکھ اور دانت کے بدلے دانت''

لیکن میں تم سے یہ کہتا ہوں کہ شرارتی کا مقابلہ نہ کرنا بلکہ جو کوئی تمہارے دائیں گال پر تھپڑ مارے، دوسرا گال بھی اس کی طرف پھیر دو اور اگر کوئی تم پر نالش کر کے تمہاری قمیض لینا چاہے اسے اپنا کوٹ بھی لے لینے دو اور جو کوئی تمہیں ایک کوس بیگار لے جائے اس کے ساتھ دو کوس چلے جاؤ. جو کوئی تم سے مانگے اسے دو اور جو کوئی تم سے قرض چاہے اس سے منہ نہ موڑو.

تم سن چکے ہو کہ کہا گیا تھا کہ—

''اپنے پڑوسی سے پریم کرو اور اپنے دشمن سے بیر''

لیکن میں تم سے یہ کہتا ہوں کہ اپنے دشمن سے پریم کرو اور اپنے ستانے والوں کے لئے دعا مانگو. خدا پاپیوں اور نیکوں دونوں پر سورج چمکاتا ہے اور سچے لوگوں اور دراچاریوں دونوں پر مینہ برساتا ہے. اگر تم اپنے محبت کرنے والوں ہی سے محبت کرو تو تمہارے لئے کیا پنیہ ہے؟ کیا ٹیکس لینے والے بھی ایسا نہیں کرتے؟ اور اگر تم فقط اپنے بھائی کو سلام کرو تو کیا زیادہ کرتے ہو؟ کیا غیر قوموں کے لوگ بھی ایسا نہیں کرتے؟ خبردار! اپنے نیک کام لوگوں کے دکھانے کے لئے نہ کرو. جب تم دان کرو تو اپنے آگے نرسنگا نہ بجاؤ، جیسا کہ دھوکے باز اور دکھاوے باز پرارتھنا گھروں اور کوچوں میں کرتے ہیں تاکہ لوگ ان کی بڑائی کریں. وہ اپنا پنیہ پا چکے! جب تم دان کرو تو جو تمہارا داہنا ہاتھ کرتا ہے، اسکی خبر اپنے بائیں ہاتھ کو نہ ہونے دو تاکہ تمہاری خیرات چھپی رہے.

जब दुआ माँगो तो धोके बाज़ों और दिखावे बाज़ों की तरह न हो क्योंकि वह प्रार्थना घरों में और बाज़ारों के मोड़ों पर खड़े हुए दुआएँ माँगते हैं ताकि लोग उन्हें देखें. मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वह अपना पुन्य पा चुके! इसलिये जब तुम दुआ माँगना चाहो तो अपनी कोठरी में जाओ, दरवाज़ा बन्द करो और अकेले में दुआ माँगो. प्रार्थना के वक़्त ग़ैरों की तरह ज़्यादा न बोलो. वह समझते हैं कि उनके ज़्यादा बोलने की वजह से उनकी दुआएँ सुनी जायेंगी.

जब तुम व्रत रखो तो धोके बाज़ों और दिखावे बाज़ों की तरह अपनी सूरत उदास न बनाओ. वह अपना मुँह बिगाड़ते हैं ताकि लोग उन्हें रोज़ादार जानें. मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वह अपना पुन्य पा चुके! इसलिये जब तुम व्रत रखो तो अपने सर में तेल डालो और मुँह धोओ ताकि आदमी नहीं बल्कि तुम्हारी अन्तर-आत्मा तुमको रोज़ादार जाने.

अपने वास्ते ज़मीन पर माल जमा न करो, जहाँ माल को कीड़ा और ज़ंग ख़राब करता है और चोर नक़ब लगाते और चुराते हैं. बल्कि अपने लिये आसमान पर माल जमा करो, जिसे न कीड़ा ख़राब करता है न ज़ंग और न वहाँ चोर नक़ब लगाते और चुराते हैं. जहाँ तुम्हारा माल है वहीं तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा.

बदन का चिराग़ आँख है. अगर तुम्हारी आँख दुरुस्त हो तो तुम्हारा सारा बदन रौशन होगा; अगर तुम्हारी आँख ख़राब हो तो तुम्हारा सारा बदन अँधेरे में होगा.

कोई आदमी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता, तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते. इसलिये मैं तुमसे कहता

جب دعا مانگو تو دھوکے بازوں اور دکھاوے بازوں کی طرح نہ ہو کیونکہ وہ پرارتھنا گھروں میں اور بازاروں کے موڑوں پر کھڑے ہوئے دعائیں مانگتے ہیں تاکہ لوگ انہیں دیکھیں۔ میں تم سے سچ کہتا ہوں کہ وہ اپنا پنیہ پاچکے! اسلئے جب تم دعا مانگنا چاہو تو اپنی کوٹھری میں جاؤ، دروازہ بند کرو اور اکیلے میں دعا مانگو۔ پرارتھنا کے وقت غیروں کی طرح زیادہ نہ بولو۔ وہ سمجھتے ہیں کہ ان کے زیادہ بولنے کی وجہ سے اُن کی دعائیں سنی جائینگی۔

جب تم برت رکھو تو دھوکے بازوں اور دکھاوے بازوں کی طرح اپنی صورت اداس نہ بناؤ۔ وہ اپنا منہ بگاڑتے ہیں تاکہ لوگ انہیں روزہ دار جانیں۔ میں تم سے سچ کہتا ہوں کہ وہ اپنا پنیہ پاچکے! اسلئے جب تم برت رکھو تو اپنے سر میں تیل ڈالو اور منہ دھوو تاکہ آدمی نہیں بلکہ تمہاری انتر آتما تم کو روزہ دار جانے۔

اپنے واسطے زمین پر مال جمع نہ کرو، جہاں مال کو کیڑا اور زنگ خراب کرتا ہے اور چور نقب لگاتے اور چراتے ہیں۔ بلکہ اپنے لئے آسمان پر مال جمع کرو، جسے نہ کیڑا خراب کرتا ہے نہ زنگ اور نہ وہاں چور نقب لگاتے اور چراتے ہیں۔ جہاں تمہارا مال ہے وہیں تمہارا دل بھی لگا رہیگا۔

بدن کا چراغ آنکھ ہے۔ اگر تمہاری آنکھ درست ہو تو تمہارا سارا بدن روشن ہوگا؛ اگر تمہاری آنکھ خراب ہو تو تمہارا سارا بدن اندھیرے میں ہوگا۔

کوئی آدمی دو مالکوں کی سیوا نہیں کر سکتا، تم ایشور اور دھن دونوں کی سیوا نہیں کر سکتے۔ اس لئے میں تم سے کہتا

हैं अपनी जान और तन की फिकर न करो, कि तुम क्या खाओगे या क्या पियोगे ? और क्या पहनोगे ? क्या जान गिज़ा से और बदन पहनावे से बढ़ कर नहीं है ? हवा के परिन्दों को देखो कि न बोते हैं, न काटते हैं, न कोठयों में जमा करते हैं ! फिर भी परमात्मा इनको पालता और खिलाता है ! क्या तुम्हारी क़दर उनसे ज्यादा नहीं ? तुममें ऐसा कौन है जो फिकर करके अपनी उमर में एक घड़ी बढ़ा सके ? फिर तुम खाने पीने और कपड़े के लिये क्यों फिकर करते हो ? जंगली सोसन के दरख्तों को ग़ौर से देखो कि वह किस तरह बढ़ते हैं ? वह न मेहनत करते, न काटते है. फिर भी सुलेमान तक अपना सारा शान शौकत रखने के बावजूद उनमें से किसी की तरह पोशाक पहने हुए न था. पस जब खुदा मैदान की घास को, जो आज है और कल तनूर में झोंकी जायगा, ऐसा पहनावा देता है तो ऐ कम विश्वासो ! तुमको ओढ़ने पहननेके लिये क्यों न देगा ? इस लिये परेशान न हो कि तुम क्या खाओगे ? कहाँ रहोगे ? क्या पियोगे ? क्या पहनोगे ? क्या ओढ़ोगे ? कल के लिये परेशान न हो, कल का दिन अपने लिये आप फिकर कर लेगा. आज के लिये आज ही का दुख काफ़ी है.

ढूंढ ढूंढ कर ऐब न निकालो ताकि दूसरे तुम्हारे ऐब न ढूंढें. जिस तरह तुम ऐब ढूंढते हो, इसी तरह तुम में भी ऐब ढूंढे जायेंगे. जिस गज से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे वास्ते नापा जायगा, जिस तराजू में तुम तौलते हो, उसी में तुम्हारे वास्ते तोला जायगा ! जिन खोटे सिक्कों से तुम चुकता करते हो, वही तुम्हारे देनदार तुम्हें देकर अपना क़र्ज़ चुकाएँगे !

ھیں اپنی جان اور تن کی فکر نہ کرو ' کہ تم کیا کھاؤگے یا کیا پیو گے ؟ اور کیا پہنوگے ؟ کیا جان غذا سے اور بدن پہناوے سے بڑھکر نہیں ہے ؟ ہوا کے پرندوں کو دیکھو نہ وہ بوتے ہیں ' نہ کاٹتے ہیں ' نہ کوٹھیوں میں جمع کرتے ہیں ! پھر بھی پرماتما ان کو پالتا اور کھلاتا ہے ! کیا تمہاری قدر ان سے زیادہ نہیں ؟ تم میں ایسا کون ہے جو فکر کر کے اپنی عمر میں ایک گھڑی بڑھا سکے ؟ پھر تم کھانے پینے اور کپڑے کے لئے کیوں فکر کرتے ہو ؟ جنگلی سوسن کے درختوں کو غور سے دیکھو کہ وہ کس طرح بڑھتے ہیں ؟ وہ نہ محنت کرتے ' نہ کاٹتے ہیں . پھر بھی سلیمان تک اپنی ساری شان شوکت رکھنے کے باوجود ان میں سے کسی کی طرح پوشاک پہنے ہوئے نہ تھا . پس جب خدا میدان کی گھاس کو ' جو آج ہے اور کل تنور میں جھونکی جائیگی ' ایسا پہناوا دیتا ہے تو اے کم وشواسو ! تم کو اوڑھنے پہننے کے لئے کیوں نہ دیگا ؟ اس لئے پریشان نہ ہو کہ تم کیا کھاؤ گے ؟ کہاں رہو گے ؟ کیا پیو گے ؟ کیا پہنو گے ؟ کیا اوڑھو گے ؟ کل کے لئے پریشان نہ ہو ' کل کا دن اپنے لئے آپ فکر کرلیگا . آج کے لئے آج ہی کا دکھ کافی ہے .

ڈھونڈھ ڈھونڈھ کر عیب نہ نکالو تاکہ دوسرے تمہارے عیب نہ ڈھونڈھیں . جس طرح تم عیب ڈھونڈھتے ہو ' اسی طرح تم میں بھی عیب ڈھونڈھے جائینگے . جس گز سے تم ناپتے ہو ' اسی سے تمہارے واسطے ناپا جائیگا ' جس ترازو میں تم تولتے ہو ' اسی میں تمہارے واسطے تولا جائیگا ! جن کھوٹے سکوں سے تم چکتا کرتے ہو ' وہی تمہارے دین دار تمہیں دے کر اپنا قرض چکائینگے !

नया हिन्द हज़रत ईसा की पहाड़ पर की तक़रीर नवम्बर सन् '५०.

'तुम क्यों दूसरों की आँख के तिनके को देखते हो और अपनी आँख के शहतीर पर ग़ौर नहीं करते ? जब तुम्हारी ही आँख में शहतीर हो तो तुम दूसरों की क्यों फ़िकर करते हो ? पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल लो ताकि अच्छी तरह देखकर दूसरों की आँख से तिनके निकाल सको.

माँगो तो तुम्हें दिया जायगा; ढूँढो तो पाओगे; दरवाज़ा खटखटाओ तो तुम्हारे वास्ते दरवाज़ा खोला जायगा; खोज करोगे तो मिलेगा. जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; जो ढूँढता है, वह पाता है; जो खटखटाता है, उसके वास्ते दरवाज़ा खोला जाता है; जो खोजता है, उसे मिलता है.

तुम में ऐसा कौन है कि अगर उसका बेटा उससे रोटी माँगे तो वह उसे पत्थर देगा ? मछली माँगे तो साँप देगा ? तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी अच्छी चीज़ें देनी जानते हो, तो भगवान उससे माँगने वालों को अच्छी चीज़ें क्यों न देगा ? इसलिये जो तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वही तुम भी उनके साथ करो.

झूटों से ख़बरदार रहो जो तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं मगर बातिन में फाड़ने वाले भेड़िये हैं. उनकी चालों से तुम उन्हें पहचान लोगे. हर अच्छा दरख़्त अच्छे फल लाता है और बुरा दरख़्त बुरे फल लाता है. जो दरख़्त अच्छा फल लाता है, उसे सींचते हैं और जो दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता वह काटा जाता और आग में झोंका जाता है. उनके फलों ही से इन दरख़्तों को पहचानोगे.

نیا ہند   حضرت عیسیٰ کی پہاڑ پر کی تقریر   نومبر سن '۵۰

تم کیوں دوسروں کی آنکھ کے تنکے کو دیکھتے ہو اور اپنی آنکھ کے شہتیر پر غور نہیں کرتے ؟ جب تمہاری ہی آنکھ میں شہتیر ہو تو تم دوسروں کی کیوں فکر کرتے ہو ؟ پہلے اپنی آنکھ کے شہتیر کو نکال لو تاکہ اچھی طرح دیکھکر دوسروں کی آنکھ سے تنکے نکال سکو .

مانگو تو تمہیں دیا جائیگا ؛ ڈھونڈھو تو پاؤگے ؛ دروازہ کھٹکھٹاؤ تو تمہارے واسطے دروازہ کھولا جائیگا ؛ کھوج کروگے تو ملیگا . جو کوئی مانگتا ہے ' اسے ملتا ہے ؛ جو ڈھونڈھتا ہے ' وہ پاتا ہے ؛ جو کھٹکھٹاتا ہے ' اس کے واسطے دروازہ کھولا جاتا ہے ؛ جو کھوجتا ہے ' اسے ملتا ہے .

تم میں ایسا کون ہے کہ اگر اس کا بیٹا اس سے روٹی مانگے تو وہ اسے پتھر دیگا ؟ مچھلی مانگے تو سانپ دیگا ؟ تم برے ہو کر اپنے بچوں کو اچھی اچھی چیزیں دینی جانتے ہو ' تو بھگوان اس سے مانگنے والوں کو اچھی چیزیں کیوں نہ دیگا ؟ اس لئے جو تم چاہتے ہو کہ لوگ تمہارے ساتھ کریں وہی تم بھی ان کے ساتھ کرو .

جھوٹوں سے خبردار رہو جو تمہارے پاس بھیڑوں کے بھیس میں آتے ہیں مگر باطن میں پھاڑنے والے بھیڑئے ہیں . ان کی چالوں سے تم انہیں پہچان لوگے . ہر اچھا درخت اچھے پھل لاتا ہے اور برا درخت برے پھل لاتا ہے . جو درخت اچھا پھل لاتا ہے ' اسے سینچتے ہیں اور جو درخت اچھا پھل نہیں لاتا وہ کاٹا جاتا اور آگ میں جھونکا جاتا ہے . ان کے پھلوں ہی سے تم درختوں

जो मेरी बातें सुनता और उन पर अमल करता है, वह उस समझदार आदमी की तरह है जिसने चट्टान पर अपना घर बनाया. मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आँधियाँ आईं, उसके घर पर टक्करें लगीं लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी; जो मेरी बातें सुनता मगर उन पर अमल नहीं करता, उस आदमी की तरह है जिसने अपना घर रेत पर बनाया. मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आँधियाँ आईं और उसके घर को सदमा पहुंचा. वह गिर गया और बिलकुल बरबाद हो गया!

मुबारक हैं वह जो दिल के दुखी हैं, क्योंकि वह दयालु होते हैं, दूसरों के दुख दर्द को कम करते और सब ही पर कृपा करते हैं. मुबारक हैं वह जो ग़मों में डूबे हुए हैं, विपताओं और आफ़तों में फंसे हैं, फिर भी सच्चे हैं; क्योंकि उनकी भलमनसाहत से इंसानियत का बोल बाला होगा. मुबारक हैं वह जो सच्चाई और भलमनसाहत की वजह से सताये गये हैं और अपनी सच्चाई की वजह से दुनिया के दुख सहते, ताने सुनते और हिक़ारतें झेलते हैं, क्योंकि उन्हीं की आट में शराफ़त और सच्चाई का दिया टिमटिमाता है और बुझने नहीं पाता! मुबारक हैं वह जो दूसरों की ख़ातिर भुगत रहे हैं और जो ज़माने के हाथों परेशान हैं, फिर भी वह अपने सताने वालों के लिये नेकी और भलाई चाहते हैं. मुबारक हैं वह जो बदन की तकलीफ़ों के साथ ज़ेहनी (मानसिक) और रुहानी (आध्यात्मिक) तकलीफ़ें सह रहे हैं और अपने सताने वालों के लिये भी दुआ कर रहे हैं; यही दुनिया का नूर हैं. इन ही से संसार में सत्य धर्म की जोत है. ऐसी ही पाक हस्तियाँ इंसानियत का सच्चा नमूना हैं और सिर्फ़ यही लोग ऊंचे ख़ानदान वाले हैं.

جو میری باتیں سنتا اور ان پر عمل کرتا ہے، وہ اس سمجھ دار آدمی کی طرح ہے جس نے چٹان پر اپنا گھر بنایا۔ مینہ برسا اور پانی چڑھا اور آندھیاں آئیں، اس کے گھر پر ٹکریں لگیں لیکن وہ نہ گرا، کیونکہ اس کی نیو چٹان پر ڈالی گئی تھی؛ جو میری باتیں سنتا مگر ان پر عمل نہیں کرتا، اس آدمی کی طرح ہے جس نے اپنا گھر ریت پر بنایا۔ مینہ برسا اور پانی چڑھا اور آندھیاں آئیں اور اس کے گھر کو صدمہ پہنچا۔ وہ گر گیا اور بالکل برباد ہوگیا!

مبارک ہیں وہ جو دل کے دکھی ہیں، کیونکہ وہ دیالو ہوتے ہیں، دوسروں کے دکھ درد کو کم کرتے اور سب ہی پر کرپا کرتے ہیں۔ مبارک ہیں وہ جو غموں میں ڈوبے ہوئے ہیں، بپتاؤں اور آفتوں میں پھنسے ہیں، پھر بھی سچے ہیں؛ کیوں کہ ان کی بھلمنساہت سے انسانیت کا بول بالا ہوگا۔ مبارک ہیں وہ جو سچائی اور بھلمنساہت کی وجہ سے ستائے گئے ہیں اور اپنی سچائی کی وجہ سے دنیا کے دکھ سہتے، طعنے سنتے اور حقارتیں جھیلتے ہیں، کیوں کہ انہیں کی اوٹ میں شرافت اور سچائی کا دیا ٹمٹماتا ہے اور بجھنے نہیں پاتا! مبارک ہیں وہ جو دوسروں کی خاطر بھگت رہے ہیں اور جو زمانے کے ہاتھوں پریشان ہیں، پھر بھی وہ اپنے ستانے والوں کے لئے نیکی اور بھلائی چاہتے ہیں۔ مبارک ہیں وہ جو بدن کی تکلیفوں کے ساتھ ذہنی (مان سک) اور روحانی (آدھیاتمک) تکلیفیں سہ رہے ہیں اور اپنے ستانے والوں کے لئے بھی دعا کر رہے ہیں؛ یہی دنیا کا نور ہیں۔ ان ہی سے سنسار میں ستیہ دھرم کی جوت ہے۔ ایسی ہی پاک ہستیاں انسانیت کا سچا نمونہ ہیں اور صرف یہی لوگ اونچے خاندان والے ہیں۔

कौटिल्य का अर्थ शास्त्र

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

अगस्त के 'नया हिन्द' के अपने मजमून में मैंने यह साफ कर दिया था कि कौटिल्य अर्थ शास्त्र के नाम से उसमें दी हुई बातों के बारे में किसी को धोका नहीं खाना चाहिये. अर्थ शास्त्र सुर्खी के नीचे उसमें विष रक्षा के उपाय, शृंगार के नियम, मनोरंजन के नियम भी आसानी से बतला दिये गये हैं. तब हमें इस किताब में किसी एक विषय की तलाश में न पड़कर जो कुछ भी लिखा गया है उसी की अहमियत, फ़ायदे, साइन्सियत वगैरा पर विचार करना चाहिये. सबसे पहिले मैं स्त्रियों को लूँगा.

अर्थ शास्त्र और औरतें

मर्दों औरतों के आपसी झगड़े का प्रसंग गौर तलब है. लिखा है— "जो औरत पति से द्वेष रखती हुई सात मासिक धर्म तक दूसरे पुरुष की कामना करती रही हो, वह अपने गहने पति को लौटा दे और उसको दूसरी स्त्री के साथ सोने की आज्ञा दे दे. इसी तरह जो पुरुष अपनी स्त्री को न चाहता हो वह उसको वैरागिन के, सम्बन्धी के, रिश्तेदार के या परिवार के लोगों के पास रहने से न रोके. ... अगर पति न चाहे तो स्त्री नाराज होते हुए भी उसको छोड़ नहीं सकती. इसी तरह पति स्त्री को नहीं छोड़ सकता. यह छोड़ना भी मुमकिन है जब कि दोनों ही एक दूसरे के साथ द्वेष रखते हों और जुदा

کوتلیہ کا ارتھ شاستر

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

اگست کے 'نیا ہند' کے اپنے مضمون میں میں نے یہ صاف کر دیا تھا کہ کوتلیہ ارتھ شاستر کے نام سے اس میں دی ہوئی باتوں کے بارے میں کسی کو دھوکا نہیں کھانا چاہئے. ارتھ شاستر سرخی کے نیچے اس میں وش رکشا کے اپائے' شرنگار کے نیم' منورنجن کے نیم بھی آسانی سے بتلا دئیے گئے ہیں. تب ہمیں اس کتاب میں کسی ایک وشے کی تلاش میں نہ پڑ کر جو کچھ بھی لکھا گیا ہے اسی کی اہمیت' فائدے' سائنسیت وغیرہ پر وچار کرنا چاہئے. سب سے پہلے میں استریوں کو لونگا.

ارتھ شاستر اور عورتیں

مردوں عورتوں کے آپسی جھگڑے کا پرسنگ غور طلب ہے. لکھا ہے—"جو عورت پتی سے دویش رکھتی ہوئی سات ماسک دھرم تک دوسرے پرش کی کامنا کرتی رہی ہو' وہ اپنے گہنے پتی کو لوٹا دے اور اسکو دوسری استری کے ساتھ سونے کی آگیا دے دے. اسی طرح جو پرش اپنی استری کو نہ چاہتا ہو وہ اسکو ویراگن کے' سمبندھی کے' رشتہ دار کے یا پریوار کے لوگوں کے پاس رہنے سے نہ روکے... اگر پتی نہ چاہے تو استری ناراض ہوتے ہوئے بھی اسکو چھوڑ نہیں سکتی. اسی طرح پتی استری کو نہیں چھوڑ سکتا. یہ چھوڑنا بھی ممکن ہے جب کہ دونوں ہی ایک دوسرے کے ساتھ دویش رکھتے ہوں اور جدا

होना चाहते हों. स्त्री से तंग आकर अगर पुरुष उससे छुटकारा पाना चाहे तो जो धन स्त्री की तरफ़ से उसको मिला है वह उसको लौटा देना चाहिये. लेकिन अगर स्त्री पति से तंग आकर छुटकारा पाना चाहे तो उसको उसका धन न लौटाया जाय.''

इन बातों से तलाक़ की प्रथा का साफ़ समर्थन होता है. मगर यह भी कह दिया गया है कि यह ऊँचे दरजे के विवाहों का, जिन्हें धर्म विवाह माना जाता था, नियम नहीं है ऊँचे दरजे के विवाह वेदों के अनुकूल माने गये हैं और उन पर ब्रह्मनी सभ्यता का पूरा रंग है, जिसके अन्तर्गत औरतें अपना हक़ और आज़ादी खो चुकी हैं. महज़ दूसरे दरजे के विवाह से बंधे हुए स्त्री पुरुष के जोड़े किसी क़दर बराबर हक़ के साथ एक दूसरे से मन मिलने पर साथ और न मिलने पर अलग हो सकते हैं फिर भी पुरुष से तंग आकर अलग होने वाली स्त्री को धन पाने का कोई हक़ नहीं माना गया है. यह बातें दो असलियतों को आइने की तरह साफ़ कर देती हैं. एक तो यह कि दुनिया के दूसरे मुल्कों की तरह ही हिन्द में भी जबसे पुराने साम्यवाद का, जिसे 'सत्युग' कहा जा सकता है, ख़ात्मा होता है, यानी जब से निजी सम्पत्ति का जन्म होता है, तब से औरतों का मर्दों की बराबरी का दरजा नामंजूर होने लगता है. दूसरी बात यह कि एक ज़माने तक हिन्द में भी औरतों को बराबरी का हक़ हासिल था. और इस मानी में कौटल्य अर्थ शास्त्र जो रोशनी डालता है, मौजूदा लेखक को वहीं दूसरी जगह देखने को नहीं मिली. मैंने अपने एक लेख—'हिन्द में एक कल्चर की आवाज़' – में महाभारत, मनु स्मृति और रामायन का उदाहरन देते हुए यह दिखलाया था कि

ہونا چاہتے ہوں. استری سے تنگ آکر اگر پرش اس سے چھٹکارا پانا چاہے تو جو دھن استری کی طرف سے اس کو ملا ہے وہ اسکو لوٹا دینا چاہئے. لیکن اگر استری پتی سے تنگ آکر چھٹکارا پانا چاہے تو اسکو اسکا دھن نہ لوٹایا جائے.''

ان باتوں سے طلاق کی پرتھا کا صاف سمرتھن ہوتا ہے. مگر یہ بھی کہہ دیا گیا ہے کہ یہ اونچے درجے کے وواہوں کا' جنھیں دھرم وواہ مانا جاتا تھا' نیم نہیں ہے. اونچے درجے کے وواہ ویدوں کے انوکول مانے گئے ہیں اور ان پر براہمنی سبھیتا کا پورا رنگ ہے' جسکے انترگت عورتیں اپنا حق اور آزادی کھو چکی ہیں. محض دوسرے درجے کے وواہ سے بندھے ہوئے استری پرش کے جوڑے کسی قدر برابر حق کے ساتھ ایک دوسرے سے من ملنے پر ساتھ اور نہ ملنے پر الگ ہو سکتے ہیں. پھر بھی پرش سے تنگ آکر الگ ہونے والی استری کو دھن پانے کا کوئی حق نہیں مانا گیا ہے. یہ باتیں دو اصلیتوں کو آئنے کی طرح صاف کر دیتی ہیں. ایک تو یہ کہ دنیا کے دوسرے ملکوں کی طرح ہی ہند میں بھی جب سے پرانے سامیہواد کا' جسے 'ست یگ' کہا جا سکتا ہے' خاتمہ ہوتا ہے' یعنی جب سے نجی سمپتی کا جنم ہوتا ہے تب سے عورتوں مردوں کی برابری کا درجہ نامنظور ہونے لگتا ہے. دوسری بات یہ ہے کہ ایک زمانے تک ہند میں بھی عورتوں کو برابری کا حق حاصل تھا. اور اس معنی میں کوٹلیہ ارتھ شاستر جو روشنی ڈالتا ہے' موجودہ لیکھک کو کہیں دوسری جگہ دیکھنے کو نہیں ملی. میں نے اپنے ایک لیکھ—'ہند میں ایک کلچر کی آواز'—میں مہابھارت' منو سمرتی اور رامائن کا اداہرن دیتے ہوئے یہ دکھلایا تھا کہ

किस तरह इन में स्त्रियों की पूरी गुलामी स्थापित हो चुकी है. कौटिल्य इस से अलग सूचना देता है.

जनपद

अब जनपदों को लीजिये. जैसे महाभारत में जनपदों का स्थान एक राजा लेता हुआ भी उनके साथ मेल जोल पैदा करने के लिये मजबूर होता दिखाई देता है, वैसे ही कौटिल्य अर्थ शास्त्र में भी टूटते हुए जनपदों को क़ायम रखने और उनको एक राजा के मातहत करने का इशारा मिलता है. इतना ही नहीं, अर्थ शास्त्र महाभारत से पुरानी किताब होने के कारन जनपदों की बुनियादी शक्ल पर ज्यादा सही रोशनी डालता है. ऐसा कहा जा सकता है. डर महज़ इस बात का है कि कौटल्य स्कीमें बनाने में इतना माहिर था कि उसके बयान में अतिशयोक्ति (मुबालग़ा) की संभावना कम नहीं है.

जो हो, आइये अर्थशास्त्र के जनपदों पर एक निगाह डालें. लिखा है — "परदेस या देस के निवासियों के खाली किए हुए स्थानों में नये जनपद बसाये जायँ. हर एक गांव सौ परिवार से पांच सौ परिवार तक का हो. उसमें शूद्र खेतिहरों की गिनती अधिक हो और उनकी सीमा एक कोस से दो कोस तक फैली हो..........अध्यक्ष, मर्दुमशुमारी करने वालों, ग्वालों, इलाज करने वालों वग़ैरा राज-सेवकों को जमीन दी जाय, पर उन्हें बेचने का हक़ न हो.......जो खेती न करें उन से खेत छीन कर दूसरों के सुपुर्द किये जायें."

इससे पहली बात जो ज़ाहिर होती है वह यह कि कौटल्य मुल्क की आबादी बढ़ाने और उनको जहाँ तक मुमकिन हो, जनपदों की शक्ल में बसाने के लिये चिन्तित था. लड़ाइयों में काम आने के

کس طرح ان میں استریوں کی پوری غلامی استھاپت ہو چکی ہے . کوٹلیہ اس سے الگ سوچنا دیتا ہے .

جن پد

اب جن پدوں کو لیجئے . جیسے مہا بھارت میں جن پدوں کا استھان ایک راجہ لیتا ہوا بھی ان کے ساتھ میل جول پیدا کرنے کے لئے مجبور ہوتا دکھائی دیتا ہے' ویسے ہی کوٹلیہ ارتھ شاستر میں بھی ٹوٹتے ہوئے جن پدوں کو قائم رکھنے اور انکو ایک راجہ کے ماتحت کرنے کا اشارا ملتا ہے . اتنا ہی نہیں' ارتھ شاستر مہا بھارت سے پرانی کتاب ہونے کے کارن جن پدوں کی بنیادی شکل پر زیادہ صحیح روشنی ڈالتا ہے' ایسا کہا جا سکتا ہے . ڈر محض اس بات کا ہے کہ کوٹلیہ اسکیمیں بنانے میں اتنا ماہر تھا کہ اس کے بیان میں اتی شیوکتی (مبالغہ) کی سمبھاونا کم نہیں ہے .

جو ہو' آئیے ارتھ شاستر کے جن پدوں پر ایک نگاہ ڈالیں . لکھا ہے— '' پردیس یا دیس کے نواسیوں کے خالی کئے ہوئے استھانوں میں نئے جن پد بسائے جائیں . ہر ایک گاؤں سو پریوار سے پانچ سو پریوار تک کا ہو . اس میں شودر کھیتیہروں کی گنتی ادھک ہو اور ان کی سیما ایک کوس سے دو کوس تک پھیلی ہو.......... ادھیکش' مردم شماری کرنے والوں' گوالوں' علاج کرنے والوں وغیرہ راج سیوکوں کو زمین دی جائے' پر انہیں بیچنے کا حق نہ ہو........ جو کھیتی نہ کریں ان سے کھیت چھین کر دوسروں کے سپرد کئے جائیں . ''

اس سے پہلی بات جو ظاہر ہوتی ہے وہ یہ کہ کوٹلیہ ملک کی آبادی بڑھانے اور ان کو جہاں تک ممکن ہو' جن پدوں کی شکل میں بسانے کیلئے چلنت تھا . لڑائیوں میں کام آنے کے

लिये फौजी सिपाहियों की कमी न पड़े—यह तभी हो सकता था जब खाली जमीनों पर नये जनपद बसें. पर इससे भी ज्यादा कौटिल्य उत्पादन या पैदावार की अहमियत को समझता था. इसलिये खेती करने वाले और उनमें भी शूद्र (गुलाम) अधिक होने चाहिये थे. सामन्त युग की गुप्त कालीन शानशौकत अभी सदियों पीछे थी—अभी खेती के बढ़ाव के लिये सारा देश पड़ा था. वर्णाश्रम धर्म में अगर किसी सुधार की जरूरत थी, तो इसलिये नहीं कि शूद्र अपनी गुलामी की जंजीर से मुक्त हो जायँ. इसके खिलाफ ऐसे तरीक़े बराबर बरते जा रहे थे जिनसे गुलामों के दिमाग़ में गुलामी हमेशा के लिये जगह कर ले. इसलिये पुराना वर्णाश्रम धर्म, 'डिवीज़न आफ लेबर' मजहब के रंग में रंग कर ज्यादा से ज्यादा जहरीला हो रहा था. थोड़े ही दिनों बाद जब मनुस्मृति लिखी गई, तो उसमें चाणक्य से कहीं ज्यादा जहरीली भाषा में शूद्रों की पुरानी गुलामी को सामन्तवादी मजहबी गुलामी का रूप दे दिया गया—जो कुछ बाक़ी था वह गीता में पूरा कर दिया गया.

पैदावार के बढ़ाने के लिये कौटिल्य हर मानी में होशियार था. इस से भी ज्यादा वह इस बात को मानने के लिये मजबूर था कि खेतों पर असली हक़ खेतिहरों का है. इस खयाल से नहीं कि खेती की उपज के वह मालिक थे बल्कि इस खयाल से कि दूसरों से काम लेने वालों के हाथ में जमीन बनी रहने से पैदावार की बढ़ती नहीं हो सकती थी. 'सतयुग' का वह ज़माना, जिसमें पैदावार के पूरे पूरे मालिक काम करने वाले ही हों, हज़ारों बरस पहिले बीत चुका था और फिर हज़ारों बरस तक आने वाला नहीं था.

لئے فوجی سپاہیوں کی کمی نہ پڑے—یہ تبھی ہوسکتا تھا جب خالی زمینوں پر نئے جن پد بسیں. پر اس سے بھی زیادہ کوٹلیہ اُتپادن یا پیداوار کی اہمیت کو سمجھتا تھا. اسلئے کھیتی کرنے والے اور اُن میں بھی شودر (غلام) ادھک ہونے چاہئے تھے. سامنت یگ کی گپت کالین شان شوکت ابھی صدیوں پیچھے تھی—ابھی کھیتی کے بڑھاو کے لئے سارا دیش پڑا تھا. ورن آشرم دھرم میں اگر کسی سدھار کی ضرورت تھی، تو اسلئے نہیں کہ شودر اپنی غلامی کی زنجیر سے مکت ہوجائیں. اس کے خلاف ایسے طریقے برابر برتے جا رہے تھے جن سے غلاموں کے دماغ میں غلامی ہمیشہ کے لئے جگہ کرلے. اسلئے پرانا ورن آشرم دھرم 'ڈویژن آف لیبر' مذہب کے رنگ میں رنگ کر زیادہ سے زیادہ زہریلا ہو رہا تھا. تھوڑے ہی دنوں بعد جب منوسمرتی لکھی گئی تو اُس میں چانکیہ سے کہیں زیادہ زہریلی بھاشا میں شودروں کی پرانی غلامی کو سامنت وادی مذہبی غلامی کا روپ دے دیا گیا—جو کچھ باقی تھا وہ گیتا میں پورا کردیا گیا.

پیداوار کے بڑھانے کے لئے کوٹلیہ ہر معنی میں ہوشیار تھا. اس سے بھی زیادہ وہ اس بات کو ماننے کے لئے مجبور تھا کہ کھیتوں پر اصلی حق کھیتیہروں کا ہے. اس خیال سے نہیں کہ کھیتی کی اُپج کے وہ مالک تھے بلکہ اس خیال سے کہ دوسروں سے کام لینے والوں کے ہاتھ میں زمین بنی رہنے سے پیداوار کی بڑھتی نہیں ہو سکتی تھی. 'ست یگ' کا وہ زمانہ، جس میں پیداوار کے پورے پورے مالک کام کرنے والے ہی ہوں، ہزاروں برس پہلے ہی بیت چکا تھا اور پھر ہزاروں برس تک آنے والا نہیں تھا.

अब कौटिल्य का खास विषय कूटनीति (डिप्लोमेसी) लीजिये. वैसे इस लम्बे विषय पर दो चार शब्दों में क्या बतलाया जा सकता है, फिर भी कुछ बातों का जिक्र करके हम अपने पाठकों को इस नतीजे पर आसानी से पहुंचा सकते हैं कि चाणक्य की कूट नीति इतनी पुरानी हो चुकने पर भी कुछ मजेदार बातों से भरी है.

दुश्मन देश के क्रोधी, डरपोक, लोभी और मानी वर्गों को मिलाने का तरीका सुनिये :—

"क्रुद्ध, लोभी, डरपोक वगैरा दुश्मन के हिमायतियों को मिलाने के लिये यह देखना चाहिये कि यह किस जटाधारी या मुड़िया भेस बनाने वाले खुफिया का आदमी है. जो जिसका भक्त हो उसे उसी मुड़िया या जटधारी को पहिले मिलना चाहिये. और फिर वह खुफिया गुस्से में भर लोगों से यह कह कर उन्हें फोड़ ले कि देखो जैसे उन्मत्त पीलवान से चलाया गया मतवाला हाथी अपने सामने जो कुछ पाता है उसे चूर कर देता है, उसी तरह यह राजा, जिसके शास्त्र रूपी आंखें नहीं हैं, राष्ट्र और प्रजा को नष्ट करने पर तुला है. ऐसी अवस्था में इसको खतम करने के लिये इसके दुश्मनों को उभारना जरूरी है. इसलिये इसकी तरफ से तुम्हारा नाराज और गुस्सा होना जरूरी है."

दुश्मन के खिलाफ उसके मुल्क की प्रजा को भड़काना आज खास अहमियत रखता है और किसी दुश्मन देश पर सीधा हमला करके उस पर फौजी फतह हासिल करना भी आज खास अहमियत रखता है. इस तरक्की के जमाने में यह काम महज जासूसों के जरिये नहीं पूरा किया जाता, यह सही है. आज अखबार, रिसाले,

اب کوتلیہ کا خاص وشے کوٹ نیتی (ڈپلومیسی) لیجئے. ویسے اس لمبے وشے پر دو چار شبدوں میں کیا بتایا جا سکتا ہے، پھر بھی کچھ باتوں کا ذکر کرکے ہم اپنے پاٹھکوں کو اس نتیجہ پر آسانی سے پہنچا سکتے ہیں کہ چانکیہ کی کوٹ نیتی اتنی پرانی ہو چکنے پر بھی کچھ مزیدار باتوں سے بھری ہے.

دشمن دیش کے کرودھی، ڈرپوک، لوبھی اور مانی ورگوں کو ملانے کا طریقہ سنئے :—

"کردھ، لوبھی، ڈرپوک وغیرہ دشمن کے حمایتیوں کو ملانے کے لئے یہ دیکھنا چاہئے کہ یہ کس جٹادھاری یا مڑیا بھیس بنانے والے خفیہ کا آدمی ہے. جو جس کا بھگت ہو اسے اسی مڑیا یا جٹادھاری کو پہلے ملنا چاہئے. اور پھر وہ خفیہ غصہ میں بھرے لوگوں سے یہ کہکر انہیں پھوڑے کہ دیکھو جیسے انمت پہلوان سے چلایا گیا متوالا ہاتھی اپنے سامنے جو کچھ پاتا ہے اسے چور کر دیتا ہے، اسی طرح یہ راجہ، جس کے شاستر روپی آنکھیں نہیں ہیں، راشٹر اور پرجا کو نشٹ کرنے پر تلا ہے. ایسی اوستھا میں اس کو ختم کرنے کے لئے اس کے دشمنوں کو ابھارنا ضروری ہے اس لئے اس کی طرف سے تمہارا ناراض اور غصہ ہونا ضروری ہے."

دشمن کے خلاف اس کے ملک کی پرجا کو بھڑکانا آج خاص اہمیت رکھتا ہے اور کسی دشمن دیش پر سیدھا حملہ کر کے اس پر فوجی فتح حاصل کرنا بھی آج خاص اہمیت رکھتا ہے. اس ترقی کے زمانے میں یہ کام محض جاسوسوں کے ذریعے نہیں پورا کیا جاتا. یہ صحیح ہے. آج اخبار، رسالے،

किताबें, रेडियो वग़ैरा ज़रिये ईजाद हो चुके हैं जिनसे प्रचार और प्रचार के ख़िलाफ़ प्रचार करके एक दुश्मन देश की जनता को भड़काया जाता है. लेकिन उस समय केवल गुपचुप तरीक़ों से यह सब हो सकता था. इसी लिये इस नीति से कुछ प्रभावशाली लोग जरूर तोड़ लिये जा सकते होंगे, लेकिन आम जनता को तोड़ना मुश्किल था.

दूसरी मार्क करने की बात यह है कि चाणक्य ने नाराज़ लोगों को तोड़ने की बात करके बग़ावत की ख़ास नस पकड़ी है. राजा से असन्तुष्ट हुए बिना प्रजा दूसरे राजा से नहीं मिलती. तबक़ेवार समाज में, जिसमें एक तबक़ा दूसरे तबक़े को चूसता रहता है, चूसने वालों के ख़िलाफ़ चूसे जाने वालों का नाराज़ रहना क़ुदरती है. चाणक्य की कूटनीति जहाँ इस बग़ावत की भावना के इस्तेमाल करने की बात करती है, वह ऊँची बात कर जाती है. मगर कोई भी कूट नेता (डेप्लोमेट) इस हथियार को इस्तेमाल करके अपनी आख़िरी जीत न समझे, क्योंकि लूटी खसोटी जाने वाली जनता को भड़काना आसान है, लेकिन उसके तरक़्क़ी पाये हुए राज काजी ज्ञान का सामना करना, उसको भड़काने वालों के लिये भी मुश्किल है. इसीलिये चाणक्य या किसी भी कूट नेता ने आम जनता के असन्तोष की बात दर असल नहीं कही है. उसके हामी चन्द असर वाले लोग रहे हैं. इसलिये यह कूट नीति लड़ाइयों के बीज के अलावा और कुछ नहीं हो सकती है और इस लिहाज़ से चाणक्य का अर्थ शास्त्र जनता के लिये ज़हर है.

کتابیں، ریڈیو وغیرہ ذریعے ایجاد ہو چکے ہیں جن سے پرچار اور پرچار کے خلاف پرچار کر کے ایک دشمن دیش کی جنتا کو بھڑکایا جاتا ہے۔ لیکن اس سمے کیول گپ چپ طریقوں سے یہ سب ہو سکتا تھا۔ اسی لئے اس نیتی سے کچھ پربھاوشالی لوگ ضرور توڑ لئے جا سکتے ہونگے، لیکن عام جنتا کو توڑنا مشکل تھا۔

دوسری مارک کرنے کی بات یہ ہے کہ چانکیہ نے ناراض لوگوں کو توڑنے کی بات کرکے بغاوت کی خاص نس پکڑی ہے۔ راجہ سے اسنتشٹ ہوئے بنا پرجا دوسرے راجہ سے نہیں ملتی۔ طبقہ وار سماج میں، جس میں ایک طبقہ دوسرے طبقے کو چوستا رہتا ہے، چوسنے والوں کے خلاف چوسے جانے والوں کا ناراض رہنا قدرتی ہے۔ چانکیہ کی کوٹ نیتی جہاں اس بغاوت کی بھاونا کے استعمال کرنے کی بات کرتی ہے، وہ اونچی بات کر جاتی ہے۔ مگر کوئی بھی کوٹ نیتا (ڈپلومیٹ) اس ہتھیار کو استعمال کر کے اپنی آخری جیت نہ سمجھے، کیونکہ لوٹی کھسوٹی جانے والی جنتا کو بھڑکانا آسان ہے، لیکن اس کے ترقی پائے ہوئے راج کاجی گیان کا سامنا کرنا، اسکو بھڑکانے والوں کے لئے بھی مشکل ہے۔ اسی لئے چانکیہ یا کسی بھی کوٹ نیتا نے عام جنتا کے اسنتوش کی بات دراصل نہیں کہی ہے۔ اسکے حامی چند اثر والے لوگ رہے ہیں۔ اس لئے یہ کوٹ نیتی لڑائیوں کے بیج کے علاوہ اور کچھ نہیں ہو سکتی ہے اور اس لحاظ سے چانکیہ کا ارتھ شاستر جنتا کے لئے زہر ہے۔

एडीटर, प्रेम भाई

दीप माला

प्रेम के दीप जलाती आई, जगमग करती हँसती आई.
भारत वालो आई दिवाली, छन छन करती वह मतवाली.
कपड़े अच्छे अच्छे पहने, पहने अच्छे अच्छे गहने.
पूजा को थे बैठे बालक, राम नाम थे जपते बालक.
एक ने बढ़ कर दीप जलाया, दीप जलाया घर को सजाया.
सबने बढ़ कर तिलक लगाया, 'राम भजन' फिर मिल कर गाया.

बीन बजे शहनाई बाजे
तख्त पे आज थे राम बिराजे.

—बालक शायर

'बच्चों की दुनिया' के लिये अपने लेख, कहानियां, कवितायें इस पते पर भेजना चाहिये— प्रेम भाई, एडीटर 'बच्चों की दुनिया' (नया हिन्द) नम्बर १३५६ (मीना) मुग़ल पुरा, हैदराबाद दकिन.

ایڈیٹر، پریم بھائی

دیپ مالا

پریم کے دیپ جلاتی آئی، جگمگ کرتی ھنستی آئی.
بھارت والو آئی دیوالی، چھن چھن کرتی وہ متوالی.
کپڑے اچھے اچھے پہنے، پہنے اچھے اچھے گہنے.
پوجا کو تھے بیٹھے بالک، رام نام تھے جپتے بالک.
ایک نے بڑھ کر دیپ جلایا، دیپ جلایا گھر کو سجایا.
سب نے بڑھ کر تلک لگایا، رام بھجن، پھر مل کر گایا.

بین بجے شہنائی باجے
تخت پہ آج تھے رام براجے

—بالک شاعر

'بچوں کی دنیا' کے لئے اپنے لیکھ، کہانیاں، کویتائیں اس پتے پر بھیجنا چاہئے— پریم بھائی. اڈیٹر 'بچوں کی دنیا' (نیا ہند) نمبر ۱۳۵٦ (مینا) مغل پورا، حیدرآباد دکن.

नेक लड़का

(भाई प्रेम भाई)

अजीज का पल्ला शरारत में भारी था और लिखने पढ़ने के मामले में वह कोरा निखट्टू था. जब देखो मदरसे से ग़ायब और इधर उधर घूमता नज़र आता. कभी पार्क में तो कभी बाग़ों में, कभी खेतों में तो कभी गली कूचों में, कभी खंडहरों में तो कभी तालाबों की तरफ़, बस इधर उधर आवारा फिरता.

माता पिता चाहते थे कि किसी न किसी तरह उसका सुधार हो सके और अजीज जी लगा कर लिखना पढ़ना सीखे. उसे हर तरह का सुख था, केवल वह अपनी आदतों से मजबूर था. एक दिन उसके पिता ने देखा कि वह मोहल्ले की बावली में गंदे लड़कों के साथ तैर रहा है. वह लड़के किसी और को खराब खराब गालियाँ दे रहे हैं. अजीज भी दो एक गालियाँ उन्हें दे रहा है. यह हालत अजीज के पिता से देखी न गई. उन्होंने ठीक नहीं जाना कि इस समय इन गंदे बच्चों में अजीज को डराया या धमकाया जाये. वह ग़ुस्से से भरे घर पहुंचे और अजीज का इन्तज़ार करने लगे—कि वह अब आता ही होगा. पर अजीज का पता ही नहीं. दो से चार बज गये और फिर छाँव ढलने लगी. देखते देखते छै भी बज गये. फिर उसके पिता किसी काम से बाहर चल पड़े और कोई नौ बजे वह घर आए. पूछा तो मालूम हुआ कि अजीज सुबह नौ बजे का खाना खाकर जो गया है तो अभी तक उसके आने का पता नहीं. वह अपने कमरे में बैठे किताबें पढ़ने लगे.

نیک لڑکا

(بھائی پریم بھائی)

عزیز کا پلہ شرارت میں بھاری تھا اور لکھنے پڑھنے کے معاملے میں وہ کورا نکھٹو تھا ۔ جب دیکھو مدرسے سے غائب اور اِدھر اُدھر گھومتا نظر آتا ۔ کبھی پارک میں تو کبھی باغوں میں ' کبھی کھیتوں میں تو کبھی گلی کوچوں میں ' کبھی کھنڈھروں میں تو کبھی تالابوں کی طرف ' بس اِدھر اُدھر آوارہ پھرتا ۔

ماتا پتا چاہتے تھے کہ کسی نہ کسی طرح اُس کا سدھار ہوسکے اور عزیز جی لگا کر لکھنا پڑھنا سیکھے ۔ اُسے ہر طرح کا سکھ تھا ' کیول وہ اپنی عادتوں سے مجبور تھا ۔ ایکدن اُس کے پتا نے دیکھا کہ وہ محلے کی باولی میں گندے لڑکوں کے ساتھ تیر رہا ہے ۔ وہ لڑکے کسی اور کو خراب خراب گالیاں دے رہے ہیں ۔ عزیز بھی دو ایک گالیاں انہیں دے رہا ہے ۔ یہ حالت عزیز کے پتا سے دیکھی نہ گئی ۔ انہوں نے ٹھیک نہیں جانا کہ اِس سمے اِن گندے بچوں میں عزیز کو ڈرایا یا دھمکایا جائے ۔ وہ غصہ سے بھرے گھر پہنچے اور عزیز کا انتظار کرنے لگے — کہ وہ اب آتا ہی ہوگا ۔ پر عزیز کا پتہ ہی نہیں ۔ دو سے چار بج گئے اور پھر چھاؤں ڈھلنے لگی ۔ دیکھتے دیکھتے چھ بھی بج گئے ۔ پھر اُس کے پتا کسی کام سے باہر چل پڑے اور کوئی نو بجے وہ گھر آئے ۔ پوچھا تو معلوم ہوا کہ عزیز صبح نو بجے کا کھانا کھا کر جو گیا ہے تو ابھی تک اُس کے آنے کا پتہ نہیں ۔ وہ اپنے کمرے میں بیٹھے کتابیں پڑھنے لگے ۔

इतने में दरवाज़े पर आहट हुई और अज़ीज़ भीगी बिल्ली बना, धीरे धीरे क़दम रखता घर में पहुंचा और बग़ैर कुछ कहे सुने अपने कमरे की ओर चल पड़ा. पिता ने आवाज़ दी और अज़ीज़ परेशान परेशान उनके कमरे में आया. फिर पिताजी ने गरज कर मेज़ पर हाथ मारते हुए कहा—"अज़ीज़! सच सच कहो तुम सुबह से अब तक कहाँ थे?" अज़ीज़ सफ़ाई पेश करते हुए कहने लगा—"सुबह स्कूल गया था और पाँच बजे एक मित्र के पास हिन्दुस्तानी का होमवर्क लिखने गया था सो इतनी देर हो गई पिताजी..." और वह नीची नज़र किये खड़ा रहा. यह सुनते ही उसके पिता को ग़ुस्सा आया और वह कुरसी पर से उठ बैठे. अज़ीज़ की तरफ़ बढ़ आये और कहा—"झूट कहते शर्म नहीं आती तुम्हें, बारह बजे के क़रीब वह कौन था जो कुएँ के पास गाली गलौज कर रहा था." यह सुनना था कि अज़ीज़ का दिल धक धक करने लगा और उसकी आँखों से आँसू जारी हो गये.

"एक बात सुनो, अगर फिर कभी आवारा लड़कों में रहोगे तो इतना पीटूँगा कि सूरत पहचानी न जायगी." यह कह कर अज़ीज़ के पिता ने उसके दो तमाचे रसीद किये. अज़ीज़ ख़ामोश खड़ा रहा. उसकी आँखों से आँसू जारी थे. बदन थर थर कांप रहा था. उसके पिताजी बिजली की तरह गरज रहे थे. फिर अज़ीज़ आगे बढ़ा और पिताजी के चरनों में गिर गया. गिड़गिड़ा कर आइन्दा से ऐसा न करने का वादा किया और कहा—"पिताजी, मैं आज से आपको इस बात का विश्वास दिलाता हूँ कि कभी आवारा लड़कों से दोस्ती न करूँगा. और अपना काम वक़्त पर किया करूँगा. लिखूँगा, पढ़ूँगा और बड़ों की सेवा करूँगा."

اتنے میں دروازے پر آہٹ ہوئی اور عزیز بھیگی بلی بنا، دھیرے دھیرے قدم رکھتا گھر میں پہنچا اور بغیر کچھ کہے سنے اپنے کمرے کی اور چل پڑا ۔ پتا نے آواز دی اور عزیز پریشان پریشان اُن کے کمرے میں آیا ۔ پھر پتا جی نے گرج کر میز پر ہاتھ مارتے ہوئے کہا—"عزیز ! سچ سچ کہو تم صبح سے اب تک کہاں تھے ؟" عزیز صفائی پیش کرتے ہوئے کہنے لگا—"صبح اسکول گیا تھا اور پانچ بجے ایک متر کے پاس ھندستانی کا ھوم ورک لکھنے گیا تھا سو اتنی دیر ہوگئی پتاجی......" اور وہ نیچی نظر کئے کھڑا رہا ۔ یہ سنتے ہی اُس کے پتا کو غصہ آیا اور وہ کرسی پر سے اُٹھ بیٹھے ۔ عزیز کی طرف بڑھ آئے اور کہا—"جھوٹ کہتے شرم نہیں آتی تجھے، بارہ بجے کے قریب وہ کون تھا جو کنوئیں کے پاس گالی گلوچ کر رہا تھا ۔" یہ سننا تھا کہ عزیز کا دل دھک دھک کرنے لگا اور اُس کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو گئے ۔

"ایک بات سنو، اگر پھر کبھی آوارہ لڑکوں میں رہو گے تو اتنا پیٹونگا کہ صورت پہچانی نہ جائیگی ۔" یہ کہکر عزیز کے پتا نے اُس کے دو طمانچے رسید کئے ۔ عزیز خاموش کھڑا رہا ۔ اُس کی آنکھوں سے آنسو جاری تھے ۔ بدن تھر تھر کانپ رہا تھا ۔ اُس کے پتاجی بجلی کی طرح گرج رہے تھے ۔ پھر عزیز آگے بڑھا اور پتاجی کے چرنوں میں گر گیا ۔ گڑگڑا کر آئندہ سے ایسا نہ کرنے کا وعدہ کیا اور کہا—"پتاجی، میں آج سے آپ کو اِس بات کا وشواس دلاتا ہوں کہ کبھی آوارہ لڑکوں سے دوستی نہ کرونگا اور اپنا کام وقت پر کیا کروں گا ۔ لکھوں گا، پڑھوں گا اور بڑوں کی سیوا کرونگا ۔"

पिताजी ने माफ कर दिया और अजीज अपने कमरे में चला आया. वह पलंग पर लेटा सोचने लगा, अपनी गलतियों पर गौर करने लगा पिता की बातें उसे बार बार याद आ रही थीं. उसके मन ने कहा—"अजीज अपने वायदे पर डटा रह, और सच बोल, झूट न बोल, बुरों की सोहबत में न रह, फिर तू सच्चा और देश का अच्छा बालक होगा. तेरी सब इज्जत करेंगे और तेरा मान बढ़ायेंगे.... .." और अजीज अपने ख्यालों में खो गया. वह सपनों की सुन्दर दुनिया में जा चुका था. उसने देखा कि उसके मित्र खड़े बन में शिकार खेलने जाने को कह रहे हैं. अजीज रुक गया और सोचने लगा—क्या मैं इन मैले कुचैले लड़कों के साथ शिकार को जाऊँ, जो बात बात पर कुत्तों की तरह झगड़ पड़ते हैं. उसने उनकी तरफ देखते हुए कहा—"नहीं, नहीं मैं आज से कभी तुम्हारे साथ न रहूँगा और न तुम लोगों के साथ शिकार और दूसरी जगह जाऊँगा. मैंने तुम लोगों के साथ न रहने का वचन दिया है, क़सम खाई है, अपने पिताजी से, जाओ जाओ .. दूर रहो और... चले जाओ, अपने अपने कामों को, क्यों खड़े मुझे बुला रहे हो, मुझे सोने भी दोगे या यूँ ही परेशान करोगे देखो .. मैं अपने पिताजी को आवाज दूँगा, वह आएंगे तो तुम सबको दो दो तमाचे मारेंगे. ज़ोर ज़ोर से. ऐसे जैसे कि कल उन्होंने मुझे मारे थे." अजीज कहता गया और उनमें का एक लड़का आगे बढ़ आया और अजीज का गला पकड़ कर कहने लगा—"चलो चलो, हम शिकार खेलेंगे. मछलियाँ लायेंगे, और हाँ पहाड़ पर हमें सीता फल भी तो खूब मिलेंगे, चुरा कर लायेंगे, अगर कोई पूछे या रोके तो उसे खूब

پتاجی نے معاف کر دیا اور عزیز اپنے کمرے میں چلا آیا. وہ پلنگ پر لیٹا سوچنے لگا اپنی غلطیوں پر غور کرنے لگا. پتا کی باتیں اسے بار بار یاد آ رہی تھیں اس کے من نے کہا— "عزیز اپنے وعدے پر ڈٹا رہ' اور سچ بول' جھوٹ نہ بول' بروں کی صحبت میں نہ رہ' پھر تو سچا اور دیش کا اچھا بالک ہوگا. تیری سب عزت کریںگے اور تیرا مان بڑھائیں گے.......اور عزیز اپنے خیالوں میں کھو گیا. وہ سپنوں کی سندر دنیا میں جا چکا تھا. اس نے دیکھا کہ اس کے متر کھڑے بن میں شکار کھیلنے آنے کو کہہ رہے ہیں. عزیز رک گیا اور سوچنے لگا— کیا میں ان میلے کچیلے لڑکوں کے ساتھ شکار کو جاؤں' جو بات بات پر کتوں کی طرح جھگڑ پڑتے ہیں. اس نے ان کی طرف دیکھتے ہوئے کہا— "نہیں نہیں' میں آج سے کبھی تمہارے ساتھ نہ رہونگا اور نہ تم لوگوں کے ساتھ شکار اور دوسری جگہ جاؤنگا. میں نے تم لوگوں کے ساتھ نہ رہنے کا وچن دیا ہے' قسم کھائی ہے' اپنے پتاجی سے' جاؤ جاؤ......دور رہو اور........ چلے جاؤ' اپنے اپنے کاموں کو' کیوں کھڑے مجھے بلا رہے ہو' مجھے سونے بھی دو گے یا یونہی پریشان کروگے. دیکھو.........میں اپنے پتاجی کو آواز دونگا' وہ آئینگے تو سب کو تم دو دو طمانچے مارینگے. زور زور سے' ایسے جیسے کہ کل انہوں نے مجھے مارے تھے." عزیز کہتا گیا اور ان میں کا ایک لڑکا آگے بڑھ آیا اور عزیز کا گلا پکڑ کر کہنے لگا— "چلو چلو ہم شکار کھیلیں گے' مچھلیاں لائینگے اور ہاں پہاڑ پر ہمیں سیتا پھل بھی تو خوب ملیں گے' چرا کر لائینگے' اگر کوئی پوچھے یا روکے تو اسے خوب

मारेंगे." यह कह कर उसने अज़ीज़ को ज़बरदस्ती खींचना शुरू किया. अज़ीज़ कहने लगा—"नहीं नहीं..........मैं अब कभी न जाऊँगा, तुम लोग चले जाओ, पिताजी, पिताजी.........आओ, जल्दी आओ......... यह लोग ....' अज़ीज़ चीखने लगा और उसकी आँख खुल गई. आवाज़ सुनकर उसके पिताजी कमरे में आए और कहने लगे "कहो बेटा, तुमने इतनी रात को क्यों आवाज़ दी थी मुझे." अज़ीज़ ने कहा—"नहीं तो, मैंने नहीं पुकारा आपको." फिर उसके पिता यह कहते अपने कमरे को चले गये कि शायद सोते में ख्वाब देखा हो. फिर अज़ीज़ सो गया. सुबह सवेरे वह जाग पड़ा. मुँह हाथ धो नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद की ओर चल पड़ा. मोहल्ले के अच्छे बच्चों ने जब उसे बहुत दिनों बाद आज मस्जिद में देखा तो बहुत खुश हुए और सभों ने अज़ीज़ को अपना मित्र बना लिया.

अब अज़ीज़ रोज़ सवेरे उठता, नमाज़ पढ़ता, मदरसे जाता और लिखता पढ़ता, घर के कामकाज करता और माता पिता की सेवा भी करता है. वह अच्छे मित्रों में रहता है और उसने एक सभा बनाई है जिसके मेम्बर सब अच्छे बच्चे हैं. हर इतवार को पाँच बजे उसका एक जलसा होता है, उसका एक प्रधान बनता है, और सब लड़के अच्छी अच्छी कहानियां और सुन्दर सुन्दर लेख पढ़ते हैं, कोई तो भाषण भी देता है.

इस तरह अज़ीज़ जो कल तक शरारती और खराब बच्चा था आज एक नेक लड़के के नाम से मोहल्ले भर में मशहूर है.

ماریںگے." یہ کہکر اُس نے عزیز کو زبردستی کھینچنا شروع کیا. عزیز کہنے لگا—"نہیں نہیں......میں اب کبھی نہ جاؤنگا' تم لوگ چلے جاؤ' پتاجی' پتاجی...آؤ' جلدی آؤ...یہ لوگ..." عزیز چیخنے لگا اور اُس کی آنکھ کھل گئی. آواز سن کر اس کے پتاجی کمرے میں آئے اور کہنے لگے—" کہو بیٹا' تم نے اتنی رات کو کیوں آواز دی تھی مجھے." عزیز نے کہا—" نہیں تو' میں نے نہیں پکارا آپ کو." پھر اُس کے پتا یہ کہتے اپنے کمرے کو چلے گئے کہ شاید سوتے میں خواب دیکھا ہو. پھر عزیز سوگیا. صبح سویرے وہ جاگ پڑا. منہ ہاتھ دھو نماز پڑھنے کے لئے مسجد کی اور چل پڑا. محلے کے اچھے بچوں نے جب اسے بہت دنوں بعد آج مسجد میں دیکھا تو بہت خوش ہوئے اور سبھوں نے عزیز کو اپنا متر بنا لیا.

اب عزیز روز سویرے اُٹھتا' نماز پڑھتا' مدرسے جاتا اور لکھتا پڑھتا' گھر کے کام کاج کرتا ماتا اور پتا کی سیوا بھی کرتا ہے. وہ اچھے متروں میں رہتا ہے اور اُس نے ایک سبھا بنائی ہے جس کے ممبر سب اچھے بچے ہیں. ہر اتوار کو پانچ بجے اُس کا ایک جلسہ ہوتا ہے' اُس کا ایک پردھان بنتا ہے' اور سب لڑکے اچھی اچھی کہانیاں اور سندر سندر لیکھ پڑھتے ہیں' کوئی تو بھاشن بھی دیتا ہے.

اس طرح عزیز جو کل تک شرارتی اور خراب بچہ تھا آج ایک نیک لڑکے کے نام سے محلے بھر میں مشہور ہے.

आज़ादी का गीत

(भाई सुरेशचन्द्र अरोड़ा)

आज़ादी के गीत सुनाओ,
सोते दिलों को फिर से जगाओ.

सब को तुम यह सीख सुनाओ,
अहिंसा का व्रत अपनाओ.

हिन्दू मुस्लिम एक बनाओ,
बापू को इस तरह रिझाओ.

वीर जवाहर को तुम मानो,
उसकी शिक्षा को पहचानो.

देश भक्ति इसी में जानो,
भारत को न भुलाओ.

यह है प्यारा देश हमारा,
दुनिया में है सबसे न्यारा.

बापू ने भी तन मन वारा,
इस में ज्योति जलाओ.

آزادی کا گیت

(بھائی سریش چندر اروڑ)

آزادی کے گیت سناؤ،
سوتے دلوں کو پھر سے جگاؤ.

سب کو تم یہ سیکھ سناؤ،
اہنسا کا برت اپناؤ.

ہندو مسلم ایک بناؤ،
باپو کو اس طرح رجھاؤ.

ویر جواہر کو تم مانو،
اسکی شکشا کو پہچانو.

دیش بھکتی اسی میں جانو،
بھارت کو نہ بھلاؤ.

یہ ہے پیارا دیش ہمارا،
دنیا میں ہے سب سے نیارا.

باپو نے بھی تن من وارا،
اس میں جیوتی جلاؤ.

हमारी राय

ہماری رائے

श्रीयुत मंडल साहब का त्यागपत्र

हम 'नया हिन्द' में कई बार लिख चुके हैं कि हम आजाद हुए नहीं हैं, अंगरेज हमें आजाद कर गए. यह सुन कर आजादी की कोशिश में तकलीफ उठाने वाले बुरा न मानें हम खुद भी उन्हीं में से एक हैं. आजादी हमने नहीं कमाई यह हम इसलिये कह रहे हैं कि हममें आजादी कमाने वालों जैसा दिल नहीं है. अगर हमने आजादी कमाई होती तो हमारे दिल इतने छोटे न होते. और बड़े दिल के लोगों के मुल्क में अछूत कैसे पाये जा सकते हैं, परदा कैसे रह सकता है, औरतें गुलामों से भी ज्यादा दबी हुई कैसे रह सकती हैं. सौ पीछे पंचानवे आदमी बे पढ़े लिखे कैसे रह सकते हैं, गुलामी की हालत में सिर पर लदी बिदेसी भाषा से इतना प्यार कैसे हो सकता है कि दावतों के बुलावे, शादी ब्याह के बुलावे यहाँ तक कि भगवान कीर्तन के बुलावे भी उसी बिदेसी भाषा में छापे और हाथ से लिखे जायं, दोस्तों की आपसी चिट्ठी पत्री ही नहीं माँ बेटी और

شری یت منڈل صاحب کا تیاگ پتر

ہم 'نیا ہند' میں کئی بار لکھ چکے ہیں کہ ہم آزاد ہوئے نہیں ہیں' انگریز ہمیں آزاد کر گئے. یہ سن کر آزادی کی کوشش میں تکلیف اٹھانے والے برا نہ مانیں. ہم خود بھی انہیں میں سے ایک ہیں. آزادی ہم نے نہیں کمائی یہ ہم اس لئے کہہ رہے ہیں کہ ہم میں آزادی کمانے والوں جیسا دل نہیں ہے. اگر ہم نے آزادی کمائی ہوتی تو ہمارے دل اتنے چھوٹے نہ ہوتے. اور بڑے دل کے لوگوں کے ملک میں اچھوت کیسے پائے جا سکتے ہیں' پردہ کیسے رہ سکتا ہے' عورتیں غلاموں سے بھی زیادہ دبی ہوئی کیسے رہ سکتی ہیں' سو پیچھے پچانوے آدمی بے پڑھے لکھے کیسے رہ سکتے ہیں' غلامی کی حالت میں سر پر لدی بدیسی بھاشا سے اتنا پیار کیسے ہو سکتا ہے کہ دعوتوں کے بلاوے' شادی بیاہ کے بلاوے یہاں تک کہ بھگوان کیرتن کے بلاوے بھی اسی بدیسی بھاشا میں چھاپے اور ہاتھ سے لکھے جائیں' دوستوں کی آپسی چٹھی پتری ہی نہیں ماں بیٹی اور

बाप बेटे की चिट्ठी पत्रियाँ भी उसी विदेसी भाषा में चलें. अगर हम सचमुच अपनी मेहनत से आजाद हुए होते तो यह सब चीजें महीनों क्या हफ़्तों तक भी नहीं टिक सकतीं थीं. और आज आजाद हुए तीन बरस से ज्यादा हो गए हम जहाँ के तहाँ.

हमारा विदेसी मालिक अंगरेज लगभग सौ बरस हम पर सवार रहा और इस सौ बरस के अरसे में हमारी रग रग पहचान गया. वह हम में से बहुतों से कहीं ज्यादा हमारे धर्म को सीख गया, हमारे रस्म रिवाजों से जानकारी हासिल कर ली और हमारी कमज़ोरियों की तो तह तक पहुंच गया था. इसलिये उसने हिन्दुस्तान छोड़ते वक्त या आजाद करते वक्त वह चाल चली कि हम उसके जाने के बाद चैन से न बैठ सके. उसने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े ही नहीं किये पर हम सबको बहुत हद तक अपने अपने धर्म के कट्टर बना गया. अगर आज भारत में निरे हिन्दू हों और पाकिस्तान में निरे मुसलमान हों तो क्या वह चैन से रह सकते हैं ? हरगिज़ नहीं. मुसलमानों के गिरोह में शिया सुन्नी जितने दूर पड़ जाते हैं उतने हिन्दू और मुसलमान दूर नहीं होते. हिन्दू गिरोह में सनातनी और आर्या समाजी, या सनातनी और जैनी, या ब्राह्मन और अब्राह्मन, या शैव और वैश्नव जितने दूर होते हैं उतने हिन्दू और मुसलमान नहीं. यह सब कट्टरता उसी अंगरेज की पाली पोसी है. उसने अपने रहते कभी हमें हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी नहीं बनने दिया. और आज भी जब यह हिन्दुस्तान भारत और पाकिस्तान में बट गया है तब भी उसी मालिक के असर के सर पर सवार होने से हम न भारत के भारती बन पाते हैं, न पाकिस्तान के पाकिस्तानी. हिन्दुओं

باپ بیٹے کی چٹھی پتریاں بھی اسی بدیسی بھاشا میں چلیں . اگر ہم سچ مچ اپنی محنت سے آزاد ہوئے ہوتے تو یہ سب چیزیں مہینوں کیا ہفتوں تک بھی نہیں ٹک سکتی تھیں . اور آج آزاد ہوئے تین برس سے زیادہ ہو گئے ہم جہاں کے تہاں .

ہمارا بدیسی مالک انگریز لگ بھگ سو برس ہم پر سوار رہا اور اس سو برس کے عرصے میں ہماری رگ رگ پہچان گیا . وہ ہم میں سے بہتوں سے کہیں زیادہ ہمارے دھرم کو سیکھ گیا ہمارے رسم رواجوں سے جان کاری حاصل کرلی اور ہماری کمزوریوں کی تو تہہ تک پہونچ گیا تھا . اسلئے اس نے ہندستان چھوڑتے وقت یا آزاد کرتے وقت وہ چال چلی کہ ہم اسکے جانے کے بعد چین سے نہ بیٹھ سکے . اس نے ہندستان کے دو ٹکڑے ہی نہیں کئے پر ہم سب کو بہت حد تک اپنے اپنے دھرم کے کٹر بنا گیا . اگر آج بھارت میں نرے ہندو ہوں اور پاکستان میں نرے مسلمان ہوں تو کیا وہ چین سے رہ سکتے ہیں ؟ ہرگز نہیں . مسلمانوں کے گروہ میں شیعہ سنی جتنے دور ہوجاتے ہیں اتنے ہندو اور مسلمان دور نہیں ہوتے . ہندو گروہ میں سناتنی اور آریہ سماجی' یا سناتنی اور جینی' یا براہمن اور ابراہمن' یا شیو اور ویشنو جتنے دور ہوتے ہیں اتنے ہندو اور مسلمان نہیں . یہ سب کٹرتا اسی انگریز کی پالی پوسی ہے . اس نے اپنے رہتے کبھی ہمیں ہندستان کے ہندستانی نہیں بننے دیا . اور آج بھی جب یہ ہندستان بھارت اور پاکستان میں بٹ گیا ہے تب بھی اسی مالک کے اثر کے سر پر سوار ہونے سے ہم نہ بھارت کے بھارتی بن پاتے ہیں' نہ پاکستان کے پاکستانی . ہندوؤں

ने महाभारत को गढ़ा है. जो कौरवों की तरफ़ थे वह फिर चाहे पांडवों के गुरु हों, मामा चाचा ताऊ कुछ भी हों दुश्मनों में शुमार थे और इसी तरह जो पांडवों की ओर थे वह कौरवों के कितने ही प्यारे क्यों न हों कौरवों के दुश्मन थे. फिर हमारी समझ में नहीं आता कि जब देश का बटवारा हो गया और एक देश के दो देश बन गए तब फिर हर पाकिस्तानी, फिर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, हमारी जात बिरादरी का हो या रिश्तेदार, बिदेसी क्यों नहीं हो जायगा. ठीक इसी तरह से पाकिस्तानी के लिये हर भारती बिदेसी हो गया. इस तरह के दो अलग अलग देशों की भावना हम में जगह ही नहीं पाती और इसकी वजह यह है कि हम बरसों से हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी नहीं बने. फिर अब भारत के भारती और पाकिस्तान के पाकिस्तानी कैसे बनें. हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी बनने की क़ाबलियत हममें सन १८५७ तक थी. बहादुर शाह हम सब का था. सारे हिन्दुस्तान का बादशाह था. उसके झंडे के नीचे हम हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी की हैसियत से लड़े थे. यह ठीक है कि उन दिनों भी हम अपने को हिन्दुस्तानी न भी कहते रहे हों पर एक बादशाह की रय्यत तो अपने को समझते ही थे. नहीं तो इतनी बड़ी आज़ादी की लड़ाई सन ५७ में हम कैसे लड़ सकते थे. अंगरेज़ों ने सिक्ख फ़ौजों को अपनी तरफ़ मिलाने के लिये यह कह कर नहीं तोड़ा था कि उनको मुसलमानों से लड़ना होगा. क्योंकि बहादुर शाह की फ़ौज में तो हिन्दू मुसलमान सब शामिल थे और वह सब हिन्दुस्तानी थे. बल्कि यह कह कर तोड़ा था कि हिन्दुस्तानी फ़ौजें अंगरेज़ी औरतों और बच्चों पर ज़ुल्म कर रही हैं. यह बात

نے مہا بھارت کو پڑھا ہے . جو کوروؤں کی طرف تھے وہ پھر چاہے پانڈوؤں کے گرو ہوں، ماما چاچا تاؤ کچھ بھی ہوں دشمنوں میں شمار تھے اور اسی طرح جو پانڈوؤں کی اور تھے وہ کوروؤں کے کتنے ہی پیارے کیوں نہ ہوں کوروؤں کے دشمن تھے . پھر ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ جب دیش کا بٹوارا ہو گیا اور ایک دیش کے دو دیش بن گئے تب پھر ہر پاکستانی، پھر چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان، ہماری جات برادری کا ہو یا رشتہ دار، بدیسی کیوں نہیں ہو جائیگا. ٹھیک اسی طرح سے پاکستانی کے لئے ہر بھارتی بدیسی ہو گیا . اس طرح کے دو الگ الگ دیشوں کی بھاونا ہم میں جگہ ہی نہیں پاتی اور اسکی وجہ یہ ہے کہ ہم برسوں سے ہندستان کے ہندستانی نہیں بنے . پھر اب بھارت کے بھارتی اور پاکستان کے پاکستانی کیسے بنیں . ہندستان کے ہندستانی بننے کی قابلیت ہم میں سن ۱۸۵۷ تک تھی . بہادر شاہ ہم سب کا تھا . سارے ہندستان کا بادشاہ تھا . اس کے جھنڈے کے نیچے ہم ہندستان کے ہندستانی کی حیثیت سے لڑے تھے . یہ ٹھیک ہے کہ ان دنوں بھی ہم اپنے کو ہندستانی نہ بھی کہتے رہے ہوں پر ایک بادشاہ کی رعیت تو اپنے کو سمجھتے ہی تھے . نہیں تو اتنی بڑی آزادی کی لڑائی سن ۵۷ میں ہم کیسے لڑ سکتے تھے . انگریزوں نے سکھ فوجوں کو اپنی طرف ملانے کے لئے یہ کہہ کر نہیں توڑا تھا کہ ان کو مسلمانوں سے لڑنا ہوگا . کیونکہ بہادر شاہ کی فوج میں تو ہندو مسلمان سب شامل تھے اور وہ سب ہندستانی تھے . بلکہ یہ کہکر توڑا تھا کہ ہندستانی فوجیں انگریز عورتوں اور بچوں پر ظلم کر رہی ہیں . یہ بات

थी तो झूटी, पर बहादुर सिक्खों पर असर कर गई और वह इस तरह का जुल्म बरदाश्त न कर सके, और बिना पूरी जानकारी हासिल किये अंगरेज़ों के साथ मिल गये. सिक्ख अपनी समझ में ज़ालिमों के ख़िलाफ़ लड़े न कि मुसलमानों या हिन्दुस्तानियों के. सारे हिन्दुस्तान से हिन्दुस्तानी बादशाह के नाते हमारी मोहब्बत थी और उस मोहब्बत को नब्बे बरस का अंगरेज़ी राज खा गया, और उस मोहब्बत की जगह हमारे दिल में एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रत छोड़ गया. यही वह ज्वालामुखी है जो कभी कभी भड़कता रहता है. ज्वालामुखी भड़के तो भड़के पर जब हमारे देश के पढ़े लिखे उस भड़क के कारन बन जाते हैं तो हमारा दिल बड़ा दुख मानता है. इस वक़्त कुछ दिनों तक बहुत जी मार कर हमें छोटी मोटी वारदातों के तिल को पहाड़ बनाने से ही नहीं रुकना चाहिये बल्कि पहाड़ जैसी बुराइयों को भी ज़मीन में दफ़न करके भुलाने का अभ्यास करना चाहिये और सच्चे जी से हर भारती को भारत का वफ़ादार होना चाहिये और हर पाकिस्तानी को पाकिस्तान का वफ़ादार होना चाहिये. भारत का कोई हिन्दू या मुसलमान किसी हिन्दू और मुसलमान पर आई मुसीबत के लिये सत्याग्रह करने का हक़दार है, अपनी जान जोखम में डालने का अधिकारी है पर यह समझ कर कि वह एक भारती की मुसीबत दूर करने जा रहा है न कि यह समझ कर कि वह किसी हिन्दू या मुसलमान की मुसीबत दूर करने जा रहा है. ठीक इसी तरह से हर पाकिस्तानी को चाहिये फिर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान कि वह अपने किसी भाई की मुसीबत को दूर करने के लिये पाकिस्तानी सरकार से टक्कर ले फिर

تھی تو جھوٹی، پر بہادر سکھوں پر اثر کر گئی اور وہ اس طرح کا ظلم برداشت نہ کر سکے، اور بنا پوری جانکاری حاصل کئے انگریزوں کے ساتھ مل گئے۔ سکھ اپنی سمجھ میں ظالموں کے خلاف لڑے نہ کہ مسلمانوں یا ہندستانیوں کے۔ سارے ہندستان سے ہندستانی بادشاہ کے ناتے ہماری محبت تھی اور اس محبت کو نوے برس کا انگریزی راج کھا گیا، اور اس محبت کی جگہ ہمارے دل میں ایک دوسرے کے خلاف نفرت چھوڑ گیا۔ یہی وہ جوالا مکھی ہے جو کبھی کبھی بھڑکتا رہتا ہے۔ جوالا مکھی بھڑکے تو بھڑکے پر جب ہمارے دیش کے پڑھے لکھے اس بھڑک کے کارن بن جاتے ہیں تو ہمارا دل بڑا دکھ مانتا ہے۔ اسوقت کچھ دنوں تک بہت جی مار کر ہمیں چھوٹی موٹی وارداتوں کے تل کو پہاڑ بنانے سے ہی نہیں رکنا چاہئے بلکہ پہاڑ جیسی برائیوں کو بھی زمین میں دفن کر کے بھولنے کا ابھیاس کرنا چاہئے اور سچے جی سے ہر بھارتی کو بھارت کا وفادار ہونا چاہئے اور ہر پاکستانی کو پاکستان کا وفادار ہونا چاہئے۔ بھارت کا کوئی ہندو یا مسلمان کسی ہندو اور مسلمان پر آئی مصیبت کے لئے ستیاگرہ کرنے کا حق دار ہے، اپنی جان جوکھم میں ڈالنے کا ادھیکاری ہے پر یہ سمجھکر کہ وہ ایک بھارتی کی مصیبت دور کرنے جا رہا ہے نہ کہ یہ سمجھکر کہ وہ کسی ہندو یا مسلمان کی مصیبت دور کرنے جا رہا ہے۔ ٹھیک اسی طرح سے ہر پاکستانی کو چاہئے پھر چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان کہ وہ اپنے کسی بھائی کی مصیبت کو دور کرنے کے لئے پاکستان سرکار سے ٹکر لے پھر

(३५४)

चाहे मुसीवत में पड़ा आदमी हिन्दू हो या मुसलमान.

मंडल साहब बहुत समझदार आदमी हैं और एक सरकार की कैबिनेट में रहने के नाते तो वह ऊँचे दरजे के राजनेता भी होने चाहियें, उनको हम जैसे आदमी सलाह देने के हक़दार तो नहीं हैं भले ही हमने सारे हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये उनसे ज़्यादा तकलीफ़ें सही हों, आज तो आराम के साथ एक पत्र की एडीटरी में लगे हैं, पर चूँकि इस समय मंडल साहब पाकिस्तान की किसी मुसीवत को देख कर या किसी अन्याय को देख कर भड़क उठे हैं इसलिये उनको सलाह देने के हम अपने आपको हक़दार समझते हैं क्यों कि भड़क में दूरन्देशी की ऐनक धुँधली हो जाती है. अब हम उन से कहेंगे कि उनको भारत न आकर पाकिस्तान में ही अपना पूरा ज़ोर लगाना चाहिये था और अगर ज़रूरत पड़ती तो जान को भी जोखम में डाल देना चाहिये था. तो वह सचमुच पाकिस्तानी सरकार को अच्छा सबक़ दे सकते थे और विदेसियों के पैदा किये हुए ज्वालामुखी को भड़क उठने से रोक सकते थे क्या उनको यह नहीं मालूम कि भारत का बच्चा बच्चा पाकिस्तान में हुए सच्चे, झूटे या बढ़ाकर बताए हुए ज़ुल्मों की शिकायत तो करता है पर कहता यही है कि भारत को पाकिस्तान से इन ज़ुल्मों के आधार पर लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिये. अब जब लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिये तब दोस्ती क़ायम करनी ही चाहिये और दोस्ती क़ायम करने की ख़ातिर भारत और पाकिस्तान दोनों को दूसरे देस के मामलों से नज़र अलग करना ही पड़ेगी और हर तरह से ज्वालामुखी को भड़कने से रोकना ही पड़ेगा. [illegible]

(۳۵۴)

چاہے مصیبت میں پڑا آدمی هندو هو یا مسلمان .

منڈل صاحب بہت سمجھ دار آدمی هیں اور ایک سرکار کی کیبنٹ میں رہنے کے ناتے تو وہ اونچے درجے کے راج نیتا بھی هونے چاهئیں، لیکن هم جیسے آدمی صلاح دینے کے حقدار تو نہیں هیں بھلے هی هم نے سارے هندستان کی آزادی کے لئے اُن سے زیادہ تکلیفیں سہی هوں، آج تو آرام کے ساتھ ایک پتر کی ایڈیٹری میں لگے هیں، پر چونکہ اس سمے منڈل صاحب پاکستان کی کسی مصیبت کو دیکھکر یا کسی انیائے کو دیکھکر بھڑک اٹھے هیں اس لئے ان کو صلاح دینے کے هم اپنے آپ کو حقدار سمجھتے هیں کیونکہ بھڑک میں دور اندیشی کی عینک دھندلی هوجاتی هے . اب هم اُن سے کہینگے کہ اُن کو بھارت نہ آکر پاکستان میں هی اپنا پورا زور لگانا چاهئے تھا اور اگر ضرورت پڑتی تو جان کو بھی جوکھم میں ڈال دینا چاهئے تھا، تو وہ سچ مچ پاکستانی سرکار کو اچھا سبق دے سکتے تھے اور بدیسیوں کے پیدا هوئے گئے جوالامکھی کو بھڑک اُٹھنے سے روک سکتے تھے . کیا اُن کو یہ نہیں معلوم کہ بھارت کا بچہ بچہ پاکستان میں هوئے سچے، جھوٹے یا بڑھا کر بتائے هوئے ظلموں کی شکایت تو کرتا هے پر کہتا یہی هے کہ بھارت کو پاکستان سے ان ظلموں کے آدھار پر لڑائی نہیں چھیڑنی چاهئے. اب جب لڑائی نہیں چھیڑنی چاهئے تب دوستی قائم کرنی هی چاهئے اور دوستی قائم کرنے کی خاطر بھارت اور پاکستان دونوں کو دوسرے دیس کے معاملوں سے نظر الگ کرنا هی پڑیگی اور هر طرح کے جوالا مکھی کو بھڑکنے سے روکنا هی پڑیگا . [illegible]

फिर पाकिस्तान वापस चले जायं और वहाँ जाकर पाकिस्तानियों पर आए दिन आई मुसीबतों के खिलाफ जो कुछ कर सकें करना शुरू कर दें. बस पाकिस्तानियों को ध्यान में रखें. हिन्दू, मुसलमानों या अछूतों को नहीं. पाकिस्तान के हिन्दू, अछूत और मुसलमान सभी पर मुसीबतें आ रही हैं. मुसीबतों के लिहाज़ से भारत पाकिस्तान से कम नहीं है. बस भारत वालों को भारत की सोचने दें और मंडल साहब, आप पाकिस्तानी हैं, पाकिस्तान की सोचें, पाकिस्तानियों से ही हर तरह की मदद हासिल करें और पाकिस्तानी सरकार से ही भिड़ें. भारतियों और भारत सरकार से मदद लेकर दो दोस्त मुल्कों में खिचाव न पैदा करें. यह हमारी मांग नहीं समय की मांग है.

२५-१०-'५० —भगवानदीन

कांगरेस में लोकशाही फ्रन्ट—

•आचार्य कृपलानी कांगरेस के प्रेसीडेन्ट रह चुके हैं. कांगरेस के प्रेसीडेन्ट की क्या ज़िम्मेदारियां हैं और उसका आज़ाद भारत में क्या और कितना मान होना चाहिये इसको सबसे ज्यादा उन्होंने ही समझा है. भारत के आज़ाद होने के बाद वही पहले ऐसे प्रेसीडेन्ट थे जिन्हें इस बात के समझने की ज़रूरत थी. अगर वह इतना न समझते होते तो कांगरेस की उस प्रेसीडेन्टी से वक़्त से पहले कभी अलग होना पसन्द न करते जिसके लिये बड़े बड़े लोग मुंह

پھر پاکستان چلے جائیں اور وہاں جاکر پاکستانیوں پر آئے دن آئی مصیبتوں کے خلاف جو کچھ کر سکیں کرنا شروع کردیں . بس پاکستانیوں کو دھیان میں رکھیں . ہندو ، مسلمانوں یا اچھوتوں کو نہیں . پاکستان کے ہندو ، اچھوت اور مسلمان سبھی پر مصیبتیں آرہی ہیں . مصیبتوں کے لحاظ سے بھارت پاکستان سے کم نہیں ہے . بس بھارت والوں کو بھارت کی سوچنے دیں اور منڈل صاحب ، آپ پاکستانی ہیں ، پاکستان کی سوچیں ، پاکستانیوں سے ہی ہر طرح کی مدد حاصل کریں اور پاکستانی سرکار سے ہی بھڑیں . بھارتیوں اور بھارت سرکار سے مدد لے کر دو دوست ملکوں میں کھنچاؤ نہ پیدا کریں . یہ ہماری مانگ نہیں سمے کی مانگ ہے .

۲۵-۱۰-۵۰ —بھگوان دین

کانگریس میں لوک شاہی فرنٹ—

آچاریہ کرپلانی کانگریس کے پریسیڈنٹ رہ چکے ہیں . کانگریس کے پریسیڈنٹ کی کیا ذمہ داریاں ہیں اور اسکا آزاد بھارت میں کیا اور کتنا مان ہونا چاہئے اس کو سب سے زیادہ انہوں نے ہی سمجھا ہے . بھارت کے آزاد ہونے کے بعد وہی پہلے ایسے پریسیڈنٹ تھے جنہیں اس بات کے سمجھنے کی ضرورت تھی . اگر وہ اتنا نہ سمجھتے ہوتے تو کانگریس کی اس پریسیڈنٹی سے وقت سے پہلے کبھی الگ ہونا پسند نہ کرتے جس کے لئے بڑے بڑے لوگ منہ

बाए रहते हैं. अपनी प्रेसीडेन्टी में उन्होंने देख लिया कि कांगरेस में किसी वजह से वह ताक़त नहीं रह गई कि जनता में से छांटे हुए प्रेसीडेन्ट को वही मान और वही जगह दे सके जो वह उसको दे सकती है जो सरकारी बड़े ओहदे से छूट कर आता है, यानी कांगरेस और सरकार बिलकुल नहीं तो बहुत कुछ एक ही चीज़ हो गई है. इस बार भी जब वह प्रेसीडेन्टी के लिये खड़े हुए तो उन्होंने अपने ज़ाहिर पत्र में अपने खड़े होने की वजह बताते हुए यह साफ़ कह दिया था कि इस बार मुझे यह विश्वास दिलाया गया है कि सरकार मेरे साथ सहयोग करेगी, इसलिये मैं खड़ा हो रहा हूँ. और हमें उनका जितना परिचय है उस बूते पर हम यह कह सकते हैं कि अगर वह इस बार प्रेसीडेन्ट चुन लिये गए होते और अगर किसी वजह से उनको फिर भी सरकार से सहयोग न मिला होता तो वह फिर प्रेसीडेन्टी से त्यागपत्र दे देते. वह प्रेसीडेन्टी के भूके नहीं. वह हिन्दुस्तानी सरकार और हिन्दुस्तानियों के सुधार के लिये तड़प रहे हैं और वह ग़लत या सही यह भी समझते हैं कि कांगरेस के प्रेसीडेन्ट होकर सरकार के सहयोग से वह बहुत कुछ सुधार कर सकते हैं और सारे देश में वही फ़िज़ा पैदा कर सकते हैं जो कभी सन् १९२१ में थी और थोड़ी बहुत सन् १९४७ तक भी रही.

पर आज जो वह कांगरेस के अंदर एक नया लोकशाही मोरचा खोलने जा रहे हैं, उससे हम बिलकुल सहमत नहीं. एक तो न जाने क्यों हमारे दिल में यह बैठ गया है कि जो भी कोई राष्ट्रपिता गांधी की दुहाई देकर या उसके नाम से कुछ भी करना चाहता है वह कोई अच्छी बात नहीं हो सकती. क्योंकि सचाई और अच्छाई, भलाई

بائے رہتے ہیں۔ اپنی پریسیڈنٹی میں انہوں نے دیکھ لیا کہ کانگریس میں کسی وجہ سے وہ طاقت نہیں رہ گئی کہ جنتا میں سے چھانٹے ہوئے پریسیڈنٹ کو وہی مان اور وہی جگہ دے سکے جو وہ اسکو دے سکتی ہے جو سرکاری بڑے عہدے سے چھٹ کر آتا ہے، یعنی کانگریس اور سرکار بالکل نہیں تو بہت کچھ ایک ہی چیز ہو گئی ہیں۔ اس بار بھی جب وہ پریسیڈنٹی کے لئے کھڑے ہوئے تو انہوں نے اپنے ظاہر پتر میں اپنے کھڑے ہونے کی وجہ بتاتے ہوئے یہ صاف کہہ دیا تھا کہ اس بار مجھے یہ وشواس دلایا گیا ہے کہ سرکار میرے ساتھ سہیوگ کریگی، اسی لئے میں کھڑا ہو رہا ہوں۔ اور ہمیں انکا جتنا پریچے ہے اس بوتے پر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ اگر وہ اس بار پریسیڈنٹ چن لئے گئے ہوتے اور اگر کسی وجہ سے انکو پھر بھی سرکار سے سہیوگ نہ ملا ہوتا تو وہ پھر پریسیڈنٹی سے تیاگ پتر دے دیتے۔ وہ پریسیڈنٹی کے بھوکے نہیں۔ وہ ہندستانی سرکار اور ہندستانیوں کے سدھار کے لئے تڑپ رہے ہیں اور وہ غلط یا صحیح یہ بھی سمجھتے ہیں کہ کانگریس کے پریسیڈنٹ ہو کر سرکار کے سہیوگ سے وہ بہت کچھ سدھار کر سکتے ہیں اور سارے دیش میں وہی فضا پیدا کر سکتے ہیں جو کبھی سن ۱۹۲۱ میں تھی اور تھوڑی بہت سن ۱۹۴۷ تک بھی رہی۔

پر آج جو وہ کانگریس کے اندر ایک نیا لوک شاہی مورچہ کھولنے جا رہے ہیں، اس سے ہم بالکل سہمت نہیں۔ ایک تو نہ جانے کیوں ہمارے دل میں یہ بیٹھ گیا ہے کہ جو بھی کوئی راشٹر پتا گاندھی کی دہائی دے کر یا اس کے نام سے کچھ بھی کرنا چاہتا ہے وہ کوئی اچھی بات نہیں ہو سکتی۔ کیونکہ سچائی اور اچھائی، بھلائی

और सुघराई अपने आप में इतनी जोरदार और चमकदार चीजें हैं कि जनता अपने आप उनकी ओर खिंचती है. राष्ट्रपिता ने खुद भी तो इन्हीं चीजों को सामने रखकर दुनिया का दिल अपनी तरफ फेरा था. उन्होंने बात बात पर अपने से पहले देश के नामी नेताओं दादा भाई नौरोजी, गोखले और तिलक की दुहाई नहीं पीटी थी. आचार्य कृपलानी कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट रह चुके हैं और उसे त्याग कर त्याग के मैदान में भी काफी ऊंचे उठ चुके हैं फिर वह कांग्रेस में लोकशाही मोरचा न खोल कर कांग्रेस के बाहर लोक सेवा का जाल फैला दें तो वह आप ही अपनी सचाई के बल पर बड़ा जबरदस्त लोकशाही मोरचा बन जायगा. मिसेज बेसेन्ट अकसर बुद्ध वचन अपने मुँह से कहा करती थीं पर यह बहुत ही कम कहती थीं कि यह बुद्ध के वचन हैं. एक बार किसी ने सभा में उन्हें टोका भी था कि वह क्यों नहीं यह कहतीं कि यह बुद्ध के वचन हैं तब उन्होंने यह कहा था कि यह बुद्ध के वचन होंगे. बुद्ध के वचन हैं यह भी सही. पर अब तो मैंने इन्हें अपना लिया है. मैं इन पर अमल करती हूं और अब यह मेरे हैं. हम इसी बात की आशा आचार्य कृपलानी जी से करते हैं. वह जो मोरचा खोलें बाहर खोलें और अपने नाम से खोलें. कोई सचाई और अच्छाई गांधी जी की होने से हमारे किसी काम की नहीं है, हमारी होने से ही हमारे काम आयगी और उसी के मुंह से उपदेश सुन कर हम उस भलाई और अच्छाई को हमारी बना सकते हैं जो उसे अपनाए हुए है और अपनी कह कर ही हमारे सामने रखता है. हमारा तो यह भी विश्वास है कि जनता भी ऐसा ही करती है.

اور سدھرائی اپنے آپ میں اتنی زوردار اور چمکدار چیزیں ہیں کہ جنتا اپنے آپ ان کی اور کھنچتی ہے. راشٹر پتا نے خود بھی تو انہیں چیزوں کو سامنے رکھ کر دنیا کا دل اپنی طرف پھیرا تھا. انہوں نے بات بات پر اپنے سے پہلے دیش کے نامی نیتاؤں دادا بھائی نورو جی، گوکھلے اور تلک کی دہائی نہیں پیٹی تھی. آچاریہ کرپلانی کانگریس کے پریسیڈنٹ رہ چکے ہیں اور اسے تیاگ کر تیاگ کے میدان میں بھی کافی اونچے اٹھ چکے ہیں. پھر وہ کانگریس میں لوک شاہی مورچہ نہ کھول کر کانگریس کے باہر لوک سیوا کا جال پھیلا دیں تو وہ آپ ہی اپنی سچائی کے بل پر بڑا زبردست لوک شاہی مورچہ بن جائیگا. مسز بیسنٹ اکثر بدھ بچن اپنے منہ سے کہا کرتی تھیں پر یہ بہت ہی کم کہتی تھیں کہ یہ بدھ کے بچن ہیں. ایک بار کسی نے سبھا میں انہیں ٹوکا بھی تھا کہ وہ کیوں نہیں یہ کہتیں کہ یہ بدھ کے بچن ہیں. تب انہوں نے یہ کہا تھا کہ یہ بدھ کے بچن ہونگے. بدھ کے بچن ہیں یہ بھی سہی. پر اب تو میں نے انہیں اپنا لیا ہے. میں ان پر عمل کرتی ہوں اور اب یہ میرے ہیں. ہم اسی بات کی آشا آچاریہ کرپلانی جی سے کرتے ہیں. وہ جو مورچہ کھولیں باہر کھولیں اور اپنے نام سے کھولیں. کوئی سچائی اور اچھائی گاندھی جی کی ہونے سے ہمارے کسی کام کی نہیں ہے، ہماری ہونے سے ہی ہمارے کام آئیگی اور اسی کے منہ سے اپدیش سن کر ہم اس بھلائی اور اچھائی کو ہماری بنا سکتے ہیں جو اسے اپنائے ہوئے ہے اور اپنی کہہ کر ہی ہمارے سامنے رکھتا ہے. ہمارا تو یہ بھی وشواس ہے کہ جنتا بھی ایسا ہی کرتی ہے.

हमारा यह भी विश्वास है कि सचाई राजनीति से न बचने की कोशिश करती है, न उसको अपनाने के चक्कर में पड़ती है और न उससे टक्कर लेने के लिये दौड़ती है. फिर भी राजनीति पर वह असर डाले बिना नहीं रहती. धीरे धीरे राजनीति अपने आप उस सचाई के पास आती है और अपने सर पर चढ़ाती है.

लोकशाही मोरचा खुले. पर वह लोगों में खुले. सरकार के क़िले कांगरेस में खोलने से उस मोरचे के लिये इने गिने सिपाही ही तो मिल सकेंगे. लोगों में खुलने से सिपाहियों की भरती इतनी होगी कि उसकी गिनती रखना मुशकिल हो जायगा.

२६-१०-५० — भगवानदीन

इन्सानियत ?

लाहौर (पाकिस्तान) का अंगरेज़ी अख़बार 'दी लाइट' ऊपर के शीर्षक से लिखता है कि—

"जनरल मैक आर्थर ने कोरिया की सरकार को हथियार रख देने के लिए कहते हुए कोरिया वालों को विश्वास दिलाया है कि उनके साथ और उनके जंग के क़ैदियों के साथ सभ्य लोगों के विचारों और अमल के अनुसार इन्सानियत का बरताव किया जायगा. इसी जंग में अमरीकी फ़ौजों ने लड़ाई के क़ैदियों को नंगा करके उनसे खुले आम परेड कराई. इस गंदी हरकत के फ़ोटो अख़बारों में आ चुके हैं. इस तरह के कामों से वह 'इन्सानियत' या वह 'सभ्यता'

ہمارا یہ بھی وشواس ہے کہ سچائی راج نیتی سے نہ بچنے کی کوشش کرتی ہے' نہ اُس کو اپنانے کے چکر میں پڑتی ہے اور نہ اُس سے ٹکر لینے کے لئے دوڑتی ہے۔ پھر بھی راج نیتی پر وہ اثر ڈالے بنا نہیں رہتی۔ دھیرے دھیرے راج نیتی اپنے آپ اُس سچائی کے پاس آتی ہے اور اپنے سر پر چڑھاتی ہے۔

لوک شاہی مورچہ کھلے۔ پر وہ لوگوں میں کھلے۔ سرکار کے قلعہ کانگریس میں کھولنے سے اُس مورچے کے لئے اِنے گنے سپاہی ہی تو مل سکیںگے۔ لوگوں میں کھلنے سے سپاہیوں کی بھرتی اتنی ہوگی کہ اُس کی گنتی رکھنا مشکل ہوجائیگا۔

۲۶-۱۰-۵۰ —بھگوان دین

انسانیت ؟

لاہور (پاکستان) کا انگریزی اخبار 'دی لائٹ' اوپر کے شیرشک سے لکھتا ہے کہ—

''جنرل میک آرتھر نے کوریا کی سرکار کو ہتھیار رکھ دینے کے لئے کہتے ہوئے کوریا والوں کو وشواس دلایا ہے کہ اُن کے ساتھ اور اُن کے جنگ کے قیدیوں کے ساتھ سبھیہ لوگوں کے وچاروں اور عمل کے انوسار انسانیت کا برتاؤ کیا جائیگا۔ اسی جنگ میں امریکی فوجوں نے لڑائی کے قیدیوں کو ننگا کرکے اُن سے کھلے عام پریڈ کرائی۔ اِس گندی حرکت کے فوٹو اخباروں میں آچکے ہیں۔ اِس طرح کے کاموں سے وہ 'انسانیت' یا وہ 'سبھیتا'

बहुत अधिक नहीं भलकती। जिसका बहादुर सेनापति ने अपनी क़ौम के लिये दावा किया है. लेकिन इन गुनों के बारे में अमरीका वालों के अपने अलग विचार हैं. वह ढंडोरा तो यह पीटते हैं कि क़ानून की निगाह में अमरीका के सब रहने वाले बराबर हैं, लेकिन वहाँ ही का अगर कोई नीगरो गोरों की रेलगाड़ी में या उनके किसी चाय घर में घुसने का भी साहस करता है तो उसे आम सड़क के ऊपर फाँसी देकर मार डालते हैं, जंग के क़ैदियों को नंगा करना इंसानियत पर कलंक लगाना है. अमरीका को अपने लोक राज की बहुत डींग मारने की आदत है. पर सच्ची इंसानियत का सबक़ सीखने के लिये उसे अभी इस्लाम के पैग़म्बर के चरनों में बैठने की ज़रूरत है. मोहम्मद साहब ने जंग के क़ैदियों के साथ अपने कुटुम्ब वालों का सा सलूक किया था और वैसा ही उनका मान रखा था. मक्के की फ़तह के वक़्त अगर इस्लाम के पैग़म्बर की जगह जनरल मैकआर्थर विजयी सेनापति होते तो वह मक्के दुश्मनों के नेताओं को नंगा करके उन्हें गलियों में फिराते. इसके ख़िलाफ़ पैग़म्बर ने यह ऐलान कर दिया था कि—'आज के दिन आप लोगों के ख़िलाफ़ कोई ज़रा सी बुरी बात भी नहीं कह सकेगा.' इस्लाम में 'इंसानियत' के यही मानी हैं. उस अमरीकी क़िस्म की इन्सानियत से, जिसे अपने इंसान भाइयों को नंगा करने में भी बुराई दिखाई नहीं देती, यह बिलकुल एक दूसरी तरह की चीज़ है—एम. वाई. के."

लेखक ने जो जो बातें ऊपर लिखी हैं सच्ची हैं और जो राय ज़ाहिर की है उस से हम पूरी तरह सहमत हैं.

दूसरी तरफ़ अभी अक्तूबर के शुरु में चार अमरीकी फ़ौजी

بہت ادھک نہیں جھلکتی جس کا بہادر سیناپتی نے اپنی قوم کے لئے دعویٰ کیا ہے. لیکن ان گنوں کے بارے میں امریکہ والوں کے اپنے الگ وچار ہیں. وہ ڈھنڈورا تو یہ پیٹتے ہیں کہ قانون کی نگاہ میں امریکہ کے سب رہنے والے برابر ہیں لیکن وہاں ہی کا اگر کوئی نیگرو گوروں کی ریل گاڑی میں یا اُن کے کسی چائے گھر میں گھسنے کا بھی ساہس کرتا ہے تو اُسے عام سڑک کے اوپر پھانسی دے کر مار ڈالتے ہیں. جنگ کے قیدیوں کو ننگا کرنا انسانیت پر کلنک لگانا ہے. امریکہ کو اپنے لوک راج کی بہت ڈینگ مارنے کی عادت ہے. پر سچی انسانیت کا سبق سیکھنے کے لئے اُسے ابھی اسلام کے پیغمبر کے چرنوں میں بیٹھنے کی ضرورت ہے. محمد صاحب نے جنگ کے قیدیوں کے ساتھ اپنے کٹمب والوں کا سا سلوک کیا تھا اور ویسا ہی اُن کا مان رکھا تھا. مکے کی فتح کے وقت اگر اسلام کے پیغمبر کی جگہ جنرل میک آرتھر وجئی سیناپتی ہوتے تو وہ مکی دشمنوں کے نیتاؤں کو ننگا کرکے اُنہیں گلیوں میں پھراتے. اِس کے خلاف پیغمبر نے یہ اعلان کر دیا تھا کہ—'آج کے دن آپ لوگوں کے خلاف کوئی ذرا سی بری بات بھی نہیں کہہ سکے گا.' اسلام میں 'انسانیت' کے یہی معنی ہیں. اُس امریکی قسم کی انسانیت سے' جسے اپنے انسان بھائیوں کو ننگا کرنے میں بھی برائی دکھائی نہیں دیتی' یہ بالکل ایک دوسری طرح کی چیز ہے—ایم. وائی. کے.''

لیکھک نے جو جو باتیں اوپر لکھی ہیں سچی ہیں اور جو رائے ظاہر کی ہے اُس سے ہم پوری طرح سہمت ہیں.

دوسری طرف ابھی اکتوبر کے شروع میں چار امریکی فوجی

जिनमें से दो लफ़टिनेन्ट थे और दो मामूली सिपाही जिन्हें कोरिया वालों ने क़ैद कर लिया था, उत्तर कोरिया से किसी तरह भाग कर अमरीकी फ़ौज में आ मिलें. यहां आकर उन्होंने अपने साथ उत्तर कोरिया वालों के बरताव का जो हाल सुनाया वह बिलकुल दूसरी तरह का है. इन में से एक लफ़टिनेन्ट जोन्स ने कहा कि—"हम यह देख कर कि हमारे साथ कितना अच्छा बरताव किया गया हैरान रह गये. हमें ठीक वक़्त पर खाना और सिगरेट दिये जाते थे. हमारे ऊपर जो दो पहरेदार थे वह रास्ते में अपनी जेब से पैसे ख़रच करके हमें सेब ख़रीद कर लाकर देते थे. हमें केवल यह शिकायत थी कि कोरिया के कुछ सिपाहियों ने हम से हमारे बूट ले लिये और उनकी जगह अपने रबड़ के जूते हमें दे दिये. एक सिपाही ने मेरे साथ अपनी वरदी भी बदल ली. मेरी ख़ुद पहन ली और अपनी मुझे दे दी. लेकिन उनका आम सलूक हमारे साथ इतना दोस्ताना था कि देखकर अचरज होता था."

दूसरे अमरीकी लफ़टिनेन्ट स्मिथ नामी ने कहा कि—"जो दो गार्ड हमें लेजा रहे थे वह अव्वल दरजे के आदमी थे. उन्होंने यहाँ तक किया कि जो सिपाही हमारे बूट ले गये थे और अपने जूते हमें दे गये थे उन्हें ढूंढ कर उन से एक जोड़ा बूट उतरवा कर हमें लाकर वापस दिया. कई बार उन्होंने अपने पैसों से हमें सेब ख़रीद कर दिये. बदक़िस्मती से मेरा ख़याल है कि एक अमरीकी हवाई हमले में तीन क़ैदी अमरीकी सिपाहियों के साथ हमारे वह दोनों गार्ड भी मारे गये."

جن میں سے دو لفٹننٹ تھے اور دو معمولی سپاہی جنھیں کوریا والوں نے قید کر لیا تھا، اُتر کوریا سے کسی طرح بھاگ کر امریکی فوج میں آ ملے . یہاں آکر اُنھوں نے اپنے ساتھ اُتر کوریا والوں کے برتاؤ کا جو حال سنایا وہ بالکل دوسری طرح کا ہے . ان میں سے ایک لفٹننٹ جونس نے کہا کہ—"ہم یہ دیکھ کر کہ ہمارے ساتھ کتنا اچھا برتاؤ کیا گیا حیران رہ گئے . ہمیں ٹھیک وقت پر کھانا اور سگریٹ دیئے جاتے تھے . ہمارے اوپر جو دو پہرے دار تھے وہ راستے میں اپنی جیب سے پیسے خرچ کرکے ہمیں سیب خرید کر لاکر دیتے تھے . ہمیں کیول یہ شکایت تھی کہ کوریا کے کچھ سپاہیوں نے ہم سے ہمارے بوٹ لے لئے اور اُن کی جگہ اپنے ربڑ کے جوتے ہمیں دے دیئے . ایک سپاہی نے میرے ساتھ اپنی وردی بھی بدل لی . میری خود پہن لی اور اپنی مجھے دے دی . لیکن اُنکا عام سلوک ہمارے ساتھ اتنا دوستانہ تھا کہ دیکھکر اچرج ہوتا تھا ."

دوسرے امریکی لفٹننٹ اسمتھ نامی نے کہا کہ—"جو دو گارڈ ہمیں لے جا رہے تھے وہ اول درجے کے آدمی تھے . اُنھوں نے یہاں تک کیا کہ جو سپاہی ہمارے بوٹ لے گئے تھے اور اپنے جوتے ہمیں دے گئے تھے اُنھیں ڈھونڈھ کر اُن سے ایک جوڑا بوٹ اتروا کر ہمیں لاکر واپس دیا . کئی بار اُنھوں نے اپنے پیسوں سے ہمیں سیب خرید کر دیئے . بدقسمتی سے میرا خیال ہے کہ ایک امریکی ہوائی حملے میں تین قیدی امریکی سپاہیوں کے ساتھ ساتھ ہمارے وہ دونوں گارڈ بھی مارے گئے ."

पूरब की क़ौमों ने अभी तक अपनी पूरी आदमियत हाथ से नहीं खोई. हमारी नज़रों में हमारी यह इंसानियत बड़ी सी बड़ी शहनशाहत से ज़्यादा क़ीमती है.

१२-१०-५०. —सुन्दरलाल

वड़ीयत, अमरीका और जनरल मैकआर्थर—

बड़ीयत यानी मेजारिटी सौ फ़ी सैकड़ा इन्साफ़ से दूर होती है, जब वह दूसरों को सताने का फ़ैसला करती है या लूट मार की इजाज़त देती है या और कोई हिंसा का काम उठाती है. और उससे दुनिया की शान्ति तो ख़तरे में पड़ती ही है. इसलिये जो लोग दुनिया में शान्ति बनाए रखने के हामी थे और जो यह चाहते थे कि दुनिया पर फिर बड़ी लड़ाई के बादल न छाने पाएं उन्होंने जो यू. एन. ओ. नाम की संस्था बनाई और उसमें से जो सुरक्षा कौंसिल छाँटी उसमें एक क़ायदा वीटो का भी रक्खा. वीटो का क़ायदा रखने वाले यह ख़ूब अच्छी तरह से समझते थे कि जिस वक़्त बड़ीयत भड़क उठती है उस वक़्त बहुत कम लोगों का दिमाग़ ठिकाने पर रह जाता है. इक्का दुक्का ही कोई ऐसा निकलता है जिसका सिर उस वक़्त फिरने से बच रहे. असल में वही इक्का दुक्का उस वक़्त इन्साफ़ की बात सोच सकता है इसलिये सुरक्षा कौंसिल के विधानकारों ने उस इक्के दुक्के समझदार की राय को महत्व देने के लिये वीटो की शर्त को ज़रूरी समझा.

پورب کی قوموں نے ابھی تک اپنی پوری آدمیت ہاتھ سے نہیں کھوئی . ہماری نظروں میں ہماری یہ انسانیت بڑی سی بڑی شہنشاہت سے زیادہ قیمتی ہے .

۱۱-۱۰-۵۰ —سندر لال

بڑییت' امریکہ اور جنرل میک آرتھر—

بڑییت یعنی میجارٹی سوفی سیکڑا انصاف سے دور ہوتی ہے' جب وہ دوسروں کو ستانے کا فیصلہ کرتی ہے یا لوٹ مار کی اجازت دیتی ہے یا اور کوئی ہنسا کا کام اٹھاتی ہے . اور اس سے دنیا کی شانتی تو خطرے میں پڑتی ہی ہے . اس لئے جو لوگ دنیا میں شانتی بنائے رکھنے کے حامی تھے اور جو یہ چاہتے تھے کہ دنیا پر پھر بڑی لڑائی کے بادل نہ چھانے پائیں انہوں نے جو یو. این. او. نام کی سنستھا بنائی اور اس میں سے جو سرکشا کونسل چھانٹی اس میں ایک قاعدہ ویٹو کا بھی رکھا . ویٹو کا قاعدہ رکھنے والے یہ خوب اچھی طرح سے سمجھتے تھے کہ جس وقت بڑییت بھڑک اٹھتی ہے اس وقت بہت کم لوگوں کا دماغ ٹھکانے پر رہ جاتا ہے . اکا دکا ہی کوئی ایسا نکلتا ہے جس کا سر اس وقت پھرنے سے بچ رہے . اصل میں وہی اکا دکا اس وقت انصاف کی بات سوچ سکتا ہے اس لئے سرکشا کونسل کے ودھان کاروں نے اس اکے دکے سمجھدار کی رائے کو مہتو دینے کے لئے ویٹو کی شرط کو ضروری سمجھا .

वीटो शक्ति सुरक्षा कौंसिल की जान है क्योंकि सुरक्षा कौंसिल ने नाम से ही रक्षा का काम हाथ में लिया और रक्षा और शान्ति क़रीब क़रीब एक माने रखते हैं. शान्ति इसके सिवाय क्या हो सकती है कि दुनिया के लोगों को डर से आज़ादी मिल जाय. उन्हें कोई न डरा पाएगा इसकी उन्हें कोई तसल्ली करदे. वह ख़ुद भी किसी को न डराएंगे ऐसी उनसे कोई क़सम ले ले. और दूसरा मतलब शान्ति का यह हो सकता है कि उन्हें खाने पीने पहनने के लिये और रहने के लिये हर तरह का नहीं तो मामूली सुभीता तो हो. अब सुरक्षा कौंसिल का काम ज़रा टेढ़ा हो जाता है पर दुनिया भर में शान्ति बनाए रखने की ज़िम्मेदारी लेने वाली संस्था टेढ़े काम से क्यों कन्ने काटे. जो दुनिया भर की संस्था है उसमें दुनिया भर के आदमी भी हैं. उनकी मदद से वह दुनिया की तकलीफ़ें आसानी से दूर कर सकती है पर दूर जभी कर सकती है जब वह अपने अन्दर जान बनाए रक्खे और जान है उसकी वीटो का स्वागत करना. वीटो को लतिया कर सुरक्षा कौंसिल एक बे जान चीज़ रह जाती है. और जिस तरह लाठी, पत्थर का टुकड़ा, तलवार, बन्दूक़, ऐटम बम रक्षा के औज़ार होते हुए भी भड़के हुए समाज के हाथ में हिंसा के औज़ार बन जाते हैं वैसे ही सुरक्षा समिति बेजान होकर रक्षा का औज़ार होते हुए भी भड़के हुए समाज के हाथ में हिंसा का औज़ार बन सकती है और आज सचमुच बन गई. वीटो को बेपरवाही से दुरदुरा कर सुरक्षा कौंसिल ने सिर्फ़ क़ानून को दुरदुराया हो इतना ही नहीं उसने अपनी जान, इज़्ज़त और आबरू को भी दुरदुराया है. वीटो की बेपरवाही के बाद सुरक्षा समिति भड़की हुई बढ़ायत के

ویٹو شکتی سرکشا کونسل کی جان ہے کیونکہ سرکشا کونسل نے نام سے ہی رکشا کا کام ہاتھ میں لیا. اور رکشا اور شانتی قریب قریب ایک معنے رکھتے ہیں. شانتی اس کے سوائے کیا ہوسکتی ہے کہ دنیا کے لوگوں کو ڈر سے آزادی مل جائے. انہیں کوئی نہ ڈرا پائیگا اسکی انہیں کوئی تسلی کردے. وہ خود بھی کسی کو نہ ڈرائینگے. ایسی ان سے کوئی قسم لے لے. اور دوسرا مطلب شانتی کا یہ ہوسکتا ہے کہ انہیں کھانے پینے پہننے کے لئے اور رہنے کے لئے ہر طرح کا نہیں تو معمولی سبھیتا تو ہو. اب سرکشا کونسل کا کام ذرا ٹیڑھا ہو جاتا ہے پر دنیا بھر میں شانتی بنائے رکھنے کی ذمہ داری لینے والی سنستھا ٹیڑھے کام سے کیوں کنے کاٹے. جو دنیا بھر کی سنستھا ہے اس میں دنیا بھر کے آدمی بھی ہیں. ان کی مدد سے وہ دنیا کی تکلیفیں آسانی سے دور کر سکتی ہے پر دور جبھی کر سکتی ہے جب وہ اپنے اندر جان بنائے رکھے اور جان ہے اس کی ویٹو کا سواگت کرنا. ویٹو کو لتیا کر سرکشا کونسل ایک بے جان چیز رہ جاتی ہے. اور جس طرح لاٹھی، پتھر کا ٹکڑا، تلوار، بندوق، ایٹم بم رکشا کے اوزار ہوتے ہوئے بھی بھڑکے ہوئے سماج کے ہاتھ میں ہنسا کے اوزار بن جاتے ہیں ویسے ہی سرکشا سمیتی بے جان ہوکر رکشا کا اوزار ہوتے ہوئے بھی بھڑکے ہوئے سماج کے ہاتھ میں ہنسا کا اوزار بن سکتی ہے اور آج سچ مچ بن گئی. ویٹو کو بےپرواہی سے دردرا کر سرکشا کونسل نے صرف قانون کو دردرایا ہو اتنا ہی نہیں اس نے اپنی جان، عزت اور آبرو کو بھی دردرایا ہے. ویٹو کی بےپرواہی کے بعد سرکشا سمیتی بھڑکی ہوئی بہوست کے

हाथ की मशीन बन गई. और मशीन से सिवाय संहार के और क्या हो सकता है. खेत की बाड़ जो खेत की रक्षा के लिये लगाई जाती है जब स्वार्थी और भड़के हुओं के हाथों में पड़ कर खेत के ऊपर गिराई जाती है तो खेत का मामूली नुकसान ही नहीं करती वह तो जंगली जानवरों के लिये रास्ता खोल कर सारे खेत की बरबादी का कारन हो जाती है.

आज सुरक्षा कौंसिल जो रक्षा के लिये सब मुल्कों की बाड़ बनी हुई है ज़रा सी वीटो की बेइज़्ज़ती से भड़के हुए अमरीका के हाथ में पड़ कर सिर्फ़ कोरिया का ही नहीं खा रही दुनिया की बरबादी के लिये रास्ता खोल रही है. जिस तरह हिंदुस्तान का नमक खाने वाला जनरल डायर जलियान वाला बाग़ में दो हज़ार बूढ़े, बच्चों और जवानों को गोली के घट उतार कर आँखें सेंकता हुआ और बग़लें बजाता हुआ जलियान वाला बाग़ से लौटते वक़्त भड़के हुए बर्तानिया का वफ़ादार भले ही रहा हो हिन्दुस्तान का वफ़ादार नहीं था. जलियान वाला बाग़ का नाटक रच कर उसने हिन्दुस्तान के नमक को हलाल नहीं किया. ठीक इसी तरह से आज जेनरल मैक-आर्थर उत्तरी कोरिया यानी, कोरिया की लाशों को देख कर जब अपनी बूढ़ी आंखें सेंकता है और उससे वह तरावट पाता है तब वह भड़के हुए अमरीका का भले ही वफ़ादार हो यूनाइटेड नेशन्स और सुरक्षा समिति का वह हरगिज़ वफ़ादार नहीं. और अभी तो वह लाशों को देख कर आंखें सेंक रहा है. अजब नहीं किसी दिन डाक्टर सेन को पाकर सन सत्तावन के मशहूर जनरल हडसन का नाटक खेले, और उसका खून पीकर अपनी खीज की प्यास को तर

ہاتھ کی مشین بن گئی . اور مشین سے سوائے سنہار کے اور کیا ہوسکتا ہے . کھیت کی باڑھ جو کھیت کی رکشا کے لئے لگائی جاتی ہے . جب سوارتھی اور بھڑکے ہوؤں کے ہاتھوں میں پڑ کر کھیت کے اوپر گرائی جاتی ہے تو کھیت کا معمولی نقصان ہی نہیں کرتی وہ تو جنگلی جانوروں کے لئے راستہ کھول کر سارے کھیت کی بربادی کا کارن ہوجاتی ہے .

آج سرکشا کونسل جو رکشا کے لئے سب ملکوں کی باڑھ بنی ہوئی ہے ذرا سی ویٹو کی بے عزتی سے بھڑکے ہوئے امریکہ کے ہاتھ میں پڑکر صرف کوریا کو ہی نہیں کھا رہی دنیا کی بربادی کے لئے راستہ کھول رہی ہے . جس طرح ہندستان کا نمک کھانے والا جنرل ڈائر جلیان والا باغ میں دو ہزار بوڑھوں ، بچوں اور جوانوں کو گولی کے گھاٹ اتار کر آنکھیں سینکتا ہوا اور بغلیں بجاتا ہوا جلیان والا باغ سے لوٹتے وقت بھڑکے ہوئے برطانیہ کا وفادار بھلے ہی رہا ہو ہندستان کا وفادار نہیں تھا . جلیان والا باغ کا ناٹک رچ کر اس نے ہندستان کے نمک کو حلال نہیں کیا . ٹھیک اسی طرح سے آج جنرل میک آرتھر اتری کوریا یعنی کوریا کی لاشوں کو دیکھکر جب اپنی بوڑھی آنکھیں سینکتا ہے اور اس سے وہ تراوٹ پاتا ہے تب وہ بھڑکے ہوئے امریکہ کا بھلے ہی وفادار ہو یونائٹڈ نیشنس اور سرکشا سمیتی کا وہ ہرگز وفادار نہیں . اور ابھی تو وہ لاشوں کو دیکھکر آنکھیں سینک رہا ہے . عجب نہیں کسی دن ڈاکٹر سین کو پاکر سن ستاون کے مشہور جنرل ہڈسن کا ناٹک کھیلے ، اور اس کا خون پی کر اپنی کھیج کی پیاس کو تر

करे. यूनाइटेड नेशन्स सारी दुनिया की पंचायत होने के नाते सारे मुल्कों की मां है. अगर वह सब मुल्कों को एक नज़र से नहीं देखती तो उसे यूनाइटेड नेशन्स होने का कोई हक़ नहीं. सच्चे मानों में यूनाइटेड नेशन्स का सेनापति इस तरह के शब्द मुँह से नहीं निकाल सकता। जिस तरह के शब्द जनरल मैकआर्थर के मुँह से निकले. असल में जनरल मैकआर्थर में ठीक या नाठीक यह क़ाबलियत ही नहीं है कि वह अपने आप को अमरीका से अलग समझ सके. पर जो ऐसा नहीं कर सकता वह यूनाइटेड नेशन्स का सेनापति हो कर अधर्म युद्ध ही लड़ सकता है धर्म युद्ध नहीं लड़ सकता. यूनाइटेड नेशन्स के सेनापति होने के लिये बहुत बड़ा दिल होना चाहिये और वह अमरीका के स्वार्थ में डूबे जनरल मैकआर्थर को नसीब नहीं हो सकता. काश ! वही लफ़्ज़ जो जनरल मैकआर्थर ने उत्तरी कोरिया वालों की लाशों को देख कर कहे—"उत्तर कोरया के जवानों की लाशें देख कर मेरी बूढ़ी आँखों को भला मालूम होता है." किसी हिन्दुस्तानी जनरल ने भूल से भी कह दिये होते तो हिन्दुस्तान की सरकार उसे फ़ौरन वापस बुला लेती और हिन्दुस्तानी जनता तो हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जाती. उधर अमरीका को देखिये. वहाँ की सरकार और वहाँ के पत्रकार यानी वहाँ की जनता उन्हीं लफ़्ज़ों का शान के साथ और हमारे लफ़्ज़ों में बेहयाई के साथ प्रचार कर रही है. अमरीका वाले यह समझ ही नहीं पाते और न समझ सकते हैं कि जनरल मैकआर्थर अब उनका सेनापति नहीं यूनाइटेड नेशन्स का सेनापति है. और अमरीका वाले भी क्या करें. जनरल मैकआर्थर ख़ुद भी तो ऐसा नहीं समझते. वह अमरीका के हैं, अमरीका के

کرے۔ یونائٹڈ نیشنس ساری دُنیا کی پنچایت ہونے کے ناتے سارے ملکوں کی ماں ہے۔ اگر وہ سب ملکوں کو ایک نظر سے نہیں دیکھتی تو اُسے یونائٹڈ نیشنس ہونے کا کوئی حق نہیں۔ سچے معنوں میں یونائٹڈ نیشنس کا سینا پتی اس طرح کے شبد منہ سے نہیں نکال سکتا جس طرح کے شبد جنرل میک آرتھر کے منہ سے نکلے۔ اصل میں جنرل میک آرتھر میں ٹھیک یا نا ٹھیک یہ قابلیت ہی نہیں ہے کہ وہ اپنے آپ کو امریکہ سے الگ سمجھ سکے۔ پر جو ایسا نہیں کرسکتا وہ یونائٹڈ نیشنس کا سینا پتی ہو کر ادھرم یدھ ہی لڑ سکتا ہے دھرم یدھ نہیں لڑ سکتا۔ یونائٹڈ نیشنس کے سینا پتی ہونے کے لئے بہت بڑا دل ہونا چاہئے اور وہ امریکہ کے سوارتھ میں ڈوبے جنرل میک آرتھر کو نصیب نہیں ہو سکتا۔ کاش! وہی لفظ جو جنرل میک آرتھر نے اُتری کوریا والوں کی لاشوں کو دیکھکر کہے—"اُتر کوریا کے جوانوں کی لاشیں دیکھکر میری بوڑھی آنکھوں کو بھلا معلوم ہوتا ہے۔" کسی ہندستانی جنرل نے بھول سے بھی کہہ دیئے ہوتے تو ہندستان کی سرکار اُسے فوراً واپس بلا لیتی اور ہندستانی جنتا تو ہاتھ دھو کر اُس کے پیچھے پڑ جاتی۔ اُدھر امریکہ کو دیکھئے۔ وہاں کی سرکار اور وہاں کے پترکار یعنی وہاں کی جنتا اُنہیں لفظوں کا شان کے ساتھ اور ہمارے لفظوں میں بے حیائی کے ساتھ پرچار کر رہی ہے۔ امریکہ والے یہ سمجھ ہی نہیں پاتے اور نہ سمجھ سکتے ہیں کہ جنرل میک آرتھر اب اُن کا سینا پتی نہیں یونائٹڈ نیشنس کا سینا پتی ہے۔ اور امریکہ والے بھی کیا کریں۔ جنرل میک آرتھر خود بھی تو ایسا نہیں سمجھتے۔ وہ امریکہ کے ہیں، امریکہ کے

ही बने रहेंगे. उनमें सारी दुनिया के होकर रहने की क़ाबलियत ही नहीं.

हमें जनरल मैकआर्थर पर तरस आता है और तरस आता है ऐसे यूनाइटेड नेशन्स पर जिसे जनरल मैकआर्थर जैसे सेनापति मिले.

असल बात यह है कि इस वक़्त यूनाइटेड नेशन्स के हाथ में अमरीका नहीं है अमरीका के हाथ में यूनाइटेड नेशन्स है.

२६-१०-५०   —भगवानदीन

तिब्बत पर चीन का हमला

तिब्बत के बारे में हम 'नया हिन्द' में पहले ही लिख चुके हैं और हमने उस वक़्त यही लिखा था कि चीन के लिये यही ज़्यादा ठीक है कि वह तिब्बत को तिब्बत ही के ऊपर छोड़ दे क्योंकि तिब्बत न इतना बड़ा मुल्क है और न इतने उसके पास साधन ही हैं कि कभी वह चीन के ख़िलाफ़ जाने की बात सोचे और साथ ही साथ उसका पड़ोसी मुल्क भारत भी यह नहीं चाहता कि तिब्बत को अपना हिस्सा बनाए या और किसी तरह उसमें इस तरह के काम करे कि चीन या चीन की सरकार के लिये नुक़सान के साबित हों. भारत जिस दिन से आज़ाद हुआ है उसी दिन से चीन से दोस्ती करने का ख़्वाहिशमन्द रहा है. भारत ने चीन को समझने में कभी भूल नहीं की और मौक़ा पाकर दोस्ती के लिये हाथ बढ़ाने में कभी मामूल से ज़्यादा देर नहीं की. इतना ही नहीं वह चीन की आज की सरकार को ठीक सरकार समझता है और इस कोशिश में है कि जल्दी से जल्दी चीन की वही सरकार यू. एन. ओ. में शामिल कर ली जाय.

ہی بنے رہینگے. ان میں ساری دنیا کے ہوکر رہنے کی قابلیت ہی نہیں.

ہمیں جنرل میک آرتھر پر ترس آتا ہے اور ترس آتا ہے ایسے یونائٹڈ نیشنس پر جسے جنرل میک آرتھر جیسے سپہ سالار ملے.

اصل بات یہ ہے کہ اس وقت یونائٹڈ نیشنس کے ہاتھ میں امریکہ نہیں ہے امریکہ کے ہاتھ میں یونائٹڈ نیشنس ہے.

۲۶-۱۰-۵۰   —بھگوان دین

تبت پر چین کا حملہ

تبت کے بارے میں ہم 'نیا ہند' میں پہلے ہی لکھ چکے ہیں. اور ہم نے اس وقت یہی لکھا تھا کہ چین کے لئے یہی زیادہ ٹھیک ہے کہ وہ تبت کو تبت ہی کے اوپر چھوڑ دے کیونکہ تبت نہ اتنا بڑا ملک ہے اور نہ اتنے اس کے پاس سادھن ہی ہیں کہ کبھی وہ چین کے خلاف جانے کی بات سوچے اور ساتھ ہی ساتھ اس کا پڑوسی ملک بھارت بھی یہ نہیں چاہتا کہ تبت کو اپنا حصہ بنائے. یا اور کسی طرح اس میں اس طرح کے کام کرے کہ چین یا چین کی سرکار کے لئے نقصان کے ثابت ہوں. بھارت جس دن سے آزاد ہوا ہے اسی دن سے چین سے دوستی کرنے کا خواہشمند رہا ہے. بھارت نے چین کو سمجھنے میں کبھی بھول نہیں کی اور موقع پاکر دوستی کے لئے ہاتھ بڑھانے میں کبھی معمول سے زیادہ دیر نہیں کی. اتنا ہی نہیں وہ چین کی آجکی سرکار کو ٹھیک سرکار سمجھتا ہے اور اس کوشش میں ہے کہ جلدی سے جلدی چین کی وہی سرکار یو. این. او. میں شامل کرلی جائے.

भारत जब कि तिब्बत को किसी तरह अपना नहीं समझता बल्कि एक तरह से तिब्बत को चीन का ही हिस्सा समझता है तब भारत से यह आशा तो की ही जा सकती है कि तिब्बत पर चीन के इस हमले की वजहसे भारत और चीन में कोई ऐसा खिंचाव पैदा नहीं होगा जो बुराई का बीज बो सके. पर इसमें शक नहीं कि अगर यह हमले का काम रोक ही रक्खा जाता और कम से कम इस समय ही रोक रक्खा जाता तो भारत के हाथ कुछ ज्यादा मजबूत ही रहते और भारत के मजबूत हाथ चीन के लिये कुछ भले ही साबित होते.

चीन की इस जल्दबाजी में हो सकता है, अमरीका की बदनीयती का हाथ हो. यह भी हो सकता है कि इस बदनीयती को उभारने में औरों का भी हाथ हो पर यह सब इस वक्त इतने मजबूत कारन कैसे बन गए कि चीन की सरकार को इस बे समय हमले की बात सूझी. जहरीले पेड़ में कली आते ही कली को तोड़ डालने की नीति है तो ठीक पर क्या सचमुच इस जहरीले पेड़ में कली लग आई थी ?

भारत और चीन के बीच का पत्र व्योहार हमने पढ़ा. उससे न तो हम इसी नतीजे पर पहुंच पाते हैं कि जहरीले पेड़ में कली नहीं लगी थी और न तो इसी नतीजे पर पहुँच पाते हैं कि कली लग चुकी थी.

जब तक हम यह न तय कर पाएं तब तक के लिये हम यही कहते हैं कि यह हमला बेवक्त हुआ है.

३-११-५०.   —भगवानदीन

بھارت جب کہ تبت کو کسی طرح اپنا نہیں سمجھتا بلکہ ایک طرح سے تبت کو چین کا ہی حصہ سمجھتا ہے تب بھارت سے یہ آشا تو کی ہی جاسکتی ہے کہ تبت پر چین کے اس حملے کی وجہ سے بھارت اور چین میں کوئی ایسا کھنچاؤ پیدا نہیں ہوگا جو برائی کا بیج بو سکے. پر اس میں شک نہیں کہ اگر یہ حملے کا کام روک ہی رکھا جاتا اور کم سے کم اس سمے ہی روک رکھا جاتا تو بھارت کے ہاتھ کچھ زیادہ مضبوط ہی رہتے اور بھارت کے مضبوط ہاتھ چین کے لئے کچھ بھلے ہی ثابت ہوتے.

چین کی اس جلد بازی میں ہوسکتا ہے امریکہ کی بدنیتی کا ہاتھ ہو. یہ بھی ہوسکتا ہے کہ اس بدنیتی کو ابھارنے میں اوروں کا بھی ہاتھ ہو پر یہ سب اس وقت اتنے مضبوط کارن کیسے بن گئے کہ چین کی سرکار کو اس بے سمے حملے کی بات سوجھی. زہریلے پیڑ میں کلی آتے ہی کلی کو توڑ ڈالنے کی نیتی ہے تو ٹھیک پر کیا سچ مچ اس زہریلے پیڑ میں کلی لگ آئی تھی ؟

بھارت اور چین کے بیچ کا پتر ویوہار ہم نے پڑھا. اس سے نہ تو ہم اسی نتیجے پر پہونچ پاتے ہیں کہ زہریلے پیڑ میں کلی نہیں لگی تھی اور نہ تو اسی نتیجے پر پہونچ پاتے ہیں کہ کلی لگ چکی تھی.

جب تک ہم یہ نہ طے کر پائیں تب تک کے لئے ہم یہی کہتے ہیں کہ یہ حملہ بے وقت ہوا ہے.

—بھگوان دین   ۳-۱۱-۵۰